Professor Kieffer
from the Calcutta Auxiliary Bible Society.
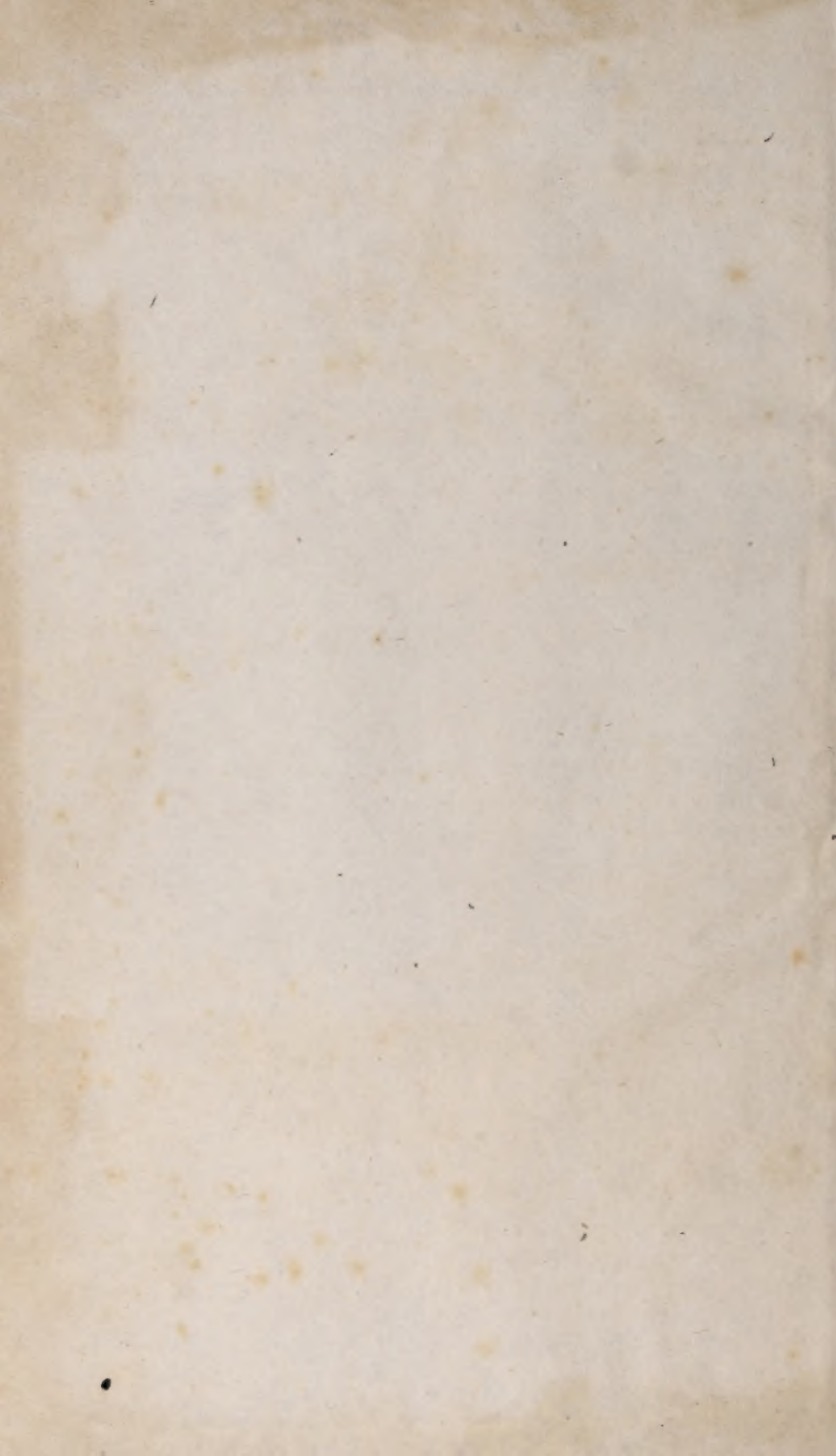
THE

NEW TESTAMENT

OF

OUR LORD AND SAVIOUR,

JESUS CHRIST,

TRANSLATED INTO THE HINDOOSTANEE LANGUAGE FROM THE ORIGINAL GREEK, AND NOW PRINTED IN THE NAGREE CHARACTER.

BY THE REV. H. MARTYN, A. B.
Late Fellow of St. John's College, and Chaplain on the Bengal Establishment;

And afterwards carefully revised with the assistance of

MIRZA FITRUT, AND OTHER LEARNED NATIVES.

FOR THE BRITISH AND FOREIGN BIBLE SOCIETY.

Calcutta:

PRINTED BY P. PEREIRA, AT THE HINDOOSTANEE PRESS.

1817.

इंजील

यअ़ने वसीक़ए जदीद
हज़रत ईसा मसीह़ अ़लैहिस्सलाम
का जिसे ख़ादिमि दीनि मसीही क़िसीस
हिनरी मारटीन मरहूम ने असल यूनानी
ज़बान से ज़बानि रेख़ते में तरजमः
करके मिरज़ा फ़ितरत और और फ़ाज़िलों
की इआ़नत से दुरुस्त किया था सो अब
नागरी हरफ़ में छापाकिया गया

कलकत्ते के हिंदुस्तानि
छापेख़ाने में
छापा हूआ
सनि १८१७ ईसवी

मत्ती की इंजील

पहला बाब

ईसा मसीह इबनि दाऊद इबनि इबराहीम का नसब नामः *
२ इबराहीम से इसहाक़ और इसहाक़ से यअक़ूब पैदा हूआ और
३ यअक़ूब से यहूदा और उसके भाई पैदा हूऐ * और यहूदा
से फ़ारिज़ और ज़ारह् तामर के पेट से और फ़ारिज़ से हसरून
४ और हसरून से अरम पैदा हूआ * और अरम से अमिंदाब
५ और अमिंदाब से नहशून और नहशून से सलमून * और
सलमून से बोअज़ राहाब के पेट से और बोअज़ से ओबेद रूत
६ के पेट से और ओबेद से अयशी * और अयशी से दाऊद
बादशाह और दाऊद बादशाह से सुलैमान उस के पेट से जो
७ औरिया की जोरू थी * और सुलैमान से रहबुआम और रहबुआम
८ से अबिया और अबिया से आसा * और आसा से यहूशाफ़ात

९ और यहूशाफ़ात से यूराम और यूराम से ग़ूज़िया * और ग़ूज़िया से यूताम और यूताम से अहाज़ और अहाज़ से हज़्क़िया *
१० और हज़्क़िया से मन्नसा और मन्नसा से अमून और अमून से
११ यूशिया * और यूशिया से यूकानिया और उस के भाई जिन रोज़ों
१२ में बाबुल को उठ चले पैदा हूए * और बअद उस के कि बाबुल को उठ चले यूकानिया से सलताईल पैदा हूआ और सलताईल
१३ से ज़ोर बाबुल * और ज़ोर बाबुल से अबयूद और अबयूद से
१४ ऐलीयाक़ीम और ऐलीयाक़ीम से आज़ूर * और आज़ूर से
१५ ज़दूक़ और ज़दूक़ से अक़ीन और अक़ीन से ऐलयूद * और ऐलयूद से ऐलीआज़र और ऐलीआज़र से मतन और
१६ मतन से यअ़क़ूब * और यअ़क़ूब से यूसुफ़ जो मरयम का शौहर था उस के पेट से ईसा जिस को मसीह़ कहते हैं पैदा हूआ *
१७ पस सब पुश्तें इबराहीम से दाऊद तक चौदह हैं और दाऊद से उस वक़्त तक कि बाबुल को उठ चले चौदह पुश्तें हैं और
१८ उस वक़्त से कि बाबुल को उठ चले मसीह़ तक चौदह * और ईसा मसीह़ का तवल्लुद इस तरह़ हूआ कि जब उस की मा मरयम यूसुफ़ से मनसूब हूई उस से पहले कि वे बाहम होवें वुह
१९ रूहि क़ुदस से ह़ामिलः पाई गई * तब उस के शौहर यूसुफ़ ने जो मर्दि आदिल था उस की तशहीर न चाह कर इरादः किया कि
२० उसे चुपके से छोड़ दे * वुह उन अंदेशों में था कि एकाएक ख़ुदावंद के फ़िरिश्ते ने ख़्वाब में उस पर ज़ाहिर हो के कहा कि

ऐ यूसुफ़ इब्नि दाऊद तू अपनी जोरू मरयम को अपने पास रखने से मत डर इस लिये कि वुह जो उस के पेट में पड़ा सो
२१ रूहि कुद्स से है * और वुह बेटा जनेगी और तू उस का नाम ईसा रखना इसवास्ते कि वुह अपनी उम्मत को उनके गुनाहों से
२२ बचायगा * पर यिह सब उस लिये हूआ कि जो कुछ ख़ुदावंद
२३ ने नबी की मअरिफ़त से कहा था पूरा होवे * कि देखो ऐक बाकिरः पेट से होगी और ऐक बेटा जनेगी और उस का नाम रखा जायगा
२४ अमनूईल जिस का तरजमः यिह है कि ख़ुदा हमारे साथ * तब यूसुफ़ ने सोने से उठ कर जैसा कि ख़ुदावंद के फ़िरिश्ते ने फ़रमाया
२५ था किया और अपनी जोरू को अपने यहां ले आया * और उस से जबतक कि वुह अपना पहला बेटा नजनी हम बिस्तर न हूआ और उसका नाम ईसा रखा *

दूसरा बाब

१ और जब ईसा हीरूदीस शाह के वक़्त में यहूदियः के बैतुल्लहम में मुतवल्लद हूआ देखो कि कई ऐक मजूसियों ने मश्‌रिक़ की
२ सिम्त से औरशलीम में आके कहा * कि यहूदियोंका जो निहाल बादशाह कहां है कि हमने मश्‌रिक़ की तरफ़ में उसका
३ सितारः देखा है और उस की परस्तिश के लिये आये हैं * तब हीरूदीस शाह और उसके साथ औरशलीम के सारे रहने वाले
४ यिह सुनकर घबराये * और उसने सब सरदारि काहनों और उस क़ौम के कातिबों को ऐकट्ठा करके उनसे तहक़ीक़ किया कि मसीह

५ कहां पैदा होगा * उन्हों ने उस से कहा कि यहूदियः के बैतुल्लहम्
६ में इस लिये कि नबी की मअरिफ़त से यूं लिखा है * कि ऐ यहूदा
की ज़मीन बैतुल्लहम् तू यहूदा के अमीरों में हरगिज़ हक़ीर नहीं है
क्यूंकि तुझ में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी क़ौमि इस्राईल की
७ रिआयत करेगा * तब हीरूदीस ने उन मजूसियों को चुपके बुलाया
और उन से तहक़ीक़ किया कि वुह सितारः किस वक़्त देखाई दिया
८ और उसने उनको बैतुल्लहम् में भेजा और कहा कि जाकर उस
लड़के के अह्वाल को ख़ूब दरयाफ़्त करो और जब तुम उस को
पाओ मुझ को ख़बर दो ता कि मैं भी आकर सिजदः करूं
९ वे बादशाह से यिह बात सुनकर चले गये और देखो वुह सितारः
जो उन्हों ने मशरिक़ में देखा था उन के आगे आगे चला गया यहां
१० तक कि आया और जहां वुह लड़का था उस जगह के ऊपर ठहरा *
तब वे उस सितारे को देख के बहुत बशिद्दत ख़ुश वक़्त हूए
११ और उन्हों ने घर में पहुंच कर लड़के को उस की मा मरयम के
साथ पाया और ज़मीन पर गिर के उसकी परस्तिश की और उन्हों
ने अपनी थैलियां खोल कर सोना और लोबान और मुर उस को
१२ हदियः गुज़राया * और वे ख़्वाब में आगाह होकर कि
हीरूदीस के पास फिर जाना न चाहिये दूसरी राह से अपने मुल्क
१३ को रवानः हूए * उनकी रवानगी के बअद ख़ुदावंद का
फ़िरिश्तः यूसुफ़ को ख़्वाब में देखाई दिया और कहा कि उठ
इस लड़के को और इस की मा को लेकर मिस्र को भाग जा और

वहीं रह जब तक कि मैं तुझे पास ख़बर लाऊं क्यूं कि हीरूदीस
१४ क़त्ल करने के लिये इस लड़के को ढूंढेगा * तब उस ने उठ
कर लड़के को और उस की मा को रात ही को साथ लिया और
१५ मिस्र को रवानः हूआ * और हीरूदीस के तमाम होने तक
वहां रहा ताकि वुह जो ख़ोदावंद के नबी की मअरिफ़त से कहा
गया था कि मैं ने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया पूरा होवे *
१६ जब हीरूदीस ने मुलाहज़ः किया कि उन मजूसियों ने उस से
तमसखुर किया निहायत गुस्सः हूआ और लोगों को भेज कर सब
लड़कों को जो बैतुल्लहम में और उस के सारे अतराफ़ में थे कमतर
अज़ दोसाले से दोसाले तक मुवाफ़िक़ उस वक़्त के कि उस ने
१७ उन मजूसियों से तहक़ीक़ किया था क़त्ल किया * तब वुह जो
१८ अरमिया नबी ने कहाथा पूरा हूआ * कि रामे में एक आवाज़
सुनी गई ज़ारी और रोने और बड़े मातम की कि राख़ील अपने
लड़कों को रोती थी और नचाहती थी कि तसल्ली पिज़ीर हो इस
१९ लिये कि वे मौजूद नहीं थे * और हीरूदीस के तमाम होने
के बअद ख़ुदावंद के फ़िरिश्ते ने मिस्र में यूसुफ़ को ख़्वाब में
२० देखाई देकर कहा * उठ उस लड़के और उसकी माको ले कर
इसराईल की सरिज़मीन को जा इसवास्ते कि जो उस लड़के की
२१ जान के ख़्वाहां थे सो मरगये * तब वुह उठा और उस लड़के
और उस की मा के तईं लेकर इसराईल की विलायत में आया *
२२ और जब सुना कि अरकिलाऊस यहूदियः में अपने बाप

हीरूदीस की बादशाहत पर मुसल्लत हुआ उस तरफ़ जानेसे डरा
२३ पर ख़्वाब में आगाही पाकर जलील की तरफ़ रवानः हुआ * और
ऐक शहर में जिस का नाम नासरः था आकर रहा ताकि वुह जो
नबियों की मअरिफ़त से कहा गया था कि वुह नासरी कहलायगा
पूरा होवे *

तीसरः बाब

१ उन्हीं दिनों में यहया ने यहूदियः के बियाबान में ज़ाहिर होके
२ मुनादी करना शुरूअ किया * और कहा कि तौबः करो क्यूं कि
३ आसमान की बादशाहत नज़दीक हुई * इस लिये कि यिह
वुह शख़्स है जिसका ज़िक्र इशइया नबी ने किया कि दश्त में ऐक
पुकारने वाले की आवाज़ है कि तुम ख़ुदा की राह को बनाओ और
४ उस के तरीक़ों को दुरुस्त करो * यिह यहया ऊंट के बालों की
पोशाक पहनता और चमड़े का कमरबंद अपनी कमर में बांधता
५ था और टिड्डी और जंगली शहद उसकी ख़ूराक थी * तब और
शलीम और सारी यहूदियः और अर्दन के तमाम अतराफ़ के रहने
६ वाले उसपास निकल आये * और अपने गुनाहों का इक़रार
७ करके अर्दन में उस के हाथों से इस्तिबाग़ किये जाते थे * और
जब उस ने देखा कि बहुत से फ़रीसी और ज़दूक़ी इस्तिबाग़
पानेके लिये चले आये तब उन को कहा कि ऐ अफ़यून के बच्चो
८ तुम्हें ग़ज़बि आयंदे से भागना किसने सिखाया * इसवास्ते तुम मेवे
९ जो तौबः के लाइक़ हों लाओ * और अपने दिल में ख़ियाल मत

लाओ कि हमारा बाप इवराहीम है क्यूं कि मैं तुम से कहताहूं
कि ख़ुदा क़ादिर है कि इवराहीम के लिये उन पत्थरों से लड़के
१० पैदा करे * और दरख़्तों की जड़ पर तेशः बिलफ़िअ़्ल रखा गया है
इसवास्ते जिस दरख़्त में कि अच्छा फल नहीं लगता है काटा जाता
११ और आग में डाला जाता है * फ़िल्वाक़िअ़ मैं तुम्हें तौबः के वास्ते
पानी से इस्तिवाग़ देताहूं लेकिन वुह जो मेरे बअ़्द आनेवाला है
मुझ से क़वीतर है कि मैं उसकी जूतियां उठाने के लाइक़ नहीं
१२ वुह तुमको रूहिक़ुद्दस और आग से इस्तिवाग़ देगा * उस के
हाथ में एक छाज है और वुह अपने खलियान को साफ़ करेगा
और अपने गेहूंओं को खत्ते में जमअ़ करेगा और भूसे को उस आग
१३ से जो हरगिज़ नहीं बुझती जलावेगा * तब ईसा जलील से
अर्दन के किनारे पर उस के पास आया ता कि उस से इस्तिवाग़ पावे *
१४ और यहया ने उसे मनअ़ किया और कहा कि मैं तुझ से
इस्तिवाग़ पाने का मुहताज हूं और तू मेरे पास आया है *
१५ तब ईसा ने जवाब में उसे कहा कि अब इजाज़त दे क्यूं कि हमें
यूं मुनासिब है कि सवाब के सब कामों को पूरा करें तब उस ने उसे
१६ इजाज़त दी * और ईसा जब इस्तिवाग़ पाचुका फ़िलफ़ौर पानी से
निकल कर ऊपर आया कि नागाह उसपर आसमान के दरवाज़े
खुलगये और उस ने ख़ुदा की रूह को कबूतर की मानंद उतरते
१७ और अपने ऊपर आते देखा * और एकाएक आसमान से एक
आवाज़ आई कि यिह मेरा प्यारः बेटा है जिस से मैं राज़ी हूं *

चौथा बाब

१ तब ईसा रूहि कुद्स की हिदायत से बियाबान में पहुंचा ता कि
२ इबलीस उस का इम्तिहान करे * और जब वुह चालीस दिन रात
३ रोज़ः रख चुका आख़िर को भूखा हूआ * और इम्तिहान करने वाले
ने उस पास आकर कहा कि अगर तू ख़ुदा का बेटा है
४ तो कह कि ये पत्थर रोटी बन जावें * पर उस ने जवाब दिया
और कहा कि लिखा है कि इनसान फ़क़त रोटी से नहीं
बल्कि हर बात से जो ख़ुदा के मुंह से निकलती है जीता है *
५ उस वक़्त इबलीस उसे शहरि मुक़द्दस में लेगया और हैकल
६ के कंगूरे पर खड़ा किया * और उसे कहा कि अगर तू
ख़ुदा का बेटा है तो अपने तईं नीचे गिरा दे इसवास्ते कि
यूं लिखा है कि वुह अपने फ़िरिश्तों को तेरे लिये हुक्म
करेगा और वे तुझे हाथों पर उठा लेंगे ता ऐसा न हो कि
७ तेरा पांव पत्थर पर लगने पावे * तब ईसा ने उस को कहा
कि यिह भी लिखा है कि तू उस ख़ुदावंद को जो तेरा ख़ुदा है
८ इम्तिहान मत कर * फिर इबलीस उसे एक बड़े ऊंचे पहाड़
पर लेगया और दुनया की हरएक ममलुकत और उन की
९ शौकत उसे दिखाई * और उस को कहा कि अगर तू झुक के
१० मुझे सिजदः करे तो मैं यिह सबकुछ तुझे दूं * तब ईसा ने
उस को कहा कि ऐ शैतान दूर हो इसलिये कि यिह हुक्म लिखा है
तू उस ख़ुदावंद को जो तेरा ख़ुदा है सिजदः कर और फ़क़त उसी

११ की बन्दगी कर * तब इब्लीस ने उसको छोड़ा और वोहीं फ़िरिश्ते
१२ आये और उसकी ख़िद्मत की * और जब ईसा ने सुना कि
१३ यहूया गिरिफ़्तार हूआ तो जलील को रवानः हूआ * और नासरे
को छोड़कर कुफ़रनाहूम में जो ज़ावुल और नफ़ताली की सरहद्दों
१४ में लबि दरया वाक़िअ है आनकर रहा * ताकि वुह जो इशअया
१५ नबी की मअरिफ़त से कहागया था पूरा होवे * कि ज़ावुल और
नफ़ताली की ज़मीन यअ़ने जलील अक़्वाम जो दरया की राह
१६ अर्दन की नहर के पार वाक़िअ है * कि उन्हीं लोगों ने जो
अंधेरे में बैठे थे बड़ी रोशनी देखी और उनपर जो मौत के मुल्क
१७ और साये में बैठे थे नूरि जलवःगर हूआ * उसी वक़्त से ईसा
ने मुनादी करना और यिह कहना शुरूअ किया कि तौवः करो
१८ इसवास्ते कि आस्मान की बादशाहत नज़्दीक है * और जिस
वक़्त कि ईसा दरयाए जलील के किनारे पर चला जाता था उसने दो
भाइयों को यअ़ने शमऊन जो पतरस कहलाता है और उसके
भाई अंद्रयास को दरया में जाल डालते हूए देखा कि वे मछवे
१९ थे * और उसने उन्हें कहा कि मेरे पीछे चले आओ मैं तुम्हें
२० आदमियों का शिकार करनेवाला बनाऊंगा * तब वे फ़िलफ़ौर
२१ जालों को छोड़कर उसके पीछे होलिये * और उसने वहां
से आगे बढ़ के दो भाइयों यअ़ने ज़बदी के बेटे यअ़कूब
और उसके भाई यूहन्ना को अपने बाप के साथ किश्ती पर बैठे
हूए अपने जाल मरम्मत करते देखा और उनको बुलाया *

२२ तब वे फ़िलफ़ौर किश्ती और अपने बाप को छोड़कर उसके पीछे
२३ हो लिये * और ईसा सारी जलील में फिरता हुआ अहलि
जलील के मजमओं में तअलीम देता और ख़ुदा की बादशाहत की
ख़ुशख़बरी सुनाता और सारे दुख दर्दों को जो उन लोगों में थे
२४ दफ़अ करता था * और सारी सिरिये में उसकी शुहरत हुई
और उन सब बीमारों को जो गूनागून बीमारियों और आफ़तों में
गिरिफ़्तार थे और दीवानों को मसरूओं को मफ़लूजों को उसके
२५ पास लाये और उस नें उन को अच्छा किया * और बहुत सी
जमाअतें जलील और मदायनि अशर और ओरशलीम और
यहूदियः और अर्दन के पार से उस के पीछे हुईं *

पांचवां बाब

१ और वुह जमअतों को देखकर एक पहाड़ पर चढ़ गया और
२ जब बैठा उसके शागिर्द उस पास आये * तब उसने अपना
३ मुंह खोला और उन्हें तअलीम के तौर पर कहा * नेकबख़्त
वे हैं जो दिल के मिस्कीन हैं इस लिये कि आसमान की
४ बादशाहत उन्हीं की है * नेकबख़्त वे हैं जो ग़मगीन हैं इसवास्ते
५ कि वे तसल्ली किये जाएंगे * नेकबख़्त हैं वे जो हलीम हैं इस
६ लिये कि वे ज़मीन के वारिस होंगे * नेकबख़्त हैं वे जो रास्ती के
७ भूखे और प्यासे हैं इसवास्ते कि वे सेर होंगे * नेकबख़्त हैं वे जो
८ रहीम हैं इस लिये कि उनपर रहम किया जायगा * नेकबख़्त हैं वे
९ जो साफ़दिल हैं कि वे ख़ुदा को साफ़ देखेंगे * नेकबख़्त हैं वे जो

सुलह करनेवाले हैं इसवास्ते कि वे खुदा के फ़रज़ंद कहलावेंगे *
१० नेकवख़्त हैं वे जो रास्ती के वास्ते सताये जाते हैं इस लिये कि
११ आसमान की बादशाहत उन्हीं की है * नेकवख़्त हो तुम जब
कि लोग तुम्हें मेरे वास्ते मलामत करें और दुख देवें और सब
१२ तरह की झूठी बुरी बातें तुम्हारे हक़ में कहें * खुश हो और वज्द
करो कि तुम्हारा अज्र आसमान पर अज़ीम है इस लिये कि
१३ नबियों को जो तुम से आगे थे इसी तरह सताया है * तुम ज़मीन
के नमक हो और अगर लोन का मज़ः बिगड़ जावे तो वुह किस
चीज़ से मज़ःदार किया जाय फिर वुह किसी काम का नहीं सिवाय
इसके कि बाहर फेंका जाय और लोगों के पांव तले मला जावे *
१४ तुम दुनया के नूर हो जो शहर के पहाड़ पर वाक़िअ हूआ है
१५ छिप नहीं सकता * और चिराग़ रोशन करके पैमाने के नीचे नहीं
बल्कि चिराग़दान पर रखते हैं तद वुह सब को जो उस घर में हैं
१६ रोशनी बख़शता है * सो तुम्हारी रोशनी आदमियों के साम्हने वैसी
ही चमके ताकि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और तुम्हारे
१७ बापकी जो आसमान पर है सिताइश करें * यिह गुमान मत
करो कि मैं इसलिये आयाहूं कि तौरेत और नबियों की किताबों
को ज़ाइअ करूं मैं ज़ाइअ करने को नहीं आया बल्कि पूरा करने
१८ को आया हूं * इस वास्ते कि मैं तुम से सच कहता हूं जिस वक़्त
तक कि आसमान और ज़मीन ज़ाइल नहों एक नुक़्तः या एक
शोशः तौरेत से हरगिज़ ज़ाइल नहोगा जबतक सब मुकम्मल

१९ नहोवे * पस जो कोई कि इन बहुत छोटे हुक्मों में से ऐक को खुल करे और वैसाही आदमियों को सिखावे आसमान की बादशाहत में कमतरीन कहलायगा पर जो कोई कि अमल करे और सिखलावे आसमान की बादशाहत में वही बड़ा कहलायगा
२० क्यूंकि मैं तुम्हें कहताहूं कि अगर तुम्हारी नेकी फ़रीसियों और कातिबों की नेकी से ज़ियादः नहो तो तुम आसमान की बादशाहत
२१ में किसी तरह से दाख़िल नहोगे * तुम सुन चुके हो कि अगलों से क्या कहा गया है कि तू ख़ून मत कर और जो कोई कि ख़ून
२२ करेगा अदालत से मुलज़िम होगा * पर मैं तुम्हें कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर बे सबब गुस्से होवे अदालत से मुलज़िम होगा और जो कोई अपने भाई को रका कहे मजलिस में मुलज़िम होगा पर जो कोई कहे कि तू अहमक़ है आतिशि
२३ जहन्नम का सज़ावार होगा * पस अगर तू क़ुरबानगाह में अपना हदयः लेजावे और वहां तुझे याद आवे कि तेरा भाई
२४ तुझ से कुछ क़ज़ियः रखता है * वहां अपने हदये को क़ुरबान गाह के साम्हने छोड़कर चलाजा पहले अपने भाई से मिलाप
२५ कर तब आके अपना हदयः गुज़रान * जिसवक़ तक कि तू अपने मुद्दई के साथ राह में है जल्द उस से मुवाफ़िक़त कर ता ऐसा नहोवे कि मुद्दई तुझे क़ाज़ी के हवालः करे और क़ाज़ी तुझ को
२६ सरहंग के सुपर्द करदे और तू क़ैद में डाला जावे * मैं तुझ से सच कहता हूं कि तू वहां से जब तक बाक़ी की ऐक कोड़ीतक

२७ अदा नकरे किसी तरह नछूटेगा * तुम सुन चुके हो कि अगलों
२८ से यों कहागया है कि तू ज़िना नकर * पर मैं तुम्हें कहता हूं
कि जो कोई शहवत से किसी रंडी पर निगाह करे अपने दिल में
२९ वोहीं उस के साथ ज़िना कर चुका * पस अगर तेरी दाहनी
आंख तेरे ठोकर खाने का बाइस हो तो उसे निकाल डाल और
फेंक दे क्यूंकि तेरे अज़वों में से एक अज़व का नहोना तेरे लिये
उस से बिहतर है कि तेरा सारा बदन जहन्नम में डाला जावे *
३० और अगर तेरा दाहना हाथ तेरे ठोकर खाने का बाइस होवे
उसे काट डाल और फेंक दे क्यूंकि तेरे अज़वों से एक अज़व
का न होना तेरे लिये उस से बिहतर है कि तेरा सारा बदन
३१ जहन्नम में डाला जावे * यिह तो कहागया है कि जो कोई
३२ अपनी जोरू को तलाक़ दे उसे तलाक़ नामः लिख देवे * पर मैं
तुम्हें कहता हूं कि जो कोई अपनी जोरू को सिवाय हराम
कारी के किसी सबब से तलाक़ देवे उसे ज़िना करवाता है और
जो कोई उस रंड़ी से जिसे तलाक़ दियागया है निकाह करे
३३ ज़िना करता है * और वुह भी तुम सुन चुके हो जो अगलों
से कहागया है कि तू झूठी क़सम नखा बल्कि अपनी क़समें
३४ पर ख़ुदावंद के लिये वफ़ा कर * पर मैं तुम्हें कहता हूं हरगिज़
क़सम न खाना न तो आसमान की क्यूंकि वुह ख़ुदा का तख़्त है *
३५ और न ज़मीन की कि वुह उस के पांव की जगह है और न
ओरशलीम की क्यूंकि वुह बादशाह अज़ीम का शहर है *

३६ और न तू अपने सिर की क़सम खा कि तू एक बाल को सुफ़ेद या
३७ काला नहीं कर सकता * बल्कि तेरी गुफ़्तगू चाहिये कि फ़क़त्
हां हां और नहीं नहीं हो क्यूंकि जो उस से ज़ियादः हो
३८ शर से होता है * तुम सुन चुके हो जो कहागया है कि आंख के
३९ बदले आंख और दांत के बदले दांत * पर मैं तुम से कहता हूं
कि शर॰से मुक़ाबलः न करना बल्कि जो कोई तेरे दहने गाल पर
४० तमांचः मारे तू दूसरा भी उस की तरफ़ फेर दे * और अगर कोई
चाहे कि अदालत में तुझ पर दादख़्वाह हो और तेरी क़बा उतार
४१ लेवे कुरतः भी उसे दे डाल * और जो कोई तुझे जब्र से कोस
४२ भर ले जावे तू उस के साथ दो कोस चला जा * जो तुझ से
कुछ मांगे उसे दे और जो कोई तुझ से क़र्ज़ मांगे उस से
४३ मुंह न मोड़ * तुम सुन चुके हो जो कहागया है कि तू अपने
पड़ोसी से दोस्ती रख और अपने दुश्मन से अदावत रख *
४४ पर मैं तुम्हें कहता हूं कि अपने दुश्मनों को प्यार करो और
जो तुम पर लानत करें उन के लिये बरकत चाहो जो तुम से
अदावत करें उन से नेकी करो और जो तुम्हें सतावें और दुख देवें
४५ उन के लिये दुआ करो * ताकि तुम अपने बाप के जो
आसमान पर है फ़रज़ंद होओ क्यूंकि वुह अपने आफ़ताब
को बदों और नेकों पर तालिअ करता है और आदिलों और
४६ ज़ालिमों पर मेंह बरसाता है * कि अगर तुम उन्हीं को जो
तुम्हें दोस्त रखते हैं दोस्त रखो तो तुम्हारा क्या अजर है क्या ख़िराज

४७ लेने वाले यिह नहीं करते * और अगर तुम फ़क़त अपने भाइयों को सलाम करो तो औरों पर तुम्हें क्या फ़ज़ीलत है क्या
४८ ख़िराज लेने वाले यिह नहीं करते * इस लिये तुम कामिल बनो जैसा तुम्हारा बाप जो आसमान पर है कामिल है *

छठा बाब

१ ख़बरदार तुम लोगों के साम्हनें अपनी ख़ैरात न करो इस नीयत से कि वे देखें और नहीं तो तुम्हारे बाप पास जो आसमान पर है तुम्हारा
२ कुछ अजर नहीं * इस लिये जिसवक़्त तू ख़ैरात करता है अपने साम्हने तुरही न बजाया कर कि इस तरह अहलि रिया मजमओं में और रस्तों में बजाते हैं ता कि लोग उनकी सिताइश करें
३ मैं तुम से सच कहता हूं कि वे अपना अजर पाचुके * बल्कि जब तू ख़ैरात करे चाहिये कि तेरा बायां हाथ जो कुछ तेरा दहना
४ हाथ करे न जाने * ताकि तेरी ख़ैरात छिपी रहे और तेरा बाप
५ जो पर्दे में देखता है वुह ख़ुद आशकारा अजर देगा * और जिस वक़्त तू नमाज़ करे रियाकारों के मानंद मत हो क्यूंकि वे मजमओं में और रस्तों के कोनियों में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने को दोस्त रखते हैं ता कि लोग उन्हें देखें मैं तुम से
६ सच कहता हूं कि वे अपना अजर पाचुके * लेकिन तू जब नमाज़ करे तू अपने ख़िलवतख़ाने में जा और अपना दरवाज़ः बंद करके अपने बाप से जो पोशीदः है दुआ मांग और तेरा बाप जो पर्दे में देखता है तुझे आशकारा अजर देगा *

७ और जब तुम नमाज़ करते हो ज़ियादः बक बक नकरो कि इस तरह अवाम के लोग करते हैं क्यूंकि वे यिह गुमान करते हैं कि उनको ज़ियादः गोई से उन की दुआ सुनी जायगी *
८ पस तुम उनकी मानंद मत हो क्यूंकि तुम्हारा बाप पेश्तर उस से कि तुम उस से मांगो जानता है कि तुम किन किन
९ चीज़ों के मुहताज हो * इसवास्ते तुम नमाज़ इसतरह से करो कि ऐ हमारे बाप जो आसमान पर है तेरा नाम मुक़द्दस रहे *
१० तेरी ही बादशाहत आवे और तेरी मुराद जैसा आसमान पर
११ है ज़मीन पर भी बरआवे * हमारे रोज़ीने की रोटी आज
१२ हम को बख़्श * और जिस तरह से कि हम अपने क़र्ज़दारों को
१३ बख़्शते हैं तू अपने दैन हमको बख़्श दे * और हमको इम्तिहान में नडाल बल्कि शर से बचा क्यूंकि बादशाहत और तवानाई
१४ और जलाल ता अबद तेरी है आमीन * इसलिये कि अगर तुम आदमियों के गुनाह बख़्शोगे तुम्हारा बाप जो आसमन पर
१५ है तुम्हें भी बख़्शेगा * और अगर तुम आदमियों के गुनाह
१६ न बख़्शोगे तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह न बख़्शेगा * और जब तुम रोज़ः रखो रियाकारों की मानंद तुर्श रू मतहो क्यूंकि वे अपना मुंह बनाते हैं ताकि लोग उन्हें रोज़ःदार जानें मैं तुम
१७ से सच कहता हूं कि वे अपना अजर पाचुके * पर जब तू रोज़ः रखे अपने सिर को चिकना कर और अपने मुंह को धो
१८ ता कि तुझे रोज़े से न आदमी बल्कि तेरा बाप जो पोशीदः है

जाने और तेरा बाप जो पर्दे में देखता है तुझे आशकारा अज्र
१९ देगा * माल अपने वास्ते ज़मीन पर जमअ मत करो कि वहां
कीड़ा और ज़ंग ख़राब करता है और चोर सींध देते हैं और
२० चुराते हैं * बल्कि माल अपने लिये आसमान पर जमअ करो
वहां न कीड़ा और न ज़ंग ख़राब करता है और न चोर वहां
२१ सेंध देते और न चुराते हैं * क्यूंकि जिस जगह तुम्हारा माल
२२ है तुम्हारा दिल भी वहीं लगा रहेगा * बदन का चिराग़ आंख है
पस अगर तेरी आंख साफ़ हो तो तेरा सारा बदन नूरानी होगा *
२३ और अगर तेरी आंख बुरी हो तेरा सारा बदन अंधेरा होगा इसलिये
अगर यिह रोशनी जो तुझ में है तारीकी बन जाय क्या बड़ी
२४ तारीकी होगी * कोई शख़्स दो आक़ाओं की ख़िदमत नहीं कर
सकता इसलिये कि वुह या एक से दुशमनी रखेगा और दूसरे से
दोस्ती या वुह पहले की रिफ़ाक़त करेगा और दूसरे से बेज़ार
होगा तुम ख़ुदा और मामूना दोनों की बन्दगी नहीं कर सकते *
२५ इस लिये मैं तुम से कहता हूं तुम अपनी ज़ीस्त के लिये फ़िक्र
न करो कि हम क्या खायेंगे और हम क्या पियेंगे और न अपने बदन
के लिये कि हम क्या पहनेंगे क्या जान ख़ुराक से बिहतर नहीं और
२६ बदन पोशाक से * हवा के परन्दों पर नज़र करो कि वे बोते नहीं
और न काटते हैं और न खलयान में जमअ करते हैं और तुम्हारा
बाप जो आसमान पर है उन की परवरिश करता है क्या तुम
२७ उन से बिहतर नहीं हो * तुम में से वुह कौन है जो फ़िक्र

२८ करके अपने क़द को एक हाथ बढ़ा सके * और पोशाक का क्यूं अंदेशः करते हो जंगली सोसन के फूलों को देखो वे क्यूंकर
२९ बढ़ते हैं न वे मिहनत करते हैं और न वे कातते हैं * और मैं तुम से कहता हूं कि सुलैमान अपनी सारी शौकत में उन में से
३० एक की मानंद मुलब्बस न था * पस जब ख़ुदा मैदान की घास को जो आज है और कल तनूर में झोंकी जायगी यूं पहनाता है क्या ऐ कम इअ़तिक़ादो इस में कि वुह तुम को पहनायगा कुछ
३१ शक है * इस लिये अंदेशे से न कहो कि हम क्या खावें और
३२ हम क्या पीएं और क्या पहनें * इस वास्ते कि अ़वाम इन चीज़ों की तलाश करते हैं और तुम्हारा बाप जो आसमान पर है जानता
३३ है कि तुम उन सब चीज़ों के मुह़ताज हो * बल्कि तुम ख़ुदा की बादशाहत और उसकी रास्ती की तलाश पहले करो और उन
३४ पर ये सब चीज़ें तुम्हारे लिये अफ़ज़ूद की जायेंगी * पस तुम कल की फ़िक्र मत करो क्यूंकि ख़ुद कल अपनी चीज़ों की आपही फ़िक्र करेगा रोज़ के लिये उसी रोज़ का दुख बस है *

सातवां बाब

नुकतः चीनी न करो ता कि तुम्हारी नुकतः चीनी न की जावे *
२ क्यूंकि जो नुकतः चीनी कि तुम करोगे वैसेही तुम्हारी नुकतः चीनी की जायगी और जिस पैमाने से तुम पैमाइश करते हो उसी
३ से फिर तुम्हारे वास्ते पैमाइश की जायगी * और तू उस तिनके को जो तेरे भाई की आंख में है क्यूं देखता है और उस शहतीर

४ की फ़िक्र जो तेरी आंख में है नहीं करता * और क्यूंकर तू अपने भाई को कहता है कि वुह कुनका तेरी आंख से ला
५ निकाल दूं और देख कि तेरी आंख में एक शहतीर है * ओ मक्कार पहले तू उस शहतीर को अपनी आंख से निकाल कि तब तू कुनक को अपने भाई की आंख से अच्छी तरह से देख कर
६ निकाल सकेगा * जो चीज़ कि पाक है कुत्तों को मत दो और अपने मोती सूवरों के आगे मत फ़ेंको ता ऐसा न हो कि वे
७ उन्हें पामाल करें और फिर कर तुम हीं को फाड़ें * मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे
८ वास्ते खोला जायगा * क्यूंकि जो कोई मांगता है लेता है और जो कोई ढूंढता है पाता है और जो कोई खटखटाता है उस के
९ लिये खोला जायगा * आया तुम में से कौन शख़्स है कि अगर
१० उसका बेटा उस से रोटी मांगे वुह उसको एक पत्थर देवे * या
११ अगर वुह मछली मांगे वुह उसे एक सांप देवे * पस जब तुम बावजूद बद होने के अपने फ़रज़न्द को तुहफ़ः हदये दे जानते हो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है कितना बतरीक़ अला तुहफ़ः
१२ चीज़ें उन्हें जो उस से मांगते हैं देगा * पस जो जो सलूक तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम भी उन से वही करो कि
१३ तौरेत और अंबिया यही हैं * तुम छोटे दरवाज़े से दाख़िल हो क्यूंकि बड़ा है वुह दरवाज़ः और कुशादः है वुह रस्तः कि हलाकत को पहुंचाता है और बहुत हैं कि उसी से दाख़िल

१४ होते हैं * क्यूंकि छोटा है वुह दरवाज़ः और तंग है वुह रस्तः जो ज़िन्दगानी को पहुंचाता है और वे जो उसे पाते हैं थोड़े
१५ हैं * झूठे पैग़ंबरों से मुहतात रहो कि तुम्हारे पास भेड़ों
१६ की पोशाक में आते हैं बातिन में दरन्दे भेड़िये हैं * तुम उन्हें उनके फलों से पहचानोगे क्या लोग कांटों से अंगूर या
१७ ऊंटकटारे से अंजीर हासिल करते हैं * इसी तरह से हरएक अच्छा दरख़्त अच्छा फल लाता है और नाकारः दरख़्त बुरा फल
१८ लाता है * अच्छा दरख़्त बुरा फल ला नहीं सकता और न बुरा
१९ दरख़्त अच्छा फल ला सकता है * जो दरख़्त अच्छा फल नहीं
२० लाता काटा जाता और आग में डाला जाता है * सो तुम उन्हें
२१ उन के फलों से पहचानोगे * न हरएक कि मुझे ख़ुदावंद ख़ुदावंद कहता है आसमान की बादशाहत में दाख़िल होगा मगर
२२ वही जो मेरे बाप के इरादे के मुवाफ़िक़ अमल करता है * बहुतेरे मुझ को उस दिन कहेंगे कि ऐ ख़ुदावंद ऐ ख़ुदावंद क्या हम ने तेरे नाम से पैग़ंबरी नहीं की और तेरे नाम से देवों को नहीं भगाया और तेरे नाम से बहुत सी करामतें ज़ाहिर नहीं कियां *
२३ और उस वक़्त मैं उन से साफ़ कहूंगा कि मैं तुम से कभी वाक़िफ़
२४ न था ऐ बदकारो मुझ पास से दूर हो * पस जो कोई मेरे लिये बातें सुनता है और उन पर अमल करता है मैं उसे एक दानिशमंद से तशबीह देता हूं जिस ने चट्टान पर अपना घर बनाया *
२५ और मेंह बर्सा और सैलाब आये और आंधियां चलीं और उस

घर पर सदमः पहुंचाया और वुह न गिरा क्यूंकि चट्टान पर
२६ बनाया गया था * और जो कोई मेरी बातें सुनता है और उन
पर अ़मल नहीं करता एक मर्द बेवक़ूफ़ से तश्बीह दिया
२७ जायगा जिस ने अपना घर रेती में बनाया * और मेंह बर्सा
और सैलाब आये और आंधियां चलीं और उस घर पर सदमः
पहुंचाया और वुह गिर पड़ा और उस का गिरना अ़ज़ीम हूआ *
२८ और जब ईसा यिह कलाम कर चुका वे जमाअ़तें उसकी तअ़लीम
से दंग हो गईं क्यूंकि वुह उनको इख़्तियार रखने वाले की
मानंद न कातिबों की तरह तअ़लीम करता था *

आठवां बाब

१ जब वुह उस पहाड़ से उतरा बहुत सी जमाअ़तें उस के पीछे हो
२ लियां * और देखो कि एक कोढ़ी ने आकर उसे सिजदः किया
और कहा कि ऐ ख़ुदावंद अगर तू चाहे तो मुझे साफ़ पाक
३ कर सकता है * और ईसा ने अपना हाथ लंबा करके उसको छूआ
और कहा कि मैं तो चाहताहूं तू पाक हो जा और वोहीं उसका
४ कोढ़ साफ़ जाता रहा * तब ईसा ने उसे कहा कि देख किसी से
मत कहियो पर जा और अपने तईं काहिन को दिखा और
हदयः जो मूसा ने मुक़र्रर किया है दे ता कि उन पर उसका
५ सुबूत हो * और जब ईसा कुफ़रनाहूम में दाख़िल हूआ
६ एक जमाअ़दार ने पास आकर उसकी मिन्नत की * और कहा ऐ
ख़ुदावंद मेरा छोकरा घर में फ़ालिज की बीमारी से बहुत

७ अज़ाब में पड़ा है * तब ईसा ने उस को कहा कि मैं आकर
८ उसे चंगा करूंगा * और उस जमाअदार ने जवाब दिया कि ऐ
ख़ुदावंद मैं इस लाइक़ नहीं कि तू मेरी छत तले आवे लेकिन
९ सिर्फ़ कलिमः कह कि मेरा छोकरा चंगा हो जायगा * क्यूंकि
मैं ऐक आदमी हूं जो दूसरे के हुक्म में हूं और सिपाही मेरे
हुक्म में हैं और मैं ऐक को कहता हूं कि जा और वुह जाता
है और दूसरे को कि आ और आता है और अपने ख़ादिम को
१० को यिह कर और वुह करता है * तब ईसा ने सुनकर तअज्जुब
किया और उन को जो उसके पीछे थे कहा मैं तुम से सच
कहताहूं कि मैं ने ऐसा बड़ा इअतिक़ाद बनीइसराईल में नपाया *
११ और मैं तुम से कहताहूं कि बहुतेरे मशरिक़ और मग़रिब से
आवेंगे और इबराहीम और इसहाक़ और यअक़ूब के साथ
१२ आसमान की बादशाहत में बैठेंगे * पर उस बादशाहत के ये
लड़के बाहर अंधेरे में डाले जायेंगे वहां रोना और दांत पीसना
१३ होगा * तब ईसा ने उस जमाअदार से कहा कि जा और जैसा
कि तू ने इअतिक़ाद किया है तेरे वास्ते वैसा ही कुछ हो और
१४ उसका छोकरा बस उसी घड़ी चंगा हूआ * और ईसा ने पतरस
के घर में आकर देखा कि उसकी सास पड़ी हूई और तप से
१५ बीमार है * और उस ने उस के हाथ को छूआ और तप ने उसे
१६ छोड़ दिया और उस ने उठ के उनकी ख़िदमत की * जब शाम हूई
उस के पास बहुत से दीवानों को लाये और उस ने बात से

१७ पलीद रूहों को दूर किया और बीमारों को चंगा किया * ता कि वुह जो इशअया नबी की मअरिफ़त से कहा कि उस ने तो हमारी
१८ हालतियां लेलियां और बीमारियां उठाइयां पूरा होवे * और जब ईसा ने बहुत सी जमाअतें अपने गिर्द देखीं उस ने हुक्म
१९ किया कि पार जावें * और एक कातिब ने आकर उस से कहा
२० कि ऐ मुअल्लिम जहां कहीं तू जाय मैं तेरे पीछे चलूंगा * तब ईसा ने उस से कहा कि लोमड़ियों के लिये मांदें और हवा के परन्दों के लिये बसेरे के मकान हैं पर इबनि आदम के लिये
२१ जागह नहीं जहां अपना सिर धरे * और दूसरे ने उसके शागिर्दों में से उस से कहा ऐ ख़ुदावंद मुझे इजाज़त दे कि
२२ पहले जाऊं और अपने बाप को दफ़न करूं * पर ईसा ने उस से कहा कि मेरे पीछे चल और जाने दे कि मुर्दे अपने
२३ मुर्दों को गाड़ें * और जब वुह एक किश्ती पर चढ़ा उसके
२४ शागिर्द उसके पीछे हो लिये * और देखो कि दरया में उस शिद्दत का तूफ़ान हूआ कि किश्ती मौजों से छिप गई थी और
२५ वुह नींद में था * तब उसके शागिर्दों ने उस पास आके उसे उठाया और कहा कि ऐ ख़ुदावंद हम को बचा हम तबाह होते
२६ हैं * उसने उन्हें कहा ऐ कम इअतिक़ादो तुम क्यूं ख़ौफ़नाक हो फिर उसने उठके हवाओं और दरया को डांटा तब बड़ा
२७ चैन होगया * और लोग मुतअज्जिब होके कहने लगे कि यिह किस तरह का आदमी है कि हवायें और दरया भी

२८ उसके कहने में हैं * और जब वुह पार जरजसईन के मुल्क में पहुंचा दो दीवाने गोरिस्तान से निकलते हुए जो ऐसे तुंद थे कि उस रस्ते से कोई गुज़र न सकता था उसको मिले *
२९ और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा खुदाके बेटे ईसा हमें तुझ से क्या काम क्या तू यिहां आया है कि वक़्त से आगे
३० हम को सतावे * और उन से दूर सूवरों का एक बड़ा गल्लः चरता
३१ था * चुनांचिः देवों ने उसकी मिन्नत करके कहा कि अगर तू हमको दूर करता है तो हमें रुख़्सत दे कि हम उन सूवरों
३२ के गल्ले पर जावें * तब उसने उन्हें कहा कि जाओ और वे निकल कर उन सूवरों के गल्ले पर गये और देखो वुह सूवरों का सारा गल्लः कड़ारे पर से हट दरया में जा गिरा
३३ और पानी में डूब कर मरगया * तब चराने वाले भागे और शहर में जाकर सब माजरा और उन दीवानों का अहवाल बयान
३४ किया * और देखो वुह सारा शहर ईसा की मुलाक़ात करने को निकला और जब उन्हों ने उसको देखा तो मिन्नत की कि उनकी सरहद से बाहर जाय *

नवां बाब

१ वुह फिर किश्ती पर चढ़ के पार उतरा और अपने शहर में
२ आया * और देखो कि एक मफ़लूज को बिस्तर पर डाल के उस पास लाये और ईसा ने उन का इअतिक़ाद देख कर उस मफ़लूज को कहा कि ऐ फ़रज़ंद ख़ातिर जमअ़ रख कि

३ तेरे गुनाह बख़्शे गये * तब बअ़ज़े कातिबों ने अपने दिल में
४ कहा कि यिह कुफ़र बकता है * और ईसा ने उनके गुमानों
को दरयाफ़्त कर के कहा कि क्यूं तुम अपने दिल में बद
५ गुमानी करते हो * इस लिये कि क्या बहुत आसान है यिह
कहना कि तेरे गुनाह बख़्शे गये या यिह कहना कि उठ
६ और चल * लेकिन ता कि तुम जानो कि इबनि आदम को
ज़मीन पर गुनाहों के बख़्शने का इख़्तियार है उस ने उस
मफ़लूज को कहा कि उठ अपना बिस्तर उठा और अपने
७ घर चलाजा * और वुह उठ कर अपने घर चला गया *
८ और जमाअ़तें यिह देख कर हैरान हूईं और ख़ुदा की तअ़रीफ़
९ की कि उसने ऐसी क़ुदरत इनसान को बख़्शी * और जों
ईसा वहां से आगे बढ़ा उसने ऐक शख़्स ख़िराजगाह पर
बैठा हूआ देखा जिसका नाम मत्ती था और उसे कहा मेरे
१० पीछे चल वुह उठ कर उसके पीछे हो लिया * और यों हूआ
कि जब वुह घर में खाने बैठा बहुत से ख़िराज लेने वाले और
गुनहगार आकर ईसा के और उसके शागिर्दों के साथ बैठ
११ गये * और फ़रीसियों ने यिह देख कर उसके शागिर्दों को कहा
कि तुम्हारा मुअ़ल्लिम ख़िराज लेने वालों और गुनहगारों के साथ
१२ क्यूं खाता है * ईसा नें सुन कर उनको कहा वे जो तनदुरुस्त
१३ हैं तबीब के मुहताज नहीं मगर वे जो बीमार हैं * पर तुम
जाकर उसके मअ़ने दरयाफ़्त करो कि मैं रहम को न क़ुरबानी

को चाहता हूं कि मैं नेकों को नहीं बल्कि गुनहगारों को
१४ तौबः के लिये बुलाने आया हूं * उस वक़्त यह्या के
शागिर्दों ने आकर उसको कहा क्यूं हम और फ़रीसी अकसर
१५ रोज़ः रखते हैं और तेरे शागिर्द रोज़ः नहीं रखते * तब ईसा
ने उन्हें कहा कि आया बराती जब तक कि दूल्हा उनके साथ
है मातम कर सकते हैं लेकिन वे दिन आवेंगे कि जब दूल्हा
१६ उन से जुदा किया जायगा और तब वे रोज़ः रखेंगे * हरगिज़
कोई पुरानी पोशाक में कोरे थान के टुकड़े का पैवंद नहीं करता
क्यूंकि वुह टुकड़ा जिस का पैवंद किया गया उस पोशाक से
१७ कुछ खैंच लेता है और बदतर दरीदगी पैदा होती है * और
लोग नई शराब को पुरानी मशकों में नहीं रखते नहीं तो मशकें
फट जाती हैं और शराब बह जाती है और मशकें ज़ायअ
होती हैं बल्कि नई शराब को नई मशकों में भरते हैं कि वे
१८ दोनो बेहतर हैं * जिस दम वुह उनसे यिह कलाम करता
था देखो एक सरदार ने आकर उसे सिजदः किया और कहा
कि मेरी बेटी अभी मर गई तू आकर अपना हाथ उस पर
१९ धर कि वुह जी उठेगी * और ईसा उठ कर उसके पीछे चला
२० और उसके शागिर्द भी उसके साथ गये * और देखो एक रंडी
ने जिसका बारह बरस से लोहू जारी था उसके पीछे से आकर
२१ उसके जामे के दामन को छूआ * कि अपने जी में कहती थी कि
अगर मैं ख़ाली उसके पैराहन को छूऊं मैं तनदुरुस्त हो जाऊंगी *

२२ तब ईसा ने पीछे फिर कर उसे देख कर कहा कि ऐ बेटी ख़ातिर
जमअ रख कि तेरे इअतिक़ाद ने तुझे चंगा किया और वुह रंडी बस
२३ उसी घड़ी चंगी हूई * और जब ईसा उस सरदार के घर पहुंचा
२४ और नौहःगरों और हंगामःसाज़ों को देखा * उनको कहा कि
किनारे हो यिह लड़की मर नहीं गई नींद में है और
२५ वे उस पर हंसे * और जब वे लोग बाहर निकाले गये उसने
२६ अंदर जाकर उसका हाथ पकड़ा और वुह लड़की उठी * तब
२७ उसकी शुहरत उस सब सरज़मीन में मची * और जब ईसा
वहां से रवानः हूआ दो अंधे उसके पीछे पुकारते हूए आये
२८ और बोले कि ऐ दाऊद के बेटे हम पर रहम कर * और
जब वुह घर में पहुंचा अंधे उसके पास आये ईसा ने उन्हें
कहा आया तुम्हें इअतिक़ाद है कि मैं यिह काम कर सकता
२९ हूं वे बोले हां ऐ ख़ुदावंद * तब उसने उनकी आंखों को
छूआ और कहा कि जैसा तुम्हारा इअतिक़ाद है तुम्हारे वास्ते
३० वैसा ही हो * और उनकी आंखें खुल गईं और ईसा ने
३१ ताकीद करके उनसे कहा कि देखो कोई न जाने * पर उन्हों ने
३२ जाके उस सारी विलायत में उसकी शुहरत दी * और वे जब
बाहर गये लोग एक गूंगे दीवानः आदमी को उस पास ले आये *
३३ और जब वुह देव दूर किया गया वुह गूंगा बोला और जमाअतें
हैरान होकर कहने लगीं कि ऐसा कभी बनीइसराईल में न
३४ देखा था * पर फ़रीसियों ने कहा कि वुह देवों के सरदार की

३५ कमक से देवों को निकालता है * और ईसा उन सब शहरों और गांओं में उन के मजमओं में तअलीम करता और उस बादशाहत की खुशख़बरी देता और उन लोगों के हरएक दर्द और
३६ हरएक आज़ार को दूर करता फिरा * और जब उस ने जमाअतों को देखा उसे उनपर रहम आया क्यूंकि वे उन भेड़ों की मानंद जो
३७ वे चोपान हों आजिज़ और मुतफ़र्रिक़ थीं * तब उसने अपने शागिर्दों से कहा कि फ़िलहक़ीक़त पक्की हुई ज़िराअत
३८ तो बहुत है लेकिन मज़दूर कम हैं * इस लिये तुम ज़िराअत के मालिक से चाहो कि वुह अपनी ज़िराअत के वास्ते मज़दूर भेज दे *

दसवां बाब

१ फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को पास बुला कर उन्हें क़ुदरत बख़शी ता कि पलीद रूहों को निकालें और हर तरह की
२ बीमारी और हर क़िसम के आज़ार से शिफ़ा बख़शें * और बारह हवारियों के नाम ये हैं पहला शमऊन जो पतरस कहलाता है और उसका भाई अंद्रयास और ज़बदी का बेटा यअक़ूब और
३ उसके भाई यूहन्ना * और फ़ैलबूस और बरतूलमा और तवामान और ख़िराज लेनेवाला मत्ती और हलफ़ा का बेटा यअक़ूब
४ और लबी जिसका लक़ब सदी था * और शमऊनि किनआनी
५ और यहूदाऐ असकरयूती जिस ने उसे पकड़वा दिया * ईसा ने उन बारहों को हुक्म कर के भेजा और कहा कि तुम अक़ाम

की तरफ़ न जाना और सामरियों के किसी शहर में दाख़िल
६ न होना * बल्कि बिनइस्राईल ईसराईल के घर की गुम शुदः
७ गोसपन्दों की तरफ़ जाओ * और तुम चलते हुऐ ख़बर दो
८ और कहो कि आसमान की बादशाहत नज़दीक हुई *
बीमारों को चंगा करो कोढ़ियों को अच्छा करो मुर्दों को जिलाओ
९ देवों को दूर करो तुम ने मुफ़्त पाया है मुफ़्त दो * सोना और रूपा
१० और तांबा अपनी कमरों के लिये मुहैया न करो * और न
अनपान सफ़र के लिये और न दो क़बायें और न जूती और न
लाठी इस लिये कि मज़दूर अपनी ख़ूराक का मुस्तौजिब है *
११ और जिस शहर या गांव में तुम जाओ तफ़हीस करो कि लाइक़
१२ वहां कौन है और जब तक वहां से निकलो वहीं रहो * और
१३ जब तुम किसी घर में जाओ उसे सलाम करो * और अगर
वुह घर लाइक़ है तुम्हारा सलाम उसे पहुंचेगा और अगर
१४ नालाइक़ है तुम्हारा सलाम तुम्हीं पर फिर आवेगा * और
जो कोई तुम्हारी पासदारी न करे और तुम्हारी बातें न सुने तो
जब तुम उस घर या उस शहर से कूच करो अपने पांव की
१५ गर्द झाड़ो * मैं तुम से सच कहता हूं कि अदालत के दिन
सदूम और आमूरा की ज़मीन के लिये उस शहर की निसबत
१६ से ज़िआदः आसानी होगी * देखो मैं तुम्हें भेड़ों की मानंद
भेड़ियों के बीच में भेजता हूं पस तुम जैसे सांप हुशयार और जैसे
१७ कबूतर बे बद हो * मगर लोगों से हुशयार रहो क्यूंकि वे तुम को

कचहरियों में पकड़वायेंगे और वे तुम को अपने मजमओं में कोड़े
१८ मारेंगे * और तुम मेरे वास्ते हाकिमों और बादशाहों के आगे
हाज़िर किये जाओगे ताकि उनपर और अवाम के लोगों पर गवाही
१९ होवे * लेकिन जब वे तुम्हें पकड़वायें तुम फ़िक्र न करना कि हम
क्यूंकर कहें या क्या कहें इसलिये कि उसी घड़ी तुम्हें उन बातों
२० की जो तुम कहोगे आगाही दी जायगी * क्यूंकि यिह तुम नहीं
जो कहते हो बल्कि तुम्हारे बाप की रूह है जो तुम में कहती
२१ है * और भाई भाई को और बाप फ़र्ज़ंद को क़तल के लिये
पकड़वायेगा और लड़के अपने मा बाप का मुक़ाबलः करेंगे और
२२ उन्हें हलाक करवायेंगे और मेरे नाम के वास्ते सब तुम से दुश्मनी
करेंगे पर जो कोई कि आख़िर तक सबर करेगा नजात पावेगा *
२३ और जब वे तुम्हें एक शहर में सतावें तुम दूसरे शहर को
भाग जाओ मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम इसराईल की बस्तियों
२४ में दरोबस्त न फिरोगे जब तक कि इबनि आदम न आले *
२५ शागिर्द उस्ताद पर और ख़ादिम मख़दूम से बाला नहीं * बस है
कि शागिर्द अपने उस्ताद की मानंद और ख़ादिम मख़दूम के
बराबर हो और जब कि उन्हों ने साहिबिख़ानः का नाम बाअलज़बूल
२६ रखा है कितना कुछ ज़ियादः घराने के लोगों का नाम धरेंगे * पस
तुम उनसे मत डरो क्यूंकि ऐसी कोई चीज़ पोशीदः नहीं जो
२७ ज़ाहिर न हो और मख़फ़ी जो जानी नजाय * जो कुछ कि मैं तुम्हें
अंधेरे में कहता हूं तुम उसे उजाले में कहो और जो कुछ कि

२८ तुम्हारे कान में कहा जाय कोठों पर बरमला कहो * और उन से जो बदन को मारते हैं और जान को मार नहीं सकते न डरो बल्कि मख़सूस उस से डरो जो क़ादिर है कि जान और तन
२९ दोनों को जहन्नम में हलाक करे * क्या अधेले को दो चिड़ियां नहीं बिकतीं और उन में से एक भी तुम्हारे बाप की बे इत्तिलाअ
३० ज़मीन पर नहीं गिरती * और तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने
३१ हुए हैं * पस तुम मत डरो क्यूंकि तुम बहुत सी चिड़ियों से
३२ बिहतर हो * पस जो कोई कि लोगों के आगे मेरा मुक़िर होगा मैं भी अपने बाप के आगे जो आसमान पर है उसका मुक़िर
३३ हूंगा * और जो कोई कि लोगों के आगे मेरा मुनक़िर होगा मैं भी अपने बाप के आगे जो आसमान पर है उसका मुनक़िर
३४ हूंगा * यिह गुमान न करो कि मैं ज़मीन पर मिलाप करवाने आया हूं मिलाप करवाने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया
३५ हूं * मैं इसलिये आया हूं कि मर्द को उस के बाप से और बेटी
३६ को उसकी मा से और बहू को उसकी सास से जुदा करूं * और इनसान के दुश्मन उसी के कुनबे के लोग होंगे जो कोई कि बाप या मा को मुझ से ज़ियादः प्यार करता है वुह मेरे लाइक़ नहीं *
३७ और जो कोई कि बेटा बेटी को मुझ से ज़ियादः चाहता है मेरे
३८ लाईक़ नहीं * और जो कोई कि अपनी सलीब न उठावे
३९ और मेरी पैरवी करे मेरे लाईक़ नहीं * जो कोई कि अपनी जान को बचाता है उसे गंवावेगा और जो मेरे वास्ते अपनी जान गंवाता

४० है उसे पाएगा * जो कोई तुम्हारी पासदारी करे मेरी पासदारी करता है और जो मेरी पासदारी करता है उसकी जिसने मुझे
४१ भेजा पासदारी करता है * जो कोई कि नबी के नाम से नबी की पासदारी करे नबी का अज्र पाएगा और जो कोई कि रास्तबाज़ के नाम से रास्तबाज़ की पासदारी करे रास्तबाज़ का अज्र
४२ पाएगा * और जो कोई कि उन छोटों में से एक को शागिर्द के नाम फ़क़त एक प्याला ठंढा पानी पिलाएगा मैं तुम से सच कहता हूं कि वुह अपने अज्र से महरूम न रहेगा *

ग्यारहवां बाब

और जब ईसा अपने बारह शागिर्दों को हुक्म कर चुका तो वहां से रवानः हूआ ता कि उनकी बस्तियों में तअलीम और मुनादी
२ करे * यह्या ने क़ैदख़ाने में मसीह के कामों का बयान सुन के
३ अपने शागिर्दों में से दो के तईं भेज कर * उस से पुछवाया कि आया वुह जो आने वाला था तू है या कि हम दूसरे की राह
४ तकें * ईसा ने उन्हें जवाब दिया और कहा जाओ और जो जो कुछ कि तुम सुनते और देखते हो यह्या को सुनाओ *
५ कि अंधे बीना होते हैं और लंगड़े चलते हैं और कोढ़ी अच्छे होते हैं और बहरे सुनते हैं मुर्दे जी उठते हैं और मुफ़लिसों
६ को ख़ुशख़बर दी जाती है * और नेकबख़्त वुह है जो मेरे बाइस से
७ ठोकर न खावे * और जब वे रवानः होने लगे ईसा यह्या के हक़ में उन जमाअतों को कहने लगा कि तुम जंगल में क्या

८ देखने को गये क्या एक सनेठा हवा से हिलता हुआ * फ़िर तुम क्या देखने को बाहर निकले क्या एक शख़्स महीन पोशाक पहने हुए देखो वे जो महीन पोशाक से मुलब्बस होते हैं
९ बादशाहों के महलों में मौजूद हैं * फ़िर तुम क्या देखने को बाहर निकले क्या एक नबी हां मैं तुम से कहता हूं बल्कि एक
१० शख़्स नबी से बिहतर * इस लिये कि जिस की बाबत लिखा है कि देखो मैं अपने रसूल को तेरे आगे भेजता हूं जो राह को
११ तेरे आगे दुरुस्त करेगा वुह यही है * मैं तुम से सच कहता हूं कि उन के दरमियान जो रंडियों से पैदा हुए हैं एक भी यहयाय इस्तिबाग़ी से बुज़ुर्गतर न उठा लेकिन जो कि आसमान
१२ की बादशाहत में हक़ीर है उस से बुज़ुर्ग है * और आसमान की बादशाहत यहयाह इस्तिबाग़ी के वक़्त से अबतक जब्र उठाया करती है और दिलावर आदमी उसके तईं ज़ोर से क़बज़े में
१३ लाते हैं * और सब नबियों और तौरेत ने यहया तक आगे की
१४ ख़बर दी है * और अगर तुम क़बूल किया चाहो तो ईलियास
१५ जो आने वाला था यही है * जिस किसी के कान सुन्ने के लिये
१६ हों सुने * और मैं इस असर के लोगों को किस से तशबीह दूं ये उन लड़कों की मानन्द हैं जो बाज़ारों में बैठ कर अपने
१७ यारों को पुकारके * कहते हैं कि हम तुम्हारे लिये बांसली बजाया किये और तुम न नाचे हम तुम्हारे लिये मातम करते
१८ रहे और तुम ने नाले न किये * क्यूंकि यहया न खाने वाला

न पीने वाला आया और वे कहते हैं कि उस के साथ एक देव है *
१९ इब्नि आदम खाता और पीता आया और कहते हैं कि देखो
एक बड़ा पेटू और शराबी ख़िराज लेने वालों और गुनाहगारों
२० का यार पर हिकमत अपने लड़कों से तसदीक़ की गई है * फिर
वुह उन शहरों को जिन्हों में उस के बहुत से मुअजिज़े ज़ाहिर
हूए थे मलामत करने लगा क्यूंकि उन्हों ने तौबः न किया था *
२१ कि ऐ ख़ोरज़ीं तुझ पर वावैला ऐ बैतिसैदा तुझ पर वावैला है
इस लिये कि अगर ये मुअजिज़े जो तुम में दिखाये गये सूर
और सैदा में दिखाये जाते तो वे टाट पहन कर और राख मल कर
२२ कबके तौबः कर चुकते * पर मैं तुम्हें कहता हूं कि अदालत के
दिन सूर और सैदा के लिये तुम्हारी निस्बत से ज़ियादः आसानी
२३ होगी * और ऐ कुफ़रनाहूम तू जो आसमान तक बलंद हूई
है अदम में उतारी जायगी क्यूंकि अगर ये मुअजिज़े जो
तुझ में दिखाये गये सदूम में दिखाये जाते तो आज तक क़ाइम
२४ रहते * पर मैं तुझे कहता हूं कि अदालत के दिन ज़मीनि
२५ सदूम के लिये तेरी निस्बत से ज़ियादः आसानी होगी * उसी वक़्त
ईसा फिर कहने लगा कि ऐ बाप आसमान और ज़मीन
के मालिक मैं तेरा शुक्र करता हूं कि तू ने इन चीज़ों को हकीमों
२६ और दानाओं से छिपाया और लड़कों पर खोला * हां ऐ बाप
२७ ऐसा होने में तेरी रज़ामन्दी थी * सब चीज़ें मेरे बाप ने मेरे
हवालः कियां हैं और कोई बेटे को नहीं जानता मगर वही बाप

और न कोई बाप को जानता है मगर बेटा और वुह जिस पर
२८ बेटा उसे ज़ाहिर किया चाहे * ऐ सब लोगो जो फ़रोमांदः और
बेर बार हो इधर मेरे पास आओ कि मैं तुम्हें आराम दूंगा *
२९ मेरा जुआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो कि मैं फ़रोतन
और दिल से ख़ाकसार हूं और तुम अपने जीओं में आराम
३० पाओगे * कि मेरा जुआ मुलाइम और मेरा बोझ हलका है *

बारहवां बाब

उस वक़्त ईसा सबत के दिन खेतों में से गुज़रा और उसके शागिर्द
२ भूखे थे वे बालें तोड़ तोड़ खाने लगे * तब फ़रीसियों ने देखकर
उस को कहा कि देख तेरे शागिर्द वुह काम जो सबत को करना
३ रवा नहीं करते हैं * पर उस ने उन्हें कहा कि आया तुम ने
नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वुह भूखा था और उन्हों ने जो
४ उस के साथ थे क्या किया * वुह क्यूंकर ख़ुदा के घर में दाख़िल
हूआ और नज़र की रोटियां जिन्हे खाना उस को और उस के
५ साथ वालों को सिवा फ़क़त काहिनों के रवा न था खा गया * और
क्या तुम ने तौरेत में नहीं पढ़ा कि काहिन सबत के रोज़ हैकल
६ में क्यूंकर सबत की हुरमत नहीं करते और वे बेगुनाह हैं *
पर मैं तुम से कहता हूं कि इस जगह ऐक शख़्स हैकल से
७ बुज़ुर्गतर मौजूद है * सो अगर तुम उस को कि मैं रहम को
न कि क़ुरबानी को चाहता हूं जानते तो तुम बे गुनाहों को
८ गुनाहगार न ठहराते * क्यूंकि इबनि आदम सबत का भी ख़ुदावंद

९ है * फिर वहां से रवानः होकर उन के मजमअ में गया *
१० और देखो कि वहां एक शख़्स था जिस का हाथ ख़ुश्क हो गया था
तव उन्हों ने उसके मुद्दई होने को उस से यूं कहके पूछा कि
११ आया सवत के दिन चंगा करना रवा है * उस ने उन से कहा
कि तुम में कौन ऐसा आदमी है कि एक भेड़ का मालिक हो
और अगर वुह सवत के रोज़ गढ़े में गिरे तो वुह उसे पकड़ के
१२ बाहर न निकाले * और आदमी भेड़ से कितना बिहतर है इस
१३ लिये सवत के दिन नेकी करना रवा है * फ़िर उस ने उस शख़्स
को कहा कि अपना हाथ लंबा कर और उस ने लंबा किया और
१४ उसका हाथ जैसा कि दूसरा था चंगा हो गया * तव फ़रीसियों ने
बाहर जाकर उस के ज़रर पर मशवरत की कि उसे क्यूंकर हलाक
१५ करें * पर ईसा यिह जानकर वहां से रवानः हूआ और बहुत सी
जमाअतें उस के पीछे हो लियां और उस ने सव को चंगा किया *
१६ और उन को ताकीद से कहा कि मुझे मशहूर न करना *
१७ ता कि इशअया नवी की मअरिफ़त से जो कहा गया था पूरा होवे *
१८ कि देखो मेरा ख़ादिम जिसे मैंने इख़तियार किया है और मेरा
महवूव जिस से मेरी रूह राज़ी है मैं अपनी रूह को उस
पर रखूंगा और वुह अवाम के हक़ में अदालत ज़ाहिर
१९ करेगा * और वुह झगड़ा और ग़ोग़ा नहीं करने का और
२० रस्तों में कोई उस की आवाज़ न सुनेगा * वुह जव तक कि
अदालत ज़ोर शोर से न करे मसले हूए सेंठे को भी न तोड़ेगा और

२१ बत्ती को जिस से धुंआं उठता हो नहीं बुझानेका * और उस का
२२ नाम अक़ाम की उमैद्‌गाह होगा * उस वक़्त उसपास ऐक अंधे
गूंगे दीवाने को लाये और उस ने उसे शिफ़ा दी चुनाचिः वुह
२३ गूंगा अंधा गोया और बीना हूआ * और सब जमाअतें हैरान
२४ हूईं और कहने लगीं क्या यिह दाऊद का बेटा नहीं है * फ़िर
फ़रीसियों ने सुन कर कहा कि यिह शख़्स देवों को दूर नहीं करता
२५ मगर बाअलज़्बूल की कमक से जो देवों का सरदार है * तब
ईसा ने उन के गुमान दरयाफ़्त करके उन से कहा हरऐक ममलुकत
जो अपनी मुख़ालिफ़त से दो हिस्सः होवे वीरान होती है और
हरऐक शहर जो अपना मुख़ालिफ़ होके दो फ़रीक़ हो जावे
२६ और वुह घर जो ऐसा हो आबाद न रहेगा * और अगर
शैतान शैतान को दूर करता है पस वुह अपना ही हरीफ़ हूआ
२७ फ़िर उस की बादशाहत क्यूंकर क़ाइम रहेगी * पस अगर मैं
बाअलज़्बूल की कमक से देवों को दूर करता हूं तो तुम्हारे
फ़रज़न्द किस के वसीले से दूर करते हैं इस लिये वेही तुम्हारे
२८ मुन्सिफ़ होंगे * लेकिन अगर मैं ख़ुदा की रूह से देवों को दूर
२९ करता हूं तो ख़ुदा की सलतनत अलबत्तः तुम तक पहुंची * और
नहीं तो क्यूंकर हो सकता है कि कोई ऐक ज़ोरआवर के घर
में जावे और उस का असबाब छीन ले हां मगर यिह कि वुह
पहले उस ज़ोरआवर शख़्स को बांधे तब उस के घर को ग़ारत
३० करे * जो कोई मेरा साथी नहीं मेरा मुख़ालिफ़ है और जो

३१ कोई कि मेरे साथ जमअ नहीं करता परेशान करता है * इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि लोगों का हर तरह का गुनाह और कुफ़ार बख़्शाजायगा मगर कुफ़र जो रूह के मुक़ाबले में हो
३२ आदमी को बख़्शा न जायगा * और जो कोई इब्नि आदम की बद्गोई करता है यिह उसे बख़्शा जायगा पर जो कोई रूहि क़ुदस की बद्गोई करे यिह उसे बख़्शा न जायगा न इस
३३ जहान में और न आने वाले जहान में * या दरख़्त को अच्छा करो और उस के मेवे को अच्छा या दरख़्त को बुरा करो और उस के मेवे को बुरा क्यूंकि दरख़्त अपने मेवे ही से पहचाना जाता
३४ है * ऐ सांपों की नसल यिह क्यूंकर होसके कि तुम बुरे होके अच्छी बातें करो इस लिये कि मुंह उसकी जो दिल में मचामच
३५ भर है ख़बर देता है * अच्छा आदमी अपने दिल के अच्छे
३६ ख़ज़ीने से अच्छी बातें निकालता है और बुरा आदमी बुरे ख़ज़ीने से बुरी बातें निकालता है * मैं तुम से कहता हूं कि लोग हरएक बेहूदः बात जो कहते हैं अदालत के दिन
३७ उसका हिसाब देंगे * इस लिये कि तू अपनी बातों हो से
३८ रास्तबाज़ निकलेगा और अपनी बातों से मुल्ज़िम होगा * तब बअज़े कातिबों और फ़रीसियों ने फ़िर के कहा कि ऐ मुअल्लिम
३९ हम चाहते हैं कि तेरा मुअजिज़ः देखें * पर उस ने उन्हें जवाब दिया और कहा कि इस अस्र की शरीर और हरामकार क़ौम मुअजिज़ः ढूंढती है पर उन्हें कोई मुअजिज़ः सिवा यूनस नबी के

४० निशान के दिखाया न जायगा * इसवास्ते कि जिस तरह यूनस तीन रात दिन मछली के पेट में था उसी तरह इब्निन आदम
४१ तीन रात दिन ज़मीन के अंदर रहेगा * नैनवी के लोग अदालत के वक्त इस असर के लोगों के साथ उठेंगे और उन्हें मुजरिम ठहराएंगे क्यूंकि उन्हों ने यूनस की वअ़ज़ पर तौवः किया
४२ और देखो कि एक यूनस से बिहतर यहां मौजूद है * जनूब की मलिकः इस असर के लोगों के साथ अदालत के वक्त उठेगी और उन्हें मुलज़िम करेगी क्यूंकि वुह ज़मीन की इन्तिहा से सुलैमान की हिकमत सुन्ने आई और देखो कि एक यहां सुलैमान
४३ से बिहतर मौजूद है * जब पलीद रूह आदमी से दूर हो जाती है तो सूखे मकानों में आराम ढूंढती फिरती है पर नहीं
४४ पाती * तब कहती है कि मैं अपने उसी घर में जहां से बाहर निकली हूं फिर जाऊंगी और जब वुह वहां आती है
४५ तो उसे खाली और झाड़ा बुहारा साफ़ सुथरा देखती है * तब जा कर और सात रूहें जो उस से बदतर हैं अपने साथ ले आती है और वे उस में जाकर सुकूनत करती हैं तब उस आदमी का पिछला हाल अगले से बदतर होता है इस
४६ असर के बुरे लोगों का हाल भी ऐसा ही होगा * जिस वक्त वुह जमाअतों से यिह कह रहा था देखो कि उसकी मा और
४७ भाई बाहर खड़े हुए उस से बात करने के मुश्ताक़ थे * तब किसी ने उसे इत्तिलाअ दी कि देख तेरी मा और तेरे भाई बाहर

४८ खड़े हुए तुझ से बात करने के मुश्ताक़ हैं * पर उस ने जवाब दिया और इत्तिलाअ देने वाले से कहा कौन है मेरी मा और ४९ कौन हैं मेरे भाई * और अपना हाथ अपने शागिर्दों की तरफ़ ५० दराज़ कर के कहा कि देख मेरी मा और मेरे भाई * इस लिये कि जो कोई ऐसा करे जैसा मेरा बाप जो आसमान पर है चाहता है मेरा भाई और बहन और मा वही है *

तेरहवां बाब

१ और ईसा उसी दिन घर से बाहर निकल कर दरया कनारः २ जा बैठा * और ऐसी बहुत सी जमाअतें उस पास जमअ हुईं कि वुह किश्ती पर चढ़ बैठा और सारी जमाअत किनारे पर ३ खड़ी रही * और उस ने उन्हें बहुत सी बातें तमसीलों में ४ कहीं कि देखो एक किसान बोने गया * और उस के बोते वक़्त ५ बअ़ज़े राह की तरफ़ गिरे और परंदे आये और उन्हें चुग गये * और बअ़ज़े संगी ज़मीन पर जहां उन्हों ने बहुत मिट्टी न पाई गिरे और वे जलदि उग आये इस लिये कि उन्हों ने ६ अमीक़ ज़मीन न पाई * और जब सूरज निकला जल गये ७ और इस लिये कि जड़ न रखते थे सूख गये * और बअ़ज़े ८ कांटों के बीच गिरे और कांटों ने बढ़के उन को घेंटा * और बअ़ज़े अच्छी ज़मीन में गिरे और ख़ोशे लाये बअ़ज़े सौ गुने ९ बअ़ज़े साठ गुने बअ़ज़े तीस गुने * जिस किसी को कान सुन्ने १० के लिये होवें सुने * तब शागिर्दों ने सान्हने आकर उसे कहा

११ कि तू क्यूं उन से तमसीलों में तकल्लुम करता है * उस ने जवाब दिया और उन्हें कहा कि आसमान की बादशाहत के रम्ज़ों का इल्म तुम्हें बख़्शा गया है पर उन को यिह नहीं दिया गया *
१२ इस लिये कि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और उसे बहुत बरकत होगी पर जिस पास कुछ नहीं उस से जो कुछ
१३ कि उस पास है सो भी फिर लिया जायगा * इस लिये मैं उन से तमसीलों में तकल्लुम करता हूं कि वे देखते हूए नहीं देखते और सुनते हूए नहीं सुनते और नहीं समझते *
१४ और इशअया की पेशीं गोई तुम सुनते हूए सुनोगे और न समझोगे और देखते हूए देखोगे और ख़ियाल न करोगे उन
१५ में पूरी हूई * क्यूंकि इस क़ौम का दिल चरबा गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपनी आंखें उन्हों ने मूंद लियां हैं ता ऐसा नहो कि वे कभी आंखों से देखें और कानों से सुनें और दिल लगाके समझें और फ़िर जावें ता मैं उन्हें
१६ शिफ़ा बख़्शूं * पर मुबारक तुम्हारी आंखें हैं क्यूंकि वे देखती हैं
१७ और तुम्हारे कान क्यूंकि वे सुनते हैं * सो मैं तुम से सच कहता हूं कि बहुत से नबियों और रास्तबाज़ों ने आरज़ू की कि जो कुछ तुम देखते हो देखें और न देखा और जो कुछ तुम सुनते
१८ हो सुनें और न सुना * अब तुम किसान की तमसील सुनो *
१९ जब कोई उस ममलुकत का सुख़न सुनता है और नहीं समझता तो वुह शरीर आता है और जो कुछ उसके दिल में बोया गया था

छीन ले जाता है यिह वुह है जिस ने राह की तरफ़ से तुख़्म
२० को पाया * पर जिस ने कि तुख़्म को संगी ज़मीन में पाया वुह है
कि सुख़न को सुनता है और फ़िलफ़ौर ख़ुशी से मान लेता है *
२१ लेकिन उस में जड़ नहीं होती और वुह थोड़ी मुद्दत का है इस
लिये कि जब उस सुख़न के वास्ते मुसीबत या रंज में पड़ता है तो
२२ जल्दी बेक़रार होजाता है * जिस ने कि तुख़्म को कांटों में पाया वुह है
कि सुख़न को सुनता है और इस जहान की फ़िक्र और दौलत की
२३ दग़ाबाज़ी सुख़न को घोंट डालती है और वुह बे मेवः होता है *
पर जिस ने कि तुख़्म को अच्छी ज़मीन में पाया वुह है कि सुख़न को
सुनता है और समझता है और उस में फल लगते हैं और तैयार
२४ होते हैं बअज़े में सौगुने बअज़े में साठ बअज़े में तीस * फिर उस
ने उन्हें एक और तमसील गुज़रानी और कहा कि आसमान
की बादशाहत उस आदमी से मुशाबह है जिस ने अच्छे बीजों
२५ को अपने खेत में बोया * पर जब लोग सोये उसका दुश्मन
आया और उसके गेहूंओं में जा बजा तल्ख़ दाने बोगया *
२६ और जब सबज़ी नमूद हुई और ख़ोशे लगे तो तल्ख़ दाने भी ज़ाहिर
२७ हुए * तब उस घर वाले के नौकरों ने आके उसे कहा कि
ख़ाविंद क्या तूने अपने खेत में अच्छे बीज न बोये थे फ़िर उस
२८ में तल्ख़ दाने कहां से आये * उसने उन्हें कहा एक दुश्मन
ने यिह काम किया है ख़ादिमों ने उसे कहा कि मरज़ी हो तो
२९ हम जाकर उन्हें जमअ करें * उसने कहा नहीं ता ऐसा नहो

कि जब तुम तल्खदानों को जमअ करो तो उन के साथ गेहूं
३० भी उखाड़ लो * दिरौ तक दोनों को मिले हूए बढ़ने दो कि मैं
दिरौ के वक्त दिरौ करने वालों को कहूंगा कि पहले तल्खदानों
को जमअ करो और जलाने के वास्ते उनके गट्ठे बांधो और गेहूं
३१ मेरे खत्ते में जमअ करो * उसने उन्हें ऐक और तमसील गुज़रानी
और कहा कि आसमान की बादशाहत राई के दाने से मुशाबह
३२ है जिसे ऐक शख़्स ने लेके अपने खेत में बोया * और वुह
सब तुख़्मों में छोटा है पर जब यिह उगा तो सब तरकारियों से
बड़ा होता है और ऐसा दरख़्त होता कि हवा के परिन्दे आके उसकी
३३ डालियों पर बसेरा करते हैं * उसने उन्हें ऐक और तमसील
कही कि आसमान की ममलुकत ख़मीर माये से मुशाबह है
जिसे ऐक रंडी ने लेकर आटे के तीन पैमानों में छिपा दिया यहां
३४ तक कि वुह सब ख़मीर हो गया * ये सब बातें ईसा ने उन
जमाअतों को तमसीलों में कहीं और बिन तमसील वुह उनसे बोलता
३५ न था * ता कि वुह जो नबी की मअरिफ़त से कहा गया कि मैं
अपना मुंह तमसीलों में खोलूंगा और उन चीज़ों को जो बिनाय
३६ आलम से पोशीदः हैं मुंह से निकालूंगा पूरा होवे * तब ईसा
उन जमाअतों को रुख़सत कर के आप घर को गया और उसके
शागिर्दों ने उस पास आके कहा कि खेत के तल्खदानों की
३७ तमसील को खोल के हम से कह * उसने उन्हें जवाब दिया और
३८ कहा कि वुह जो अच्छे बीज बोता है इब्नि आदम है * वुह

खेत दुनया है और अच्छे बीज जो हैं सो इस बादशाहत के
३९ लड़के हैं और तलख़दाने शरीर के फ़रज़न्द हैं * दुश्मन जिसने
उन्हें बोया इबलीस है और दिरौ का वक़्त इस जहान की
४० इनतिहा है और दिरौ करने वाले फ़िरिश्ते हैं * पस जिस तरह
कि तलख़दाने जमअ किये जाते हैं और जलाये जाके नाबूद
किये जाते हैं सो इस जहान की इनतिहा में ऐसाही होगा *
४१ इबनि आदम अपने फ़िरिश्तों को भेजेगा और वे उसकी बादशाहत
में उन सब चीज़ों को जो ठोकर खिलाती हैं और उन लोगों को
४२ जो बुराई करते हैं एकठे करेंगे * और उन्हें जलते तनूर में
४३ डाल देंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा * तब सब रास्तबाज़
आफ़ताब की मानन्द अपने बाप की मानन्द नूरानी होंगे जिसकिसी
४४ के कान सुन्ने के लिये होवें सुने * फिर आसमान की बादशाहत
उस गंज से जो खेत में पोशीदः है मुशाबह है जिसे आदमी
पाकर छिपाता है और उसकी खुशी से जाकर जो कुछ उसका
४५ है सब बेचता है और उस खेत को मोल लेता है * फ़िर आसमान
की बादशाहत सैादागर से मुशाबह है जो ख़ासे मोतियों की
४६ तलाश में है * कि जब उसने एक बेशक़ीमत मोती पाया तो
जाके जो कुछ कि उसका था सब बेच डाला और उसे मोल लिया *
४७ फिर आसमान की बादशाहत जाल से मुशाबह है जो दरया में
डाला गया और उसने हर जिनस की चीज़ को समेट लिया *
४८ और जब वह भर गया वे किनारे पर खेंच लाये और बैठ के

अच्छी चीज़ें बासनों में जमअ किया और बुरी सब फेंक
४९ दियां * इनतिहाय जहान में ऐसाही कुछ होगा फ़िरिश्ते निकलेंगे
५० और शरीरों को आदिलों में से जुदा करेंगे * और उन्हें जलते
५१ तनूर में डाल देंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा * ईसा ने
उन्हें कहा कि तुम यिह सब कुछ समझे उन्हों ने जवाब दिया हां
५२ साहिब * तब उसने उनसे कहा पस जिस कातिब ने आसमान की
बादशाहत की तअलीम पाई है उस शख़्स से मुशाबह है कि
साहिबि ख़ानः हो और अपने ख़ज़ाने से नई और पुरानी चीज़ें
५३ निकालें * और जब ईसा ये तमसीलें कह चुका वहां से
५४ चला गया * और उसने अपने वतन में आकर उनके मजमअ
में उन्हें ऐसी वअज़ कही कि वे हैरान हूए और बोले कि
५५ यिह शख़्स ऐसी हिकमत और करामतें कहांसे लाया * क्या
यिह बढ़ई का बेटा नहीं क्या उसकी मा मरयम नहीं कहलाती
है और उस के भाई यअक़ूब और यूसा और शमऊन और
५६ यहूदा * और क्या हमारे साथ उसकी बहनें नहीं फिर उसने
५७ ये सब चीज़ें कहां से पाईं * और वुह उनके लिये जैसे ठोकर
खिलाने वाला पत्थर हूआ फिर ईसा ने उन्हें कहा कि नबी बे
५८ इज़्ज़त नहीं मगर अपने मुल्क में * और उसने उस जगह
उनकी बे इअतिक़ादी के सबब बहुत मुअजिज़े न दिखलाये *

चौधवां बाब

१ उसवक़्त हीरूदीस ने जो ममलुकत की चौथाई का मालिक था

२ ईसा की ख़बर सुनी * और अपने ख़ादिमों से बोला कि यिह
यह्या इस्तिबाग़ी है कि मर के जी उठा है और उसी लिये इस
३ से करामतें ज़ाहिर होती हैं * हीरूदीस ने यह्या को
हीरूदियास के लिये जो उसके भाई फैलबूस की जोरू थी
४ गिरिफ़्तार कर के और बांध के क़ैदख़ाने में डालदिया था * इस
लिये कि यह्या ने उसे कहा था कि तुझे रवा नहीं कि उसको
५ रखे * और जब उस ने चाहा कि उसे मारडाले तो लोगों से
६ डरा क्यूंकि वे उसे नबी जानते थे * पर जिस वक़्त हीरूदीस की
सालगरह की ख़ुशी होनेलगी हेरूदियस की बेटी उन के बीच नाची
७ और हीरूदीस को ख़ुश किया * चुनांचिः उसने क़सम खाके वअ्दः
८ किया कि जो कुछ वुह मांगेगी उसे दूंगा * तब वुह जैसा कि
आगे उसकी मा ने उसे तहरीक किया था बोली कि यह्याय
९ इस्तिबाग़ी का सिर ऐक तबाक़ में मुझे को मंगवा दे * तब
बादशाह ग़मगीं हूआ पर उसने क़सम के और उन के लिये जो
१० उसके साथ खानेको बैठे थे हुक्म किया कि उसे देवें * और
११ उसने लोग भेजकर क़ैदख़ाने में यह्या का सिर कटवाया * और
उसके सिर को ऐक तबाक़ में लेआये और उस लड़की को दिया
१२ वुह अपनी मा के पास ले गई * तब उसके शागिर्दों ने आके
१३ लाश उठाई और उसे गाड़ा और जाके ईसा को ख़बर दी * जब
ईसा ने यिह सुना तो वहां से किश्ती पर बैठ के ऐक वीराने में
अलग गया और जमाअतें यिह सुनकर शहरों से निकल कर

१४ खुश्की उसके पीछे हो लियां * और ईसा ने निकल कर एक बड़ी जमाअत को देखकर उन पर रहम किया और उनके बीमारों को
१५ चंगा किया * और जब शाम हुई उसके शागिर्दों ने उसके साम्हने आके कहा जगह वीरान है और अब दिन आख़िर है इन जमाअतों को रुख़सत कर कि वे गांओं में जाकर अपने खाने के
१६ लिये मोल लें * पर ईसा ने उन्हें कहा कि उनका जाना ज़ुरूर
१७ नहीं तुम उन्हें खानेको दो * उन्होंने उससे कहा यहां रोटियों के
१८ पांच गिर्दों और दो मछलियों के सिवा कुछ नहीं * वुह बोला
१९ कि उन्हें यहां मुझ पास लाओ * और उसने हुक्म किया कि लोग सबज़े पर बैठें और उन पांच गिर्दों और दो मछलियों को उठाया और आसमान की तरफ़ देखके शुक्र किया और तोड़कर गिर्दे शागिर्दों
२० को और शागिर्दों ने उनको दिये * और वे सब खाकर सेर हुए और उन्होंने उन टुकड़ों की जो बच रहे थे बारह टोकरियां भरीं उठाईं *
२१ और वे जो खाचुके थे सिवा रंडियों और लड़कों के क़रीब पांच हज़ार
२२ आदमियों के थे * और उसदम ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म
२३ किया कि कश्ती पर चढ़ो * और जिस अरसे में कि मैं उन जमाअतों को रुख़सत करूं मुझ से पहले पार जाओ और आप उन जमाअतों को रुख़सत कर के दुआ के लिये एक पहाड़ पर अकेला
२४ चढ़गया और जब शाम हुई वुह वहां तनहा था * पर किश्ती उस वक़्त दरया के बीच मौजों से उछलती थी इस लिये कि हवा
२५ मुख़ालिफ़ थी * और रात को पिछली पहर ईसा दरया के सतह पर

२६ सैर करता हूआ उन पास चला * जब शागिर्दों ने उसे दरया पर चलते देखा वे मुज़तरिब होके कहने लगे कि यिह कोई रूह है और
२७ डर कर चिल्लाये * तब ईसा ने वोंहीं उनसे कहा कि ख़ातिर जमअ
२८ रखो मैं हूं तुम मत डरो * तब पतरस ने जवाब दिया और कहा कि ऐ खुदावंद अगर तू है तो मुझे फ़रमा कि मैं पानी के सतह
२९ पर क़दम मार के तुझ पास आऊं * और वुह बोला कि आ और पतरस किश्ती पर से उतर कर पानी पर चलने लगा ता कि ईसा
३० तक जावे * लेकिन जब उसने देखा कि हवा सख़्त है तो डरा और जब डूबने लगा यिह कहके चिल्लाया ऐ खुदावंद
३१ मुझे बचा लें * तब फ़िलफ़ौर ईसा ने हाथ लंबा करके उसे पकड़ लिया और उस से कहा कि ऐ कम इअतिक़ाद तू क्यूं
३२ शक लाया * और जब वे किश्ती पर आये हवा रह गई *
३३ तब वे जो किश्ती पर थे आये और उसे सिजदः करके कहने
३४ लगे कि तू सचमच खुदाका बेटा है * और वे पार उतर के
३५ जनीसर के मुल्क में पहुंचे * और उस जगह के लोगों ने उसे पहचान के उस मुल्क के सारी अतराफ़ में शुहरत दी और सारे
३६ बीमारों को उस पास लाये * और उसकी मिन्नत की कि फ़क़त उस की पोशाक का किनारः छूवें और जिन्होंने छूआ बिलकुल चंगे हूऐ *

पंदरहवां बाब

१ तब औरशलीम के कातिब और फ़रीसियों ने ईसा पास आके

२ कहा * कि तेरे शागिर्द किस लिये मुतक़द्दमीन की सुन्नतों से उदूल करते हैं इसवास्ते कि रोटी खाते वक़्त अपने हाथ नहीं
३ धोते * उस ने उन्हें जवाब दिया और कहा कि तुम किस लिये अपनी सुन्नत के लिये खुदा के फ़रमान से उदूल करते
४ हो * इस लिये कि खुदा ने यों कहके हुक्म किया कि अपने मा बाप की तकरीम कर और जो कोई कि मा बाप को बुरी बात कहे
५ जान से मारा जावे * लेकिन तुम कहते हो कि जो कोई बाप या मा को कहे कि जो कुछ मुझपर वाजिब था कि तुझे दूं सो
६ हदयः किया जाता है * और अपनी मा और बाप की तकरीम मुतलक़ न करे तो कुछ मुज़ाइक़ः नहीं पस तुम ने अपनी सुन्नत
७ के लिये खुदा के हुक्म को बातिल किया * ऐ रियाकारो इशअया ने
८ तुम्हारे हक़ में क्या खूब पेशीं गोई की * कि ये लोग अपनी ज़बान से मुह से नज़्दीकी ढूंढते हैं और होंठों से मेरी तकरीम करते
९ हैं लेकिन उनके दिल मुह से दूर हैं * पर वे अबस मेरी परस्तिश करते हैं कि ख़ल्क़ के हुक्मों को इल्मि ज़रूरी ठहराके
१० सिखलाते हैं * फिर उसने जमाअत को बुलाकर कहा कि सुनो
११ और समझो * न वुह चीज़ जो मुंह में जाती है आदमी को नापाक करती है बल्कि वुह जो मुहसे निकलती है वही
१२ आदमी को नापाक करती है * तब उसके शागिर्द आकर उसे कहने लगे कि तूने कुछ दरयाफ़्त किया कि फ़रीसियों ने जब यिह
१३ कलाम सुना तो वे बेज़ार हूए * तब उसने जवाब दिया और

कहा जो नबात कि मेरे बाप ने जो आसमान पर है नहीं
१४ जमाई जड़ से उखाड़ी जायगी * उन्हें छोड़ दो कि वे अंधों के
अंधे रहनुमा हैं और अगर अंधा अंधेका रहनुमा होगा तो
१५ दोनो गढ़े में गिर पड़ेंगे * तब पतरस ने जवाब में उस से कहा कि
१६ उस तमसील की तफ़सील हम से कह * और ईसा ने कहा क्या
१७ तुम भी हनोज़ नाफ़हम हो * अबतक तुम नहीं समझते कि
जो कुछ मुंह में जाता है पेट में पड़ता है और गड़िया में फेंका
१८ जाता है * पर वे चीज़ें जो मुंह से निकलती हैं दिल से बाहर
१९ आती हैं और आदमी को नापाक करने वाली ये ही हैं * क्यूंकि
बुरे ख़ियाल और ख़ून और ज़िना और हरामकारियां और
चोरियां और झूठी गवाहियां और कुफ़र दिलही से निकलते
२० हैं * ये हैं वे चीज़ें जो आदमी को नापाक करती हैं पर बिन
२१ धोये हाथों से खाना आदमी को नापाक नहीं करता * तब
ईसा ने वहां से रवानः होकर सूर और सैदा की नवाही में
२२ गया * और देखो एक किनआनी रंडी उस नवाही से बाहर
निकल कर पुकारती हुई यों बोली ऐ ख़ुदावंद दाऊद के बेटे
२३ मुझ पर रहम कर कि मेरी बेटी बशिद्दत दीवानी है * पर
उसने उसे जवाब में कोई बात नकही और उसके शागिर्दों ने
आके उस से इलतिमास करके यिह कहा कि उसे रुख़सत कर क्यूंकि
२४ वुह हमारे पीछे चिल्लाती है * तब उस ने जवाब दिया और
कहा कि मैं सिवा इसराईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के औरों

२५ गुमशुदः हैं किसी पास भेजा नहीं गया * तब वुह आई और उसे सिजदः किया और कहा ऐ खुदावंद मेरी मदद कर *
२६ उसने जवाब दिया और कहा मुनासिब नहीं कि लड़कों की
२७ रोटी लेके कुत्तों को फेंक दीजे * वुह बोली सच ऐ खुदावंद पर कुत्ते भी टुकड़े जो उनके साहिबों के दस्तारख़ान से गिरते हैं
२८ खाते हैं * तब ईसा ने जवाब दिया और उसे कहा कि ऐ रंडी तेरा इअतिक़ाद बड़ा है जो तेरी ख़्वाहिश है बरआवे और
२९ उसकी बेटी उसी घड़ी चंगी होगई * फिर ईसा ने रवानः होकर जलील के दरया के नज़्दीक आया और पहाड़ पर चढ़ कर
३० वहां बैठा * और बहुत सी जमाअतें लंगड़े और अंधे और गूंगे और टुंडे और बहुतेरे उनके सिवा साथ लेकर उस पास आईं और उन्हें ईसा के पाओं पर डाला और उसने उन्हें यूं शिफ़ा
३१ बख़्शी * कि उन जमाअतों ने जब देखा कि गूंगे बोले टुंडे तनदुरुस्त होवें लंगड़े चले और अंधे बीना होवें तो हैरान हूए
३२ और इस्राईल के खुदा की सिताइश की * तब ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर कहा कि मुझे इन लोगों पर रहम आता है कि तीन दिन से मेरे साथ मक़ीम हैं और उन पास कुछ खाने को नहीं और मैं नहीं चाहता हूं कि उन्हें फ़ाक़े से रुख़सत
३३ करूं शायद मैं कहीं नातवान न होजावें * उसके शागिर्दों ने उसे कहा कि इस बियाबान में हम इतनी रोटियां कहां पाएंगे कि
३४ इस दंगल को बस होवें * तब ईसा ने उन्हें कहा कि तुम्हारे

साथ कितनी रोटियां हैं बोले कि सात और कई एक छोटी
३५ मछलियां * तब उस ने उन लोगों को हुक्म किया कि ज़मीन
३६ पर बैठ जावें * और उस ने वे सात रोटियां और मछलियां
उठालियां और शुक्र करके तोड़ियां और अपने शागिर्दों को
३७ और शागिर्दों ने उन लोगों को दियां * और वे सब खाके
सेर हूए और उन्हों ने उन रेज़ों से जो बच रहे थे सात टोकरियां
३८ भरके उठाईं * और खाने वाले सिवा रंडियों और लड़कों के
३९ चारहज़ार आदमी थे * फिर जमाअतों को रुख़सत करके किश्ती
पर जा बैठा और मजदले की नवाही में आया *

सोलहवां बाब

१ तब फ़रीसी और स़दूकी आये और इमतिहान के लिये उससे
तालिब हूए कि एक आसमानी मुअजिज़ः हमको दिखला *
२ उसने जवाब में उन्हें कहा जब शाम होती है तुम कहते हो
३ कि वक्त अच्छा होयगा क्यूंकि आसमान सुर्ख़ है * और सुबह
को कहते हो कि आज आंधी चलेगी क्यूंकि आसमान सुर्ख़ और
हौलनाक है ऐ रियाकारो तुम आसमान की सूरत का इमतियाज़
कर जानते हो और वक्तों के निशान दरयाफ़्त करनहीं सकते *
४ इस अस्र के शरीर और फ़ासिक़ लोग मुअजिज़ः तलब करते
हैं पर कोई मुअजिज़ः उन्हें सिवा यूनस नबी के मुअजिज़ः
के दिखलाया न जायगा तब वुह उनसे जुदा होकर रवानः
५ हूआ * और उसके शागिर्द पार पहुंचे और रोटी अपने साथ

६ लेना भूल गये थे * तब ईसा ने उनसे कहा ख़बरदार फ़रीसियों
७ और ज़ादूक़ियों के ख़मीर से परहेज़ करो * उन्हों ने अपने
दिल में गुमान करके कहा कि उसका सबब यिह है कि
८ हम ने रोटियां साथ नलीं * लेकिन ईसा ने यिह दरयाफ़ करके
उनसे कहा कि ऐ कम इअतिक़ादो तुम अपने दिल में क्यूं
९ गुमान करते हो कि यिह रोटियां नलेने के सबब से है * अभी
तक तुम नहीं समझते हो और उन पांच हज़ार की पांच रोटियां
१० याद नहीं करते कि कितनीं टोकरियां उठाईं * और न चारहज़ार
११ की सात रोटियां और तुम ने कितनी टोकरियां उठाईं * तुम क्यूं
नहीं सोचते कि मैं ने तुम से रोटी के लिये नहीं कहा कि तुम
१२ फ़रीसियों और ज़ादूक़ियों के ख़मीर से परहेज़ करो * तब वे
समझे कि उसने उन्हें रोटी के ख़मीर से नहीं बल्कि फ़रीसियों
१३ और ज़ादूक़ियों की तअलीम से परहेज़ करने को कहा * और
ईसा ने क़ैसरियः फ़लबूस की नवाहि में आकर अपने शागिर्दों
से यूं कहके पूछा कि लोग क्या कहते हैं कि मैं जो इबनि
१४ आदम हूं कौन हूं * उन्हों ने कहा कि बअज़े कहते हैं कि
तू यहयाय इस्तिबाग़ी है और बअज़े इलयास और बअज़े या इरमिया
१५ या एक पैग़म्बरों से * उसने उनको कहा कि तुम क्या कहते हो
१६ मैं कौन हूं * शमऊनि पतरस ने जवाब दिया और कहा कि तू मसीह
१७ है वक़यूम का बेटा है * और ईसा ने जवाब में उसे कहा कि ऐ शमऊनि
बरयूना तू नेकबख़्त है कि तुझको गोश्त और लहू ने नहीं मगर

१८ मेरे बाप ने जो आसमान पर है ज़ाहिर किया * और मैं तुझे कहता हूं कि तू पतरस है और मैं इस पत्थर पर अपना कलीसिया बनाऊंगा और अदम के दरवाज़े उस पर ग़ालिब न होंगे * और मैं आसमान की बादशाहत की कुंजियां तुझे दूंगा
१९ और जो कुछ तू ज़मीनपर बांधेगा आसमान पर बांधा जायगा और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा आसमान पर खोला जायगा *
२० फिर उसने अपने शागिर्दों को फ़रमाया कि किसीसे नकहो कि
२१ मैं मसीह हूं * उस वक़्त ईसा ने अपने शागिर्दों को ख़बर देना शुरूअ की कि मुझे लाज़िम है कि मैं औरशलम में जाऊं और मशाइख़ और सरदार काहिनों और कातिबों से बहुत
२२ रंज उठाऊं और मारा जाऊं और तीसरे दिन फिर जीऊं * तब पतरस ने उसे पकड़ा और झुंझला के उसे कहने लगा ऐ ख़ुदावंद
२३ तेरी सलामती होवे यिह तुझपर कभी नहोवे * उसने मुतवज्जिह होकर पतरस को कहा ऐ शैतान मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर खिलाने वाला पत्थर है क्यूंकि तू ख़ुदाकी चीज़ोंका
२४ नहीं बल्कि ख़ल्क़ की चीज़ों का ख़ियाल रखता है * फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा कि अगर कोई मेरे पीछे होलिया चाहे तो अपने नफ़्स की मुख़ालिफ़त करे और अपनी सलीब को
२५ उठाले और मेरी पैरवी करे * क्यूंकि जो कोई अपनी जान को बचाता है उसे गंवायेगा और जो कोई मेरे लिये अपनी जान
२६ गंवायेगा उसे पायेगा * इस लिये कि अगर इनसान सारे जहान

तसर्रुफ़ में लावे और अपनी जान गंवाऐ तो उसने क्या कमाया
और कौनसी चीज़ है जो आदमी अपनी जान के बदले दे *
२७ कि इबिन आदम अपने बाप की शिकोह से अपने फ़िरिश्तों
के साथ आवेगा और हरऐक को उसके अमल की जज़ा देगा *
२८ मैं तुम से सच कहता हूं कि उनमें से जो यिहां खड़े हैं
बअज़े हैं जो मौत का मज़ः जबतक कि इबिन आदम को अपनी
बादशाहत में आया न देखलें न चिखेंगे *

सतरहवां बाब

१ और छः दिन के बअद ईसा ने पतरस और यअक़ूब और उसके
भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें ख़लवत में ऐक ऊंचे
२ पहाड़ पर ले आया * और उसकी सूरत उनके साम्हने मबद्दल
हूई और उसका चिहरः आफ़ताब की मानंद चमका और उसके
३ कपड़े नूर की मानंद सफ़ेद हूऐ * और देखो कि मूसा और
४ ईलियास उस से बातें करते हूऐ ज़ाहिर हूऐ * तब पतरसने
ईसा को मुतवज्जिह होकर कहा कि ऐ ख़ुदावंद यहां रहना
हमारे लिये बिहतर है और अगर तू चाहे तो हम यहां तीन
मसकन ऐक तेरे लिये और ऐक मूसा के लिये और ऐक ईलियास के
५ लिये बनावें * जिस वक़्त वुह यिह कहता था देखो कि ऐक
नूरानी बदली ने उस पर साया किया और उस बदली से आवाज़
आई कि यिह मेरा अज़ीज़ बेटा है जिस से मैं राज़ी हूं तुम
६ उसकी सुनो * शागिर्द यिह सुनकर औंधे गिरपड़े और बहुत

७ डरे * तब ईसा ने नज़दीक आके उन्हें छूआ और कहा उठो
८ मत डरो * और उन्होंने आंखें ऊपर करके ईसा के सिवा किसी
९ को न देखा * और जब वे पहाड़ से उतरे ईसा उन्हें फ़रमाया
जबतक कि इबिन आदम मर के जी नउठे यिह ख़ियाल किसीसे न
१० कहियो * और उसके शागिर्दों ने उस से सुवाल किया कि फिर
कातिब क्यूं कहते हैं कि पहले ईलियास का आना ज़रूर
११ है * ईसा ने जवाब दिया और उन्हें कहा कि सच ईलियास
१२ पहले आवेगा और सब चीज़ों का बंदोबस्त करेगा * पर मैं
तुमसे कहता हूं कि ईलियास आचुका है पर उन्होंने उस को
न पहचाना और जो कुछ कि उन्होंने चाहा उसके साथ किया
१३ सो इसीतरह इबनि आदम भी उनसे दुख पावेगा * तब शागिर्दों ने
१४ जाना कि उसने उनसे यहयाय इस्तबागी का ज़िक्र किया *
और जब वे गरोह पास आये तो एक मर्द ने उसपास आके घुटने
१५ टेके और उसे कहा * कि ऐ ख़ुदावंद मेरे बेटे पर रहम कर कि
वुह मसरूअ और बहुत रंज में है और कभी आगमें और कभी
१६ पानी में गिरता है * और मैं उसको तेरे शागिर्दों पास लाया था
१७ वे उसे चंगा कर नसके * तब ईसा ने जवाब दिया और कहा
कि ऐ बेएअतिक़ाद और मुनहरिफ़ क़ौमें कबतक मैं तुम्हारे साथ
रहूं और कबतक तुम्हारी बरदाश्त करूं उसे यहां मुझ पास
१८ लाओ * और ईसा उस पर हुंहलाया और देव उस पर से उतर
१९ आया और वुह छोकरा उसी घड़ी अच्छा हूआ * तब एक

शागिर्द ख़लवत में ईसा पास आये और कहा कि हम उसे क्यूं दूर
२० न कर सके * ईसा ने उन्हें कहा कि अपनी बे इअतिक़ादी के
सबब से इसलिये कि मैं तुम से सच कहता हूं कि अगर तुम्हें राइ
के दानः बराबर इअतिक़ाद होवे तो अगर तुम उस पाहाड़ को कहो
कि इस मकान से वहां चला जा तो वुह चलाजायगा और कोई
२१ तुम्हारे आगे ना मुमकिन न होगा * लेकिन यिह जिन्स बिग़ैर
२२ नमाज़ और रोज़े के दूर नहीं होती * और जब वे जलील में
कारओबार करते थे ईसा ने उन्हें कहा यक़ीन है कि इबनि आदम
२३ ख़ल्क़ के हाथों से पकड़वाया जावे * और वे उसे क़तल करेंगे और
२४ वुह तीसरे दिन जी उठेगा तब वे बहुत ग़मगीं हूऐ * और जब
कुफ़रनाहूम में आये तो जिज़्यः लेनेवालों ने पास आके पतरस
२५ से कहा कि क्या तुम्हारा मुअल्लिम जिज़्यः नहीं देता * उसने
कहा कि हां और जब वुह घर में आया ईसा ने सबक़त करके उसे
कहा कि ऐ शमऊन तुझे क्या मअलूम होता है ज़मीन के
सलातीन किनसे ख़िराज लेते हैं अपने लड़कों से या बाहर वालों
२६ से * पतरस ने उसे कहा कि बाहर वालों से ईसा ने उसे कहा कि
२७ पस अलबत्तः लड़के आज़ाद हैं * लेकिन ता कि वे हमारे सबब से
ठोकर नखावें तू दरया पर जाकर बनसी डाल और जो मछली कि
पहले निकले उसे ले और उसका मुंह चीर तू एक रुपैयः पावेगा
उसे लेकर मेरे और अपने जिज़्ये में उन्हें दे *

अठारहवां बाब

१ उस वक़्त शागिर्दों ने आके ईसा से कहा पस आसमान की बादशाहत
२ में सबसे बड़ा कौन है * ईसा ने एक छोटे लड़के को बुलाकर
३ उनके बीच बिठाया * और कहा कि मैं तुम से सच कहता हूं कि
अगर तुम फिरके न जाओ और छोटे लड़कों की मानंद न बनो
४ तुम आसमान की बादशाहत में हरगिज़ दाख़िल न होगे * पस
जो कोई अपने तईं इस बच्चे की तरह फ़रोतन करे वही आसमान
५ की बादशाहत में सब से बड़ा है * और जो कोई ऐसे बच्चे को मेरे
नाम के लिये ख़ातिरदारी करे मेरी ख़ातिरदारी करता है *
६ पर जो कोई कि एक को उन लड़कों में से जो मेरे मुअतक़िद हैं
ठोकर खिलावे फिर उसके लिये बिहतर था कि एक चक्की का पाट
उसकी गर्दन में बांधा जाता और दर्या में तह तक पहुंचाया
७ जाता * ठोकर खिलाने वाली चीज़ों के सबब जहान पर वावैला
है क्यूंकि ठोकरें खाना तो ज़रूर है पर उस शख़्स पर जिसके सबब
८ से ठोकर लगे वावैला है * पस अगर तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे
गुनहगार करे उन्हें काट डाल और अपने पास से फेंक दे इस
वास्ते कि लंगड़ा या टुंडा ज़िन्दगी में दाख़िल होना तेरे लिये इस
से बिहतर है कि तेरे दो हाथ और दो पांव होवें और तू अबदी
९ आग में डाला जावे * और अगर तेरी आंख तुझे गुनहगार करे
तो निकाल डाल और उसे अपने पास से फेंक दे कि काना ज़िन्दगी
में दाख़िल होना तेरे लिये इस से बिहतर है कि तेरी दो आंखें

१० हो और तू आतिशि जहन्नम में डाला जावे * इहतियात करो कि
तुम इन छोटों में से किसी को तहक़ीर न करो कि मैं तुम से कहता
हूं कि आसमान पर उनके फ़िरिश्ते मेरे बाप का मुंह जो आसमान
११ पर है हमेशः देखते हैं * कि इबनि आदम इसलिये आया है
१२ कि हलाकशुदः को बचावे * तुम क्या ख़ियाल करते हो अगर
किसी आदमी के पास सौ गोसफ़न्द हों और उन में से एक गुम होजावे
तो क्या वुह उन निन्नानवे को छोड़ कर पहाड़ों पर नहीं चढ़ता
१३ और उस गुमशुदः को नहीं ढूंढता * और अगर ऐसा हो कि वुह
उसे पावे तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वुह जितना उन निन्नानवे
से जो गुम न हुई थीं ख़ुश था उस से बहुत ज़ियादः उस एक से
१४ ख़ुश होगा * इसी तरह से तुम्हारे बाप की जो आसमान पर है
१५ यिह ख़ुशी नहीं कि कोई इन छोटों में से हलाक होवे * और
अगर तेरा भाई तुझ से बुराई करे जा और फ़क़त अपने और उसके
१६ दरमियान उसे इलज़ाम दे * फिर अगर वुह तेरी बात सुनले तो
तुझ को अपना भाई पाना नफ़अ हूआ पर अगर वुह न सुने तो
एक या दो शख़्स और अपने साथ ले ता कि हरएक बात दो या तीन
१७ गवाहों के मुंह पर साबित होवे * और अगर वुह उनकी भी बात
से मुंह फेरे तो कलीसिया से कह फ़िर अगर वुह कलीसिया की
भी नमाने तो जानेदे कि वुह तेरे आगे जैसे अजनबी और ख़िराजगीर
१८ हूआ * मैं तुमसे सच कहता हूं जो कुछ तुम ज़मीन पर
बांधोगे आसमान पर बांधा जायगा और जो कुछ तुम ज़मीन पर

१९ खोलोगे आसमान पर खोलाजायगा * फिर मैं तुम से कहता हूं कि अगर दो तुम में से ज़मीन के ऊपर किसी मतलब पर जो वे चाहते हैं कोई मक़सद क्यूं नहो इत्तिफ़ाक़ करें वुह मतलब मेरे
२० बाप के तुफ़ैल जो आसमान पर है उनके लिये रवा होगा * इस लिये कि जिस जगह दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हैं वहां मैं
२१ उनके बीच हूं * तब पत्रस ने पास आकर कहा कि ऐ ख़ुदावंद कितने
२२ मरतबे मेरा भाई गुनाह करे और मैं उसे बख़्शूं सात मरतबे तक * ईसा ने उसे कहा कि मैं तुझ से सात मरतबे तक नहीं कहता
२३ बल्कि सत्तर और सात मरतबे तक * इस लिये कि आसमान की बादशाहत ऐक बादशाह के साथ तश्बीह दी गई है जिसने
२४ आपने ख़ादिमों से मुहासिबः चाहा था * और जब वुह मुहासिबः लेने लगा वे ऐक को जिस पर उस के दस हज़ार तोड़े क़र्ज़ थे
२५ उसके साम्हने लाये * पर इस लिये कि उसको अदाकरने का मक़दूर न था उसके साहिब ने हुक्म किया कि वुह और उसकी जोरू और बाल बच्चे और जो कुछ कि उसका हो बेचा जावे और
२६ क़र्ज़ अदा किया जावे * तब उस ख़ादिम ने गिरके और उसे सिजदः करके कहा कि ऐ ख़ुदावंद मुझे मुहलत दे कि मैं तेरा
२७ सारा क़र्ज़ अदा करूंगा * उस ख़ादिम के साहिब को रहम आया
२८ और उसने उसे छोड़ दिया और दैन उसे बख़्श दिया * उस ख़ादिम ने निकलकर अपने हमख़िदमतों से ऐकको जिसपर उसके सौ दीनार आते थे पाया और उसने उसे पकड़ कर उसका गला घोंटा

२९ और कहा जो मेरा निकलता है मुझे दे * और उसका हमखिदमत उसके पांव पर पड़ा और मिन्नत करके बोला कि मुझे
३० मुहलत दे कि मैं सब अदा करूंगा * पर उसने नमाना बल्कि उसे जाके क़ैदखाने में डाला कि मुक़ैयद रहे जबतक कि क़र्ज़ को
३१ अदा करे * तब उसके हमख़िदमत यिह वाक़िअ देखकर बहुत ग़मगीं हूए और आकर अपने साहिब को सारे माजरे से मुत्तिलअ
३२ किया * तब उसके साहिब ने उसे बुलाकर कहा कि ऐ शरीर चाकर मैं ने जोंहीं तुने मेरी मिन्नत की तुह सब क़र्ज़ बख़्श दिया *
३३ आया न चाहता था कि जब मैं ने तुझपर रहम कियाथा तूभी अपने
३४ हमख़िदमत पर रहम करता * और उसके साहिब ने ग़ुस्से होकर उसे जल्लादों के हवालः किया कि अज़ीयत खैंचे जबतक
३५ उसका सब क़र्ज़ अदा करे * सो मेरा बाप जो आसमान पर है तुमसे भी यही करेगा अगर हरएक तुममें से अपने भाइओं के गुनाहों को अपने दिलसे न बख़्शेगा *

उन्नीसवां बाब

१ और यूं हुआ कि ईसा इस कलाम को तमाम करके जलील से रवानः हुआ और अर्दन के पार यहूदियः की नवाही में आया *
२ और बहुत सी जमाअतें उसके पीछे हो लियां और उसने उन्हें
३ वहां शिफ़ा बख़्शी * और फ़रीसी उसके इमतिहान के लिये उसपास आये और कहा आया रवा है कि आदमी हरएक सबब से अपनी
४ जोरू को तलाक़ दे * उस ने जवाब दिया क्या तुमने नहीं पढ़ा

१४ इस लिये कि आस्मान की बादशाहत ऐसों ही की है * और
१५ उसने अपना हाथ उन पर रखा और वहां से रवानः हुआ * और
देखो कि एक ने आकर उसे कहा कि ऐ अच्छे उस्ताद मैं कौन
१६ अच्छा काम करूं ता कि हयाति अबदी पाऊं * उसने उसे कहा
कि तू मुझे क्यूं अच्छा कहता है अच्छा तो कोई नहीं मगर
एक जो खुदा है पर अगर तू हयात में दाख़िल हूआ चाहे तो
१७ हुक्मों को हिफ़ज़ कर * तब उसने कहा कि कौन से हुक्म ईसा
ने जवाब में कहा कि ये तू खून न कर तू चोरी न कर तू ज़िना
१८ न कर तू झूठ गवाही मत दे * अपने मां बाप की तकरीम कर और
१९ अपने क़रीब को ऐसा जैसा आप को दोस्त रख * उस जवान ने उसे
कहा कि मैं ने इन सब हुक्मों को अपनी लड़काई से हिफ़ज़ कर
२० रखा है अब मुझे क्या बाक़ी है * ईसा ने उसे कहा कि अगर तू
कामिल हूआ चाहे तो जाके जो कुछ कि तेरा है बेच डाल और
मुहताजों को बख़्श दे कि तुझे आस्मान पर गंज मिलेगा तब इधर
२१ आ और मेरे पीछे होले * पर जवान यिह बात सुन कर ग़मगीं
२२ चला गया इस लिये कि वुह बड़ा मालदार था * तब ईसा ने अपने
शागिर्दों को कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि दौलतमंद
आदमी आस्मान की बादशाहत में दुश्वारी से दाख़िल होगा *
२३ और फिर मैं तुम से कहता हूं कि सूई के नाके से ऊंट का गुज़रना
इससे आसानतर है कि एक दौलतमंद आस्मान की बादशाहत
२४ में दाख़िल होवे * जब उसके शागिर्दों ने यिह सुना निहायत

२६ हैरान होके बोले फिर कौन नजात पा सकता है * ईसा ने उनकी तरफ़ देखा और उनसे कहा कि यिह आदमियों के पास ना
२७ मुमकिन है लेकिन खुदा के पास सब चीज़ें मुमकिन हैं * तब पतरस ने जवाब दिया और उसे कहा देख कि हमने सब कुछ छोड़ा
२८ और तेरे पीछे होलिये पस हमको क्या मिलेगा * ईसा ने उन्हें कहा मैं तुमसे सच कहता हूं तुम जो मेरी पैरवी करते आये हूए जहान में जब इब्नि आदम अपनी हशमत के तख़्त पर जुलूस करेगा तुम भी बारह तख़्तों पर बैठोगे और इसराईल के बारह
२९ फ़िरक़ों की अदालत करोगे * और जिस किसी ने कि घरों या भाइयों या बहनों या बाप या मा या जोरू या बाल बच्चों या आराज़ी को मेरे नाम के लिये छोड़ा है सौ गुना पायगा और
३० हयाति अबदी का वारिस होगा * पर बहुत से जो अगले हैं पीछे होंगे और पीछले आगे *

बीसवां बाब

१ इस लिये आसमान की पादशाहत उस शख़्स से मुशाबह है कि साहिबिखानः हो जो तड़के सुबह को घर से निकला ता कि
२ अपने ताकिस्तान के वास्ते मज़्दूर लगावे * और जब उसने हर मज़्दूर का एक दीनार रोज़ीनः चुकाया तो उन्हें अपने
३ ताकिस्तान में भेज दिया * और तीसरी साअत में फिर गया और
४ औरों को बाज़ार में बेकार खड़े देखा * उनको कहा कि तुम भी ताकिस्तान में जाओ और जो कुछ तुम्हारा हक़ है मैं तुम्हें दूंगा

५ और वे गये * उन्हें छठी और नवीं साअत में फिर बाहर जाके
६ वही किया * ग्यारहवीं साअत के क़रीब फिर बाहर गया और
७ औरों को बेकार खड़े देखा * और उनको कहा कि तुम यहां सारे
दिन क्यूं बेकार खड़े रहते हो उन्हों ने उसे कहा इसलिये कि
हमको किसी ने मज़दूरी पर नहीं लगाया उसने कहा कि तुम भी
ताकिस्तान में जाओ और जो कुछ कि वाजिबी है तुम पाओगे *
८ चुनांचि जब शाम हुई तो ताकिस्तान के मालिक ने अपने पेशकार
से कहा कि मज़दूरों को बुला और पिछलों से शुरूअ करके पहलों
९ तक उनकी मज़दूरी दे * जब वे जो ग्यारहवां साअत में लगाये
गये थे आये और हरएक ने उन में से एक दीनार पाया *
१० और जब अगले आये उन्हें यिह गुमान था कि वे ज़ियादः पावेंगे
११ पर उन्हों ने भी एक ही दीनार पाया * जब उन्हों ने यिह पाया
१२ तो साहिबि ख़ानः के आगे गिड़ गिड़ाने लगे * और कहा कि
पिछलों ने फ़क़त एक ही साअत काम किया और तू ने उन्हें
हम से जो दिन के भारी काम और गरमी के मुतहम्मिल हुए
१३ बराबर किया * तब उसने उन में से एक को जवाब दिया और
कहा कि ऐ मियां मैं तुझ पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता क्या तू मुझ
१४ से एक दीनार लेने पर राज़ी न हूआ था * अपना हक़ ले और
चला जा मैं जितना तुझे देता हूं उस पिछले को उतनाही दूंगा *
१५ क्या रवा नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं क्या तू
१६ इस लिये बद नज़र है कि मैं नेक हूं * इसी तरह जो पिछले

हैं आगे और जो अगले हैं पीछे होंगे क्यूंकि बहुत से बुलाये
१७ गये हैं पर बर्गुज़ीदः थोड़े हैं * और ईसा औरशलीम को जाते
हूए बारह शागिर्दों को राह में किनारे लेगया और उन्हें कहा *
१८ देखो हम औरशलीम को जाते हैं और इब्नि आदम सरदारि
काहिनों और कातिबों के हाथ से पकड़वाया जायगा और वे उसके
१९ क़तल पर फ़तवा देंगे * और उसे आमी लोगों के हवालः करेंगे ताकि
ठठ्ठों में उड़ाएं और कोड़े मारें और सलीब पर खैंचें और वुह तीसरे
२० दिन फिर जी उठेगा * तब ज़ब्दी के बेटों की मा आपने बेटों को
साथ लेकर उस पास आई और उसको सिजदः किया और चाहा
२१ कि उस से कुछ अर्ज़ करे * और उस ने उसे कहा तू क्या
चाहती है उस ने कहा कि यिह फ़रमा कि मेरे ये
२२ दो बेटे तेरी दहनी तरफ़ और दूसरा बाईं तरफ़ बैठें * तब ईसा
ने जवाब दिया और कहा तुम नहीं जानते हो क्या मांगते हो
क्या तुम क़ादिर हो कि वुह पियालः जो मैं पीने पर हूं पीओ
और वुह इस्तिबाग़ जो मैं पाता हूं पाओ वे बोले कि हम क़ादिर
२३ हैं * उसने उन्हें कहा कि तुम बितहक़ीक़ मेरा पियालः पीओगे
और वुह इस्तिबाग़ जो मैं पाता हूं पाओगे लेकिन मेरी दाहनी
और मेरी बाईं तरफ़ बैठना मेरा काम नहीं कि तुम को बख़्शूं
बल्कि यिह उन्हें जिनके लिये मेरे बाप ने तैयार किया है दिया
२४ जायगा * और जब उन दस ने सुना वे उन दोनों भाइओं पर ग़ुस्से
२५ हूए * पर ईसा ने उन्हें बुलाकर कहा तुम जानते हो कि अक़्वाम

२६ के सरदार उनपर हाकिमी करते हैं * पर तुम में ऐसा नहोगा बल्कि जो कोई कि चाहे तुम में बुज़ुर्ग होवे चाहिये कि तुम्हारा
२७ ख़ादिम हो * और जो कोई चाहे कि तुम में सरदार बने चाहिये
२८ कि तुम्हारा बन्दः हो * चुनांचिः इब्नि आदम इस लिये नहीं आया कि मख़दूम बने बल्कि इस लिये कि ख़ादिम होवे और अपनी
२९ जान को बहुतों के लिये फ़िद्ये में दे * और जब वे अरीहू से रवानः
३० होने लगे बहुत से लोग उसके पीछे हो लिये * और देखो कि दो अंधे जो राह से किनारः बैठे थे ईसा का उधर से गुज़रना सुनकर
३१ पुकारे कि ख़ुदावंद इब्नि दाऊद हमपर रहम कर * और उस गरोह ने उन्हें मलामत की ता कि वे चुप रहें पर चिल्लाये और
३२ बोले कि ऐ ख़ुदावंद इब्नि दाऊद हमपर रहम कर * तब ईसा खड़ा रहा और उन्हें बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
३३ लिये करूं * उन्हों ने कहा कि ऐ ख़ुदावंद हमारी आंखें खुल
३४ जावें * ईसा को रहम आया और उसने उनकी आंखों को छुआ और उसी दम उनकी आंखें बीना हुईं और वे उसके पीछे होलिये *

इक्कीसवां बाब

१ और वे औरशलीम के नज़दीक पहुंचे और बैतिफ़ज़ा में कोहि
२ ज़ैतून के नज़दीक आये तब ईसा ने शागिर्दों को भेजा * और उन्हें कहा कि उस गांव में जो तुम्हारे साम्हने है जाओ और एक बंधी हुई गधी और उसके साथ एक बच्चः वहीं पाओगे
३ खोल कर मुझ पास लाओ * और अगर कोई तुम को कुछ कहे

तो तुम कहिओ कि ख़ुदावंद को ये दरकार हैं तो वुह फ़िलफ़ौर उन्हें
४ भिजवा देगा * यिह सब कुछ वाक़िअ हूआ ता कि नबी की
५ मारिफ़त से जो कहा गया था पूरा होवे * कि सैहून की बेटी
से कह कि देख तेरा बादशाह फ़रोतनी से गधी पर बल्कि लादू
६ गधी के बच्चे पर सवार होके तुझ पास आता है * तब शागिर्द
७ गये और जैसा ईसा ने उन्हें हुक्म किया था दजा लाये * और
उस गधी को बच्चः समेत ले आये और उन्हों ने अपने कपड़े उन
८ पर डाल के उसपर बिठलाया * और बड़ी जमाअत ने अपने कपड़ों
को रस्ते में बिछाया और कितनों ने दरख़्तों की डालियां काटीं और
९ राह में बिथराईं * और जमाअतें जो उसके परओ पेश जाती
थीं पुकार के कहतीं थीं दाऊद के बेटे को हूशअना वुह जो
ख़ुदावंद के नाम से आता है उसको ख़बर हो सब से बलंद मकानों
१० में हूशअना * और जब वुह औरशलीम में आया तो सारे
११ शहर में ग़लग़लः पड़ा और कहा कि यिह कौन शख़्स है * तब
जमाअतों ने कहा कि यिह नासिरः जलील का ईसा नबी है *
१२ और ईसा ख़ुदा की हैकल में गया और उन सभों को जो हैकल में
ख़रीद ओ फ़रोख़्त करते थे बाहर निकाल दिया और सर्राफ़ों के तख़्ते
१३ और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दियां * और उन्हें कहा
कि लिखा यिह है कि मेरा घर इबादत का घर कहलावेगा और
१४ तुमने उसे चोरों का ग़ार बनाया * और अंधे और लंगड़े हैकल में
१५ उसपास आये और उसने उन्हें चंगा किया * और जब सरदारि

काहिनों और कातिबों ने करामतें को जो उसने दिखलाईं और
लड़कों को हैकल में चिल्लाते और दाऊद के बेटे को हूशअना
१६ कहते हुए देखा तो बहुत नाखुश हुए * और उस से कहा कि तू
सुनता है कि ये क्या कहते हैं ईसा ने उन्हें कहा कि हां क्या
तुमने यिह नहीं पढ़ा कि लड़कों और शीरख़ारों के मुंह से तू ने
१७ अपनी तहसीन को पूरा किया * तब उसने उन्हें छोड़ा और
शहर से बाहर निकल कर बैत ऐना में आया और वहां शबबाश
१८ हुआ * और सुबह जब वुह शहर में आने लगा तो उसे भूख लगी *
१९ तब वुह अंजीर का ऐक दरख़्त राह में देखकर उसके नज़दीक
आया लेकिन पत्तों के सिवा उसपर कुछ न पाया तब बोला कि क़िया
मत तक तुझ में फ़ल न लगे और अंजीर का दरख़्त वोंहीं सूख
२० गया * और शागिर्द यिह देखके हैरान हुए और बोले कि
२१ यिह अंजीर का दरख़्त क्या ही जल्द खुश्क होगया * ईसा ने
जवाब दिया और उन्हें कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि अगर
तुम इअतिक़ाद करो और शक न लाओ तो तुम यिह जो अंजीर के
दरख़्त से किया गया सिर्फ़ यही न करोगे बल्कि अगर तुम उस
पहाड़ को कहोगे कि उठ चल और दरया में गिरपड़ तो वैसा ही
२२ होगा * और इअतिक़ाद से जो कुछ तुम दुआ में मांगोगे सो तुम्हें
२३ मिलेगा * और जब वुह हैकल में आया तो सरदार काहिन
और क़ौम के मशाइख़ जिसवक़्त वुह वअज़ करता था उसपास
आये और कहने लगे कि तू किस इख़तियार से ये काम

२४ करता है और किसने तुझे यिह इख़तियार दिया * तब ईसा ने
जवाब दिया और उन्हें कहा कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं
अगर तुम बतलाओगे तो मैं भी तुम्हें बतलाऊंगा कि मैं किस
२५ इख़तियार से ये काम करता हूं * यहया का इस्तिबाग़ कहां से
था आसमान से या ख़लक़ से तब उन्हों ने अपने दिल में यिह
अन्देशः किया कि अगर हम कहें कि आसमान से तो वुह हमसे
२६ कहेगा फिर तुम किस लिये उसके मुअतक़िद न हुए * और
अगर हम कहें आदमियों से तो हम जमाअतों से डरते हैं क्यूंकि
२७ सब यहया को नबी जानते हैं * तब उन्हों ने ईसा को जवाब दिया
और कहा कि हम नहीं जानते उसने भी उन्हें कहा कि मैं भी
२८ नहीं बताता कि किस इख़तियार से ये काम करता हूं * पर तुम
को क्या मअलूम होता है एक शख़्स के दो बेटे थे वुह पहले पास
आया और उसे कहा बेटा जा और आज के दिन मेरे ताकिस्तान
२९ में काम कर * उसने जवाब दिया और कहा कि मेरा जी नहीं
३० चाहता पर आख़िर को पशेमान होकर गया * और उसने दूसरे
पास आकर वही कहा उसने जवाब दिया और कहा कि साहिब
३१ मैं चला पर न गया * उन दोनों में से किसने बाप की फ़रमांबरदारी
की उन्हों ने उसे कहा कि पहले ने ईसा ने उन्हें कहा कि मैं
तुम से सच कहता हूं कि बाजगीर और क़हबाएं तुम से आगे ख़ुदा
३२ की बादशाहत में जायेंगे * क्यूंकि यहया रास्ती की राह से तुम पास
आया और तुमने उसे न माना लेकिन बाजगीरों और क़हबाओं ने

उसका इअतिक़ाद किया और तुम देखकर आख़िर को पशेमान भी
३३ न हुए कि उसकी तसदीक़ करते * एक और तमसील सुनो एक
साहिबि ख़ानः था उसने अंगूरों का बाग़ लगाया और उसके गिर्दा
गिर्द इहातः बांधा और उसके बीच खोदके कोल्हू बनाया और
बुर्ज बनाया और उसे मालियों के सुपुर्द कर के आप सफ़र को गया *
३४ और जब मेवे का मौसम नज़दीक हुआ उसने अपने ख़ादिमों को
३५ मालियों पास भेजा ता कि वे उसका मेवः लें * उन बाग़बानों ने
उसके ख़ादिमों को पकड़के एक को कुचला और एक को क़तल
३६ किया और एक को संगसार किया * उसने फिर और
ख़ादिमों को जो अगलों से गिनती में ज़ियादः थे भेजा और उन्हों
३७ ने उनसे वही सलूक किया * आख़िरि कार उसने अपने बेटे
को उनके पास यिह समझ कर भेजा कि वे मेरे बेटे से दबेंगे *
३८ पर मालियों ने जब बेटे को देखा तो आपस में कहा कि वारिस
यही है आओ इसे मार डालें और उसकी मीरास पर क़बज़ः
३९ करें * और उन्हों ने उसे पकड़ा और ताकिस्तान से बाहर निकाल
४० के क़तल किया * अब जो ताकिस्तान का साहिब आवे तो उन
४१ मालियों का क्या हाल करेगा * वे बोले कि उन बुरों को बुरी
तरह से मारेगा और ताकिस्तान के तईं और बाग़बानों के जो
४२ मेवे उन के मौसम में उसे पहुंचावें सुपुर्द करेगा * ईसा उन्हें
कहा क्या तुमने किताबों में नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को
मिअमारों ने नामक़बूल जाना वही कोनेका सिरा हुआ यिह

४३ खुदावंद की तरफ़ से है और हमारी नज़रों में अजीब है * इस लिये मैं तुमसे कहता हूं कि खुदा की बादशाहत तुमसे छीनी जायगी और एक क़ौम को जो उसके मेवों को लावे दी जायगी *
४४ और जो कोई इस पथर पर गिरेगा कुचल जायगा पर जिसपर
४५ यिह पत्थर गिरेगा उसे पीस डालेगा * जब सरदारि काहिनों और फ़रीसियों ने उस की तम्सीलें सुनीं उन्हों ने मालूम किया
४६ कि वुह उन्हीं के हक़ में कहता है * तब उन्हों ने चाहा कि उसे पकड़ लें पर वे लोगों से डरे क्यूंकि वे उसे नबी जानते थे *

बाईसवां बाब

१ ईसा फिर उन्हें तम्सीलों में कहने लगा और बोला *
२ कि आस्मान की बादशाहत उस बादशाह से मुशाबह है जिस
३ ने अपने बेटे का ब्याह किया * और अपने चाकरों को भेजा कि मिहमानों को ब्याह में बुलावें पर उन्हों ने नचाहा कि
४ आवें * उसने फिर अपने खादिमों को भेजा और कहा लोगों को जो बुलाये गये हैं कहो कि देखो मैंने अपना खाना तैयार किया है और मेरे बैल और फ़रबिह जानवर ज़बह हुए हैं और
५ सब चीज़ें तैयार हैं ब्याह में आओ * लेकिन वे तग़ाफ़ुल करके गये एक अपने खेत को और दूसरा अपनी सौदागरी को गया *
६ और बाक़ियों ने उसके खादिमों को पकड़ के बद सलूकी की और
७ क़त्ल किया * तब बादशाह सुनकर ग़ुस्से हूआ और अपने लश्करों को भेज कर उन क़ातिलों को क़त्ल किया और उनका

८ शहर फूंक दिया * फिर उस ने अपने ख़ादिमों को कहा कि
९ ब्याह तैयार है पर वे जो बुलाये गये नालाइक़ थे * अब तुम
शहरहों जाओ और जितने तुमको मिलें शादी में बुलाओ *
१० पुनांचिः ख़ादिमों ने राहों में जाके जो उन्हें मिले क्या बुरे क्या
भले सब को राहों में जमअ किया और ब्याह का घर मिहमानों
११ से भर गया * जब बादशाह मिहमानों के देखने को अंदर आया
तब उसने वहां एक शख़्स को देखा जो शादी का लिबास
१२ पहने नथा * उसने उसे कहा कि ऐ दोस्त तू क्यूं कर बिग़ैर
शादी के लिबास के यहां अंदर आया उसकी ज़बान बन्द रही *
१३ तब उस बादशाह ने ख़ादिमों को कहा कि उसके हाथ और पांव
बांध कर लेजाओ और बाहर अंधेरे में डाल दो वहां रोना और
१४ दांत पीसना होगा * इस लिये कि बहुत हैं जो बुलाये गये हैं
१५ पर बरगुज़ीदः थोड़े हैं * तब फ़रीसों ने जाके मशवरः किया कि
१६ उसे क्यूंकर उसकी बातों के सबब फन्दे में डालें * और उन्हों ने
अपने शागिर्दों को हीरूदीसों के साथ उस पास भेजा कि उसे
कहें कि ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और रास्ती से
ख़ुदा की राह बताता है क्यूंकि तू आदमियों के तशख़्ख़ुस पर नज़र
१७ नहीं करता * पस हम को कह तू क्या तसव्वुर करता है क़ैसर
१८ को जिज़्यः देना रवा है या नहीं * तब ईसा ने उनकी शरारत
१९ दरयाफ़्त करके कहा ऐ रियाकारो क्यूं मुझे आज़माते हो * जिज़्ये
का सिक्कः मुझे दिखलाओ और वे एक दीनार उस पास लाये *

२० तव उसने उन्हें कहा कि यिह सूरत किसकी और यिह सिक्का
२१ किसका है वे बोले कि क़ैसरी है * तब उसने उन्हें कहा कि
जो चीज़ें क़ैसर की हों क़ैसर को और जो ख़ुदा की हों ख़ुदा को
२२ दो * उन्हों ने यिह सुन के तअज्जुब किया और उसे छोड़ कर
२३ चले गये * उसी रोज़ ज़ादूक़ी जो हश्र के क़ाइल नहीं उस पास
२४ आये और उस से सुवाल किया * कि ऐ उस्ताद मूसा ने कहा है
जब ऐक शख़्स बेफ़रज़न्द मर जावे तो उसका भाई उसकी जोरू से
२५ निकाह करे ता कि उस से उस के भाई के लिये नस्ल चले * सो
हमारे साथ ऐक सात भाई थे और पहला ऐक जोरू करके मरगया
और इस लिये कि बेफ़रज़न्द था अपनी जोरू को अपने
२६ भाई के लिये छोड़ गया * और इसी तरह दूसरा और तीसरा
२७ भी सातों तक * सब के पीछे वुह रंडी भी मर गई *
२८ अब क़ियामत में उन सातों से वुह किसकी जोरू होगी क्यूंकि
२९ सब ने उसे रखा था * ईसा ने जवाब दिया और उन्हें कहा कि
तुम किताबों और ख़ुदा की क़ुदरत को न समझ कर ग़लती करते
३० हो * क्यूंकि क़ियामत में लोग न ब्याह करते हैं न ब्याह दे जाते
हैं बल्कि आसमान पर ख़ुदा के फ़िरिश्तों की मानन्द रहते हैं *
३१ और मुरदों के हश्र में जो ख़ुदा ने तुम्हें फ़रमाया क्या तुमने
३२ नहीं पढ़ा * कि मैं इब्राहीम का ख़ुदा और इसहाक़ का ख़ुदा
और यअक़ूब का ख़ुदा हूं ख़ुदा मुरदों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का
३३ ख़ुदा है * जमाअतें यिह सुनके उसकी तअलीम से हैरान

३४ हुईं * और जब फ़रीसियों ने सुना कि उसने सदूक़ियों का
३५ मुंह बन्द किया वे एक जगह जमअ हूए * और एक ने उन में से
जो फ़क़ीह था उसकी आज़माइश के लिये सुवाल किया और
३६ यिह कहा * कि ऐ उस्ताद शरअ में बड़ा हुक्म कौन है *
३७ ईसा ने उस से कहा कि खुदावंद को जो तेरा खुदा है अपने
सारे दिल से और अपने सारे जी से और अपनी सारी जान से
३८ प्यार कर * पहला और बड़ा हुक्म यिह है * और दूसरा जो
३९ उसकी मानन्द है यिह है कि तू अपने हमसाये को ऐसा प्यार कर
४० जैसा आप को करता है * सारी शरअ और सब नबी इन्हीं
४१ दो हुक्मों से तअल्लुक़ रखते हैं * और जिसवक़्त फ़रीसी जमअ
४२ थे ईसा ने उन से पूछा * कि मसीह के हक़ में तुम्हारा क्या
गुमान है वुह किसका बेटा है वे बोले कि दाऊद का * उस ने
४३ उन्हें कहा पस दाऊद इलहाम से क्यूंकर उसे खुदावंद कहता
४४ है * कि खुदावंद ने मेरे खुदावंद को कहा कि जबतक मैं तेरे
दुश्मनों को तेरे पांव तले की चौकी करूं तू मेरी दहनी तरफ़ बैठ *
४५ पस दाऊद अगर उस को खुदावंद कहता है तो वुह उसका बेटा
४६ क्यूंकर है * और कोई शख़्स उस को जवाब में एक बात न
कह सका और उस दिन से किसी को जुरअत न रही कि उस से
कभी सुवाल करे *

तेईसवां बाब

१ तब ईसा ने उन जमाअतों और अपने शागिर्दों को कहा *

२ कि कातिब और फ़रीसी मूसा के तख़्त पर बैठते (३) इस लिये सब जो कुछ वे तुम्हें कहें कि हिफ़्ज़ करो तुम हिफ़्ज़ करो और बजा लाओ लेकिन उनके से काम न करो क्यूंकि वे कहते हैं और
४ नहीं करते * इस लिये कि वे भारी बोझे जिनका उठाना दुश्वार है बांध ते हैं और लोगों के कांधों पर रखते हैं पर वे आप नहीं
५ चाहते कि अपनी ऐक उंगली से उन्हें हिलावें * और वे अपने सब काम करते हैं ता कि लोगों को दिखावें और अपने तअवीज़ों को बड़ा बनाते हैं और अपने जेबों के दामनों को लंबा करते हैं *
६ और मिहमानियों में सद्र जगह की और मजमओं में बाला
७ नशीनी की * और रस्तों में सलाम की और उसकी कि ख़ल्क़ उन्हें
८ रबी रबी कहे ख़्वाहिश रखते हैं * पर तुम रबी मत कहलाओ क्यूंकि
९ तुम्हारा हादी ऐक है जो मसीह है और तुम सब भाई हो * और ज़मीन पर किसी को अपना बाप न कहो कि तुम्हारा बाप ऐक है
१० जो आसमान पर है * और न तुम हादी कहलाओ क्यूंकि तुम्हारा
११ हादी ऐक है जो मसीह है * बल्कि वुह शख़्स जो तुम सब से बड़ा है
१२ तुम्हारा ख़ादिम हूआ * और जो कोई कि अपने तईं बलन्द करेगा पस्त हो जायगा और जो कोई अपने तईं पस्त करेगा
१३ बलन्द होगा * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुम पर वावैला है इस लिये कि तुम आसमान की बादशाहत को लोगों पर बन्द करते हो और उस में न तुम आप आते हो और न आने वालों
१४ को आने देते हो * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुम पर

वावैला है क्यूंकि तुम बेवों के घरों को निगलते हो और बहाने से नमाज़ को तूल देते हो इसवास्ते तुमको ज़ियादः तर अज़ाब

१५ होगा * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुम पर वावैला है क्यूंकि तुम बहरओबर की सैर इस लिये करते हो कि एक को अपने दीन में लाओ और जब वुह आचुका फ़िर तुम

१६ आप से उसे दूना जहन्नम का फ़रज़न्द बनाते हो * ऐ अंधे रहनुमाओ तुमपर वावैला है क्यूंकि यिह कहते हो कि अगर कोई हैकल की क़सम खावे कुछ मुज़ाइक़ः नहीं पर जो कोई कि हैकल

१७ के सोने की क़सम खावे वुह क़र्ज़दार है * ऐ जाहिलो और अंधो कौन ज़ियादः बुज़ुर्ग है सोना या हैकल जो सोने को

१८ तक़हुस बख़्शती है * और यिह कि जो कोई मज़बिह की क़सम खावे कुछ मुज़ाइक़ः नहीं पर जो कोई उस हदये की जो उसपर

१९ है क़सम खावे वुह क़र्ज़दार है * ऐ जाहिलो और अंधो कौन ज़ियादः बुज़ुर्ग है हदयः या मज़बिह जो हदये को तक़हुस बख़्शता

२० है * इस लिये जो कोई मज़बिह की क़सम खाता है वुह उसको

२१ और सब चीज़ों की जो उस पर हैं क़सम खाता है * और जो कोई हैकल की सौगन्द करे उसकी और उसकी जो उस में

२२ रहता है सौगन्द करता है * और जो आसमान की क़सम खावे ख़ुदा के तख़्त की और उसकी जो उस पर बैठा है क़सम खाता है *

२३ ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुम पर वावैला है क्यूंकि तुम पोदीनः और उन्नीसों और कमों का दसवां हिस्सः आदा

करते हो और शरीअत के भारी ज़ुक्नों को यअ़ने इन्साफ़ और रहमत और ईमान को तुमने छोड़ दिया है चाहता था कि तुम
२४ उन्हें करो और उन्हें न छोड़ो * ऐ अंधे रहनुमाओ मच्छर दूर
२५ करने के लिये छांटे हो और ऊंट को निगल जाते हो * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुमपर वाविला है कि तुम बाहरवार से प्यालः और रिकाबी को साफ़ करते हो और वे अंदरवार से
२६ जब्र और बदपरहेज़ी से भरे हूए हैं * ऐ अंधे फ़रीसी पहले प्यालः और रिकाबी को अंदर से साफ़ करना कि वे बाहरवार से
२७ भी साफ़ होवें * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुमपर वाविला है तुम उन क़बरों से जो सफ़ेद की गई हैं मुशाबह हो वे ऊपर से तो ख़ुशनुमा हैं पर अंदरवार से मुर्दों की हड्डियों और
२८ सारी नजासतों से भरी हैं * इसी तरह तुम भी ज़ाहिर में ख़ल्क़ को रास्तबाज़ देखाई देते हो और बातिन में मक्र और गुनाह से
२९ भरे हूए हो * ऐ रियाकार कातिबो और फ़रीसियो तुमपर वाविला है क्यूंकि तुम नबियों की क़बरों को बनाते हो और रास्तबाज़ों की
३० गोरों को आरास्तः करते हो * और कहते हो कि हम अपने बापदादों के ऐयाम में होते तो उनकेसाथ नबियों के ख़ून में शरीक
३१ न होते * इस लिये तुम अपने गवाह हो कि तुम उनके जिन्हों
३२ ने नबियों क़तल किया फ़रज़न्द हो * अच्छा तुम अपने बाप
३३ दादों के पैमाने को भरो * ऐ सांपो और सपूलियों की नस्ल तुम
३४ जहन्नम के अ़ज़ाब से क्यूंकर भागोगे * इस लिये देखो मैं नबियों

और दानाओं और कातिबों को तुम्हारे पास भेजता हूं और तुम
उन में से कितनों को क़त्ल करोगे और सलीब दोगे और कितनों
को अपने मजमओं में कोड़े मारोगे और सता सता कर शहर बशहर
३५ फिराओगे * ता कि सब रास्तबाज़ों का ख़ून जो ज़मीन पर बहाया
गया है हाबील रास्तबाज़ के ख़ून से लेकर ज़करिया इब्ने
बरकिया के ख़ून तक जिसे तुम ने हैकल और मज़बह
३६ के बीच में क़त्ल किया तुम पर आवे * मैं तुम से सच कहता हूं
३७ कि ये सब कुछ इस अस्र के लोगों पर आवेगा * ऐ औरशलीम
औरशलीम जो नबियों को क़त्ल करती है और उन्हें जो तुझ
पास भेजे गये हैं संगसार करती है मैं ने कितने बार चाहा कि
तेरे फ़रज़न्दों को जिस तरह कि मुर्ग़ी बच्चों को परों तले जमअ
३८ करती है जमअ करूं और तुम ने न चाहा * देखो तुम्हारे लिये
३९ तुम्हारा घर वीरान छोड़ा जाता है * क्यूंकि मैं तुम्हें कहता हूं
कि तुम जिसवक़्त तक न कहोगे कि सलाम उसपर जो ख़ुदावंद के
नाम से आता है फिर तुम्हारी निगाह मुझपर न पड़ेगी *

चौबीसवां बाब

१ और ईसा हैकल से बाहर निकलकर चलागया और उस के शागिर्द
२ उसपास आये ता कि इमारतें उसे दिखलाऐं * और ईसा ने
उन्हें कहा तुम उनसब चीज़ों को नहीं देखते हो मैं तुम से सच
कहता हूं कि यहां एक पत्थर पत्थर पर न छूटेगा जो न गिराया
३ जायगा * और जब वुह ज़ैतून के पहाड़ पर बैठा उस के शागिर्दों

ने उसपास ख़िलवत में आके कहा हम से कह कि ये चीज़ें कब
होंगी और तेरे आने और दुनया के तमाम होने का निशान
४ क्या है * तब ईसा जवाब दिया और कहा देखो कोई तुम्हें
५ गुमराह न करे * क्यूंकि मेरे नाम से बहुतेरे आवेंगे और हरएक
कहेगा कि मैं मसीह हूं और बहुतेरों को गुमराह करेंगे *
६ और तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की ख़बरें सुनोगे ख़बरदार मत
घबराइयो क्यूंकि इन चीज़ों का वाक़िअ होना ज़रूर है पर इनतिहा
७ हनोज़ नहीं * कि उम्मत उम्मत पर और ममलुकत ममलुकत पर
८ ख़ुरूज करेगी और काल पड़ेंगे * और उबायें और ज़लज़ले
अकसर मकानों में आवेंगे यिह सब कुछ मुसीबतों की इबतिदा
९ है * और वे तुम्हें रंज में डालेंगे और तुम्हें क़तल करेंगे और मेरे
१० नाम के सबब से सारी उम्मतें तुम से दुश्मनी रखेंगी * और उसवक़्त
बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरे को पकड़वा देगा और एक
११ दूसरे से दुश्मनी रखेगा * और बहुत से झूठे नबी ज़ाहिर होंगे
१२ और बहुतों को गुमराह करेंगे * इसलिये कि बदकारी बहुत
१३ होगी बहुतों की महब्बत ठंढी होजायगी * जो आख़िर तक सबर
१४ करेगा वही नजात पायेगा * बादशाहत की यिह ख़ुशख़बरी तमाम
दुनया में दी जायगी ता कि सारी उम्मतों पर गवाही होवे और तब
१५ इनतिहा आवेगी * पस जब तुम उन ख़राब करनेवालों की मकरूह
चीज़ को जिसकी ख़बर दानियाल नबी की मअरिफ़त से दी गई है
मकानि मुक़द्दस में बरपा देखोगे जो कोई कि पढ़े फ़िक्र करे *

१६ तब वे जो यहूदिया में होंगे कोहिस्तान को भागें (१७) और जो
कोठे पर होगा नीचे न उतरे कि अपने घर से कुछ चीज़ निकाले *
१८ और वुह जो मैदान में होगा पीछे न फिरे कि अपनी पोशाक ले *
१९ और अफ़सोस उनपर है जो उस ऐयाम में पेट वालियां और दूध
२० पिलाने वालियां हों * और तुम दुआ मांगो कि तुम्हारा भागना
२१ जाड़े में और सीत के दिन न हो * क्यूंकि उसवक़्त बड़ी तंगी होगी
जो इब्तिदाय आलम से अबतक कभी न हूई और न कभी होगी *
२२ और अगर वे दिन कोताह न होते तो एक तन नजात न पाता
लेकिन वे रोज़ बरगुज़ीदों के लिये कोताह किये जायेंगे *
२३ तब अगर कोई तुम से कहे कि देखो मसीह यहां या वहां है
२४ बावर न कीजियो * क्यूंकि बहुत से झूठे मसीह और झूठे नबी
ज़ाहिर होंगे और ऐसे बड़े मुअजिज़े और करामतें दिखलायेंगे
कि अगर मुमकिन होता तो वे उन्हीं बरगुज़ीदों को गुमराह
२५ करते * देखो मैं आगे से कह चुका हूं (२६) इसलिये कि अगर
वे तुम्हें कहें कि देखो वुह दश्त में है तो बाहर मत जाइयो या
२७ कि देखो वुह ख़िलवतख़ाने में है तो बावर न कीजियो * इसलिये
कि जिस तरह से कि बिजली मशरिक़ में चमकती है और
मग़रिब तक रोशन करती है इब्नि आदम की आमद उसी तरह से
२८ होगी * क्यूंकि जहां कहीं मुरदार है गिध वहीं जमअ होंगे *
२९ उन रोज़ों में उस तंगी के बअद फ़िलफ़ौर सूरज अंधेरा हो जायगा
और चांद अपनी रोशनी न देगा और सितारे आसमान से गिरेंगे

L

३० और आसमानों की कुव्वतों को क़रार न रहेगा * और उस वक़्त इब्नि आदम का निशान आसमान पर नुमायां होगा और उस वक़्त जहान के सारे फ़िरक़े छाती पीटेंगे और इब्नि आदम को बड़ी कुदरत और हशमत से आसमान की बदलियों पर आते देखेंगे *
३१ और वुह नरसिंगे के बड़े शोर के साथ अपने फ़िरिश्तों को भेजेगा वे चारों हवाओं से आसमान के इस सिरे से उस सिरे तक उसके
३२ बरगुज़ीदों को जमअ करेंगे * अब अंजीर दरख़्त से मुनासिबत सीखो कि जब उसकी डाली नर्म होती है और पत्ते निकलते हैं तुम
३३ जानते हो कि गरमी नज़दीक है * इसी तरह से जब तुम यिह
३४ सब कुछ देखो जानो कि वुह नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है * मैं तुम से सच कहता हूं जबतक कि ये सब चीज़ें पूरी न होलें यिह पुश्त
३५ गुज़र न जायगी * आसमान और ज़मीन टल जायेंगे पर मेरी बातें
३६ न टलेंगी * लेकिन उस दिन और उस साअत को फ़क़त मेरे बाप के
३७ सिवा आसमान के फ़िरिश्तों तक कोई नहीं जानता * और जिस तरह कि नूह के ऐयाम में हुआ इब्नि आदम का आना भी ऐसाही होगा *
३८ इसलिये कि जिस तरह वे उन रोज़ों में तूफ़ान से पेशतर जिस दिन तक कि नूह किश्तीपर चढ़ बैठा खाते और पीते थे और ब्याह करते
३९ थे और ब्याह कर देते थे * और न जाना जबतक कि तूफ़ान आया और उन्हें लेलिया इब्नि आदम का आना भी उसी तरह से
४० होगा * तब दो शख़्स जो मैदान में होंगे एक गिरिफ़्तार होगा और
४१ दूसरा छूट जायगा * दो रंडियां जो चक्की पीसतियां होंगी एक

४१ पकड़ी जायगी और दूसरी छूट जायगी * इसलिये जागते रहो
४२ कि तुम नहीं जानते तुम्हारा खुदावंद किस घड़ि आवेगा * पर
इसे समझो कि अगर साहिबि खानः जानता कि चोर किस पहर
आवेगा तो वुह जागता रहता और अपने घर में सेंध देने
४४ न देता * इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिसवक्त तुम्हें गुमान
४५ न होगा इबनि आदम उसी वक्त आवेगा * पस दियानतदार और
होशयार खिदमतगार कौन है जिसे उसके साहिब ने अपने घराने
४६ पर नाज़िर किया कि वक्त पर उन्हें खाना खिलावे * नेक बख़्त
वुह खिदमतगार है कि उसका साहिब जब आवे उसे यही करते
४७ हुए पावे * तुमसे सच कहता हूं कि वुह उसे अपने सब
४८ अमवाल पर नाज़िर करेगा * लेकिन अगर वुह शरीर खिदमतगार
अपने दिल में कहे कि मेरा खुदावंद अपने आने में देर करता
४९ है * और अपने हम खिदमतों को तमांचः मारना और बादःपरस्तों
५० के साथ खाना पीना शुरूअ करे * उस खिदमतगार का खुदावंद
ऐसे रोज़ कि वह न देखता हो और ऐसी साअत में कि वुह
५१ बेख़बर हो आवेगा * और उसे दो टुकड़े करेगा और उसका
हिस्सः रियाकारों के साथ मुक़र्रर करेगा वहां रोना और दांत
पीसना होगा *

पच्चीसवां बाब

१ उसवक्त आसमान की बादशाहत दस बाकिरः रंडियों से मुशाबह
२ होगी * जो अपने चिराग़ों को उठाकर दुल्हा के इस्तिक़बाल को

३ चलीं * और पांच उन में से चतुरी और पांच बेवकूफ़ थीं उन्हों ने
जो बेवकूफ़ थीं अपने चिराग़ उठा लिये और तेल अपने साथ
४ न लिया * पर उन चतुरियों ने बरतनों में तेल अपने चिराग़ों के
५ साथ लिया * जब दूल्हा ने देर की वे सब ऊंघ गईं और सो गईं *
६ और आधी रात को धूम मची कि दूल्हा आता है उसके
७ इस्तिक़बाल को निकलो * तब उन सब कुंआरियों ने उठकर
८ चिराग़ों को आरास्ता किया * और बेवकूफ़ों ने चतुरियों को कहा
कि अपने तेल में से हमें भी दो कि हमारे चिराग़ बुझने पर हैं *
९ पर चतुरियों ने जवाब दिया और कहा कि ऐसा न हो कि कुछ
हमारे और तुम्हारे लिये बस न होवे बिहतर है कि जो बेचते हैं
१० तुम उन पास जाओ और अपने लिये मोल लो * सो जब वे
ले गईं दूल्हा आपहुंचा और वे जो तैयार थीं उसके साथ शादी
११ के घर में अंदर गईं और वुह दरवाज़ः बन्द हूआ * पीछे वे और
कुंआरियां भी कहती हूईं आईं कि ऐ ख़ुदावंद ऐ ख़ुदावंद हमारे
१२ लिये खोल * तब उसने जवाब दिया और कहा मैं तुम से सच
१३ कहता हूं कि मैं तुम्हें नहीं पहचानता * इस लिये जागते रहो
क्यूंकि तुम नहीं जानते कि इब्नि आदम कौन से दिन और
१४ कौन सी घड़ी में आवेगा * इस लिये कि यिह उस शख़्स की मानन्द
है जिसने सफ़र करते हूए अपने ख़ादिमों को बुलाया और अपना
१५ अमवाल उनके सुपुर्द किया * और एक को पांच तोड़े और दूसरे
को दो और तीसरे को एक हर शख़्स को उसकी क़ाबिलीयत के

१६ मुवाफ़िक़ दिये और फ़िलफ़ौर सफ़र किया * तब जिसने पांच तोड़े
पाये थे गया और उनसे लेन देन किया और पांच तोड़े और पैदा
१७ किये * और इसी तरह उसने भी जिसने दो पाये थे और दो
१८ कमाये * पर जिसने एक पाया था गया और ज़मीन खोद कर
१९ अपने आक़ा के रुपे को गाड़ दिया * बहुत दिनों के बाद उन
२० ख़ादिमों का आक़ा आया और उनसे हिसाब लेने लगा * चुनांचि
जिसने पांच तोड़े पाये थे आया और पांच तोड़े और भी लाया और
कहा ऐ ख़ुदावंद तूने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे देख कि मैंने उनके
२१ सिवा पांच तोड़े और भी कमाये * उसके आक़ा ने उसे कहा कि ऐ
अच्छे दियानतदार ख़ादिम आफ़रीं थोड़ी सी चीज़ों में तू दियानतदार
निकला मैं तुझे बहुत सी चीज़ों पर मुख़्तार करूंगा तू अपने
२२ आक़ा की ख़ुशनूदी में दाख़िल हो * और जिसने दो तोड़े पाये थे
वुह भी आया और बोला कि ऐ ख़ुदावंद तूने मुझे दो तोड़े सौंपे
२३ देख कि मैंने उनके सिवा दो तोड़े और भी कमाये * उसके आक़ा ने
उसे कहा ऐ अच्छे दियानतदार ख़ादिम शाबाश तू थोड़ी सी चीज़ों
में दियानतदार निकला मैं तुझ को बहुत सी चीज़ों पर मुख़्तार
२४ करूंगा तू अपने आक़ा की ख़ुशनूदी में दाख़िल हो * फिर वुह
जिसने एक तोड़ा पाया था आया और बोला कि ऐ ख़ुदावंद मैं
तुझे जानता था कि तू कड़ा आदमी है और दिरौ करने वाला उधर
जहां तूने नहीं बोया और जमा करने वाला वहां जहां तूने
२५ नहीं छींटा * सो मैं डरा और जाके तेरे तोड़े को ज़मीन में

२६ छिपा रक्खा देख तेरा जो है सो मौजूद है * उसके आका ने जवाब
दिया और उसे कहा कि बदज़ात और काहिल ख़िदमतगार तू ने
जाना कि जहां मैं ने नहीं बोया दिरौ करता हूं और जहां मैं ने
२७ नहीं छींटा जमअ करता हूं * पस तुझे लाज़िम था कि तू मेरे
रुपै सर्राफ़ों को देता कि मैं आकर अपना माल सूद समेत
२८ पाता * इसवास्ते तोड़ा उस से छीनलो और जिस पास दस तोड़े हैं
२९ उसे दो * क्यूंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और उसके
लिये अफ़ज़ाइश होगी और जिस पास कुछ नहीं उस से जो
३० कुछ कि उसका है फेर लिया जायगा * और तुम उस निकम्मे
ख़िदमतगार को बाहर अंधेरे में डाल दो वहां रोना और दांत
३१ पीसना होगा * जब इब्नि आदम अपने जलाल से सब मुक़द्दिस
३२ फ़िरिश्ते अपने साथ लेके आवेगा * तब वुह अपनी हशमत
के तख़्त पर जुलूस करेगा और हर एक क़ौम उसके आगे हाज़िर
की जायगी और जिस तरह से कि गड़रिया भेड़ों को बकरियों से
जुदा करता है वुह हर एक को दूसरे से जुदा करेगा *
३३ और वुह भेड़ों को दहनी तरफ़ रखेगा लेकिन बकरियां बाईं तरफ़
३४ खड़ा करेगा * तब बादशाह उन्हें जो उसकी दहनी तरफ़ हाथ
हैं कहेगा कि हे मेरे बाप के सआदतमन्द लोगो इधर आओ और
वुह ममलुकत जो बिनाय आलम से तुम्हारे लिये तैयार की गई
३५ है मीरास में लो * इस लिये कि मैं भूखा था और तुम ने मुझे
खाना दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पानी दिया मैं परदेसी था

३६ और तुम ने मुझे पनाह दी * नंगा था तुम ने मुझे पहनाया बीमार
था तुम ने मेरी इयादत की मैं क़ैद में था तुम मुझ पास आये *
३७ उस वक़्त सादिक़ उसे जवाब देंगे और कहेंगे ऐ ख़ुदावंद कब
हम ने तुझे भूखा देखा और खिलाया या प्यासा और पिलाया *
३८ कब हम ने तुझे परदेसी देखा और पनाह दी या नंगा और
३९ पहनाया * और हम ने कब तुझे बीमार या क़ैद में देख के
४० तुझ पास आये * तब बादशाह जवाब देगा और उनसे कहेगा
मैं तुम से सच कहता हूं जितना कुछ तुम ने मेरे हक़ीर भाईओं में
४१ से एक के साथ किया वुह तुम ने मेरे साथ किया * तब वुह
उन्हें जो बाईं तरफ़ हैं कहेगा कि ऐ मलऊनो मेरे साम्हने से
आतिशि अबदी में जो इबलीस और उसके लशकर के लिये मुहैया
४२ की गई है जाओ * क्यूंकि मैं भूखा था तुम ने मुझे खाना न दिया
४३ मैं प्यासा था तुम ने मुझे न पिलाया * परदेसी था तुम ने मुझे पनाह
न दी नंगा था तुम ने मुझे पोशिश न दी बीमार था और क़ैद में
४४ मुझ पास न आये * तब वे भी उसे जवाब देंगे और कहेंगे ऐ
ख़ुदावंद कब हम ने तुझे भूखा देखा या प्यासा या परदेसी या
४५ नंगा या बीमार या क़ैदी और तेरी ख़िदमत न की * तब वुह उन्हें
जवाब देगा और कहेगा कि मैं तुम से सच कहता हूं जितना
कुछ तुम ने उन हक़ीरों में से एक के साथ न किया तुम ने मेरे साथ
४६ न किया * और ये अज़ाबि अबदी में जायेंगे और सादिक़ हयाति
अबदी में *

छवीसवां बाब

१ और यों हुआ कि ईसा ने ये सब बातें तमाम करके अपने
२ शागिर्दों से कहा * तुम जानते हो कि दो रोज़ के बाद ईदि
फ़सह होगी और इब्नि आदम पकड़वाया जायगा ता कि सलीब
३ पर खेंचा जावे * तब सरदार काहिन और कातिब और कौम के
बुज़ुर्ग कयाफ़ा नाम सरदार काहिन के दीवानख़ाने में जमअ
४ हुए * और मशवरः किया ता कि वे ईसा को फ़रेब से पकड़ें
५ और क़तल करें * तब उन्हों ने कहा कि ईद के दिन नहीं
६ ऐसा न होवे कि लोगों में हंगामः बरपा हो * और जिसवक़्त
७ कि ईसा बैतिऐना में कोढ़ी शमऊन के घर था * ऐक रंडी
मरमर के कुप्पे में क़ीमती इतर उसपास लाई और जिसवक़्त
८ कि वुह बैठा था उसके सिर पर डाला * तब उस के शागिर्द
यिह देखकर आज़ुर्दः हुए और बोले कि यिह इसराफ़
९ किस लिये मुमकिन था * कि यिह इतर बहुत क़ीमत को बेचा
१० जाता और उसकी क़ीमत मुहताजों को दी जाती * ईसा ने यिह
जान के उन्हें कहा कि तुम उस रंडी को क्यूं दुख देते हो इसलिये
११ कि उसने मुझ से नेकी की है * क्यूंकि मुहताज तो हमेशः तुम्हारे
१२ साथ हैं पर मैं हमेशः न हूंगा * जिसने इतर बदनपर
१३ डाला उसने मेरे गाड़ने के लिये यिह किया * मैं तुम से सच कहता
हूं कि सारे जहान में जिस जगह इस इंजील की मुनादी की
जायगी वहां यिह भी जो उस रंडी ने किया है उस की यादगारी के

१४ लिये कहा जायगा * तब उन बारह से एक ने जिसका नाम यहूदाय इसकरयूती था सरदारि काहिनों पास जाकर कहा *
१५ जो मैं उसे तुम्हारे हवालः करूं तुम मुझे क्या देगे उन्हों ने
१६ उस से तीस रुपै पर अहद किया * और उस दम से वुह क़ाबू
१७ ढुंढता था कि उसे पकड़वा दे * सो फ़तीर के पहले रोज़ ईसा के शागिर्दों ने आकर उस से कहा क्या चाहता है तू कि हम फ़सह को तेरे लिये कहां तैयार करें ता कि तू खावे *
१८ उस ने कहा शहर में फ़लाने शख़्स पास जाओ और उसे
१९ कहो कि मुअल्लिम कहता है मेरा वक़्त नज़दीक है * मैं अपने शागिर्दों के साथ तेरे यहां ईदि फ़सह करूंगा और शागिर्दों ने जैसा
२० ईसा ने उन्हें फ़रमाया था वैसाही किया और फ़सह तैयार किया *
२१ फिर जब शाम हुई वुह उन बारह के साथ जा बैठा * और जब वे खा रहे थे कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि एक तुम से
२२ मुझे पकड़वा देगा * तब वे बहुत ग़मगीं हुए और उन में से हरएक उसे कहने लगा कि ऐ ख़ुदावंद क्या वुह मैं हूं *
२३ उस ने जवाब दिया और कहा जिसने मेरे साथ रिकाबी में हाथ
२४ डाला वही मुझे पकड़वा देगा * इबनि आदम जैसा कि उसके हक़ में लिखा है रवानः होता है लेकिन उस शख़्स पर जिसके हाथ से इबनि आदम पकड़वाया जाय वावैला है उस शख़्स के लिये यिह बिहतर
२५ था कि वुह पैदा न होता * उस वक़्त यहूदा जिसने उसे पकड़वाया उसके जवाब में बोला कि ऐ रबी क्या वुह मैं हूं उसने उसे

२६ कहा कि तू ने आप ही कहा * और उनके खाते वक़्त ईसा ने रोटी
उठाई और कलामि मुबर्रक कहके तोड़ी और शागिर्दों को दी और
२७ कहा कि लो खाओ यिह मेरा बदन है * फिर उसने प्यालः लिया और
शुक्र करके यिह कहते हुए उन्हें दिया कि तुम सब उसे पीओ *
२८ क्यूंकि यिह मेरा लहू यअने यिह वसीयत का लहू है जो बहुतों
२९ के गुनाहों की बख़्शिश के लिये बहाया जाता है * पर मैं तुम से
कहता हूं कि मैं शीरए अंगूर इस वक़्त से उस रोज़ तक कि मैं
३० तुम्हारे साथ अपने बाप की ममलुकत में न पीऊं न पीऊंगा * और वे
३१ मेरे मज़मूर को गाके ज़ैतून के पहाड़ को गये * उसवक़्त ईसा
ने उन्हें कहा तुम सब मेरी बाबत आज की रात ठोकर खाओगे
क्यूंकि यिह लिखा है कि मैं गड़रिये को मारूंगा और गल्ले की
३२ भेड़ें परागन्दः होंगी * पर मैं उठने के बअ़द तुम से आगे जलील
३३ को जाऊंगा * पत्रस ने जवाब दिया और उसे कहा गो कि तेरी
३४ बाबत सब ठोकर खावें मैं कभी ठोकर न खाऊंगा * ईसा ने उसे कहा
कि मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तू आज रात मुरग़ी बांग देने
३५ से पहले तीन बार मेरा इनकार करेगा * पत्रस ने उसे कहा कि
अगर मेरा मरना तेरे साथ ज़रूर हो तौ भी तेरा इनकार न करूं
३६ और सब शागिर्दों ने भी यही कहा * फिर ईसा उनके साथ
एक मक़ाम में जो जसमन कहलाता था आया और शागिर्दों को
३७ कहा तुम यहां बैठो ताकि मैं वहां जाकर दुआ करूं * और
उसने पत्रस और ज़बदी के दो बेटे अपने साथ लिये और ग़म

३८ और कोफ़ खाने लगा * पर उसने उन्हें कहा मेरा दिल मरने तक गमगीं है तुम यहां तवक़्क़ुफ़ करो और मेरे साथ जागते रहो *
३९ और वुह थोड़ी दूर गया और ऊंधे मुंह गिरा और यों कहके दुआ मांगी कि ऐ मेरे बाप अगर मुमकिन हो तो इस प्याले को मुझ से गुज़रा लेकिन न ऐसा कि मैं चाहता हूं बल्कि तू जैसा चाहता है *
४० तब शागिर्दों पास आया और उन्हें सोते पाया और पतरस को
४१ कहा क्या तुम ऐक साअत मेरे साथ जागते न रह सके * जागो और दुआ करो ता कि तुम इमतिहान में न पड़ो फ़िलवाक़िअ रूह
४२ मुस्तइद है पर जिस्म नातवान है * वुह दुबारः फिर गया और यों कहके दुआ मांगने लगा कि ऐ मेरे बाप अगर यिह प्यालः मुझ से सिवा उसके कि मैं उसे पीऊं गुज़र नसके तेरी ख़्वाहिश
४३ वाक़िअ हो जाय * और वुह आया और उन्हें फिर सोते पाया
४४ क्यूं कि उनकी आंखें ख़्वाब आलूदः थीं * और उन्हें छोड़ कर
४५ फिर चला गया और वही कलिमः कह के तीसरी बार दुआ मांगी * फिर अपने शागिर्दों पास आया और उनसे कहा कि अब सोते रहो और आराम करो देखो कि घड़ी नज़दीक पहुंची और इबनि
४६ आदम गुनहगारों के हाथों में हवालः किया जाता है * उठो कि हम रवानः होवें देखो कि वुह शख़्स जो मुझे हवालः करेगा
४७ नज़दीक है * और जिस वक़्त वुह यिह कह रहा था वहीं यहूदा जो उन बारह में से ऐक था ऐक बड़ा अंबोह सरदारि काहिनों और क़ौम के मशाइख़ की तरफ़ से तलवारें और सोंटे

४८ लिये हूए साथ लेके आया * अब जिसने उसे पकड़वाया उन्हें यिह कह के पता दिया था कि जिसका मैं बोसः लूं वही है वुह
४९ उसे पकड़ लो * और फ़िलफ़ौर ईसा पास आया और यिह कह के
५० कि ऐ रबी सलाम बोसः लिया * और ईसा ने उसे कहा कि ऐ मियां तू किस लिये आया तब वे आपहुंच कर और उसे
५१ दस्तगीर किया और पकड़ लिया * और देखो ऐक ने उन में से जो ईसा के साथ थे हाथ लंबा करके अपनी तलवार खैंची और सरदारि काहिन के ऐक ख़ादिम को लगाई और उसका कान
५२ उड़ा दिया * तब ईसा ने उसे कहा कि अपनी तलवार फिर मियान में कर इस लिये कि वे जो तेग़ खैंचे हैं तेग़ ही से मारे
५३ जायेंगे * क्या नहीं जानता कि मैं इसी दम अपने बाप से मांग सकता हूं और वुह फ़िरिश्तों की बारह फ़ौजों से ज़ियादः मुझ
५४ पास हाज़िर करेगा * पर तब किताबों का लिखना कि यों होना
५५ ज़रूर है क्यूंकि पूरा होगा * और उसी वक़्त ईसा ने उन जमाअतों को कहा कि तुम मेरे पकड़ने को जैसे चोर के लिये तलवारें और सोटे लेके निकले हो मैं तो रोज़मर्रः तुम्हारे बीच हैकल में बैठके वअ़ज़ कहता था और तुम ने मुझे न पकड़ा *
५६ पर यिह सब हूआ ता कि नबियों की किताबें तमाम हों उसवक़्त
५७ सब शागिर्द उसे छोड़ के भागे * और वे जिन्हों ने ईसा को दस्तगीर किया था उसे सरदारि काहिन क़यापा पास जहां कातिब और
५८ मशाइख़ जमअ़ हूए थे ले आये * और पतरस उसके पीछे

सरदारि काहिन के दीवानख़ाने तक चला गया और अंदर जाके
५९ ख़ादिमों के साथ बैठा ता कि अंजाम देखे * तब सरदारि काहिन
और मशाइख़ और सब मजलिस ने ईसा पर झूठी गवाही
६० तलब की ता कि उसे क़तल करें * और कोई न पाई हां
अगरचिः बहुत झूठे गवाह आये पर उन्हों ने न पाई आख़िर को
६१ दो झूठे गवाह आये * और बोले कि यिह कहता है मुझ में
यिह सकत है कि ख़ुदा के घर को ढाऊं और तीन दिन में फिर
६२ बिना करूं * तब सरदारि काहिन ने उठ कर उसे कहा क्या
६३ तू जवाब नहीं देता ये तेरे पर क्या गवाही देते हैं * लेकिन
ईसा चुप रहा फिर सरदारि काहिन ने उसे कहा कि मैं तुझे
हई क़ैयूम की क़सम देता हूं अगर तू मसीह ख़ुदा का बेटा है
६४ तो हम से सच कह * ईसा ने उसको कहा कि तू ही ने कहा
लेकिन मैं तुम से कहता हूं कि बअद उस के तुम इब्नि आदम
को क़ुव्वत के दहने हाथ बैठा हूआ और आसमान की बदली पर
६५ आता हूआ देखोगे * तब सरदारि काहिन ने अपने कपड़े
फाड़े और कहा यिह कुफ़र कह चुका है अब हमें आगे गवाहों
की क्या हाजत है देखो अब तुम ने उसका कुफ़र बकना सुना *
६६ अब क्या सोचते हो वे जवाब में बोले कि वुह वाजिबुल क़तल
६७ है * तब उन्हों ने उसके मुंह पर थूका और उसे घूंसे और औरों
६८ ने यों कहके तमांचे मारे * कि ऐ मसीह हमें नबुव्वत से ख़बर दे
६९ यिह जो तुझे तमांचः मारता है कौन है * और पतरस बाहर
दीवानखाने में बैठा था कि एक सहेली उस पास आई और

७० बोली कि ईसाय जलीली के साथ तू भी था * पर उसने सब के आगे इनकार किया और कहा मैं नहीं जानता तू क्या कहती है *
७१ और जब वुह दहलीज़ पर बाहर आया ऐक दूसरी ने उसे देख कर उनसे जो वहां थे कहा कि यिह शख़्स भी ईसाय नासरी के
७२ साथ था * और उसने क़सम करके फिर इनकार किया कि मैं
७३ उस शख़्स को नहीं जानता * और थोड़ी देर पीछे वे जो वहां खड़े थे पतरस पास आये और बोले कि बेशक तू भी उन्हीं में से है
७४ कि तेरी बोली तुझे ज़ाहिर करती है * उस वक़्त उसने लअ़नत करके और क़समें खाके शुरूअ़ किया कि मैं उस शख़्स को नहीं
७५ जानता और मुर्ग़ ने वहीं बांग दी * और पतरस को ईसा की बात जो उसने कही थी कि पेश्तर उस से कि मुर्ग़ बांग दे तू तीन मरतबः मेरा इनकार करेगा याद आई तब वुह बाहर जाकर ज़ारज़ार रोया *

सत्ताईसवां बाब

१ जब सुबह हुई सारे सरदारि काहिनों और क़ौम के मशाइख़ ने
२ ईसा के हक़ में मश्वरत की कि उसे क़त्ल करें * और उसे बांध के ले गये और पुन्तयूस पीलातूस को जो हाकिम था हवालः किया *
३ तब यहूदा जिसने उसे पकड़वाया था देखकर कि उसे क़त्ल का फ़तवे दिया गया पशेमान हुआ और वुह तीस दिरहम सरदारि
४ काहिनों और मशाइख़ पास फिर लाया * और कहने लगा कि मैंने बेगुनाह को क़त्ल के लिये पकड़वाया तब वे बोले फिर हमें

५ क्या तू जान * और दिरहमों को हैकल में फेंक कर रवानः हूआ
६ और जाकर अपने तईं फांसी दी * और सरदारि काहिनों ने दिरहम लेकर कहा कि उन्हें खज़ाने में करना रवा नहीं क्यूंकि यिह खूंबहा
७ है * तब उन्हों ने मशवरत की और उन्हें देकर ऐक कलाल की
८ ज़मीन ग़रीबों के दफ़न के लिये मोल ली * इसलिये वुह ज़मीन
९ अबतक खून का खेत कहलाती है * तब वुह जो इरमिया नबी की मअरिफ़त से कहा गया था पूरा हूआ कि उन्हों ने तीस दिरहम उसकी क़ीमत की जिसका मोल ठहराया गया हां जिसका बनी
१० इसराईल में से बअज़ों ने मोल ठहराया * और वुह दिरहम कुम्हार की ज़मीन के लिये दिया जैसा खुदावंद ने मुझे फ़रमाया *
११ और ईसा हाकिम के साम्हने खड़ा था और हाकिम ने उसे यिह पूछा क्या यहूदों का बादशाह तूही है ईसा ने कहा कि तूही कहता
१२ है * और जब सरदारि काहिन और मशाइख़ उस पर फ़र्याद
१३ कर रहे थे वुह कुछ जवाब न देता था * तब पीलातूस ने उसे कहा क्या तू नहीं सुनता कि वे क्या क्या कुछ तुझ पर गवाही
१४ देते हैं * पर उसने जवाब में हरगिज़ ऐक बात न कही चुनांचिः
१५ हाकिम ने बहुत तअज्जुब किया * अब हाकिम का दस्तूर था कि हर ईद में लोगों के वास्ते ऐक बंधुआ जिसे वे चाहते थे
१६ आज़ाद करता था * और उस वक़्त में उनका ऐक मशहूर बंधुआ
१७ था जो बरब्बास कहलाता था * इस लिये जिस वक़्त वे इकट्ठे थे पीलातूस ने उन से कहा कि तुम किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे

लिये आज़ाद करूं बरबास को या ईसा को जो मसीह कहलाता
१८ है * क्यूंकि वुह जान गया था कि उन्हों ने रश्क से उसे पकड़वाया
१९ था * जब वुह हुकूमत के तख़्त पर बैठा उसकी जोरू ने उसे कहला
भेजा कि तुझे उस रास्तबाज़ से कुछ काम न रहे कि आज मैं ने ख़ाब
२० में उस के लिये बहुत तसदीअ पाई है * पर सरदारि काहिनों और
मशाइख़ ने जमाअत को राग़िब किया कि बरबास को चाहें और
२१ ईसा को क़तल करवायें * हाकिम ने फिर उन्हें कहा कि तुम दोनों
में से किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे वास्ते आज़ाद करूं *
२२ वे बोले कि बरबास को पीलातूस ने उन से कहा कि फिर ईसा को
जो मसीह कहलाता है उसे क्या करूं वे बोले कि वुह सलीब पर
२३ खैंचा जावे * हाकिम ने कहा कि उसने क्या गुनाह किया पर
२४ उन्हों ने और गुल मचाके कहा वुह सलीब पर खैंचा जावे * जब
पीलातूस ने देखा कि उसका कुछ न चला बल्कि हंगामः होता है
उसने पानी लेकर जमाअत के आगे यिह कहके अपने हात धोये
२५ कि मैं इस मर्दि रास्तबाज़ के ख़ून से मुबर्रः हूं तुम जानो * तब सब
लोग बोले कि उसका ख़ून हम पर और हमारे औलाद पर होवे *
२६ फिर उसने बरबास को उनके लिये आज़ाद किया और ईसा को
२७ कोड़े मार के हवालः किया कि सलीब पर खैंचा जावे * तब हाकिम
के सिपाही ईसा को दीवानि आम में ले गये और सिपाहियों ने
२८ सारे रिसाले को उसके गिर्द जमअ किया * तब उन्हों ने उसे नंगा
२९ करके क़िरमज़ पैराहन पहनाया * और उन्हों ने कांटों का ताज

बना के उसके सिर पर रखा और एक सेंठा उसके दहने हाथ में दिया और उसके आगे घुटने टेक के यूं कह के उस से ठट्ठा
३० किया कि ऐ यहूदों के बादशाह सलाम * फिर उन्हों ने उस पर
३१ थूका और उस सेंठे को लेकर उसके सिर पर मारा * और वे जब ठट्ठा कर चुके उन्हों ने उसका पैराहन उतारा और उसे
३२ उसी का लिबास पहनाया और ले चले कि सलीब पर खैंचे * और जों वे बाहर आये उन्हों ने कूरीने के एक शख़्स को जिसका नाम शमऊन था पाया उसपर जब्र किया कि उसके सलीब लेचले *
३३ और जब वे एक मक़ाम में जिसका नाम जलजलः था जिसके
३४ खोपरी की जगह है पहुंचे * उसे सिरके पित मिला दिया कि पीवे उसने उसे चिख के पीने का इरादः न किया *
३५ और उन्हों ने उसे सलीब पर खैंच के उस के कपड़े कुरआः डाल के बांट लिये ता कि जो नबी ने कहा था पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांटे और मेरे लिबास के लिये कुरआः डाला *
३६ और वे वहां बैठ के उसकी निगहबानी करने लगे (३७) और उसकी तुहमत को लिख कर उसके सिर से बलंद नसब किया
३८ कि यिह यहूदों का बादशाह ईसा है * उसवक़्त उसके साथ दो चोर सलीब पर खैंचे गये थे एक दहने हाथ और दूसरा
३९ बायें * और वे जो उधर से गुज़रते थे अपने सिर धुन के उसे
४० मलामत करते थे * और कहते थे कि तू जो हैकल का ढानेवाला और तीन दिन में फिर बिना करने वाला है अपने तईं बचा

४० अगर तू ख़ुदा का बेटा है सलीब पर से उतर आ * इसी तरह से
सरदार काहिनों ने कातिबों और मशाइख़ के साथ मिल के
४१ तमसख़ुर से कहा * कि औरों को बचाया अपने तईं बचा नहीं
सकता अगर वुह इसराईल का बादशाह है तो अब सलीब पर
४३ से उतर आवे और हम उसके मुअ़तक़िद होंगे * उस ने
ख़ुदा पर तवक्कुल किया अब अगर वुह उसका प्यारा है तो वही
उसे रिहाई बख़्शे क्यूंकि वुह कहता था कि मैं ख़ुदा का बेटा
४४ हूं * वे चोट्टे भी जो उसके साथ सलीब पर खेंचे गये थे इसी
४५ तरह से उसको मलामत करते थे * तब छठी साअ़त से नवीं तक उस
४६ सारी ज़मीन पर तारीकी छा गई * और नवीं साअ़त के नज़दीक
ईसा ने बलंद आवाज़ से चिल्लाके कहा कि ईली ईली लिमा
सबक़तनी यअ़्नी ऐ मेरे ख़ुदा ऐ मेरे ख़ुदा क्यूं तू ने मुझे अकेला
४७ छोड़ा * बअ़्ज़े उन में से जो वहां खड़े थे यिह सुनके बोले कि
४८ यिह ईलियास को बुलाता है * और फ़िलफ़ौर एक ने उन में से
दौड़ के इस्पंज लेके सिरके से तर किया और नेज़े पर रख के उसे
४९ चुसाया * औरों ने कहा भला हम देखें तो कि ईलियास उसे
५० छुड़ाने आता * तब ईसा दूबारः बड़ी आवाज़ से चिल्लाया
५१ और जान दी * और देखो कि हैकल का पर्दः ऊपर से नीचे
तक फट गया और ज़मीन लरज़ी और पत्थर तड़क गये *
५२ और क़बरें खुलीं और मक़दिसों की बहुत लाशें जो सोती
५३ थीं उठीं * और उसके उठने के बअ़्द क़बरों से

बाहर आईं और शहरि मक़द्दस में गईं और बहुतों को
५४ दिखलाई दीं * और जब उस जमाअदार और उसके रफ़ीक़ों
ने जो ईसा की निगहबानी करते थे ज़लज़लः और जो कुछ कि
५५ वाक़िअ हूआ था देखा * तब बहुत डरते होके बोले यिह
५६ सचमुच ख़ुदा का बेटा था * और वहां बहुत सी औरतें जो
जलील से ईसा पीछे उसकी ख़िदमत करती आईं थीं दूर से
देखतीं थीं मरयमि मजदिलियः और यअ़क़ूब और यूसा की मा
५७ मरयम और ज़बदी के लड़कों की मा उन्हीं में थीं * जब
शाम हुई इरमियः का एक दौलतमन्द शख़्स जिसका नाम यूसुफ़
५८ था और वुह भी ईसा का शागिर्द था आया * उसने पिलातूस
पास आकर ईसा की लाश मांगी तब पिलातूस ने हुक्म किया
५९ कि लाश उसे सैांपी जावे * यूसुफ़ ने लाश को लेके सूती
६० पाक चादर से कफ़नाया * और उसे अपने दख़मे में जो उसने
पत्थर में खुदाया था रखा और एक भारी पत्थर दख़मे के मुंह पर
६१ ढलका के चला गया * और मरयमि मजदिलियः और दूसरी मरयम
६२ क़बर के साम्हने वहां बैठीं थीं * अब दूसरे रोज़ जो तय्यारी के
दिन के बअ़द था सब सरदारि काहिन और फ़रीसी इकट्ठे होके
६३ पिलातूस पास आये * और कहा कि ऐ ख़ुदावंद हमें याद है कि
वुह दग़ाबाज़ अपने जीते जी कहता था कि मैं तीन दिन पीछे
६४ फिर उठूंगा * इस लिये हुक्म कर कि तीसरे दिन तक क़बर की
६५ हिफ़ाज़त कीजावे * ता ऐसा नहो कि उसके शागिर्द रात को आके

उसे चुरा लेजावें और ख़ल्क़ से कहें कि वुह मरके जी उठा कि यिह
६६ पिछली ख़ता पहले से बदतर होगी * पीलातुस ने उनसे कहा कि
६७ रखवाले तुम पास हैं जाओ ता मक़दूर हिफ़ाज़त करो * वे गये और
रखवाले बैठला के अलावः पत्थर पर मुहर करके मदफ़न की
हिफ़ाज़त की *

अट्ठाईसवां बाब

१ सबत की रात जब हफ़्ते के पहले दिन पौ फटने लगी मरयम
२ मग्दलियः और दूसरी मरयम क़बर को देखने आईं * और
देखो कि बड़ा भौंचाल आया इस लिये कि ख़ुदावंद का फ़िरिश्तः
आस्मान से नाज़िल हुआ और आके उस पत्थर को क़बर पर
३ से ढलका कर उसपर बैठा * उसका चिहरः बिजली सा और
४ उसका लिबास बर्फ़ सा सुफ़ैद था * और उसको देखने से सब
५ रखवाले कांप गये और ऐसे हुए जैसे मरगये * और फ़िरिश्तः
रंडियों से कहने लगा कि तुम मत डरो कि मैं जानता हूं तुम ईसा
६ को जो सलीब पर खैंचा गया है ढूंढ़तियां हो * वुह यिहां
नहीं इस लिये कि जैसा उसने कहा था उठा है इधर आओ
७ उस जगह को जहां ख़ुदावंद पड़ा था देखो * और जल्द जाकर
उसके शागिर्दों से कहो कि वुह मर के जी उठा है और देखो कि
वुह तुम से आगे जलील को जाता है सो तुम वहां देखोगे
८ देखो मैंने तुम्हें जताया * वे जल्द क़बर पर से साथ दहशत
और बड़ी ख़ुशी के रवानः हो कर उसके शागिर्दों को ख़बर देने

९ दौड़ीं * और जब उसके शागिर्दों को ख़बर देने चलीं जाती थीं देखो ईसा उन्हें मिला और बोला कि सलाम और उन्हों ने दौड़ के उसके
१० क़दम पकड़े और उसे सिजदः किये * तब ईसा ने उन्हें कहा मत डरो जाओ मेरे भाइओं से कहो कि जलील को जावें और वे मुझे
११ वहां देखेंगे * अब जिस वक़्त कि वे चलीं जाती थीं देखो कि कथों ने रखवालों में से शहर में आकर सरदारि काहिनों को सब कुछ कि
१२ हूआ था कहा * और वे सब मशाइख़ के साथ जमअ हूए और
१३ मशवरत करके उन सिपाहियों को बहुतसे रूपे दिये * और कहा कि तुम कहो कि उस के शागिर्द रात को आके जब हम सो गये थे
१४ उसे चुरा लेगये * और अगर यिह हाकिम के कान तक पहुंचे हम
१५ उसे बाहर करलायेंगे और तुम्हें बेचैन न होने देयेंगे * चुनांचिः उन्हों ने रूपे लेकर जैसा सिखाये गये थे वैसा किया और यिह बात आजतक
१६ यहूदों में मशहूर है * तब वुह ग्यारह शागिर्द जलील को उस
१७ पहाड़ की तरफ़ जहां ईसा ने उन्हें फ़रमाया था गये * और जब उन्हों ने उसे देखा उसकी परस्तिश की पर बऊज़े शक लाये *
१८ और ईसा उनके पास आया और उन से यों कहा कि आसमान
१९ और ज़मीन पर सारा इख़तियार मुझे दिया गया है * इस लिये तुम जाओ और सब क़ौमों को बाप और बेटे और रूहिक़ुद्स
२० के नाम से इस्तिबाग़ करके मुरीद करो * और उन्हें सिखलाओ कि इन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें फ़रमाईं हिफ़ज़ करें और देखो कि मैं जहान की इन्तिहा तक हरवेक़ तुम्हारे साथ हूं आमीन *
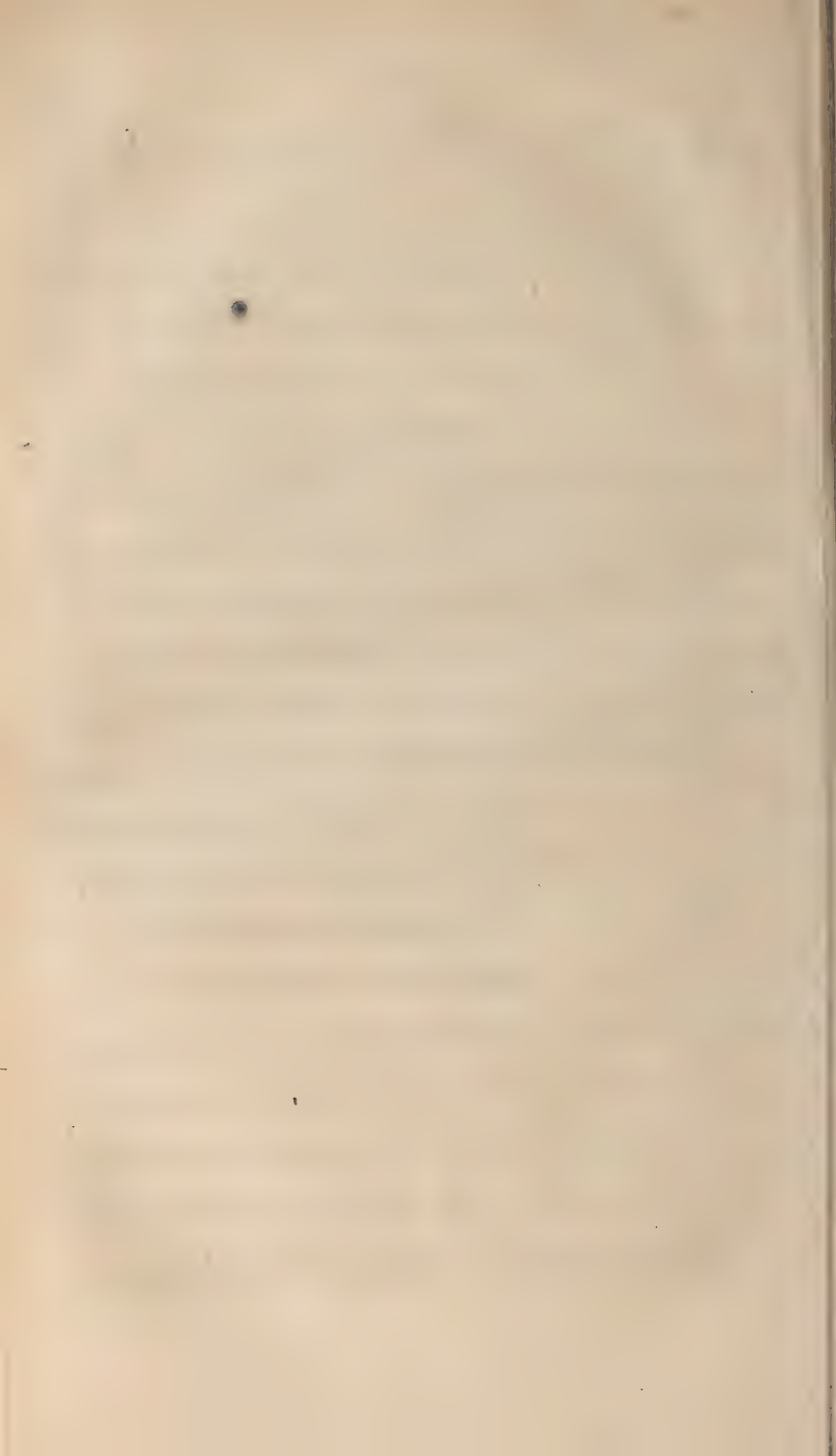
पहला बाब

१ हां जैसा कि नबियों की किताबों में लिखागया है कि देख मैं
अपने रसूल को तेरे आगे भेजता हूं वुह राह को तेरे साम्हने
२ दुरुस्त करेगा * बियाबान में एक पुकारने वाले की सदा है कि
ख़ुदावंद की राह को बनाओ और उसकी रहगुज़र को सीधा
३ करो * सो इबनि इलाह ईसा मसीह की इंजील का आग़ाज़
४ ऐसा ही हूआ * यहया मबऊस होके बियाबान में इस्तिबाग़
देता था और गुनाहों की बख़शिश के लिये तौबः के इस्तिबाग़ की
५ मुनादी करता था * और सारी ममलुकत यहूदियः और
आरशलीम के बाशिन्दे उस पास निकले चले जाते थे और सब के
सब अर्दन की नहर में अपने गुनाहों का इक़रार करके उस से
६ इस्तिबाग़ पाते थे * और यहया का लिबास ऊंट के बालों का

और चमड़े का कमरबन्द उसकी कमर के गिर्द था और टिड्डी और
७ जंगली शहद उसकी ख़ुराक थी * और यिह मुनादी करता था
कि मेरे पीछे मुझ से एक ज़ोरावर आता है कि मैं लायक़ नहीं
८ कि झुक के उसकी जूतियों का तसमः खोलूं * मैं ने तो तुम्हें
पानी से इस्तिबाग़ दिया पर वुह तुम्हें रूहि क़ुद्स से इस्तिबाग़
९ देगा * और उसी ऐयाम में यिह वाक़िअ हूआ कि ईसा ने
नासिरहे जलील से आकर अर्दन में यहया के हाथ से इस्तिबाग़
१० पाया * और ज्योंहीं वुह पानी से बाहर आया उसने देखा कि
आस्मान खुले हूए और रूह कबूतर के मानंद उसपर
११ उतरी * और आस्मान से आवाज़ आई कि तू मेरा अज़ीज़
१२ बेटा है तुझ से मैं राज़ी हूं * और रूह उसे फ़िल्फ़ौर दश्त में
१३ ले गई * वहां दश्त में चालीस दिन तक शैतान उसे आज़माया
किया और उसकी बूद बाश जंगली जानवरों में थी और
१४ फ़िरिश्ते उसकी ख़िदमत करते थे * अब यहया के पकड़े जाने के
बअद ईसा ने जलील में आके ख़ुदा की बादशाहत की ख़ुशख़बरी
१५ दी और कहा * कि वक़्त पूरा हूआ ख़ुदा की मलकूत
नज़दीक है तुम तौबः करो और इंजील के मुअतक़िद
१६ होओ * और जलील के दर्या के नज़दीक फिरते हूए उसने
शमऊन और उसके भाई अंद्रयास को जो मछुवे थे दर्या में जाल
१७ डालते देखा * ईसा ने उन्हें कहा तुम मेरे पीछे आओ मैं तुम्हें
१८ आदमियों का सैयाद बनाउंगा * वे वहीं अपने जालों को

१९ छोड़कार उसके पीछे हो लिये * वहां से थोड़ी दूर जाके उसने
ज़बदी के बेटे यअ़क़ूब और उसके भाई यूहन्ना को भी किश्ती पर
२० अपने जालों की मरम्मत करते देखा * और फ़िलफ़ौर उसने
उन्हें बुलाया और वे अपने बाप ज़बदी को किश्ती में मज़दूरों के
२१ साथ छोड़ के उसके पीछे रवानः हुए * तब वे कुफ़रनाहूम में
दाख़िल हुए और वुह फ़िलफ़ौर मजमअ़ में दरआमद होके पन्द
२२ देने लगा * और वे उसके इरशाद से दंग हुए कि वुह उनको
इख़्तियार वाले की तरह न कातिबों के मानंद सिखलाता था *
२३ वहां उनके मजमअ़ में एक शख़्स को पलीद रूह का सायः था
२४ यों कह के चिल्लाया * कि ऐ ईसा नासिरी छोड़ दे हमें तुझ से
क्या तू हमें हलाक करने आया है मैं तुझे जानता हूं तू कौन
२५ है ख़ुदा का मुक़द्दिस है * ईसा उसपर हुंहलाया और बोला
२६ कि चुप और उसपर से जाता रह * तब पलीद रूह उसे तशन्नुज
२७ में डाल के बड़ी आवाज़ से चिल्लाके उस पर से उतर गई * और
वे सब हैरान होके आपस में पूछते और कहते थे कि यिह
क्या है यिह कैसी नई तअ़लीम है वुह पलीद रूहों को भी
इख़्तियार से हुक्म करता है और वे उसका हुक्म मान जाते हैं *
२८ और उसकी ख़बर बेदिरंग जलील के सारी अतराफ़ में उड़ी *
२९ और वे शिताब मजमअ़ से बाहर निकल के यअ़क़ूब और यूहन्ना
३० के साथ शमऊ़न और अंद्रियास के घर में गये * और शमऊ़न
की सास तप से पड़ी थी तब उसे उन्हों ने फ़िलफ़ौर ख़बर दी *

O 2

३१ उसने आके उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाया और फ़िलफ़ौर
३२ उसकी तप जाती रही और उसने उसकी ख़िदमत की * शाम को
जब आफ़ताब ग़रूब हूआ सारे बीमारों और दीवानों को
३३ उस पास लाये * और सारा शहर दरवाज़े पर जमअ हूआ
३४ था * उसने बहुतों को जो तरह तरह की बीमारियों में गिरिफ़्तार
थे शिफ़ा बख़्शी और बहुत से देवों को दूर किया और देवों को
३५ बोलने न दिया कि वे उसे पहचानते थे * सुबह सवेरे वुह कुछ
रात रहते उठके निकला और ऐक वीराने को रवानः हूआ वहां
३६ दुआ की * और शमऊन और वे जो उसके साथ रहते थे
३७ उसके पीछे चले * जब उन्होंने उसे पाया तो कहा कि तुझे
३८ सब ढूंढते हैं * उसने उन्हें कहा आओ नज़दीक के शहरों
में जावें ता कि मैं वहां भी मुनादी करूं क्यूंकि मैं इस लिये
३९ बाहर निकला * और सारी जलील में उनके मजमओं के बीच
४० मुनादी करता और देवों को भगाता रहा * तब ऐक कोढ़ी ने
आके उसकी मिन्नत की और घुटने टेक कर बोला कि तू
४१ चाहे तो मुझे साफ़ पाक कर सकता है * ईसा ने उस पर रहम
खाके हाथ बढ़ाया और उसे छूआ और कहा कि मैं चाहता हूं
४२ तू साफ़ पाक हो * यिह ही कि उसने कहा वेंहीं उसका कोढ़ दूर
४३ हूआ और वुह पाक होगया * और ताकीद से उसे यिह हुक्म
४४ करके जल्द रुख़सत किया * कि देख किसी से कुछ मत कह
बल्कि चला जा और अपने तईं काहिन को दिखला और अपने

पाक होने के लिये जिन चीज़ों के गुज़रने का मूसा ने हुक्म किया है
४५ उनकी गवाही के वास्ते गुज़रान * पर उसने बाहर जाके निहायत
इश्तिहार दिया और बात को फ़ाश किया यहां तक कि वुह उस
माजरा के बअद शहर में खुले हूए न आसका पर बाहर वीरानों
में रहा किया और लोग हर सिम्त से उस पास आया किये *

दूसरा बाब

१ वुह कई दिन गुज़रने के बअद कुफ़रनाहूम में फिर आया और
२ यिह मशहूर हूआ कि वुह किसी घर में है * तब फ़िलफ़ौर
इतने आदमी जमअ हूए कि दरवाज़े की दहलीज़ तक उनकी
३ समाई न हूई और उसने उन्हें कलाम कह सुनाया * तब
एक मफ़लूज को चार आदमियों से उठवा के उसपास ले आये *
४ और जब वे इज़्दिहाम के बाइस उस के नज़्दीक न आसके
उन्हों ने उस छत पर की सतह को उलट दिया तब उसे फाड़ के
उस खटोले को जिस पर मफ़लूज डाला हूआ था लटका दिया *
५ ईसा ने उनका इअतिक़ाद देख कर उस मफ़लूज को कहा बेटा
६ तेरे गुनाह बख़्शे गये * पर बअज़े कातिब जो वहां बैठे हूए
७ थे अपने दिलों में तसव्वुर करते थे * कि यिह क्यूं ऐसे
कुफ़र के कलमे कहता है गुनाह फ़क़त ख़ुदा के सिवा कौन
८ बख़्श सकता है * और फ़िलफ़ौर ईसा ने अपनी रूह की
क़ुव्वत से दरयाफ़्त करके कि वुह अपने दिल में ऐसे अन्देशे
करते हैं उन्हें कहा तुम क्यूं अपने दिलों में ये फ़िक्र करते

९ हो * उस मफ़लूज को क्या कहना आसानतर है यिह कि तेरे गुनाह मुआफ़ हुए या यिह कि उठ और अपना खटोला
१० लेचल * लेकिन ता कि तुम जानो कि इब्नि आदम ज़मीन पर गुनाहों की बख़्शने का मुख़्तार है उसने उस मफ़लूज को
११ कहा * मैं तुझे कहता हूं उठ और अपनी चारपाई उठाके अपने
१२ घर को सिधार * वुह वोहीं उठा और बिस्तर उठा कर उनसब के रूबरू निकल गया चुनांचि: सब दंग हो गये और ख़ुदा की सिताइश की और बोले कि हम ने यिह तौर कभी न देखा था *
१३ और वुह फिर दरया की सिम्त को गया और सारी जमाअत उस
१४ पास आई उसने उन्हें नसीहत की * और जाते हुए हलफ़ा के बेटे लूई को ख़िराजगाह पर बैठे देखा उस से कहा कि मेरे
१५ पीछे चला आ वुह उठा और उस के पीछे हो लिया * और जब वुह उस के घर में बैठा खाता था यूं हुआ कि बहुत से ख़िराजगीर और गुनहगार लोग ईसा के और उसके शागिर्दों के साथ बैठे
१६ कि कसरत से जमअ थे वे उसके पीछे हो लिये * और जब कातिबों और फ़रीसियों ने उसे ख़िराज लेने वालों और गुनहगारों के साथ खाते देखा उसके शागिर्दों से कहा यिह क्या है कि वुह ख़िराज लेने वालों और गुनहगारों के साथ खाता पीता है *
१७ ईसा ने सुनकर उन्हें कहा कि उनके लिये जो तनदुरुस्त हैं तबीब कुछ ज़रूर नहीं उनके लिये ज़रूर है जो बीमार हैं मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनहगारों को बुलाके तोबः कराने

१८ आया हूं * और यहूया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ः रखा करते थे उन्हों ने आके उसे कहा कि यहूया के और फ़रीसियों के शागिर्द क्यूं रोज़ः रखते हैं और तेरे शागिर्द रोज़ः नहीं
१९ रखते * ईसा ने उन्हे कहा क्या बराती जबतक कि दूल्हा उनके साथ है फ़ाक़ः कर सकते हैं वे जिसवक़्त कि दूल्हा के साथ हैं फ़ाक़ः
२० कर नहीं सकते * पर वुह ऐयाम आवेंगे जब दूल्हा उन से जुदा किया जायगा और उन्हीं रोज़ों में वे रोज़ः रखेंगे *
२१ नये थान के टुकड़े से पुरानी पोशाक में कोई पैवंद नहीं करता नहीं तो वुह नया टुकड़ा जो उस में लगाया गया है पुरानी को
२२ खेंचता है और दरीदगी बतर होती है * और नई शराब को पुरानी मशकों में कोई नहीं भरता नहीं तो मशकें नई शराब से फट जाती हैं और शराब बह जाती और मशकें ज़ाइअ होती हैं
२३ बल्कि नई शराब ज़रूर है कि नई मशकों में रखी जावे * और यों हूआ कि वुह सबत को खेतों से गुज़रता था तब उसके
२४ शागिर्द राह चलते हूए बालें तोड़ने लगे * और फ़रीसियों ने उसे कहा देख किसलिये तेरे शागिर्द सबत के दिन नारवा काम
२५ करते हैं * उसने उनसे कहा आया तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब वुह मुहताज और भूखा था और उन्हों ने जो उस के
२६ साथ थे क्या किया * वुह क्यूंकर सरदार काहिन अबयासार के अहद में बैतुल्लाह में गया और नज़र की रोटियां जिन्हें खा लेना सिवाय काहिनों के किसी को रवा न था खा गया और

२७ उन्हें भी जो उसके साथ थे दियां * उसने उन्हें कहा कि सबत
आदमी के वास्ते ईजाद हूआ है न कि आदमी सबत
२८ के वास्ते * पस इबनि आदम सबत का भी खुदावंद है *

तीसरा बाब

१ वुह मजमअ में फिर दाखिल हूआ वहां ऐक शख़्स था जिसका
२ ऐक हाथ सुन होगया था * तब उन्हों ने उसको निगहवानी
की कि देखें तो वुह उसे सबत के दिन चंगा करेगा ता कि वे
३ उस पर फ़रयादी होवें * और उसने उस शख़्स को जिसका हाथ
४ सुन था कहा कि बीच में खड़ा हो * फिर उसने उन्हें कहा
सबत के दिन नेकी करना रवा है या बदी करना जान
५ बचाना या जान से मारना वे चुप हो रहे * तब उस ने उन सब की
तरफ़ ग़ज़ब से नज़र की कि उनको सख़्तदिली से मग़मूम हूआ
और उस शख़्स को कहा अपना हाथ लंबा कर उसने लंबा
किया और उसका हाथ जैसा दूसरा था खूब उस्तवार होगया *
६ तब फ़रीसियों ने जाके उसको ज़िद से हीरूदीसियों के साथ फ़िक्र और
७ मशवरत की कि उसे क्यूंकर क़तल करें * और ईसा अपने
शागिर्दों के साथ दरया की तरफ़ फिरा और ऐक बड़ा अंबोह जलील
८ और यहूदियः * और औरशलीम और अदूम और अर्दन के
पार से उसके पीछे गया और सूर और सैदा की नवाही से बड़ा
दंगल उन कामों को जो उसने किये थे सुनकर उस पास आया *
९ उसने अपने शागिर्दों को ईमा किया कि ऐक छोटी किश्ती

इज़्दिहाम के सबब उसके लिये हाज़िर होवे ता न होवे कि
१० उसे दबा डालें * क्यूंकि उसने बहुतों को चंगा किया था यहां तक
कि वे जो बीमारियों में गिरिफ़्तार थे उस पर गिरे पड़ते थे कि उसे
११ छू लें * और सब पलीद देव जब उसे देखते थे उसके आगे
गिर पड़ते थे और पुकारे कहते थे कि तू ख़ुदा का बेटा है *
१२ तब उसने ताकीद करके उन्हें फ़रमाया कि उसे मशहूर न करें *
१३ फिर एक पहाड़ पर जाके उन्हें जिनको आप पसन्द किया था
१४ बुला लिया और वे उस पास आये * उसने बारह मुक़र्रर
किये ता कि उसके साथ रहें और ता उन्हें मुनादी करने भेजे *
१५ और ता कि वे बीमारियों से शिफ़ा देने पर और देवों के भगाने पर
१६ क़ादिर होवें * और उसने शमऊन को जिसे पतरस ख़िताब
१७ दिया * और ज़बदी के बेटे यअ़क़ूब और यअ़क़ूब के भाई यूहन्ना
को जिन्हें बूनरजिस जिसका तरजमः रअ़द के बेटे है ख़िताब
१८ दिया * और अंद्रियास और फ़ैलबूस और बारतूलमी और मत्ती
और तोमा और हलफ़ा के बेटे यअ़क़ूब और तदी और
१९ किनआनी शमऊन * और यहूदाह इसकरयूती को जो उसका
पकड़वाने वाला भी हुआ मुक़र्रर किया फिर वे एक घर में आये *
२० और लोग ऐसे फिर जमअ़ हुए कि वे रोटी भी न खा सके *
२१ और जब उसके रफ़ीक़ों ने यिह सुना वे चले कि उसे पकड़ लें
२२ क्यूंकि उन्हों ने कहा वुह बेख़ुद है * तब फ़क़ीहों ने जो औरशलीम
से आये थे कहा कि बाअ़लज़बूल उसके साथ है वुह देवों को

P

२३ सरदार की कुमक से देवों को निकालता है * तब उसने उन्हें बुलाकर तमसीलों में उनसे कहा क्यूंकर हो सकता है कि शैतान
२४ शैतान को निकाले * कि अगर कोई ममलुकत अपनी मुख़ालिफ़ होके दो फ़रीक़ होजाय तो वुह ममलुकत क़ाइम रह नहीं
२५ सकती * और अगर कोई घराना अपना मुख़ालिफ़ होके दो फ़िरक़े हो जावे तो वुह घराना पायदार रह नहीं सकता *
२६ और अगर शैतान अपना ही अदू होके आप से अलहदः हो जाय तो वुह क़ाइम रह नहीं सकता बल्कि आख़िर हो जाता
२७ है * किसी की क़ुदरत नहीं कि ऐक ज़ोरावर के घर में घुस के उसके असबाब को ग़ारत करे हां मगर जब वुह पहले
२८ उस ज़ोरावर को बांध डाले तब वुह उसके घर को लूटे * मैं तुम से सच कहता हूं कि आदम ज़ाद के सब गुनाह और कुफ़र जो जो
२९ कि वे बकते हैं मुआफ़ किये जायेंगे * लेकिन वुह जो रूहि क़ुदस के हक़ में कुफ़र का कलिमः कहे उसकी मग़फ़िरत अबद तक न होगी बल्कि अबदी अज़ाब में गिरिफ़्तार होगा *
३० यिह इस लिये हुआ कि वे कहते थे कि उसके साथ ऐक
३१ नापाक रूह है * उसवक़्त उसके भाई और मा आई और
३२ उन्हों ने बाहर खड़े रह के उसे बुलवा भेजा * उस जमाअत ने जो उसके आस पास बैठी थी उसे कहा कि देख तेरी मा और तेरे
३३ भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं * उसने उन्हें जवाब दिया कौन है
३४ मेरी मा या मेरे भाई * और उसने उन पर जो उसके आसपास

३५ बैठे थे निगाह करके कहा देखो मेरी मां और मेरे भाई * इस लिये कि जो कोई ख़ुदा की मरज़ी पर चलता है मेरा भाई और मेरी बहिन और मा वही है *

चौथा बाब

१ वुह फिर लबि दरया बअज़ कहने लगा और बड़ा दंगल उस पास जमअ हूआ ऐसा कि वुह दरया में ऐक किश्ती पर चढ़ बैठा और सारा दंगल ख़ुश्की में दरया के किनारे पर रहा *
२ तब उस ने उन्हें तश्बीहों में बहुत कुछ बतलाया और अपनी
३ तअलीम में उन से कहा * सुनो देखो ऐक किसान बोने गया *
४ और उसके बोते वक़्त यों हूआ कि बअज़े राह के किनारः
५ गिरे और हवाई परिन्दे आके उसे चुक गये * और बअज़े संगी ज़मीन पर गिरे जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और वे जल्द उग पड़े क्यूं के उन्हों ने दलदार ज़मीन न पाई *
६ पर जब सूरज निकला वे जल गये और इसलिये कि जड़ न रखते थे
७ सूख गये * और बअज़े कांटों में गिरे कांटें बढ़े और उन्हें
८ घोंट डाला और उन्हों ने मेवः न दिया * और बअज़े जैयद ज़मीन में गिरे और उन में कोंपलें निकलीं जो बढ़ीं और फलती गईं उन्हों ने मेवे दिये बअज़ों ने तीस गुने बअज़ों ने साठ बअज़ों
९ ने सौ गुने * फिर उस ने उन्हें कहा कि जिस किसी के कान
१० सुन्ने के लिये हों सुने * और जब वुह फ़ारिग़ हूआ उन्हों ने जो उसके साथ थे उन बारह से मुत्तफ़क़ होके उस से उस तश्बीह

११ का इख़्तियार किया * उस ने उन्हें कहा कि ख़ुदा की ममलुकत के असरार का दूल्म तुम्हें दिया गया है पर उन के लिये जो बाहर हैं सब बातें तश्बीहों में होती हैं ता कि वे देखा करें
१२ और न जानें * और सुना करें और न समझें न होवे कि वे कभी
१३ फिरें और उन के गुनाह बख़्शे जाएं * फिर उस ने उन्हें कहा कि तुम यिह तश्बीह नहीं जानते पस तुम और सब तश्बीहें
१४ क्यूंकर जानोगे * वुह किसान सुख़न बोता है (१५) और वे जो राह के किनारे पर हैं जहां सुख़न बोया जाता है वे हैं कि जब उन्हों ने सुना तो शैतान फ़िलफ़ौर आके उस सुख़न को जो उन के
१६ दिलों में बोया गया था लेजाता है * और इसी तरह से जो संगी ज़मीन में बोये गये वे हैं जो सुख़न को सुन के ख़ुशी से फ़िलफ़ौर
१७ क़बूल कर लेते हैं * और आप में जड़ नहीं रखते पर थोड़ी मुद्दत के हैं आख़िर जब उस सुख़न के वास्ते रंज या ज़ोर
१८ होता है तो जल्द ठोकर खाते हैं * और जो कांटों के दरमियान
१९ बोये गये वे हैं जो सुख़न को सुनते हैं * और इस जहान के फ़िक्रों और दौलत की दग़ा और बाक़ी चीज़ों की ख़्वाहिशें
२० दाख़िल होके सुख़न को घोंट देती हैं वुह बेबर होता है * और जो अच्छी ज़मीन में बोये गये हैं वे हैं जो सुख़न को सुनते हैं और क़बूल करते हैं और मेवे लाते हैं बअ़ज़े तीस गुने बअ़ज़े
२१ साठ और बअ़ज़े सौ * और उस ने उन्हें कहा क्या शमअ़ इसलिये है कि पैमानः या पलंग के तले रखें और शमअ़दान पर न रखें *

२२ कोई चीज़ पोशीदः नहीं जो ज़ाहिर न हो और कोई चीज़
२३ दरपर्दः नहीं मगर इसी लिये कि फ़ाश होवे * अगर किसी के
२४ कान सुन्ने के लिये हैं तो सुने * फिर उस ने उन्हें कहा कि ध्यान
रखो तुम क्या सुनते हो जिस पैमाने से कि तुम पैमाइश करते
हो उस से तुम्हारे लिये पैमाइश की जायगी और तुम्हें जो
२५ सुन्ने वाले हो ज़ियादः दिया जायगा * इसलिये कि उसे जिस पास
कुछ है और भी दिया जायगा और उस से जिस पास कुछ नहीं
२६ वुह भी जो उसका है फिर लिया जायगा * और उस ने कहा कि
खुदा की ममलुकत ऐसी है जैसे एक शख़्स जो ज़मीन में तुख़्म
२७ बोदिये * और रात दिन सोवे उठे और तुख़्म यूं उगे और
२८ बढ़े कि वुह न जाने यिह क्यूंकर है * इसलिये कि ज़मीन
अज़ खुद बर ओ बर निकलवाती है पहले सब्ज़ी फिर बाल
२९ बअद उसके बाल में तैयार दाने * और जब मेवः रसीदः हूआ तो
वुह फ़िलफ़ौर दरांती भेजवाता है क्यूंकि दिरौ का मौसम पहुंचा *
३० और उसने कहा कि हम खुदा की ममलुकत को किस से निसबत
३१ करें और उस के लिये कौन सी मिसाल लावें * राई के दाने
की जो ज़मीन में जब बोया गया सब तुख़्मों से जो ज़मीन में
३२ हों छोटा है * पर जब बोया गया तो उग आता है और तरकारियों
से बड़ा होजाता और बड़ी डालियां निकालता यहां तक कि
३३ हवा के परिन्दे उसके साये में सकूनत कर सकते हैं * और वुह
उन्हें ऐसी बहुत सी तमसीलों में उनकी फ़हम के अंदाज़े के

३४ मुवाफ़िक़ सुख़न कहता था * और बे तमसील उनसे कहा न करता था और ख़िलवत में अपने शागिर्दों से बातों की शरह किया
३५ करता था * और उसी दिन जब शाम हुई उसने उन्हें कहा कि
३६ पार जावें * और वे उस जमअ़त को रुख़सत करके उसे जिस तरह से कि किश्ती पर था ले चले और और छोटी किश्तियां भी उसके
३७ साथ थीं * तब बड़ी आंधी चली और मौजों ने किश्ती पर यहां तक
३८ सदमः पहुंचाया कि वुह पानी से भर चली थी * और तूह पतवार की सिम्त सिरहाने तकयः रख के सो रहा था तब उन्हों ने उसे जगाया और कहा ऐ मुअ़ल्लिम तू ख़बर नहीं लेता है कि हम हलाक
३९ होते हैं * तब वुह उठके हवा पर हुंहलाया और दरया को कहा
४० कि तुम ठहरो तब हवा थम गई और बड़ा चैन होगया * फिर उसने उन्हें कहा तुम क्यूं ऐसे हिरासां हो और काहेको बेइअ़तिक़ाद
४१ हो * तब वे बहुत बशिद्दत डरे और आपस में कहने लगे यिह कौन है कि हवा और दरया भी उसका हुक्म मानते हैं *

पांचवां बाब

१ और वे दरया के पार जदरानियों के मुल्क में पहुंचे *
२ और जों वुह किश्ती से उतरा त्योंही एक आदमी जिसको नापाक रूह का सायः था * गोरिस्तान से निकलते हुए उसे मिला *
३ उसका मसकन गोरिस्तान था और कोई उसे ज़ंजीरों से भी जकड़
४ न सकता था * कि वुह बारहा पैकड़ियों और ज़ंजीरों से जकड़ा गया था और उसने ज़ंजीरों को तोड़ा और पैकड़ियों को टुकड़े

५ टुकड़े किया और कोई उसे हरगिज़ राम न कर सका * वुह हमेशः रात दिन कोहिस्तान और क़बरिस्तान में नालां रहता था ६ और अपने तईं पत्थरों से कूटता था * पर जों उसने ईसा को ७ दूर से देखा दौड़ा और उसे सिजदः किया * और बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर कहा ऐ ख़ुदा तआला के बेटे ईसा मुझे तुझ से क्या काम तुझे ख़ुदा ही की क़सम देता हूं मुझे न सता * क्यूंकि उसने ८ उसे कहा था कि ऐ नापाक रूह उस शख़्स पर से दूर हो * ९ फिर उसने उस से पूछा तेरा क्या नाम है उसने जवाब दिया १० कि मेरा नाम लाजाऊं है इसलिये कि हम बहुत हैं * तब उसने उसकी बहुत मिन्नत की कि हमें इस सरज़मीन से मत ११ निकाल * अब वहां पहाड़ों के नज़दीक सूअरों का एक बड़ा १२ गल्लः चरता था * सो सब देवों ने उसकी मिन्नत करके कहा कि हमको उन सूअरों पर भेज ता कि हम उन में दरआवें * १३ ईसा ने उन्हें उसी दम इजाज़त दी और वुह नापाक रूहें गईं और सूअरों में दरआईं और वुह गल्लः कड़ारे पर से कूद के दरया में जा गिरा वे नज़दीक दो हज़ार के थे सो दरया में १४ डूब के मरगये * और वे जो सूअरों को चराते थे भागे और शहर और देहात में ख़बर पहुंचाई तब वे उस वाक़िए को देखने १५ निकले * और ईसा पास आये और उस मजनून को बैठे और कपड़े पहने हुए देखा हां उसे जिस को लाजाऊं का साय: था होशयार १६ पाया और हिरसां हो गये * और जिन्हों ने यिह देखा था दीवाने

१७ का सरगुज़श्त और सूअरों का माजरा उनसे बयान किया * तब
वे उस से दरख़्वास्त करने लगे कि उनके सरहद से निकल जाय *
१८ और ज्यों वुह किश्ती पर आया उसने जो मजनून था उस से
१९ इलतिमास किया कि उसके साथ रहे * लेकिन ईसा ने उसे
इजाज़त न दी पर उस से कहा कि अपने दोस्तों पास घर जा और
उन्हें ख़बर दे कि ख़ुदावंद ने तुझ पर रहम करके ऐसे ऐसे
२० बड़े इहसान किये * तब वुह चला गया और अशरिसुदन में
उन बड़े कामों का जो ईसा ने उसके लिये किये थे इश्तिहार देने
२१ लगा और सब हैरान हुए * और जब ईसा किश्ती पर बैठ के
फिर पार आया बड़ा दंगल उस पास जमअ हुआ और वुह दरया के
२२ नज़दीक था * और देखो कि एक शख़्स मजमअ के रईसों में
से जिसका नाम यायरूस था आया और उसे देख कर उसके क़दमों
२३ पर गिरा * और उसकी बहुत मिन्नत की और कहा कि मेरी
छोटी बेटी का दम आख़िर है आइये और अपना हाथ उस पर
२४ रखिये ताकि वुह चंगी होजाय और जियेगी * तब वुह उसके
साथ गया और बड़ा अंबोह उसके पीछे हो लिया और उस पर
२५ हजूम किया * तब एक रंडी जिसका बारह बरस से लोहू जारी
२६ था * जिस ने बहुत से तबीबों की दवाईं खाईं थीं और अपना
सब मायः ख़रच करके कुछ फ़ाइदः न पाया बल्कि बेशतर बदतर
२७ हुई थी * ईसा की ख़बर सुन के उस हजूम में उसके पीछे से
२८ आई और उसकी पोशाक को छूआ * क्यूंकि उसने कहा कि

अगर मैं सिर्फ़ उसके कपड़ों को छूलूंगी सिह्हत पा जाऊंगी *
२९ और फ़िलफ़ौर उसके लोहू का चश्मः ख़ुश्क हो गया और उसने
अपने जिस्म की हालत से जाना कि उस आफ़त से उसने
३० ख़ुलासी पाई * तब ईसा फ़िलफ़ौर अज़ ख़ुद जान के कि मुझ में
से क़ुव्वते शाफ़ियः निकली उस अंबोह की तरफ़ मुतवज्जिह हूआ
३१ और कहा कि मेरे लिबास को किसने छूआ * उसके शागिर्दों ने
उसे कहा तू देखता है कि लोग तुझ पर गिरे पड़ते हैं फिर
३२ तू कहता है मुझे किसने छूआ * तब उसने आसपास निगाह
३३ की ता कि उसे जिसने यिह काम किया था देखे * और वुह
रन डरती और कांपती क्यूंकि वुह जानती थी उस पर क्या
वाक़िअ हूआ आई और उसके आगे गिर पड़ी और सब सच
३४ सच उस से कहा * तब उसने कहा कि बेटी तेरे इअ़तिक़ाद ने
तुझे सिह्हत बख़्शी सलामत जा और अपनी आफ़त से बची रह *
३५ वुह भी कहता था कि उस मजमअ़ के रईस के घर से लोगों ने
आके कहा कि तेरी बेटी मर गई अब क्यूं तू मुअ़ल्लिम को ज़ियादः
३६ तसदीअ़ देता है * ईसा ने उस कलाम को जो वुह कह रहे थे
सुन कर मजमअ़ के रईस को कहा मत डर फ़क़त इअ़तिक़ाद रख *
३७ और उसने सिवा पतरस और यअ़क़ूब और यअ़क़ूब के भाई यूहन्ना
३८ के किसी को अपने साथ चलने न दिया * और मजमअ़ के रईस
के घर में आके हंगामः यअ़ने बअ़ज़े लोगों को रोने और वावैला
३९ करते देखा * और दरमद होके उन्हें कहा तुम काहे को हंगामः

४० करते और रोते हो लड़की मरी नहीं पर सोती है * वे उस पर हंसे लेकिन वुह सब को बाहर करके लड़की के मा बाप को और अपने रफ़ीक़ों को लेके वहां जहां वुह लड़की पड़ी हूई थी
४१ अंदर आया * और उस लड़की का हाथ पकड़ कर उसे कहा तलीसा क़ूमी जिसका तरजमः यिह है कि लड़की मैं
४२ तुझे कहता हूं उठ * और वुह लड़की वोंहीं उठी और चलने लगी कि वुह बारह बरस की थी तब वे हैरति शदीद से
४३ मबहूत होगये * फिर उसने उन्हें बहूत ताकीद से हुक्म किया कि उसे कोई न जाने और फ़रमाया कि उसे कुछ खाने को दें *

छठा बाब

१ फिर वुह वहां से रवानः हूआ और अपने वतन में आया और
२ उसके शागिर्दों ने उसकी हमराही की * और जब सबत का रोज़ हूआ वुह मजमअ में वअ़ज़ कहने लगा और बहुतेरे सुन के हैरानी से कहने लगे ये चीज़ें उसने कहां से पाईं और यिह क्या हिकमत है जो उसे मिली है कि ऐसे मुअजिज़े
३ उसके हाथ से ज़ाहिर होते हैं * क्या यिह शख़्स बढ़ई मरयम का बेटा यअ़क़ूब और यूसा और यहूदा और शमऊन का भाई नहीं और क्या उस की बहिन यहां हमारे पास नहीं हैं
४ और उन्हों ने उसे अपने ठोकर खाने का बाइस बनाया * तब ईसा ने उन्हें कहा कि नबी फ़क़त वतन में और अपने ख़ेशावंदों

५ में और अपने घर में बेइज़्ज़त है * और वुह वहां कोई मुअजिज़ः न देख सका मगर उसने हाथ थोड़े से बीमारों पर
६ रख के उन्हें चंगा किया * और उनकी बेएअतिक़ादी से हैरान था
७ और गिर्द के गाओं में वअज़ कहता फिरा * और उन बारह को बुलाया और उनको दो दो करके भेजना शुरूअ किया और उन्हें
८ पलीद रूहों पर इख़्तियार बख़्शा * और हुक्म किया कि सफ़र के लिये सिवा असा के कुछ न लो न हमयानी न रोटी न अपने पटके
९ में कुछ नक़्द * मगर जूते पहनो और दो जामें न पहनो *
१० और उन्हें कहा तुम जिस मक़ाम में किसी घर में दाख़िल हो
११ तो जबतक तुम वहां से जाओ वहीं रहो * और जो कोई तुम्हारी ख़ातिरदारी न करे और तुम्हारी न सुने तो जब तुम वहां से निकलो पांओं की गर्द झाड़ो ता कि उन पर गवाही हो मैं तुम से सच कहता हूं कि अदालत के दिन सदूम और ग़मरः का
१२ अज़ाब उस शहर के अज़ाब से आसान तर होगा * और
१३ उन्हों ने जाकर मुनादी की कि ताइब होओ * और बहुत से देवों को दूर किया और बहुतों को जो बीमार थे तेल मल के चंगा
१४ किया * जब हिरूदीस बादशाह ने सुना क्यूंकि उसका नाम मशहूर हो चुका था तो उसने कहा कि यहया मुस्तग़िस मर के
१५ जी उठा इसलिये मुअजिज़े उस से नुमायां होते हैं * औरों ने कहा कि वुह इलियास है औरों ने कहा कि यिह एक नबी
१६ या किसी नबी के मानन्द है * हीरूदीस ने सुन कर कहा यिह

यह्या है जिसका मैं ने सिर कटवाया वही मर के जी उठा है *
१७ हीरूदीस ने आप ही हीरूदिया के वास्ते जो उसके भाई
फ़ैलबूस की जोरू थी लोग भेज कर यह्या को पकड़ा के क़ैदख़ाने
१८ में बंद किया था क्यूंकि उस ने उसे निकाह किया * और
यह्या ने हीरूदीस को कहा था कि अपने भाई की जोरू को रखना
१९ तुझ पर हलाल नहीं * इसलिये हीरूदिया उसका कीनः रखती
थी और चाहती थी कि उसे जान से मारे पर उसका हाथ न पड़ता था *
२० इसवास्ते कि हीरूदीस यह्या को मर्द रास्तबाज़ और मुक़द्दस
जानकर डरता था और उसकी पासदारी करता था और उसकी
नसीहत सुन कर बहुत सी बातों पर अमल करता था और उसकी
२१ बातें ख़ुशी से सुनता था * आख़िरुलअम्र फ़ुर्सत का दिन आया कि
हीरूदीस ने अपनी साल गिरह में अपने उम्दों और सिपहसालारों
२२ और जलील के अमीरों के लिये खाना तैयार किया * तब हीरूदिया
की बेटी आई और नाची और हीरूदीस और उसके मिहमानों
को ख़ुश किया तब बादशाह ने उस छोकरी को फ़र्माया कि जो चाहे
२३ सो मांग मैं तुझे दूंगा * और क़सम खाके उस से कहा कि तू मेरी
२४ आधी ममलुकत तक जो कुछ मुझसे मांगे मैं तुझे दूंगा * वुह चली
गई और अपनी मा से पूछा कि मैं क्या मांगूं वुह बोली कि यह्याय
२५ मुअम्मिद का सिर * तब वुह फ़िलफ़ौर बादशाह पास चालाकी
से आई और उस से सवाल किया कि मैं चाहती हूं तू एक तश्त में
२६ यह्याय मुअम्मिद का सिर मुझे अभी ला दे * बादशाह बहुत

दिलगीर हुआ पर अपनी क़सम और हमनशीनों के सबब से
२७ न चाहा कि उसे महरूम करे * तब बादशाह ने जल्द जल्लाद को
भेजा और हुक्म किया कि उसका सिर लावे और उसने जाके
२८ उसका सिर क़ैद में काटा * और एक तश्त में रखके लाया और
२९ उस लड़की को दिया उस लड़की ने अपनी मा को दिया * और उसके
शागिर्द सुन कर आये और उसके तन को उठाया और क़बर में रखा *
३० और रसूल ईसा पास जमा हुए और सब कुछ उन से कहा कि
३१ हम ने यों किया और हमने यूं तालीम कही * उसने उन्हें कहा
कि तुम अलग वीराने में चले आओ और टुक सुस्ताओ इसलिये कि
वहां बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खाना खाने की भी फ़ुरसत
३२ न थी * तब वे अलग किश्ती पर बैठ के एक वीराने को गये (३३) लोगों
ने उन्हें रवानः होते देखा और कितनों ने उसे पहचाना और
सारे शहरों से ख़ुश्की ख़ुश्की ऊधर दौड़े और उनसे आगे जा पहुंचे
३४ और इकट्ठे होके उस पास आये * और जब ईसा ने बाहर आन के
जम ग़फ़ीर को देखा उसे उन पर रहम आया क्योंकि वे उन भेड़ों के
मानिंद थे जो बे चौपान हों तब वह उन्हें बहुत सी नसीहतें
३५ करने लगा * जब दिन बहुत ढला उसके शागिर्दों ने उस पास आके
३६ कहा कि जगह वीरान है और बहुत देर हुई है * उन्हें
रुख़सत कीजिये ता कि वे आस पास के खेतों और गांवों में जावें
और अपने लिये रोटी मोल लें कि खाने को उन पास कुछ नहीं *
३७ उसने उन्हें जवाब दिया और कहा तुम उन्हें खाने को दो तब

वे बोले हां हम जावें ऐसी दीनार की रोटियां मोल लें उन्हें खिलावें *
३८ उसने उन्हें कहा तुम पास कितनी रोटियां हैं जाके देखो तो उन्हों
३९ ने मअ़लूम करके कहा कि पांच रोटियां और दो मछलियां * तब
उसने उन्हें हुक्म किया कि उन सबको हरे घास पर सफ़ सफ़
४० बिठलावें * चुनांचिः वे सौ सौ और पचास पचास सफ़ सफ़ बैठे *
४१ तब उसने पांच रोटियां और दो मछलियां लेके आसमान पर
निगाह की और बरकत की बात कही फिर रोटियां तोड़ीं और
अपने शागिर्दों को दीं कि उनके आगे रखें और दो मछलियां
४२ उसने उन सब को बांटीं * वे सब खाके सेर हूऐ (४३) और उन्हों
ने टुकड़ों की बारह टुकरियां उठाईं और कुछ मछलियों से भी
४४ पाया * और वे जिन्हों ने रोटियां खाईं पांच हज़ार मर्द के क़रीब
४५ थे * फिर उसने अपने शागिर्दों को ताकीद से हुक्म किया कि किश्ती
पर चढ़ो जिस अ़रसे में कि मैं लोगों को रुख़सत करूं तुम पार
४६ बैतसैदा मैं आगे जा रहो * और आप उन्हें रुख़सत करके ऐक
४७ पहाड़ को गया कि दुआ़ करे * और जब शाम हूई वुह किश्ती
४८ बीच दरया में थी और वुह अकेला ज़मीन पर था * उसने देखा कि
वे खेने में सख़्त मिहनत करते हैं क्यूंकि हवा उनके मुख़ालिफ़ थी
तब पहर रात बाक़ी रहे वुह उन पास दरया के सत़ह पर चाला
४९ आता था उनसे बढ़ चला था * और उन्हों ने उसे दरया पर चलते
५० देख कर ख़ियाल किया कि कुछ धोखा है और चिल्ला उठे * सब ने
उसे देखा और घबराये पर वुह फ़िलफ़ौर उनसे बोला और उन्हें

५१ कहा ख़ातिरजमअ़ रखो मैं हूं मत डरो * फिर वुह किश्ती पर उन पास गया और हवा रह गई तब वे दिलों में बेनिहायत हैरान ५२ और मुतअ़ज्जिब हूए * इसलिये कि वे रोटियों के मुअ़जिज़े को ५३ न समझे थे उनका दिल सख़्त था * और वे पार गुज़र के जनसरत ५४ के मुल्क में आये और घाट पर बैठे * जब वे किश्ती पर से उतरे ५५ फ़िलफ़ौर लोग उसे पहचान के * मुल्क के हर तरफ़ से दौड़े और रंजूरों को खटोलों पर डाल के जहां उन्हों ने सुना था कि वुह है ५६ लेजाने लगे * और वुह जहां कहीं गाओं या शहरों या खेतों में गया उन्हों ने बीमारों को बाज़ारों में रखा और उसकी मिन्नत की कि फ़क़त उसके जामे के दामन को छू लें और जितनों ने उसे छूआ अच्छे होगये *

सातवां बाब

१ तब फ़रीसी और बअ़ज़े कातिबि बहीं जो औरशलीम से आये २ थे उस पास जमअ़ हूए * और जब उन्हों ने उसके बअ़ज़े शागिर्दों को नापाक यअ़ने बिन धोये हाथों से रोटी खाते देखा तो ३ ऐब जाना * इसलिये कि फ़रीसी और सब यहूदी उन ऱुक्मों से जो मशाइख़ ने सौंपे मुतमस्सिक होके जबतक दोनों हाथ ४ मलके न धोयें * और बाज़ार से आके जबतक नहा न लें नहीं खाते और बहुत से और अहकाम हैं जैसे प्यालों और थलियों और तांबे के बरतनों और कुरसियों का धोना जो उनको हिफ़्ज़ ५ करने के लिये तफ़वीज़ किये गये हैं * तब फ़रीसियों और कातिबों

ने उस से पूछा कि तेरे शागिर्द मशाइख़ की रवायत पर क्यों
६ नहीं चलते और रोटी बिन हाथ धोये खा लेते हैं * उसने जवाब
दिया और कहा ऐ रियाकारो इशअया ने तुम्हारी ठीक ख़बर दी
कि लिखा है ये लोग होंठों से मेरी तअज़ीम करते हैं पर उनके
७ दिल मुझ से दूर हैं * और वे अबस मेरी परस्तिश करते हैं *
८ कि ख़ल्क़ के हुक्मों को इल्मि ज़रूरी ठहराके सिखलाते हैं
क्यूंकि तुम ख़ुदा के हुक्म को तर्क करके ख़ल्क़ की रवायत जैसे
प्यालों और थिलियों का धोना हिफ़ज़ करते हो और ऐसी और
९ बहुत सी चीज़ें हैं जो तुम करते हो * और उसने उन्हें कहा
तुम ख़ुदा के हुक्म को बहुत अच्छे तौर से बातिल करते हो ता कि
१० अपनी सुन्नत को क़ाइम रखो * क्यूंकि मूसा ने कहा कि
अपने मा बाप की तअज़ीम कर और जो कोई बाप या मा को बुरी
११ बात कहे वुह जान से मारा जावे * पर तुम कहते हो अगर कोई
अपने बाप या मा को कहे जो तुझे मुझ से नफ़अ मिल सकता था
१२ सो अल्लाह दिया गया तो कुछ मुज़ाइक़ः नहीं * और तुम उसे
उसके बाप या मा से उससे आगे कुछ सलूक करने नहीं देते *
१३ पस तुम ख़ुदा के कलाम को अपनी सुन्नत से जो तुम ने राइज
की है बातिल करते हो और ऐसा बहुत कुछ करते हो *
१४ फिर उसने सारी जमाअत को पास बुलाके कहा कि तुम सब
१५ के सब मेरी सुनो और समझो * ऐसी कोई चीज़ आदमी के
बाहर नहीं जो उस में दाख़िल होके उसे पलीद कर सके पर वे

चीज़ें जो उस में से निकलती हैं वही इनसान को पलीद
१६ करती हैं * अगर किसी के कान सुन्ने के लिये हैं तो सुनले *
१७ और जब वुह जमाअत के पास से घर में गया उसके शागिर्दों ने
१८ उस से उस तशबीह का इस्तिफ़सार किया * तब उसने उन्हें कहा
क्या तुम भी ऐसे नाफ़हम हो जानते नहीं कि जो चीज़ बाहर
१९ से आदमी में जाती है उसे पलीद नहीं करसकती * इसलिये
कि वुह उसके दिल में नहीं बल्कि पेट में जाती है और
ऐक चीज़ जो दफ़अ होकर सब खुराकों को पाक करती है गड़हया
२० में फेंकी जाती है * फिर उसने कहा जो आदमी से निकलता है
२१ वही आदमी को पलीद करता है * क्यूंकि अंदर से यअने आदमी
के दिल ही से बुरे अन्देशे ज़िनाकारियां हरामकारियां क़तल करना *
२२ चोरियां लालच शरारत दग़ा मस्ती बदनज़री कुफ़र तकब्बुर नादानी
२३ निकलती हैं * ये सब बुरी चीज़ें अंदर से निकली हैं और
२४ आदमी को पलीद करती हैं * फिर वहां से उठके सूर और सैदा
की नवाही को गया और ऐक घर में दाख़िल होके चाहा कि
२५ कोई न जाने लेकिन पोशीदः रह न सका * क्यूंकि ऐक रंडी
जिसकी लड़की को नापाक रूह का सायः था उसकी ख़बर सुनके
२६ आई और उसके क़दमों पर गिरी * यिह रंडी यूनानी और
सिनफ़ की सरफ़ूनीकी थी उसने मिन्नत की कि वुह उस देव को
२७ उसकी बेटी पर से दूर कर दे * पर ईसा ने उसे कहा कि पहले
फ़रज़ंदों को सेर होने दे इसलिये कि लाइक़ नहीं कि फ़रज़ंदों

२८ की रोटी लेके कुत्तों के आगे डालिये * उसने जवाब दिया हां ऐ
२९ ख़ुदावंद लेकिन कुत्ते मेज़ के तले लड़कों की रोटी के रेज़े खाते * तब
उसने उसे कहा कि इस कलिमः के सबब से रवानः हो वुह देव
३० तेरी बेटी पर से उतर गया * और वुह जब घर में पहुंची तो पाया
३१ कि देव दूर होगया और उसकी बेटी बिस्तर पर पड़ी है * और
वुह सूर और सैदा की नवाही से निकल कर जलील के दरया की
३२ सिम्त को दकापोलिस की सरहदों में आया * वहां एक बहरे
को जिसकी ज़बान में लुकनत थी उसपास लाये और उसकी
३३ मिन्नत की कि अपना हाथ उस पर रख * वुह उसे उस गरोह से
किनारे लेगया और अपनी उंगलियां उसके कानों में कीं और
३४ अपना थूक लेके उसकी ज़बान में लगाया * और आसमान
पर नज़र करके एक आह की और उसे कहा इफ़्फ़तह यानी
३५ खुल जा * वहीं उसके कान खुल गये और उसकी ज़बान की गिरह
३६ वा हुई और वुह दुरुस्त बोलने लगा * और उसने उन्हें
मनअ किया कि किसी से न कहें लेकिन जितना उसने मनअ
३७ किया था वे उतना ज़ियादः मश्हूर करते थे * और बहुत
बशिद्दत हैरान हूये और कहा कि उसने सब चीज़ों को अच्छा
किया बहरों को सुनता और गूंगों को गोया करता है *

आठवां बाब

१ उन दिनों में जब बड़ा गिरोह जमअ था और उनपास कुछ खाने को
२ न था ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर कहा * मुझे उन लोगों

पर तरस आता है कि उन्हों ने तीन दिन से मेरा साथ न छोड़ा और
३ उनकने कुछ खाने को नहीं * अगर मैं उन्हें फ़ाक़े से घर जाने को
विदाअ करूं वे राह में नातुवान होजायेंगे कि कई एक उन में से
४ दूर से आये हैं * उसके शागिर्दों ने उसे जवाब दिया कि कोई शख़्स
५ उन लोगों को इस दश्त में रोटी से क्यूंकर सेर कर सके * तब उसने
६ उनसे पूछा कि तुम पास कितनी रोटियां हैं वे बोले सात * फिर
उसने दंगल को हुक्म किया कि ज़मीन पर बैठ जायें और उस
ने सात रोटियां लीं और शुक्र करके तोड़ीं और अपने शागिर्दों
को दीं कि उनके आगे रखें उन्हों ने दंगल के आगे रख दीं *
७ और उन पास कई एक छोटी मछलियां थीं सो उसने बरकत का
८ कलिमः कहके हुक्म किया कि उन्हें भी आगे धरें * चुनांचिः
उन्हों ने खाया और सेर हुए और उन्हों ने उन रेज़ों को जो
९ बच रहे थे सात टोकरियां उठाईं * और वे ख़ुरिन्दे चारहज़ार के
१० क़रीब थे फिर उसने उन्हें रुख़सत किया * और उसी वक़्त वुह
अपने शागिर्दों के साथ किश्ती पर बैठा और दलमानूता की नवाही
११ में आया * तब फ़रीसी निकले और उसके इम्तिहान के लिये
कोई आसमानी मुअजिज़ः तलब करके उस से मुबाहसः करने
१२ लगे * उसने आहि सर्द भर के कहा इस अहद के लोग मुअजिज़ः
के तालिब हैं मैं तुम से सच कहताहूं कि इस अस्र के लोगों को
१३ कोई मुअजिज़ः दिखाया न जायगा * और वुह उनसे जुदा होके
१४ फिर किश्ती पर बैठा और पार गया * सो वे रोटी लेना भूल गये थे

१५ और किश्ती पर सिवा एक रोटी के उन पास कुछ न था * तब उसने उन्हें यूं फ़रमाया ख़बरदार रहो और फ़रीसियों के ख़मीर और
१६ हीरूदीस के ख़मीर से परहेज़ करो * उन्हों ने आपस में गुफ़्गू की और कहा कि यिह इसलिये है कि हमारे साथ रोटी
१७ नहीं * ईसा ने यिह दरयाफ़ करके उन्हें फ़रमाया तुम क्यूं क़ियास करते हो यिह इसलिये है कि हमारे साथ रोटी नहीं क्या तुम अबतक नहीं जानते और नहीं समझते क्या तुम्हारे दिल
१८ हनोज़ सख़ हैं * तुम आंखें होते हूए नहीं देखते और कान होते हूए नहीं सुनते और क्या तुम याद नहीं करते *
१९ जिसवक़्त मैं ने पांच रोटियां पांच हज़ार के लिये तोड़ीं तुम ने रेज़ों से
२० कितनी टोकरियां भरी उठाईं वे बोले बारह * और जिसवक़्त सात चार हज़ार के लिये तोड़ीं तुम ने कितनी टोकरियां रेज़ों से भरी
२१ उठाईं वे बोले सात * तब उसने उन्हें कहा फिर तुम क्यूं नहीं
२२ समझते * फिर वुह बैतिसैदा में आया और वे एक अंधे को उस
२३ पास लाये और उसकी मिन्नत की कि आप को छूने दे * और वुह उस अंधे का हाथ पकड़के बस्ती से बाहर ले गया और उसकी आंखों में थूका और अपने हाथ उस पर रखके उस से पूछा कि तू कुछ
२४ देखता है * उसने ध्यान किया और कहा कि मैं आदमियों
२५ को दरख़्तों सा देखता हूं कि चलते हैं * तब उसने उसकी आंखों पर हाथ फिर रखे और उसका मुंह ऊपर करवाया और वुह
२६ चंगा हूआ और हर शख़्स को अच्छी तरह देखा * और उसने

उसे यिह कहकर घर भेजा कि बस्ती में न जा और बस्ती में किसी
२७ से मत कह * तब ईसा और उसके शागिर्द क़ैसरियः फ़ीलबूस
की बस्तियों में गये और राह में उसने अपने शागिर्दों से पूछा
२८ लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं * उन्हों ने जवाब दिया कि यह्या
मुस्तबिग़ और बअ़ज़े इलियास और बअ़ज़े ऐक नबियों में
२९ से कहते हैं * फिर उसने उन्हें कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन
३० हूं पतरस ने जवाब दिया कि तू मसीह है * फिर उसने उन्हें
३१ मनअ़ किया कि यिह किसी से मत कहियो * फिर उसने उन्हें
इत्तिलाअ़ देना शुरूअ़ किया कि इबनि आदम को ज़रूर कि
बहुत से रंज खैंचे और मशाइख़ और सरदारि काहिनों और
कातिबों से रद्द किया जाय और मारा जावे और तीन रोज़ पीछे
३२ उठे * और उसने यिह कलाम अ़लानियः कहा तब पतरस
३३ उस से लपटकर हुंहलाने लगा * पर उसने फिर कर अपने
शागिर्दों पर निगाह करके पतरस को मलामत की और कहा ऐ
शैतान मेरे आगे से दूर हो क्यूंकि वे चीज़ें जो रब्बानी हैं तेरी
३४ सिरिश्त में नहीं मगर वे चीज़ें जो इनसानी हैं * तब उसने उस
दंगल को अपने शागिर्दों के साथ पास बुलाकर कहा जो कोई मेरे
पीछे आया चाहे चाहिऐ कि अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त करे
३५ और अपनी सलीब को उठाले और मेरी पैरवी करे * इसलिये
कि जो कोई अपनी जान बचाया चाहेगा उसे खोएगा पर जो कोई
कि मेरे और इंजील के लिये अपनी जान गंवाऐगा वुह उसे

३६ पावेगा * इसलिये कि अगर आदमी सारी दुनया को नफ़ा में ले
और जान का नुक़सान उठावे तो उसे क्या हासिल होगा *
३७ और आदमी अपनी जान के इवज़ में क्या देगा (३८) इसलिये
कि इस ज़माने के ज़िनाकार और ख़ताशिआर लोगों में जो कोई
मुझ से और मेरी बातों से हिजाब करेगा इब्नि आदम भी जब
अपने बाप की हशमत से मुक़द्दस फ़िरिश्तों को साथ लिये आवेगा
उस से हिजाब करेगा *

नवां बाब

१ उसने उन्हें कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि उन में से जो यहां
हाज़िर हैं बअज़े हैं जो मौत का मज़ा जबतक न देख लें कि ख़ुदा
२ की सल्तनत क़ुद्रत से आई हरगिज़ न चखेंगे * और छः दिन
पीछे ईसा ने पतरस और यअक़ूब और यूहन्ना को साथ लिया
और सिर्फ़ उन्हें एक ऊंचे पहाड़ पर अलग ले गया और
३ उनके आगे मुबद्दल हूआ * और उस का लिबास दुरख़्शां
और निहायत सपेद बर्फ़ आसा हूआ ऐसा कि रफ़ूगर ज़मीन पर
४ इतना सपेद न कर सके * तब ईलियास मूसा के साथ उन्हें देखाई
५ दिया और वे ईसा से हमकलाम थे * पतरस ने मुतवज्जिह
होकर ईसा से कहा कि ऐ रब्बी हमारे लिये बेहतर है कि यहां
रहें और तीन [illegible] बनावें एक तेरे और एक मूसा के और
६ एक ईलियास के लिये बनावें * क्यूंकि उसने न जाना कि क्या कहे
७ इसलिये कि वे बहुत हिरासां थे * तब बदली पैदा हूई जिसने

उन पर साय: किया और उस बद्‌ली से आवाज़ आई कि यिह
८ मेरा अज़ीज़ बेटा है उसकी सुनो * फिर उन्हों ने एकबयक
निगाह की तो ईसा के सिवा किसी को अपने साथ न देखा *
९ और जब वे सब पहाड़ से उतरते थे उसने उन्हें हुक्म किया
कि ये चीज़ें जो तुमने देखीं जबतक कि इबनि आदम मरके जी
१० न उठे किसी से नक़ल न करना * और वे इस कलाम को आपस ही
में रखके चरचा करते थे कि मरके उठने के क्या मअ़ने हैं *
११ फिर उन्हों ने उस से पूछा कातिब क्यूं कहते हैं कि पहले
१२ इलियास का आना ज़रूर है * उसने जवाब दिया और कहा
इलियास का पहले आना और सब चीज़ों को दुरुस्त करना
सच है और वुह उसका जो इबनि आदम के हक़ में लिखा
गया है कि बहुत से रंज खैंचे और ज़लील कियाजाय ख़तम
१३ करनेवाला है * मैं तुम से सच कहता हूं कि इलियास जैसा
उसके लिये लिखा गया था फ़िलवाक़िअ़ आचुका है और उन्हों
१४ ने जो कुछ कि चाहा उसके साथ किया * और जब वुह
अपने शागिर्दों पास आया उनके गिर्द बड़ी जमाअ़त को और
१५ कातिबों को उन से मुबाहसः करते देखा * और फ़िलफ़ौर सारे
दंगल उसे देखकर और हैरान होकर उस पास दौड़ा आया
१६ और सलाम किया * तब उसने कातिबों से पूछा कि तुम उनसे
१७ क्या मुबाहसः करते थे * एक उस जमाअ़त में से बोल उठा कि
ऐ मुअ़ल्लिम मैं अपने बेटे को तुझ पास लाया हूं उसे गूंगे देव

१८ का साय: है * और वुह जहांकहीं उसे पाता है तोवता है और वुह कफ़ भर लाता और दांत पीसता है ओर खुश्क होजाता है मैं ने तेरे शागिर्दों से कहा था कि वे उसे दूर करदें
१९ पर वे न करसके * उस ने उस के जवाब में कहा कि ऐ वे इअतिक़ाद क़ौम मैं कबतक तुम्हारे साथ रहूं मैं कवतक
२० तुम्हारा मुतहम्मिल हूं उसे मुझ पास लाओ * वे उसे उस पास लाये जों उस ने उसे देखा त्योंहीं उस देव ने उसे ऐंठाया और
२१ वुह ज़मीन पर गिरा और कफ़ लाके लोट गया * तब उस ने उस के बाप से पूछा कि यिह हादिसः उसपर कितनी मुद्दत से है वुह
२२ बोला छुटपन से * और वुह अकसर उसे आग में और पानी में डालता रहा ता उसे जान से मारे पर अगर तू कुछ करसकता है
२३ तो हम पर रहम करके हमारी मदद कर * ईसा ने उसे कहा अगर तू ईमान लासके सब चीज़ें ईमानदार के लिये मुमकिन
२४ हैं * तब फ़िलफ़ौर उस लड़के का बाप चिल्लाया और आंसू बहा के बोला कि खुदावंद मैं ईमान लाता हूं तू मेरी बेईमानी का
२५ चारः कर * जब ईसा ने देखा कि लोग दौड़कर जमअ हूए तो उस पलीद रूह को मलामत की और कहा कि ऐ गूंगी बहरी रूह मैं तुझे हुक्म करता हूं उस से बाहर निकल और उस में फिर
२६ कभी मत दाख़िल हो * वुह चिल्लाकर और उसे बशिद्दत ऐंठाकर उस से निकल गई और वुह मुर्दः सा होगया ऐसा कि
२७ बहुतों ने कहा वुह मरगया * तब ईसा ने उसका हाथ पकड़ा और

२८ उसे उठाया वुह उठ खड़ा हुआ * और जब वुह घर में आया उसके
शागिर्दों ने ख़ुफ़्यः उस से पूछा कि हम उसे क्यूं दूर न करसके *
२९ उस ने उन्हें कहा कि यिह जिन्स सिवा दुआ और रोज़ः के
३० किसी वजह से दूर नहीं होसकती * फिर वे वहां से रवानः
हुए और जलील में होके निकल गये और उस ने चाहा कि
३१ कोई न जाने * इसलिये कि उसने अपने शागिर्दों को ख़बर
दी और उन्हें कहा कि इबनि आदम लोगों के हाथ में गिरिफ़्तार
करवाया जाता है वे उसे क़त्ल करेंगे और वुह मक़्तूल होके
३२ तीसरे दिन फिर उठेगा * लेकिन वे यिह कलाम न समझे और
३३ उस से सुवाल करते हुए डरे * फिर वुह कफ़रनाहूम में आया
और घर में पहुंचके उन से पूछा तुम बाहम राह में क्या तक़रार
३४ करते थे * पर वे चुप रहे इसलिये कि वे राह में बाहम बहस
३५ करते थे कि सब से बड़ा कौन है * फिर उस ने बैठके उन बारह
को बुलाया और उन्हें कहा अगर कोई शख़्स चाहे कि सब से
३६ आगे हो वुह सब के पीछे और सब का ख़ादिम होगा * और
ऐक छोटे लड़के को लेके सब के बीच में खड़ा किया और उसे
३७ आग़ोश में खैंचकर उन से कहा * जो कोई मेरे नाम उन
लड़कों में से ऐक को माने मुझे मानता है और जो कोई मुझे
मानेगा न मुझे बल्कि उसे जिसने मुझे भेजा है मानता है *
३८ तब यूहन्ना उसे कहने लगा ऐ उस्ताद हमने ऐक को तेरे
नाम से देव भगाते देखा और वुह हमारा पैरो नहीं और हमने

उसे मनअ़ किया क्यूंकि वुह हमारी पैरवी नहीं करता *
३९ तब ईसा ने कहा कि उसे मनअ़ न करो क्यूंकि ऐसा कोई नहीं
जो मेरा नाम लेके मुअ़जिज़: देखाके मुझे फ़िलफ़ौर बुरा कहे *
४० क्यूंकि वुह जो हमारा मुख़ालिफ़ नहीं हमारी तरफ़ है *
४१ इसलिये कि जो कोई मेरे नाम ऐक प्याला पानी तुम्हें इसके
लिये कि तुम मसीह के हो पीने को दे मैं तुम से सच कहता हूं
४२ उसका अज्र ज़ाइअ़ न होगा * और जो कोई उन छोटों में
जो मुझ पर इअ़तिक़ाद रखते हैं ऐक को ठोकर खिलावे उसके
लिये यिह बिहतर था कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया
४३ जाता और वुह दरया में डुबाया जाता * और अगर तेरा हाथ
तेरे ठोकर खानेका बाइ़स हो और तुझे गुनहगार करे उसे काट
डाल कि टुंडा ज़िन्दगी में दाख़िल होना तेरे लिये उस से बिहतर
है कि दो हाथ होते हुऐ जहन्नम के बीच उस आग में जो
४४ नाक़ाबिल: है जाय * जहां उनका कीड़ा आख़िर नहीं होता
४५ और आग नहीं बुझती * और अगर तेरा पांव तेरे ठोकर
खाने का बाइ़स हो उसे काट डाल क्यूंकि लंगड़ा ज़िन्दगी में
दाख़िल होना तेरे लिये उस से बिहतर है कि तेरे दो पांव हों
और तू जहन्नम में उस आग में जो कभी न बुझेगी डाला
४६ जावे * जहां उन का कीड़ा आख़िर नहीं होता और आग
४७ नहीं बुझती * और अगर तेरी आंख तेरे ठोकर खाने का सबब
हो उसे निकाल डाल कि ख़ुदा की ममलुकत में काना दाख़िल होना

तेरे लिये उस से बिह्तर है कि दो आंखें रख के आतिशि जहन्नम
४८ में डालाजाय * जहां उनका कीड़ा आख़िर नहीं होता और
४९ आग नहीं बुझती * क्यूंकि आग सारे बदन में सिरायत कर
जायगी और तमाम क़बह् में मिलह् मिलाया जायगा *
५० नमक भली ह चीज़ है लेकिन अगर नमक बिगड़जावे तुम काहे से
उसकी इसलाह करोगे पस आप में नमक रखो और आपस में
सुलह करो *

दसवां बाब

१ फिर वुह वहां से उठकर अर्दन के वार पार यहूदियः के हुदूद में
आया और जब आते उस पास फिर जमाअ हुईं वुह अपने
२ मअमूल के मुवाफ़िक़ फिर उन्हें नसीहत करने लगा * और
फ़रीसियों ने उसपास आके इमतिहान की राह से उस से पूछा
३ आया रवा है कि मर्द जोरू को तलाक़ दे * उसने जवाब दिया
४ और उन्हें कहा कि मूसा ने तुम्हें क्या हुक्म किया * वे बोले
मूसा ने तो इजाज़त दी है कि तलाक़ नामः लिखके तलाक़ दें *
५ तब ईसा ने जवाब दिया और उन्हें कहा कि उसने तुम्हारी सख़्त
६ दिली के सबब से तुम्हारे लिये यिह क़ाइदः बांधा * लेकिन
इबतिदाय आफ़रीनिश से तो ख़ुदा ने उन्हें नर और मादः
७ बनाया * इस सबब आदमी अपने मा बाप को छोड़ेगा और
८ अपनी जोरू से मिला रहेगा * और वे दोनो एक तन होंगे
९ सो वे अब दो नहीं बल्कि एक तन हैं * इसलिये जिसे ख़ुदा ने

१० जोड़ा है आदमी जुदा न करे * और घर में उसके
११ शागिर्दों ने उस से फिर भी सुवाल किया * उस ने उन्हें
कहा जो कोई अपनी जोरू को तलाक़ देवे और दूसरी से
निकाह करे उस का हरीफ़ होके ज़िना करता है *
१२ और अगर रंडी अपने शौहर से तलाक़ लेवे और दूसरे से निकाह
१३ करे ज़िना करती है * फिर वे लड़कों को उस पास लाये ता कि
१४ वुह उन्हें छूए तब शागिर्द उन लानेवालों पर झुंझलाये * पर
ईसा देख के बहुत नाखुश हूआ और उन्हें कहा लड़कों को छोड़
दो कि मुझ पास आवें और उन्हें मनअ न करो क्यूंकि ख़ुदा की
१५ ममलुकत ऐसों ही की है * मैं तुमसे सच कहता हूं जो कोई
ख़ुदा की सलतनत को छोटे लड़के की तरह से क़बूल न करे वुह
१६ उस में दाख़िल न हो सकेगा * फिर उसने उन्हें अपनी गोद में
१७ लेके उन पर हात रखे और उनके लिये बरकत चाही * और
जब वुह बाहर राह में चलाजाता था एक शख़्स दौड़ता उसपास
आया और उसके आगे घुठने टेक के उस से सुवाल किया कि
ऐ सालिह उस्ताद मैं क्या करूं ता कि हयाति जाविदानी का
१८ वारिस हूं * ईसा ने उसे कहा कि तू मुझे सालिह क्यूं कहता है कि
१९ सालिह नहीं मगर एक यअने ख़ुदा * तू हुक्मों को जानता है
ज़िना न कर क़तल न कर चोरी न कर झुठी गवाही न दे किसी
२० का माल न खावेठ मा बाप की तकरीम कर * उसने जवाब में
कहा कि ऐ उस्ताद मैं ने इन सब को लड़कपन से याद कर रखा है *

२१ तब ईसा ने उस पर फिर के निगाह की और उसे कहा कि एक
चीज़ है जो तुझ में नहीं जा और जो कुछ तेरा हो सब बेच डाल
और मुहताजों को दे कि तू आसमान पर गंज पावेगा और इधर
२२ आ सलीब उठाके मेरे पीछे होले * वुह उस कलाम से दुःखी
२३ हुआ और ग़मज़द: चलागया क्योंकि बड़ा मालदार था * तब ईसा
ने हर तरफ़ देख के अपने शागिर्दों से कहा कि ख़ुदा की ममलुकत
२४ में दौलतमंद का दाख़िल होना क्या ही दुशवार है * और शागिर्द
उसकी बातों से हैरान हुए ईसा फिर मुतवज्जिह होके उन्हें कहने
लगा कि ऐ लड़को जो दौलत पर इअतिमाद करते हैं उनको ख़ुदा
२५ की ममलुकत में दाख़िल होना क्या ही दुशवार है * कि सूई के
नाके में ऊंट का दाख़िल होना ख़ुदा की ममलुकत में दौलतमंद के
२६ दाख़िल होने से आसान तर है * वे हद से ज़ियाद: हैरान हुए
और आपस में कहने लगे फिर कौन नजात पासकता है *
२७ ईसा ने उनकी तरफ़ निगाह करके कहा कि आदमियों के आगे
मुहाल है पर ख़ुदा के आगे नहीं क्योंकि ख़ुदा के आगे सब
२८ चीज़ें मुमकिन हैं * तब पतरस उसे कहने लगा देख हमने सब
२९ छोड़ा और तेरे पीछे हो लिये * ईसा ने जवाब में कहा मैं तुम से
सच कहता हूं ऐसा कोई नहीं जिसने भाइयों या बहिनों या मा
को या जोरू या लड़कों या खेतों को मेरे और इंजील के लिये छोड़
३० दिया है * मगर कि वुह सौगुना अब इस ज़माने में घर और भाई
और बहिनें और माएं और लड़के और ज़मीनें दुखों के साथ

३१ और जहाने आइन्दः में हयाति अबदी पावेगा * लेकिन बहुत
३२ से अगले पीछे और पिछले आगे होंगे * अब जब वे औरशलीम
का इरादः करके राह चले जाते थे ईसा उनसे आगे चला तब वे हैरान
हुए पर डरते डरते उसके पीछे लगे गये ईसा ने फिर उन बारहों को
लेके सब जो कुछ कि उस पर वाक़िअ होने वाला था उनसे कहना
३३ शुरूअ किया * कि देखो हम औरशलीम को जाते हैं और इब्नि
आदम सरदार काहिनों और कातिबों के हवाले किया जायगा और
वे उसके क़तल का फ़तवा देंगे और उसे अवाम के हवाले करेंगे *
३४ और वे उससे तमसख़ुर करेंगे और कोड़े मारेंगे और उस पर थूकेंगे
फिर उसे क़तल करेंगे और वुह तीसरे दिन फिर जी उठेगा *
३५ तब ज़बदी के बेटे यअक़ूब और यूहन्ना ने उस पास आके कहा
कि ऐ उस्ताद हम चाहते हैं कि जो कुछ चाहें तू हमारे लिये
३६ करे * उसने कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं *
३७ उन्हों ने उसे कहा कि हमको बख़्श कि हम तेरी हशमत में
३८ एक तेरे दहने हाथ और दूसरा तेरे बाएं हाथ बैठें * तब ईसा
ने उन्हें कहा तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांगते हो क्या वुह
प्यालः जो मैं पीताहूं तुम पीसकते हो और जिस इस्तिबाग़ से
३९ मैं तअमीद पाताहूं तुम तअमीद पासकते हो * उन्हों ने उसे
कहा कि हम सकत रखते हैं ईसा ने उन्हें कहा कि फ़िल्वाक़िअ
तुम वुह प्यालः जो मैं पीताहूं पीओगे और जिस इस्तिबाग़ से मैं
४० तअमीद पाताहूं तअमीद पाओगे * लेकिन मेरे दहने और बाएं

साथ बैठना मेरी बख़्शिश नहीं यिह तो उन्हीं के लिये है जिन के
४१ लिये यिह मुहैया किया गया है * और जब उन दसों ने सुना
४२ तो वे यअ़क़ूब और यूहन्ना पर ग़ुस्सः करने लगे * तब ईसा ने
उन्हें साम्हने बुलाकर कहा तुम जानते हो वे जो क़ौमों के सरदार
मअ़लूम होते हैं उन पर हाकिमी करते हैं और उनके बुज़ुर्ग उन्हीं
४३ पर ख़ुदावंदी करते हैं * पर तुम में ऐसा न होगा बल्कि जो कोई
४४ तुम में बड़ा हुआ चाहे तुम्हारा ख़ादिम होगा * और जो कोई
४५ तुम में पेशवा हुआ चाहे सब का बंदः होगा * क्योंकि इब्नि
आदम भी इसलिये नहीं आया कि उसकी ख़िदमत की जावे
बल्कि इसलिये कि ख़ुद ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतों
४६ के फ़िद्ये में देवे * फिर वे अरीहा में आये और जब वुह और
उसके शागिर्द और एक बड़ी जमाअ़त अरीहा से निकलते थे तीमी
४७ का बेटा अंधा बरतीमी सरि राह बैठा भीख मांगता था * और सुन
कर कि वुह ईसाय नासिरी है चिल्लाने और कहने लगा कि ऐ
४८ दाऊद के बेटे ईसा मुझ पर रह़म कर * और बहुतेरों
ने उसे डांटा कि चुप रहे पर वुह और भी ज़ियादः चिल्लाया कि
४९ ऐ दाऊद के बेटे मुझ पर रह़म कर * तब ईसा खड़ा रहा और
हुक्म किया कि उसे बुलावें उन्हों ने उस अंधे को यिह कहके
बुलाया कि ख़ातिर जमअ़ रख उठ कि वुह तुझे बुलाता है *
५० वुह अपना कपड़ा फेंकके उठा और ईसा पास आया (५१) ईसा
उसे कहने लगा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं उस अंधे

५२ ने उसे कहा कि ऐ रब्बूनी यिह कि मैं अपनी बीनाई पाऊं * ईसा ने उसे कहा कि जा तेरे इअतिक़ाद ने तुझे बचाया वहीं वुह बीना हूआ और राह में ईसा के पीछे हो लिया *

ग्यारहवां बाब

१ जब वे औरशलीम के नज़्दीक कोहि ज़ैतून के क़रीब बैति फ़ज़ा और बैत अनिया में आये उसने अपने शागिर्दों में
२ से दो को भेजा * और उन्हें कहा उस गांव में जो तुम्हारे साम्हने है जाओ और जो तुम उस में दाख़िल होगे तुम ऐक गदही का बच्चः बंधा पाओगे जिस पर कोई सवार नहीं हूआ
३ उसे खोल कर लेआओ * और अगर कोई शख़्स तुम्हें कहे कि तुम यिह क्यूं करते हो तुम कहियो ख़ुदावंद उस का मुहताज
४ है कि वुह शिताब उसे यहां भेज देगा * चुनांचिः वे गये और उस बच्चे को दर्वाज़े के नज़्दीक बाहर बार जहां दो राह
५ था पाया और उसे खोला * लोगों ने उन में से जो वहां खड़े थे उन्हें कहा यिह क्या करते हो जो बच्चे को खोलते हो *
६ उन्हों ने जैसा ईसा ने फ़रमाया था कहा तब उन्हों ने उन को जाने
७ दिया * और वे उस बच्चे को ईसा पास लाये और अपने कपड़े
८ उस पर डाल दिये वुह उस पर सवार हूआ * और बहुतों ने अपनी पोशाक को राह में फ़र्श किया औरों ने दरख़्तों की डालियां
९ काटीं और राह में बिखराईं * और वे जो आगे पीछे जाते थे पुकार के कहते कि हूशअना सलाम उस पर जो ख़ुदावंद के

१० नाम से आता है * हमारे बाप दाऊद की सलतनत पर जो ख़ुदावंद के नाम से आई है सलाम निहायत बलंदी में हूआ करे *
११ और ईसा औरशलीम के बीच हैकल में दाख़िल हूआ और हर तरफ़ सब चीज़ों पर निगाह करके उन बारहों के साथ बैति
१२ ऐना को गया क्यूंकि वक़्त शाम हूआ * और सुबह को जब
१३ वे बैति ऐना से बाहर आये उसको भूख लगी * तब दूर से अंजीर का एक पुर बर्ग दरख़्त देखकर वुह आया कि शाइद उस में कुछ पाये पर जब वुह उस तक आया तो पत्तों के सिवा कुछ न पाया
१४ क्यूंकि अंजीर का मौसिम न था * तब ईसा उसे कहने लगा कि अबद तक तेरा मेवः कोई न खावे और उसके शागिर्दों ने यिह सुना *
१५ फिर वे औरशलीम में आये और ईसा हैकल में दाख़िल होके उन्हें जो हैकल में ख़रीद फ़रोख़्त करते थे बाहर निकालने लगा और सर्राफ़ों के तख़्ते और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दियां *
१६ और किसी को न छोड़ा कि हैकल में होके बरतन ले जावे *
१७ और उन्हें यिह कहके तअलीम दी क्या यिह लिखा हूआ नहीं कि मेरा घर सब क़ौमों का इबादतख़ानः कहलावेगा लेकिन
१८ तुम ने उसे चोरों का ग़ार बनाया है * और कातिबों और सरदार काहिनों ने सुना वे फ़िक्र में थे कि उसे किस तरह जान से मारें कि उस से डरते थे इसलिये कि सब लोग उसकी तअलीम से
१९ दंग होगये थे * और जब शाम हूई वुह शहर से बाहर
२० गया * और सुबह को जो वे उधर से गुज़रे तो देखा कि वुह अंजीर

२१ का दरख़ जड़ से खुश्क होगया * तब पतरस ने याद करके उसे कहा कि ऐ रब्बी देख तो अंजीर का यिह दरख़ जिसे तूने
२२ बद दुआ दी थी खुश्क होगया है * ईसा ने जवाब में उन्हें
२३ कहा खुदा पर इअतिक़ाद रखो * कि मैं तुम से सच कहताहूं जो कोई उस पहाड़ को कहे कि उठ और दर्या में गिरपड़ और अपने दिल में शक नलावे बल्कि यक़ीन जाने कि ये चीज़ें जो वुह कहता है होजायेंगी तो जो कुछ वुह कहेगा पावेगा *
२४ इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि दुआ में जो चीज़ें कि तुम मांगतेहो यक़ीन करो कि सब तुम्हें मिलेंगी तो तुम पाओगे *
२५ और जब कि तुम दुआ के लिये खड़ेहोतेहो अगर तुम्हारा किसी पर कुछ आता हो तो मुआफ़ करो ता कि तुम्हारा बाप भी
२६ जो आस्मान पर है तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे * और अगर तुम न बख़्शोगे तुम्हारा बाप भी जो आस्मान पर है तुम्हारे गुनाह
२७ न बख़्शेगा * फिर वे दोबारः औरशलम में आये और जब वुह हैकल में फिरता था सरदार काहिन और कातिब और
२८ मशाइख़ उस पास आये * और उसे कहा कि तू किस इख़्तियार से ये काम करता है और तुझे इन कामों के करने पर किस ने
२९ इख़्तियार बख़्शा * तब ईसा ने जवाब दिया और उन्हें कहा मैं भी तुम से एक सुवाल करता हूं तुम जवाब दो तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं किस इख़्तियार से ये काम करता हूं *
३० यहूया का इस्तिबाग़ आस्मान से था या ख़ल्क़ से मुझे जवाब

३१ है * तब वे दिलों में क़ियास करने लगे कि अगर हम कहें आस्मान से तो वुह कहेगा फिर तुम ने उस की तस्दीक़ क्यूं
३२ न की * और अगर हम कहें कि ख़ल्क़ से तो मुश्किल है क्यूंकि वे ख़ल्क़ से डरते थे इसलिये कि यहया को सब लोग नबी
३३ बरहक़ जानते थे * तब उन्हों ने जवाब दिया और ईसा से कहा हम नहीं जानते ईसा ने जवाब में उन्हें कहा मैं भी तुम से नहीं कहता मैं किस इख़्तियार से ये काम करता हूं *

बारहवां बाब

१ फिर वुह उन्हें तमसीलों में इरशाद करने लगा कि एक शख़्स ने ताकिस्तान लगाया और आस पास इहाता किया और खोद के कोल्हू तैयार किया और एक बुर्ज बनाया और उसे बाग़बानों
२ के सपुर्द करके परदेस गया * फिर उसने मौसिम में एक ख़ादिम को बाग़बानों पास भेजा ता कि वुह बाग़बानों से
३ ताकिस्तान का कुछ मेवः ले ले * उन्हों ने उसे पकड़ के मारा और
४ ख़ाली हाथ फिर भेजा * उसने दुबारः एक और ख़ादिम उन पास भेजा उन्हों ने उसे संगसार किया और उसके सिर को ज़ख़्मी
५ किया और रुसवा करके फिर भेजा * तब उस ने एक और को फिर भेजा उन्हों ने उसे क़त्ल किया और बहुतेरों को
६ कितनों को मारा और कितनों को मारडाला * अब उसका एक ही बेटा रहगया था जो उस का अज़ीज़ था आख़िरि कार उस ने उसे भी उन पास भेजा और कहा कि वे मेरे बेटे से दबेंगे *

७ लेकिन उन बाग़बानों ने दिलों में कहा कि यिह वारिस है
८ आओ उसे जान से मारें कि मीरास हमारी होजाय * और उन्हों ने उसे पकड़ा और क़तल करके ताकिस्तान के बाहर
९ फेंक दिया * पस ताकिस्तान का मालिक क्या करेगा आवेगा बाग़बानों को हलाक करेगा और ताकिस्तान औरों को देगा *
१० और क्या तुम ने यिह लिखा नहीं पढ़ा कि वुह पत्थर जिसे
११ मिअ़मारों ने नापसन्द किया कोने का सिर हूआ * यिह ख़ुदावंद की तरफ़ से हूआ पर यिह हमारी नज़रों में अ़जीब है *
१२ तब उन्हों ने चाहा कि उसे पकड़ लें पर लोगों से डरे क्यूंकि वे समझ गये थे कि उसने यिह तमसील उन पर कही और उसे
१३ छोड़के चलेगये * फिर उन्हों ने बअ़ज़े फ़रीसियों और हिरूदीसियों को उस पास भेजा कि उसे उसकी बातों के सबब फंदे में डालें *
१४ और जब वे आये तो उसे कहा कि ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और तुझ को किसी की परवा नहीं क्यूंकि तू लोगों के तशख़्ख़ुस पर नज़र नहीं करता पर ख़ुदा की राह रास्ती से बताता है क़ैसर को जिज़्यः देना हलाल या नहीं हम देवें
१५ या नदेवें * उस ने उन की मक्कारी जान के उन्हें कहा तुम मुझे क्यूं आज़माते हो एक दीनार मुझ पास लाओ कि मैं देखूं *
१६ चुनांचिः वे लाये तब उस ने उन्हें कहा कि यिह किसकी सूरत
१७ और किसका सिक्कः है उन्हों ने कहा कि क़ैसर की है * ईसा ने जवाब में उन्हें कहा कि जो चीज़ें क़ैसर की हैं क़ैसर को और

औ पीछे हैं ख़ुदा की हैं ख़ुदा को पहुंचा दो तब वे उस से हैरान
१८ हुए * फिर ज़ादूक़ी जो हश्र के मुनकिर हैं उस पास आये और
१९ उस से सवाल किया * कि ऐ उस्ताद हमारे लिये मूसा ने
लिखा है कि अगर किसी का भाई मर जाय और उस
की जोरू रहे और फ़रज़न्द न हो तो उसकी जोरू को
उसका भाई लेवे ता कि अपने भाई के लिये ख़ानदान बरपा करे *
२० अब एक सात भाई थे पहले ने जोरू की और लावलद मर गया *
२१ तब दूसरे ने उसे लिया और मर गया उसका भी कोई फ़रज़न्द
२२ न रहा * और इसी तरह से तीसरे ने यूंहीं सातों ने उसे लिया
२३ और लावलद मरे सब के पीछे वुह रंडी भी मर गई * पस महशर में
जब वे उठेंगे वुह उन में से किसकी जोरू होगी क्यूंकि वे सातों
२४ की जोरू हुई थी * ईसा ने जवाब में उन्हें कहा क्या तुम
इस बात में ग़लती पर नहीं हो कि न किताबों की न ख़ुदा
२५ की क़ुदरत की दीद करते हो * इसलिये कि जब मुर्दे उठेंगे
तो वे न ब्याह करेंगे न ब्याह दिये जायेंगे बल्कि फ़िरिश्तों की
२६ मानंद जो आसमान पर हैं होंगे * और मुर्दों के उठने
की बाबत क्या तुम ने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि ख़ुदा ने
झाड़ी में से उसको क्यूंकर कहा कि मैं इबराहीम का ख़ुदा और
२७ इसहाक़ का ख़ुदा और यअक़ूब का ख़ुदा हूं * वुह मुर्दों का
ख़ुदा नहीं बल्कि ज़िन्दों का ख़ुदा है इस लिये तुम बड़ी ग़लती
२८ करते हो * तब कातिबों में से एक शख़्स जिस ने उनका मुनाज़रा

सुना और समझा कि उस ने उन्हें जवाब शाफ़ी दिया पास आया
२९ और उससे पूछा कि सब हुक्मों में अव्वल कौन है * ईसा ने
उसे जवाब दिया कि सब हुक्मों में अव्वल यिह है कि सुन ऐ
इसराईल वुह ख़ुदावंद जो हमारा ख़ुदा है एक ही ख़ुदावंद है *
३० और चाहिये कि तू ख़ुदावंद को जो तेरा ख़ुदा है अपने सारे दिल से
और अपनी सारी जान से और अपने सारे इद्राक से और
३१ अपने सारे ज़ोर से प्यार करे हुक्मि अव्वल यही है * और
दूसरा जो उस के बराबर है यिह है कि अपने मिलनेवाले को
ऐसा प्यार करे कि जैसा आप को इनसे बड़ा और कोई हुक्म
३२ नहीं * तब उस कातिब ने उसे कहा क्या ख़ूब ऐ उस्ताद तू ने
सच कहा क्यूं कि ख़ुदा एक है उसके सिवा और कोई नहीं
३३ है * और उसे तमाम दिल से और तमाम इद्राक से और तमाम
जान से और तमाम ज़ोर से प्यार करना और हमसाये को ऐसा
जैसा आप को चाहना सब सारी हदियों और क़ुरबानियों से
३४ अफ़ज़ल है * और जब ईसा ने देखा कि उस ने अक़िलानः
जवाब दिया तो उसे कहा कि तू ख़ुदा की ममलुकत से दूर नहीं
और बअ़द उस के किसी ने जुरअत न की कि उस से सवाल करे *
३५ फिर ईसा हैकल में तअ़लीम करते हुए फ़रमाने लगा कि
३६ कातिब क्यूंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का बेटा है * इस
लिये कि दाऊद ने आपही रूहि क़ुदस के कहने से कहा कि
ख़ुदावंद ने मेरे ख़ुदावंद को कहा तू मेरे दहने हाथ बैठा रह

जबतक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांव रखने की चैकी करों *
३७ सो दाऊद तो उसे खुदावंद कहता है फिर वुह उसका बेटा
क्यूंकर है और बड़ी जमाअत खुश होके उस से सुनती थी *
३८ और अपनी नसीहतों में उसने उन्हें कहा कातिबों से हुशियार
करो जो रफ़्तार को लंबे जामे पहन के और बज़ारों में
३९ सलामों को * और मजमओं में सदर जागहों को और ज़ियाफ़तों
४० में सदर मकानों को दोस्त रखते हैं * वे बेओं के घरों को निगलते
और मकर से नमाज़ को तूल देते हैं उन्हें ज़ियादः अज़ाब
४१ होगा * फिर ईसा बैतुलमाल के साम्हने बैठकर देख रहा था
कि लोग बैतुलमाल में पैसे किस तरह डालते हैं चुनांचिः बहुत
४२ जो मालदार थे बहुत डालते थे * तब एक कंगाल बेवः ने
आके दो अद्धियां जो मिल के पैसे की एक चैाथाई होती हैं
४३ उस में डालीं * तब उस ने अपने शागिर्दों को बुलाया और
उन्हें कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि उस कंगाल बेवः ने
उन सब से जिन्हों ने बैतुलमाल में डाला ज़ियादः डाल दिया है *
४४ क्यूंकि सभों ने अपने मालि फ़िराग़ से डाला पर उस ने अपनी
कम बज़ाअत से जो कुछ कि उसका था सब मईशत डाली *

तेरहवां बाब

१ और जब वुह हैकल से बाहर जाता था एक ने उस के शागिर्दों
में से कहा कि ऐ उस्ताद देख ये किस नौअ के पत्थर और
२ कैसी इमारतें हैं * ईसा ने जवाब में उसे कहा कि तू ये बड़ी

इमारतें देखता है यहां पत्थर पर पत्थर न छूटेगा जो गिराया
३ न जावे * और जब वुह कोहि ज़ैतून पर हैकल के मुक़ाबिल
बैठा था पतरस और यअ़कूब और यूहन्ना और अंद्रयास ने
४ चुपके उस से पूछा * हम से कह कि यिह सब कुछ कब होगा
और उसवक़्त का जब यिह सब कुछ पूरा होने लगेगा क्या
५ निशान है * ईसा ने जवाब में उन्हें कहना शुरूअ़ किया
६ होशयार रहो कि तुम्हें कोई फ़रेब न दे * कि बहुतेरे मेरे
नाम से आवेंगे और कहेंगे कि वुह हम हैं और बहुतों को
७ गुमराह करेंगे * और जब लड़ाइयों की बातें और लड़ाइयों की
ख़बरें सुनो मत घबराइयो क्यूंकि उन चीज़ों का वाक़िअ़ होना
८ ज़रूर है पर तमामी हनोज़ न होगी * क्यूंकि उम्मत उम्मत पर
और ममलुकत ममलुकत पर ख़ुरूज करेगी और कितने ही मकानों में
ज़ल्ज़लः आवेगा और काल पड़ेगा और शोरिशें होंगी ये
९ सब दर्दों की इब्तिदा हैं * पर अपने लिये ख़बरदार रहो क्यूंकि
तुम्हें महफ़िलों को और मजमओं को हवालः करेंगे और
तुम पर मार पड़ेगी और तुम हाकिमों और बादशाहों के आगे
मेरे वास्ते हाज़िर किये जाओगे ताकि उन पर गवाही दीजाय *
१० और ज़रूर है कि पहले इंजील की मुनादी सब उम्मतों में की
११ जावे * पर जब तुम्हें लेजावें और हवालः करें फ़िक्र न करो
कि हम क्या कहेंगे और न दूर अंदेशी करो लेकिन जो कुछ तुम्हें
उस घड़ी अ़ता कियाजावे वही कहियो क्यूंकि ये तुम नहीं

१२ से जो कहते हो वल्कि रूहि क़ुद्स है * भाई भाई को और बाप बेटे को क़तल के वास्ते पकड़वायेगा और लड़के मा बाप का
१३ मुक़ाबलः करेंगे और उन्हें मरवा डालेंगे * और मेरे नाम के बाइस से सब तुम्हारे दुश्मन होंगे पर जो कोई कि आख़िर तक
१४ सबर करेगा वही नजात पायगा * पर जिस वक़्त तुम खराब करनेवालों की उस मकरूह चीज़ को जिसका ज़िक्र दानियाल नबी ने किया है देखो कि जहां उसका क़ियाम रवा नहीं क़ाइम
१५ है वुह जो पढ़ता है समझे * तब वे जो यहूदियः में होंगे कोहिस्तान को भागें और वुह जो कोठे पर होगा घर में न उतरे और दाख़िल न हो ता कि अपने घर से कोई चीज़ निकाले *
१६ और जो खेत पर है पीछे न फिरे कि अपनी पोशाक उठा
१७ लेवे * और उन पर जो उन रोज़ों में पेटवालियां हों और
१८ उन पर जो दूध पिलातियां हों अफ़सोस है * और दुआ मांगो
१९ कि तुम्हारा भागना जाड़े में न हो * क्यूंकि उन रोज़ों में ऐसी तसदीअ होगी कि ख़िलक़त की इबतिदा से जो ख़ुदा
२० ने ख़लक़ की अबतक न हुई और न होगी * और अगर ख़ुदावंद उन रोज़ों को कोताह न करता तो एक आदमी नजात नपाता पर मक़बूलों के वास्ते जिन्हें उस ने बरगुज़ीदः
२१ किया है उनरोज़ों को कोताह किया * और उसवक़्त अगर कोई तुम्हें कहे कि देखो मसीह यहां या देखो वहां है
२२ बावर न करो * क्यूंकि झूठे मसीह और झूठे नबी निकलेंगे

७ इसवास्ते कि तुम कंगालों को हमेशः अपने साथ पाओगे और जब कभी तुम चाहोगे उनसे नेकी करसकोगे पर मुझे तुम
८ हमेशः न पाओगे * वुह जो कुछ करसकी सो कर चुकी उस ने सबक़त करके मेरे बदन को दफ़न के लिये मुअत्तर किया *
९ मैं तुम से सच कहता हूं कि तमाम दुनया में जहां कहीं इस इंजील की मुनादी की जायगी यिह भी जो उस ने किया
१० है उस की यादगारी के लिये ज़िक्र किया जायगा * तब यहूदाय असकरयूती जो एक उन बारह में से था सरदारि काहिनों पास
११ गया ता कि उसे उन के हाथ पकड़वा देवे * वे यिह सुन के खुश हूए और उस से रूपे देने का वअदः किया फिर वुह फ़िक्र में हूआ कि किसी तरह क़ाबु पा के उसे पकड़वा दे *
१२ तब ईदि फ़तीर के पहले दिन जब वे फ़सह की क़ुरबानी करते थे उस के शागिर्दों ने उसे कहा तू कहां चाहता है कि हम वहीं
१३ जावें और तेरे फ़सह खाने की तैयारी करें * उस ने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा और उन्हें कहा शहर में जाओ वहां एक शख़्स पानी का घड़ा उठाये हूए तुम से दो चार होगा
१४ उस के पीछे हो लो * जब वुह किसी मकान में दाख़िल होवे तुम उस साहिबि ख़ानः से कहो उस्ताद फ़रमाता है वुह महल
१५ जहां मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह खाऊं कहां है * वुह एक बड़ा बालाख़ानः मफ़रूश और आरास्तः तुम्हें दिखला देगा
१६ वहां हमारे लिये तैयारी करो * तब उस के शागिर्द रहीं हूए

और शहर में आके जैसा उसने उन्हें कहा था वैसा ही पाया
१७ और फ़सह तैयार किया * शाम को वुह उन बारहों के साथ
१८ आया * और जों वे बैठे और खाने लगे ईसा ने कहा तुम से
सच कहता हूं कि एक तुम में से जो मेरे साथ खाता है मुझे
१९ पकड़वा देगा * तब वे कुढ़ने लगे और एक उसे कहने लगा क्या
२० मैं हूं और दूसरा बोला क्या मैं हूं * उस ने जवाब दिया
और उन्हें कहा बारह में से एक जो मेरे साथ तबाक़ में हाथ
२१ डालता है वही वुह है * इब्नि आदम तहक़ीक़ जैसा उसकी
बावत लिखा है जाता है पर उस शख़्स पर जिसके सबब इब्नि
आदम पकड़वाया जाता है वावैला है उस शख़्स के लिये बिहतर
२२ होता अगर वुह ख़ल्क़ न होता * और उन के खाते वक़्त ईसा
ने रोटी उठाई और कलिमए मुतबर्रक कहके तोड़ी और उन्हें
२३ दी और कहा लो खाओ यिह मेरा बदन है * फिर उसने प्यालः
लिया और शुक्र करके उन्हें दिया और उन सब ने उसे पिया *
२४ और उस ने उन्हें कहा कि यिह मेरा यअ़ने नए वसीके का
२५ लोहू है जो बहुतों के लिये बहाया जाता है * मैं तुम से सच
कहता हूं कि मैं शीरए अंगूर जिस दिन तक कि ख़ुदा की
२६ ममलुकत में नया पीऊं कभी न पीऊंगा * तब वे गाने से मज़मूर
२७ पढ़ के कोहि ज़ैतून को गये * और ईसा ने उसे कहा कि तुम
सब आज मेरे हक़ में ठोकर खा जाओगे इसलिये कि यिह
लिखा है मैं गड़रिये को मारूंगा और भेड़ें परागंदः होंगी *

५१ भाग गये * मगर ऐक जवान जो सूती चादर से अपने बदन को छिपाये था उस के पीछे रहा और जवानों ने उसे भी पकड़ा *
५२ पर वुह सूती चादर उन के हाथों में छोड़ कर नंगा गुरेज़ां हूआ *
५३ तब वे ईसा को सरदारि काहिन कने जिस पास सब सरदारि काहिन और मशाइख़ और कातिब जमअ हूऐ थे लेगये *
५४ और पतरस उस के साथ बैठ रहा और आग से अपने तईं
५५ सेंका किया * तब सरदारि काहिनों और सारी महफ़िल ने
५६ ईसा पर गवाही ढूंढी कि उसे जान से मारें पर नपाई * अगरचिः बहुतों ने उसपर झूठी गवाही दी पर उनकी गवाहियां मुवाफ़िक़
५७ न थीं * तब बअज़ों ने उठके उसपर यिह झूठी गवाही दी *
५८ कि हमने उसे कहते सुना है कि मैं इस हैकल को जो दस्तकारी से बनी है ढाटूंगा और तीन दिन में ऐक दूसरी को
५९ दस्तकारी से न बने बिना करूंगा * उसपर भी उनकी गवाही
६० मुवाफ़िक़ न थी * तब सरदारि काहिन ने बीच में खड़े होके ईसा से पूछा क्या तू कुछ जवाब नहीं देता ये तुझ पर क्या गवाही
६१ देते हैं * पर वुह चुप रहा और कुछ जवाब न दिया सरदारि काहिन ने उस से फिर पूछा और उसे कहा क्या तू मसीह
६२ उसका फ़रज़न्द है जो मुसैाजिबुल हम्द है * तब ईसा ने कहा कि मैं वही हूं और तुम इबनि आदम को क़ुव्वत के दहने हाथ बैठे और आसमान से बदलियों पर आते देखोगे *
६३ तब सरदारि काहिन ने अपने कपड़े फाड़े और बोला कि अब

६४ हमें और गवाह् क्या दरकार हैं * तुम ने यिह् कुफ़र सुना तुम को क्या मअ्लूम होता है उन सभों ने फ़तवा दिया कि वुह्
६५ वाजिबुल क़तल है * तब कितने उसपर थूकने और उसका मुंह् ढांपने और उसे घौलें लगाने और कह्ने लगे नबूवत से
६६ ख़बर दे और सब चाकिनों ने हाथ से उसे थपेड़े मारे * और जब पतरस नीचे दलान में था सरदारि काहिन की
६७ लौंडियों में से ऐक वहां आई * और पतरस को तापते देखकर उसपर निगाह् की और कहा कि तू भी ईसाय नासिरी के साथ
६८ था * उसने इनकार से कहा कि मैं नहीं जानता और नहीं समझता तू क्या कह्ती है और बाहर दह्लीज़ पर गया कि
६९ मुर्ग़ ने बांग दी * और वुह् लौंडी उसे फिर देखकर उन से जो
७० हाज़िर थे कह्ने लगी यिह् उन्हीं में से है * उसने फिर इनकार किया और थोड़ी देर पीछे फिर उन्हों ने जो वहां खड़े थे पतरस को कहा यक़ीनन तू उन्हीं में से है क्यूंकि तू जलीली है
७१ और तेरी बोली उन्हीं की सी है * पर वुह् लअ्नत करने और क़समें खाने लगा कि मैं उस शख़्स को जिसका तुम ज़िक्र
७२ करते हो नहीं जानता * और दूसरी बार मुर्ग़ ने बांग दी तब पतरस को वुह् बात जो ईसा ने उसे कही थी याद आई कि उस से पहले कि मुर्ग़ दो बार बांग दे तू तीन बार मेरा इनकार करेगा तब वुह् फूटके रोनेलगा *

पंदरहवां बाब

१ और जों सुबह हुई सरदारि काहिन मशाइख़ और कातिबों को और सारी महफ़िल के साथ मशवरत कर के ईसा को बांधके
२ ले गये * और पीलातूस के हवालः किया पीलातूस ने उस से पूछा क्या तू यहूदों का बादशाह है उस ने जवाब में उसे
३ कहा कि तू तो कहता है * और सरदारि काहिनों ने उस पर
४ बहुत सी फ़रियादें कीं * तब पीलातूस ने उस से फिर पूछा क्यूं तू कुछ जवाब नहीं देता देख वे तुझ पर क्या क्या कुछ
५ गवाहियां देते हैं * तौभी ईसा ने कुछ जवाब न दिया यहांतक
६ कि पीलातूस ने तअज्जुब किया * और वुह उस ईद में जिसे
७ ऐक असीर को वे चाहते थे उनकी ख़ातिर से आज़ाद करता था * सो ऐक शख़्स जिसका नाम बारबास था उन मुफ़सिदों के साथ
८ जिन्हों ने बग़ावत के हंगामे मे ख़ून किया था क़ैद था * तब वुह जमाअत चिल्ला के उस से दरख़्वास्त करने लगी कि जो तेरा
९ मअमूली सलूक है हमसे कर * पीलातूस ने उन्हें जवाब दिया कि आया तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के
१० बादशाह को छोड़दूं * कि वुह जानता था सरदारि काहिनों ने
११ हसद से उसको हवालः किया था * पर सब सरदारि काहिनों ने उस जमाअत को तहरीक किया ता कि वुह उन के लिये बारबास
१२ की आज़ादी इख़्तियार करे * तब पीलातूस ने फिरके उन्हें कहा

पस तुम क्या चाहते हो मैं उसे जिसे तुम यहूदियों का बादशाह
१३ कहते हो क्या करूं * वे फिर चिल्लाये कि उसे सलीब दे *
१४ पीलातूस ने उन्हें कहा कि क्यूं उस ने क्या बदी की है *
१५ तब वे और भी ज़ियादः चिल्लाये कि उसे सलीब दे तब पीलातूस
ने गरोह की रज़ामन्दी चाहकर बरब्बास को उन के लिये छोड़
दिया और ईसा को कोड़े मार के हवालः किया कि सलीब पर
१६ खैंचा जाय * और सिपाही उस को क़सर में यअ्नी दरबार में
१७ लेगये और सब सिपाहियों के ग़ोल को इकट्ठा किया * उन्हों
ने उसे अर्ग़वानी लिबास पहनाया और कांटों का एक ताज सज
१८ के उस के सिर पर रखा * और उसे सलाम करने लगे कि
१९ सलाम ऐ यहूदियों के बादशाह * और वे उस के सिर पर
ठठेरे मारते थे और उस पर थूकते थे और घुटने टेक के उसे
२० सिजदे करते थे * और जब उस से तमस्ख़ुर करचुके तो उस को
बदन से अर्ग़वानी लिबास उतारा और उसीका लिबास उसे
२१ पहनाया और उसे ले चले कि सलीब दें * और एक शख़्स
क़रीनी शमऊन नाम जो इसकंदर और रूफ़ुस का बाप था
देहात से आते हुए उधर से गुज़रा उन्हों ने उसे जबरन
२२ पकड़ा कि उसकी सलीब उठा लेचले * और वे उसे मक़ामि
२३ जलजतः में जिसका तरजमः खोपरी की जगह है लाये * और
२४ शराब मुर मिला के उसे दी कि पिये पर उस ने न पी * और
उन्हों ने उसे सलीब पर खैंचके उस के कपड़ों पर क़ुरअः डाला

२५ कि हरशख़्स कौन सा ले और उन्हें बांट लिया * और तीसरी
२६ साअत थी जब उन्हों ने उसे सलीब दी * और उसकी तुहमत का
किताबः यों रक़म कियागया कि यिह यहूदियों का बादशाह है *
२७ और उन्हों ने उस के साथ दो चोरों को एक को दहने हाथ
२८ और दूसरे को बाएं सलीब पर खेंचा * तब वुह नविश्तः
जो यिह है कि और वुह ख़तकारों में गिना गया पूरा हूआ *
२९ और वे जो उधर से गुज़रते थे सिर धुन के और यिह कहके
उसे मलामत करते थे कि वाह तू जो हैकल को ढाता था और
३० तीन दिन में बनाता था * अपने तईं छुड़ा और सलीब से
३१ उतर आ * इसी तरह सरदारि काहिनों ने भी आपस में
कातिबों से ठट्ठे करते हूए कहा उस ने औरों को छुड़ाया अपने
३२ तईं छुड़ा नहीं सकता * बनी इसराईल का बादशाह मसीह
अब सलीब पर से उतर तो आवे कि हम देखें और ईमान लावें
और वे जो उस के साथ सलीब पर खेंचे गये थे उसे मलामत करते
३३ थे * और जब छठी साअत हूई सारी ज़मीन पर तारीकी छाई
३४ और नवीं साअत तक रही * और नवीं साअत ईसा बड़ी
आवाज़ से चिल्लाया और बोला अलूई अलूई लिमा सबक़तनी
जिसका तरजमः यिह है कि ऐ मेरे ख़ुदा ऐ मेरे ख़ुदा क्यूं तू ने
३५ मुझे अकेला रखा * तब कई उन मेंसे जो वहां खड़े थे यिह
३६ सुन के बोले देखो वुह ईलयास को बुलाता है * और एक ने
दौड़के बादल का एक टुकड़ा सिरके में डूब ही भिगोके एक नलके

पर रखके उसे चुसाया और कहा कि भला आओ हम देखें तो कि
३७ ईलयास आके उसे उतारेगा * तब ईसा ने बड़ी आवाज़ से
३८ चिल्ला कर जान दी * तब हैकल का पर्दः ऊपर से नीचे तक
३९ फट गया * और एक जमअदार ने जो उसके साम्हने खड़ा था
उसका यूं चिल्ला के जान देना देख के कहा कि यिह शख़्स सचमुच
४० ख़ुदा का बेटा था * वहां रंडियां बैठीं थीं जो दूर से देख रही थीं
मरयमि मजदलियः और छोटे यअ़कूब और यूसा की मा मरयम
४१ और सालूमी उन्हीं में थीं * उन्हों ने भी जब वुह जलील में था
उस की पैरवी और ख़िदमत की थी और बहुतसी और रंडियां
४२ थीं जो उस के साथ औरशलीम में आईं थीं * और शाम को
४३ जो सबत पर मुक़द्दम और तहैयः का वक़्त था * यूसुफ़ि अरमती
जो मशीरि मुअ़ज़्ज़ज़ और ख़ुदा की ममलुकत का मुन्तज़िर था
आया उस ने दिलेरी करके पैलातूस पास जाके ईसा की लाश
४४ मांगी * पैलातूस शुबहः से हैरान हुआ कि वुह मरगया और
जमअदार को बुलाके उस से पूछा क्या वुह मुद्दत से मरगया *
४५ उस ने जमअदार से खोज कर के लाश यूसुफ़ को दिला दी *
४६ और उस ने महीन कपड़ा मोल लिया और उसे उतार के उस
कपड़े से कफ़नाया और एक क़बर में जो पत्थर में खोदा गया
था उसे रखा और उस क़बर के मुंह पर एक पत्थर ढलका
४७ दिया * मरयमि मजदलियः और यूसा की मा मरयम ने वुह
मकान जहां वुह गाड़ा गया था देख रक्खा *

सोलहवां बाब

१ और जब सबत का दिन गुज़रा मरयमि मजदलियः और मरयम यअ़क़ूब की मा और सालूमी ने ख़ुश्बू चीज़ें ख़रीद कियां
२ ता कि आवें और उस पर मलें * और सुबह बहुत सबेरे हफ़्ते के पहले दिन सूरज निकलते हूए क़बर पर आईं *
३ और आपस में कहने लगीं कि हमारे लिये उस पथर को
४ क़बर के मुंह पर से कौन ढलकायेगा * और जब उन्हों ने निगाह की तो उस पथर को क़बर पर से ढलकाया हूआ देखा
५ और वुह बहुत बड़ा था * और क़बर में जाके उन्हों ने एक जवान सफ़ेद पैराहन पहने दहनी तरफ़ बैठे हूऐ मुशाहिदः
६ किया और डरगईं * उस ने उन्हें कहा कि हिरासां न हो तुम ईसाय नासिरी को जो सलीब पर खैंचा गया ढूंढतियां हो वुह उठा है वुह यहां नहीं देख यिह जगह जिस में उन्हों
७ ने उसे रखा था * अब तुम जाओ उस के शागिर्दों को और पतरस को कहो कि वुह तुमसे आगे जलील को जाता है तुम
८ उसे जैसा उस ने तुम्हें कहा था वहां देखोगे * वे शिताब गईं और क़बर के पास से भागीं कि वे कांप गईं और हैरानी में गिरिफ़्तार थीं और अज़ बसकि डर गईं उन्हों ने किसी से कुछ
९ न कहा * फिर वुह हफ़्ते के पहले रोज़ सबेरे उठ कर पहले मरयमि मजदलियः को जिस पर से उस ने सात देव दूर किये
१० थे दिखाई दिया * उस रंडी ने जाके उस के रफ़ीक़ों से जो ग़म

११ करते और रोते थे कहा * उन्हों ने यिह सुन कर कि वुह
१२ जीता है और उसे दिखलाई दिया बावर न किया * उन के
बऊद वुह दूसरी सूरत में उन में से दो को जिस वक़्त वे चलते थे
१३ और खेतों की तरफ़ जाते थे नज़र पड़ा * उन्हों ने जाके बाक़ी
लोगों को कहा और उन्हों ने उन की बातें भी बावर न कीं *
१४ आख़िर को वुह उन ग्यारहों को जब वे बैठे थे दिखाई दिया
और उन की बेऊतिक़ादी और सख़्त दिली पर मलामत की
क्यूंकि उन्हों ने उन की बातों को जिन्हों ने उसे उस के जी
१५ उठने के बऊद देखा था बावर न किया * और उन्हें इरशाद
फ़रमाया कि तुम तमाम दुनया में हर मख़लूक़ के आगे इंजील की
१६ मुनादी करो * जो कि ईमान रखता है और इस्तिबाग़ दिया
गया है नजात पावेगा और वुह जो ईमान नहीं रखता उस पर
१७ अज़ाब का हुक्म किया जायगा * और वे जो ईमान लावेंगे उन के
साथ ये अलामतें होंगी कि वे मेरे नाम से देवों को भगावेंगे
१८ और नई ज़बानें बोलेंगे * सांपों को उठालेंगे और अगर वे
कोई कुशिन्दः चीज़ पीवेंगे उन्हें ज़रर न करेगी वे बीमारों पर
१९ हाथ रखेंगे वे चंगे हो जावेंगे * ख़ुदावंद उन्हें यिह फ़रमाके
२० आसमान पर जाता रहा और ख़ुदा के दहने हाथ बैठा * फिर
उन्हों ने हर जगह जाकर मुनादी की और ख़ुदावंद उन की
मदद करता था और सुख़न को मुऊजिज़ों से जो उस के साथ थे
साबित करता था आमीन *

लूक़ा की इंजील

पहला बाब

१ ए साउफ़लस फ़ाज़िल अज़्बस कि बहुतों ने कमर बांधी
२ कि हमारे यक़ीनियात को तरतीब से तहरीर करें * जैसा कि
उन्हों ने जो इब्तिदा से सुख़न के देखने वाले और ख़िदमत गुज़ार
३ थे हमसे बयान किया * मुनासिब जानागया कि मैं भी सिरे से
उनसब की तहक़ीक़ कुल्ली करके कमाल दुरुस्ती से तेरे लिये
४ क़लम बंद करूं * ता कि तू उन बातों की जान को जो तुझे
५ तअ़लीम दीगई हैं जान जाय * यहूदियः के बादशाह
हीरूदीस के अ़स्र में अबया की तफ़रीक़ से ज़करिया नाम एक
काहिन था उस की जोरू हारून की बेटियों में से थी और
६ उसका नाम अलीसबा था * वे दोनों ख़ुदा के हुज़ूर रास्तबाज़
और ख़ुदावंद के सारे हुक्मों और क़ानूनों पर बे ऐब चलने

७ वाले थे * उनके फ़रज़न्द न था क्यूंकि अलीसबा बांझ थी और दोनों
८ कुहन साल थे * ऐसा हूआ कि वुह ख़ुदा के हुज़ूर अपनी
९ तफ़रीक़ की तरतीब पर कहानत का कारबार करता था * और
कहानत के मअमूल के मुवाफ़िक़ उसकी नौबत पहुंची कि
१० ख़ुदावंद की हैकल में दाख़िल होके ख़ुशबूई जलावे * और
लोगों का सारा मजमअ ख़ुशबूई जलते वक़्त बाहर दुआ करता
११ था * उस दम उसे ख़ुदावंद का फ़िरिश्तः ख़ुशबूई जलाने के मक़ाम
१२ की दहनी तरफ़ खड़ा हूआ दिखाई दिया * ज़करिया उसको
१३ देखकर घबराया और उसे डर लगी * तब फ़िरिश्ते ने उसे कहा
कि ऐ ज़करिया तू मत डर कि तेरी अर्ज़ क़बूल हूई और
तेरी जोरू अलीसबा तुझ से एक बेटा जनेगी तू उस का नाम
१४ यहया रख * और तुझे ख़ुशी और ख़ुर्रमी होगी और बहुत
१५ से उसकी तवल्लुद से शाद होंगे * क्यूंकि वुह ख़ुदावंद की नज़र
में बुज़ुर्ग होगा और न मैं और न कोई निशे की चीज़ पीएगा
और अपनी मा के पेट से जुदा होते हूए रूहि क़ुद्स से मअमूर
१६ किया जायगा * और बनी इसराईल में से बहुतों को उन के
१७ ख़ुदा ख़ुदावंद की तरफ़ फिरेगा * और वुह उस के हुज़ूर ईलयास
की रूह और क़ुव्वत से चलेगा ता बापों के दिलों को फ़रज़न्दों की
तरफ़ और ना फ़रमां बरदारों को रास्तबाज़ों की सिरिश्त की तरफ़ फेर
१८ के ख़ुदावंद के लिये एक कमरबस्तः क़ौम दुरुस्त करे * तब
ज़करिया ने फ़िरिश्ते को कहा मैं उसका क्यूंकर यक़ीन करूं

१९ कि मैं बूढ़ा और मेरी जोरू कुहन साल है * फ़िरिश्ते ने जवाब में उसे कहा मैं जिबरईल हूं जो खुदा के ज़ूरू हाज़िर रहताहूं और भेजागया हूं कि तुझ से कहूं और यिह खुशख़बर तुझे
२० पहुंचाऊं * और देख तेरी ज़बान बंद होजायगी और तू जिस दिन तक कि ये चीज़ें वाक़िअ नहों बोल नसकेगा इसलिये कि तूने मेरी बातें जो अपने वक़्त पर पूरी होंगी बावर नकीं *
२१ और लोग ज़करिया के मुन्तज़िर थे और तअज्जुब करते थे कि
२२ उस ने हैकल में देर की * वुह बाहर आके उन से बोल न सका तब उन्हों ने दरयाफ़ किया कि उसने हैकल में कुछ ख़ियाल सा
२३ देखा वुह उन से इशारे करता था और गूंगा रह गया * और यों हूआ कि उस की ख़िदमत के दिन तमाम हूए वुह अपने
२४ घर गया * और उन रोज़ों के बअद उसकी जोरू अलीसबा पेट से हूई उस ने पांच महीने तक अपने तईं यिह कह के
२५ छिपाया * कि खुदावंद ने जिन दिनों में मुझ पर नज़र की ता कि ख़ल्क़ के आगे मेरी शरमिंदगी बातरफ़ करे मुझ से यूं सुलूक
२६ किया * और छठे महिने जिबरईल फ़िरिश्तः खुदा की तरफ़ से
२७ जलील के एक शहर में जिसका नाम नासिरः था * एक बाकिरः पास जो यूसुफ़ नामीदः एक मर्द से जो दाऊद के घराने से था मनसूब हूई थी भेजागया उस बाकिरः का नाम
२८ मरयम था * उस फ़िरिश्ते ने उस पास आके कहा कि ऐ मक़बूलः
२९ सलाम खुदावंद तेरे साथ तू रंडियों में मुबारक है * वुह उसे

देखके उस के कलाम से मुज़्तरिब हुई और सोचने लगी कि
३० यिह कैसा सलाम है * तब फ़िरिश्ते ने उसे कहा कि ऐ मरयम
३१ मत डर कि तू ख़ुदा के पास मक़्बूल हुई * और देख तू पेट से
होगी और बेटा जनेगी और उस का नाम ईसा रखेगी *
३२ वुह बुज़ुर्ग होयेगा और अल्लाह तआला का फ़रज़न्द कहलायगा
३३ और ख़ुदावंद ख़ुदा उस के बाप दाऊद का तख़्त उसे देगा * और
वुह अबद तक यअ़क़ूब के घराने की सल्तनत करेगा और उसकी
३४ सल्तनत की इन्तिहा न होगी * तब मरयम ने फ़िरिश्ते से कहा यिह
३५ क्यूंकर होगा हालांकि मैं मर्द को नहीं जानती * फ़िरिश्ते ने
जवाब दिया और उसे कहा कि रूहि क़ुद्स तुझ पर नाज़िल
और तुझ पर अल्लाह तआला की क़ुद्रत का साया होगा
इसलिये वुह मौलूदि मुक़द्दस जो तुझ से पैदा होगा ख़ुदा का
३६ बेटा कहलायेगा * और देख तेरी रिश्तःदार अलीसबा को भी
बुढ़ापे में बेटेका हमल है और यिह उस का जो बांझ कहलाती
३७ थी छठा महीना है * कि ख़ुदा के आगे कोई चीज़ नामुमकिन
३८ न निकलेगी * मरयम ने कहा कि देख ख़ुदा की बांदी तेरे
कहने के मुवाफ़िक़ मेरे लिये होवे तब फ़िरिश्तः उस पास से
३९ जाता रहा * और उन्हीं दिनों में मरयम उठ कर शिताबी से
४० कोहिस्तान में यहूदा के ऐक शहर को गई * और ज़करिया के
४१ घर में दाख़िल होके अलीसबा को सलाम किया * और यों
हूआ कि अलीसबा ने जो मरयम का सलाम सुना लड़का

उस के पेट में उछला और अलीसबा रूहुलक़ुद्स से मअमूर
४२ हो गई * और वुह बलंद आवाज़ से चिल्लाके बोली कि औरतों में
४३ तू मुबारक है और तेरे पेट का फल मुबारक है * और मेरे
लिये यिह क्यूंकर हूआ कि मेरे ख़ुदावंद की मा मुझ पास आई *
४४ कि देख तेरे सलाम की आवाज़ ज्योंहीं मेरे कानों तक पहुंची लड़का
४५ मेरे पेट में ख़ुशी से उछल पड़ा * और मुबारक वुह है जो ईमान
लाई कि उन चीज़ों की जो ख़ुदा की तरफ़ से उसे कही गईं
४६ तकमील होगी * मरयम ने कहा कि मेरी जान ख़ुदा की तमजीद
४७ करती है * और मेरी रूह मेरे नजात देनेवाले ख़ुदा से
४८ शादमान हूई * कि उस ने अपनी बांदी की आजिज़ी पर
नज़र की इसलिये कि देख इस दम से सारे ज़माने के लोग
४९ मुझको फ़र्ख़ुंदः कहेंगे * चूंकि उस ने जो क़ादिर है मुझ
५० पर बड़े इह्सान किये हैं और उसका नाम पाक है * और
उस की रह्मत उन पर जो उस से डरते हैं नसलन बाद नसल है *
५१ उस ने अपने हाथ का ज़ोर दिखाया और उनको जो अपने
५२ तईं आलीशान जानते हैं परेशान किया * उसने सरदारों को
५३ कुर्सियों से उतार दिया और पस्तों को बलंद किया * उस ने
भूखों को नफ़ीस चीज़ों से सेर किया और दौलतमन्दों को ख़ाली
५४ हाथ भेजा * उसने अपनी रह्मत की यादगारी के लिये (५५) जैसा
उस ने हमारे आबा इब्राहीम और उस की नसल को जो
अबद तक रहेगी कहा अपने बंदः इसराईल को थाम लिया *

५६ और मरयम क़रीब तीन महीने के उस के साथ रही फिर
५७ अपने घर को आई * अब अलीसबा के जन्ने के दिन पूरे हूए
५८ और वुह बेटा जनी * और उस के हमसायों और ख़ेशों ने
सुन कि ख़ुदावंद ने उसे बड़ी निअ़मत बख़्शी और उन्हों ने उसे
५९ मुबारक बादी दी * और यूं हूआ कि वे आठवें रोज़ लड़के का
ख़तनः करने आये और उस का नाम ज़करिया जो उसके बाप
६० का था रखने लगे * तब उस की मा ने जवाब दिया और कहा कि
६१ नहीं बल्कि उसका नाम यहया रखा जावे * उन्हों ने उसे कहा
कि तेरे घराने में ऐसा कोई नहीं जिसका यिह नाम हो *
६२ तब उन्हों ने उस के बाप की तरफ़ इशारः किया कि वुह उस का
६३ नाम क्या रखा चाहता है * उस ने तख़्ती मंगाके लिखा और
६४ कहा कि यहया उस का नाम है * तब वे सब मुतअ़ज्जिब हूए
और फ़िलफ़ौर उस का मुंह और ज़बान भी खुली और उस ने
६५ गोया होकर ख़ुदा की सिताइश की * तब उन्हें जो उन के गिर्द
पेश रहते थे ख़ौफ़ आया और उन सब बातों का यहूदियः के
६६ तमाम कोहिस्तान में चरचा हूआ * और जो कोई सुनता था
अपने दिल में यिह अन्देशः करता था कि यिह किस तौर का
६७ लड़का होगा कि ख़ुदावंद का हाथ उस पर था * और उस का
बाप ज़करिया रूहि क़ुद्स से मअ़मूर हूआ और नबुव्वत से कि
६८ बोला * वुह ख़ुदावंद जो इसराईल का ख़ुदा है हमद के लाइक़ है
६९ कि उस ने अपने लोगों पर नज़र कर के ख़लासी बख़्शी * और हमारे

लिये नजात का सींग अपने बंदः दाऊद के घराने से बरपा किया *
७० और जैसा उस ने अपने पाक नबियों की मअ़रिफ़त से जो
७१ इबतिदाय आ़लम से होते आये कहा * हमको अपने दुशमनों
से और उन सब के हाथ से जो हम से बैर रखते हैं ख़लासी
७२ बख़शी * ता कि वुह अपनी रहमत को जो हमारे आबा पर है
७३ कामिल करे और अपने मुक़द्दस अ़हद को याद रखे * यअ़ने
७४ क़सम को जो उस ने हमारे बाप इबराहीम से की * कि वुह
यिह हमें देगा कि हम अपने दुशमनों के हाथ से नजात पाके *
७५ उस के आगे पाकी और सलाह से जिस दिन तक हम जियें बेख़ौफ़
७६ उस की बंदगी करेंगे * और ऐ लड़के तू अल्लाह तआ़ला का
नबी कहलायेगा इसलिये कि तू ख़ुदावंद के आगे उस की राहों को
७७ दुरुस्त करता चलेगा * ता कि ख़बर दे कि उस के लोगों को
७८ गुनाहों की बख़शिश के सबब से नजात मिली * यिह हमारे
ख़ुदा की दरदमन्दी और रहमत से है जिस के सबब तुलूअ़ की
७९ रोशनी बलंदी से हमतक पहुंची * ता कि सबको जो तारीकी
और मर्ग के साये में बैठे हैं नूर बख़शे के हमारे क़दम को
८० सलामती की राह में पड़ने दे * और लड़का बढ़ता गया और
उस की रूह में क़ुव्वत पैदा हूआ की और वुह जिस दिन तक कि
बनी इसराईल को दिखाई दिया जंगलों में रहा किया *

दूसरा बाब

१ और उस ऐय्याम में यूं वाक़िअ़ हूआ कि क़ैसर और गुस्तुस

का फ़रमान निकला कि सारी बस्ती के लोगों के नाम लिखे जावें *
२ और उस इस्म नवीसी की जिस वक़्त कूरेनियूस सूरिया का
३ हाकिम था इब्तिदा हुई * तब हर एक अपने अपने शहर को
४ नाम लिखाने चला * यूसफ़ भी इसलिये कि वुह दाऊद के
क़बील: और घराने से था जलील: और नासिर: के शहर से
यहूदिय: को और दाऊद के शहर को जो बैत लहम कहलाता
५ है गया * ता कि अपनी मंगेतर मरयम के साथ जो पेट से थी
६ नाम लिखावे * और उन के वहां होते हुए यूं हुआ कि
७ उस के जनने के दिन पूरे हुए * और अपना पहलौठी का
बेटा जनी और उस को कपड़े में लपेट के खिरकी में रखा क्यूंके
८ उन को जगह सरा में न थी * उस मुल्क में गड़रिये थे जो
मैदान में रहते थे और रात को अपने गल्ले की निगाहबानी करते थे *
९ देखो कि ख़ुदावंद का फ़िरिश्त: उन पर नाज़िल हुआ और
ख़ुदा का नूर जो उन के चौगिर्द चमका वे निहायत डर गये *
१० और फ़िरिश्ते ने उन्हें कहा कि हिरासां न हो इसलिये कि देखो
मैं तुम्हें एक बात की जो सब के लिये बड़ा मुज़्द: है ख़बर
११ देता हूं * कि आज दाऊद के शहर में तुम्हारे लिये एक
१२ बचानेवाला पैदा हुआ वुह मसीह ख़ुदावंद है * और तुम्हारे
लिये यही पता है कि तुम उस लड़के को कपड़े में लपटा
१३ खिरकी में रखा हुआ पाओगे * और नागाह उस फ़िरिश्ते के
साथ आस्मानी लश्कर का एक गरोह ख़ुदा की सिताइश करता

१४ और कहता हुआ ज़ाहिर हुआ * कि हम्द दरजिः आला में खुदा को और ज़मीन पर सलामती और आदमियों की
१५ मक़बूलियत होवे * और यूं हुआ कि जों फ़िरिश्ते उन पास से आसमान पर गये गड़ड़ियों ने आपस में कहा कि आओ अब बैत लहम तक जाएं और उस बात को जो वाक़िअ हुई है जिसकी
१६ खुदावंद ने हमको इत्तिलाअ दी देखें * तब वे जल्द आये और मरयम और यूसुफ़ को और लड़के को खिरकी में पड़ा
१७ हुआ पाया * जब वे देख चुके तो उन बातों का जो लड़के के
१८ हक़ में उन्हें कही गई थीं शुहरः किया * और जिस जिस ने सुना उन बातों से जो गड़रियों ने उन्हें कहीं तअज्जुब किया *
१९ पर मरयम ने उन सब बातों को अपने दिल में एकजा कर के
२० हिफ़्ज़ किया * और गड़रिये उन सब चीज़ों के वास्ते जो उन्हों ने सुनीं और मुताबिक़ देखीं खुदा की हम्द और
२१ सिताइश करते हुए फिर रवानः हुए * और आठ दिन के बअद जब लड़के का ख़तनः ज़रूर हुआ उस का नाम ईसा रखागया कि फ़िरिश्ते ने पेश्तर उस से कि वुह पेट में पड़े
२२ उस का यिह नाम रखा था * और जब उन के ज़ाहिर होने के दिन जैसा कि मूसा की शरीअत में है कामिल हुए वे उस लड़के को औरशलीम में लाये ता कि खुदावंद के आगे
२३ हाज़िर करें * चुनांचिः खुदावंद की शरअ में लिखा है कि जो फ़रज़न्द नरीनः कि पहलौंठा है खुदा की नज़र किया

२४ जायगा * और ता कि शरीअति इलाही के हुक्म के मुवाफ़िक़ कुमरी का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे क़ुरबानी करें *
२५ और देखो कि औरशलीम में शमऊन नाम एक शख़्स था जो रास्तबाज़ और परहेज़गार और इसराईल की तसल्ली का
२६ मुन्तज़िर था और रूहि क़ुद्स उसपर था * उस को रूहि क़ुद्स ने ख़बर दीथी कि वुह् जबतक कि ख़ुदावंद के मसीह् को
२७ न देखले मौत को न देखेगा * वुह् रूह् की हिदायत से हैकल में आया और जिस वक़्त कि मा बाप उस लड़के ईसा को अंदर लाते थे ता कि उस के लिये शरअ़ के मअ़मूल के मुवाफ़िक़
२८ अमल करें * उस ने उसे अपने बांहों पर उठा लिया और
२९ ख़ुदा की सिताइश करके कहा * कि ऐ मख़दूम अब अपने बंदः को तू रूख़सत दिया चाहता है कि तेरे सख़ुन के मुवाफ़िक़
३० सलामत जाय * कि मेरी आंखों ने तेरी नजात मुशाहिदः की
३१ वही नजात * जो तूने सारी ख़िलक़त के आगे मुहैया
३२ की है * जो उम्मतों की रोशनी के लिये एक नूर और तेरे
३३ बनी इसराईल के लिये जलाल है * तब यूसुफ़ और उस की मा उन बातों से जो उस के ह़क़ में कही जाती थीं तअ़ज्जुब
३४ में थे * और शमऊन ने उन्हें मुबारकबाद दी और उसकी मा मरयम को कहा कि देख यिह बहुतों के गिरने और उठने के लिये इसराईल में और मुख़ालफ़त की अलामत के वास्ते
३५ पड़ा हूआ है * हां तलवार तेरी जान से भी गुज़र जायगी ता कि

३६ बहुतेरे दिलों के अंदेशे आश्कारा हो जाएं * और हन्ना नाम फ़ानूईल की बेटी ऐक नबीयः थी जो आशीर की क़ौम से
३७ और बहुत बुहन साल थी * और अपने कुंआर पने से सात बरस तक ऐक शौहर के साथ गुज़रान किया को और बरस चौरासी ऐकले रंड थी वुह हैकल से जुदा नहुई बल्कि नमाज़ और रोज़ों से
३८ रात दिन ख़ुदा की बंदगी करती रही * उस ने उसी वक़्त आकर ख़ुदावंद तआला का शुक्र किया और उन सब को जो औरशलीम में
३९ ख़लासी के मुन्तज़िर थे उस के लिये कहा * और जब वे ख़ुदावंद की शरअ के मुवाफ़िक़ सब काम करचुके तो जलील
४० में अपने शहरि नासिरः को गये * और लड़का बढ़ता गया और रूह में क़ुव्वत पैदा हुई हिकमत से भर गया
४१ और ख़ुदा की इनायत उसपर थी * उस के मा बाप बरस बरस
४२ ईदि फ़सह में औरशलीम को जाते थे * और जब वुह बारह बरस का हुआ वे ईद के दस्तूर के मुवाफ़िक़ औरशलीम
४३ को गये * और जबतक वे उस मुद्दत को पूरा करके फिरे वुह लड़का ईसा औरशलीम में रहा और यूसुफ़ और उसकी
४४ मा ने न जाना * लेकिन वे गुमान करके कि वुह क़ाफ़िले में है ऐक दिन की राह गये और उसे ख़्वेशों और जान पहचानों
४५ में ढूंढा * और उसे न पाकर उसकी तलाश में औरशलीम
४६ को फिरे * और यूं हुआ कि उन्हों ने तीनरोज़ पीछे उसे हैकल में मुअल्लिमों के बीच बैठे हुऐ उनकी सुनते और उनसे

४७ सुवालात करते हूए पाया * और जो जो उसकी सुनते थे
४८ उसकी फ़हमीद और जवावों से दंग थे * तब वे उसे देख के
हैरान हूए और उस की मा ने उसे कहा कि लड़के किसलिये
तूने हमसे ऐसा सलूक किया देख तेरा बाप और मैं कुढ़ते
४९ हूए तुझे ढूंढते थे * उस ने उन्हें कहा क्यं तुम मुझे ढूंढते
थे क्या तुम नजानते थे कि मुझे अपने बाप का काम करना
५० ज़रूर है * वे उस बात को जो उस ने उन्हें कही न
५१ समझे * और वुह उन के साथ रवानः होकर नासिरः में
आया और उन के ताविअ रहा और उस की मा ने ये सब
५२ बातें अपने दिल में रखीं * और ईसा ने हिकमत और
क़ामत और ख़ुदा की और ख़ल्क़ की इनायत में तरक़्क़ी की *

तीसरा बाब

१ अब तीबरयूस क़ैसर के जुलूस के पंदरहवें बरस जब बनतूस
बीलातूस यहूदा का हाकिम और हीरूदीस रुबअ जलील
का फ़रमांरवा और उसका भाई फ़ैलबूस रुबअ ऐतूरियः और
मुल्कि तरखूना का फ़रमां और लूसनिया रुबअ अबीलनिया
२ का फ़रमान फ़रमा था * जिस वक़्त हना और क़ियाफ़ः सरदारि
काहिन थे ख़ुदा का कलाम बियाबान में यहया बिनि ज़करिया
३ को पहुंचा * और वुह अर्दन के सारे अतराफ़ में आके
गुसलि तावः की मुनादी गुनाहों की बख़शिश के लिये करता रहा *
४ चुनांचिः इशइया नबी के कलाम के दफ़्तर में लिखा है कि

एक पुकारने वाले की सदा बियाबान में है कि तुम ख़ुदावंद की
५ राह को बनाओ और उस के तरीक़ों को सीधा करो * हरएक
ज़मीन जो ख़ाली है भरी जायगी और हर कोह ओ करेवः
पस्त किया जायगा और टेढ़ी जागहें सीधी की जाएंगी और
६ नाहमवार राहें बराबर बनेंगी * और हरएक तन ख़ुदा की राहि
७ नजात को देखेगा * तब उस ने जमाअतों को जो उस से इस्तिबाग़
पाने निकली थीं कहा कि ऐ सांपों की नस्ल तुम्हें किसने
८ आगाह किया कि ग़ज़बि आयंदे से भागो * मेवे तौबः के
मुवाफ़िक़ लाओ और अपने दिलों में मत कहो कि इबराहीम
हमारा बाप है कि मैं तुम्हें कहता हूं ख़ुदा क़ादिर है कि
९ इबराहीम के लिये इन पत्थरों से लड़के निकाले * और अब
दरख़्तों की जड़ पर कुलाड़ी भी धरी है सो जो दरख़्त कि
अच्छे फल नहीं लाता काटा जाता और आग में डाला जाता है *
१० तब लोगों ने उस से पूछा कि फिर हम क्या करें * (११) उस
ने जवाब दिया और उन्हें कहा जिस शख़्स पास दो जामे हों
उस के साथ जिस पास कुछ नहीं बांट ले और जिस पास
१२ खाने को हो वुह भी ऐसाही करे * तब ख़िराज लेनेवाले भी
आये ता कि इस्तिबाग़ पावें और उसे कहा कि ऐ मुअल्लिम
१३ हम क्या करें * उस ने उन्हें कहा कि अपने दस्तूर से जो
तुम्हारे लिये मुक़र्रर कियागया है ज़ियादः तलबी न करो *
१४ फिर सिपाहियों ने भी उस से यही पूछा कि और हम क्या

करें उस ने उन्हें कहा किसी पर न जब्र करे न झूठ तुहमत
१४ करे और अपने मुवाजिब पर क़नाअत करो * और जिस वक़्त
१५ कि लोग मुन्तज़िर थे और सब अपने दिल में यह्या के
हक़ में फ़िक्र करते थे कि आया वुह मसीह है या नहीं *
१६ यह्या ने पहले से उन सबको कहा कि मैं तो तुम्हें
पानी से गुसलि इस्तिबाग़ देता हूं लेकिन मुझ से क़बीतर
आता है कि मैं जिस के जूतों का तसमः खोलने के लाइक़
नहीं वुह तुम्हें रूहि क़ुद्दस और आग से इस्तिबाग़ देगा *
१७ उसके हाथ में छाज है वुह अपने खलियान को खूबसाफ़
करेगा और गेहूओं को अपने खत्ते में जमअ करेगा
१८ और भूसी को आतशि नाफ़िसुर्दिदः से जलायेगा * और वुह
अपनी नसीहतों में और बहुत सी चीज़ों की लोगों को तअ़लीम
१९ दिया करता था * पर हाकिमि रुबअ हीरूदीस ने जिसे यह्या
उस बाइस से कि वुह अपने भाई फ़ैलबूस की जोरू हीरूदिया
को रखता था और बाक़ी सब बुराइयों के सबब से जो उस ने
२० की थीं मलामत करता था * सब पर यिह ज़ियादती की
२१ कि यह्या को क़ैदख़ाने में बंद किया * और जब सब लोग
इस्तिबाग़ पाचुके और ईसा ने भी इस्तिबाग़ पाया और दुआ
२२ करने लगा ऐसा हूआ कि आसमान खुल गये * और रूहि क़ुद्दस
जिसम की सूरत में कबूतर की मानंद उस पर उतरा और
आसमान से आवाज़ हूई कि तू मेरा प्यारा बेटा है तुझ से मैं

२३ राज़ी हूं * तब ईसा की उमर क़रीब तीस बर्स के होने लगी और जैसा कि गुमान किया जाता था वुह बेटा यूसुफ़ का था
२४ बेटा हली का * बेटा मतसा का बेटा लोई का बेटा मल्की का
२५ बेटा याने का बेटा यूसुफ़ का * बेटा मतता का बेटा अमूस का
२६ बेटा नाहूम का बेटा हसले का बेटा बग़ी का * बेटा मात का बेटा मतता का बेटा शमई का बेटा यूसुफ़ का बेटा यहूदा का *
२७ बेटा यूहीन का बेटा रसा का बेटा ज़ोर बाबुल का बेटा नरी
२८ का * बेटा मलके का बेटा अद्दी का बेटा क़ूसम का बेटा अलमूद
२९ का बेटा ईर का * बेटा यूसा का बेटा अलआज़र का बेटा यूरम का
३० बेटा मतीता का बेटा लूई का * बेटा शमऊन का बेटा यहूदा
३१ का बेटा यूसुफ़ का बेटा यूनन का बेटा अलीक़ीम का * बेटा मलिया का बेटा माने का बेटा मतता का बेटा नातन का बेटा
३२ दाऊद का * बेटा ऐसे का बेटा ऊबीद का बेटा बग़र का बेटा
३३ सलमून का बेटा नहसून का * बेटा अमनादाब का बेटा अरम का
३४ बेटा हसरून का बेटा फ़ारिज़ का बेटा यहूदा का * बेटा यअक़ूब का बेटा इसहाक़ का बेटा इबराहीम का बेटा तरह का बेटा
३५ नाहूर का * बेटा सारूग़ का बेटा अरग़ू का बेटा फ़ालिक़ का
३६ बेटा अबर का बेटा सलह का * बेटा क़ीनान का बेटा अरफ़कशद
३७ का बेटा साम का बेटा नूह का बेटा लामहिन का * बेटा मतूशलह का बेटा ख़नूख़ का बेटा यारद का बेटा महलाईल का बेटा क़ीनान
३८ का * बेटा अनूश का बेटा शीस का बेटा आदम का बेटा ख़ुदा का *

चैथा बाब

१ और ईसा रूहि क़ुद्स से मअमूर हो के अर्दन से फिर
२ और रूह की हिदायत से बियाबान में गया * और
चालीस दिन तक इबलीस उसे इम्तिहान करता रहा उन रोज़ों
में उस ने कुछ नखाया जब वे दिन तमाम हूए आख़िर को
३ भूका हूआ * तब इबलीस ने उसे कहा कि अगर तू
ख़ुदा का बेटा है तो उस पत्थर को कह कि रोटी बन जाय *
४ ईसा ने उसे जवाब दिया और कहा यिह लिखा है कि
आदमी न फ़क़त रोटी से बल्कि ख़ुदा के हर सख़ुन से जीता
५ रहेगा * इबलीस ने उसे एक ऊंचे पहाड़ पर लेजा कर
६ दुनया की सारी ममलुकतें एक दम में दिखलाईं * और
इबलीस ने उसे कहा कि में यिह सारा इख़्तियार और उन
की दौलत तुझे दूंगा क्यूंकि यिह मुझ को सैांपा गया है जिस
७ किसी को में चाहूं उसे दूं * पस अगर तू मुझे सिजदः
८ करे सब तेरा हो जायगा * ईसा ने जवाब दिया और उसे
कहा कि ऐ शैतान जा मेरे साम्हने से इसलिये कि लिखा
यिह है कि तू अपने ख़ुदावंद को जो तेरा ख़ुदा है सिजदः
९ कर और तू सिर्फ़ उसी की बंदगी कर * तब वुह उसे औरशलीम
में लाया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उसे कहा
अगर तू ख़ुदा का बेटा है तो अपने तईं यहां से गिरादे *
१० इसलिये कि यिह लिखा है कि वुह तेरे लिये अपने फ़िरिश्तों

११ का फ़रमायगा कि तेरी ख़बरदारी करें * और यिह कि वे तुझे हाथों पर उठालेंगे ता न होवे कि तेरे पांव को कभू पत्थर से
१२ ठेस लगे * ईसा ने जवाब में उसे कहा कि यूं हुक्म किया गया है कि तू ख़ुदावंद को जो तेरा ख़ुदा है मत आज़्मा *
१३ जब इबलीस सब तरह की आज़्माइश कर चुका तो ऐक
१४ मुद्दत तक उस से दूर रहा * और ईसा रूह की गरदिश से जलील को फिरा और तमाम गिर्द नवाह् में उसका शुहरः
१५ हूआ * उन के मजमओं में तअ़लीम देता था और सब
१६ उस की सिताइश करते थे * पर वुह नासिरः को जहां उस ने परवरिश पाई थी आया और अपने दस्तूर पर सबत के रोज़
१७ मजमअ में जाके तिलावत को खड़ा हूआ * और इशअया नबी की किताब उसे दी गई उस ने किताब को खोल कर वुह
१८ मक़ाम जहां यिह लिखा हूआ था पाया * कि ख़ुदावंद की रूह ने जिस काम के लिये मुझे मसीह किया है वुह उस काम के लिये मुझ में है उस ने मुझे भेजा है कि मिसकीनों को बशारत दूं और दिल शिकस्तों को चंगा करूं असीरों को रिहाई की और अंधों को बीनाई की ख़बर दूं और उन्हें जो
१९ कोफ़्तः हैं रहाई बख़्शूं * और ख़ुदावंद के साल मक़बूल की
२० मुनादी करूं * फिर उसने किताब गर्दानी और ख़ादिम को सौंप कर बैठ गया और वे सब जो मजमअ में थे टकटकी बांध के
२१ उसे देख रहे थे * तब वुह उन्हें कहने लगा कि आज

२२ यिह नविश्तः तुम्हारे मौजूद होनेसे कामिल हूआ * और
सभ ने उस के लिये गवाही दी और उस की दिल चस्प
बातों से जो उस के मुंह से निकलती थीं दंग होरहे थे और
२३ बोले क्या यिह यूसुफ़ का बेटा नहीं * उस ने उन्हें कहा
कि तुम यक़ीनन मुझे यिह मसल कहोगे कि ऐ तबीब अपने
तई शिफ़ा दे जो काम कि हम ने सुना है कि कुफ़रनाहूम
२४ में किया यहां अपने वतन में भी वही कर * और उस ने
कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि कोई नबी अपने वतन में
२५ मक़बूल नहीं होता * पर मैं तुम से सच कहता हूं कि
ईलयास के अहद में जब आसमान तीन बरस छः महीने
बंद था यहांतक कि सारी ज़मीन में बड़ा काल पड़ा बहुत सी
२६ बेवाएं बनी इसराईल ही में थीं * लेकिन ईलयास उन में से किसी
के पास न भेजागया मगर सैदा सरफ़ता में एक बेवः रंडी के
२७ पास * और अलीशअ नबी के अहद में इसराईल के बीच
बहुत से कोढ़ी थे पर उन में से सिवा नुअमानि सुरयानी
२८ के कोई चंगा न किया गया * तब वे सब मजमअ में उन बातों
२९ के सुनते ही ग़ुस्से से भरगये * और उठकर उसे शहर से
बाहर करके उस पहाड़ के किनारे पर जिस पर उनका शहर
बिना किया गया था लेचले ता कि उसे चोटीपर से गिरा दें *
३० लेकिन वुह उन के बीच में से निकल के जाता रहा *
३१ और कुफ़रनाहूम में जो जलील का शहर है आके हर

३२ हफ़े को उन्हें तअलीम दिया किया * और वे उस की तअलीम से दंग थे इसलिये कि उस का कलाम इक़्तिदार के साथ था *
३३ और मजमअ में एक शख़्स था जिस में देवि पलीद की रूह दरआई थी वुह बड़ी आवाज़ से यिह कहके चिल्लाया *
३४ कि ऐ ईसाय नासरी छोड़ हमें तुह से क्या काम क्या तू हमें हलाक करने आया है मैं तुहे जानता हूं तू कौन है
३५ तू ख़ुदा का मुक़द्दस है * ईसा ने उसे हुंहला के कहा चुपरह और उस में से निकल आ और देव उसे बीच में गिरके उसे
३६ बिनदुख दिये उस में से निकल आया * तब वे सब दंग हूए और आपस में कहने लगे कि यिह क्या माजरा है क्यूंकि वुह इक़तिदार और क़ुव्वत से पलीद रूहों को हुक्म करता है और
३७ वे निकल आती हैं * और अतराफ़ की हरजगह में उस की
३८ बाबत शुहरः होने लगा * फिर वुह मजमअ से उठ के शमऊन के घर में गया शमऊन की सास तपि शदीद में गिरिफ़्तार थी उन्हों ने उस के लिये उस की मिन्नत की *
३९ वुह उस के सिरहाने खड़ा होकर तप पर हुंहलाया और तप उसे छोड़ गई और उस ने फ़िलफ़ौर उठके उन की
४० ख़िदमत की * अब आफ़ताब ग़ुरूब होते वक़्त वे सब जिन पास ऐसे लोग थे जो गूनागूं बीमारियों में मुबतला थे उन को उस कने लाये उस ने हरएक पर उन में से हाथ रखके उन्हें शिफ़ा
४१ बख़्शी * और बहुतों में से देव यिह चिल्ला के निकले कि

तू ख़ुदा का बेटा मसीह है और उस ने हुंहूला के उन को
४१ बात न करने दी कि वे जानते थे वुह मसीह है * और जब
दिन हूआ वुह निकल कर ऐक वीराने में गया और लोग
उस की तलाश करने लगे और उस पास आये और उसे
४३ रोका कि उन पास से न जाय * उस ने उन्हें कहा मुझे
ज़रूर है कि और शहरों में भी ख़ुदा की सलतनत की
खुश ख़बरी दूं कि में इसलिये भेजा गया हूं और वुह जलील
के मजमओं में मुनादी करता रहा *

पांचवां बाब

१ ऐसा हूआ कि जब लोगों ने उस पर हुजूम किया ता कि
ख़ुदा का कलाम सुनें वुह ग़नेसरत की झील पर खड़ा था *
२ और उस ने उस झील पर दो किश्तियां खड़ी देखीं पर
मछुए उन पर से उतर के अपने जालों को धो रहेथे *
३ उस ने ऐक पर उन किश्तियों में से जो शमऊन की थी
चढ़ के उस से दरख़्वास्त की कि किनारे से ज़रः दूर ले जावे और
वुह बैठकर गरोहों को किश्ती पर से तअलीम देने लगा *
४ अब जब उस ने कलाम से फ़राग़त पाई तो शमऊन से कहा
कि गहरे पानी में लेजा और शिकार के लिये अपने जाल डाल *
५ शमऊन ने जवाब में उसे कहा कि ऐ आग़ा हमने सारी
रात मिहनत कर के कुछ न पकड़ा लेकिन तेरे कहने पर मैं
६ जाल डालता हूं * और जब उन्हों ने ऐसा किया तो

मछलियों का बड़ा ही गट घेरा कि उन का जाल फटने लगा *
७ तब उन्हों ने अपने रफ़ीक़ों को जो दूसरी किश्ती पर थे इशारः किया कि तुम आकर हमारी कुमक करो वे आये
८ और दोनों किश्तियां ऐसी भरीं कि डूबनें लगीं * तब शमऊन पत्रस यिह देखकर ईसा के घुठनों पर गिरा और बोला
९ कि ख़ुदावंद मुझ से परे रहिये कि मैं गुनहगार हूं * क्योंकि उसे और उस के सब रफ़ीक़ों को उन मछलियों की बुहुत से जो
१० उन्हों ने पाईं हैरत ने लिया था * और इसी तरह से ज़बदी के बेटे यअ़क़ूब और यूहन्ना जो शमऊन के शरीक थे हैरान थे तब ईसा ने शमऊन को कहा कि मत डर कि इस दम से
११ तू आदमियों का शिकार होगा * उन्हों ने अपनी किश्तियों को किनारे पर लाके सब छोड़ा और उस की पैरवी की *
१२ और जब वुह किसी शहर में था ऐसा हूआ कि एक शख़्स जो कोढ़ से भरा हूआ था ईसा को देख के औंधा गिरा और उस की मिन्नत कर के कहा कि ऐ ख़ुदावंद अगर तू चाहे
१३ मुझे साफ़ पाक कर सकता है * उस ने हाथ लंबा किया और उसे यिह कहके छूआ कि मैं चाहता हूं तू साफ़
१४ पाक हो उसका कोढ़ वोंहीं जाता रहा * और उस ने उसे फ़रमाया कि किसी से मत कह पर जाकर अपने तईं काहिन को दिखला और अपने साफ़ पाक होजाने के लिये जैसा कि मूसा ने हुक्म किया क़ुरबानी कर ता कि उन पर साबित हो *

१५ पर बिलअक्स उस का ज़ियादः शुहरः हूआ और बहुत जमाअतें जमअ हूईं ता कि समाअत करें और उस के
१६ हाथ से अपने आज़ारों से शिफ़ा पाईं * और वुह
१७ वीरानों में पोशीदः जाके दुआ मांगा करता था * ऐक दिन यूं इत्तिफ़ाक़ हूआ कि जिस वक़्त वुह तअलीम दे रहा था कई फ़रीसी और फ़क़ीह जो जलील के हरऐक गाओं से और यहूदियः और ओरशलीम से आये थे बैठे थे और
१८ ख़ुदावंद की क़ुव्वत उन्हें शिफ़ा देनेको ज़ाहिर हूई थी * देखो कि कई मर्द ऐक शख़्स को जो मफ़लूज था बिस्तर पर लेआये और
१९ चाहा कि उसे अंदर लावें और उस के आगे रखें * पर वे इज़्दिहाम के सबब उसे अंदर लेजाने की कोई वज़अ न पाके कोठे पर चढ़ गये और खपरेल फाड़ के उसे बिस्तर समेत बीच में
२० ईसा के आगे लटका दिया * उस ने उनका इअतिक़ाद देखके
२१ उस से कहा कि ऐ शख़्स तेरे गुनाह बख़्शे गये * तब कातिब और फ़रीसी यूं सोचने लगे कि कौन है यिह जो कुफ़र कहता है गुनाहों को फ़क़त ख़ुदा के सिवा कौन बख़्श सकता है *
२२ तब ईसा ने उन की फ़िक्रों को दरयाफ़्त करके जवाब में उन्हें कहा कि तुम अपने दिल में क्या अंदेशः करते हो *
२३ क्या कहना आसान तर है यिह कि तेरे गुनाह बख़्शे गये या यिह
२४ कि उठ और चल * लेकिन ताकि तुम जानो कि इबनि आदम को ज़मीन पर यिह इख़्तियार है कि गुनाहों को

वख़्श उसने उस मफ़लूज को कहा मैं तुझे कहता हूं उठ
२५ और अपने बिस्तर उठा कर अपने घर को चल * और वुह
फ़िलफ़ौर उन के आगे उठा और उसे जिसपर वुह पड़ा हूआ
था लेकर ख़ुदा की सुना करता हूआ अपने घर को चलागया *
२६ तब उन सब को हैरत ने लिया और ख़ुदा की सिताइश करने
लगे और पुर ख़ौफ़ होकर बोले कि हमने आज अजीब चीज़ें
२७ देखीं * और बअद उन चीज़ों के वुह बाहर गया और
लेवी नाम एक ख़िराज लेनेवाले को ख़िराज गाह पर बैठे देखा
२८ और उसे कहा कि मेरे पीछे होले * वुह सब छोड़ कर उठ खड़ा
२९ हूआ और उस के पीछे हो लिया * लेवी ने अपने घर में
उस की बड़ी मिहमानी की और वहां ख़िराज गीरों और और
लोगों का जो उन के साथ खाने बैठे थे बड़ा मजमअ था *
३० तब उन के कातिब और फ़रीसी उस के शागिर्दों से बखेड़ा
कर के कहने लगे कि तुम किसलिये ख़िराज गीरों और
३१ गुनहगारों के साथ खाते पीते हो * ईसा ने जवाब में
उन्हें कहा जो तनदुरुस्त हैं वे तबीब के मुहताज नहीं मगर
३२ वे जो बीमार हैं * मैं सवाब कारों को नहीं बल्कि ख़ता कारों
३३ को तौबे की तरफ़ बुलाने आया हूं * उन्हों ने उसे कहा कि
यहूया के शागिर्द क्यूं अकसर रोज़ः रखते हैं और दुआ मांगते
हैं और इसी तरह से फ़रीसियों के भी करते हैं पर तेरे खाते
३४ पीते हैं * उस ने उन्हें कहा कि आया तुम बरातियों को

जबतक कि दुल्हा उन के साथ होवे रोज़ः रखवा सकते हो * ३५ पर वे दिन आवेंगे कि जब दुल्हा उन से जुदा होगा वे उन्हीं ३६ रोज़ों में रोज़ः रखेंगे * और उस ने उनसे एक तमसील कही कि कोई नये कपड़े के टुकड़े से पुरानी पोशाक को पैवंद नहीं करता नहीं तो नया पुरानी को फाड़ता है और वुह टुकड़ा जो ३७ नये से लिया गया था पुरानी से मेल भी नहीं खाता * और नई शराब को कोई पुरानी मश्कों में नहीं भरता नहीं तो नई शराब मश्कों को तरकायगी और आप वह जायगी और मश्कें ३८ ज़ाइअ होंगीं * बल्कि ज़रूर है कि नई शराब को नई मश्कों ३९ में रखिये कि दोनों महफ़ूज़ रहेंगीं * और कोई पुरानी पीके फिरफ़ौर नई नहीं तलब करता इसलिये कि वुह कहता है कि पुरानी बिहतर है *

छठां बाब

और बड़े सबतों से दूसरे सबत को यूं हूआ कि वुह खेतों के बीच से गुज़रने लगा और उस के शागिर्दों ने खेतों से बालें तोड़ना २ और हाथों से मल के खाना शुरूअ किया * तब बअज़े फ़रीसियों ने उन्हें कहा तुम क्यूं वुह काम जो सबतों को करना रवा ३ नहीं करते हो * ईसा ने उन्हें जवाब दिया क्या तुम ने इतना नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वुह भूखा था और उस के ४ रफ़ीक़ों ने क्या किया * वुह क्यूंकर खुदा के घर में गया और हदयः की रोटियां लीं और खाईं और उन्हें भी जो

उस के साथ थे दीं हालां कि उन्हें खाना रवा न था मगर फ़क़त
५ काहिनों को * और उस ने उन्हें कहा कि इबनि आदम
६ सबत का भी ख़ुदावंद है * और दूसरे सबत को भी यूं हूआ
कि उस ने मजमअ में दाख़िल होके तअलीम दी और वहां
ऐक शख़्स था जिस्का दहना हाथ सुन हो गया था *
७ तब कातिबों और फ़रीसियों ने उसकी जासूसी की कि देखें
तो वुह सबत के दिन चंगा करेगा ता कि उस पर फ़रयादी
८ हों * पर वुह उन की फ़िक्रों को जानगया और जिस का
हाथ सुन था उसे कहा कि उठ और बीच में खड़ा हो तब
९ वुह उठ खड़ा हूआ * फिर ईसा ने उन्हें कहा मैं तुम से
ऐक बात पूछता हूं क्या सबतों के दिनों में नेकी करना रवा है
१० या बदी करना जान बचाना या जान से मारना * उस ने उन सब
पर चारों तरफ़ निगाह कर के उस शख़्स को कहा अपना हाथ
लंबा कर उस ने ऐसा किया और उस का हाथ चंगा होकर
११ दूसरे की मानंद मज़बूत हो गया * तब वे सब सरासीमः होगये
और आपस में कहने लगे कि ईसा के साथ क्या करें *
१२ और उन रोज़ों में यूं हूआ कि वुह ऐक पहाड़ को गया ता
१३ दुआ करे और सारी रात ख़ुदा की इबादत में काटी * और
जब दिन हूआ तो उस ने अपने शागिर्दों को बुलाया और
१४ उन में से बारह को चुन के हवारी नाम रखा * यअने शमऊन
जिसका नाम पतरस भी रखा और उस के भाई अंद्रयास

१५ यअक़ूब और यूहन्ना और फ़ैलबूस और बरतुलमी * मत्ती
और तूमा और हलफ़ा के बेटे यअक़ूब को और शमऊन जो
१६ ग़यूर कहलाता है * और यअक़ूब के भाई यहूदा और
यहूदाह इसक़रयूती को जो उसका पकड़वाने वाला हुआ
१७ चुना * फिर वुह उन के साथ उतर के मैदान में खड़ा रहा और
उस के शागिर्दों की बड़ी जमाअत और लोगों का बड़ा मजमअ
जो उस की सुनने और अपनी बीमारियों से शिफ़ा पाने सारी
यहूदियः और औरशलीम और सूर और सैदा की उस नवाही से
१८ जो दर्या के किनारे पर हैं आये थे * और वे भी जो पलीद
देवों से मुज़तरिब थे सब खड़े रहे और चंगे होते गये *
१९ और सारी भीड़ ख़्वाहिश करती थी कि उसे छूवे क्यूंकि क़ुव्वत
२० उस से निकलती थी और सब को शिफ़ा देती थी * फिर उस ने
अपने शागिर्दों पर नज़र कर के कहा कि मिस्कीनो तुम
२१ सआदतमंद हो क्यूंकि ख़ुदा की ममलुकत तुम्हारी है * सआदतमंद
हो जो अब भूखे हो इसलिये कि तुम सेर होगे सआदतमंद
२२ हो जो अब रोते हो इसलिये कि हंसोगे * सआदतमंद हो
तुम जब लोगों के दिल में तुम्हारा कीनः हो और जब वे तुम्हें
जुदा करें और मलामत करें और इब्नि आदम के लिये तुम्हारे
२३ नाम शरीर की मानंद निकालें * उस दिन तुम ख़ुश हो और
ख़ुशी से कूदो इसलिये कि देखो तुम्हारा आसमान पर बड़ा
अजर है क्यूंकि उन के आबा ने नबियों से ऐसा ही किया *

२४ पर तुम पर जो तवंगर हो वावैला है कि तुमने अपनी तसल्ली
२५ कर ली * तुम पर जो सेर हो वावैला है इसलिये कि तुम भूखे
होगे तुम पर जो अब हंसते हो वावैला है इसलिये कि तुम
२६ मातम करोगे और रोओगे * तुम पर वावैला है अगर सबलोग
तुम्हारा ज़िक्र ख़ैर करें इसलिये कि उन के आबा झूठे नबियों से
२७ ऐसाही करते थे * पर मैं तुम्हें जो सुनते हो कहता हूं
अपने दुश्मनों को दोस्त रखो उन से जो तुम्हारा कीनः रखें
२८ नेकी करो * उन से जो तुम पर लानत करें शीरीं ज़ुबानी
२९ करो और उन को जो तुम्हें सतावें दुआ करो * और जो तेरे
एक गाल पर तमचः मारे दूसरा भी गुज़रान दे और जो कोई
३० तेरी क़बा ले लेः कुरता लेने से भी मनअ न कर * जो कोई
तुझ से कुछ मांगे उसे दे और उस से जो तेरा माल लेले
३१ फिर मत मांग * और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुमसे करें
३२ तुम भी उनसे वैसाही करो * क्यूंकि अगर तुम उन्हें जो तुम्हें
दोस्त रखते हैं दोस्त रखो तुम्हारा क्या इहसान है कि गुनहगार
३३ भी अपने दोस्तों को दोस्त रखते हैं * और अगर तुम उन से जो
तुम से नेकी करते हैं नेकी करो तुम्हारा क्या इहसान है कि
३४ गुनहगार भी यही करते हैं * और अगर तुम उन्हें जिनसे
फिर पाने की उम्मेद है क़र्ज़ दो तुम्हारा क्या इहसान है इस
वास्ते कि गुनहगार गुनहगारों को क़र्ज़ देते हैं ता कि उतना
३५ इवज़ पावें * अपने दुश्मनों को प्यार करो और इहसान करो

और फिर पाने की उमेद न रखके क़र्ज़ दो कि तुम्हारा अज्र फ़िरावां होगा और तुम हक़ तआला के फ़रज़न्द होगे इसलिये कि वुह नाशुक्र गुज़ारों और शरीरों पर मिहरबान है *
३६ इस वास्ते तुम जैसा तुम्हारा बाप रहीम है रहीम हो *
३७ नुक्तः चीनी न करो तब तुम्हारी नुक्तः चीनी न की जायगी और गुनाह साबित न किया करो तो तुम्हारे गुनाह साबित किये
३८ न जायेंगे बख़्शो कि तुम बख़्शे जाओगे * दो कि वुह तुम्हें दिया जायगा अच्छा पैमानः दाब दाब के और हिला हिला के मुंहामुंह भरा हूआ तुम्हारी गोद में रखदेंगे इसलिये कि जिस पैमाने से तुम पैमाइश करते हो उसी से फिर तुम्हारे लिये
३९ पैमाइश की जायगी * फिर उस ने उन से एक तमसील कही कि आया अंधा अंधे को राह बता सकता है क्या वे
४० दोनो गढ़े में न गिरेंगे * शागिर्द अपने उस्ताद पर बाला नहीं पर जो कोई कि कामिल हूआ है अपने उस्ताद सा
४१ होगा * और तू उस तिनके को जो तेरे भाई की आंख में है क्यूं देखता है और उस शहतीर को जो तेरी आंख में है
४२ नहीं देखता * और क्यूंकर तू अपने भाई को कह सकता है कि ऐ भाई यिह तिनका जो तेरी आंख में है ला मैं निकाल दूं पर तू उस शहतीर को जो तेरी आंख में है नहीं देखता ऐ मक्कार तू पहले उस शहतीर को अपनी आंख से निकाल और तब तू उस तिनके को जो तेरे भाई की आंख

४३ में है अच्छी तरह देख के निकाल सकेगा * इसलिये कि
अच्छा दरख़्त बुरा मेवः नहीं लाता और न बुरा दरख़्त अच्छा
४४ मेवः लाता है * हर दरख़्त अपने मेवे से पहचाना जाता है
इसलिये कि लोग कांटों से इंजीर नहीं पाते और भटकटैया
४५ से अंगूर * अच्छा आदमी अपने दिलके ख़ासे ख़ज़ाने से
अच्छी चीज़ें बाहर लाता है क्यूंकि उसका मुंह दिल की पुरी के
४६ मुवाफ़िक बयान करता है * और तुम मुझे क्यूं ख़ुदावंद ख़ुदावंद
कहते हो और वे काम जो मैं कहता हूं नहीं करते *
४७ जो कोई मुझ पास आता है और मेरी बातें सुनता है और
उनपर अमल करता है मैं तुम्हें बताता हूं कि वुह किस से
४८ मुशाबह है * वुह उस शख़्स की मानंद है जिसने एक घर
बनाते हुए गढ़ा खोदा और उस को गहरा किया और नेव पत्थर
पर डाली और जब तूफ़ान आया तो बाढ़ ने उस घर को सख़्त
सदमः पहुंचाया पर उसे जुंबिश दे न सका क्यूंकि वुह पत्थर
४९ पर बिना किया गया था * और वुह जो सुनकर नहीं
करता उस शख़्स की मानंद है जिस ने ज़मीन में बे बुनयाद
घर बनाया और उसे बाढ़ ने सदमः पहुंचाया और वुह फ़िलफ़ौर
गिरपड़ा उस घर की ख़राबी अज़ीम हुई *

सातवां बाब

१ और जब वुह ख़ल्क़ को अपनी सारी बातें सुना चुका तो
२ कफ़रनाहूम में आया * और एक जमअदार का ग़ुलाम

३ जो उस का बहुत प्यारा था बीमारी से मरने पर था * उस ने
ईसा की ख़बर सुन के यहूदियों के कई एक बुज़ुर्गों को
उस पास भेजकर उस की मिन्नत की ता कि वुह उस के
४ ग़ुलाम को आकर चंगा करे * और उन्हों ने ईसा के हुज़ूर
आके उस की बहुत मिन्नत करके कहा कि वुह इस
५ लाइक़ है कि तू उस पर यिह नवाज़िश करे * इसलिये
कि वुह हमारी क़ौम को दोस्त रखता है और उस ने अपने
६ पास से हमारे लिये एक इबादतख़ानः बनाया है * तब ईसा
उन के साथ रवानः हूआ और जब उस का घर ऐसा दूर
न रहा था कि उस जमःदार ने दोस्तों को उस पास भेजकर
पयाम किया कि ख़ुदावंद तकलीफ़ न कीजिये इसलिये कि मैं
७ इस लाइक़ नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आवे * और
मैं ने अपने तईं भी लाइक़ नहीं जाना कि तुझ पास आऊं
पर एक सख़ुन फ़र्मा कि मेरा ग़ुलाम चंगा हो जायगा *
८ इसलिये कि मेरा मर्तबः यिह है कि महकूम हूं और
लश्कर मेरे हुक्म में है और एक को कहता हूं कि जा वुह
जाता है और दूसरे को आ वुह आता है और अपने
९ चाकरे को कि यिह कर वुह करता है * ईसा उस से
यिह सुन के मुतअज्जिब हूआ और फिरकर उस दंगल
से जो उस के हमराह था कहा मैं तुम्हें कहता हूं
कि मैं ने ऐसा कामिल ईमान कभी इसराईल में भी न देखा *

१० और उन्हों ने जो भेजे गये थे घर को फिर जाकर उस गुलाम को
११ जो बीमार था चंगा पाया * और दूसरे रोज़ यूं हूआ कि
वुह एक शहर को जिसका नाम नाईन था रवानः हूआ
और बहुतेरे उस के शागिर्दों में से और बड़ा दंगल उस के
१२ हमराह था * वुह शहर के दरवाज़े के नज़दीक आया
देखो कि एक मुर्दः को बाहर लिये जाते थे जो अपनी मा का
एकलौटा बेटा था और वुह बेवः थी और शहर के लोगों का ख़ासः
१३ अंबोह उस के साथ था * और ख़ुदावंद ने उसे देखकर
१४ उस पर रहम किया और उसे फ़रमाया कि मत रो * और
उस ने पास आके ताबूत को छूआ तब उस उठाने वालोंने तवक़्क़ुफ़
किया और उस ने कहा कि ऐ जवान मैं तुझे कहता हूं
१५ उठ बैठ * और वुह मुर्दः उठ बैठा और बोलने लगा और
१६ उस ने उसे उस की मा को सोंपा * और सबको तहैयुर ने लिया
और उन्हों ने ख़ुदा की सिताइश कर के यिह कहा कि
बड़ाही नबी हम में मबऊस हूआ और यिह कि ख़ुदा ने
१७ अपने लोगों पर निगाह की * और उस की यिह ख़बर सारी
यहूदियः और उस के गिर्द नवाह की विलायतों में उड़ी *
१८ और यहया के शागिर्दों ने उन सब बातों की उसे ख़बर दी *
१९ और यहया ने अपने ऐक दो शागिर्दों को बुला के ईसा को
कहला भेजा कि आया तू वुह जो आनेवाला था तू है या हम
२० दूसरे की राह तकें * उन मर्दों ने उस के हुज़ूर आके कहा

यहया मुस्तबिग़ ने हमारी मअ़रिफ़त तुझे कहला भेजा है कि आया जो आनेवाला था तू है या हम दूसरे का इंतिज़ार करें *
२१ उस ने उसी दम बहुतों को बीमारियों और बलाओं और शरीर रूहों से मुख़्लिसी दी और बहुत से अंधों को बिनाई बख़्शी *
२२ तब ईसा ने जवाब में उन्हें कहा कि जाकर ये उमूर जो तुमने देखे और सुने यहया से कहो कि अंधे देखते हैं लंगड़े फिरते हैं कोढ़ी साफ़ पाक होते हैं बहरे सुनते हैं मुरदे जिलाये जाते हैं मिस्कीनों को ख़ुश ख़बरी दी जाती है *
२३ और सआदतमंद वुह है जो कोई कि मुझसे बेज़ार न होवे *
२४ और जब यहया के क़ासिद जा चुके तो वुह यहया के हक़ में लोगों से कहने लगा कि तुम जंगल में क्या देखने गये क्या
२५ एक सेंठा हवा से हिलता हुआ * और तुम क्या देखने गये क्या एक मर्द मुलाइम कपड़े पहने हुए देखो वे जो शाहानः लिबास पहने हैं और ऐश से गुज़रान करते हैं बादशाहों के
२६ घरों में हैं * और तुम क्या क्या देखने गये क्या एक नबी हां मैं तुमसे
२७ कहता हूं बल्कि एक नबी से बिहतर * यही है जिस के हक़ में लिखा है देख मैं अपने रसूल को तेरे आगे भेजता हूं
२८ वुह तेरी राह तेरे आगे तैयार करेगा * इसलिये कि मैं तुमसे कहता हूं उन के दरमियान जो रंडियों से पैदा हुए हैं कोई नबी यहया मुस्तबिग़ से बुज़ुर्गतर नहीं लेकिन वुह जो ख़ुदा की
२९ ममलुकत में हक़ीरतर है उस से बुज़ुर्गतर है * और सब लोगों

और ख़िराजगीरों ने जिन्हों ने यहया से इस्तिबाग़ पाया था
३० यिह सुन के ख़ुदा की तसदीक़ की * लेकिन फ़रीसियों और
फ़क़ीहों ने जिन्हों ने उस से इस्तिबाग़ न पाया था ख़ुदा के
३१ इरादे को अपनी कमबख़्ती से रद किया * और ख़ुदावंद ने
यिह भी कहा मैं इस ज़माने के लोगों को किस से तशबीह दूं
३२ वे किस से मुशाबह हैं * वे उन लड़कों के मानंद हैं जो
बाज़ार में बैठकर ऐक दूसरे को पुकार के कहें कि हम तुम्हारे
लिये बंसली बजाया किये और तुम न नाचे हम तुम्हारे लिये
३३ मातम किया किये और तुमने नाले न किये * क्यूंके यहयाय
मुतबिग़ आया जो न रोटी खाता था न मै पीता था और तुम
३४ कहते हो कि उस के साथ ऐक देव है * इबनि आदम खाने
और पीनेवाला आया और तुम कहते हो देखो ऐक बड़ा खाऊ
और मै परस्त ख़िराजगीरों और गुनहगारों का दोस्तदार *
३५ लेकिन हिकमत सारे बनी हिकमत से तसदीक़ की गई है *
३६ फिर ऐक फ़रीसी ने उस से सवाल किया कि तू मेरे साथ खा
३७ और वुह फ़रीसी के घर में गया और खाने बैठा * और देखो
ऐक रंडी ख़ताकार जो उस शहर में थी जब उसने जाना कि
ईसा फ़रीसी के घर में खाने बैठा तो मरमर के ज़रूफ़ में इतर
३८ ले आई * और उस के पांओं पास पीछे खड़ी होके रोने लगी
और आंसूओं से उस के पांव धोने और अपने सिर के बालों से
३९ पोंछे और उसके क़दम चूमे और उन पर इतर मला * और

वुह फ़रीसी जिस ने उस की दअ़वत की थी यिह देखकर दिल में कहने लगा कि यिह शख़्स नबी होता तो जानजाता कि यिह रंडी जो उसे छूती है कौन और किस तौर की है क्यूंकि वुह
४०. बदकार है * और ईसा ने जवाब में उसे कहा कि ऐ शमऊ़न मैं तुझे कुछ कहा चाहता हूं वुह बोला कि ऐ उस्ताद-
४१ इरशाद * ऐक शख़्स था जिस के दो क़रज़दार थे ऐक पांचहज़ार
४२ दीनार का और दूसरा पचास का * और उनपास कुछ नथा कि अदा करें तब उस ने दोनों को बख़्श दिया अब मुझे
४३ कह कौन उनमें से उसे बहुत दोस्त रखेगा * शमऊ़न ने जवाब दिया और कहा मैं तो यिह गुमान करता हूं कि वुह
४४ जिसे उस ने बहुत बख़्शा * तब उस ने उसे कहा तू ने रास्तानः इनसाफ़ किया फिर वुह उस रंडी की तरफ़ फिरे और शमऊ़न से कहा आया तू इस रंडी को देखता है मैं तेरे घर में आया तूने मेरे पाओं पर पानी भी नडाला और उस ने मेरे पांओं को आंसूओं से धोया और अपने सिर के बालोंसे पोंछा *
४५ और तूने मेरा बोसः न लिया पर यिह जब से कि मैं यहां
४६ आया मेरे पांव चूमने से बाज़ न रही * तू ने मेरे सिर पर
४७ तेल नमला और उस ने मेरे पांव में इतर लगाया * इसलिये मैं तुझसे कहता हूं कि उस के गुनाह जो बहुत हैं बख़्शे गये क्यूंकि उसे बहुत उलफ़त है पर जिस के थोड़े बख़्शे गये
४८ हैं उसे थोड़ी उलफ़त है * फिर उस ने उसे कहा कि तेरे

४९ गुनाह बख़्शे गये * तब वे जो उस के साथ खाने बैठे थे दिल में कहने लगे कि यिह कौन है कि गुनाहों से भी
५० रिहाई देता है * और उस ने उस रंडी को कहा कि तेरे ईमान ने तुझे नजात दी सलामत चलीजा *

आठवां बाब

१ बअद चंदे यूं हूआ कि वुह शहर बशहर और देह बदेह फिरता हूआ वअज़ कहता और ख़ुदा की सलतनत की
२ ख़ुश ख़बरी देता था * और वे बारह और कितनी रंडियां जिन्हों ने पलीद देवों और नातवानियों से मुख़लिसी पाई यअने मरयम जो मजदलियः कहलाती थी जिस पर से सात
३ देव उतारे गये * और हीरूदीस के दीवान ख़ूज़ा की जोरू यूहनः और सोसन और और बहुतेरियां जो अपने माल से उस की
४ ख़िदमत करतियां थीं उस के साथ गईं * और जब बड़ा दंगल और लोग जो हर शहर से उस पास आये थे जमअ हूए
५ उस ने तमसील में कहा * एक किसान अपने बीज बोने गया और बोते वक़्त बअज़े राह की तरफ़ गिरे और लताड़े गये
६ और परिंदों ने उन्हें चुगलिया * और बअज़े पत्थर पर गिरे और वे आग से सूख गये क्यूंकि तरावत उन्हें न पहुंची *
७ और बअज़े कांटों में गिरे और कांटों ने साथ बढ़ के उन्हें
८ घोंट डाला * और बअज़े जैयद ज़मीन में गिरे और उग के सौ गुने फल लाये वुह ये बातें कहके पुकारा कि जिसके

९ कान सुनने के लिये हैं सुने * और उस के शागिर्दों ने
१० उस से पूछा कि इस तमसील के क्या मअने * तब उस ने
कहा कि ख़ुदा की ममलुकत के असरार का इल्म तुम्हें दिया गया
है पर औरों को तमसीलें ता कि वे देखते हुए न देखें और सुनते
११ हुए न समझें * अब यिह तमसील यूं है कि बीज जो है ख़ुदा का
१२ कलाम है * और राह की तरफ़ वे हैं जो सुनते हैं और फिर शैतान
आता है और कलाम को उन के दिलों से ले भागता है ता न होवे कि वे
१३ ईमान लाके नजात पावें * पत्थर पर के वे हैं जो सुख़न को सुन के
ख़ुशी से क़बूल करते हैं और ये जड़ नहीं रखते कि थोड़ी
मुद्दत ऐतिक़ाद करके इमतिहान के वक़्त फिर जाते हैं *
१४ और वे जो कांटों में गिरे वे हैं कि सुन के चले निकलते हैं
और तरद्दुदात और अमवाल और ज़िन्दगानी की ख़ुशियां
उन्हें घेर डालती हैं और कमाल का मेवः नहीं लाते *
१५ पर जैयद ज़मीन के वे हैं कि सुख़न को सुन के ख़ाले ख़ुलाते
दिल में हिफ़्ज़ कर रखते हैं और सब्र से मेवः लाते हैं *
१६ कोई शख़्स चिराग़ रौशन करके बरतन तले नहीं छिपाता और
न बिस्तर तले धर देता बल्कि उसे चिराग़दान पर रखता है
१७ ता कि वे जो अन्दर आते हैं नूर को देखें * इसलिये कि कोई
चीज़ पोशीदः नहीं जो ज़ाहिर न होवे और न मख़्फ़ी जो
१८ जानी न जाय और फ़ाश न होवे * इसलिये ख़बरदार रहो
कि तुम किस तरह से सुनते हो क्यूंकि जिस पास कुछ है

उसे दिया जायगा और जिस पास कुछ नहीं उस से वुह भी जिसे वुह गुमान करता है कि उस का है फिर लिया जायगा *

१९ तब उस की मा और भाई उस पास आये और ज़ुजूम के

२० सबब उस से मुलाक़ात न करसके * तब उसे कहा गया कि तेरी मा और तेरे भाई बाहर खड़े तेरे देखने के मुश्ताक़ हैं *

२१ उस ने जवाब दिया और उन्हें कहा कि मेरी मा और मेरे भाई वे हैं जो ख़ुदा का कलाम सुनते और अमल करते हैं *

२२ और एक रोज़ यूं हूआ कि वुह अपने शागिर्दों के साथ किश्ती पर चढ़ा और उन्हें कहा कि उस झील के पार जाओ

२३ तब उन्हों ने खोल दी * पर जब किश्ती चली जाती थी वुह सो गया और झील में आंधी आई और उन की किश्ती भर गई

२४ और वे ख़तरे में थे * तब वे उस पास आये और उसे जगाकर कहा कि ऐ आग़ा ऐ आग़ा हम मरे तब उस ने उठकर आंधी और दरया के मौजे को डांटा तब वे रह गये और

२५ चैनहोगया * और उस ने उन्हें कहा तुम्हारा इअ़तिक़ाद कहां है और वे आपस में हिरासां और हैरान होके बोले कि यिह किस क़िसम का बशर है कि आंधी और पानी को भी हुक्म करता है और वे उस की इताअ़त करते हैं *

२६ फिर वे जदरिये की विलायत में जो जलील के मुक़ाबिल उस पार

२७ है पहुंचे * और जब वुह किनारे पर गया तो उस शहर का एक मर्द जिसे एक मुद्दत से देवों का सायः था और कपड़े

न पहनता था और घर में नहीं पर गोरिस्तान में रहता था उस
२८ मिला * वुह ईसा को देख के चिल्लाया और उस के आगे
गिर पड़ा और बलंद आवाज़ से कहा कि ऐ ख़ुदा तआला के
बेटे ईसा मुझे तुझ से क्या काम मैं तेरी मिन्नत करता हूं
२९ मुझे न सता * इसलिये कि उस ने उस देव पलीद को हुक्म
किया था कि उस आदमी में से निकल जाय कि वुह अकसर
उसे पकड़ता था और हरचंद उसे ज़ंजीरें और पैकड़ियों से
जकड़ के हिफ़ाज़त से मुक़ैयद करते थे पर वुह बेड़ियों को
३० तोड़डालता था और देव उसे जंगल में दौड़ाता था * तब ईसा ने
उस से पूछा कि तेरा क्या नाम वुह बोला लाजाऊं इसलिये कि
३१ बहुत से देव उस में दर आये थे * फिर उन्हों ने उस को
मिन्नत की कि हमें दरया में जाने का हुक्म न कर *
३२ और वहां कितने एक सूअर इकठे पहाड़ पर चरते थे
उन्हों ने उस की मिन्नत की कि हमें इजाज़त दे कि उन में
३३ दर आवें तब उस ने उन्हें रुख़सत दी * फिर वुह देव
उस शख़्स से निकल आके सूअरों में दर आये वुह गल्लः कड़ारे
३४ पर से छप झील में जा गिरा और डूब के मर गया * जब चरने वालों ने
यिह माजरा देखा तो भागे और शहर और देहात में जाके
३५ बयान किया * तब वे उस माजरे को देखने निकले और ईसा
पास आये और उस शख़्स को जिस में से देव निकल गये थे
कपड़े पहने हूये और होशयार ईसा के पांव पास बैठा हूआ

३६ देखा और डर गये * उन सब ने जो देख चुके थे उन से कहा
कि वुह जिसे देवों का आसेब था क्यूंकर चंगा हूआ *
३७ तब जदरियों के मुल्क के अतराफ़ के सारे लोगों ने उस से
ख़्वाहिश की कि हम पास से जा क्यूंकि उन्हें बड़ा डर
३८ पैठ गया था * अब उस शख़्स ने जिस मेंसे देव निकल गये
थे उस की मिन्नत की कि मुझे अपने साथ रहने दे पर ईसा
३९ ने उसे रुख़सत कर के कहा * कि अपने घर को फिर जा
और बयान कर कि ख़ुदा ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये वुह
गया और सारे शहर में शुहरः किया कि ईसा ने ऐसे ऐसे
४० बड़े काम उस के लिये किये * और यूं हूआ कि जब ईसा
फिर आया तो लोगों ने उस का इस्तिक़बाल किया क्यूंकि वे
४१ सब उस की राह तकते थे * और देखो यूईरस नाम ऐक
शख़्स जो मजमअ का सरदार था आया और ईसा के क़दमों
४२ पर गिर के मिन्नत की कि तू मेरे घर चल * इसलिये कि
उस की ऐक ऐकलौटी बेटी कम बेश बारह बरस की थी
जो मरने पर थी और जब वुह जानेलगा लोगों ने उस पर
४३ हुजूम किया * और ऐक रंडी ने जिस का बारह बरस से लहू
जारी था जो अपना सब माल तबीबों को देके ख़रच कर चुकी थी
४४ पर किसी से चंगी नहो सकी * पीछे से आके उसके लिबास
के किनारे को छूआ और फ़िलफ़ौर उस के लहू का जिरयान
४५ मौक़ूफ़ हो गया * तब ईसा ने कहा कि मुझे किसने छूआ

जब सब इनकार करने लगे पतरस और उन्हों ने जो उस के साथ थे कहा कि ऐ आक़ा लोग तुझ पर हुजूम कर रहे हैं और दाबे डालते हैं फिर तू कहता है मुझे किस ने छूआ *
४६ ईसा ने कहा कि मुझे किसू ने छूआ है क्योंकि मैं जानता हूं
४७ कि क़ुव्वत शाफ़िया मुझ में से निकली * जब रंडी ने देखा कि छिप न सकी कांपती हुई आई और उस के आगे गिर कर सब लोगों के साम्हने उस से ज़ाहिर किया कि मैं ने इस सबब से
४८ तुझे छूआ और फ़िलफ़ौर यूं चंगी हुई * उस ने उसे कहा कि ऐ बेटी ख़ातिर जमअ़ रख कि तेरे इअतिक़ाद ने तुझे सिहत
४९ बख़्शी सलामत जा * वुह यिह कह रहा था कि मजमअ़ के सरदार के यहां से एक ने आकर उसे कहा कि तेरी बेटी मरगई
५० उस्ताद को तकलीफ़ न दे * तब ईसा ने सुनके जवाब में उसे कहा कि मत डर सिर्फ़ ईमान ला कि वुह सिहत पावेगी *
५१ और जब वुह उस के घर आया तो पतरस और यअ़क़ूब और यूहन्ना और उस लड़की के मा बाप सिवा किसी को अंदर जाने
५२ की रुख़सत न दी * और सब उस के लिये रो पीट रहे थे और उस ने कहा मत रोओ वुह मर नहीं गई पर सोती है *
५३ वे उस पर हंसे कि जानते थे वुह मर गई थी (५४) और उस ने सब को बाहर कर के उस का हाथ पकड़ा और पुकार के
५५ कहा कि ऐ लड़की उठ * तब उस में जान फिर आई और वुह तुरत उठी और उस ने फ़रमाया कि उसे खाने को दिया

५६ आवे * तब उसके मा बाप हैरान हुए और उस ने उन्हें फ़रमाया कि यिह जो वाक़िअ हूआ किसी से न कहें *

नवां बाब

१ फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को बाहम बुलाकर उन्हें सब देवों पर ग़लबः और इक़्तिदार और बीमारियों को दूर करने
२ की तवानाई बख़्शी * और भेजा कि ख़ुदा की सल्तनत की
३ मुनादी करें और बीमारों को चंगा करें * और उन्हें कहा कि सफ़र के लिये कुछ मत लो न तो असा और न अंबान और न रोटी और न कुछ नक़्द और न आदमी पीछे दो
४ जामे * और जिस घर में कि तुम दरआओ वहीं रहो और
५ वहीं से रवानः हो * और जो कोई तुम्हारी ख़ातिरदारी न करे जब तुम उस शहर से बाहर जाओ तो उनपर गवाही के लिये
६ अपने पांओं की गर्द झाड़ो * वे रवानः होकर दिह बदिह गुज़रे और हर जगह ख़ुशख़बरी दी और सिह्हत बख़्शी *
७ अब हीरूदीस ने जो रुबअ का हाकिम था सब कुछ जो उसने किया था सुना और परेशान ख़ातिर हूआ इसलिये कि बअज़े
८ कहते थे कि यह्या मरके जी उठा * और बअज़े कि इलयास ज़ाहिर हूआ और बअज़े कि एक अगले नबियों से फिर
९ उठा * तब हीरूदीस बोला कि यह्या का तो मैं ने सिर काटा फिर यिह जिसकी बाबत में ऐसी बातें सुनता हूं कौन है और
१० चाहा कि उसे देखे * और हवारियों ने फिर आके सब जो

कुछ उन्हों ने किया था उस से बयान किया वुह उन्हें लेके चुपका एक तरफ़ वीराने में एक शहर के मुत्तसिल जो बैतसैदा
११ कहलाता था गया * और लोग जानके उस के पीछे होलिये और उस ने उनकी ख़ातिरदारी करके उन से ख़ुदा की सल्तनत की बातें कियां और उन्हें जो शिफ़ा के मुहताज थे शिफ़ा दी *
१२ और जों दिन ढलने लगा उन बारहों ने आके उसे कहा कि इस गरोह को रुख़सत कर ता कि वे अतराफ़ के गाओं और बेरुंजात में जाकर शबबाश हों और खाने को पावें क्यूंकि हम
१३ यहां वीराने में हैं * उस ने उन्हें कहा कि तुम उन्हें खाने को दो वे बोले कि हम पास पांच रोटियों और दो मछलियों सिवा कुछ नहीं है हां मगर हम जाके उनसब लोगों के लिये खाना
१४ मोल लें * क्यूंकि वे पांच हज़ार के क़रीब थे तब उस ने अपने शागिर्दों से कहा कि उन्हें पचास पचास करके सफ़ सफ़ बिठ
१५ लाओ * उन्हों ने यिह किया और सब को बिठाया *
१६ तब उस ने वुह पांच रोटियां और दो मछलियां उठाईं और आसमान पर नज़र करके बरकत का कलिमः कहा और तोड़ीं
१७ और शागिर्दों को दीं कि जमाअत के आगे रखें * और उन सब ने खाईं और सब सेर हूए और उन रेज़ों की जो उन के आगे बच रहे थे बारह टोकरियां भरी उठाईं *
१८ और जब वुह अकेला दुआ करता था यूं हूआ कि शागिर्द उस पास थे उसने उनसे यिह कह के पूछा लोग क्या कहते हैं

१९ मैं कौन हूं * वे जवाब में बोले यहया मुस्तबिग़ और बअज़े इलयास कहते हैं और बअज़े कि एक अगले नबियों से फिर
२० उठा * उस ने उन्हें कहा पर तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं
२१ पतरस जवाब में बोला कि मसीहुल्लाह * उस ने उन्हें ताकीद
२२ कर के फ़रमाया कि यिह बात किसी से न कहियो * और कहा ज़रूर है कि इबनि आदम बहुत से रंज पावे और मशाइख़ और रईसि काहिनों और कातिबों से ख़्वार किया जावे और
२३ मारा जाय और तीसरे रोज़ फिर उठे * फिर उस ने सब से कहा कि अगर कोई मेरे पीछे चला चाहे तो चाहिये कि अपने नफ़स की मुख़ालफ़त करे और रोज़ रोज़ अपनी सलीब
२४ उठावे और मेरी पैरवी करे * इसलिये कि जो कोई अपनी जान बचाया चाहे उसे गंवाएगा पर जो कोई कि मेरे लिये
२५ अपनी जान गंवाएगा वही उसे बचाएगा * कि आदमी को अगर सारा जहान हासिल करे और अपने तईं खोदे और
२६ बरबाद होवे क्या नफ़अ है * इसलिये कि जो कोई मुझसे और मेरी बातों से हिजाब करेगा इबनि आदम भी जिसवक़्त अपनी और अपने बाप की और मुक़द्दस फ़िरिश्तों की शौकत
२७ से आवेगा उस से हिजाब करेगा * लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि यहां बअज़े हाज़िर हैं जो मौत का मज़ः जबतक कि ख़ुदा की सलतनत को न देख लें न चखेंगे *
२८ और उन बातों से दिन आठ एक के बअद यूं हूआ कि

वुह पत्रस और यूहन्ना और यअ़्कूब को लेके पहाड़ पर दुआ
२९ करने गया * और दुआ करते हुए उस के चिहरः की वज़्अ
कुछ और हुई और उस का लिबास सफ़ेद और दरख़्शां
३० हुआ * और देखो कि दो शख़्स उस से बातें करते थे वे मूसा
३१ और इलयास थे * जो हश्मत से देखाई दिये और उस के
इन्तिक़ाल का जिसे वुह ओरशलीम में कामिल करने पर था
३२ ज़िक्र करते थे * और पत्रस और वे जो उस के साथ थे
नींद से सरगरां थे जब वे जागे उन्हों ने उस की हश्मत को
और उन दो शख़्सों को जो उस के साथ खड़े थे देखा *
३३ और जब वे उस से जुदा होने लगे यूं हुआ कि पत्रस ने
ईसा से कहा कि ऐ आग़ा हमारे लिये बिहतर है कि
यहां रहें और तीन मस्कन एक तेरे लिये और एक मूसा को
और एक इलयास के लिये बनाएं और जानता न था कि क्या
३४ कहता है * वुह यिह कहता ही था कि एक बदली आई
और उन पर सायः अफ़्गन हुई और जब वे बदली में
३५ दरआने लगे वे डर गये * और बदली से एक आवाज़ आई
३६ कि यिह मेरा अ़ज़ीज़ बेटा है उस की सुनो * और जब
आवाज़ आचुकी ईसा अकेला मिला और वे चुपके होरहे
और उन चीज़ों में से जो उन्हों ने देखी थीं उस ऐयाम में
३७ किसी से कुछ न कहा * और यूं हुआ कि दूसरे दिन
३८ जब वे पहाड़ पर से उतरे बड़े दंगल से मिले * और देखो

कि ऐक मर्द ने उस जमाअत से पुकार के कहा कि ऐ उस्ताद मैं तेरी मिन्नत करता हूं मेरे बेटे पर नज़र कर कि वुह मेरा
३९ ऐकलौटा है * और देख कि रूह उसे पकड़ती है और वुह यका यक चिल्लाता है और वुह उसे ऐंठाती है यहां तक कि वुह काफ़भर लाता है और उसे खूब कुचलके दुश्वारी से
४० उस पर से उतर जाती है * और मैं ने तेरे शागिर्दों से
४१ ख़ाहिश की कि उसे दूर कर दें पर वे न कर सके * ईसा ने जवाब में कहा कि ऐ बेईमान और गर्दनकश क़ौम मैं कबतक तुम्हारे साथ रहूं और तुम्हारी बरदाश्त करूं अपने बेटे को
४२ यहां ला * और जब वुह आनेलगा देव ने उसे दे मारा और ऐंठाया और ईसा उस रूहि पलीद पर हंहलया और लड़के को चंगा किया और उसे उस के बाप को सुपुर्द किया *
४३ और ख़ुदा की अज़मत से सब मबहूत हूए पर जब वे सब उन कामों से जो ईसा ने किये हैरानी में थे उस ने अपने
४४ शागिर्दों से कहा * कि इन बातों को कानों से सुन रखो कि इबनि आदम ख़ल्क़ के हाथ में गिरिफ़्तार करवाया जयगा *
४५ पर वे उस कलाम को न समझे और यिह उन पर पोशीदः रहा ता न होवे कि वे उसे दरयाफ़्त करें और उन्हों ने मारे
४६ डर के उस से उस का सवाल न किया * फिर उन में इस मुबाहसः की नौबत हूई कि सब से बड़ा हम में कौन *
४७ ईसा ने उन के दिलों का अंदेशः मअलूम करके ऐक लड़के को

४८ लेके अपने पास खड़ा किया * और उन्हें कहा जो कोई इस लड़के को मेरे नाम पर क़बूल करे मुझे क़बूल करता है और जो कोई मुझे क़बूल करेगा उसे जिस ने मुझे भेजा है क़बूल करता है कि जो कोई तुम सब में हक़ीरतर है
४९ वही बड़ा होगा * तब यूहन्ना ने जवाब दिया और कहा कि ऐ आग़ा हमने एक को तेरे नाम से देव भगाते देखा और उसे मनअ किया क्यूंकि वुह हमारे साथ पैरवी नहीं करता *
५० ईसा ने उसे कहा कि मनअ न करो इस लिये कि जो हमारा
५१ मुख़ालिफ़ नहीं वुह हमारी तरफ़ का है * और जब उस के दिन ऊपर जाने के लिये कामिल होने लगे तो यूं हूआ कि वुह तसमीम करके औरशलीम के सफ़र को मुतवज्जिह हूआ *
५२ और अपने रूबरू रसूलों को भेजा और वे रवानः होके समरियों के गांओं में दाख़िल हूए ताकि उस के लिये तैयारी
५३ करें * और उन्हों ने उस की ख़ातिरदाश्त नकी क्यूंकि वुह
५४ औरशलीम की तरफ़ मुतवज्जिह था * जब उस के शागिर्दों यअ़क़ूब और यूहन्ना ने देखा तो कहा ऐ ख़ुदावंद आया तू चाहता है कि हम जैसा इलयास ने किया हुक्म करें कि आसमान
५५ से आग बरसे और उन्हें हलाक करे * तब वुह फर के उन पर हुंहलाया और कहा कि तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारी
५६ कैसी रूह है * क्यूंकि इब्नि आदम ख़ल्क़ की जान मारने नहीं बल्कि बचाने आया है फिर वे दूसरे गांओं को गये *

५७ और ऐसा हूआ कि जब वे चले जाते थे राह में एक ने उसे कहा ऐ खुदावंद जहां कहीं तू जाता है मैं तेरे पीछे हो लूंगा *
५८ ईसा ने उसे कहा गीदड़ों के लिये मांदें और परिन्दों के लिये बसेरे की जागह है पर इबनि आदम के लिये जगह नहीं
५९ जहां सिरको रखे * उस ने दूसरे से कहा कि मेरे पीछे चल पर उस ने कहा कि ऐ खुदावंद मुझे इजाज़त दे कि
६० पहले जाऊं और अपने बाप को गाड़ूं * ईसा ने उसे कहा छोड़ दे कि मुर्दे अपने मुर्दों को गाड़ें तू जाकर खुदा की सलतनत
६१ की ख़बर दे * और एक दूसरे ने भी कहा ऐ खुदावंद मैं तेरे पीछे चलूंगा पर पहले मुझे रुख़सत दे कि अपने घराने
६२ के लोगों से रुख़सत हो आऊं * ईसा ने कहा कि जो शख़्स अपना हाथ हल पर रख के पीछे नज़र करे खुदा की सलतनत के लिये मुस्तइद नहीं *

दसवां बाब

१ उन सब के बअद खुदावंद ने और सत्तर शख़्स मुक़र्रर किये और अपने रूबरू जिस जिस शहर और मक़ाम में कि वुह
२ खुद जाया चाहता था उन्हें दो दो कर के भेजा * उस वक़्त उस ने उन्हें कहा कि तहक़ीक़ पक्की ज़रात्रत बहुत है पर कार कुनिंदे थोड़े हैं पस ज़रात्रत के मालिक से दरख़ास्त करो कि अपनी तैयार ज़रात्रत के लिये कारकुनिंदों को भेजे *
३ जाओ देखो मैं तुम्हें भेड़ों की मानंद भेड़ियों में भेजता हूं *

४ न बटूआ और न तोशःदान और न पापोश ले जाओ
५ और राह में किसी को सलाम न करो * और जिस घर में
६ दाख़िल होओ पहले उस घर पर सलाम कहियो * फिर अगर
कोई सलामती के लाईक़ वहां होगा तुम्हारा सलाम उस पर
७ वाक़िअ होगा नहीं तो तुमही पर फिर आवेगा * और उसी
घर में रहो और जो कुछ वे तुम्हें दें खाओ पीओ इसलिये
कि कारकुनिंदः अपनी उजरत का सज़ावार है घर घर न फिरो *
८ और जिस बस्ती में तुम दरआओ और वे तुम्हारी ख़ातिरदारी
करें जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय तनावुल करो *
९ और वहां के रंजूरों को चंगा करो और उन्हें कहो कि ख़ुदा की
१० सलतनत तुम तक पहुंची है * और जिस शहर में तुम
दाख़िल हो और वे तुम्हारी ख़ातिरदारी न करें तो वहां के
११ बाज़ारों में जाकर कहो * तुम्हारे शहर की धूल तक जो हम पर
पड़ी है तुम्हीं पर झाड़ चले लेकिन तुम उसे यक़ीन जानो
१२ कि ख़ुदा की सलतनत तुमतक पहुंची है * और मैं तुम्हें
कहता हूं कि उस दिन उस शहर की निसबत से सदूम के
१३ लिये ज़ियादः आसानी होगी * ऐ कोरज़ीं तुझपर वावैला है
और ऐ बैतसैदा तुझपर वावैला है इसलिये कि ये मुअजिज़े
जो तुम में दिखाये गये अगर सूर और सैदा में दिखाये जाते वे
टाट ओढ़ के और राख मलके कबके तौबः कर बैठते *
१४ पर रोज़े जज़ा में तुम्हारी निसबत से सूर और सैदा के

१५ लिये ज़ियादः आसानी होगी * और ऐ कुफ़रनाहूम तू
१६ जो आसमान पर चढ़ी है अदम में उतारी जायगी * वुह जो
तुम्हारी सुनता है मेरी सुनता है और वुह जो तुम्हारी तहक़ीर
१७ करता है मेरी तहक़ीर करता है और वुह जो मेरी तहक़ीर करता है
मेरे भेजने वाले की तहक़ीर करता है * फिर वे सत्तर
सफ़र से शादमान फिर आके कहने लगे कि ऐ
१८ ख़ुदावंद तेरे नाम से देव भी हमारे महकूम हूए * उस ने
उन्हें कहा मैं ने देखा कि शैतान बिजली की तरह आसमान
१९ से गिरा * देखो मैं तुम्हें इख़्तियार देता हूं कि तुम सांपों
और बिच्छुओं पर और दुश्मन के सारे ज़ोर पर पांव रखो
२० कोई चीज़ हरगिज़ तुम्हें ज़रर न करेगी * लेकिन उस से
ख़ुश मत हो कि रूहें तुम्हारे क़ब्ज़ में हैं बल्कि बेशतर इसलिये
शाद हो कि तुम्हारे नाम आसमान पर लिखे हूए हैं *
२१ उस घड़ी ईसा ख़ुशी से फूला न समाया और बोला कि ऐ
बाप आसमान और ज़मीन के ख़ुदावंद मैं तेरा शुक्र करता हूं
कि तू ने यिह सब हकीमों और दानाओं से पोशीदः किया
और लड़कों पर ज़ाहिर किया योंही होवे ऐ बाप कि तेरी
निगाह में यही अच्छा मअलूम हूआ और अपने शागिर्दों की
२२ तरफ़ मुतवज्जिह होके कहा * सब कुछ मेरी बात से मुझे
सौंपा गया है पर सिवा बाप के कोई नहीं जानता कि बेटा
कौन है और सिवा बेटे के और उस के जिसपर बेटा

ज़ाहिर किया चाहे कोई नहीं जानता कि बाप कौन है *
२३ तब उसने शागिर्दों की तरफ़ फिर के उन से कहा रोशन वे आंखें
२४ जो ये सब जो तुम देखते हो देखती हैं * इसलिये कि मैं तुमसे
कहता हूं कि बहुत से नबियों औ शाहों ने तमन्ना की कि
ये सब जो तुम देखते हो देखें और न देखा और ये सब जो
२५ तुम सुनते हो सुनें और न सुना * तब देखो एक फ़क़ीह ने
उठ के उसे इम्तिहान करने को पूछा कि ऐ उस्ताद मैं क्या
२६ करूं ता कि हयाति अबदी का वारिस हूं * उस ने उसे कहा
२७ कि तौरेत में क्या लिखा है तू क्योंकर पढ़ता है * उस ने जवाब
दिया कि तू खुदावंद पर जो तेरा खुदा है अपने सारे दिल से
और अपने सारे जी से और अपने सारे ज़ोर से और अपने सारे
इदराक से आशिक़ रह और अपने पड़ोसी को ऐसा प्यार कर
२८ जैसा आप को करता है * तब उस ने उसे कहा कि तूने
मुनासिबन जवाब दिया यही तू किया कर कि जीता रहेगा *
२९ पर उस ने अपनी रास्ती जताने को ईसा से कहा कि भला मेरा
३० पड़ोसी कौन है * तब ईसा ने जवाब में कहा कि एक शख़्स
औरशलीम से अरीहा को चला और चोरों ने उसे घेरा और
नंगा करके ज़ख़्मी किया और अधमुआ छोड़के जाते रहे *
३१ इत्तिफ़ाक़न एक काहिन उस राह से आया और उसे देख के
३२ बराबर से चला गया * इसी तरह से एक लेवी जो उस जगह
३३ था आके उसे देखकर बराबर से चला गया * लेकिन एक

सामरी सफ़र करता उस तलक पहुंचा उस ने उसे देखके रहम
३४ किया * और उस पास आकर तेल और शराब मलके उस
के ज़ख़मों को बांधा और अपने मरकब पर डाल के उसे
३५ सरा में लाया और उस की बीमारदारी करने लगा * फिर
सुबह को रवानः होते हुऐ उस ने दो दीनार निकाल के सरावान
को दिये और उसे कहा उस की ख़बर ले और जो कुछ तेरा
ज़ियादः ख़रच होगा जब मैं फिर आऊंगा मैं आप अदा
३६ करूंगा * अब तू क्या तसव्वुर करता है उन तीनों से कौन उस
३७ का जो चोरों में जा पड़ा था पड़ोसी था * वुह बोला वुह जिसने
उस पर रहम किया तब ईसा ने उसे कहा कि जा तू भी
३८ ऐसाही कर * और जब वे सफ़र में थे यूं इत्तिफ़ाक़
हुआ कि वुह एक गांओं में दाख़िल हुआ और एक रंडी ने
३९ जिसका नाम मरसा था उसे अपने घर में उतारा * और
मरयम नाम उस की एक बहिन थी वुह ईसा के पांव पास बैठ
४० के उस का कलाम सुनती थी * तब मरसा बहुत ख़िदमत से
घबराई और उस पास आ के कहा ऐ ख़ुदावंद क्या तू नहीं
सोचता कि मेरी बहिन ने तेरी ख़िदमत मुझ अकेली पर डाली
४१ उसे फ़रमा कि मेरी मदद करे * ईसा ने जवाब दिया और
उसे कहा मरसा ऐ मरसा तू बहुत सी चीज़ों में तरद्दुद और
४२ तकद्दुर करती है * पर एकही चीज़ ज़रूर है और मरयम
ने अच्छा हिस्सः इख़्तियार किया है और वुह उस से फिर

लिया न जायगा *

ग्यारहवां बाब

१ फिर यूं हूआ कि वुह एक जगह दुआ करता था और जों फ़ारिग़ हूआ उस के एक शागिर्द ने उसे कहा कि ऐ ख़ुदावंद हम को दुआ करना सिखला चुनांचिः यह्या ने अपने शागिर्दों
२ को सिखलाया * उस ने उन्हें कहा जब तुम दुआ करो कहो कि ऐ हमारे बाप जो आसमान पर है तेरा नाम मुक़द्दस रहे तेरी सल्तनत आवे तेरा मतलब जैसा आसमान पर ज़मीन
३ में भी बर आवे * हमारी ज़रूरी रोटी हरएक़ हम को दे *
४ और हमारे गुनाहों को अफ़ू कर कि हम आप भी हरएक को जो हमारे देनदार हैं बख़्श देते हैं और हमें इम्तिहान
५ में मत डाल पर हमें शरीर से बचा ले * और उन्हें कहा तुम में से कौन है जिस का एक दोस्त हो और आधी रात को उस पास जाय और उसे कहे ऐ दोस्त तीन रोटियां मुझे उधार दे *
६ कि मेरा एक दोस्त सफ़र से मेरे यहां आ उतरा और मुझ
७ पास कुछ नहीं कि उसे खिलाऊं * और वुह अंदर से जवाब देवे और कहे कि मुझे मत सता कि दरवाज़ः इस दम बंद है और मेरे लड़के मुझ समेत ख़्वाबगाह में हैं मैं उठकर
८ तुझे दे नहीं सकता * सो मैं तुम्हें कहता हूं कि अगरचिः वुह इसलिये कि वुह उसका दोस्त है न उठेगा कि उसे कुछ देवे लेकिन उस की बेशरमी के लिये तो उठेगा और उसे

९ जितनी वुह चाहता है देगा * और मैं भी तुम्हें कहता हूं मांगो कि तुम्हें दिया जायगा ढूंढो कि तुम पाओगे खटखटाओ कि
१० तुम्हारे लिये खोला जायगा * इसलिये कि जो कोई मांगता है लेता है और जो कोई कि ढूंढता है पाता है और जो कोई
११ खटखटाता है उस के लिये खोला जायगा * कौन है तुम में जो बाप हो कर जब बेटा उस से रोटी मांगे वुह उसे पत्थर दे
१२ और अगर मछली मांगे मछली के बदले उसे सांप दे * या
१३ अगर वुह अंडा मांगे वुह उसे बिच्छू दे * पस जब तुम बद होके अच्छे हदये अपने लड़कों को यूं दे जानते हो तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है कितना ज़ियादः अच्छा
१४ उन को जो उस से रूहिल्क़ुद्स मांगते हैं देगा * फिर वुह एक देव को जो गूंगा था उतार ने लगा और ऐसा हूआ कि जब वुह देव निकला वुह गूंगा गोया हूआ और लोग
१५ हैरान हूए * लेकिन उन में से बअज़े बोले कि वुह देवों के सरदार बाअलज़्बूल की कुमक से देवों को भगाता है *
१६ और बअज़ों ने इम्तिहान के लिये उस से आसमानी मुअजिज़ः
१७ तलब किया * तब उसने उनके अंदेशों को दरयाफ़ करके उन्हें कहा जो ममलुकत अपनी मुख़ालफ़त से दो टुकड़े हो वीरान होती है और जो घर यूं ही अपना मुख़ालिफ़ हो गिर पड़ता *
१८ शैतान भी अगर अपनी मुख़ालफ़त में आपसे जुदा हो तो उस की सल्तनत क्यूंकर क़ाइम रहेगी क्यूंकि तुम कहते हो

कि वुह बअलज़बूल की कुमक से देवों को भगाता है *
१९ भला अगर मैं बअलज़बूल की कुमक से देवों को भगाता हूं
तुम्हारे बेटे किसकी कुमक से भगाते हैं इसलिये वे तुम्हारे
२० मुनसिफ़ होंगे * पर अगर मैं खुदा के इशारे से देवों को भगाता हूं
२१ तो बिलाशुबह खुदा की ममलुकत तुमतक आई है * जब
ऐक ज़ोरआवर मर्द हथ्यार लगाये हूए अपने घर की
निगहबानी करता है उस का असबाब सलामत रहता है *
२२ लेकिन जो उस से ऐक ज़ोरावर उसपर चढ़ आवे और उसे
मग़लूब करे तो उस के सब हथयार जिनपर उसे भरोसा
था छीनलेता है और उस के अमवाल को बांट देता है *
२३ जो मेरे साथ नहीं सो मेरा मुख़ालिफ़ है और जो मेरे साथ
२४ जमअ नहीं करता परेशान करता है * जब देवि पलीद
ऐक आदमी में से निकल गया तो सूखे मकानों में चैन
ढूंढता फिरता है और जब नहीं पाता तो कहता है कि
अपने घर में जहां से मैं निकला था फिर जाऊंगा *
२५ और आके उसे झाड़ा साफ़ सुथरा पाता है * (२६) तब वुह
जाके और सात रूहें जो उस से बदतर हैं साथ लाता है
और वे दरआके वहां रहती हैं तब उस शख़्स का पिछला हाल
२७ पहले से बतर होता है * और जब वुह ये बातें फ़रमाता था यूं
हूआ कि उस जमाअत से ऐक रंडी ने बलंद आवाज़ से
कहा ऐ मुबारक वुह पेट जिस में तू पड़ा और वे छातियां

२८ जो तूने पियां * और उस ने कहा कि हां मुबारक तर वे हैं जो ख़ुदा का कलाम सुनते हैं और उसे हिफ़्ज़ करते हैं *
२९ और जब लोग कसरत से जमअ होने लगे उस ने कहना शुरूअ किया कि इस अस्र के लोग शरीर हैं वे निशान ढूंढते हैं पर कोई निशान सिवा यूनस नबी के निशान के उन्हें
३० दिया न जायगा * इसलिये कि जिसतरह यूनस नबियों पर ऐक निशान हूआ इब्नि आदम भी ऐसाही इस क़ौम के
३१ लिये होगा * जनूब की मलिकः रोज़ि जज़ा में इस अस्र के मर्दों के साथ उठेगी और उन्हें मुजरिम करेगी इसलिये कि वुह ज़मीन के अक़्साय अतराफ़ से सुलैमान की हिकमत सुन्ने
३२ आई और देखो ऐक यहां सुलैमान से बुज़ुर्गतर है * अहलि नैनवी रोज़ि जज़ा में इस अस्र के ख़ल्क़ के साथ उठेंगे और उसे मुजरिम करेंगे इसलिये कि उन्हों ने यूनस की मुनादी से तोबः किया और देखो कि ऐक यहां यूनस से बुज़ुर्गतर है *
३३ चिराग़ को रोशन कर के कोई छिपे मकान में या पैमाने तले नहीं रखता बल्कि चिराग़दान पर धरता है ता कि वे जो
३४ अंदर आते हैं रोशनी देखें * बदन का चिराग़ चशम है इसलिये अगर तेरी आंख साफ़ है तेरा सारा बदन भी रोशन है और अगर
३५ नासाफ़ है तेरा सारा बदन भी अंधेरा है * पस होश्यार रह
३६ कि रोशनी जो तुझ में है तारीकी न होजाय * सो अगर तेरा सारा बदन रोशन हो और कोई अज़्व तारीक नहो तो

सारा बदन जैसा तू चिराग़ के नूर से रोशनी पाता है मुनव्वर होगा *
३७ और जब वुह कह रहा था एक फ़रीसी ने उससे दरख़ास्त
कर के कहा कि चल मेरे साथ खा तब वुह अंदर जाके
३८ खाने बैठा * और उस फ़रीसी ने जो देखा कि उसने खाने से
३९ पहले ग़ुस्ल न की तो तअज्जुब किया * तब ख़ुदावंद ने
उसे कहा ऐ फ़रीसियो अब तुम प्याले और बासन को बाहरवार
से साफ़ करते हो पर तुम्हारा बातिन ज़ुलम और शर से भरा
४० हूआ है * ऐ बे अक़्लो आया नहीं यिह कि जिसने बाहर की
४१ तरफ़ बनाई अंदर की भी बनाई * सो तुम उन चीज़ों को जो
उन में हैं ख़ैरात करो और देखो कि सब चीज़ें तुम्हारे लिये
४२ पाक हैं * पर ऐ फ़रीसियो तुम पर वावैला है कि पूदीनः और
सदाब और सब क़िसम की तरकारियों का दसवां हिस्सः
अदा करते हो और अदालत और ख़ुदा की महब्बत से गुज़रते हो
तुम्हें लाज़िम था कि उन्हें करते और उन्हें तर्क न करते *
४३ ऐ फ़रीसियो तुम पर वावैला है कि सदर जागहों को मजमओं में
४४ और सलाम को बाज़ारों में दोस्त रखते हो * ऐ कातिबो और
फ़रीसियो रियाकारो तुम पर वावैला है कि तुम मख़्फ़ी क़बरों के
हो जो देखाई नहीं देतीं और लोग जो ऊपर चलते हैं
४५ वाक़िफ़ नहीं * उस वक़्त एक फ़क़ीह ने जवाब दिया और उसे
कहा कि ऐ उस्ताद यिह कहके तू हमें भी तुफ़ ओ लानत
४६ करता है * उस ने कहा ऐ फ़क़ीहो तुम पर भी वावैला है

कि तुम बोझे जिन का उठाना दुश्वार है लोगोंपर लादते हो।
और तुम आप उन बोझों को अपनी एक उंगली से नहीं छूते *
४७ तुम पर वावैला है कि तुम नबियों की क़बरें बनाते हो
४८ और तुम्हारे आबा ने उन्हें क़तल किया * पस तुम अपने
आबा के फ़िअ़लों पर गवाही देते हो और राज़ी हो इसलिये कि
उन्हों ने उन्हें क़तल किया और तुम उनकी क़बरें बनाते हो *
४९ इसलिये ख़ुदा के फ़हम ने भी कहा कि मैं नबियों और रसूलों को
उन पास भेजूंगा और वे उन में से कितनों को क़तल करेंगे
५० और दुख देंगे * ता कि सब नबियों के ख़ून की जो बिनाए
आ़लम से बहाया गया इस अ़स्र के लोगों से बाज़ख़्वास्त को
५१ जाय * हां हाबील के ख़ून से लेके ज़करया के ख़ून तक जो
मज़बह और हैकल के बीच मारा गया मैं तुम से कहता हूं
इस ज़माने के लोगों से उस की बाज़ख़्वास्त की जायगी *
५२ ऐ फ़क़ीहो तुम पर वावैला है कि तुम ने मअ़रिफ़त की कुंजी
ले ली है तुम आप दाख़िल नहीं होते और उन्हें जो
५३ दाख़िल हूआ चाहते हैं तुम ने बाज़ रखा * और जब वुह
उन्हें ये बातें कहता था कातिब और फ़रीसी उसे बेतरह चिमटे
और बकबक कर के बहुत से मज़मूनों में उसे दबाने लगे *
५४ और उस की घात में लगे और ढूंढते थे कि उस के मुंह से
कोई बात पकड़ पावें ता कि उस पर फ़रयाद करें *

बारहवां बाब

१ उसवक़्त जब बेशुमार लोगों की भीड़ हूई उस कस़रत से कि एक दूसरे को लताड़ता था उस ने अपने शागिर्दों को कहना शुरूअ़ किया कि तुम पहले फ़रीसियों के ख़मीर से जो रयाकारी है परहेज़
२ करो * कि ऐसी कोई चीज़ पोशीदः नहीं जो ज़ाहिर
३ न होवे और न मख़्फ़ी जो जानी न जाय * इस वास्ते जो कुछ कि तुम ने अंधेरे में कहा है उजाले में सुना जायगा और जो कुछ तुम ने ख़ल्वत ख़ानों में गोश बगोश कहा है कोठों पर
४ इज़्हार किया जायगा * और मैं तुम से जो मेरे दोस्त हो कहता हूं कि उन से जो बदन के टुकड़े करते हैं और उस
५ से ज़ियादः कुछ और कर नहीं सकते मत डरो * लेकिन मैं तुम्हें बताऊं तुम किस से डरो तुम उस से डरो जो बदन के टुकड़े करके क़ादिर है कि जहन्नम में डाले हां मैं तुम से
६ कहता हूं कि उस से डरते रहो * क्या दो दमड़ियों की पांच चिड़ियां नहीं बिकतीं पर कोई उन में से ख़ुदा के आगे से ग़ाइब
७ नहीं * बल्कि तुम्हारे सिर के सारे बाल भी गिने हूए हैं इसलिये मत डरो कि तुम बहुत से चिड़ियों से अफ़ज़ल हो *
८ मैं यिह भी तुम्हें कहता हूं जो कोई कि ख़ल्क़ के आगे मेरा इक़रार करेगा इब्नि आदम भी ख़ुदा के फ़िरिश्तों के आगे उस
९ का इक़रार करेगा * और जो कोई ख़ल्क़ के आगे मेरा इनकार करेगा ख़ुदा के फ़िरिश्तों के आगे इनकार किया जायगा *

१० और जो कोई कि इबनि आदम के हक़ में बुरा कलिमः कहेगा वुह उसे बख़्शा जायगा पर जो रूहि क़ुद्स को बुरा कहता है
११ उसकी मग़फ़िरत न होगी * और जब तुम्हें मजमओं में और अरबाबि हुकूमत ओ इख़्तियार के आगे ले आवें अंदेशः न करो कि तुम क्यूंकर और क्या जवाब देगे और किया कहोगे *
१२ इसलिये कि जो तुम्हें चाहिये कि कहो रूहि क़ुद्स उसी
१३ घड़ी तुम्हें सिखावेगा * तब उस जमाअत में से एक ने उसे कहा कि ऐ उस्ताद मेरे भाई को कह कि मुझे मीरास का हिस्सः
१४ दे * उस ने कहा ऐ मर्द तुम पर मुझे किस ने हाकिम
१५ या बटवाने वाला किया * और उन्हें कहा होशयार रहो और लालच से हज़र करो क्यूंकि किसी की ज़िन्दगी उस के
१६ माल की फ़िरावानी से नहीं * फिर उस ने उन्हें एक तमसील कही कि एक दौलतमंद शख़्स की ज़मीन में बहुत कुछ पैदा
१७ होने लगा * तब उस ने अपने दिल में यिह कह के अंदेशः किया कि मैं क्या करूं मेरी जागह नहीं जहां अपनी ज़मीन
१८ का हासिल रखूं * तब उस ने कहा मैं यिह करूंगा मैं अपने खत्ते मिसमार करूंगा और बड़े बनाऊंगा और अपना
१९ हासिल और अमवाल वहां जमअ करूंगा * और अपनी जान से कहूंगा कि ऐ जान तुझ पास बहुत सा माल बरसों के
२० लिये ज़ख़ीरः है चैन कर खा पी ख़ुशी कर * लेकिन ख़ुदा ने उसे कहा ऐ नादान आज रात तुझ से तेरी जान फेर मांगेंगे

२१ पस वे चीज़ें जो तू ने तैयार की हैं किस की होंगी * उसकी
जो अपने लिये माल ज़ख़ीरः करता है और ख़ुदा के नज़दीक
२२ तवंगर नहीं यिह हालत है * फिर उस ने अपने शागिर्दों
से कहा इसलिये मैं तुम से कहता हूं कि अपनी जान के लिये
तरद्दुद न करो कि हम क्या खायेंगे और न तन के लिये कि हम
२३ क्या पहिनेंगे * कि जान खाने से और बदन कपड़े से बिहतर
२४ है * कौवों को देखो कि वे न बोते न काटते हैं उन के
खलियान और खत्ते नहीं और ख़ुदा उन्हें खिलाता है तुम
२५ परिंदों से कितने ज़ियादः बिहतर हो * और कौन तुम में तरद्दुद
२६ करने से अपने क़द को एक हाथ बढ़ा सकता है * पस जब तुम
अदना काम नहीं कर सकते तो बाक़ी के लिये क्यूं फ़िक्रमंद होते
२७ हो * सोसन के फूलों पर नज़र करो क्यूंकर उगते हैं वे मिहनत
नहीं करते और नहीं कातते और मैं तुम्हें कहता हूं कि
सुलैमान अपनी सब हशमत में उन में से एक के मानंद
२८ मुलब्बिस न था * जब ख़ुदा घास को जो आज मैदान में है
और कल तन्नूर में झूकी जायगी यों पहिनाता है तुम्हें कितना
बढ़कर ज़रूर बख़ूबी पहिनायगा ऐ कम इअतिक़ादो *
२९ और तुम तलाश न करो कि हम क्या खायेंगे और हम क्या
३० पीयेंगे मत छटपटाओ * क्यूंकि उन चीज़ों की तलाश अहलि
दुनया करते हैं और तुम्हारा बाप जानता है कि तुम उन सब
३१ चीज़ों के मुहताज हो * बल्कि बेशतर तुम ख़ुदा की सलतनत

की तलाश करो कि ये सब चीज़ें तुम्हारे लिये अफ़्ज़ूद की
३२ जायेंगी * ऐ छोटे गोल मत डर इसलिये तुम्हारे बाप की
३३ रज़ा है वुह ममलुकत तुम्हें बख़्शे * जो कुछ तुम्हारा हो
बेचो और खिरात दो थैलियां जो पुरानी नहीं होतीं और
ख़ज़ानः जो नहीं घटता आसमानों पर जहां चोर नहीं
पहुंचता और कीड़ा ख़राब नहीं करता अपने लिये तैयार करो *
३४ जहां तुम्हारा ख़ज़ानः है तुम्हारा दिल भी वहीं लगा रहेगा *
३५ तुम्हारी कमरें बंधीं होवें और तुम्हारे चिराग़ रोशन रहें *
३६ और तुम तो उन लोगों की मानंद हो जो अपने ख़ुदावंद की
राह देखते हैं कि ब्याह करके कब घर आवेगा ता कि जों
वुह आवे और खटखटावे वे उस के लिये फ़िलफ़ौर खोलें *
३७ नेक बख़्त वे बंदे जिन्हें ख़ुदावंद आकर जागता पाए मैं तुम से
सच कहता हूं कि वुह कमर बांधेगा और उन्हें खाने को
बिठलायगा और साम्हने आके उन की ख़िदमत करेगा *
३८ और अगर वुह दो पहर या तीसरे पहर को आवे और ऐसा
३९ पावे वे बंदे नेकबख़्त हैं * और तुम तो जानते हो कि अगर
घरवाला जानता कि चोर किस घड़ी आयगा तो वुह जागता
४० रहता और अपने घर में सेंध देने न देता * पस तुम भी
तैयार हो जाओ क्यूंकि इबनि आदम ऐसे वक़्त आएगा कि
४१ तुम मुन्तज़िर न होगे * तब पतरस ने उसे कहा कि ऐ
ख़ुदावंद यिह तमसील तू हमें या सब को कहता है *

४२ ख़ुदावंद ने कहा वुह अमानतदार और दाना बकाइज़ कौन है जिसे ख़ुदावंद अपने घराने का मुख़्तार करे कि उन्हें ठीक वक़्त
४३ पर खाने के बख़रे दे * सआदतमंद वुह बंदः जिसे उस का
४४ ख़ुदावंद आके ऐसाही करते पावे * मैं तुम्हें सच कहता हूं कि वुह उसे अपने सब माल ओ असबाब पर मुख़्तार करेगा *
४५ पर अगर वुह बंदः अपने दिल में कहे कि मेरा ख़ुदावंद आने में देर लगाता है और ग़ुलामों और लौंडियों को मारने
४६ और खाने पीने और मस्त रहने लगे * तो उस बंदः का ख़ुदावंद ऐसे रोज़ कि वुह मुन्तज़िर नहो और ऐसे वक़्त कि वुह आगाह नहो आयगा और उसे दो टुकड़े करेगा और उस का हिस्सः काफ़िरों के साथ मुक़र्रर करेगा *
४७ और वुह बंदः जिसने अपने ख़ुदावंद का इरादः जाना और तैयार न हूआ और उस के इरादे के मुताबिक़ न किया बहुत
४८ मार खायगा * पर वुह जिस ने न जाना और मारखाने के काम किये थोड़ी मार खायगा इसलिये कि जिसे बहुत दिया गया है उस से बहुत तलब किया जायगा और जिसे लोगों ने बहुत
४९ सौंपा है उस से वे बहुत मांगेंगे * मैं ज़मीन में आगलगाने आया हूं और मैं क्याही मुश्ताक़ हूं कि अभी लगजाय *
५० और मेरे लिये एक इस्तिबाग़ है जो मुझे पाना है और जब
५१ तक कि वुह मुकम्मिल हो क्या गिरिफ़्तार हूं मैं * क्या तुम ख़ियाल करते हो कि मैं ज़मीन पर सुलह भेजने के लिये

आया हूं मैं तुम्हें कहता हूं नहीं बल्कि बेशतर जुदाई
५२ के लिये आयाहूं * इसलिये कि अबसे पांच एक घर में दो
हिस्सः होंगे तीन मुख़ालिफ़ दो के और दो मुख़ालिफ़ तीन के *
५३ बाप बेटे का अदू और बेटा बाप का अदू होगा मा बेटी की
दुश्मन और बेटी मा की दुश्मन सास बहू की मुद्दई और
५४ बहू सास की मुद्दई होगी * और उस ने यिह भी लोगों को
कहा कि जब तुम बदली मग़रिब से उठती हुई देखते हो वहीं
कहते हो कि मेंह आता है और ऐसाही होता है *
५५ और जब जनूबी हवा चलती है तुम कहते हो गरमी होगी और
५६ यही वाक़िअ होता है * ऐ रियाकारो तुम आसमान ओ
ज़मीन की शक्ल को जांच जानते हो पर क्यूंकर है कि तुम
५७ यिह वक़्त नहीं जांचते * हां और अपने दिलों से क्यूं नहीं
५८ तमीज़ करते हो कि हक़ क्या है * जिस वक़्त तू अपने
मुद्दई के साथ क़ाज़ी कने चला जाता है राह में सई कर कि
तू उस से रिहाई पावे ता न होवे कि वुह तुझे हाकिम कने
खिंचवाये और हाकिम तुझे सरहंग के हवालः करे और
५९ सरहंग तुझे क़ैद में डाल दे * मैं तुझे कहता हूं कि तू वहां
से जबतक कि बाक़ी की दमड़ी अदा न करे न निकलेगा *

तेरहवां बाब

१ उस वक़्त कितने हाज़िर होके उन जलीलियों की ख़बर जिनका
ख़ून पीलातूस ने उन की क़ुरबानियों में मिलाया उस से कहने

२ लगे * और ईसा ने जवाब में उन्हें कहा क्या तुम गुमान करते हो कि ये जलीली सब जलीलियों से ज़ियादः गुनहगार ३ थे कि उन्हों ने इतना दुख पाया * मैं तुम्हें कहता हूं नहीं लेकिन अगर तुम तैाबः न करो तो तुम सब उसी तरह से ४ हलाक होगे * या वे अठारह जिन्हों पर सैलूहा में बुर्ज गिरा और उन्हें हलाक किया क्या तुम गुमान करते हो कि वे ५ और्शलीम के सब बाशिन्दों से ज़ियादः गुनहगार थे * मैं तुम्हें कहता हूं नहीं लेकिन अगर तुम तैाबः न करो तो तुम ६ सब उसी तरह से नाबूद होगे * उस ने यिह तमसील भी कही कि एक शख़्स के बाग़ में अंजीर का एक दरख़्त लगा था वुह आया और तलाश की कि उस दरख़्त में मेवः लगा है ७ और न पाया * तब उस ने अपने बाग़बान से कहा कि देख तीन बरस से इस दरख़्त का मेवः तलाश करता हूं और नहीं पाता उसे काट डाल काहेको ज़मीन उस ने ऐक रखी है * ८ उस ने जवाब में उस से कहा ऐ ख़ुदावंद इस बरस भी उसे रहने दीजिये ता कि मैं उसका थाला खोदूं और उस की जड़ में ९ गोबर भरूं * अगर उस में मेवः लगा तो ख़ैर नहीं तो तब १० उसे काट डालियो * अब ऐक मजमअ में सबत के दिन ११ तअलीम देता था * और देखो वहां ऐक रंडी थी कि वुह अठारह बरस आसेब के सबब से नातवां थी और कुबड़ी १२ हो गई थी और किसी तरह सीधी न हो सकती थी * जो

ईसा ने उसे देखा बुलाया और उसे कहा कि ऐ रंडी तू ने
१२ अपनी नातवानी से ख़लासी पाई * और उस ने अपने हाथ
उस पर रखे और वोंहीं वुह सीधी होगई और ख़ुदा की
१४ सितइश की * और मजमअ का सरदार इस सबब से कि ईसा
ने सबत के दिन शिफ़ा दी ग़ुस्से होकर जमाअत को कहने
लगा कि छः रोज़ हैं जिन में लोगों को काम करना रवा है
इसलिये तुम उन्हीं दिनों में आकर चंगे हो न कि सबत के
१५ दिन * तब ख़ुदावंद ने जवाब दिया और उसे कहा ऐ रियाकार
क्या हरएक तुम में से सबत के दिन अपने बैल और गधे को
थान से नहीं खोलता और पानी पिलाने नहीं ले जाता *
१६ और क्या रवा न था कि यिह रंडी इबराहीम की बेटी जिसे
शैतान ने देखो कि अठारह बरस से बांध रखा था सबत के दिन
१७ उस बंद से खोली जाय * और जब वुह ये बातें कहने लगा
उस के सब मुख़ालिफ़ पशेमान हूए और सारी जमाअत उनसब
ख़ुशनुमा कामों के लिये जो उस ने किये थे शाद हूई *
१८ फिर उस ने कहा कि ख़ुदा की ममलुकत किस से मुशाबिह है और
१९ मैं उसे किस से तशबीह दूं * यिह राई के दाने के मानंद है
जिसे एक मर्द ने लेके अपने बाग़ में बोया और वुह उगा
और बड़ा दरख़्त हूआ और परिन्दों ने उस की शाख़ों पर बसेरा
२० किया * फिर उस ने कहा कि मैं ख़ुदा की सलत्नत को किस से
२१ तशबीह दूं * यिह ख़मीर की मानंद है जिसे एक रंडी ने

तीन सेर आटे में छिपा दिया और वुह सब ख़मीर होगया *
२२ अब वुह शहर बशहर और दिह बदिह सैर करता हूआ
और तअलीम देता हूआ औरशलीम को चला जाता था *
२३ तब एक ने उसे कहा ऐ खुदावंद क्या वे जो नजात पाएंगे
२४ थोड़े हैं * उस ने उन्हें कहा कि जां फ़िशानी करो कि
तंग दरवाज़े से दाख़िल हो कि मैं तुम से कहता हूं बहुतेरे
२५ चाहेंगे कि उस से दाख़िल हों पर क़ादिर न होंगे * जब
साहिबि ख़ानः उठा और दरवाज़ः बंद किया तुम बाहर खड़े
होके दरवाज़ः खट खटा ने लगोगे और कहोगे कि ऐ खुदावंद
हमपर खोल तो वुह जवाब देगा और तुम्हें कहेगा मैं तुम्हें
२६ नहीं जानता तुम कहां के हो * तब तुम कहने लगोगे कि
हमने तेरे हुज़ूर खाया पीया है और तू ने हमारे बाज़ारों
२७ में तअलीम दी है * तब वुह कहेगा मैं नहीं जानता तुम
२८ कहां के हो ऐ बद किरदार मुझ पास से दूर रहो * और
वहां जब देखोगे कि इबराहीम और इसहाक़ और यअक़ूब
और सब नबी खुदा की सलतनत में हैं और तुम बाहर
निकाले जाते हो तब वहां रोना और दांत किच किचाना होगा *
२९ और मशरिक़ और मग़रिब और शिमाल और जुनूब से आवेंगे
३० और खुदा की ममलुकत में बैठेंगे * और देखो कितने ही
३१ पिछले आगे होंगे और कितने ही अगले पीछे * उसी रोज़ बअज़े
फ़रीसियों ने आके उसे कहा कि रवानः हो और यहां से

३२ चलाजा कि हीरूदीस तुझे क़तल किया चाहता है * उसने उन्हें कहा कि तुम जाकर उस लोमड़ी से कहो कि देख मैं देवों को भगाता हूं और आज और कल चंगा करलेता हूं और तीसरे दिन
३३ कामिल हूंगा * लेकिन मुझे ज़रूर है कि आज और कल और परसों सैर कर लूं इसलिये कि यिह नहीं होसकता कि नबी
३४ औरशलीम के बाहर हलाक होवे * औरशलीम ऐ औरशलीम जो नबियों को क़तल करती है और उन्हें जो तुझ पास भेजे गये हैं संगसार करती है कितने बार मैंने चाहा कि तेरे फ़रज़न्दों को जिसतरह से कि मुरग़ी अपने बच्चों को परों तले लेती है जमअ़ करूं
३५ पर तुमने न चाहा * देखो तुम्हारे लिये तुम्हारा घर उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुन्हें सच कहता हूं तुम मुझे न देखोगे मगर जिसवक़्त कहोगे मुबारक है वुह जो ख़ुदा के नाम से आता है *

चौदहवां बाब

१ और यूं हूआ कि जब वुह सबत के दिन सरदारि फ़रीसियों में से खाने को एक के घर गया वे उस की निगहबानी करने लगे *
२ और देखो कि वहां उसके साम्हने एक शख़्स था जिसे
३ इस्तिसक़ा था * तब ईसा ने मुतवज्जिह होकर फ़क़ीहों और फ़रीसियों से कहा कि आया सबत के दिन चंगा करना रवा है *
४ वे चुप रहे उस ने उसे लिया और शिफ़ा देकर रवानः किया *
५ और उनकी तरफ़ मुंह फेर के कहा कौन है तुम में जिसका एक गधा या बैल सबत के दिन कूऐ में गिर पड़ा हो और वुह

६ फ़िलफ़ौर उसे न निकाले * तब वे उन बातों का जवाब उसे
७ न देसके * और उस ने मिहमानों को जब देखा कि वे
क्यूंकर सदर जागहों को पसंद करते हैं फ़रमाया और यिह
८ तमसील कही * कि जब तू किसी के यहां मिहमानी में
बुलाया जावे सदर मकान में मत बैठ ता न होवे कि उस ने किसी
९ शख़्स को जो तुझ से बुज़ुर्ग तर है दअ़वत की हो * और
वुह जिस ने तेरी और उसकी दअ़वत की है आवे और तुझे
कहे कि यिह जगह उस शख़्स को दे और तू शरमिंदगी से
१० फ़रोतर जगह पाने लगे * बल्कि जब तेरी दअ़वत की जाय
जाकर फ़रोतर जागह बैठ ता कि जब वुह जिस ने तेरी दअ़वत
की है आवे तो तुझे कहे कि ऐ दोस्त बालातर आ तब तू
उनके आगे जो तेरे साथ खाने को बैठे हैं इज़्ज़त पावेगा *
११ कि जो कोई आप को बलंद करता है पस्त किया जायगा और
जो अपने तईं पस्त करता है बलंद किया जायगा *
१२ फिर उसने अपने दअ़वत करने वाले से कहा कि जब तू
चाश्त या शाम का खाना तैयार करे तू अपने दोस्तों को और
अपने भाइयों को और अपने रिश्तःदारों को और तवंगर
हमसायों को मत बुला ता न होवे कि वे भी तेरी मिहमानी करें
१३ और तेरा बदला होजाय * बल्कि जब तू मिहमानी करे तू
१४ मिस्कीनों को टुंडों को लंगड़ों को अंधों को बुला * कि तू
नेक बख़्त होगा क्यूंकि वे तेरा बदला नहीं करसकते और तू

१५ परहेज़गारों के हश्र में बदला पायेगा * मिहमानों में से
एक ने ये बातें सुनकर उसे कहा नेकबख़्त वुह है जो
१६ ख़ुदा की सलतनत में खाना खाय * तब उस ने उसे कहा
एक शख़्स ने उमदः खाने पकवाये और बहुतों की दअवत की *
१७ और खाने के वक़्त अपने ख़ादिम को भेजा कि उनसे जिन की
१८ दअवत थी कहे कि आओ अब सब चीज़ें तैयार हैं * उन सभों ने
मिलके उज़र ख़्वाही शुरूअ की पहले ने उसे कहा मैंने
ज़मीन का एक क़ितअ ख़रीदः है और ज़रूर है कि मैं जाऊं
और उसे देखूं मैं अरज़ करता हूं तू मुझे मुआफ़ रख *
१९ दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं उन्हें जांचने
२० जाता हूं मैं अरज़ करता हूं तू मुझे मुआफ़ रख * तीसरे ने कहा
२१ मैं ने जोरू की है इसलिये मैं आ नहीं सकता * चुनांचिः उस
ख़ादिम ने हाज़िर होके अपने आक़ा को यिह ख़बर दी
तब साहिबि ख़ानः ने ग़ुस्से होके अपने ख़ादिम से कहा कि
शहर के बाज़ारों और कूचों में जल्द जा और आजिज़ों
२२ और टुंडों और लंगड़ों और अंधों को यहां ला * फिर
ख़ादिम ने कहा कि ऐ ख़ुदावंद तू ने जो हुक्म किया था उसके
२३ मुताफ़िक़ कियागया पर अभी जगह है * तब आक़ा ने
ख़ादिम को कहा कि रस्तों और इहातों की तरफ़ जा और
उन्हें ताकीद कर कि आवें ता कि मेरा घर भरजाय *
२४ क्यूंकि मैं तुझे कहता हूं कोई उन लोगों में से जिनकी

२५ दअ़वत की गई थी मेरा खाना चखने न पायगा * अब बहुत सी
२६ जमाअ़तें उस के साथ चली जाती थीं * तब उस ने उधर
फिर के कहा जो मुझ पास आवे और अपने बाप और मा
और जोरू और लड़के और भाइयों और बहिनों का बल्कि
अपनी जान का भी दुश्मन न होवे वुह मेरा शागिर्द हो
२७ नहीं सकता * और जो कोई अपनी सलीब को उठा नहीं
लेता और मेरी पैरवी करता है मेरा शागिर्द हो नहीं
२८ सकता * क्यूंकि कौन है तुम में जो ऐक बुर्ज की तअ़मीर
का इरादः करके पहले बैठे और ख़रच का हिसाब नकरे कि आया
२९ वुह उसे तमाम कर सकेगा * ता कहीं ऐसा नहो कि वुह
नेव डालकर तमाम करने पर क़ादिर नहो और देखने वाले
३० उसपर हंसने लगें * और कहें कि उस मर्द ने तअ़मीर शुरूअ़
३१ की और तमाम करने पर क़ादिर न हूआ * और कौनसा
बादशाह है कि जब दूसरे बादशाह से लड़ने चले तो पहले
बैठके मश्वरः न करले कि आया वुह दस हज़ार लेके क़ादिर है
कि उस का जो बीस हज़ार से उसके मुक़ाबिल आता है साम्हना
३२ करे * और नहीं तो वुह उसी वक़्त कि दूसरा हनोज़ दूर हो
३३ पैग़ाम भेजकर सुलह का ईमा करे * इसी तरह जो कोई
तुम में से आप को अपने असबाब की बंद से न छुड़ावे मेरा शागिर्द
३४ हो नहीं सकता * नमक अच्छा है पर अगर नमक का मज़ः
बिगड़ जाय तो किस चीज़ से उस की इस्लाह की जायगी *

३५ वुह न ज़मीन के और न गोबर के काम का है लोग उसे फेंक देते हैं जिस के कान सुन्ने के हों सुनले*

पंद्रहवां बाब

१ फिर सब ख़िराजगीर और गुनहगार उसके नज़्दीक आये कि
२ उसकी सुनें * और फ़रीसियों और कातिबों ने कुड़कुड़ा के कहा कि यिह मर्द गुनहगारों को आने देता है और उनके
३ साथ खाता है * तब उस ने उनसे यिह तमसील कही *
४ कि तुम में से कौन है जो सौ गोसपंद का मालिक हो अगर उन में से ऐक खो जाय आया नहीं कि वुह निनानवे को मैदान में छोड़ता है और जबतक उस गुमशुदः को नहीं पाता उसकी
५ तलाश में पड़ा फिरता है * और पाके ख़ुश ख़ुशवक़्त अपने
६ कांधे पर उठा लाता है * और घर में आकर दोस्तों और हमसायों को इकट्ठे बुलाता है और उन्हें कहता है कि मेरे साथ ख़ुशी करो इसलिये कि मैं ने अपना गोसपंद जो गुम
७ हूआ था पाया है * मैं तुम्हें कहता हूं कि इसी तरह से आसमान पर ऐक गुनहगार के लिये जो तौबः करे निनानवे रास्तबाज़ों की निसबत से जो तौबः के मुहताज नहीं ज़ियादः
८ ख़ुशी होगी * और कौन रंडी है जिस पास दस दिरहम हों अगर ऐक दिरहम खो दे आया नहीं कि वुह चिराग़ जलाती है और घर में झाड़ू देती है और जबतक न पाये पड़ी
९ ढूंढा करती है * और जब पाती है तो दोस्तों और पड़ोसियों को

दिरहम बुला के कहती है कि मेरे साथ ख़ुशी करो इसलिये कि
१० मैं ने वुह दिरहम जो गुम हूआ था पाया है * इसी तरह से
मैं तुम्हें कहता हूं कि ख़ुदा के फ़िरिश्तों की हुज़ूरी में ऐक
गुनहगार के लिये जो तौबः करता है ख़ुशी होती है *
११ फिर उसने फ़रमाया ऐक शख़्स के दो बेटे थे * (१२) उन में
से छुटके ने बाप से कहा कि ऐ बाप माल से जो मेरा हिस्सः
हो मुझे दीजे तब उस ने बक़द्रि मआश उन्हें बांट दिया *
१३ और बहुत रोज़ न गुज़रे थे कि छुटके बेटे ने सब कुछ जमअ
करके ऐक मुल्कि बईद का सफ़र किया वहां बदमआशी में
१४ अपना माल बरबाद करदिया * और जब वुह सब कुछ ख़रच
कर चुका उस सरज़मीन में सख़्त काल पड़ा और वुह बेमायः
१५ हो चला * तब वुह जाके उस मुल्क के ऐक मुतवत्तिन का
नौकर बना उस ने उसे अपने खेतों पर भेजा कि सूअर
१६ चराया करे * और उसे आरज़ू थी कि उन छिलकों से जो
सूअर खाते थे अपना पेट भरे सो भी किसी ने उसे न दिये *
१७ और जब वुह अपने होश में आया तो कहा कि मेरे बाप
के कितने ही मज़ूरे हैं जिन्हें रोटियां वाफ़िर हैं और मैं
१८ भूख से मरता हूं * मैं उठकर अपने बाप पास जाऊंगा और
उसे कहूंगा कि ऐ बाप मैं आसमान का और तेरा गुनहगार
१९ हूं * और अब इसलाइक़ नहीं कि तेरा बेटा कहलाऊं
२० मुझे अपने मज़ूरों में से ऐक के मानंद बनाइये * तब वुह उठकर

अपने बाप पास आया और वुह् हनोज़ दूर था कि उस के
बाप ने उसे देखा और रहम किया और दौड़के उस की गर्दन
२१ पर जा लपटा और उस की मच्छियां लीं * बेटे ने उसे कहा
कि ऐ बाप मैंने आसमान का और तेरा गुनाह किया है इस
२२ लाइक़ नहीं कि तेरा बेटा कहलाऊं * तब बाप ने अपने
नौकरों को कहा अच्छी से अच्छी पोशाक लाओ और इसे
मुलब्बस करो और उसके हाथ में अंगोठी और पांओं में जूती
२३ पहनाओ * और वुह् पाला हूआ बछड़ा लाके क़बह्
२४ करो कि हम खावें और आनंद करें * क्यूंकि मेरा यिह्
बेटा मरगया था अब ज़िंदः हूआ खोया गया था सो मिला तब
२५ वे ऐश करने लगे * अब उस का बड़ा बेटा मैदान में था
वुह् जों आया और घर के नज़्दीक पहुंचा तो राग नाच की
२६ आवाज़ सुनी * और नौकरों में से ऐक को बुला के पूछा कि
२७ आज क्या है * उस ने उसे कहा कि तेरा भाई आया है
और तेरे बाप ने पाला हूआ बछड़ा क़बह् किया इसलिये कि
२८ उस ने उसे सहीह् सलामत पाया * वुह् ग़ुस्से हूआ और
न चाहता था कि अंदर जाय तब उस के बाप ने निकल के उसे
२९ मनाया * उसने जवाब में बाप से कहा कि देख मैं इतने
बरसों से तेरी ख़िद्मत करता हूं और हरगिज़ कभी मैंने तेरे हुक्म
से उदूल न किया और तू ने हलवान भी मुझे कभी न दिया कि
३० मैं अपने दोस्तों के साथ ख़ुशी करता * और तेरा यिह् बेटा

जिस ने तेरी दौलत रंडीबाज़ी में उड़ाई ज्योंही आया वुहीं तूने
३१ उस के लिये पला हूआ बछड़ा ज़बह किया * उस ने उसे कहा कि बच्चे तो हमेशः मेरे साथ है और जो कुछ कि
३२ मेरा है तेरा है * पर खुश और खुर्रम होना लाज़िम था इसलिये कि तेरा यिह भाई मरगया था और फिर के जीआ और खोया गया था सो फिर मिला *

सोलहवां बाब

१ और उस ने अपने शागिर्दों से यिह भी कहा कि ऐक तवंगर शख़्स था जिस का ऐक ख़ानसामां था जिस पर उसके आगे तुहमत
२ की गई कि वुह उसका अमवाल बरबाद करता है * उस ने उसे बुलाकर कहा यिह जो मैं तेरे हक़ में सुनता हूं क्या है अपनी ख़ानसामी का हिसाब दे कि तू ख़ानसामां रह न सकेगा *
३ तब ख़ानसामां ने अपने दिल में कहा कि मैं क्या करूं कि मेरा खुदावंद ख़ानसामानी मुझ से लेता है मैं ज़मीन खोद नहीं
४ सकता और गदाई करूं तो शरम आती है * मैं खूब समझता हूं क्या किया चाहिये कि जब मैं ख़ानसामानी से मअज़ूल
५ हूं मुझे अपने घरों में लेजाऐं * तब उस ने अपने आक़ा के हरऐक क़रज़दार को बुला कर पहले को कहा कि मेरे आक़ा का
६ तुझपर कितना क़रज़ है * उस ने कहा कि तेल के सौ पैमाने तब उस ने उसे कहा कि अपनी बही ले और जल्द बैठकर पचास
७ लिख * फिर उस ने दूसरे से कहा और तुझ पर कितना क़रज़ है

उस ने कहा कि गेहूं के सौ पैमाने उस ने उसे कहा अपनी
८ बही ले और अस्सी लिख * फिर ख़ुदावंद ने उस बदज़ात
ख़ानसामां की इतने लिये कि उस ने होश्यारी की तअरीफ़ करके
कहा कि अबनाय ज़मान अपने हाल में नूर के फ़रज़न्दों से
९ दानातर हैं * और मैं तुम्हें कहता हूं कि दौलत से जो गंदी
है अपने लिये दोस्त पैदा करो ता कि जब तुम बेमक़दूर हो
१० वे तुम्हें अबद की आबादियों में आने दें * जो कि थोड़े
में अमीन है बहुत में भी अमीन है और जो कि थोड़े में
११ ख़ाइन है बहुत में भी ख़ाइन है * इसलिये अगर तुम गंदी
दौलत में दियानतदारी न करो तो मालि हक़ को तुम्हारे सुपुर्द
१२ कौन करेगा * और अगर तुम मालि ग़ैर में दियानतदारी न करो
१३ तो तुम्हें तुम्हारा अपना माल कौन देगा * कोई नौकर दो
आक़ाओं की ख़िदमत कर नहीं सकता इसलिये कि वुह
या एक से दुश्मनी और दूसरे से दोस्ती रखेगा या वुह पहले से
उलफ़त और दूसरे की इहानत करेगा तुम ख़ुदा और ममून
१४ की परस्तिश नहीं कर सकते * फ़रीसियों ने भी जो ज़र दोस्त थे
१५ सब बातें सुनीं और उसे ठट्ठों में उड़ाया * तब उस ने उन्हें
कहा तुम वे हो जो अपनी रास्तबाज़ी ख़ल्क़ को दिखाते हैं
लेकिन ख़ुदा तुम्हारे दिलों का आरिफ़ है इसलिये कि जो चीज़
ख़ल्क़ के आगे बहुत अज़ीज़ है ख़ुदा की नज़र में मकरूह
१६ है * शरीअत और नबुव्वतें यह्या तक थीं उसी वक़्त से ख़ुदा की

सलतनत की बशारत दी जाती है और हरऐक मर्द उस में
१७ दाख़िल होने को ज़ोर जताता है * और आसमान और ज़मीन
का टलजाना उस से आसान तर है कि ऐक शोशः शरीअत
१८ में से घट जाय * जो कोई अपनी जोरू को तलाक़ दे और दूसरी
से निकाह करे ज़िना करता है और जो कोई उस से जिसे
शौहर ने तलाक़ दिया निकाह करे ज़िना करता है *
१९ ऐक दौलत मंद था जो इरग़वानी और महीन पोशाक पहनता
था और हररोज़ शान ओ शौकत से ऐश ओ इशरत करता
२० था * और लआज़र नाम ऐक फ़क़ीर था जिसे उसके दरपर
२१ फेंक गये थे और उस का सारा बदन फूटा हूआ था * उस को
आरज़ू थी कि टुकड़े जो उस मर्द तवंगर के दस्तरख़ान से गिरते
थे खावे और कुत्ते आते थे और उस के घाओं को चाटते थे *
२२ ऐसा हूआ कि फ़क़ीर मरगया फ़िरिश्तों ने उसे ले जाके इबराहीम
की गोद में दिया वुह शख़्स तवंगर भी मरगया और गाड़ा
२३ गया * और उस आलम में आंखें उठा कर आप को अज़ाब
में पाया और जहन्नम में अपनी आंखें खोलकर दूर से
इबराहीम के तेईं लआज़र को गोद में लिये हूऐ देखा *
२४ तब वुह चिल्लाके बोला कि ऐ बाप इबराहीम मुझ पर रहम
कर और लआज़र को भेज ता अपनी सरि अंगुश्त को पानी में
डुबोके मेरी ज़बान को ठंडा करे कि मैं इस शुअले में कलपता हूं *
२५ इबराहीम ने कहा कि बेटा याद कर कि तू ने अपनी ज़िन्दगी

में अपने ऐश का सामान पाया और लआज़र ने मुसीबतें उठाईं सो वुह अब तसल्ली पाता है और तू अज़ाब में है *
२६ और सिवा उनसब के हम में और तुम में एक बड़ा उसलार गार दरमियान है कि वे जो इधर से तुम तक जाया चाहते हैं गुज़र नहीं सकते और न वे जो उधर हैं हमतक इसपार
२७ आसकते हैं * तब उस ने कहा पस ऐ बाप मैं तेरी मिन्नत
२८ करता हूं तू उसे मेरे बाप के घर भेज * कि मेरे पांच भाई हैं ता कि वुह उन्हें जता दे मबादा वे भी इस अज़ाब के
२९ मक़ाम में आवें * इबराहीम ने उसे कहा उन पास मूसा और
३० अंबिया हैं चाहिये कि वे उनकी सुनें * वुह बोला कि नहीं ऐ बाप इबराहीम कि अगर कोई मुरदों मेंसे उन पास जाय
३१ तो वे तौबः करेंगे * तब उस ने उसे कहा कि अगर वे मूसा और अंबिया की न सुनें तो हरगिज़ अगरचिः एक मुरदों मेंसे उठे कभी पन्द पिज़ीर न होंगे *

सतरहवां बाब

१ फिर उस ने शागिर्दों से कहा कि ठोकर खिलाने वालों का न आना मुहाल है पर उस पर जिस के साये आवें वावैला
२ है * अगर चक्की का पाट उस की गर्दन में लटकाया जाता और वुह दरया में फेंक दिया जाता तो उस के लिये उससे बिहतर होता कि वुह उन सग़ीरों में से एक को ठोकर
३ खिलावे * अपनी ख़बरदारी करो अगर तेरा भाई तेरी तक़सीर

करे उसे मलामत कर अगर वुह तौबः करे उसे बख़्श दे *

४ और अगर वुह एक दिन में सात बार तेरी तक़सीर करे और सातबार एक दिन में तुझ पास फिर आवे और कहे कि मैं

५ तौबः करता हूं उसे बख़्शना * तब हवारियों ने ख़ुदावंद से

६ कहा कि हमारे इअतिक़ाद को ज़ियादः कर * ख़ुदावंद ने कहा अगर तुम्हें इतना ही जैसे राई का एक दानः यक़ीन होता तो जो तुम उस गूलर के दरख़्त से कहते कि जड़ से उखड़ और दरया में लग जा वुह तुम्हारा हुक्म मानता *

७ और कौन तुम में है जिसका एक नौकर हल जोता या मवाशी चराता हो जोंहीं वुह मैदान से आवे उसे कहे कि जा और

८ खाने बैठ * और उसे न कहे कि शाम का खाना मेरे लिये तैयार कर और कमर बांधके जबतक कि मैं खा पी चुकूं मेरी

९ ख़िदमत कर और उस के बअद तू खा और पी * क्या वुह उस ख़ादिम की शुक्र गुज़ारी करता है इसलिये कि उस ने वे काम जो उसे फ़रमाये गये थे किये मैं बावर नहीं करता *

१० सो इसी तरह से तुम भी जब उन कामों को जो तुम्हें फ़रमाये गये हैं करो तो कहो कि हम निकम्मे बंदे हैं क्यूंकि जो

११ हम पर वाजिब था कि करें हम ने किया * और यूं हूआ कि वुह औरशलीम को जाते हूए सामरियः और

१२ जलील के बीच से गुज़रा * और एक गांव में दाख़िल होते

१३ उसे दस कोढ़ी जो दूर खड़े हूए थे मिले * और वे चिल्लाये

१४ कि ऐ ईसा ऐ आग़ा हम पर रहम कर * उसने देखके
उन्हें कहा जाकर अपने तईं काहिनों को दिखलाओ और
१५ यूं वाक़िअ हूआ कि वे चलते हूऐ साफ़ पाक होगये * उन में से
ऐक ने जब देखा कि शिफ़ा पाई बलंद आवाज़ से ख़ुदा की
१६ सिताइश करता हूआ उलटा फिरा * और उस के क़दमों
पास उस की शुक्रगुज़ारी करता हूआ औंधा गिरा और वुह
१७ सामरी था * तब ईसा ने जवाब में कहा क्या दसों चंगे नहीं हूऐ
१८ फिर वे नौ कहां हैं * सो सिवा उस परदेसी का कोई न पाया गया
१९ जो ख़ुदा की सिताइश के लिये फिरे * फिर उसने उसे कहा
२० कि उठजा तेरे इअतिक़ाद ने तुझे सिहत बख़्शी * और जब
फ़रीसियों ने उस से पूछा कि ख़ुदा की सलतनत कब आवेगी
तब उस ने उन्हें जवाब दिया और कहा कि ख़ुदा की सलतनत
२१ इनतिज़ारी से नहीं आती * वे न कहेंगे देखो यहां और देखो वहां
२२ इसलिये कि देखो ख़ुदा की सलतनत तुम्हारे बीच में है * और
उस ने शागिर्दों से कहा वे ऐयाम आवेंगे कि तुम तमन्ना करोगे कि
२३ इबनि आदम के दिनों में से ऐक को देखो और न देखोगे * और
तुम्हें कहेंगे देखो यहां या देखो वहां मत जाइओ और पैरवी न कीजियो
२४ * इसलिये कि जैसे बिजली जो आसमान के तले ऐक सिम्त से
चमककर आसमान की दूसरी तरफ़ तक रोशन करती है इबनि
२५ आदम भी अपने दिन में ऐसा ही होगा * लेकिन पहले
ज़रूर है कि वुह बहुत से रंज खेंचे और इस अस्र की क़ौम से

२६ ख़्वार किया जावे * और जैसा नूह के ऐयाम में हूआ था इबनि
२७ आदम के दिनों में भी ऐसा ही होगा * जिस दिन तक कि नूह
किश्ती पर चढ़ा और तूफ़ान आया और सब को हलाक किया
२८ वे खाते थे वे पीते थे जोरूआं करते थे वे व्याही जाती थी * और जिस
तरह से लूत के ऐयाम में था वे खाते थे पीते थे ख़रीदते थे वेचते
२९ थे बोते थे बिना करते थे * और उसी दिन कि लूत सदूम से
निकल गया आसमान से आग और गंधक बरसी और सब को
३० हलाक किया * जिस दिन कि इबनि आदम ज़ाहिर होगा
३१ ऐसे ही होगा * उस दिन के बीच वुह जो कोठे पर होगा
और उसकी जिनस घर के बीच में उसके लेने को नीचे न आवे
३२ और वैसेही वुह जो मैदान में होगा वुह फिर न फिरे * लूत
की जोरू को याद करो (३३) जो कोई यिह तलाश करेगा
कि अपनी जान बचाय उसे गंवायगा और जो कोई अपनी
३४ जान गंवायेगा उसे बचायेगा * मैं तुम्हें कहता हूं उसरात दो जो ऐक
३५ बिस्तर पर होंगे ऐक पकड़ा जायगा दूसरा छुट जायगा * दो जो
३६ मैदान में होगे ऐक पकड़ा जायगा ऐक छुट जायगा * दो रंडियां
मिलके चक्की पीसती होंगी ऐक पकड़ी जायगी और दूसरी छुट
जायगी * और उन्हों ने जवाब दिया और उसे कहा कहां ऐ ख़ुदावंद
उसने उन्हें कहा कि जहां मुरदार है गिद्ध वहीं जमअ होंगे *

अठारहवां बाब

१ फिर उस ने उनसे उस इरादे पर कि लोगों को मुनासिब है

कि हमेशः दुआ करें और कहालत न करें एक तमसील
२ कही * एक शहर में एक क़ाज़ी था जो न ख़ुदा से डरता
३ न ख़ल्क़ से शरमाता था * और उसी शहर में एक बेवः थी वुह
उस पास कहती हुई आई कि मेरे दुश्मन से मेरा बदलः
४ ले * और उस ने कुछ देर तक न चाहा पर बअ़द उस के
अपने दिल में कहा कि अगरचिः मैं ख़ुदा से नहीं शरमाता *
५ लेकिन इसलिये कि यिह बेवः मुझे तसदीअ़ देती है मैं उसका
बदला लूंगा ता नहोवे कि वुह हर वक़्त आके मेरा मग़ज़
६ खावे * फिर ख़ुदावंद ने कहा देखो कि उस ज़ालिम क़ाज़ी
७ ने क्या कहा * ख़ुदा क्या अपने बरगुज़ीदों का जो दिन रात
उस पास फ़रयाद करते हैं अगरचिः वुह उन के साथ तहम्मुल
८ करता है इनतिक़ाम नलेगा * मैं तुम्हें कहता हूं कि वुह झट
पट उनका बदला लेगा नहीं तो क्या इबनि आदम आकर
९ जहान में ईमान पायेगा * फिर उस ने बअ़ज़ों के लिये जो
अपनी रास्तबाज़ी के मुअ़तक़िद थे और औरों की तहक़ीर
१० करते थे यिह तमसील कही * दो शख़्स हैकल में दुआ
११ करने गये एक फ़रीसी और दूसरा ख़िराजगीर * फ़रीसी ने
अकेले खड़े होकर यिह दुआ की कि ऐ ख़ुदा मैं तेरा शुक्र
करता हूं कि मैं जैसे और लोग सितम करने वाले ज़ालिम
१२ ज़ानी या जैसा यिह ख़िराजगीर है ऐसा नहीं हूं * मैं हफ़्ते
में दोबार रोज़ः रखता हूं मैं हर चीज़ की जो मेरी है दह

१३ यही देता हूं * और उस ख़िराजगीर ने दूर खड़े होके इतना भी नचाहा कि आंख उठाके आसमान की तरफ़ देखे बल्कि यही कह कह अपनी छाती पीटता था कि ऐ ख़ुदा मुझ गुनहगार
१४ पर तरह्हुम कर * मैं तुम्हें कहता हूं कि यिह शख़्स उस दूसरे की निसबत रास्तबाज़ ठहर के अपने घर गया इसलिये कि जो कोई अपने तईं बलंद करता है पस्त किया जायगा
१५ और जो आप को फरोतन करता है बलंद किया जायगा * फिर वे लड़कों को भी उस पास लाये ता कि वुह उन्हें छूऐ पर
१६ शागिर्दों ने यिह देख के उन्हें डांटा * तब ईसा ने उन्हें बुलाके कहा कि छोटे लड़कों को मुझ पास आने दो और उन्हें मनअ न करो इसलिये कि ख़ुदा की सलतनत ऐसों ही की है *
१७ मैं तुम से सच कहता हूं जो कोई लड़के की तरह ख़ुदा की सलतनत को क़बूल नकरेगा किसी तरह उस में दाख़िल नहोगा *
१८ और सरदारों में से ऐक ने उस से यिह सुवाल किया कि ऐ अच्छे उस्ताद मैं क्या करूं ता कि हयाति अबदी का वारिस
१९ हूं * ईसा ने उसे कहा तू मुझे अच्छा क्यूं कहता है
२० अच्छा कोई नहीं मगर ऐक यअ़ने ख़ुदा * तू ये अहकाम जानता है कि ज़िना न कर क़तल न कर चोरी न कर झूठी
२१ गवाही मत दे अपने मा बाप की तकरीम कर * उस ने कहा
२२ मैंने लड़कपन से उन्हें हिफ़ज़ किया है * सो ईसा ने ये बातें सुनकर उसे कहा हनोज़ तुझ में ऐक चीज़ बाक़ी है

जो कुछ तुह्ह पास है सब बेचडाल और मिसकीनों को बंट दे कि तू आसमान पर गंज पायगा और इधर आ और मेरे पीछे
२३ हो ले * वुह यिह सुनकर बहुत मग़मूम हूआ क्यूंकि बड़ा
२४ मालदार था * ईसा ने उसे बहुत मग़मूम देखके कहा उन के लिये जो मालदार हैं क्या मुश्किल है कि खुदा की ममलुकत
२५ में दाख़िल होवें * कि सूई के नाके में ऊंटका दरआना उस से आसानतर है कि एक मर्द तवंगर खुदा की ममलुकत में
२६ दाख़िल हो * और वे जिन्हों ने सुना बोले फिर कौन नजात
२७ पा सकता है * उस ने कहा जो चीज़ें कि ख़ल्क़ के आगे
२८ मुहाल हैं खुदा के पास मुमकिन हैं * तब पतरस ने कहा देख
२९ हमने सब छोड़ा और तेरी पैरवी की * उस ने उन्हें कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि ऐसा कोई शख़्स नहीं जिस ने घर या मा बाप या भाइओं या जोरू या लड़कों को खुदा की ममलुकत
३० के लिये छोड़ा हो * जो इस ज़माने में बहुत से दो चंद और
३१ जहांनि आयंदे में हयाति अबदी न पावे * फिर उस ने बारह को साथ लेकर उन्हें कहा कि देखो हम औरशलीम को जाते हैं और सब चीज़ें जो इबनि आदम के हक़ में नबियों की मअ़रिफ़त
३२ लिखी गई हैं पूरी होंगीं * इसलिये कि वुह अवाम के हवाले किया जायगा लोग उस से ठट्ठे करेंगे और उस पर ज़बरदस्ती
३३ करेंगे और उस के मुंह पर थूकेंगे * और उसे कोड़े मारके
३४ क़तल करेंगे और तीसरे दिन वुह फिर उठेगा * और वे

उन बातों से कुछ न समझे और यिह कलाम उन पर पोशीदः रहा उन्हों ने उन बातों को जो कही गई थीं हरगिज़
३५ न जाना * और यों हूआ कि जब वुह अरीहा के नज़्दीक
३६ आया ऐक अंधा शख़्स राह में बैठा भीख मांगता था * और जमाअत को गुज़रते हूऐ सुन के उस ने पूछा क्या है *
३७ उन्हों ने उसे इत्तिलाअ दी कि ईसाय नासिरी गुज़रता है *
३८ तब वुह चिल्लाया कि ऐ दाऊद के बेटे ईसा मुझ पर रहम
३९ कर * उन्हों ने जो आगे चलते थे उसे डांटा कि चुप रहे पर वुह और भी ज़ियादः चिल्लाया कि ऐ दाऊद के बेटे
४० मुझ पर रहम कर * तब ईसा खड़ा रहा और हुक्म किया कि उसे आगे लावे जब वुह नज़्दीक आया तो उस से पूछा *
४१ कि तू क्या चाहता है मैं तुझ से क्या करूं वुह बोला ऐ
४२ ख़ुदावंद मैं अपनी बीनाई फिर पाऊं * तब ईसा ने उसे कहा अपनी बीनाई पा तेरे इअतिक़ाद ने तुझे रिहाई बख़्शी *
४३ और उस ने फ़िल्फ़ौर बीनाई पाई और ख़ुदा की सिताइश करता हूआ उस के पीछे हो लिया और सारी जमाअत ने यिह देखके ख़ुदा की सना की *

उन्नीसवां बाब

१ और अरीहा में दाख़िल होकर निकल चला (२) और देखो कि ज़क्की नाम ऐक शख़्स ने जो ख़िराजगीरों में सरदार और
३ दौलतमंद भी था * चाहा कि ईसा को देखे कि वुह कौन

है पर हुजूम के सबब न देख सका कि वुह कोतह क़द था *
४ तब वुह आगे दौड़ के गूलर के एक दरख़्त पर उसे देखने चढ़ा
५ कि वुह उधरी से गुज़रने को था * और जों ईसा उस जगह
आया तो ऊपर नज़र कर के उसे देखा और कहा कि ज़क्की
जल्दी कर के उतर क्यूंकि ज़रूर है कि मैं आज तेरे घर
६ रहूं * वुह जल्दी उतरा और ख़ुशी से उस का इस्तिक़बाल
७ किया * और उनसब ने यिह देख कर शोर मचाया और
कहा कि वुह एक गुनहगार के घर मिहमान जाता है *
८ और ज़क्की ने खड़े होके ख़ुदावंद से कहा कि ऐ ख़ुदावंद
देख मैं अपना आधा माल मिसकीनों को देता हूं और अगर
मैंने झूठी तुहमत करके किसी से कुछ लिया है उसका चौगुना
९ इवज़ देता हूं * तब ईसा ने उसे कहा कि आज इस घर में
सलामती आई इसलिये यिह भी इबराहीम का बेटा है *
१० कि इबनि आदम आया है ता कि उसे जो गुम हुआ है
११ ढूंढे और बचावे * और जब वे ये बातें सुन रहे थे उस ने
इसलिये कि वुह औरशलीम से नज़्दीक था और वे जानते
थे कि ख़ुदा की सलतनत जलद देखाई पड़ेगी अलावः एक
१२ तशबीह फ़रमाई और इरशाद किया * कि एक मर्दि शरीफ़
ने मुल्कि बईद का सफ़र किया कि सलतनत अपने क़बज़े में
१३ लावे और फिर आवे * तब उस ने अपने दस ख़ादिमों को
बुलाकर दस अशरफ़ियां उन्हें सौंपीं और कहा जबतक मैं

१४ फिर आऊं सैादागरी करे * पर उस के हम शहरी उस से अदावत रखते थे सो उन्हें ने उस के पीछे पयाम भेजा कि
१५ हम नहीं चाहते कि यिह हम में सलतनत करे * और यूं हूआ कि जब वुह सलतनत लेके फिर फिरा उस ने हुक्म कर के उन ख़ादिमों को जिन्हें अशरफ़ियां सैांपी थीं बुलाया
१६ ता दरयाफ़ करे कि उन में से किस ने क्या कमाया * तब पहले ने हाज़िर होके कहा कि ऐ ख़ुदावंद तेरी अशरफी ने
१७ दस अशरफियां पैदा कीं * उस ने उसे कहा आफ़रीं ऐ अच्छे ख़िदमतगुज़ार कि तू बहुत थोड़े में अमानतदार निकला
१८ दस शहरों पर मुख़ारी कर * दूसरे ने आके कहा कि ऐ ख़ुदावंद
१९ तेरी अशरफ़ी ने पांच अशरफ़ियां पैदा कियां * और उस ने वैसही उसे कहा कि तू भी पांच शहरों पर सरदारी कर *
२० तीसरे ने आके कहा ऐ ख़ुदावंद देख अशरफ़ी है जो मैंने
२१ रूमाल में बांध रखी है * इसलिये कि मैं तुझ से डरा कि तू सख़ आदमी है जो तूने नहीं रखा लेता है और जो तूने नहीं
२२ बोया काटता है * तब उस ने उसे कहा कि ऐ बुरे नैाकर मैं तेरही कहने के मुताबिक़ तेरी अदालत करूंगा तूने मुझे जाना कि सख़ आदमी हूं जो मैंने नहीं रखा लेता हूं और
२३ जो मैंने नहीं बोया काटता हूं * पस तू ने मेरे रूपे महाजन के कोठी में क्यूं न भेजदिये कि मैं बुद आके अपना माल सूद
२४ समेत लेता * फिर उस ने उन्हें जो हाज़िर थे कहा कि

उस से वुह अशरफ़ी छीन लो और उसे जिस कने दस
२५ अशरफ़ियां हैं दो * तब उन्हों ने उसे कहा ऐ ख़ुदावंद उस
२६ पास तो दस अशरफ़ियां हैं * सो मैं तुम्हें कहता हूं जिस
पास है उसे दिया जायगा और जिस पास कुछ नहीं उस से
२७ कुछ भी जो उस का है ले लिया जायगा * बाक़ी मेरे उन
दुशमनों को जो न चाहते थे कि मैं उनका हाकिम हूं यहां
२८ लाओ और मेरे साम्हने क़तल करो * जब वुह यूं कह चुका
२९ तो औरशलीम की सिम्त को आगे बढ़ा * और यूं हूआ
कि जब वुह बैति फ़जा और बैति ऐना के नज़दीक ऐक
पहाड़ तक जो कोहि ज़ैतून कहलाता था पहुंचा उस ने अपने
३० शागिर्दों में से दो को यिह कह के भेजा * उस गांव में
जो साम्हने है जाओ तुम उस में दाख़िल होते हूए ऐक
कुरऐ ख़र जिस पर अबतक कोई शख़्स नहीं चढ़ा बंधा पाओगे
३१ उसे खोल के ले आओ * और अगर कोई शख़्स तुम से पूछे
कि तुम क्यूं खोलते हो तुम उसे यों कहियो कि ख़ुदावंद उसका
३२ मुहताज है * उन्हों ने जो भेजेगये थे रवानः होकर जैसा
३३ उस ने उन्हें कहा था पाया * और जब वे उस कुरऐ ख़र को
खोल ने लगे उस के मालिकों ने उन्हें कहा कि तुम इस
३४ कुरऐ ख़र को क्यूं खोलते हो * वे बोले कि ख़ुदावंद इसका
३५ मुहताज है * और वे उसे ईसा पास लाये और अपने
कपड़े उस कुरऐ ख़र पर डाल के ईसा को उस पर बिठलाया *

३६ और जब वुह चल निकला उन्हों ने अपने कपड़े राह में
३७ बिछाये * और जब वुह कोहि ज़ैतून के दामन तक पहुंचा
उस के शागिर्दों की सारी जमाअत ने उन सारे मुअजिज़ों के
लिये जो उन्हों ने देखे थे खुशी से बआवाज़ि बलंद खुदा की
३८ सिताइश की * कि मुबारक यिह बादशाह जो खुदावंद के
नाम से आता है आसमान पर सलामत और आलमि बाला पर
३९ मजद तमाम * गरोह में से बअज़े फ़रीसियों ने उस को कहा कि
४० ऐ उस्ताद अपने शागिर्दों को डांट * उस ने जवाब दिया और
उन्हें कहा मैं तुम्हें कहता हूं कि अगर ये नबोलते तो ये
४१ पत्थर इसी दम पुकारते * और जब वुह नज़दीक आया
और उस की निगाह उस शहर पर पड़ी उस पर रोया और
४२ कहा * काश कि तू उन ऐयाम में जो तेरे थे उन बातों को जो
तेरी सलामती की हैं जानती पर अब वे तेरी आंखों से
४३ पिनहां हैं * क्यूंकि तुझ पर वे दिन आएंगे कि तेरे
दुशमन तेरे गिर्द खंदक़ खोदें और तेरे आस पास मुहासिरः
४४ करेंगे और हर सू से तुझे घेर लेंगे * और तुझे तेरे लड़कों
के साथ जो तुझ में हैं ज़मीन से बराबर करेंगे और वे तुझ में
एक पत्थर पत्थर पर नछोड़ेंगे इतने लिये कि तू ने उसवक़्त को जब
४५ तुझ पर तवज्जुह होता था पहचान न लिया * तब हैकल में
दाख़िल हो कर उन्हें जो उस में ख़रीद फ़रोख़्त करते थे
४६ कहके निकाल ने लगा * कि लिखा यिह है कि मेरा घर

इबादत का घर है पर तुमने उसे चोरों का ग़ार बनाया *
४७ और हैकल में रोज़मर्रः तअलीम देता था तब सरदारि
काहिनों और कातिबों और क़ौम के सरदारों ने उस के क़तल की
४८ फ़िक्र की * और पाते न थे कि क्या करें इसलिये कि सारी
जमाअत उस के सुन्ने पर ध्यान रखती थी *

बीसवां बाब

१ उन्हीं दिनों में एक रोज़ जब वुह हैकल में लोगों को
सिखलाता था और बशारत देता था यूं हूआ कि सब सरदारि
२ काहिन और कातिब मशाइख़ के साथ चढ़ आये * और उसे
कहा कि हम से कह तू किस इक़तिदार से ये काम करता
३ है और तेरा इक़तिदार बख़्शने वाला कौन है * उस ने जवाब
दिया और उन्हें कहा मैंभी तुम से एक बात पूछता हूं मुझे
४ जवाब दो * यहया का इस्तिबाग़ आसमान से था या ख़ल्क़
५ से * तब वे दिल में सोचे कि अगर हम कहें आसमान
से तो वुह कहेगा फिर तुम उस के मुअतक़िद क्यूं नहूए *
६ और अगर हम कहें ख़ल्क़ से सारी जमाअत हमें संगसार
७ करेगी क्यूंकि वे यक़ीन रखते हैं कि यहया नबी था * तब
उन्हों ने जवाब दिया कि हम नहीं जानते कहां से है *
८ ईसा ने उन्हें कहा मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किस
९ इक़तिदार से ये काम करता हूं * फिर वुह गरोह से यिह
तमसील कहने लगा कि एक शख़्स ने ताकिस्तान लगाया

और उसे बाग़बानों के सुपुर्द किया और एक मुद्दत के लिये
१० सफ़र किया * और मौसिम पर उस ने एक ख़ादिम को बाग़बानों
पास भेजा ता कि वे ताकिस्तान का कुछ मेवः उसे दें लेकिन
११ बाग़बानों ने उसे मार के ख़ाली हाथ भेजा * उस ने फिर
दूसरा ख़ादिम रवानः किया उन्हों ने उसे भी मार के और
१२ रुसवा करके ख़ाली फिर उलटा फेरा * उस ने फिर तीसरे
को भेजा उन्हों ने उसे भी ज़ख़मी करके निकाल दिया *
१३ तब ताकिस्तान के मालिक ने कहा मैं क्या करूं मैं अपने
अज़ीज़ बेटे को भेजूंगा शायद कि वे उसे देख कर दब
१४ निकलें * पर बाग़बानों ने जो उसे देखा तो आपस में मश्वरत
की कि यिह वारिस है आओ इसे क़तल करें ता कि मीरास
१५ हमारी हो जाय * चुनांचिः उन्हों ने उसे ताकिस्तान से
बदर किया और क़तल किया पस अब ताकिस्तान का मालिक
१६ उन से क्या करेगा * वुह आवेगा और उन बाग़बानों को
जान से मारेगा और ताकिस्तान औरों को देगा उन्हों ने
१७ सुन के कहा ऐसा न होवे * तब उस ने उन की तरफ़ घोरके
कहा कि फिर यिह क्या है जो लिखा गया है कि वुह
पत्थर जिसे मिअ़मारों ने पसंद न किया वही कोने का सिरा
१८ हूआ * जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा चकना चूर हो जायगा
१९ और जिस पर वुह गिरेगा उसे पीस डालेगा * तब सरदार
काहिनों और कातिबों ने चाहा कि उसी वक़्त उस पर हाथ

डालें पर जमाअत से डरे कि जानते थे उस ने यिह तमसील
२० उस के हक़ में कही थी * फिर वे निगहबानी करने लगे
और जासूसों को जो अपने तईं मक्र से रास्तबाज़ बनाते थे
भेजा कि उस के कलाम पर गिरिफ़ करें ता कि वे उसे हाकिम
२१ के क़बज़े और इख़तियार में कर दें * फिर उन्हों ने उस से
यिह कहके सुवाल किया कि ऐ उस्ताद हम जानते हैं तू
हक़ कहता और सिखलाता है रूदारी पर नज़र नहीं करता
२२ बल्कि रास्ती से ख़ुदा की राह बताता है * आया हमारे लिये
२३ रवा है कि जिज़िये क़ैसर को दें या नहीं * पर उस ने उनकी
दग़ाबाज़ी दरयाफ़ कर के उन से कहा कि तुम मुझे क्यूं आज़माते
२४ हो * एक दीनार मुझे दिखलाओ उस पर किसकी सूरत
२५ और किस का सिक्कः है वे जवाब में बोले क़ैसरी है * तब
उस ने उन्हें कहा पस जो चीज़ें कि क़ैसर की हैं क़ैसर को
२६ दो और जो चीज़ें ख़ुदा की हैं ख़ुदा को * ओर वे जमाअत
के आगे उस की बातें पकड़ न सके और उस के जवाब में
२७ हैरान होके चुप रहगये * तब ज़ादूक़ियों से जो क़ियामत
२८ के मुनकिर हैं बअज़ों ने पास आके उस से पूछा * कि ऐ
उस्ताद मूसा ने हमारे लिये लिखा कि अगर किसी शख़्स का
भाई जोरू छोड़ के लावलद मरजाय तो उस का भाई उसकी
जोरू को लेवे ता कि अपने भाई के लिये औलाद पैदा
२९ करे * अब सात भाई थे पहला जोरू करके लावलद मरगया *

३० दूसरे ने उस की जोरू ली वुह भी लावलद मरगया *
३१ फिर तीसरे ने उसे लिया और इसी तरह से सातों ने और
३२ वे सब बिग़ैर फ़रज़न्द छोड़े मरगये * सब के बअ़द वुह रंडी
३३ भी मरी * पस क़ियामत में वुह किसकी जोरू होगी क्यूंकि
३४ वुह सातों की जोरू थी * तब ईसा ने जवाब में उन्हें
कहा कि इस जहान के लड़के व्याह करते हैं और व्याह
३५ दिये जाते हैं * लेकिन वे जो उस के लाइक़ जाने गये
हैं कि इस जहांन में और क़ियामत में शरीक हों न व्याह
३६ करते हैं न व्याह दिये जाते हैं * और वे फिर मर नहीं
सक्ते क्यूंकि वे फ़िरिश्तों के बराबर हैं और क़ियामत के लड़के
३७ होकर खुदा के फ़रज़न्द हैं * और मूसा ने भी बूतः के तज़करे
में जहां खुदावंद को इबराहीम का खुदा और इसहाक़ का खुदा
और यअ़कूब का खुदा कहा मुर्दों के उठ ने का भी इशारः
३८ किया है * इसलिये कि वुह तो मुर्दों का नहीं पर ज़िन्दों
३९ का खुदा है कि सब उस की निसबत से जीते हैं * तब
बअ़ज़े कातिबों ने जवाब में उसे कहा कि ऐ उस्ताद तूने
४० खूब कहा * और बअ़द उस के उन्हों ने जुरअत न की कि
४१ उस से कुछ पूछें * और उस ने उन्हें कहा कि क्यूंकर
४२ कहते हैं कि मसीह दाऊद का बेटा है * और दाऊद ज़बूर
की किताब में खुद कहता है कि खुदावंद ने मेरे खुदावंद
४३ को कहा * जब तक कि मैं तेरे दुशमनों को तेरे पांव

४४ रबन की चौकी करूं तू मेरे दहने हाथ बैठजा * पस दाऊद तो उसे ख़ुदावंद कहता है फिर वुह उस का बेटा ४५ क्यूंकर है * फिर जमाअत के सुनते हूए उस ने अपने शागिर्दों ४६ से कहा * कातिबों से हज़र करो जो लंबे ख़िरक़ों में सैर चलने के मुश्ताक़ हैं और बाज़ारों में सलाम अलैका के और मजमओं में बालातर मक़ामों के और मिहमानियों में सदर ४७ जागहों के आशिक़ हैं * वे बेवों के घरों को निगल जाते हैं और दिखाने के लिये नमाज़ों को तूल देते हैं उन्हीं को ४८ ज़ियादःतर अज़ाव होगा *

इक्कीसवां बाब

१ उस ने नज़र दौड़ा के देखा कि दौलतमंद लोग बैतुलमाल में २ अपनी ख़ैरात डालते हैं * और एक कंगाल बेवः भी देखी ३ जिस ने उस में दो अद्धियां डालीं * तब उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस मुफ़लिस बेवः ने उन सब से ४ ज़ियादः डाला * इसलिये कि उन सब ने ख़ुदा की नज़र के लिये अपने मालि फ़िरावां से डाला उस ने अपनी कम बिसात से ५ बल्कि अपनी सब मआश डाली * और जिस वक़्त बअज़े हैकल के हक़ में कहते थे कि यिह क्याही नफ़ीस पत्थरों और ६ तुह्फ़ों से आरास्त की गई है * उस ने कहा इन चीज़ों से जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे जब एक पत्थर पत्थर पर ७ न छूटेगा जो गिराया न जायगा * तब उन्हों ने उस से सुवाल

किया कि ऐ उस्ताद यिह सब कब होगा और उस इत्तं
८ का जब यिह होने पर होगा क्या निशान है * उस ने कहा
ख़बरदार हो कि तुम दग़ा नखाओ कि मेरे नाम से बहुतेरे
आके कहेंगे कि मैं वही हूं और वुह वक़्त नज़दीक है
९ पस तुम उनकी पैरवी नकिजियो * लेकिन जब तुम लड़ाइयों
और फ़सादों की चीख़ें सुनो घबरा नजाइयो कि इन सब का
१० पहिले होना ज़रूर है पर इनतिहा हनोज़ नहीं * फिर
उस ने उन्हें कहा उम्मत पर उम्मत और ममलुकत पर ममलुकत
११ ख़ुरूज करेगी * और अकसर मक़ामों में शिद्दत के ज़लज़ले
आवेंगे और वबाएं होंगीं और काल पड़ेंगे और हौलनाक
१२ ख़ियाल और बड़ी अलामतें आसमान से नमूद होंगीं * लेकिन
सब वाक़िओं से पेशतर वे तुम्हें मेरे नाम के सबब पकड़ेंगे और
दुख देंगे मजमओं और क़ैदख़ानों में हवाले करके बादशाहों
१३ और हाकिमों के हुज़ूर ले जायेंगे * और अनजाम यिह
१४ तुम्हारे लिये गवाही ठहरेगी * पस अपने दिलों में ठान लो
१५ कि आगेसे अंदेशः नकरो कि हम क्या जवाब देंगे * इसलिये
कि मैं तुम्हें ध्यान औ दानिश दूंगा कि तुम्हारे सब दुशमन
१६ बोलने या साम्हना करने पर क़ादिर नहोंगे * और मा बाप
१७ और भाई और ख़ेश और दोस्त तुम्हें पकड़वा देंगे * और
तुम में से बअज़ों को क़तल करवायेंगे और मेरे नाम के सबब
१८ सब तुमसे दुशमनी पैदा करेंगे * पर तुम्हारे सिर के एक

१९ वाल को ज़रर न पहुंचेगा * अपने सबर से अपनी जानें ले रहो *
२० और जब तुम देखो कि औरशलीम को लशकरों ने घेरा
२१ तो जानो कि उस की वीरानी नज़दीक है * तब वे जो यहूदियः
में हों पहाड़ों को भागें और वे जो उस के बीच में हों बाहर
निकल जाएं और वे जो बेहूं जात में हों उस में दाख़िल न
२२ हों * क्यूं कि वे दिन इनतिक़ाम लेने के और सब नवश्ते पूरे होने
२३ के ऐयाम हैं * पर उन पर जो उन रोज़ों में पेटवालियां और
दूध पिलातियां हों अफ़सोस है कि ज़मीन पर बहुत रंज
२४ और उस क़ौम पर ग़ज़ब होगा * और वे तलवार की धार से
गिर जावेंगे और सारी क़ौमों के असीर होंगे और जबतक अवाम
का वक़्त कमाल को पहुंचे अक़वामि औरशलीम को पामाल
२५ करेंगे * और सूरज और चांद और सितारों में अजाइब दिखाई
देंगे और ज़मीन पर अक़वाम घबराहट में गिरिफ़्तार होंगे
२६ और दरया का और मौजों का शोर होगा * ख़ल्क़ के दिल मारे
दहशत के और उन वाक़िओं की जो ज़मीन पर आने वाले हैं राह
तकने से घटजायेंगे इसलिये कि आसमान की क़ूवतें हिल जायेंगी *
२७ और उस वक़्त इबनि आदम को बदली पर तवानाई और बड़ी
२८ हशमत से आते हूए देखेंगे * और जब उन वाक़िओं का होना
शुरूअ हो तो सीधे हो बैठो और अपने सिर ऊपर को उठाओ
२९ इसवास्ते कि तुम्हारी ख़लासी नज़दीक है * फिर उसने उन्हें एक
३० तमसील कही अंजीर की और सब दरख़्तों की दीद करो * जब

उनकी कोंपलें निकलती हैं तुम देखके आप से जानते हो कि
३१ अब ताबिस्तान नज़्दीक है * सो इसी तरह तुम भी जब उन
चीज़ों को वाक़िअ होते देखो जानो कि ख़ुदा की सल्तनत नज़्दीक
३२ है * मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबतक कि सब पूरा न होले
३३ यिह पुश्त गुज़र न जायगी * आसमान और ज़मीन टल जायेंगे
३४ लेकिन मेरी बातें न टलेंगीं * अपने से होश्यार रहो ऐसा न हो
कि तुम्हारे दिल किसी अख़्फ़ुदगी और सरमस्ती और मआश की
फ़िक्रों से भारी हों और वुह दिन तुम पर अचानक आजाय *
३५ इस लिये कि वुह जाल की तरह तमाम रूएज़मीन के सब बाशिन्दों
३६ पर आ जायगा * इसवास्ते तुम बेदार रहके नित दुआ करते रहो
ता कि तुम उसके लाइक़ गिने जाओ कि उन चीज़ों से जो वाक़िअ
३७ होंगीं बच निकलो और इब्नि आदम के हुज़ूर खड़े हो * और
वो वुह हैकल में तअलीम करता था और शब को चला जाता था
और पहाड़ पर जो कोहि ज़ैतून कहलाता है शब बाश होता था *
३८ और सुब्ह को तड़के सब लोग हैकल में उस पास आते थे ता कि
उससे सुनें *

बाईसवां बाब

१ अब नानि फ़तीरी की ईद जो फ़सह कहलाती है क़रीब आई *
२ और सरदारि काहिन और कातिब फ़िक्र में थे कि उसे क्यूंकर
३ क़त्ल करें कि वे गरोह से डरते थे * तब शैतान यहूदा में
जिसका लक़ब अस्करयूती था जो उन बारह में गिना जाता था

४ दर आया * और उसने जाके सरदारि काहिनों और अमीरों से
५ गुफ़्‌गू की कि उसे क्यूंकर उन के हवाले करे * तब वे
६ खुश हूए और उस से रुपै देने का अहद किया * और
उस ने वअदः किया और क़ाबू ढूंढता था कि उसे गरोह की
७ ग़ैबत में उन के हवाले करदे * तब ईदि फ़तीर का दिन
८ जिस में क़ुरबाहि फ़सह ज़रूर था आ पहुंचा * और उस ने
पतरस और यूहन्ना को यिह कहके भेजा कि जाओ और
९ हमारे वास्ते फ़सह तैयार करो ता कि हम खावें * उन्हों ने
उसे कहा किस जगह तू चाहता है कि हम तैयार करें *
१० उसने उन्हें कहा देखो जब तुम शहर में दाख़िल होगे वहां एक
शख़्स पानी की ठिलिया उठाये तुम से दोचार होगा उसके पीछे
११ उस घर तक जिस में वुह जाय चले जाओ * और साहिबि
ख़ानः से कहो कि उस्ताद तुझे फ़रमाता है वुह मिहमान सरा
जहां मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह खाऊं कहां है *
१२ वुह तुम्हें एक बड़ा बालाख़ानः मफ़रूश दिखा देगा वहां तैयार
१३ करो * उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन्हें कहा था पाया और
१४ फ़सह तैयार किया * और जब वुह वक़्त पहुंचा तो वुह बारह
१५ हवारियों को अपने साथ लेके जा बैठा * और उन्हें कहा
कि मैं ने बहुत चाह के ख़्वाहिश की कि मैं मौत का दुख उठाने से
१६ पेशतर यिह फ़सह तुम्हारे साथ खाऊं * इसलिये कि मैं तुम से
कहता हूं कि मैं यिह फिर कभी नखाऊंगा मगर जब कि

१७ वुह ख़ुदा की ममलुकत में मुकम्मल होवे * और उस ने पियालः लिया और शुक्र करके कहा कि इसे लो और आपस में बांट लो *
१८ कि मैं तुम्हें कहता हूं जबतक कि ख़ुदा की ममलुकत आवे
१९ मैं शीरए अंगूर न पीऊंगा * फिर उस ने रोटी उठा ली और शुक्र करके तोड़ी और उन्हें देके यिह कहा कि यिह मेरा बदन है जो तुम्हारे वास्ते दिया जाता है मेरी यादगारी के
२० लिये ऐसा किया करो * इसी तरह से पियालः भी खाने के बअ़द देके कहा कि यिह पियालः वुह नया अ़हदः है जो मेरे लोहू से मुवस्सक़ हूआ और वुह तुम्हारे लिये बहाया जाता है *
२१ वाक़ी देखो मेरे पकड़वाने वाले का हाथ मेरे साथ दस्तर ख़्वान
२२ पर है * और इबनि आदम जैसा के मक़दूर हूआ जाता है लेकिन उस शख़्स पर जिसके सबब वुह पकड़वाया जाता है
२३ वावैला है * तब वे आपस में पुरसिश करने लगे कि हम में
२४ वुह जिस से यिह काम होगा कौन है * और उन में यिह मुनाज़रः भी हूआ कि उन में कौन सब से बड़ा निकलेगा *
२५ तब उस ने उन्हें कहा कि अक़वाम के बादशाह उन पर ख़ुदावंदी करते हैं और वे जो उन पर सलतनत करते हैं
२६ ख़ुदावंद निअ़मत कहलाते हैं * लेकिन तुम ऐसा नकरो बल्कि तुम में जो सब से बड़ा है छोटे के मानंद और मख़दूम
२७ ख़ादिम के मसल होवे * इसलिये कि बड़ा कौन है वुह जो खाने पर बैठा है या वुह जो ख़िदमत करता है क्या वुह नहीं

जो बैठा है लेकिन मैं तुम्हारे बीच ख़ादिम के मानंद हूं *
२८ तुम हो वे जो मेरे इमतिहानों में नित मेरे साथ रहे *
२९ जिस तरह मेरे बाप ने मेरे लिये ममलुकत मुक़र्रर की मैं तुम्हारे
३० लिये मुक़र्रर करता हूं * ता कि तुम मेरी ममलुकत में मेरे
दस्तरख़ान पर खाओ और पीओ और मसनदों पर बैठ के
३१ इसराईल के बारह फ़िरक़ों की अदालत करो * और ख़ुदावंद ने
कहा शमऊन ऐ शमऊन देख कि शैतान ने चाहा है कि
३२ तुम्हें गेहूंओं की तरह फटके * लेकिन मैंने तेरे लिये दुआ
मांगा है कि तेरा ईमान ज़ाइल नहो और आख़िर जब तू
३३ बाज़ आवे अपने भाईओं को क़ाइम कर * तब उस ने उसे
कहा ऐ ख़ुदावंद मैं तेरे साथ क़ैदख़ाने में बल्कि अदम में
३४ जानेको तैयार हूं * उस ने कहा कि ऐ पतरस मैं
तुझे कहता हूं कि आज जबतक तू तीन मरतबः इनकार नकरे
३५ कि मुझे नहीं जानता मुर्ग़ बांग नदेगा * फिर उस ने उन्हें
कहा जब मैंने तुम्हें बेकीसः और बेतोशःदान और बे नअ़लैन
भेजा था क्या तुम किसी चीज़ के मुहताज हूए थे वे बोले
३६ किसी चीज़ के नहीं * तब उस ने उन्हें कहा लेकिन अब
जिस पास थैली हो या तोशःदान हो उसे ले ले और
जिस पास नहो अपनी पोशाक बेचे और तलवार मोल ले *
३७ क्यूंकि मैं तुम्हें कहता हूं ज़रूर है कि ऐक और नविश्तः
यअ़ने वुह बदों में गिना गया मेरे हक़ में पूरा होवे इसलिये

कि वे चीज़ें जो मेरे लिये हैं अंजाम को पहुंचे हैं *
३८ तब उन्हों ने कहा ऐ खुदावंद देख यहां दो तलवारें
३९ हैं उस ने उन्हें कहा बस है * फिर वुह बाहर निकल के
अपनी आदत पर कोहि ज़ैतून को गया और उस के शागिर्द
४० भी उस के पीछे हो लिये * जब वुह उस जगह पहुंचा
४१ तो उन्हें कहा दुआ करो कि इमतिहान में न पड़ो * फिर वुह
उन से एक तीर पुरताब दूर गया और घुटने टेक के
४२ दुआ की * और कहा कि ऐ बाप अगर तेरी मरज़ी हो
तो इस पियाले को मुझ से गुज़ार लेकिन न मेरी ख़्वाहिश बल्कि तेरी
४३ ख़्वाहिश वाक़िअ हो * तब आसमान से एक फ़िरिश्ते ने ज़ाहिर
४४ होकर उसे क़ुव्वत दी * और जैसे जांकनी में आके उसने ज़ियादः
कशमकश से दुआ की और उसका पसीना ऐसा दहा जैसा लहू के
४५ थक्के जो ज़मीन पर गिरते हैं * और वुह दुआ से फ़ारिग़ होके
अपने शागिर्दों पास आया और उन्हें ग़मगीनी से सोते पाया *
४६ तद उसने उन्हें कहा कि तुम क्यूं सोते हो उठो और दुआ करो
४७ ता नहोवे कि तुम इम्तिहान में पड़जाओ * और जिस वक़्त वुह
यिह कह रहा था देखो एक जमाअत देखाई दी उन बारह में
से वही एक जो यहूदा कहलता था उनका पेशवा था वही ईसा
४८ का बोसः लेनेको नज़दीक आया * तब ईसा ने उसे कहा कि
४९ ऐ यहूदा तू इब्नि आदम को बोसः से पकड़वाता है * और
उन्हों ने जो उसके पास थे जो कुछ कि होनहार था देख कर उसे

५० कहा कि ऐ ख़ुदावंद हम तलवार चलावें * और उन में से ऐक ने
सरदारि काहिन के ख़ादिम को लगाई और उसका दहना कान
५१ उड़ादिया तब ईसा ने मुतवज्जिह होकर फ़रमाया कि बस अब
सबर करो और उसकी कन पट्टी को छूके उस शख़्स को चंगा किया *
५२ फिर ईसा ने सरदारि काहिनों और हैकल के मुजाविरों और
मशाइख़ को जो उस पास आये थे कहा कि तुम तलवारें और
५३ लाठियां लेकर जैसे चोर पकड़ने को निकले हो * जब मैं रोज़मर्रः
हैकल में तुम्हारे साथ होता था तुम ने मुह पर हाथ न बढ़ाया
५४ लेकिन यिह तुम्हारी साअत और तारीकी का ग़लबः है * तब
उन्हों ने उसे पकड़ के आगे धरलिया और सरदारि काहिन के
५५ घर लेआये और पतरस दूर से उसके पीछे लगा गया * और जब
उन्हों ने घर के बीच में आग सुलगाई और मिल के बैठे तो
५६ पतरस भी उन में बैठ गया * तब ऐक लौंडी ने उसे आग पास
बैठे देखा और ग़ौर से उस पर निगाह करके कहा कि यिह शख़्स
५७ भी उस के साथ था * उसने उसका इनकार किया और कहा कि
५८ ऐ रंडी मैं उसे नहीं जानता * थोड़ी देर पीछे ऐक दूसरे आदमी
ने उसे देखा और कहा कि तू भी उन में से है तब पतरस ने
५९ कहा ऐ मर्द में नहीं हूं * और क़रीब ऐक साअत के बअद ऐक
और ने ताकीद से कहा यक़ीनन यिह भी उसके साथ था इस
६० लिये कि यिह जलीली है * तब पतरस ने कहा ऐ मर्द मैं नहीं
जानता तू क्या कहता है * वुह कहताही था कि मुर्ग ने बांग

६१ बांग दी * तब ख़ुदावंद ने मुतवज्जिह होकर पतरस पर निगाह की और पतरस को ख़ुदावंद का कलाम याद आया कि उसने उसे यों फ़रमाया था कि मुर्ग़ के बांगदेने से पेशतर तू
६२ तीन मरतबः मेरा इनकार करेगा * तब पतरस बाहर गया
६३ और ज़ार ज़ार रोया * और जिन लोगों ने ईसा को
६४ पकड़ा था उसे ठठ्ठों में उड़ाते हूए मारने लगे * और उसकी आंखें बंद करके उस के मुंह पर तमाचे मारे और उस से सवाल किया कि नबूवत से ख़बर दे यिह कौन है जो तुझे
६५ तमाचे मारता है * और कुफ़्र के और बहुत से कलिमे
६६ उस के हक़ में कहे * औ जों दिन हूआ क़ौम के मशाइख़ और सरदारि काहिन और कातिब इकठ्ठे आये और उसे अपनी
६७ महफ़िल में लेजाके कहा * कि आया तू मसीह है हमें कह उस ने उन्हें कहा अगर मैं तुम्हें कहूं तुम बावर
६८ न करोगे * और अगर मैं पूछों भी तुम मुझे जवाब न दोगे
६९ और न छोड़ोगे * बअ़द उस के इबनि आदम ख़ुदा की
७० क़ुवत के दहने हाथ बैठा रहेगा * तब सब ने कहा पस तू क्या ख़ुदा का बेटा है उस ने उन्हें कहा तुमही कहते हो
७१ कि मैं हूं * उन्हों ने कहा अब हमें गवाही क्या दरकार है इसलिये कि हम ने उस के मुंह से सुना है *

तेईसवां बाब

१ तब सारी जमाअ़त उठके उसे पीलातूस पास ले गये *

२ और वे उस पर यिह तुहमत करने लगे कि हम ने उसे उम्मत को गुमराह करते और अपने तईं मसीह शाह कहते और जिज़्यः क़ैसर के तईं देने से मनअ करते हूए पाया *
३ तब पीलातूस ने उस से पूछा कि आया तूही यहूदियों का बादशाह है उस ने उसे जवाब दिया और कहा कि तू कहता
४ है * तब पीलातूस ने सरदारि काहिनों और गरोह को कहा
५ मैं उस शख़्स की कुछ तक़सीर नहीं पाता * और उन्हों ने ज़ियादः तर तक़ाज़ा किया और कहा कि वुह जलील से लेके यहांतक सारी यहूदयःमें तअलीम देदे के ख़ल्क़ में फ़साद बरपा
६ करता है * जब पीलातूस ने जलील का सुना तो पूछा क्या वुह
७ जलीली है * जों उस ने जाना कि वुह हीरूदीस की रईयत में से है उसे हीरूदीस पास जो उस वक़्त औरशलीम में था रवानः कर दिया *
८ हीरूदीस ईसा को देख के निहायत ख़ुश हूआ क्यूं कि वुह मुद्दत से उसके देख ने का मुश्ताक़ था इसलिये कि उस ने उसकी बहुत सी बातें सुनी थीं और उम्मेद में था उस के किसी मुअजिज़े
९ को मुशाहदः करे * उस ने उस से बहुत से सुवाल किये
१० पर उस ने उस को कुछ जवाब न दिया * और सरदारि काहिनों
११ और कातिबों ने खड़े होके उस पर बुहतान किया * तब हीरूदीस ने अपने लशकर से बाहम होके उसे ज़लील किया और ठट्ठे किये और उसे शहानः लिबास पहनाकर
१२ पीलातूस पास फिर भेजा * उस दिन पीलातूस और हीरूदीस बाहम

१३ दोस्त हूए उस मे पहले उन में दुशमनी थी * और बीलातूस
ने सरदारि काहिनों और रईसों और गरोह को इकठ्ठ
१४ बुला के कहा * कि तुम उस शख़्स को यिह कहते हूए मुझ
पास लाये हो कि ख़ल्क़ को गुमराह करता है और देखो मैं ने
तुम्हारे साम्हने उसे अज़्मा देखा और उस शख़्स में
उन तुहमतों से जो तुम ने उस पर की थीं मुझ पास कुछ साबित
१५ न हूआ * और न हीरूदीस पास कि मैं ने तुम्हें उस कने
भेजा था और देखो ऐसा कोई सलूक जिस से उस के क़तल की
१६ बात निकले उस के साथ न किया गया * पस उसे तंबीह
१७ कर के छोड़ देता हूं * अब उसे ज़रूर था कि हर ईद में
१८ एक को उन के लिये छोड़े * तब वुह सब इकठ्ठे यिह कहके
चिल्लाये उसे उठा डाल और बाराबास को हमारे लिये छोड़दे *
१९ कि वुह किसी हंगामे के बाइस जो शहर में बरपा हूआ था
२० और ख़ून करने के सबब से क़ैद में पड़ा था * तब बीलातूस
ने उन से फिर ख़िताब कर के ईसा के छोड़ देने की बात कही *
२१ और वे चिल्ला उठे कि उसे सलीब दे सलीब दे *
२२ और उस ने तीसरे मरतबः उन्हें कहा उस ने क्या बदी की
है मैं ने उस में क़तल का कोई सबब नहीं पाया इसलिये मैं
२३ उसे तंबीह देके छोड़ देता हूं * पर वे बलंद आवाज़ से
बजिद होके तालिब हूए कि उसे सलीब दे तब उन का और
२४ सरदारि काहिनों का गौग़ा ग़ालिब हूआ * और बीलातूस ने

२५ हुक्म किया कि उन का किया करो * और उस ने उसे जिसके वे
तालिब थे वुह जो फ़साद और ख़ून करने के सबब से क़ैद था उन
की ख़ातिर छोड़ दिया और ईसा को उन के तौर पर हवालः
२६ किया * उन्हों ने उसे ले चलते हूए शमऊन करनयाई एक
शख़्स को जो बेरूंजात से आता था पकड़ा और उस पर सलीब
२७ को रखा कि ईसा के पीछे उठाये हूए चले * और जमअ होक
लोग और रंडियां उस के लिये पीटतीं रोतीं उसके पीछे
२८ हो लियां * ईसा ने उनकी तरफ़ फिर के कहा कि ऐ
औरशलीम की बेटियो मुझ पर न रोओ पर अपने और अपने
२९ लड़कों पर रोओ * इसलिये कि देखो वे दिन आते हैं जिनमें
कहेंगे नेक बख़्त हैं वे रंडियां जो बांझ हैं और वुह रहम जो
३० बारदार न हूए और वुह छातियां जो चूसी न गईं * उस वक़्त
पहाड़ों को कहना शुरूअ करेंगे कि हम पर गिरो और टीलों को
३१ कि हमें छांपो * इस लिये कि जब हरे दरख़्त से यिह कुछ
३२ किया जाता है तो सूखे से क्या किया जायगा * और दो शख़्सों
३३ को भी जो बदकार थे उस के साथ क़तल के लिये ले चले * और
जब उस जगह जिस का नाम जलजलः था आये वहां
उन्हों ने उसे और उन बदकारों को एक को उस के दहने हाथ
३४ और दूसरे को बाएं सलीब पर खैंचा * तब ईसा ने कहा
कि ऐ बाप उन को बख़्शदे क्यूंकि वे नहीं जानते कि क्या
करते हैं फिर उन्हों ने क़ुरअः डाल के उस की पोशाक

३५ बांट लो * और लोग खड़े तकरहे थे और सब सरदार भी उन के साथ तमसखुर से कहते थे उस ने औरों को छुड़ाया अगर वुह मसीह खुदा का बरगुज़ीदः है अपने तईं छोड़ावे *
३६ और पियादे भी ठट्ठे मारते हुए पास आये और उसे सिरकः
३७ दिया * और कहा कि अगर तू यहूदियों का बादशाह है
३८ तो अपने तईं छुड़ा * और यूनानी और रूमी और इब्री लुग़त में उस के सिर के ऊपर कुतावः भी लिख के लगाया
३९ कि यिह यहूदियों का बादशाह है * और एक ने उन बदकारों से जो खपे गये थे उस के हक़ में कुफ़र कहा कि अगर तू मसीह
४० है आप को और हमें छुड़ा * पर दूसरे ने जवाब में उसे मलामत की और कहा कि तू भी खुदा से नहीं डरता
४१ हालांकि इस अज़ाब में शरीक है * और हम तो इनसाफ़ की राह से क्यूंकि हम अपने फ़िअ़्लों की मुकाफ़ात पा रहे हैं
४२ पर इस शख़्स ने कोई ख़ता नहीं की * और उस ने ईसा को कहा ऐ खुदावंद जब तू अपनी ममलुकत में आवे तो
४३ मुझे याद कीजियो * ईसा ने उसे कहा मैं तुझे सच कहता
४४ हूं कि आज तू मेरे साथ फ़िरदौस में होगा * और छठी साअ़त के क़रीब सारी ज़मीन पर अंधेरा हुआ और नवीं साअ़त
४५ तक रहा * और आफ़ताब तारीक हुआ और हैकल का
४६ पर्दः बीच से फट गया * फिर ईसा बलंद आवाज़ से चिल्लाकर बोला ऐ बाप मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूं और

४७ यिह काहि को जानती * तब जनअ़शार ने यिह वाक़िअ़ देख कर ख़ुदा की सिताइश की और कहा कि यक़ीनन यिह मर्द
४८ रास्तबाज़ था * और सारी जमाअ़तें जो उस तमाशे में हाज़िर थीं उन चीज़ों को जो वाक़िअ़ हुई थीं देख के छाती
४९ पीटती हुईं फिरीं * और सब उस के जान पहचान और रंडियां जो जलील से उसके पीछे होलियां थीं दूर खड़ी हुईं
५० ये चीज़ें देख रही थीं * और देखो कि यूसुफ़ नाम एक शख़्स जो मशीर और मर्दे सालिह और रास्तबाज़ था *
५१ और उन के क़ौल फ़िअ़ल में शरीक नथा और अरिमियः का जो यहूदियों का शहर है बाशिन्दः था और ख़ुदा की ममलुकत
५२ का मुन्तज़िर था * वुह पीलातूस पास गया और ईसा की
५३ लाश मांगी * और उसने उसे उतार के कफ़नाया और दख़मे में जो पथर में खोदा गया था जिस में कभी कोई मुरदः नथा
५४ गया था रखा * यिह तईयः का दिन और सबत का आग़ाज़
५५ था * और वुह रंडियां जो जलील से उस के साथ आईं थीं पीछे हो लीं और गोर को और उस की लाश को कि
५६ किस तरह से रखी गई ताक रखा * और फिर फिर के इत्र और ख़ुशबूइयां तैयार कीं पर हुक्म के मुवाफ़िक़ सबत के दिन आसाइश की *

चौबीसवां बाब

१ और ऐकशंबः के दिन सवेरे सुबह को उन ख़ुशबूइयों का जो

उन्हों ने तैयार कीं लेके दख़मः पर आईं और साथ उन के
२ और भी आये * उन्हों ने वुह पत्थर दख़मः पर से ढलकाया
३ हूआ पाया * और अंदर जाके ख़ुदावंद ईसा की लाश
४ न पाई * और यों हूआ कि वे जों उस सबब से बहुत घबराईं
तो देखो दो मर्द जगमगी पोशाक पहने उन पास खड़े थे *
५ और जब वे डरीं और अपने सिरों को ज़मीन पर झुकाये
हूए थीं उन्हों ने उन्हें कहा कि तुम जीते को मुर्दों में क्यूं
६ ढूंढ़तियां हो * वुह यिहां नहीं है बल्कि जी उठा है याद करो
७ कि उस ने जब जलील में था तुम्हें क्या कहा था * कि इबनि
आदम ज़रूर है कि गुनहगारों के हाथों में गिरिफ़्तार करवाया
जाय और सलीब पर खेंचाजाय और तीसरे रोज़ फिर उठे *
८ तब उस का कलाम उन्हों ने याद किया (९) और दख़मे पर से
फिरीं और उन बातों की उन ग्यारह और उन सब को जो
१० बाक़ी थे इत्तिलाअ दी * मरयमि मजदलियः और यूआना और
मरयमि यअ़क़ूब और बाक़ी उन के साथ वालियां थीं जिन्हों
११ ने ये बातें हवारियों से कहीं * और उन्हें उन की बातें
हिज़्यान सी मअ़लूम हूईं और उन का यक़ीन न किया *
१२ तब पतरस उठ के दख़मे की तरफ़ दौड़ा और झांक के सूती
कफ़न एक तरफ़ पड़ा हूआ देखा और इस वाक़िअ से दिल
१३ में तअ़ज्जुब करता रवानः हूआ * और देखो कि दो उनमें से
उसी रोज़ अमाउस नाम एक गांव को जो यरूशलीम से साठ

१४ तीर पुरनाव है जाते थे * और आपस में उन सारी चीज़ों का
१५ जो वाक़िअ हुई थीं ज़िक्र करते थे * और यूं हुआ कि जब
वे आपस में गुफ़्तगू और पूछ पाछ करते थे ईसा आप नज़्दीक
१६ आकर उन के हमराह चला * लेकिन उनकी आंखें बंद
हो गई थीं यहां तक कि उन्हों ने उसे न पहचाना *
१७ और उस ने उन्हें कहा यिह किस क़िस्म की बातें हैं जो
तुम राह चलते करते हो और तुम्हारा चिहरः उदास है *
१८ एक ने उन में से जिस का नाम कलीवास था जवाब में उसे
कहा क्या तू ओरशलीम में ख़ल्क़ से ऐसा किनारः कश है
कि ये हादसे जो इन दिनों में वहां वाक़िअ हुए हैं नहीं
१९ जानता * उस ने उन से पूछा कौन से हादसे उन्हों ने उसे कहा
कि ईसा नासीरी का हादसः जो ख़ुदा और सब ख़ल्क़ के
नज़्दीक नबी मुसल्लिम था जिस का क़ौल फ़िअल मुअजिज़
२० नुमा था * और क्यूंकर सरदारि काहिनों और हमारे सरदारों
ने उसे पकड़वा के उस के क़तल का फ़तवा दिया और उसे
२१ सलीब पर खेंचा * और हमे उमेद थी कि यिह वही इसराईल
का मख़लसी देनेवाला था और उन सब के सिवा तीन दिन गुज़रे
२२ जब से ये हादसे वाक़िअ हुए * और हमारे क़ौम की बअज़ी
रांडियों ने भी हमें घबरा दिया है जो सवेरे दख़मे पर थीं *
२३ और उस की लाश को न पाकर यिह कहती आईं कि हम
ने कुछ मलाइक से देखे जो हमें कहते थे कि वुह जीता

२४ है * पुनांचिः बअ़्जे उन में से जो हमारे साथ थे क़ब्र: पर गये और जैसा रंडियों ने कहा था वैसाही पाया और उन्हों
२५ ने उसे न देखा * तब उस ने उन्हें कहा कि ऐ नादानों और सुस्त ईमानों बावुजूद उन सब बातों के जो नबियों ने
२६ फ़रमाईं * आया लाज़िम न था कि मसीह् ये रंज उठा के
२७ अपनी हश्मत में दाख़िल हो * और उस ने मूसा और सारे नबियों से शुरूअ़ करके वे बातें जो सारी किताबों में उस के
२८ हक़ में हैं उन के आगे तफ़सीर से बयान कीं * फिर वे उस गांव के जिस का इरादः रखते थे नज़्दीक हूए और ऐसा
२९ ज़ाहिर होता था कि वुह् आगे जाया चाहता है * पर उन्हों ने ज़ोर से रोका और कहा कि हमारे साथ रह कि अब शाम नज़्दीक है और दिन आख़िर हो चला फिर वुह्
३० दाख़िल हूआ ता कि उन के साथ रहे * और जब उन के साथ खाने बैठा यों हूआ कि उस ने रोटी उठा कर बरकत की बात
३१ कही और तोड़कर उन्हें दी * तब उन की आंखें खुलगईं और उसे पहचाना और वुह् उन की नज़र से ग़ाइब हूआ *
३२ तब उन्हों ने आपस में कहा जब वुह् हम से राह में हम कलाम था और जब वुह् हमपर किताबें वाज़िह् करता था
३३ क्या हमारे सीनों में हमारे दिल न जलते थे * और वे उसी घड़ी उठकर औरशलीम को फिरे और उन ग्यारहों को और
३४ उनके रफ़ीक़ों को यिह् कहते हूए मुज्तमअ़ पाया * कि

मुहावंद फ़िलवाक़िअ उठा है और शमऊन को देखाई दिया *
३५ तब उन्हों ने राह की बातें ठहराई और बयान किया कि वुह
३६ रोटी तोड़ने में यों पहचाना गया * और जब वे यों कह
रहे थे ईसा आप उन के दरमयान खड़ा था और उन्हें
३७ कहा तुम पर सलाम * उन्होंने तरसां हिरसां होके ख़ियाल
३८ किया कि हमें रूह नज़र आरही है * उस ने उन्हें कहा
तुम क्यूं मुज़्तरिब हो और क्यूं तुम्हारे दिलों में अंदेशे पैदा
३९ होते हैं * मेरे हाथों और मेरे पाओं को देखो कि मैं आपही
हूं मुझे टटोलो और दरयाफ़्त करो इसलिये कि जैसा तुम
मुझे देखते हो कि मुझ में गोश्त और उस्तख़ान है रूह में
४० नहीं होता * और यिह कहके हाथों और पाओं को उन्हें
४१ दिखलाया * और जब वे हनोज़ खुशी से बावर नकरते थे
और मुतअज्जिब थे उस ने उन्हें कहा तुम पास यहां कुछ
४२ खाने की चीज़ है * उन्हों ने उसे थोड़ी सी भूनी मछली
४३ और शहद का छत्ता दिया * उस ने लेकर उन के साम्हने
४४ खाया * और उन्हें कहा ये बातें हैं जो मैंने तुम्हारे साथ
होते हूए तुम्हें कहीं कि ये सब बातें जो मूसा की तौरेत
और नबियों की किताबों और ज़बूर में मेरे हक़ में लिखी
४५ गई हैं ज़रूर है कि पूरी हों * फिर उस ने उन के ज़िहनों
४६ को खोला ताकि वे किताबों को बूझें * और उन्हें कहा
कि यूं लिखा है और ऐसा ऐस ज़रूर था कि मसीह रंज

४७ खैंचे और तीसरे दिन मुरदों मेंसे जीउठे * और औरशलीम से लेके सब उम्मतों में तौबः और गुनाहों की बख़शिश मुनादी
४८ उस के नाम से की जाय * और तुम उन चीज़ों के गवाह
४९ हो * और देखो कि मैं अपने बाप के वअ़दे को तुमपर भेजता हूं लेकिन जबतक कि तुम बालाई कुव्वत से मुलब्बस
५० हो शहरि औरशलीम में सुकूनत करो * और उन्हें बैति
ऐना तक बाहर लेगया और अपने हाथ उठा कर उनको
५१ बरकत दी * और यों हूआ कि वुह उन को बरकत देते
५२ हूए उन से जुदा हूआ और आसमान पर जाता रहा * तब वे उस की परस्तिश करके बड़ी ख़ुशी से औरशलीम को फिरे *
५३ और हमेशः हैकल में ख़ुदा की सिताइश और शुक्र करते रहा किये आमीन *

यूहन्ना की इंजील

पहला बाब

१ इब्तिदा में कलिमः था और कलिमः ख़ुदा के साथ था और
२ कलिमः ख़ुदा था * यही इब्तिदा में ख़ुदा के साथ था *
३ सब चीज़ें उस से मौजूद हुईं और मौजूदात में बिग़ैर उसके
४ कोई चीज़ मौजूद नहीं हुई * ज़िन्दगी उस में थी और
५ वुह ज़िन्दगी ख़ल्क़ का नूर थी * और नूर तारीकी में
६ चमकता है और तारीकी ने उसे दरयाफ़्त न किया * एक
शख़्स ज़ाहिर हुआ जो ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया था
७ उस का नाम यहया था * यिह गवाही के लिये आया कि
नूर पर गवाही दे ता कि सब उसके सबब से ईमान लावें *
८ वुह नूर न था पर नूर पर गवाही देने आया था *
९ नूर वुह हक़्क़ानी नूर था कि हर आदमी को जो दुनया में

१० आता है रोशन करता है * वुह जहान में था और जहान
११ उसी से मौजूद हुआ और जहान ने उसे नजाना * वुह
अपनों पास आया और अपनों ने उसे क़बूल न किया *
१२ लेकिन जितनों ने उसे क़बूल किया उसने उन्हें हक़ीक़त
बख़्शी कि ख़ुदा के फ़रज़न्द हूं वे वही हैं जो उस पर ईमान
१३ लाते हैं * और न तो लोहू से और न जिस्म की ख़्वाहिश से
और न आदमी के क़स्द से मगर ख़ुदा से पैदा हूए हैं *
१४ और सुख़न जिस्म हूआ और उस ने कमाल मिहर और
रास्ती से हम में सुकूनत की और हमने उसकी हशमत को
ऐसा बाप के एकलौते की हशमत चाहिये थी वैसा देखा *
१५ यहया ने उस के लिये गवाही दी और पुकार के कहा यिह
है जिस का ज़िक्र मैं करता था कि वुह मेरे पीछे आनेवाला
था मुझ से आगे बढ़ा है क्यूंकि वुह मुझ से पहले था *
१६ और उस की पुरी से हम सब ने पाया और निअमत पर निअमत
१७ भी पाई * इसलिये कि शरीअत मूसा की मअरिफ़त से दीगई
१८ निअमत और रास्ती ईसा मसीह से पहुंची * ख़ुदा को किसी ने
कभी न देखा एकलौते बेटे ने जो बाप की गोद में था उसे बतला
१९ दिया * और यहया की गवाही यिह थी कि जब यहूदियों
ने औरशलीम से काहिनों और लायओं को भेजा कि उस से
२० पूछें कि तू कौन है * उसने इक़रार किया और इनकार
२१ न किया बल्कि साफ़ कहा कि मैं मसीह नहीं * और उन्हें

ने उस से पूछा पस क्या तू इलयास है उसने कहा कि मैं नहीं हूं आया तू वुह नबी है उसने जवाब दिया नहीं *
२२ तब उन्हों ने उसे कहा कि तू कौन है ता कि हम उन्हें जिन्हों ने हम को भेजा कुछ जवाब दें तू अपनी क्या कहता है *
२३ उसने कहा कि जैसा इशअया नबी ने कहा मैं एक शख़्स की आवाज़ हूं जो बियाबान में पुकारता है कि ख़ुदावंद की राह
२४ को मुस्तक़ीम करो * और ये जो भेजे गये थे फ़रीसियों में
२५ से थे * और उन्हों ने उस से सुवाल किया और कहा कि अगर तू मसीह नहीं न इलयास और न वुह नबी फिर क्यूं
२६ ग़ुसलि इस्तिबाग़ देता है * यहया ने जवाब में उन्हें कहा कि मैं पानी से इस्तिबाग़ देता हूं पर तुम्हारे दरमियान एक
२७ जिसे तुम नहीं जानते खड़ा है * यिह है वुह जो मेरे पीछे आता है जो मुझ से आगे बढ़ा जिसकी जूती का तसमः
२८ मैं लाइक़ नहीं कि वुह खोलूं * बैतिअबरा में अर्दन के पार जहां यहया इस्तिबाग़ देता था ये वाक़िआत हूए *
२९ दूसरे दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा और कहा कि देखो ख़ुदा का बर्रः जो जहान का गुनाह उठाता
३० है * यिह है वुह जिस के हक़ में मैंने कहा कि एक मर्द मेरे पीछे आता है जो मुझ से आगे बढ़ा इस लिये कि वुह
३१ मुझ से पहले था * और मैं तो उसे न जानता था पर इस लिये मैं पानी से इस्तिबाग़ देता आया ता कि वुह बनी इसराईल

३२ पर ज़ाहिर हो * और यह्या ने यिह गवाही दी कि मैंने रूह को जैसे कबूतर आसमान से उतरते देखा और वुह उस
३३ पर ठहरी * और मैं उसे नजानता था पर जिस ने मुझे भेजा कि पानी से इस्तिबाग़ दूं उस ने मुझे कहा जिस पर तू देखे कि रूह उतरी और ठहरी वुह है वुह जो रूहि कुद्स
३४ से इस्तिबाग़ देता है * सो मैं ने देखा और गवाही दी कि
३५ यिह ख़ुदा का बेटा है * फिर दूसरे दिन यह्या और दो
३६ उस के शागिर्दों में से खड़े थे * तब उस ने ईसा को चलते
३७ देखके कहा देखो ख़ुदा का बर्रः * और उन शागिर्दों ने
३८ उसका कलाम सुना और ईसा की पैरवी की * तब ईसा ने मुंह फेर के उन्हें पीछे आते देखकर उन को कहा तुम क्या ढूंढ़ते हो उन्हों ने उसे कहा ऐ रब्बी यअ्ने ऐ उस्ताद तू
३९ कहां रहता है * उस ने उन्हें कहा चलो देखो वे आये और वुह जहां रहता था देखा और उस रोज़ उस के साथ
४० रहे और यिह दसवीं साअ़त के क़रीब था * एक उन दो से जिन्हों ने यह्या का कलाम सुना और उसकी पैरवी की
४१ शमऊ़न पत्रस का भाई अंद्रियास था * उसने पहले अपने भाई शमऊ़न को पाया और उसे कहा कि हम ने मसीह़
४२ को जिसका तरजमः करस्तूस है पाया * तब वुह उसे ईसा पास लाया और ईसा ने उसपर निगाह करके कहा कि तू यूह़न्ना का बेटा शमऊ़न है तू कैफ़ा कहलायेगा जिसका तरजमः

४३ पत्थर है * दूसरे दिन ईसा ने चाहा कि जलील में जाय
४४ और फ़ैलबूस को पाके कहा मेरे पीछे चल * फ़ैलबूस
बैति सैदा का जो अंद्रयास और पतरस का शहर है वाशिन्दः था *
४५ फ़ैलबूस ने नासानाईल को कहा कि जिस का ज़िक्र मूसा ने तौरेत
में और नबियों ने किया है हमने उसे पाया वुह यूसुफ़
४६ का बेटा ईसाय नासिरी है * नासानाईल ने उसे कहा क्या
कोई अच्छी चीज़ नासिरः से निकल सकती है फ़ैलबूस ने
४७ कहा आ देख * ईसा ने नासानाईल को अपनी तरफ़ आते
देखकर उसके हक़ में कहा देखो सच्चा इसराईल जिस में
४८ मकर नहीं * नासानाईल ने उसे कहा तू मुझे कहां से
जानता है ईसा ने जवाब दिया और उसे कहा उस से पहले
कि फ़ैलबूस ने तुझे बुलाया जब तू अंजीर के दरख़्त तले
४९ था मैं ने तुझे देखा * नासानाईल ने जवाब में उसे कहा
रब्बी तू ख़ुदा का बेटा तू इसराईल का बादशाह है *
५० ईसा ने जवाब दिया क्या तू इसलिये ईमान लाता है कि मैं ने
तुझे कहा कि मैं ने तुझे अंजीर के दरख़्त तले देखा तू उनसे
५१ बड़े काम देखेगा * उस ने फिर उसे कहा मैं तुझे सच सच
कहता हूं कि तू अब से आसमान को खुला और ख़ुदा के फ़िरिश्तों
को ऊपर जाते और इबनि आदम पर उतरते देखेगा *

दूसरा बाब

१ और तीसरे दिन क़ानाय जलील में किसी का ब्याह हूआ ईसा

३ की मा वहां थी * और ईसा और उसके शागिर्द भी उस ब्याह
३ में बुलाये गये थे * और जब शराब थोड़ी रही ईसा की मा ने उसे
४ कहा कि उनपास शराब न रही * ईसा ने उसे कहा कि ऐ रंडी
५ मुझे तुझ से क्या काम है मेरा वक़्त हनोज़ नहीं आया * उसकी
मा ने ख़ादिमों को कहा जो कुछ वुह तुम्हें कहे तुम उसपर
६ अमल करो * और वहां पत्थर के छः मटके तहारत के लिये
यहूदियों के दस्तूर के मुवाफ़िक़ धरे थे कि हर एक में दो या
७ तीन मन की समाई थी * ईसा ने उन्हें कहा घड़ों में पानी भरो
८ सो उन्हों ने उनको लबालब भरा * फिर उसने उन्हें कहा अब
निकालो और मजलिस के बुज़ुर्ग पास लेजाओ चुनांचिः वे ले गये *
९ जब बुज़ुर्ग मजलिस ने वुह पानी जो मै बन गया था चखा और
मअ़लूम न किया कि यिह कहां से था मगर चाकर जिन्हों ने वुह
१० पानी निकाला था जानते थे तो दूलह से ख़िताब किया * और
कहा कि हर शख़्स पहले अच्छी शराब को ख़रच करता है और
बुरी तब जब पीके छकते हैं पर तू ने अच्छी शराब अबतक रख छोड़ी
११ है * यिह पहला मुअ़जिज़ः ईसा ने क़ानाय में दिखाया और
अपनी हश्मत ज़ाहिर की और उसके शागिर्द उस पर ईमान
१२ लाये * बअ़द उसके वुह और उसकी मा और भाई और शागिर्द
१३ कुफ़रनाहूम में गये पर वहां बहुत दिनों तक मक़ाम न किया *
तब यहूदियों की ईद फ़सह नज़दीक थी और ईसा औरशलीम को
१४ गया * और हैकल में उन को जो बैल और भेड़ और कबूतर

१५ बेचते थे और सर्राफ़ों को बैठे हुए पाया * तब उसने रस्सी का कोड़ा बनाके उन सब को भेड़ों और बैलों समेत निकाल दिया
१६ और सर्राफ़ों के टके बिखरा दीये और तख़्ते उलट दिये * और कबूतर फ़रोशों को कहा इन चीज़ों को यिहां से दफ़अ करो मेरे
१७ बाप के घर को तिजारतख़ान: न बनाओ * और उसके शागिर्दों को याद आया कि लिखा यों था कि तेरे घर की ग़ैरत मुझे निगल गई *
१८ तब यहूदियों ने जवाब में उसे कहा कौन सा मुअजिज़: तू हमें
१९ दिखाता है जो ये काम करता है * ईसा ने जवाब देकर उन्हें कहा इस हैकल को ढादो मैं उसे तीन दिन में खड़ा करूंगा *
२० यहूदियों ने कहा चालीस बरस से यिह हैकल बन रहा है तू
२१ उसे तीन दिन में खड़ा करेगा * पर उसने अपने बदन की
२२ हैकल की बात कही थी * इस लिये जब वुह मुरदों में से जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने उन्हें यिह कहा था और वे किताबों पर और उस कलिमः पर जो ईसा ने कहा था
२३ ईमान लाये * और जब कि वुह औरशलीम के बीच ईदिफ़सह में था बहुतेरे उन मुअजिज़ों को जो उसने दिखाये देखके उसके नाम पर
२४ ईमान लाये * लेकिन ईसा ने अपने तईं उन पर न छोड़ा इस लिये कि वुह सब को पहचानता था * और मुहताज न था कि कोई आदमियों के हक़ में गवाही दे क्यूंकि जो कुछ कि आदमियों में था जानता था *

तीसरा बाब

१ नीक़ूदीमूस नाम एक फ़रीसी शख़्स ने जो यहूदियों का सरदार
२ था * रात को ईसा पास आकर कहा कि रब्बी हम जानते हैं
कि तू ख़ुदा की तरफ़ से मुअल्लिम होके आया क्यूंकि
कोई शख़्स ये मुअजिज़े जो तू दिखाता है जबतक ख़ुदा उसके
३ साथ नहो नहीं देखा सकता * ईसा ने जवाब देकर उसे
कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं अगर कोई सरिनौ पैदा
४ न हो वुह ख़ुदा की ममलुकत को देख नहीं सकता * नीक़ूदी-
मूस ने उसे कहा आदमी जब बूढ़ा हो गया तो क्यूंकर पैदा
होसकता है क्या उसे यिह क़ुदरत है कि दोबारः अपनी
५ मा के पेट में दरआये और पैदा होवे * ईसा ने जवाब
दिया कि मैं तुझे सच सच कहता हूं अगर आदमी पानी और
रूह से पैदा नहोवे तो वुह ख़ुदा की ममलुकत में दाख़िल
६ हो नहीं सकता * जो जिस्म से पैदा हूआ है जिस्म है
७ और जो रूह से पैदा हूआ है रूह है * तअज्जुब
मतकर कि मैं ने तुझे कहा कि तुम्हें सरिनौ पैदा होना ज़रूर
८ है * हवा जिधर चाहती है चलती है और तू उसकी सदा सुनता
है पर नहीं जानता कि वुह कहां से आती है और कहां
को जाती है हरएक जो रूह से पैदा हूआ ऐसाही है *
९ नीक़ूदीमूस ने जवाब में उसे कहा ये चीज़ें क्यूंकर हो सकती
१० हैं * ईसा ने जवाब दिया क्या तू बनी इसराईल का उस्ताद

११ है और ये बातें नहीं जानता * मैं तुझे सच सच कहता
हूं जिसे हम जानते हैं हम कहते हैं और जिसे हमने
देखा है उस पर गवाही देते हैं और तुम हमारी गवाही क़बूल
१२ नहीं करते * जब मैं ने तुम्हें ज़मीन की बातें कहीं और
तुम बावर नहीं करते तो अगर मैं तुम्हें आसमान की बातें
१३ कहूं तुम क्यूंकर बावर करोगे * और सिवा उस शख़्स के जो
आसमान पर से उतरा यअ़ने बनी आदम जो आसमान पर है
१४ कोई आसमान पर नहीं गया * और जिस तरह मूसा ने
सांप को बियाबान में बलंदी पर रखा उसी तरह से ज़रूर है
१५ कि इबनि आदम भी उठाया जाय * ता कि जो कोई उस
पर ईमान लावे हलाक नहोवे बल्कि हयाति अबदी पावे *
१६ इसलिये कि ख़ुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया है कि
उसने अपना एकलौता बेटा बख़्शा ता कि जो कोई उस पर
१७ ईमान लावे हलाक नहो बल्कि हयाति अबदी पावे * क्यूंकि
ख़ुदा ने अपने बेटे को जहान में इसलिये नहीं भेजा कि
जान के क़तल पर फ़तवे देवे बल्कि इसलिये कि जहान उस के
१८ सबब नजात पावे * वुह जो उसका मुअ़तक़िद है मुलज़िम
नहीं पर वुह जो मुअ़तक़िद नहीं अभी मुलज़िम हूआ
इसलिये कि वुह ख़ुदा के एकलौते बेटे के नाम पर ईमान
१९ न लाया * और इलज़ाम यिह है कि नूर जहान में
आया और ख़ल्क़ ने तारीकी को नूर से बेशतर दोस्त रखा क्यूंकि

२० उन के फ़िअल बुरे थे * इसलिये कि जो कोई बुरा करता है नूर से अदावत रखता है और नूर तक नहीं आता ता न होवे
२१ कि उस के फ़िअल ज़ाहिर होवें * पर वुह जो हक़ करता है नूर के पास आता है ता कि उसके काम ज़ाहिर होवें कि
२२ व ख़ुदा की राह पर किये गये हैं * बअद उन चीज़ों के ईसा और उसके शागिर्द यहूदियः की सरज़मीन में आये वुह वहां चंद उनके साथ रहा और इस्तिबाग़ दिया किया *
२३ और यहया भी सालीम के क़रीब ऐनून में इस्तिबाग़ देता था क्यूंकि वहां पानी बहुत था और लोग हाज़िर होके
२४ इस्तिबाग़ पाया किये * कि यहया हनोज़ क़ैद में डाला न
२५ गया था * तब यहया के शागिर्द और यहूदियों के दरमियान
२६ तहारत पर मुनाज़िरः हूआ * वे यहया पास आये और उसे कहा कि रब्बी वुह जो अर्दन के पार तेरे साथ था जिस पर तूने गवाही दी देख कि वुह इस्तिबाग़ देता है और सब
२७ उस पास आते हैं * यहया ने जवाब दिया कि आदमी कोई चीज़ सिवा उसके कि वुह उसे आसमान से दी जाय पा
२८ नहीं सकता * तुम ख़ुद मुझ पर गवाही देते हो कि मैं ने कहा मैं मसीह नहीं मगर उस से आगे भेजा गया हूं *
२९ जिस की दूल्हन है वुह दूल्हा है पर दूल्हा का दोस्त जो खड़ा है और उसकी सुनता है दूल्हा की आवाज़ से बहुत
३० ख़ुशवक़्त होता है मेरी यिह ख़ुशी कामिल हूई * ज़रूर

३० है कि वुह बढ़े और मैं घटूं * वुह जो ऊपर से आता
३१ है सब से बाला है वुह जो ज़मीन का है ज़मीनी है और
ज़मीन की कहता है वुह जो आसमान से आता है सब से बलंद
३२ है * और जो कुछ उस ने देखा और सुना है उसकी गवाही
देता है और कोई शख़्स उसकी गवाही क़बूल नहीं करता *
३३ जिसने उसकी गवाही क़बूल की है मुहर की है कि ख़ुदा
३४ अमीन है * इसलिये कि जिसे ख़ुदा ने भेजा है ख़ुदा की
कहता है क्यूंकि ख़ुदा पैमाइश करके रूह नहीं [illegible] *
३५ बाप बेटे को प्यार करता है और सब चीज़ें [illegible]स के हाथ
३६ में दी हैं * जो कि बेटे पर ईमान ला[illegible]ए ह़यात अबदी
उसकी है और जो बेटे पर ईमा[illegible] [illegible]हीं लाता ह़यात को
न देखेगा बल्कि ख़ुदा का ग़ज़ब [illegible]उसपर रहता है *

चौथा बाब

१ और जब ख़ुदावंद ने जाना कि फ़रीसियों ने सुना कि ईसा
यहया से ज़ियादः शागिर्द करता है और इस्तिबाग़ देता
२ है * ईसा नहीं बल्कि उसके शागिर्द इस्तिबाग़ देते थे *
३ तब वुह यहूदियः को छोड़ के जलील को फिर गया *
४ और ज़रूर था कि वुह सामरः से गुज़रे (५) तब वुह सामरियः
की एक बस्ती में जो सुकर कहलाती है उस ज़मीन का
नज़दीक जो यअ़क़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी आया *
६ और यअ़क़ूब का कूआ वहीं था चुनांचिः ईसा सफ़र से मांदः

होके उस कूऐ पर यूंही बेठा यिह छठी साअ़त के क़रीब था *
७ तब सामरः की एक रंडी पानी भर ने आई ईसा ने उसे
८ कहा मुझे दे कि पीऊं * उसके शागिर्द बस्ती में गये थे कि
९ कुछ खाने को मोल लें * सामरः की उस रंडी ने उसे कहा
कि तू यहूदी होके क्यूंकर मुझ से जो सामरः की रंडी हूं पानी
पीने को मांगता है कि यहूदी सामरियों से मुअ़मिलः नहीं
१० करते * ईसा ने जवाब में उसे कहा अगर तू ख़ुदा की बख़शिश
को और उस को जो तुझे कहता है मुझे पानी दे जानती
तो तू उस से तलब करती और वुह तुझे जीता
११ पानी देता * रंडी ने उसे कहा आग़ा तुझ पास पानी खैंचने
को कुछ नहीं और कूआ अमीक़ है फिर तूने वुह जीता
१२ पानी कहां पाया क्या तू हमारे बाप यअ़क़ूब से जिसने
हम को यिह कूआ दिया और ख़ुद उसने और उस के लड़कों
१३ ने और उस के दवाब ने उस से पिया बड़ा है * ईसा ने
जवाब दिया और उसे कहा जो कोई यिह पानी पीता है
१४ फिर प्यासा होगा * पर जो कोई वुह पानी जो मैं उसे
दूं पीता है कभी प्यासा न होगा बल्कि वुह पानी जो मैं
उसे दूंगा उस से पानी का सोता हो जायगा जो हयाति अबदी
१५ तक जारी रहेगा * रंडी ने उसे कहा कि ख़ुदावंद यिह पानी
मुझ को दे कि मैं प्यासी न हूं और न फिरने को यहां
१६ आऊं * ईसा ने उसे कहा जाके अपने शौहर को बुला और

१७ वहां आ * रंडी ने जवाब दिया कि मैं बे शौहर हूं ईसा
ने उसे कहा कि तूने अच्छा कहा कि मैं बे शौहर हूं *
१८ इसलिये कि तू पांच ख़सम कर चुकी है और वुह जो अब
१९ तू रखती है तेरा शौहर नहीं तूने उस में सच कहा * रंडी
ने उसे कहा कि हज़रत मैं देखती हूं कि तू नबी है *
२० हमारे आबा ने इस कोह में सिजदः किया और तुम कहते
हो कि वुह मक़ाम जहां चाहिये कि लोग सिजदः करें
२१ औरशलीम में है * ईसा ने उसे कहा कि ऐ रंडी मेरी बात
का यक़ीन रख कि वुह वक़्त आता है कि तुम न तो उस कोह
२२ में और न औरशलीम में बाप को सिजदः करोगे * तुम
उस की जिसे नहीं जानते हो परस्तिश करते हो हम उसकी
जिसे जानते हैं परस्तिश करते हैं इसलिये कि नजात यहूदियों
२३ में से है * पर साअ़त आती है और अब है कि सच्चे
परस्तिश करने वाले रूह ओ रास्ती से बाप की परस्तिश करेंगे
२४ क्यूंकि बाप ऐसे परस्तिश करने वालों का तालिब है * ख़ुदा
रूह है और वे जो उस की परस्तिश करते हैं ज़रूर है
२५ कि रूह ओ रास्ती से परस्तिश करें * रंडी ने उसे कहा
मैं जानती हूं मसीह जिस का तरजमः करसतूस है जब वुह
२६ आवेगा सब चीज़ों की ख़बर देगा * ईसा ने उसे कहा मैं
२७ जो तुझे कहता हूं वही हूं * इस में उस के शागिर्द आये और
मुतअ़ज्जिब हूये कि वुह रंडी से बातें करता था पर किसी ने

न कहा कि तू क्या तलब करता है या उस से किस लिये
२८ बातें करता है * रंडी ने तब अपना घड़ा छोड़ा और शहर
२९ में जाके लोगों से कहा * इधर आओ एक मर्द को जिसने
सब चीज़ें जो मैं ने कियां मुझे कहीं देखे क्या यिह
३० मसीह नहीं * फिर वे शहर से निकले और उस पास आये *
३१ इस असना में उसके शागिर्दों ने उससे दरख़्वास्त करके कहा
३२ कि रब्बी कुछ खाइये * लेकिन उस ने कहा खानेके लिये
३३ वुह खरिश जिसे तुम नहीं जानते मुझ पास है * इसलिये
शागिर्दों ने आपस में कहा कि क्या कोई उसके लिये खाना
३४ लाया है * ईसा ने उन्हें कहा मेरा खाना यिह है कि अपने
भेजने वाले के मतलब को पूरा करूं और उस के काम को
३५ तमाम करूं * आया तुम नहीं कहते कि चार महीने के
बअद दिरौ का वक़्त आयगा देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी
आंखें ऊपर करो और खेतों को देखो कि वे दिरौ के लिये अभी
३६ सफ़ेद हैं * और वुह जो काटता है मज़दूरी पाता है और हयाति
अबदी के लिये मेवः जमअ करता है ता कि वुह जो बोता है और
वुह जो काटता है दोनों के दोनों खुश होवें *
३७ और उसपर यिह क़ौल सादिक़ है कि एक बोता है और दूसरा
३८ काटता है * मैं ने तुम्हें भेजा है ता कि उसे जिस में तुमने
मिहनत नहीं की काटो मिहनत और लोगों ने की और तुम
३९ उनकी मिहनत में दाख़िल हुए * और उस शहर के बहुत से सामरी

उस रंडी के कहे से जिसने गवाही दी कि उसने सब जो मैं ने
४० किया है मुझे कहा उस पर इअतिक़ाद लाये * और उन
सामरियों ने उस पास आके उसकी मिन्नत की कि हमारे साथ
४१ रह चुनांचिः वुह दो रोज़ वहां रहा * और उनके सिवा और
४२ बहुतेरे उसके कलाम के सबब ईमान लाये * और उस रंडी को
कहा अब हम फ़क़त तेरे कहेसे ईमान नहीं लाते इस लिये कि
हमने खुद सुना और जानते हैं कि यिह फ़िलहक़ीक़त जहान
४३ का नजात देने वाला मसीह है * और वुह दो रोज़ बअद वहां
४४ से रवानः होकर जलील को गया * कि ईसा ने खुद गवाही दी
४५ कि नबी अपने मुल्क में इज़्ज़त नहीं पाता * और जब वुह
जलील में आया जलीलियों ने उसकी ख़ातिर दारी की कि सब
कामों को जो उसने औरशलीम के बीच ईद में किये थे देखा
४६ था क्यूंकि वे भी ईद में गये थे * और ईसा फिर क़ानाय जलील
में जहां उसने पानी को मै बनाया था आया और बादशाह का
४७ एक मुलाज़िम जिसका बेटा कुफरनाहूम में बीमार था * सुन कर
कि ईसा औरशलीम से जलील में आया उस पास गया और
उसकी मिन्नत की कि आवे और उसके बेटे को चंगा करे कि वुह
४८ मरने पर था * तब ईसा ने उसे कहा अगर तुम करामतें और
४९ अजाइब न देखोगे ईमान न लाओगे * बादशाह के मुलाज़िम ने
उसे कहा आग़ा पेशतर उससे कि मेरा बेटा मरजाय उतर आ *
५० ईसा ने उसे कहा कि जा तेरा बेटा जीता है और मर्द ने उस

बात का जो ईसा ने उसे कही यक़ीन किया और चला गया *
५१ वुह राही में था कि उसके नौकर उसे मिले और ख़बर पहुंचाई
५२ कि तेरा बेटा जीता है * तब उसने इस्तिफ़सार किया कि उसे
कौन सी साअत से आराम होने लगा उन्हों ने कहा कि कल
५३ सातवीं साअत उसकी तप जाती रही * तब बाप ने याद किया कि
उसी साअत में ईसा ने उसे कहा था तेरा बेटा जीता है और
वुह खुद और उसका सारा घर ईमान लाया * फिर दूसरा
मुअजिज़ः है जो ईसा ने यहूदियः से जलील में आके
दिखलाया *

पांचवां बाब

१ बअद उसके यहूदियों की एक ईद आई और ईसा औरशलीम
२ को गया * और औरशलीम में भेड़ बाज़ार के मुत्तसिल एक
हौज़ है जिसके पांच रवाक़ हैं जो इबरानी में बैतिहसदा कहलाता
३ है * उन रवाक़ों में नातवानों और अंधों और लंगड़ों और मफ़्लूजों
की एक बड़ी जमाअत पड़ी थी जो पानी की जुंबिश की मुन्तज़िर
४ थी * इसलिये कि एक फ़िरिश्तः बअज़े वक़्त उस हौज़ में उतर के
पानी को हिलाता था और पानी की जुंबिश के बअद जो कोई कि
पहले उस में उतरता था उस बीमारी से जिस में गिरिफ़्तार था शिफ़ा
५ पाता था * और वहां एक शख़्स था जो अठतीस बरस से बीमार था *
६ ईसा ने उसे पड़े हूए देखा और जाना कि वुह बड़ी मुद्दत से

इस हालत में है तो उसे कहा कि क्या तू चाहता है कि चंगा
७ हो जाय * बीमार शख़्स ने उसे जवाब दिया कि ऐ आग़ा
मुझ पास आदमी नहीं कि जब यिह पानी हिले तो मुझे
हौज़ में डालदे और जबतक मैं आप से आऊं दूसरा मुझसे पहले
८ उतर पड़ता है * ईसा ने उसे कहा उठ और अपना बिस्तर उठा
९ कर चल * वहीं वुह शख़्स चंगा होगया और अपना बिस्तर
उठा लिया और चल निकला और वुह सबत का दिन था *
१० इस लिये यहूदियों ने उसे जो चंगा हूआ था कहा कि यिह सबत
११ का रोज़ है तुझे रवा नहीं कि बिस्तर को उठा ले जावे * उसने
उन्हें जवाब दिया जिसने मुझे चंगा किया उसी ने मुझे फ़रमाया
१२ कि अपना बिस्तर उठाके चला जा * तब उन्हों ने उस से पूछा
कि वुह जिसने तुझे कहा अपना बिस्तर उठाके चला जा
१३ कौन शख़्स है * उस ने जो चंगा हूआ था नजाना कि वुह
कौन था इसलिये कि ईसा वहां से हटगया था क्यूंकि उस जगह
१४ ऐक दंगल था * बअद उसके ईसा ने उसे हैकल में पाया
और उसे कहा कि देख तूने सिह्हत पाई फिर गुनाह न
१५ करना नहोवे कि तू उस से बदतर बला में पड़े * वुह शख़्स
रवानः हूआ और यहूदियों को इत्तिलाअ दी कि जिसने मुझे
१६ चंगा किया ईसा था * इसलिये सब यहूदी ईसा की घात में
लगे और उसके क़तल के दरपे हूऐ क्यूंकि उसने ये काम
१७ सबत के रोज़ किये * लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया कि मेरा

बाप अबतक काम करता है और मैं भी काम करता हूं *
१८ और यहूदी ज़ियादः तर उसके क़तल के ख़्वाहां हूए क्यूंकि उस ने न फ़क़त सवतकी का पास न किया बल्कि ख़ुदा को अपना
१९ बाप कहके अपने तईं ख़ुदा के बराबर किया * तब ईसा ने जवाब में कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता मगर जो कुछ कि वुह बाप को करते देखता है करता है क्यूंकि जो काम कि वुह करता है बेटा भी
२० उसी तरह वही करता है * इसलिये कि बाप बेटे को प्यार करता है और जो काम कि ख़ुद करता है उसे दिखाता है और वुह उनसे बुज़ुर्गतर काम उसे देखावेगा कि तुम तअज्जुब
२१ करोगे * इसलिये कि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता है और
२२ जिलाता है बेटा भी जिन्हें चाहेगा जिलावेगा * कि बाप किसी शख़्स की अदालत नहीं करता बल्कि उस ने सारी
२३ अदालत बेटे को सौंप दी * ता कि सब जिसतरह से कि बाप की तकरीम करते हैं बेटे की तकरीम करें वुह जो बेटे की तकरीम नहीं करता बाप की जिस ने उसे भेजा है तकरीम
२४ नहीं करता * मैं तुमसे सच सच कहता हूं वुह जो मेरे कलाम सुनता है और उसपर जिसने मुझे भेजा है ईमान लाता है हयाति अबदी पाता है और इलज़ाम नखायगा बल्कि
२५ मर्ग से गुज़र के हयात को पहुंचा है * मैं तुमसे सच सच कहता हूं वुह साअत आती है और अब है कि मुरदे

२६ खुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और सुनके जीयेंगे * इसलिये
कि जिसतरह बाप आप में हयात रखता है उसी तरह उस ने
२७ बेटे को दिया है कि आप से हयात रखे * और उसे इक़तिदार
दिया है कि अदालत करे इसलिये कि वुह इबनि आदम है *
२८ इस से तअज्जुब नकरो क्यूंकि वुह साअत आती है जिस में वे सब
२९ जो क़बरों में हैं उसकी आवाज़ सुनेंगे * और जिन्हों ने नेकी की
है हयात की क़ियामत के लिये निकलेंगे और जिन्हों ने बदी की है
३० अदालत की क़ियामत के वास्ते निकलेंगे * मैं आप से कुछ कर
नहीं सकता जैसा मैं सुनता हूं हुक्म करता हूं और मेरी अदालत
बरहक़ है क्यूंकि न अपने मतलब को पर बाप के मतलब को जिस ने
३१ मुझे भेजा तलब करता हूं * अगर मैं अपने लिये गवाही दूं
३२ तो मेरी गवाही हक़ नहीं * दूसरा है जो मेरे लिये गवाही
देता है और मैं जानता हूं कि यिह गवाही जो मेरेलिये
३३ देता है हक़ है * तुम ने यहया पास पयाम भेजा और उसने
३४ हक़ गवाही दी * और मैं इनसान की गवाही का तालिब
नहीं पर मैं ये बातें कहता हूं ता कि तुम नजात पाओ *
३५ वुह चिराग़ि फ़रोज़ां और दुरख़्शां था और तुम थोड़ी देर
३६ चाहते थे कि उस के नूर में ख़ुश हो * लेकिन मुझ पास
यहया की गवाही से एक बड़ी गवाही है इसलिये कि ये
काम जो बाप ने मुझे बख़्शे हैं ता कि पूरे करूं यअने ये काम
जो मैं करता हूं मेरे लिये गवाही देते हैं कि बापने मुझे भेजा

३७ है * और बाप ने जिसने मुझे भेजा है मेरे लिये आप
गवाही दी है तुमने कभी उस की आवाज़ नहीं सुनी और
३८ न उसकी सूरत देखी * और उसका कलाम तुम में क़ाइम
नहीं इसलिये तुम उस पर जिसे उस ने भेजा इअतिक़ाद
३९ नहीं करते * किताबों में ढूंढो क्यूंकि तुम गुमान करते हो
कि उन में तुम्हारे लिये हयाति अबदी है और वे हैं वे
४० जो मेरे लिये गवाही देते हैं * और तुम नहीं चाहते कि
४१ मुझ पास आओ ता कि हयात पाओ * मैं ख़ल्क़ से
४२ तकरीम क़बूल नहीं करता * और मैं तुम्हें जानता हूं कि
४३ तुम में ख़ुदा की महब्बत नहीं * मैं अपने बाप के नाम से
आया हूं और तुम मुझे क़बूल नहीं करते अगर दूसरा अपने
४४ नामसे आवे तुम उसे क़बूल करोगे * तुम आपस में
एक एक की तकरीम क़बूल करते हो और वुह तकरीम जो सिर्फ़
४५ ख़ुदा से है नहीं ढूंढते क्यूंकर ईमान लासकते हो * गुमान
न करो कि मैं बाप पास तुम्हारा गिलः करूं एक है जो
तुम्हारा गिलः करनेवाला है मूसा जिसपर तुम्हारा इअतिमाद
४६ है * क्यूंकि अगर तुम मूसा के मुअतक़िद होते तुम मेरे
मुअतक़िद होते इसलिये कि उसने मेरे हक़ में लिखा है *
४७ लेकिन जब तुम उस के नविश्तों के मुअतक़िद नहीं तो तुम
मेरी बातों को क्यूंकर बावर करोगे *

छठा बाब

१ ईसा उन चीज़ोंके बअद दरयाय जलील के पार जो दरयाय
२ तीबारयास है गया * तब एक बड़ा दंगल उसके पीछे हो
लिया क्यूंकि उन्हों ने उसके मुअजिज़ों को जो उस ने बीमारों
३ में दिखाये देखा था * फिर ईसा पहाड़ पर गया वहां अपने
४ शागिर्दों के साथ बैठा * और फ़सह जो यहूदियों की ईद
५ है नज़दीक थी * फिर जब ईसा ने आंखें ऊपर कीं और
देखा कि बड़ी जमाअत उस पास आती है तो फ़ैलबूस से कहा
कि हम कहां से उनके खाने के लिये रोटियां ख़रीदें *
६ पर उसने इमतिहान की राह से यिह कहा था क्यूंकि वुह
७ आप जानता था जो क्या चाहता था * फ़ैलबूस ने उसे जवाब
दिया कि अगर उनमें से हरएक को एकही एक टोकड़ा
देने चले जाय तो दोसौ दिरहम की रोटियां उन के लिये
८ बस नहोंगी * एक ने उसके शागिर्दों में से जो शमऊन पतरस
९ का भाई अंद्रयास था उसे कहा * यहां एक छोकरे पास जौ की
पांच रोटियां और दो छोटी मछलियां हैं पर ये इतने लोगों में
१० क्या हैं * ईसा ने कहा कि लोगों को बैठाओ कि उस जगह
बहुत घास थी चुनांचिः वे लोग गिनती में क़रीब पांच हज़ार के
११ बैठे * और ईसा ने रोटियां उठालीं और शुक्र करके शागिर्दों
को दीं और शागिर्दों ने उन्हें जो बैठे थे बांटीं और इसी
तरह मछलियों के खंडले जिस क़दर वे चाहते थे *

१२ जब वे सेर होचुके उसने अपने शागिर्दों से कहा कि उन रेज़ों को जो बचरहे हैं जमअ करो ता कि कुछ ख़राब न होवे *
१३ चुनांचि: उन्हों ने जमअ किये रो जै की पांच रोटियां के रेज़ों से जो उन खाने वालों से बचरहे थे बारह टोकरियां भरीं *
१४ तब उन लोगों ने यिह मुअजिज़: जो ईसा ने दिखाया देखकर कहा तहक़ीक़ वुह नबी जो जहान में आने वाला था
१५ यही है * और ईसा मअलूम करके कि वे चाहते हैं कि आवें और उसे बज़ोर पकड़ के बादशाह करें आप अकेला
१६ पहाड़ को फिर गया * और जब शाम हूई उस के शागिर्द
१७ दरया पर गये * और किश्ती पर चढ़ के दरया पार कुफ़र-नाहुम को चले उसवक़्त अंधेरा हो चला था और ईसा उन
१८ पास न आया था * और अज़्बस कि आंधी शिद्दत से चली
१९ दरया में तलातुम हूआ * जब वे क़रीब पचीस या तीस तीर परताब के निकल गये उन्हों ने ईसा को दरया पर चलते और किश्ती के क़रीब होते देखा और डर गये *
२० तब उस ने उन्हें कहा कि मैं हूं हिरासां मत हो *
२१ फिर उन्हों ने ख़ुशी से उसे किश्ती पर लेलिया और किश्ती
२२ फ़िलफ़ौर उस ज़मीन पर जहां वे जाते थे जा पहुंची * और दंगल ने जो दरया के उस पार खड़ा था यिह देखा कि वहां सिवा उस एक के जिसपर उस के शागिर्द चढ़ बैठे कोई दूसरी किश्ती नथी और यिह कि ईसा अपने शागिर्दों के साथ उस किश्ती

२३ पर नगया था बल्कि सिर्फ़ उस के शागिर्द ही गये थे * पर और किश्तियां तिबरयास से उस जगह जहां उन्हों ने
२४ खुदावंद की इनायत से रोटी खाई थी आईं * सो दूसरे दिन लोग भी यिह देख के कि वहां न ईसा और न उस के शागिर्द हैं किश्ती पर चढ़े और ईसा की तलाश में कुफ़रनाहूम
२५ में आये * और उन्हों ने उसे दरया पार पाके उसे कहा
२६ कि रब्बी तू यहां कब आया * ईसा ने उन्हें जवाब दिया कि मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे न इसलिये कि तुमनें मुअजिज़े देखे पर इसलिये कि तुम रोटियां खाके सेर हूए ढूंढते हो *
२७ फ़ानी ख़ुराक के लिये मिहनत में नपड़ो बल्कि उस खाने की तलाश करो जो हयाति अबद तक ठहरता है कि उसे इबनि आदम तुम्हें देगा क्यूंकि बाप ने जो खुदा है उस पर मुहर कर दी है *
२८ तब उन्हों ने उसे कहा कि हम क्या करें ता कि खुदा के कामों के
२९ ठहरें * ईसा ने जवाब में उन्हें कहा खुदा का काम यिह है कि
३० तुम उस पर जिसे उसने भेजा ईमान लाओ * तब उन्हों ने उसे कहा पस तू कौन सा मुअजिज़ः देखाता है ता कि हम देख के तेरे
३१ मुअतक़िद होंं तू क्या काम करता है * हमारे आबा ने बियाबान में मन्न खाया चुनांचिः लिखा है उसने उन्हें आसमान से रोटी
३२ खाने को दी * तब ईसा ने उन्हें कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं मूसा ने तुम्हें आसमानी रोटी नहीं दी बल्कि मेरा बाप तुम्हें सच्ची
३३ आसमानी रोटी देता है * इसलिये कि खुदा की रोटी वुह है

जो आसमान से उतरती और जहान को ज़िन्दगी बख़्शती है * ३४ उन्हों ने उसे कहा ऐ ख़ुदावंद हमको हमेशा हमेशा यिह रोटी ३५ दे * ईसा ने कहा मैं ज़िन्दगी की रोटी हूं जो मुझ पास आता है हरगिज़ भूखा न होगा और जो मेरा मुअतक़िद होता है कभी ३६ प्यासा न होगा * लेकिन मैं ने तुम्हें कहा है क्यूंकि तुमने तो मुझे देखा और ईमान नहीं लाते * सब जो बाप ने मुझे दिया है मुझ पास आवेगा और उसे जो मुझ पास आता है मैं हरगिज़ ३८ निकाल न दूंगा * क्यूंकि मैं आसमान पर से इसलिये नहीं उतरा कि अपनी ख़्वाहिश से काम करूं बल्कि इसलिये उतरा हूं कि ३९ अपने भेजने वाले की मरज़ी पर चलूं * और बाप जिसने मुझे भेजा है यिह चाहता है कि मैं उस में से जो उसने मुझे दिया है कोई चीज़ गुम न करूं बल्कि उसे रोज़ि अख़ीर में फिर ४० उठाऊं * और जिसने मुझे भेजा है उस की ख़्वाहिश यिह है कि हरएक जो बेटे को देखे और उस का मुअतक़िद होवे हयाति अबदी पावे और मैं उसे रोज़ि अख़ीर में ४१ उठाऊंगा * तब यहूदी सब उस पर कुड़कुड़ाये इसलिये कि उसने कहा वुह रोटी जो आसमान से उतरी मैं हूं * ४२ और कहा क्या यिह ईसा यूसुफ़ का बेटा जिस के मा बाप को हम जानते हैं नहीं है फिर वुह क्यूंकर कहता है ४३ कि मैं आसमान से उतरा हूं * तब ईसा ने जवाब में उन्हें ४४ कहा कि आपस में मतकुड़कुड़ाओ * कोई शख़्स मुझ पास

आ नहीं सकता मगर यिह कि बाप जिस ने मुझे भेजा है उसे
४४ खैंच लाये और मैं उसे रोज़ि अख़ीर में उठाऊंगा * नबियों
की किताबों में यिह लिखा है कि वे सब ख़ुदा से
तअलीम पाते रहेंगे इसलिये हरएक शख़्स जिस ने बापसे सुना
४५ है मुझ पास आता है * यिह नहीं है कि किसीशख़्स ने
बाप को देखा है मगर वुह जो ख़ुदा से है उसी ने बाप को
४६ देखा है * मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरा मुअतक़िद
४७ है हयाति अबदी पाता है * ज़िन्दगी की रोटी मैंहीं हूं *
४८ तुम्हारे आबा ने बियाबान में मन्न खाया और मरगये *
४९ रोटी जो आसमान से उतरती है वुह है कि आदमी उसे खावे
५० न मरे * मैं हूं वुह जीती रोटी जो आसमान से उतरी अगर
कोई शख़्स उस रोटी को खाये अबद तक जीता रहेगा और
रोटी जो मैं दूंगा मेरा गोश्त है जो जहान की ज़िन्दगी
५१ के लिये दूंगा * तब यहूदी आपस में बहस करने लगे कि
यिह मर्द अपना गोश्त क्यूंकर हमें दे सकता है कि खाएं *
५२ ईसा ने उन्हें कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं अगर तुम
इबनि आदम का गोश्त न खाओ और उस का लोहू न पीओ
५३ तुम में हयात न होगी * जो कोई मेरा गोश्त खाता है और
मेरा लोहू पीता है हयाति अबदी पाता है और मैं उसे पिछले
५४ दिन उठाऊंगा * कि मेरा गोश्त फ़िलहक़ीक़त ख़ुरदनी और
५५ मेरा लोहू फ़िलहक़िक़त नोशीदनी है * वुह जो मेरा गोश्त

खाता है और मेरा लाहू पीता है मुझ में साबित होता है
५७ और मैं उस में * जिस तरह से कि जीते बाप ने मुझे भेजा
और मैं बाप से जीता हूं वुह जो मुझे खाता है मुझ से
५८ जियेगा * वुह रोटी जो आसमान से उतरी यिह है न
जैसा कि तुम्हारे बाप दादे मन्न खाके मर गये वुह जो
५९ यिह रोटी खाता है अबद तक जीता रहेगा * उसने कुफ़रनाहूम
में तअलीम देते हुए किसी मजमअ में ये बातें कहीं *
६० तब उस के शागिर्दों में से बहुतों ने सुनके कहा कि यिह
६१ सख़ मुशकिल कलाम है उसे कौन सुन सकता है * ईसा ने
अपने दिल में जानकर कि उसके शागिर्द आपस में उस बात पर
कुड़कुड़ाते हैं उन्हें कहा क्या यिह तुम को बेज़ार करता है *
६२ पस अगर तुम इब्नि आदम को ऊपर जाते जहां वुह
६३ आगे था देखोगे तो क्या होगा * रूह है वुह जो जिलाती
है मांस कुछ काम का नहीं ये बातें जो मैं तुम्हें कहता हूं
६४ रूह हैं और हयात हैं * पर तुम में बअज़े हैं जो
इअतिक़ाद नहीं करते कि ईसा इब्तिदा से जानता था कि
वे जो इअतिक़ाद न करेंगे कौन हैं और कौन उसे पकड़वायेगा *
६५ फिर उस ने कहा इसलिये मैं ने तुम्हें कहा कि कोई
शख़्स सिवा उस के जिसे मेरे बाप की तरफ़ से यिह इनायत
६६ कियागया है मुझ पास आ नहीं सकता * उस दम उस के
शागिर्दों में से बहुत उलटे फिर गये और बअद उस के उस के

६७ साथ न चले * तब ईसा ने उन बारह को कहा क्या तुम भी
६८ चाहते हो कि चले जाओ * शमऊन पतरस ने उसे जवाब
दिया कि ऐ ख़ुदावंद हम किस पास जायेंगे हयात अबद की
६९ बातें तो तुझ पास हैं * और हम तो ईमान लाये हैं और
७० यक़ीन जानते हैं तू हई क़य्यूम का बेटा मसीह है * ईसा ने
उन्हें कहा क्या मैं ने तुम बारहों को इन्तिख़ाब नहीं किया
७१ और एक तुम में इब्लीस है * उस ने शमऊन के बेटे
यहूदाह इसकरयूती को इशारः किया क्यूंकि ऐक उन बारह से
जो उसे पकड़ाया चाहता था यही था *

सातवां बाब

१ बअद उस सब के ईसा जलील में जाबजा फिरा किया और
इसलिये कि यहूदी उसके क़तल की फ़िक्र में थे उस ने यहूदियः
२ में गश्त का इरादः न किया * और यहूदियों की ईद ख़ीमः
३ नज़दीक हूई * तब उस के भाइओं ने उसे कहा यहां
रवानः हो और यहूदियः में जा कि उन कामों को जो तू करता
४ है तेरे शागिर्द भी देखें * क्यूंकि ऐसा कोई नहीं जो कुछ
काम छिपके करे और चाहे कि अलानियः मशहूर हो अगर
तू ये काम करता है तो अपने तईं जहान को दिखा *
५ यिह इसलिये था कि उस के भाई भी उसके मुअतक़िद न
६ हूए थे * तब ईसा ने उन्हें फ़रमाया कि मेरा वक़्त अभी
७ नहीं आया पर तुम्हारा वक़्त हरदम मुहैया है * दुनया तुम्हारी

दुश्मन हो नहीं सकती पर मेरी दुश्मन है क्योंकि मैं
८ उसपर गवाही देता हूं कि उसके काम बुरे हैं * तुम
उस ईद में जाओ मैं हनोज़ उस ईद में नहीं जाता कि
९ मेरा वक़्त अभी पूरा नहीं हुआ * वुह ये बातें उन्हें कहके
१० जलील में रहा * लेकिन अपने भाइओं की रवानगी के
बअद वुह भी उस ईद में न अलानियः बल्कि चुपके गया *
११ तब यहूदी ईद में उसे ढूंढने और कहने लगे कि वुह कहां है *
१२ और दंगलों में उस की बाबत बड़ा ग़ौग़ा था बअ़ज़े कहते
थे कि वुह मर्द सालिह़ है और कितने कहते थे नहीं
१३ बल्कि वुह ख़ल्क़ को फ़रेब देता है * लेकिन यहूदियों के
डर से कोई शख़्स अलानियः उस की बात न कहता था *
१४ और इनतिसाफ़ि ईद में ईसा ने हैकल में जाके तअ़लीम
१५ दी * तब यहूदी तअ़ज्जुब से बोले कि इस मर्द को बिग़ैर
१६ पढ़े क्यूंकर किताबों का इ़ल्म है * ईसा ने उन्हें जवाब में
कहा मेरी तअ़लीम मेरी नहीं बल्कि उस की है जिस ने
१७ मुझे भेजा * वुह शख़्स जो उस की मरज़ी पर चला चाहे
समझेगा कि यिह तअ़लीम ख़ुदा की है या कि मैं आपसे
१८ देता हूं * वुह जो अपने पास से कुछ कहता है अपनी
बुज़ुर्गी चाहता है लेकिन वुह जो उस की बुज़ुर्गी चाहता है
जिस ने उसे भेजा वही सच्चा है और उस में दग़ा नहीं *
१९ क्या मूसा ने तुम्हें शरीअ़त न सौंपी लेकिन कोई तुम में से

शरअ़ पर अ़मल नहीं करता तुम क्यूं मेरे क़तल की फ़िक्र
२० में हो * लोगों ने जवाब दिया और कहा तेरे साथ एक
२१ देव है कौन तेरे क़तल के दरपे है * ईसा ने जवाब में
उन्हें कहा मैंने एक काम किया और तुम सब तअ़ज्जुब
२२ करते हो * मूसा ने जो तुम्हें ख़तनः का हुक्म किया हालां कि
वुह मूसा से नहीं बल्कि आबा से है सो तुम सबत का दिन
२३ आदमी का ख़तनः करते हो * हरगाह कि सबत के रोज़
आदमी का ख़तनः कियाजाता है ता कि मूसा की शरअ़ से
उदूल न हो तो क्या तुम इसलिये कि मैंने सबत के दिन एक मर्द को
२४ बिल्कुल सिह्हत बख़्शी मुझ पर ग़ुस्से हो * ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ हुक्म
२५ न करो बल्कि वाजिबी अ़दालत करो * तब बअ़ज़े औरशलीमियों
ने कहा आया यिह वुह नहीं वे जिसके हलाक करनेके दरपै
२६ हैं * लेकिन देखो वुह तो बे परवा बोलता है और वे उसे कुछ नहीं
कहते मगर सरदारों ने भी यक़ीन किया कि फ़िल्हक़ीक़त यही
२७ मसीह है * लेकिन हमें मअ़लूम है कि यिह कहां का है पर
जब मसीह आएगा कोई न जानेगा कि वुह कहां का है *
२८ तब ईसा हैकल में तअ़लीम देते हुए यों पुकारा कि तुम मुझे
पहचानते और जानते हो कि मैं कहां का हूं और मैं आप से
नहीं आया हूं पर अलबत्तः मेरा एक भेजनेवाला है जिस से तुम
२९ वाक़िफ़ नहीं * मैं उसे पहचानता हूं इसलिये कि मैं उसकी तरफ़
३० से हूं और उसने मुझे भेजा है * तब उन्हों ने चाहा कि उसे पकड़

सें पर इसलिये कि उसका वक़्त हनोज़ न पहुंचा था किसीने
३१ उसपर हाथ न डाला * और बहुतेरे उस दंगल में से उसपे
मुअतक़िद हूए और बोले क्या जब मसीह आवेगा उनसे जो इसने
३२ देखाये हैं ज़ियादः मुअजिज़े दिखलावेगा * और फ़रीसियों ने
दंगल का ग़ोग़ा जो उसकी बाबत होरहा था सुना फिर फ़रीसियों
३३ और सरदारि काहिनों ने पियादे भेजे कि उसे पकड़लें * तब ईसा
ने उन्हें कहा अब थोड़ी देर मैं तुम्हारे साथ हूं और उसके
३४ पास जिस ने मुझे भेजा जाता हूं * तुम मुझे ढूंढोगे और
३५ नपाओगे और जहां मैं हूं तुम न आ सकोगे * उस वक़्त
यहूदियों ने आपस में कहा कि वुह कहां जायगा जो हम उसे न
पावेंगे क्या वुह उनलोगों के पास जो यूनानियों में परागन्दः हूए
३६ जायगा और यूनानियों को तअलीम देगा * यिह क्या बात
है जो उसने कही कि तुम मुझे ढूंढोगे और नपाओगे
३७ और जहां मैं हूं तुम न आ सकोगे * फिर ईद के दिनों में
से पिछले रोज़ जो रोज़ बुज़ुर्ग है ईसा खड़ा हूआ और
पुकारा अगर कोई प्यासा हो तो मुझ पास आवे और
३८ पिये * उसके पेट से जो मेरा इअतिक़ाद रखता है जैसा
किताब बोलती है जीते पानी की नदियां जारी होंगी *
३९ उसने यिह रूह की कही जिसे उस के इअतिक़ाद करने
वाले पाने पर थे क्यूंकि इलहामि मुक़द्दस हनोज़ नहूआ
था इसलिये कि ईसा हनोज़ अपनी हश्मत तक न पहुंचा

४० था * तब उन लोगों में से बहुतेरों ने यिह सुनकर कहा हक़ू
४१ है यिह कि वुह नबी है * औरों ने कहा यिह मसीह
है पर बअ़ज़ों ने कहा क्या मसीह जलील से निकलेगा *
४२ क्या किताब ने नहीं कहा कि मसीह दाऊद के तुख़म से
४३ और बैतुलहम की बस्ती से जहां दाऊद था आता है * सो
४४ लोगों में उस के लिये इख़्तिलाफ़ हूआ * बअ़ज़ों ने चाहा था
कि उसे पकड़लें पर किसी ने उस पर हाथ नडाला *
४५ तब पियादे सरदार काहिनों और फरीसियों पास आये और
४६ उन्हों ने उन्हें कहा तुम उसे क्यूं नलाये * पियादों ने जवाब दिया
हरगिज़ किसी शख़्स ने उस शख़्स की मानंद कलाम नहीं कहा *
४७ तब फ़रीसियों ने उन्हें जवाब दिया क्या तुम भी गुमराह
४८ हूए * क्या कोई सरदारों या फ़रीसियों में से उस पर ईमान
४९ लाया * पर यिह दंगल जो शरीअ़त से मुत्तलिअ़ नहीं
५० मलऊन है * नीकूदिमूस ने जो रात को ईसा पास आया था
५१ और ऐक उन में से था उन्हें कहा * क्या हमारी शरीअ़त
किसी पर फ़तवा देती कि उसकी सुने और जाने कि वुह
५२ क्या करता है * उन्हों ने उस को जवाब में
कहा क्या तू भी जलील है ढूंढ और देख कि जलील से
५३ नबी मबऊस नहीं * फिर हरऐक अपने घर को गया *

आठवां बाब

१ तब ईसा कोहि ज़ैतून को गया (२) और सुबह सबेरे

हैकल में फिर दिखाई दिया और सब लोग उस पास आये
३ और उस ने बैठकर उन्हें तअलीम दी * कातिब और फ़रीसी
एक रंडी को जो ज़िना में पकड़ी गई थी उस पास लाये
४ और उसे बीच में खड़ा करके * उसे कहा कि ऐ उस्ताद
यिह रंडी ज़िना में ऐन फ़िअल के वक़्त पकड़ी गई *
५ अब मूसा ने तो तौरेत में हम को हुक्म किया है कि ऐसी
चाहिये कि संगसार की जाय पर तू क्या कहता है *
६ उन्हों ने अज़्माइश के लिये यिह कहा ता वे उस पर तुहमत
की जगह पावें पर ईसा ने नीचे झुक के उंगली से ज़मीन
७ पर लिखा * और जब वे उस से सुवाल करते गये उसने
सीधे होकर उन्हें कहा जो कि तुम में बेगुनाह है पहले
८ वही उसे पत्थर मारे * और फिर झुकके ज़मीन पर लिखा *
९ और वे जिन्हों ने सुना दिलहीं दिल में मुलज़िम होके
बड़ों से लेके पिछले तक एक एक करके चलेगये और
ईसा अकेला रह गया और रंडी बीच में खड़ी रही *
१० तब ईसा ने सीधे होकर रंडी के सिवा किसी को न देखा और उसे
कहा ऐ रंडी वे तेरे तुहमत करने वाले कहां हैं क्या किसी ने तुझ
११ पर हुक्म न किया * वुह बोली ऐ ख़ुदावंद किसी ने नहीं ईसा
ने उसे कहा मैं भी तुझ पर हुक्म नहीं करता जा और फिर
१२ गुनाह न कर * ईसा ने फिर उन्हें कहा जहान का नूर मैं हूं
जो मेरी पैरवी करता है अंधेरे में न चलेगा बल्कि ज़िंदगी का

१३ नूर पावेगा * तब फ़रीसियों ने उसे कहा तू अपने हक़ में
१४ गवाही देता है तेरी गवाही हक़ नहीं * ईसा ने जवाब दिया और
उन्हें कहा अगरचिः मैं अपने हक़ में गवाही देता हूं मेरी
गवाही हक़ है क्यूंकि मैं जानता हूं मैं कहां से आया हूं और
मैं कहां जाता हूं पर तुम नहीं जानते मैं कहां से आता हूं
१५ और कहां जाता हूं * तुम जिसम के मुताबिक़ हुक्म करते
१६ हो मैं किसी शख़्स पर हुक्म नहीं करता * और अगर मैं
हुक्म करूं मेरा हुक्म हक़ है क्यूंकि मैं अकेला नहीं पर
१७ मैं और बाप जिस ने मुझे भेजा * तुम्हारी शरीअत में यिह भी
१८ लिखा है कि दो शख़्स की गवाही हक़ है * एक तो मैं
हूं जो अपने हक़ में गवाही देता हूं और एक बाप जिसने
१९ मुझे भेजा है मेरे लिये गवाही देता है * तब उन्हों ने उसे
कहा तेरा बाप कहां है ईसा ने जवाब दिया तुम मुझे नहीं
जानते और न मेरे बाप को तुम मुझे जानते तो मेरे बाप को
२० भी जानते * ईसा ने ये बातें हैकल के बीच बैतुलमाल में
तअलीम देते हुए कहीं और किसी ने उस पर हाथ न डाला
२१ कि उसका वक़्त हनोज़ न आया था * ईसा ने फिर उन्हें कहा
मैं तो जाता हूं और तुम मुझे ढूंढोगे और गुनहगार मरोगे
२२ जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते * तब यहूदियों
ने कहा क्या वुह अपने तईं मार डालेगा जो कहता है जहां
२३ मैं जाता हूं तुम आ नहीं सकते * उसने उन्हें कहा तुम

४५ बाप है * पर इस सबब कि मैं हक़ कहता हूं तुम मुझ पर
४६ इअतिक़ाद नहीं करते * कौन तुम में से मुझ पर गुनाह
साबित करता है पर मैं जो हक़ कहता हूं तुम मेरा इअतिक़ाद
४७ क्यूं नहीं करते * जो ख़ुदा का है ख़ुदा की बातें सुनता है
तुम इसलिये नहीं सुनते हो कि तुम ख़ुदा के नहीं हो *
४८ तब यहूदियों ने जवाब में उसे कहा क्या हम अच्छा नहीं
४९ कहते कि तू सामरी है और तेरे साथ देव है * ईसा ने जवाब
दिया मेरे साथ देव नहीं पर मैं अपने बाप की तकरीम
५० करता हूं और तुम मेरी तहक़ीर करते हो * और मैं अपनी
शौकत नहीं ढूंढता एक है जो ढूंढता है और फ़ैसल करता
५१ है * मैं तुम से सच सच कहता हूं अगर कोई शख़्स मेरा
कलाम हिफ़्ज़ करे मौत को हरगिज़ कभू न देखेगा *
५२ यहूदियों ने उसे कहा अब हमने जाना कि तेरे साथ देव है
इबराहीम और अंबिया मरगये और तू कहता है अगर
कोई शख़्स मेरे कलाम को हिफ़्ज़ करे मौतका मज़ः कभी
५३ न चखेगा * क्या तू हमारे बाप इबराहीम से जो मरगया बुज़ुर्ग
तर है सब अंबिया मर गये तू अपने तईं क्या ठहराता है *
५४ ईसा ने जवाब दिया अगर मैं अपनी तकरीम करता हूं मेरी
तकरीम कुछ नहीं मेरा बाप है जिसे तुम कहते हो हमारा
५५ ख़ुदा है वुह मेरी तकरीम करता है * तुम ने उसे नहीं जाना
लेकिन मैं उसे जानता हूं और अगर मैं कहूं मैं उसे नहीं

जानता मैं तुम्हारी तरह झूठा हूंगा पर मैं उसे जानता हूं
५५ और उस का कलाम हिफ़्ज़ करता हूं * तुम्हारा बाप
इबराहीम बहुत मुश्ताक़ था कि मेरा दिन देखे चुनांचिः उसने
५७ देखा और ख़ुश हूआ * यहूदियों ने उसे कहा तेरी उमर भी
५८ पचास बरस नहीं और तू ने इबराहीम को देखा * ईसा ने
उन्हें कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं पेशतर उस से कि
५९ इबराहीम हो मैं हूं * तब उन्हों ने पत्थर उठाये कि
उसे संगसार करें पर ईसा ने आपने तईं पोशीदः किया
और उनके बीच में होके हैकल से निकला और यूं चला गया *

नवां बाब

१ उसने गुज़रते हूए एक शख़्स को जो जनम का नाबीना था देखा *
२ और उसके शागिर्दों ने उस से पूछा कि ऐ रब्बी किसने गुनाह
किया इस शख़्स ने या इसके मा बाप ने कि यिह नाबीना पैदा
३ हूआ * ईसा ने जवाब दिया न तो इस शख़्स ने गुनाह
किया न इस के मा बाप ने लेकिन ता कि ख़ुदा के काम उस में
४ ज़ाहिर हों यों हूआ * ज़रूर है कि जिस ने मुझे भेजा
मैं उसके कामों को जबतक कि दिन है करूं रात आती है
५ और कोई उस वक़्त काम कर नहीं सकता * जिस मुद्दत तक
६ कि मैं जहान में हूं जहान का नूर हूं * जब वह यूं
कह चुका तो उस ने ज़मीन पर थूका और थूक से मिट्टी
७ गूंधी और वुह मिट्टी उस अंधे की आंख पर मली * और

१८ क्या कहता है वुह बोला कि वुह नबी है * पर यहूदियों
ने यिह बात बावर न की कि वुह अंधा था और बीना हूआ
जब तक कि उन्हों ने उस शख़्स के मा बाप को जो बीना हूआ
१९ था तलब किया * और उन से पूछा कि क्या यिह तुम्हारा
बेटा है जिसे तुम कहते हो अंधा पैदा हूआ था फिर वुह
२० अब क्यूंकर देखता है * उस के मा बाप ने जवाब में उन्हें
कहा हम यिह जानते हैं कि हमारा बेटा है और यिह कि
२१ वुह अंधा पैदा हूआ था * लेकिन यिह हम नहीं जानते कि
वुह अब किस सबब से देखता है और उसकी आंखों को किस
ने खोला हम नहीं जानते वुह बालिग़ है उस से पूछ लो
२२ वुह अपनी आप कहेगा * उसके मा बाप यहूदियों से डरते
थे इसलिये उन्हों ने यिह कहा क्यूंकि यहूदियों ने ऐका किया
था कि अगर कोई इक़रार करे कि वुह मसीह है मजमअ से
२३ निकाला जाये * सो उसके मा बाप ने कहा कि वुह बालिग़ है
२४ उस से पूछो * तब उन्हों ने उस शख़्स को जो अंधा था फिर
बुलाकर कहा कि ख़ुदा की शुक्र कर हम जानते हैं कि
२५ यिह मर्द गुनहगार है * उस ने जवाब दिया कि मैं नहीं
जानता वुह गुनहगार है मैं एक बात जानता हूं कि मैं अंधा
२६ था अब देखता हूं * तब उन्हों ने उससे फिर पूछा कि उसने
२७ तुझे क्या किया क्यूंकर उसने तेरी आंखें खोलीं * उसने
जवाब दिया मैं ने तो तुम्हें अभी कहा तुम ने न सुना क्या तुम

फिर सुना चाहते हो क्या तुम भी चाहते हो कि उसके शागिर्द
२८ हो * तब उन्हों ने उसे गालियां दीं और कहा तू उसका शागिर्द
२९ है हम मूसा के शागिर्द हैं * हम जानते हैं कि ख़ुदा ने
मूसा से बातें कियां पर हम नहीं जानते कि यिह कहांका
३० है * उस शख़्स ने जवाब में उन्हें कहा कि यिह तअज्जुब
है कि तुम नहीं जानते वुह कहां का है और उसने मेरी आंखें
३१ खोली हैं * अब हम जानते हैं कि ख़ुदा गुनहगारों की नहीं
सुनता पर अगर आदमी ख़ुदा परस्त और उसकी मरज़ी पर
३२ चलता हो उसकी वुह सुनता है * इब्तिदाय जहान से यिह
न सुना था कि किसी ने एक की आंखें जो अंधा पैदा हूआ
३३ खोला हों * अगर यिह मर्द ख़ुदा की तरफ़ से न होता तो कुछ
३४ नकर सकता * उन्हों ने जवाब में उसे कहा तू तो बिल्कुल गुनाहों
में पैदा हूआ और तू हम को सिखलाता है तब उन्हों ने उसे
३५ बाहर निकाल दिया * ईसा ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर
निकाल दिया तब उसने उसे पाकर कहा क्या तू ख़ुदा के बेटे पर
३५ ईमान लाता है * उसने जवाब में कहा ऐ ख़ुदावंद वुह कौन है कि
३७ मैं उस पर ईमान लाऊं * ईसा ने उसे कहा तूने उसे देखा है और
३८ वुह जो तुझ से हमकलाम है वही है * उसने कहा ऐ ख़ुदावंद मैं
३९ ईमान लाता हूं और उसने उसे सिजदः किया * तब ईसा ने कहा
कि मैं हुक्म के लिये इस आलम में आया हूं ता कि नाबीना
४० देखें और बीना अंधे होवें * फ़रीसियों ने जो उसके साथ थे

४१ ये बातें सुनके उसे कहा क्या हम भी अंधे हैं * ईसा ने उन्हें कहा अगर तुम अंधे होते तो गुनहगार न होते पर तुम तो कहते हो हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा गुनाह बाक़ी है *

दसवां बाब

१ मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कि दरवाज़े से गोसपंद ख़ाने में दाख़िल नहीं होता बल्कि और तरफ़ से ऊपर २ चढ़ता है चोर और राहज़न है * लेकिन वुह जो दरवाज़े से ३ दाख़िल होता है गोसपंद का चौपान है * दरबान उसके लिये खोलता है और भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं और वुह अपने भेड़ों को नाम लेके बुलाता है और उन्हें बाहर लेजाता ४ है * और जब वुह अपनी भेड़ों को बाहर निकालता है तो उन के आगे चलता है और भेड़ें उसके पीछे हो लेती हैं ५ क्यूंकि वे उस की आवाज़ पहचानती हैं * और वे बेगाने के पीछे नहीं जातीं बल्कि उस से भागती हैं इसलिये कि बेगानों ६ की आवाज़ नहीं पहचानतीं * ईसा ने यिह तमसील उन्हें कही लेकिन वे न समझे कि यिह क्या बातें थीं जो वुह उनसे ७ कहता था * तब ईसा ने उन्हें फिर कहा मैं तुम से सच सच ८ कहता हूं गोसपंदों का दरवाज़ः मैं हूं * सब जितने मुझसे आगे आये चोर और राहज़न हैं और भेड़ों ने उनकी न सुनी * ९ वुह दरवाज़ः मैं हूं अगर कोई शख़्स मुझ से दाख़िल हो नजात पायेगा और अंदर बाहर आया जायेगा और चरागाह

१० पहिला * चोर नहीं आता मगर चुराने और क़त्ल करने और हलाक करने को मैं आया हूं ता कि वे ज़िन्दगी पावें और ११ ज़ियादः हासिल करें * अच्छा चौपान मैं हूं अच्छा चौपान १२ भेड़ों के लिये अपनी जान देता है * पर मज़दूर और वुह जो चौपान नहीं और भेड़ों का मालिक नहीं भेड़िया आते देखकर भेड़ों को छोड़ देता है और भाग निकलता है और भेड़िया उन्हें पकड़ता है और भेड़ों को परागन्दः करता है * १३ मज़दूर भागता है क्यूंकि वुह मज़दूर है और भेड़ों के लिये अंदेशः १४ नहीं करता * अच्छा चौपान मैं हूं और अपनी पहचानता १५ हूं और मेरी मुझे जानती हैं * जिस तरह से बाप मुझे जानता है उसी तरह मैं बाप को जानता हूं और मैं भेड़ों १६ के लिये अपनी जान देता हूं * और मेरी और भी भेड़ें हैं जो उस गल्लः की नहीं ज़रूर है कि मैं उन्हें भी लाऊं और वे मेरी आवाज़ सुनेंगी और गल्लः एक और चौपान एक होगा * १७ बाप मुझे इस लिये प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता १८ हूं ता कि मैं फिर लूं * कोई शख़्स उसे मुझ से नहीं लेता पर मैं उसे आप से देता हूं मुझ में क़ुदरत है कि उसे दूं और १९ मुझ में कुदरत है कि उसे फिर लूं यिह हुक्म मैं ने अपने बाप से २० पाया * तब यहूदियों के बीच इन बातों के सबब फिर इख़्तिलाफ़ हुआ * और बहुतों ने उन में से कहा कि उस के साथ देव है सिड़ी २१ है तुम उस की क्यूं सुनते हो * औरों ने कहा कि ये बातें देवाने

२२ की नहीं क्या देव अंधे की आखें खोल सकता है * और
औराशलीम में ईद तजदीद हूई और जाड़े का मौसम था *
२३ तब ईसा हैकल के बीच रवाक़ि सुलेमान में फिरता था *
२४ उस वक़्त यहूदियों ने उस के आस पास आके उसे कहा तू
कबतक हमारे दिल को इघर में रखेगा अगर तू मसीह है
२५ हम को साफ़ कह दे * ईसा ने उन्हें जवाब दिया मैं ने तुम्हें
कहा तुम ने बावर न किया जो काम मैं अपने बाप के नाम से
२६ करता हूं ये मेरे गवाह हैं * लेकिन तुम ईमान नहीं लाते
२७ क्यूंकि जैसा मैं ने तुम्हें कहा तुम मेरी भेड़ों से नहीं * मेरी
भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और
२८ वे मेरे पीछे चलती हैं * और मैं उन्हें हयाति अबदी
बख़्शता हूं और वे अबद तक फ़ना न होंगी कि कोई उन्हें
२९ मेरे हाथ से छीन न लेगा * मेरा बाप जिस ने वे मुझे दियां हैं
सब से बड़ा है और कोई क़ादिर नहीं कि मेरे बाप के हाथ
३० से छीन ले * मैं और बाप एक हैं (३१) तब यहूदियों ने
३२ फिर पत्थर उठाये कि उस पर पथरावं करें * ईसा ने उन्हें
जवाब दिया कि मैं ने अपने बाप के वसीले से अच्छे काम
तुम्हें दिखाये हैं उन में से किस काम के लिये तुम मुझे संगसार
३३ करते हो * यहूदियों ने उसे जवाब दिया कि हम तुझे
अच्छे काम के लिये नहीं पर इसलिये कि तू कुफ़र कहता
है और आदमी होके अपने तईं खुदा बनाता है संगसार

३४ करते हैं * ईसा ने उन्हें जवाब दिया क्या तुम्हारी शरअ में यिह लिखा हूआ नहीं कि मैं ने कहा तुम ख़ुदा हो *
३५ उसने तो उन्हें जिनके पास ख़ुदा का कलाम आया ख़ुदा कहा
३६ और मुमकिन नहीं कि किताबि शिकिस्त पिज़ीर हो * तुम उसे जिसे ख़ुदा ने मुक़द्दस किया और जहान में भेजा कहते हो कि तू कुफ़र बकता है कि मैं ने कहा मैं ख़ुदा का
३७ बेटा हूं * अगर मैं अपने बाप के काम नहीं करता
३८ तो मेरे मुअतक़िद मत हो * लेकिन अगर मैं करता हूं गो कि तुम मेरे मुअतक़िद नहो कामों के मुअतक़िद हो ता कि तुम जानो और यक़ीन करो कि बाप मुझमें और मैं उस मे
३९ हूं * तब उन्हों ने फिर चाहा कि उसे पकड़लें पर वुह
४० उन के हाथों से निकल गया * और अर्दन के पार उसी जगह जहां यहया पहले इस्तिबाग़ दिया करता था फिर गया
४१ और वहां रहा * बहुतों ने उस पास जाके कहा कि यहया ने कोई मुअजिज़ः नहीं दिखाया पर सब बातें जो
४२ यहया ने उस के हक़ में कहीं हक़ नहीं * और वहां बहुत से उस के मुअतक़िद हूऐ *

ग्यारहवां बाब

१ और लअज़र नाम एक शख़्स बैत ऐना का बाशिंदः जो मरयम और उस की बहिन मरथा के गांव का था बीमारी में
२ गिरिफ़ार था * वही मरयम जिस ने ख़ुदावंद को इत्र मला

और अपने बालों से उसके पांओं को पूंछा था उसीका भाई
३ लअाज़र बीमार था * इसलिये उसकी बहिनों ने उस को कहला
भेजा कि ख़ुदावंद देख जिसे तू प्यार करता है बीमार है *
४ ईसा ने सुन के कहा यिह मौत की बीमारी नहीं लेकिन ख़ुदा
की अज़मत के लिये है ता कि इस सबब से ख़ुदा के बेटे की
५ सना की जाय * और ईसा मरसा को और उस की बहिन
६ और लअाज़र को प्यार करता था * सो जब उसने सुना
कि वुह बीमार है दोरोज़ उस जगह जहां था इक़ामत की *
७ फिर बअ़द उस के शागिर्दों से कहा कि आओ हम फिर
८ यहूदियः में जाएं * शागिर्दों ने उसे कहा ऐ रब्बी अभी
यहूदियों ने चाहता था कि तुझे संगसार करें और तू वहां
९ फिर जाता है * ईसा ने जवाब दिया कि क्या दिन की बारह
साअतें नहीं अगर कोई शख़्स दिन को चले वुह ठोकर नहीं
१० खाता क्यूंकि वुह इस जहान रोशनी देखता है * पर अगर कोई
शख़्स रात को चले वुह ठोकर खाता है क्यूंकि उस में नूर नहीं *
११ उस ने ये बातें कहीं फिर उन से कहा कि हमारा दोस्त
१२ लअाज़र सोगया है मैं जाता हूं कि उसे जगाऊं * तब उसके
शागिर्दों ने कहा ऐ ख़ुदावंद अगर वुह सोता है तो चंगा
१३ होगा * ईसा ने तो उसकी वफ़ात की कही पर उन्हों
ने ख़िग्राल किया कि उस ने नींद की चैन की फ़रमाई *
१४ तब ईसा ने उन्हें साफ़ कहा लअाज़र मर गया *

१५ और मैं तुम्हारे लिये अपने वहां न होने से खुश हूं ताकि
१६ तुम अब ईमान लाओगे आओ उस पास जाएं * तब थूमा ने
जिसका तर्जमः दूमस है अपने पीर भाइयों से कहा आओ
१७ हम भी जाएं ताकि उसके साथ मरें * और ईसा ने आके
दरयाफ़्त किया कि चार दिन हुए उसे क़बर में गाड़ चुके *
१८ और बैतिऐना औरशलीम से नज़दीक क़रीब पंदरह तीर पर
१९ था * और बहुत से यहूदी जनाबि मरसा और मरयम के
२० पास आये थे कि उसके भाई का उसे पुरसा दें * तो मरसा ने जों
सुना कि ईसा आता है उसका इस्तिक़बाल किया पर मरयम घर
२१ में बैठी रही * तब मरसा ने ईसा को कहा ऐ खुदावंद अगर
२२ तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता * लेकिन मैं जानती हूं
२३ कि अब भी जो कुछ तू खुदा से मांगे खुदा तुझे देगा * ईसा ने
२४ उसे कहा तेरा भाई फिर उठेगा * मरसा ने उसे कहा कि मैं
२५ जानती हूं क़ियामत में पिछले दिन फिर उठेगा * ईसा ने उसे
कहा क़ियामत और हयात मैं हूं जो मुझ पर ईमान लावे
२६ अगरचि वुह मरजावे जीयेगा * और जो कोई जीता है और
मुझ पर ईमान लाता है कभी न मरेगा आया तू यिह यक़ीन
२७ रखती है * उसने उसे कहा हां ऐ खुदावंद मुझे यक़ीन है
कि खुदा का बेटा मसीह जो चाहिये था कि दुनया में आवे
२८ तूही है * वुह यिह कहके चली गई और चुपके अपनी
बहिन मरयम को बुलाके कहा कि उस्ताद आया है और तुझे

२९ तलब करता है * वहीं कि उस ने सुना जल्द उठी और
३० उस पास आई * अब ईसा हनोज़ बस्ती में न पहुंचा था
३१ बल्कि उसी जगह था जहां मरथा उसे मिली थी * तब यहूदी
जो उस के साथ घर में थे और उसे दिलासा देते थे यिह देखके
कि मरयम जल्द उठी और रवानः हुई यों कहते हुए उस के
३२ पीछे हो लिये कि वुह क़बर पर रोने जाती है * और जब
मरयम वहां जहां ईसा था आई और उसे देखा उस के क़दमों
पर गिरके कहा ऐ ख़ुदावंद अगर तू यहां होता तो मेरा
३३ भाई मर न जाता * जब ईसा ने उस को देखा कि रोती है
और यहूदियों को भी जो उस के साथ आये थे कि रोते हैं
३४ दिल से आह का नअरः मारा और अफ़सोस किया * और
कहा तुमने उसे कहां रखा उन्हों ने कहा ख़ुदावंद आ और देख *
३५ ईसा रोया (३६) तब यहूदी बोले कि देखो उसे कितना प्यार
३७ करता था * बाज़ों ने उन में से कहा क्या यिह मर्द
जिस ने अंधे की आंखें खोलीं न करसका कि यिह शख़्स
३८ भी न मरता * तब ईसा अपने दिल से फिर आह करता हुआ
३९ गोर पर आया एक ग़ार था उस पर एक संग धरा था * ईसा
ने कहा कि संग को उठाओ उस मुरदे की बहिन मरथा ने
उसे कहा ऐ ख़ुदावंद वुह तो अब बदबू है क्योंकि उसे
४० चार दिन हुए * ईसा ने उसे कहा क्या मैं ने तुझे नहीं
कहा कि अगर तू ईमान लावे तो ख़ुदा की हशमत देखेगा *

४१ तब उन्हों ने संग वहां से जहां वुह मुरदः गिरा था उठाया
ईसा ने आंखें ऊपर करके कहा ऐ बाप मैं तेरा शुक्र करता
४२ हूं कि तू ने मेरी सुनी है * और मैं ने जाना कि तू
मेरी नित सुनता है पर इन लोगों के बाइस जो आस पास
खड़े हैं मैं ने यिह कहा ता कि वे ईमान लाएं कि तू ने
४३ मुझे भेजा है * और यिह कहके बलन्द आवाज़ से चिल्लाया
४४ कि ऐ लआज़र बाहर निकल * तब वुह जो मरगया था कफ़न
से दस्त पा बंधेहुए बाहर निकल आया और उसका
चिहरः गिरदा गिर्द रूमाल से कसा हुआ था ईसा ने उन्हें
४५ कहा उसे खोल दो और जाने दो * तब यहूदियों से बहुतेरे
जो मरयम कने आये थे और ये काम जो ईसा ने किये देखते थे
४६ उसके मुअतक़िद होगये * और बअज़ों ने उन में से फ़रीसियों
पास जाके उन कामों का जो ईसा ने किये थे ज़िक्र किया *
४७ तब सरदारि काहिनों और फ़रीसियों ने एक महफ़िल फ़राहम
की और कहा कि हम क्या करते हैं कि यिह मर्द बहुत
४८ मुअजिज़े दिखाता है * अगर हम उसे यूंहीं छोड़ें सब
उस के मुअतक़िद होंगे और रूमी आके हमारी विलायत
४९ और क़ौम को भी ले लेंगे * और क़यायफ़ा नाम एक ने उन में से
जो उस बरस सरदारि काहिन था उन से कहा तुम कुछ नहीं
५० जानते * और न अंदेशः करते हो हमारे लिये यिह बिहतर
है कि एक मर्द उम्मत के बदले मरे न कि सारी उम्मत हलाक

५१ होवे * उस ने यिह अज़् ख़ुद न कहा लेकिन इस सबब से कि उस बरस सरदारि काहिन था ख़बर दी कि ईसा उस उम्मत के
५२ वास्ते मरेगा * और न सिर्फ़ उम्मत के वास्ते बल्कि इसवास्ते भी कि वुह ख़ुदा के फ़रज़न्दों को जो परागन्दः हूए बाहम जमअ करे *
५३ सो उन्हों ने उसी रोज़ से बाहम मशवरत की कि उसे जान से
५४ मारें * इस लिये ईसा ने यहूदियों में अलानियः सैर करना छोड़ा पर वहां से ऐक मुल्क में बियाबान के नज़दीक अफ़राईम नाम ऐक शहर में गया और अपने शागिर्दों के साथ वहां
५५ गुज़रान करने लगा * यहूदियों की ईदि फ़सह नज़दीक थी और बहुतेरे पेश अज़् ईद उस मुल्क से औरशलीम को गये ता कि
५६ अपने तईं पाक करें * और ईसा की तलाश की और हैकल में खड़े होके आपस में कहा कि तुम क्या गुमान करते हो क्या
५७ वुह ईद में न आवेगा * सरदारि काहिनों और फ़रीसियों ने भी हुक्म किया था कि अगर कोई जानता हो कि वुह कहां है तो दिखला दे ता कि उसे पकड़ लें *

बारहवां बाब.

१ फिर ईसा बैतिऐना में जहां लआज़र जो मरके उसके हुक्म से जी उठा वूद ओ बाश करता था फ़सह से छः रोज़ आगे आया *
२ वहां उन्हों ने उसके लिये खाना तैयार किया और मरसा ख़िदमत करती थी और ऐक उन में से जो उसके साथ खाने बैठे थे
३ लआज़र था * तब मरयम ने नारदीन का ऐक सेर भर ख़ालिस

और क़ीमती इ़तर लेकर ईसा के पांओं पर मला और अपने बालों से उसके पांव पूंछे घर इ़तर की बू से मुअत्तिर हो गया था * ४ तब यहूदाह अस्करयूती ने जो शमऊन का बेटा और एक उसके शागिर्दों में से था और उसे पकड़वाया चाहता था कहा * ५ कि यिह इ़तर तीन सौ दीनार को क्यूं बेचा न गया और मिस्कीनों ६ को न दिया गया * उसने यिह न इसलिये कहा कि मिस्कीनों का ग़मख़्वार था पर इस लिये कि वुह चोर था और संदूक़चः ७ साथ रखता था और जो कुछ उस में पड़ता था उठा लेता था * तब ईसा ने कहा कि उसे छोड़ दे कि उसने यिह मेरे रोज़ि दफ़न के लिये ८ रखा था * क्यूंकि मिस्कीनों को तुम नित अपने साथ पाओगे ९ लेकिन तुम मुझे नित न पाओगे * और यहूदियों की बड़ी जमाअ़त ने जाना कि वुह वहां है और वे आये थे न सिर्फ़ इसी लिये कि ईसा वहां था बल्कि इस लिये भी कि वे लअ़ज़र को १० जिसे उसने जिलाया देखें * और सरदारि काहिनों ने मश्वरत ११ की कि लअ़ज़र को भी जान से मारें * क्यूंकि उस के सबब १२ से बहुत यहूद गये और ईसा के मुअतक़िद हुए * दूसरे रोज़ बहुत से लोगों ने जो ईद में आये थे यिह सुन के कि ईसा १३ औरशलीम में आता है * ख़ुरमः के दरख़्तों की डालियां लियां और निकले कि उस से मुलाक़ात करें और पुकारे होशअ़ना मुबारक इस्राईल का बादशाह जो ख़ुदावंद के नाम से आता है * १४ ईसा एक जुरीरे ख़र पाकर उस पर सवार हूआ चुनांचि लिखा

१५ है * कि ए सैहून की बेटी मत डर देख तेरा बादशाह गधे
१६ पर सवार आता है * उस के शागिर्द इबतिदा में ये
चीज़ें न समझे लेकिन जब ईसा अपनी हशमत तक पहुंचा
तब उन्हों ने याद किया कि ये चीज़ें उसी के हक़ में लिखी थीं
१७ और यिह कि उन्हों ने उसी से यिह सलूक किये * तब
उन लोगों ने जो उसवक़्त जब उस ने लआज़र को क़बर से बाहर
१८ बुलाया और जिलाया उस के साथ थे गवाही दी * इस सबब
से दंगल उस की मुलाक़ात को निकला कि उन्हों ने सुना
१९ उसने यिह मुअजिज़ः दिखलाया * फ़रीसियों ने आपस में
कहा तुम देखते हो कि तुम्हें कुछ फ़ायदः नहीं देखो कि
२० जहान उसका पैरौ होचला * और उनके दरमियान जो
२१ ईद में परस्तिश करने आये थे बअज़े यूनानी थे * वे फ़ैलबूस
के पास जो बैति सैदाय जलील का था आये और उस से
इलतिमास किया कि ऐ साहिब हम चाहते हैं कि ईसा को
२२ देखें * फ़ैलबूस ने आके अन्द्रयास से कहा और फिर
२३ अन्द्रयास और फ़ैलबूस ने ईसा को ख़बर दी * ईसा ने उन्हें
यिह जवाब दिया कि साअत आई कि इबनि आदम अपनी
२४ हशमत पावे * मैं तुम से सच सच कहता हूं कि गेहूं का दानः
अगर ज़मीन पर न गिरे और मर नजाय तो अकेला रहता
२५ है पर अगर वुह मरे तो बहुत सा फल लाता है * जो
अपनी जान को अज़ीज़ रखता है उसे खोयेगा और वुह जो

इस जहान में अपनी जान का दुश्मन है उसे हयाति अबद
२६ तक हिफ़ाज़ करेगा * अगर कोई मेरी ख़िद्मत करे चाहिये
मेरी पैरवी करे और जिस जगह में हूं मेरा ख़ादिम भी वहीं
होगा अगर कोई मेरी ख़िद्मत करता है बाप उस की तकरीम
२७ करेगा * अब मेरी जान मुज़तरिब है और क्या मैं कहूं
कि ऐ बाप मुझे इस साअत से रिहाई दे लेकिन मैं तो इसने
२८ लिये इस साअत तक आया हूं * ऐ बाप अपने नाम की सना
कर वोहीं आसमान से आवाज़ आई कि मैं ने सना की है
२९ और फिर सना करूंगा * तब लोगों ने जो हाज़िर थे यिह
सुन के कहा कि यिह बादल गरजा औरों ने कहा कि
३० फिरिश्ते ने उस से तकल्लुम किया * ईसा ने जवाब दिया और
कहा कि यिह सदा मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे लिये
३१ आई * अब इस जहान का इनफ़िसाल है अब इस जहान
३२ का हाकिम निकाल दिया जायगा * और अगर मैं ज़मीन
३३ से ऊपर उठाया जाऊं सब को आप तक खेंचूगा * उस ने
यिह कहके पतः दिया कि मैं किस मौत से मरने पर हूं *
३४ लोगों ने जवाब में कहा हम ने शरीअत में सुना है कि
मसीह अबद तक रहेगा फिर तू क्यूंकर कहता है कि इब्नि आदम
ज़रूर है कि उठाया जावे यिह इब्नि आदम कौन है * तब
३५ ईसा ने उन्हें कहा कि नूर अभी थोड़ी देर तुम्हारे साथ है जब तक
कि नूर तुम्हारे साथ है चलो नहो कि तारीकी तुम्हें आ पकड़े और

वुह जो अंधेरे में चलता है नहीं जानता कि किधर जाता
३६ है * जबतक नूर तुम्हारे साथ है नूर के मुअ़तक़िद हो
ता कि तुम नूर के फ़रज़न्द हो ईसा ने ये बातें कहीं और
३७ जाके अपने तईं उन से छिपाया * और अगर्चि: उस ने
उन के रूबरू इतने मुअ़जिज़े दिखाये पर वे उसके मुअ़तक़िद
३८ न हूए * ता कि इशअ़या नबी का कलाम जो उसने कहा पूरा
होवे कि ऐ ख़ुदावंद हमारी ख़बर को किसने बावर किया है
३९ और ख़ुदावंद का हाथ किस पर ज़ाहिर हूआ है * इसलिये
४० वे ईमान ला न सके कि इशअ़या ने फिर कहा * उसने उन
की आंखें अंधी कियां और उन के दिल सख़्त किये हैं ता
नहोवे कि वे आंखों से देखें और दिल से समझें और
४१ रुजूअ़ करें और में उन्हें शिफ़ा बख़शूं * इशअ़या ने जब
उस की हश्मत को देखा तो ये बातें कहीं और उसकी बात
४२ फ़रमाई * बावजूद उस सब के सरदारों से भी बहुत से उसके
मुअ़तक़िद हूए लेकिन फ़रीसियों के बाइस उन्हों ने इक़रार
४३ न किया मबादा मजमअ़ से निकाले जाएं * क्यूंकि वे ख़ल्क़
की सिताइश को ख़ुदा की सिताइश से ज़ियाद: अज़ीज़
४४ जानते थे * ईसा चिल्लाया और बोला वुह जो मुझ पर
ईमान लाता है मुझ पर नहीं बल्कि उस पर जिसने मुझे
४५ भेजा ईमान लाता है * और वुह जो मुझे देखता है उसे
४६ जिस ने मुझे भेजा देखता है * में जहान में नूर आया

हूं ताकि जो कोई मेरा मुअतक़िद होवे अंधेरे में न रहे *
४७ और अगर कोई शख़्स मेरी बातें सुने और इअतिक़ाद न करे
मैं उसका फ़ैसलः नहीं करता क्यूंकि मैं इसलिये नहीं आया
कि जहान को मुजरिम करूं मगर इसलिये कि जहान को रिहाई
४८ बख़्शूं * सो उसके लिये जो मेरी तहक़ीर करता है और मेरी
बातों को क़बूल नहीं करता एक है जो उसे मुजरिम करेगा
४९ कलिमः जो मैं ने कहा है वही उसे मुजरिम करेगा * क्यूंकि
मैं ने तो आप से नहीं कहा पर बाप ने जिसने मुझे भेजा मुझे
५० फ़रमा दिया कि मैं क्या बोलूं और मैं क्या कहूं * और मैं
५१ जानता हूं कि उसका फ़रमान हयाति जाविद है * पस जो
कुछ कि मैं कहता हूं जिस तरह बाप ने मुझे कहा मैं उसी
तरह कहता हूं *

तेरहवां बाब

१ ईदि फ़सह से पहले ईसा ने जाना कि मेरा वक़्त आ पहुंचा
है कि इस जहान से बाप पास जाऊं सो जैसा वुह आगे
अपने ख़ासों को जो दुनया में थे प्यार करता था वैसेही उसने
२ उस प्यार को आख़िरी दम तक निबाह दिया * और जब रात का
खाना खा चुके इबलीस ने शमऊन के बेटे यहूदाह इसकरयूती
३ के दिल में डाला कि उसे पकड़वाये * ईसा ने यिह जानकर
कि बाप सब चीज़ें मेरे क़बज़े में दीं और मैं ख़ुदा के पास से
४ आया हूं और ख़ुदा के पास जाता हूं * खाने से फ़ारिग़ होके

उठा और अपने कपड़े उतार रखे और एक लुंगी लेकर अपनी
५ कमर में बांधी * बअ़्द उस के एक त़ास में पानी डाला
और शागिर्दों के पांव धोने और उस लुंगी से जो बंधी थी पूंछने
६ लगा * फिर वुह शमऊ़न पत़रस तक आया तब उस ने
७ उसे कहा ऐ ख़ुदावंद तू मेरे पांव धोता है * ईसा ने जवाब
में उसे कहा जो कि मैं करता हूं अब तू नहीं जानता
८ पर बअ़्द इस के जाने गा * पत़रस ने उसे कहा कि तू मेरे
पांव कभी न धोना ईसा ने उसे जवाब दिया अगर मैं तुझे
९ न धोऊं मेरे साथ तेरा हिस्सः न होगा * शमऊ़न पत़रस ने उसे
कहा कि ऐ ख़ुदावंद सिर्फ़ मेरे पांव नहीं बल्कि हाथ और
१० सिर भी * ईसा ने उसे कहा वुह जो धोया गया है सिवा
पांव धोने के मुह़ताज नहीं बल्कि सरासर पाक है और तुम
११ पाक हो लेकिन सब नहीं * और वुह तो अपने पकड़वाने
वाले को जानता था उसही लिये उस ने कहा कि तुम सब
१२ पाक नहीं हो * जब वुह उन के पांव धो चुका अपने कपड़े
लिये फिर बैठकर उन्हें कहा आया तुम जानते हो मैं ने
१३ तुम से क्या किया * तुम मुझे उस्ताद और ख़ुदावंद ख़िताब
१४ देते हो और तुम ख़ूब कहते हो क्यूंकि मैं हूं * पस जब
कि मुझ ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पांव धोए तुम्हें भी
१५ लाज़िम है कि एक दूसरे के पांव धोओ * इसलिये कि मैं
ने तुम्हें एक मिसाल बताई ता कि जैसा मैं ने तुम से किया

१६ तुम भी करो * मैं तुम से सच सच कहता हूं कि खिदमतगार अपने आका से बुज़ुर्ग तर नहीं और न वुह जो भेजा गया है
१७ अपने भेजने वाले से बुज़ुर्ग तर है * अगर तुम ये बातें
१८ समझते हो जो उन्हें करते हो तो मुबारक हो * मैं तुम सब को नहीं कहता मैं जानता हूं जिन्हें मैं ने चुना है लेकिन ता कि नविश्तः पूरा होवे उस ने जो मेरे साथ रोटी
१९ खाता है मुझ पर लात उठाई है * अब मैं तुम्हें पेश अज़ वक़ूअ कहता हूं कि जब यिह वाक़िअ हो जाय तो तुम
२० इअ्तिक़ाद कीजो कि मैं ही हूं * मैं तुम से सच सच कहता हूं वुह जो उसे जिसे मैं भेजता हूं क़बूल करता है मुझे क़बूल करता है और वुह जो मुझे क़बूल करता है उसे
२१ जिसने मुझे भेजा क़बूल करता है * ईसा यों कहके दिल में मुज़तरिब हुआ और गवाही देके कहा मैं तुम से सच सच
२२ कहता हूं कि एक तुम में से मुझे पकड़ायेगा * तब शागिर्द शुबह में कि उस ने किस की बात कही एक दूसरे को देखने
२३ लगे * अब उस के शागिर्दों में से एक जिसे ईसा प्यार करता
२४ था ईसा की छाती पर तकयः किये था * तब शमऊन पतरस ने उसे इशारः किया कि दरयाफ़ करे वुह जिस की उसने कही
२५ कौन है * तब उस ने ईसा की सीने पर गिर के कहा ऐ
२६ ख़ुदावंद वुह कौन है * ईसा ने जवाब दिया जिसे मैं लुक़मः तर करके देता हूं यिह है फिर उसने निवाला तर करके

२७ शमऊन के बेटे यहूदाह इसकरयूती को दिया * और बाद उस
नवाले के शैतान ने उस में हुलूल किया तब ईसा ने उसे कहा:
२८ जो कुछ कि तू करता है जल्द कर * और किसी शख़्स ने
उन में से जो खाने बैठे थे न जाना कि उस ने यिह उसे किस
२९ इरादे से कहा * बअ़ज़ों ने इसलिये कि संदूकचः यहूदा
के पास था गुमान किया कि ईसा उसे यिह कहता था जो
हम को ईद के लिये दरकार है मोल ले या यिह कि मिस्कीनों
३० को कुछ दे * तब वुह नवाला पाकर फ़िलफ़ौर निकला और
३१ रात थी * जब वुह चला गया ईसा ने कहा कि अब इब्नि
आदम ने जलाल पाया और ख़ुदा ने उस के बाइस जलाल पाया *
३२ अगर ख़ुदा उस से जलाल पाता है ख़ुदा उसे भी आप से जलाल
३३ देगा * छोटे लड़को अब थोड़ी देर मैं तुम्हारे साथ हूं तुम
मुझे ढूंढोगे और जैसा कि मैं ने यहूदियों से कहा जहां
मैं जाता हूं तुम आ नहीं सकते वैसा मैं अब तुम्हें भी
३४ कहता हूं * मैं तुम्हें नया हुक्म देता हूं कि एक दूसरे
३५ को प्यार करो * उस से सब जानेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो
३६ कि तुम बाहम उल्फ़त करो * शमऊन पतरस ने उसे कहा
ख़ुदावंद तू कहां जाता है ईसा ने जवाब दिया जहां मैं
जाता हूं तू अब मेरी पैरवी कर नहीं सकता लेकिन तू
३७ आख़िर कार मेरी पैरवी करेगा * पतरस ने उसे कहा ख़ुदावंद
मैं तेरी पैरवी अब क्यूं नहीं कर सकता मैं तेरे लिये अपनी

३८ जान देगा * ईसा ने उसे जवाब दिया तू मेरे लिये अपनी जान देगा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि मुर्ग़ बांग न देगा जबतक तू तीन मरतबः मेरा इनकार नकर ले *

चौदहवां बाब

१ परेशान ख़ातिर नहो तुम ख़ुदा पर ईमान लाते हो मुझ पर भी
२ ईमान लाओ * मेरे बाप के घर में बहुत से मकान हैं नहीं तो मैं तुम्हें कहता पस मैं जाता हूं ता तुम्हारे लिये जगह
३ मुऐयन करूं * और मैं जाके और जगह मुऐयन करके फिर आऊंगा और तुम्हें अपने साथ लूंगा ता कि जहां मैं हूं
४ तुम भी रहो * और जहां मैं जाता हूं तुम जानते हो और
५ राह जानते हो * तूमा ने उसे कहा ऐ ख़ुदावंद हम नहीं जानते तू कहां जाता है और हम क्यूंकर उस राह को जान
६ सकें * ईसा ने उसे कहा राह और हक़ और हयात मैं हूं कोई बिग़ैर मेरे वसीले के बाप के पास नहीं आ सकता है *
७ अगर तुम मुझे जानते तो तुम मेरे बाप को भी जानते और
८ अब तुम उसे जानते हो और उसे देखा है * फ़ैलबूस ने उसे कहा ऐ ख़ुदावंद बाप को हमें दिखला कि हमें
९ काफ़ी है * ईसा ने उसे कहा कि ऐ फ़ैलबूस मैं इतनी मुद्दत से तुम्हारे साथ हूं और तू ने हनोज़ मुझे न जाना जिसने मुझे देखा है बाप को देखा है और तू क्यूंकर कहता है कि बाप को
१० हमें दिखला * क्या तू बावर नहीं करता कि मैं बाप में और बाप

मुझ में है ये बातें जो मैं तुम्हें कहता हूं मैं आप से नहीं कहता
लेकिन बाप जो मुझ में रहता है वुह ये काम करता है *
११ मेरी बात बावर करो कि मैं बाप में और बाप मुझ में
१२ और नहीं तो उन कामों के लिये मुझे सच्चा जानो * मैं तुम से
सच सच कहता हूं जो मेरा इअतिक़ाद करता है ये काम जो मैं
करता हूं वुह भी करेगा और उन से बुज़ुर्गतर करेगा क्यूंकि
१३ अपने बाप पास जाता हूं * और तुम मेरे नाम से जो कुछ मांगोगे
मैं वही करूंगा ता कि बाप बेटे में जलाल पावे *
१४ अगर तुम मेरे नाम से कुछ मांगोगे मैं करूंगा (१५) अगर तुम
१६ मुझे अज़ीज़ जानते हो मेरे हुक्मों को हिफ़्ज़ करो * और मैं
अपने बाप से दरख़ास्त करूंगा और वुह तुम्हें दूसरा वकील देगा
१७ जो अबदतक तुम्हारे साथ रहे * यअने रूहि सिदक़ जिसे
दुनया क़बूल नहीं कर सकती क्यूंकि उसे देखती नहीं और न
उसे जानती है लेकिन तुम उसे जानते हो क्यूंकि वुह तुम्हारे
१८ साथ रहता है और तुम में होगा * मैं तुम्हें यतीम न छोडूंगा
१९ मैं तुम पास आऊंगा * अब थोड़ी देर है कि दुनया मुझे फिर
न देखेगी पर तुम मुझे देखते हो और इसलिये कि मैं जीता हूं
२० तुम भी जीओगे * उस रोज़ तुम जानोगे कि मैं बाप में और
२१ तुम मुझ में और मैं तुम में हूं * जिस पास मेरे अह्काम हैं
और वुह उन्हें हिफ़्ज़ करता है वुह है जो मुझे प्यार करता है
और वुह जो मुझे प्यार करता है मेरे बाप का प्यारा होगा और मैं

उसे प्यार करूंगा और अपने तईं उस पर आश्कारा करूंगा *
२२ यहूदा ने न वुह जो अस्करयूती था उसे कहा कि ऐ खुदावंद
क्योंकर तू आप को हम पर आश्कारा करेगा और दुनया पर
२३ नहीं * ईसा ने जवाब में उसे कहा अगर कोई मुझे प्यार करता
है वुह मेरी बातें हिफ़्ज़ करेगा और मेरा बाप उसे प्यार करेगा और
२४ हम उस पास आवेंगे और उस के साथ मुक़ीम होंगे * जो मुझे प्यार
नहीं करता मेरी बातों को हिफ़्ज़ नहीं करता और यिह कलाम जो
तुम सुनते हो मेरा नहीं बल्कि बाप का है जिसने मुझे
२५ भेजा है * मैं ने ये बातें तुम्हारे साथ होते हुए तुम से कहीं *
२६ लेकिन वुह वकील रूहुलक़ुदस जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा
वुह तुम्हें सब चीज़ें सिखलावेगा और सब चीज़ें जो कुछ कि मैं
२७ ने तुम्हें कहा है तुम्हें याद दिलावेगा * आराम तुम्हें दे जाता
हूं अपना आराम मैं तुम्हें देता हूं न जिस तरह से कि
दुनया देती है मैं तुम्हें देता हूं अपने दिल को परेशान न
२८ होने दो और हिरासां मत हो * तुम सुन चुके हो कि मैं ने तुम
को कहा मैं जाता हूं और तुम पास फिर आता हूं अगर तुम मुझे
प्यार करते तो तुम मेरे इस कहने से कि मैं बाप पास जाता हूं खुश
२९ होते क्योंकि मेरा बाप मुझ से बड़ा है * और अब मैं ने तुम्हें पेश
अज़ वक़ूअ कहा कि जब वाक़िअ हो तुम इअतिक़ाद करो *
३० बअद उसके मैं तुम से बहुत कलाम न करूंगा इस लिये कि
इस जहान का सरदार आता है और उसकी मुझ में कोई

३१ चीज़ नहीं * लेकिन ता कि दुनया जाने कि मैं बाप को प्यार करता हूं जिस तरह बाप ने मुझे फ़रमा दिया मैं वैसाही करता हूं उठो
३२ यहां से जायें *

पंदरहवां बाब

१ मैं ताकि हक़ीक़ी हूं और मेरा बाप बाग़बान * (२) जो शाख़ मुझ में मेवा नहीं लाती वुह उसे तोड़ डालता है और हर एक जो मेवः लाती है वुह उसे साफ़ करता है ता कि वुह मेवः ज़ियादः
३ लावे * अब तुम सुख़न के सबब जो मैं ने तुम्हें कहा पाक हो *
४ मुझ में क़ाइम हो और मैं तुम में जिस तरह कि डाली आप से मेवः ला नहीं सकती मगर जब कि वुह ताक में क़ाइम हो तुम भी ला नहीं सकते मगर जब कि मुझ में क़ाइम हो *
५ ताक मैं हूं तुम शाख़ें वुह जो मुझ में क़ाइम होता है और मैं उस में वही बहुत मेवः लाता है इस लिये कि मुझ से
६ जुदा तुम कुछ कर नहीं सकते * अगर कोई मुझ में क़ाइम नहो वुह डाली की तरह फेंक दिया जाता और सूख जाता है लोग उन्हें समेटते हैं और आग में झोंकते हैं और वुह
७ जलती हैं * अगर तुम मुझ में क़ाइम हो और मेरी बातें तुम में क़ाइम होवें जो चाहोगे मांगोगे और तुम्हारे लिये वुह होगा *
८ मेरे बाप का जलाल उसी से है कि तुम बहुत मेवः लाओ
९ और तुम मेरे शागिर्द होगे * जैसा मेरे बाप ने मुझे प्यार किया वैसाही मैं ने तुम्हें प्यार किया तुम मेरी महब्बत में

१० साबित रहो * अगर तुम मेरे हुक्मों को हिफ़्ज़ करो तुम मेरी महब्बत में क़ाइम होगे चुनांचिः मैं ने अपने बाप के हुक्मों को हिफ़्ज़ किया और उस की महब्बत में क़ाइम
११ हूं * मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं ता कि मेरी ख़ुशी तुम में
१२ साबित हो और तुम्हारी ख़ुशी कामिल हो * मेरा हुक्म यह है कि तुम एक दूसरे को जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है
१३ प्यार करो * कोई शख़्स उस से ज़ियादः दोस्ती नहीं करता
१४ कि अपनी जान अपने दोस्तों के लिये दे * जो कुछ कि मैं ने तुम्हें फ़रमाया अगर तुम करो तुम मेरे दोस्त हो *
१५ बअ्द उसके मैं तुम्हें बंदः न कहूंगा क्यूंकि बंदः नहीं जानता कि उस का आक़ा क्या करता है बल्कि मैं ने तुम्हें दोस्त कहा है कि सब चीज़ें जो मैं ने अपने बाप से सुनी
१६ हैं मैं ने तुम्हें बतलाईं * तुम ने मुझे इख़तियार नहीं किया बल्कि मैं ने तुम्हें इख़तियार किया है और तुम्हें मुक़र्रर किया ता कि तुम जाओ और मेवः लाओ और तुम्हारा मेवः बाक़ी रहे ता कि तुम मेरा नाम लेके जो कुछ बाप से मांगो वुह
१७ तुम्हें देवे * मैं तुम्हें ये बातें फ़रमाता हूं कि तुम एक दूसरे को
१८ प्यार करो * अगर दुनया तुम से अदावत करती है तुम जानते
१९ हो कि उसने तुम से आगे मुझ से अदावत की * अगर दुनया के होते दुनया अपने को प्यार करती लेकिन इसलिये कि तुम दुनया के नहीं बल्कि मैं ने तुम्हें दुनया से

इख़्तियार किया इसवास्ते दुनया तुम से अदावत करती है *
२० उस बात को जो मैं ने तुम से कही याद करो कि बंदः अपने
आक़ा से बड़ा नहीं अब उन्हों ने मुझे सताया वे तुम्हें भी
सतावेंगे अगर उन्हों ने मेरा कलाम हिफ़्ज़ किया है वे तुम्हारा
२१ भी हिफ़्ज़ करेंगे * लेकिन वे ये सलूक मेरे नाम के सबब
तुम से करेंगे क्यूंकि वे मेरे भेजने वाले को नहीं जानते *
२२ अगर मैं न आया होता और उन्हें न कहता उनका कुछ
गुनाह न होता लेकिन अब उनपास उनके गुनाह की उज़्र
२३ नहीं * वुह जो मुझ से अदावत करता है मेरे बाप से भी
२४ अदावत करता है * अगर मैं ने उनके बीच में ये काम जो
किसी शख़्स ने नहीं किये किये न होते उनका कुछ गुनाह
न होता पर अब तो उन्हों ने मुझे और मेरे बाप को
२५ देखा और अदावत की * लेकिन यिह हूआ ता कि वुह
सुख़न जो उन की शरीअत में लिखा है कि उन्हों ने मुझ से
२६ बेसबब अदावत की पूरा हो * पर जब कि वुह वकील जिसे
मैं तुम्हारे लिये बाप की तरफ़ से भेजूंगा यअ़ने रूहि सिद्क़
जो बाप से निकलता है आवे तो वुह मेरे लिये गवाही
२७ देगा * और तुम भी गवाही देगे क्यूंकि तुम इब्तिदा से मेरे
साथ हो *

सोलहवां बाब

१ मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं ता कि तुम ठोकर न खाओ *

२ वे तुम को मजलिसों से निकाल देंगे बल्कि वुह साअत आती
है कि जो कोई तुम्हें क़त्ल करता है गुमान करेगा कि
३ ख़ुदा की बंदगी बजा लाता है * और तुम से ऐसे सलूक करेंगे
४ इसलिये कि उन्हों ने न बाप को जाना और न मुझे * और
मैं ने ये बातें तुम को कहीं ता कि जब वुह वक़्त आवे तुम
याद करो कि मैं ने उन की तुम्हें कहीं और मैं ने इबतिदा में
५ ये बातें तुम्हें न कहीं क्यूंकि मैं तुम्हारे साथ था * लेकिन
अब मैं उस पास जिस ने मुझे भेजा जाता हूं और तुम में से
६ कोई मुझ से नहीं पूछता कि तू कहां जाता है * और
इसलिये कि मैं ने ये बातें तुम से कहीं तुम्हारा दिल ग़म से
७ भर गया * लेकिन मैं तुम्हें हक़ कहता हूं कि तुम्हारे लिये
मेरा जाना ही सूदमन्द है क्यूंकि अगर मैं न जाऊं वकील
तुम पास न आवेगा पर अगर मैं जाऊं मैं उसे तुम पास
८ भेज दूंगा * और वुह जब आवे तो जहान को गुनाह से
९ और रास्ती से और हुक्म से मुलज़िम करेगा * गुनाह
१० से इसलिये कि वे मुझ पर ईमान न लाये * रास्ती से इसलिये
कि मैं अपने बाप पास जाता हूं और तुम मुझे फिर न
११ देखोगे * हुक्म से इसलिये कि इस जहान के सरदार पर हुक्म
१२ किया गया है * हनोज़ बहुत सी बातें हैं कि मैं तुम्हें
१३ कहूं पर अब तुम उन को बरदाश्त कर नहीं सकते * लेकिन
जब वुह यअने रूहि सिदक़ आवे वुह तुम्हें सारी [illegible]

की राह बता देगा इसलिये कि वुह अपनी न कहेगा लेकिन जो कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा और वुह तुम्हें आयेंदः
१४ की ख़बरें देगा * वुह मेरी सिताइश करेगा इसलिये कि वुह
१५ मेरी चीज़ों से पायेगा और तुम्हें दिखायेगा * सब चीज़ें जो बाप की हैं मेरी हैं इसलिये मैं ने कहा कि वुह मेरी चीज़ों
१६ से लेगा और तुम को दिखायेगा * थोड़ी देर और मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी और मुझे देखोगे क्यूंकि मैं बाप पास जाता हूं *
१७ तब उसके बअ़ज़े शागिर्दों ने आपस में कहा यिह क्या है जो वुह हमें कहता है कि थोड़ी मुद्दत और तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी और तुम मुझे देखोगे और यिह
१८ इसलिये कि मैं बाप पास जाता हूं * फिर उन्हों ने कहा यिह क्या है जो वुह कहता है कि थोड़ी देर हम नहीं
१९ जानते वुह क्या कहता है * अब ईसा ने जाना कि वे चाहते हैं कि उस से सुवाल करें और उन्हें कहा क्या तुम आपस में उस को तफ़तीश करते हो जो मैं ने कहा कि थोड़ी देर और तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर और
२० तुम मुझे देखोगे * मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और नालः करोगे और दुनया ख़ुश होगी और तुम ग़मगीं
२१ होगे लेकिन तुम्हारे ग़म का अंजाम ख़ुशी होगी * जब रंडी जन्ने लगती है तो ग़मगीं होती है इसलिये कि उस की साअ़त पहुंची लेकिन यही कि लड़का जनी फिर उस ख़ुशी से

कि दुनिया में एक आदमी पैदा हुआ उस दर्द को याद
२२ नहीं करती * और तुम अब ग़मगीं हो पर मैं तुम्हें
फिर देखूंगा और तुम्हारा दिल शाद होगा और तुम्हारी ख़ुशी
२३ तुम से कोई छीन न लेगा * और तुम उस दिन मुझ से
कुछ सुवाल न करोगे मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मेरा
२४ नाम लेके जो कुछ बाप से मांगोगे वुह तुम को देगा * अब
तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा मांगो कि तुम पाओगे
२५ ता कि तुम्हारी ख़ुशी कामिल हो * मैं ने ये बातें तमसीलों में
तुम्हें कहीं पर वुह वक़्त आता है जब मैं तुम्हें तमसीलों में
फिर न कहूंगा बल्कि अलानियः बाप का हाल तुम पर ज़ाहिर
२६ करूंगा * उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम्हें
नहीं कहता कि मैं बाप से तुम्हारे लिये दरख़्वास्त करूंगा *
२७ इस लिये कि बाप तो आप ही तुम्हें प्यार करता है क्यूंकि तुम ने
मुझे प्यार किया और ईमान लाये हो कि मैं ख़ुदा से
२८ निकला हूं * मैं बाप से निकला हूं और दुन्या में आया
हूं फिर दुनया से विदाअ होता हूं और बाप पास जाता हूं *
२९ उसके शागिर्दों ने उसे कहा देख अब तू साफ़ कहता है
३० और तमसील नहीं कहता * अब हम यक़ीन करते हैं कि
तू सब चीज़ें जानता है और मुहताज नहीं कि तुझ से
कोई सुवाल करे इस से हम को यक़ीन हुआ कि तू ख़ुदा
३१ से निकला है * ईसा ने उन्हें जवाब दिया क्या तुम को अब

३२ यक़ीन हूआ * देखो साअत आती है बल्कि आई कि तुम में हर एक पराग़ंदः होके अपनी राह लेगा और मुझे तनहा छोड़ दोगे और तो भी मैं तनहा नहीं क्यूंकि बाप मेरे साथ है *
३३ मैं ने तुम्हें ये बातें कहीं ता कि मुझ में आराम पाओ तुम दुनया में तंगी देखोगे लेकिन ख़ातिर जमअ रखो कि मैं ने दुनया मग़लूब किया है *

सतरहवां बाब

१ ईसा ने ये बातें कहीं और आसमान पर निगाह करके कहा ऐ बाप वक़्त पहुंचा है अपने बेटे को जलाल बख़्श ता कि तेरा बेटा भी तुझे जलाल बख़्शे *
२ चुनांचिः तू ने उसे सब जिसमों पर इक़तिदार दिया है ता कि वुह उन सब को जिन्हें तू ने उसे बख़्शा हयाति अबदी बख़्शे *
३ और हयाति अबदी यिह है कि वे तुझ को अकेला सच्चा ख़ुदा
४ और ईसा मसीह को जिसे तू ने भेजा है जानें * मैं ने ज़मीन पर तेरा जलाल ज़ाहिर किया है मैं उस काम को जो तू ने मुझे करने
५ को दिया है तमाम कर चुका * और ऐ बाप अब तू मुझे अपने साथ उस जलाल से जो मैं वजूदि आलम से पेशतर तेरे साथ
६ रखता था मुइज़्ज़ज़ कर * मैं ने तेरे नाम को उन लोगों पर जिन्हें तू ने दुनया में से मुझे दिया ज़ाहिर किया है वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया है और उन्हों ने तेरे कलाम
७ को हिफ़्ज़ किया है * अब उन्हों ने जाना है कि

८ सब चीजें जो तू ने मुझे दियां तेरी तरफ़ से हैं * इसलिये कि मैं ने वे फ़रमान जो तूने मुझे दिये उन्हें दिये हैं और उन्हों ने उन्हें क़बूल किया और यक़ीन जाना कि मैं तुझ से निकला
९ और वे ईमान लाये हैं कि तू ने मुझे भेजा * मैं उनके लिये सुवाल करता हूं मैं दुनया के लिये नहीं मगर उन के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है सुवाल करता हूं कि वे तेरे
१० हैं * और सब मेरे तेरे हैं और तेरे मेरे हैं और मैं उन में
११ जलाल से मुऐयन हूं * मैं दुनया में आगे न रहूंगा पर ये दुनया में हैं और मैं तुझ कने आता हूं ऐ मुक़द्दस बाप अपने ही नाम से उन्हें जिन्हें तू ने मुझे बख़्शा मह़फ़ूज़
१२ रख ता कि वे हमारी तरह एक हो जाऐं * जबतक कि मैं उन के साथ दुनया में था जिन लोगों को तू ने मुझे बख़्शा मैं तेरे नाम से उन की ह़िफ़ाज़त करता था मैं ने उनकी निगहबानी की और कोई उन में से सिवा इबनि इहलाक के
१३ हलाक नहीं हुआ ता कि किताब पूरी हो * और अब मैं तुझ पास आता हूं और मैं ये बातें दुनया में कहता हूं
१४ ता कि मेरी ख़ुशी उन मे कामिल हो रहे * मैं ने तेरा कलाम उन्हें दिया और दुनया ने उनसे अदावत की इसलिये कि
१५ जैसा मैं दुनया का नहीं हूं वे दुनया के नहीं * मैं यिह सुवाल नहीं करता कि तू उन्हें दुनया में से उठा ले पर यिह
१६ कि तू उन्हें शरीर से बचा ले * जैसा कि मैं दुनया का नहीं

१७ हूं वे दुनया के नहीं * उन्हें अपनी सच्चाई से पाक कर
१८ तेरा कलाम सच्चाई है * जिस तरह तू ने मुझे दुनया में भेजा
१९ मैं ने भी उन्हें दुनया में भेजा है * और उन्हों के वास्ते मैं
अपनी तक़दीस करता हूं ता कि वे भी सच्चाई से मुक़द्दस होवें *
२० मैं सिर्फ़ उनके लिये नहीं बल्कि उनके लिये भी जो उनके
कहने से मुझ पर ईमान लावेंगे सुवाल करता हूं *
२१ ता कि वे सब एक होवें जैसा कि तू ऐ बाप मुझ में और मैं
तुझ में ता कि वे भी हम में एक हों ता कि दुनया ईमान
२२ लाए कि तू ने मुझे भेजा है * और वुह जलाल जो तू ने
मुझे दिया है मैं ने उन्हें दिया है ता कि वे जिस तरह रे
२३ कि हम एक हैं एक हों * मैं उन में और तू मुझ में
ता कि वे एक तक पहुंचके कामिल होवें और ता कि दुनया
जाने कि तू ने मुझे भेजा है और जिस तरह मुझे प्यार किया
२४ उन्हें भी प्यार किया है * ऐ बाप मैं चाहता हूं कि वे भी
जिन्हें तू ने मुझे बख़्शा है जहां मैं होऊं मेरे साथ होवें
ता कि वे मेरे जलाल को जो तू ने मुझे बख़्शा है मुशाहदः
करें क्यूंकि तू ने मुझे आलम की पैदाइश से आगे प्यार
२५ किया है * ऐ आदिल बाप दुनया ने तुझे नहीं जाना
मगर मैं ने तुझे जाना है और उन्हों ने जाना है कि तू ने
२६ मुझे भेजा * और मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया
और ज़ाहिर करूंगा ता कि जिस उल्फ़त से तू ने मुझे

प्यार किया है वुह उल्फ़त उन में हो और मैं उन में हूं *

अठारवां बाब

१ ईसा ये बातें कहके अपने शागिर्दों के साथ क़िदरून के नाले के पार गया वहां एक बाग़ीचः था उस में वुह और उस के
२ शागिर्द दाख़िल हूए * और यहूदा भी जिसने उसे पकड़वा दिया वुह जगह जानता था कि ईसा अकसर औक़ात अपने
३ शागिर्दों के साथ वहां जाया करता था * तब यहूदा सिपाहियों की एक जमाअत और सरदार काहिनों और फ़रीसियों से प्यादे लेके मशअलों और चिराग़ों और हथयारों के साथ वहां
४ आया * और ईसा ने अगरचे कि सब कुछ जो उस पर होनेवाला था जानता था बाहर निकलके उन से कहा कि तुम किसे
५ ढूंढते हो * वुह उस के जवाब में बोले कि नासरी ईसा को ईसा ने उन्हें कहा कि मैं हूं उस वक़्त यहूदा भी जिसने
६ उसे पकड़वाया उनके साथ खड़ा था * यही कि उसने उन्हें कहा कि मैं हूं वे पीछे हटे और ज़मीन पर गिर पड़े *
७ तब उस ने उन से फिर पूछा कि तुम किसे ढूंढते हो वे
८ बोले कि नासरी ईसा को * ईसा ने जवाब दिया मैं ने तो तुम्हें कहा कि मैं हूं पस अगर तुम मुझे ढूंढते हो उन्हें
९ जाने दो * यिह इसलिये हूआ ता कि कलाम जो उस ने कहा पूरा हो कि जिन्हें तू ने मुझे दिया मैं ने एक को उन
१० में से गुम न किया * तब शमऊन पत्रस ने तलवार जो उस

पास थी उंची और सरदारि काहिन के ख़ादिम पर चलाई
और उस का दहना कान उड़ा दिया उस ख़ादिम का नाम
११ मलखूस था * तब ईसा ने पतरस से कहा कि अपनी तलवार
मियान में कर वुह प्याला जो मेरे बाप ने मुझ को दिया
१२ में न पीऊं * तब लशकर और जमअदार और यहूदियों के
१३ पियादों ने मिलके ईसा को पकड़ा और बांधा * और पहले
उसे हन्नान पास ले गये वुह क़याफ़ा नाम उस बरस के सरदारि
१४ काहिन का ससुर था * यिह वही क़यफ़ा था जिसने
यहूदियों को मशवरत दी कि उम्मत के लिये एक मर्द का
१५ मरना बिहतर है * और शमऊन पतरस दूसरे शागिर्द के
साथ होके ईसा के पीछे हो लिया वुह शागिर्द सरदारि
१६ काहिन का जान पहचान था * लेकिन पतरस दर पर बाहर
खड़ा रहा फिर वुह दूसरा शागिर्द जो सरदारि काहिन का
जान पहचान था बाहर निकला और उस को जो दरबान थी
१७ बात कहके पतरस को अंदर ले आया * तब उस जारियः ने
जो दरबान थी पतरस को कहा क्या तू भी उस शख़्स के शागिर्दों
१८ में से नहीं वुह बोला कि मैं नहीं हूं * और नौकर
और पियादे कोयलों की आग सुलगाकर जाड़े के सबब से
खड़े हुऐ तापते थे और पतरस उन के साथ खड़ा ताप रहा
१९ था * तब सरदारि काहिन ने ईसा से उस के शागिर्दों और
२० उस की तअलीम की बाबत सुवाल किया * ईसा ने उसे जवाब

[illegible]िया मैं ने आलम से अलानियः कहा मैं ने हमेशः मजमअ में और हैकल में जहां यहूदी हमेशः जमअ होते थे
२१ [illegible] दी और मैं ने पोशीदः कुछ नहीं कहा * तू मुझ से क्यूं पूछता है पूछ उन से जिन्हों ने मुझ से सुना कि मैं ने उन्हें क्या कहा देख कि वे जानते हैं जो मैं ने
२२ कहा * जब उस ने यों कहा पियादों से एक ने जो पास खड़ा था ईसा को तमाचः मार के कहा कि क्यूं तू सरदारि काहिन को
२३ यूं जवाब देता है * ईसा ने उसे जवाब दिया कि अगर मैं ने बद कहा तू बद की गवाही दे पर अगर अच्छा कहा तू मुझे
२४ क्यूं मारता है * और हन्नान ने उसे बांध के क़याफ़ा सरदारि
२५ काहिन के पास भेजा * और शमऊन पत्रस खड़ा हुआ ताप रहा था सो उन्हों ने उसे कहा क्या तू भी उस के शागिर्दों में से है उसने इनकार किया और कहा कि मैं नहीं हूं *
२६ सरदारि काहिन के खादिमों में से एक ने जो उसका जिस का पत्रस ने कान काटा रिश्तः दार था कहा क्या मैं ने तुझे उसके
२७ साथ बाग में नहीं देखा * और पत्रस ने फिर इनकार किया
२८ और तुर्त मुर्ग ने बांग दी * तब ईसा को क़याफ़ा पास से बारगाह में लाये और यिह दम सुबह था और वे खुद बारगाह में न गये ताकि आलूदः न हों और फ़सह खावें *
२९ तब पीलातूस उन पास निकल आया और कहा तुम इस मर्द पर
३० क्या तुहमत करते हो * उन्हों ने जवाब में कहा कि अगर

यिह बदकिरदार न होता तो हम उसे तेरे हवालः न करते *
३१ पीलातूस ने उन्हें कहा तुम उसे ले जाओ और अपनी शरीअत
के मुताबिक़ उसकी अदालत करो तब यहूदियों ने उसे कहा
३२ हम को रवा नहीं कि किसी को बेजान करें * यिह इस
लिये हूआ ता कि ईसा की बात जो उस ने अपनी मौत
३३ की तरह बताने को कही थी पूरी होवे * तब पीलातूस फिर
दारगाह में दाख़िल हूआ और ईसा को बुलाके कहा क्या तू
३४ यहूदियों का बादशाह है * ईसा ने उसे जवाब दिया क्या
तू यिह बात आप से कहता है या कि औरों ने मेरे हक़ में
३५ तुझ से कहा * पीलातूस ने जवाब दिया क्या में यहूदी हूं
तेरेही क़ौम ने और सरदार काहिनों ने तुझ को मेरे हवाले
३६ किया तू ने क्या किया है * ईसा ने जवाब दिया कि मेरी
सल्तनत इस जहान की नहीं अगर मेरी सल्तनत इस जहान
की होती तो मेरे मुलाज़िम जंग करते ता कि मैं यहूदियों के
हवाले न किया जाता पर मेरी सल्तनत तो यहां की नहीं *
३७ तब पीलातूस ने उसे कहा फिर तू क्या बादशाह है ईसा ने
जवाब दिया कि तू ही कहता है मैं बादशाह हूं कि मैं इसलिये
पैदा हूआ और इस वास्ते दुनया में आया कि हक़ पर गवाही
३८ दूं जो कोई कि हक़ से है मेरी आवाज़ सुनता है * पीलातूस ने
उसे कहा कि हक़ क्या है और युंह यिह कहके फिर यहूदियों
पास गया और उन्हें कहा मैं उस का कुछ क़ुसूर नहीं

३९ पाता * और तुम उस के ख़ोगर हो कि मैं तुम्हारे लिये फ़सह
में एक को आज़ाद करूं आया तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे
४० लिये यहूदियों के बादशाह को छोड़ दूं * तब उन सभों ने
फिर चिल्लाके कहा कि इस को नहीं बल्कि बारब्बास को
और बारब्बास रहज़न था

उन्नीसवां बाब

१ तब पीलातूस ने ईसा को कोड़े मारे (२) और सिपाहियों ने
कांटों का ताज सज के उस के सिर पर रखा क़िरमिज़ी लिबास
३ पहनाके कहा * कि यहूदियों के बादशाह सलाम ले *
४ और उन्हों ने उसे तमांचः मारे तब पीलातूस ने दोबारः बाहर
जाके उन्हें कहा कि देखो मैं उसे तुम पास बाहर ले आता हूं
ता कि तुम जानो कि मैं उस का कुछ क़ुसूर नहीं पाता *
५ तब ईसा कांटों का ताज रखे और क़िरमिज़ी लिबास पहने हुए
बाहर आया और उस ने उन से कहा कि यह हाज़िर है *
६ जब सरदारि काहिन और पियादों ने उसे देखा तो चिल्लाये
कि सलीब दे सलीब दे पीलातूस ने उन्हें कहा तुम उसे लो
और सलीब दो क्यूंकि मैं उस का कुछ क़ुसूर नहीं पाता *
७ यहूदियों ने उसे जवाब दिया कि हम शरीअत वाले हैं और
हमारी शरीअत के मुताबिक़ वुह वाजिबुल क़तल है इसलिये कि
८ उस ने अपने तईं ख़ुदा का बेटा ठहराया * जब पीलातूस ने
९ यिह कलाम सुना और ज़ियादः डरा * और बारगाह में

फिर अंदर आके ईसा से कहा तू कहां का है पर ईसा ने
१० उसे कुछ जवाब न दिया * तब पीलातूस ने उसे कहा कि तू मुझ
से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि मैं मुख़्तार हूं चाहूं
११ तो तुझे सलीब दूं और चाहूं तो तुझे छोड़ दूं * ईसा ने
जवाब दिया कि अगर यिह तुझे ऊपर से दिया नजाता तो
मुझ पर तेरा कुछ इख़्तियार नहोता सो जिसने मुझे तेरे हवाले
१२ किया उसका गुनाह बड़ा है * उसवक़्त पीलातूस ने इरादः
किया कि उसे छोड़ दे पर यहूदियों ने चिल्लाके कहा कि अगर
तू उस मर्द को छोड़ देता है तो तू क़ैसर का दोस्त नहीं
जो कोई कि अपने तईं बादशाह मुक़र्रर करता है क़ैसर का
१३ मुख़ालिफ़ है * पीलातूस यिह बात सुनकर ईसा को
बाहर लाया और उस मक़ाम में जो चबूतरः और इब्रानी
गब्बतः कहलाता है अदालत की मसनद पर बैठा *
१४ और यिह फ़सह के तहैयः का वक़्त था और छठी साअत क़रीब
थी फिर उसने यहूदियों को कहा कि तुम्हारा बादशाह हाज़िर है *
१५ तब वे चिल्लाये कि लेजा लेजा उसे सलीब दे पीलातूस ने कहा कि
मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब दूं सरदारि काहिनों ने जवाब दिया
१६ कि हमारा बादशाह सिवा क़ैसर के नहीं है * तब उसने उसे
उनके हवालः किया कि उसे सलीब दी जाय और वे ईसा को
१७ पकड़ ले गये * वुह अपनी सलीब उठाए हूए उस जगह तक
जो खोपरी की जगह कहलाती है जिसका तरजमः इब्री में

१८ जलजसः है गया * वहां उन्हों ने उसे और उसके साथ और दो
१९ को सलीब पर खेंचा हरएक तरफ़ एक और ईसा बीच में * और
पीलातूस ने एक कुताबः लिखा और सलीब पर नसब किया वुह
लिखा यिह था कि ईसाय नासरी यहूदों का बादशाह *
२० उस कुताबः को बहुत से यहूदियों ने पढ़ा इस लिये कि वुह
मक़ाम जहां ईसा सलीब पर खेंचा गया था शहर के मुत्तसिल था
और वुह इबरानी और यूनानी और लातीनी में लिखा था *
२१ तब यहूदियों के सरदार काहिनों ने पीलातूस को कहा कि
यहूदियों का बादशाह मत लिख यिह लिख कि उसने कहा कि
२२ मैं यहूदियों का बादशाह हूं * पीलातूस ने जवाब दिया कि मैं
२३ ने जो लिखा लिखा * फिर सिपाहियों ने जब ईसा को सलीब पर खेंच
चुके उसके कपड़ों को लिया और चार हिस्से किये हर सिपाही को
एक और उस की क़मीस को भी लिया और क़मीस बेदोख़सिर तासिर
२४ बना हुआ था * इस लिये उन्हों ने आपस में कहा कि हम उसे
चाक न करें बल्कि आओ उस पर क़ुरअ डालें कि यिह किसे
पहुंचता है यिह इस लिये हुआ ता कि किताब जो कहती है कि
उन्हों ने मेरे लिबास बांट लिया और मेरे क़मीस के लिये क़ुरअ
२५ डाला पूरी होवे सो सिपाहियों ने ऐसाही * तब ईसा की सलीब पास
उसकी मा और उसकी मा की बहिन मरयम कलयूबास की जोरू
२६ और मरयमि मजदलयः खड़ी थीं * ईसा ने अपनी मा को
और उस शागिर्द को जिसे वुह प्यार करता था पास खड़े हुए देख

२७ कर अपनी मा को कहा कि ऐ रंडी यिह तेरा बेटा * फिर उसने उस शागिर्द को कहा यिह तेरी मा और उस घड़ी से उस शागिर्द
२८ ने उसे अपने घर दाख़िल किया * बअ़द उस के ईसा ने जान के कि अब सब चीज़ें कामिल हो चुकीं किताब पूरी होने को कहा
२९ कि मैं प्यासा हूं * अब वहां एक लोटा सिरकः से भरा हूआ धरा था उन्हों ने बादल को सिरके में तर करके जूफ़ा में
३० लपेट के नल पर रखा और उसके मुंह में दिया * फिर ईसा ने जब सिरकः चखा तो कहा पूरा हूआ और सिर नीचे करके
३१ जान दी * फिर इसलिये कि वुह वक़्त तहैयः था यहूदियों ने पीलातूस से ख़्वाहिश की कि उन की टांगें तोड़ें और उतार ले जायें ता कि लाशें सबत के दिन सलीब पर न रह जायें क्यूंकि
३२ वुह बड़ा सबत था * तब सिपाहियों ने आके पहले और दूसरे
३३ की टांगें जो उसके साथ सलीब पर खेंचे गये थे तोड़ीं * लेकिन जब उन्हों ने ईसा की तरफ़ आके देखा कि वुह मर चुका है तो
३४ उसकी टांगें न तोड़ीं * पर सिपाहियों में से एक ने नेज़े से उसकी पसली छेदी और फ़िलफ़ौर उस से लहू और पानी निकला *
३५ और जिसने यिह देखा गवाही दी और उसकी गवाही हक़ है और वुह जानता है कि हक़ कहता है ता कि तुम ईमान
३६ लाओ * इस लिये ये चीज़ें वाक़िअ हूईं कि नविश्तः पूरा होवे
३७ कि उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जायगी * और फिर दूसरी किताब कहती है कि वे उस पर जिसे उन्हों ने छेदा नज़र करेंगे *

३८ और बअ़द उसके यूसुफ़ि रामाई ने जो ईसा का शागिर्द था लेकिन यहूदियों के डर से छिपके शागिर्दी करता था पीलातूस से इजाज़त चाही कि ईसा की लाश को लेजाय पीलातूस ने
३९ इजाज़त दी सो वुह आया और ईसा की लाश ले गो * और नीकूदीमूस भी जो पहले ईसा पास रात को गया था आया
४० और सा सेर के क़रीब मुर और ऊद मिला के लाया * फिर उन्हों ने ईसा की लाश को लेके सूती कपड़े से ख़ुशबूइयों के साथ जिस तरह से कि दफ़न करने में यहूदियों का मअ़मूल
४१ है कफ़नाया * और वहां जिस जगह उसे सलीब दी गई थी एक बाग़ था और उस बाग़ में एक नया दख़मः जिस में
४२ कोई कभी नरखा गया था * सो उन्हों ने ईसा को यहूदियों के तहियः के बाइस वहीं रखा क्यूंकि विह दख़मः मुत्तसिल था *

बीसवां बाब

१ हफ़ते के पहले दिन मरयमि मजदलियः तड़के ऐसा कि हनोज़ अंधेरा था दख़मः पर आई और पत्थर को कि दख़मे से टाला हुआ
२ देखा * तब वुह शमऊ़न पत्रस और उस दूसरे शागिर्द पास जिसे ईसा प्यार करता था दौड़ी आई और उन्हें कहा कि ख़ुदावंद को दख़मे से निकाल लेगये और हम नहीं जानते
३ उन्हों ने उसे कहां लेजा रखा * फिर पत्रस दूसरे शागिर्द के साथ होके निकला और दख़मे की तरफ़ आने लगा *
४ चुनांचिः वे दोनों इकट्ठे दौड़े पर दूसरा शागिर्द पत्रस से बढ़गया

५ और दखमः पर पहले पहुंचा * उसने झुक के सूती कपड़े
६ पड़े देखे पर वुह अंदर न गया * फिर शमऊन पतरस
उसके बअद पहुंचा और दखमे के अंदर गया और सूती
७ कपड़े पड़े हूए देखे * और वुह रूमाल जिसे उसका सिर
बंधा था न उन सूती कपड़ों के साथ पर जुदा लपेटा हूआ
८ एक जगह पड़ा देखा * तब दूसरा शागिर्द भी जो दखमः पर पहले
९ आया था अंदर गया और देख के ईमान लाया * क्यूंकि वे हनोज़
किताब को न जानते थे कि वुह ज़रूर मर के जी उठेगा *
१० तब वे शागिर्द अपने दोस्तों पास गये (११) लेकिन मरयम
बाहर दखमः पर रोती खड़ी रही और रोते हूए जो दखमः में
१२ झुक के नज़र की * दो फ़िरिश्ते सफ़ेद लिबास में एक सिरहाने
और दूसरा पाइंती जहां ईसा की लाश रखी थी बैठे देखे *
१३ उन्हों ने उसे कहा ऐ रंडी तू क्यूं रोती है उसने कहा इसलिये
कि वे मेरे खुदावंद को ले गये और मैं जानती नहीं कि उन्हों
१४ ने उसे कहां रखा * जब वुह यों कह चुकी तो पीछे फिरी
और ईसा को खड़े देखा और न पहचाना कि वुह ईसा है *
१५ ईसा ने उसे कहा ऐ रंडी तू क्यूं रोती है किसे ढूंढती है
उसने उसे बाग़वान जान के कहा कि साहिब अगर उसे यहां
से तू ने उठाया हो तो मुझ से कह कि तू ने उसे कहां रखा
१६ है कि मैं उसे लेजाऊंगी * ईसा ने उसे कहा कि मरयम
वुह मुतवज्जिह हूई और उसे कहा कि रब्बूनी यअने ऐ उस्ताद *

१७ ईसा ने उसे कहा मुझ्को मत छू क्योंकि मैं हनोज़ अपने बाप के पास ऊपर नहीं गया पर मेरे भाइओं पास जा और उन्हें कह कि मैं ऊपर अपने बाप और तुम्हारे बाप पास और अपने खुदा और तुम्हारे खुदा पास जाता हूं *
१८ मरयम मजदलयः आई और शागिर्दों से कहा कि मैं ने
१९ खुदावंद को देखा और उस ने मुझे ये बातें कहीं * फिर उसी दिन जो हफ़्तः का पहला था शाम के वक़्त जब उस जगह के दरवाज़े जहां सब शागिर्द जमअ हुए थे यहूदियों के डर से बंद थे ईसा आया और बीच में खड़ा हुआ और
२० उन्हें कहा तुम पर सलाम * और यों कहके अपने हाथों और पहलू को उन्हें दिखाया तब शागिर्द खुदावंद को देख के
२१ खुश हुए * और ईसा ने फिर उन्हें कहा तुम पर सलाम जिस तरह बाप ने मुझे भेजा है मैं उसी तरह तुम्हें भेजता
२२ हूं * उस ने यिह कहके उन पर फूंका और कहा कि तुम
२३ रूहिल्क़ुद्स लो * जिनके गुनाहों को कि तुम बख़्शो उन के बख़्शे जाते हैं जिन्हें तुम दरवगीर करोगे वे दरवगीर किये
२४ जाते हैं * और तूमा उन बारह में से जिसका लक़ब दाइमस
२५ था ईसा के आते वक़्त उनके साथ न था * तब और शागिर्दों ने उसे कहा कि हम ने खुदावंद को देखा है पर उस ने उन्हें कहा जबतक उस के कि मैं उस के हाथों में मेखों के निशान देखूं और मेखों के निशानों में अपनी उंगली करूं और

अपने हाथ को उस की पसली पर फेरूं कभू बावर न करूं *
२६ आठ रोज़ के बअद जब उस के शागिर्द अंदर थे और तूमा
उनके साथ था दरवाज़े बंद होते हूए ईसा आया और बीच में
२७ खड़ा होके बोला तुम पर सलाम * फिर उस ने तूमा को कहा
कि अपनी उंगली पास ला और मेरे हाथों को देख और अपना
हाथ पास ला और उसे मेरे पहलू में कर और बेइअतिक़ाद
२८ मत हो बल्कि मोमिन हो * तूमा ने जवाब में उसे कहा ऐ
२९ मेरे ख़ुदावंद और ऐ मेरे ख़ुदा * ईसा ने उसे कहा तूमा इसलिये
कि तू ने मुझे देखा है तू ईमान लाया नेकबख़्त वे हैं जिन्हों ने
३० नहीं देखा और ईमान लाये * और बहुत से और मुअजिज़े ईसा
ने जो उस किताब में लिखे नहीं गये अपने शागिर्दों के साम्हने
३१ दिखाये * लेकिन ये लिखे गये ता कि तुम ईमान लाओ कि ख़ुदा
का बेटा ईसा मसीह है और ता कि तुम ईमान लाके उस के
नाम से हयात पाओ *

इक्कीसवां बाब

१ और बअद उस के ईसा ने फिर अपने तईं दरयाय तीबारयास
पर शागिर्दों को दिखलाया और इस तरह ज़ाहिर हूआ *
२ कि शमऊन पतरस और तूमा जो टूमस कहलाता है और
नासानाईल जो क़ानाय जलील का है और ज़बदी के बेटे और
३ उस के शागिर्दों में से और दो इकठे थे * शमऊन पतरस ने
उन्हें कहा कि मैं मछली के शिकार को जाता हूं उन्हों ने कहा

हम भी तेरे साथ चलेंगे और निकलके फ़िलफ़ौर किश्ती पर
४ चढ़े पर उस रात कुछ न पकड़ा * और जों सुबह हूई ईसा
किनार पर खड़ा था लेकिन शागिर्दों ने नजाना कि वुह ईसा
५ है * तब ईसा ने उन्हें कहा लड़को आया तुम पास कुछ
६ खाने को है उन्हों ने जवाब दिया नहीं * उस ने कहा किश्ती
की दहनी तरफ़ जाल डालो कि तुम पाओगे उन्हों ने डाला
तब मछलियों की कसरत से क़ादिर न हूए कि उसे खैंचे *
७ इसलिये उस शागिर्द ने जिसे ईसा प्यार करता था पतरस से
कहा कि यिह ख़ुदावंद है अब शमऊन पतरस ने सुनके
कि वुह ख़ुदावंद है कुरता कमर से बांधा क्यूंकि वुह नंगा था
८ और अपने तईं दर्या में डाल दिया * और बाक़ी शागिर्द
मछलियों का जाल खैंचते हूए किश्ती पर आये क्यूंकि वे
९ किनारे से दूर न थे मगर बक़दर दो सौ हाथ के * जों किनारः
आये वहां उन्हों ने कोइलों की आग और उस पर मछली रखी हूई
१० और रोटी देखी * ईसा ने उन्हें कहा उन मछलियों में से
११ जो तुम ने अभी पकड़ी लाओ * शमऊन पतरस ने जाके जाल
एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा हूआ खैंचा बावजूदे कि
१२ मछलियां इस वफ़ूर से थीं जाल न फटा * ईसा ने उन्हें
कहा आओ चाश्त खाओ और शागिर्दों में से किसी को जुरअत
न हूई कि उस से पूछे तू कौन है क्यूंकि वे जानते थे कि
१३ वुह ख़ुदावंद है * तब ईसा ने आके रोटी ली और उन्हें दी और

१४ उसी तरह से मछली भी दी * यिह तीसरा मरतबः था कि
१५ ईसा ने जी उठकर अपने तईं शागिर्दों को दिखलाया * और
जब वे चाश्त खा चुके ईसा ने शमऊन पतरस को कहा ऐ यूना
के बेटे शमऊन क्या तू मुझे उन से ज़ियादः प्यार करता है उसने
उसे कहा हां ऐ खुदावंद तू खुद जानता है कि मैं तुझे
१६ प्यार करता हूं उस ने उसे कहा कि मेरे बर्रे चरा * उसने
दोबारः उसे फिर कहा कि ऐ शमऊन यूना आया तू मुझे
प्यार करता है वुह बोला कि हां ऐ खुदावंद तू तो जानता है कि
में तुझ को प्यार करता हूं उस ने उसे कहा कि मेरी भेड़ें
१७ चरा * उसने उसे तीसरे मरतबः कहा कि ऐ शमऊन यूना
आया तू मुझे प्यार करता है तब पतरस इसलिये कि उसने
तीसरी बार उसे कहा कि आया तू मुझे प्यार करता है
दिलगीर हुआ और उसे कहा कि ऐ खुदावंद तू तो सब कुछ
जानता है तू आगाह है कि मैं तुझे प्यार करता हूं ईसा ने
१८ उसे कहा तू मेरी भेड़ें चरा * तुझ से मैं सच सच कहता हूं
जब तक तू जवान था तू अपनी कमर बांधता था और जहां
कहीं चाहता था जाता था पर जब तू बूढ़ा होगा तू अपने
हाथों को फैलायेगा और दूसरा तेरी कमर बांधेगा और वहां जहां
१९ तू नचाहे तुझे लेजायगा * उसने यिह ख़बर दी कि वुह
कौन सी मौत से खुदा का जलाल ज़ाहिर करेगा और उसने
२० यूं कहके उसे कहा कि मेरे पीछे हो ले * तब पतरस ने

मुतवज्जिह होके उस शागिर्द को जिसे ईसा प्यार करता था जिस ने शाम को उस के सीने पर गिर के पूछा था कि ऐ खुदावंद
२१ वुह जो तुझे पकड़वाता है कौन है पीछे आते देखा * पतरस ने उसे देखके ईसा को कहा ऐ खुदावंद यिह शख़्स क्या
२२ होगा * ईसा ने उसे कहा अगर मैं चाहूं कि जबतक मैं आऊं वुह यहीं ठहरे तो तुझे क्या तू मेरे पीछे चला
२३ आ * तब भाइओं में यिह बात मशहूर हुई कि वुह शागिर्द न मरेगा लेकिन ईसा ने उसे नहीं कहा कि वुह न मरेगा मगर यिह कहा कि अगर मैं चाहूं कि मेरे आने
२४ तक वुह ठहरे तो तुझ को क्या * यिह वुह शागिर्द है जिस ने उन कामों की गवाही दी और उन बातों को लिखा और हमको यक़ीन है कि उस की गवाही हक़ है *
२५ और भी बहुत से काम हैं जो ईसा ने किये कि अगर वे जुदा जुदा क़लमबंद होते तो मैं गुमान करता हूं कि किताबें जो लिखी जातीं दुनया में समा न सकतीं आमीन *

हवारियों के अअमाल

पहला वाब

१ ऐ साओफ़लूस जो कुछ कि ईसा कहता और सिखलाता
२ रहा * उस दम तक कि वुह रूहि क़ुदस के रसूलों को जो
उस के वरगुज़ीदः थे फ़रमान देके ऊपर उठाया गया मैं वुह
३ सब पहली किताब में वयान कर चुका * उन्हीं के नज़दीक
उसने वअद अपने मरने के आप को वहुत सी दलीलों से
ज़िंदः साबित किया कि वुह चालीस दिन तक उन्हें नज़र
आया कियां और ख़ुदा की सलतनत की वातें कहता रहा *
४ और उनकी जमाअत में दाख़िल होके उन्हें हुकम किया कि
औरशलीम से वाहर नजाओ वल्कि जो वअदः कि वाप ने
किया जिसका ज़िक्र तुम मुझ से सुन चुके हो उस का इन्तिज़ार
५ करो * इसलिये कि यहया ने तो पानी से इस्तिवाग़ दिया पर

तुम थोड़े दिनों के बअद रूहि क़ुद्स का इस्तिबाग़ पाओगे *
६ और उन्हों ने इकट्ठे होके उस से सुवाल किया कि ऐ ख़ुदावंद
क्या तू उसी वक़्त सल्तनत बनी इसराईल पर मुक़र्रर करता है *
७ उसने उन्हें कहा तुम्हारा काम नहीं कि तुम उन वक़्तों
और मौसिमों को जिन्हें बाप ने अपने ही इख़तियार में रखा
८ है जानो * लेकिन जब रूहि क़ुद्स तुम पर आयेगा तुम
क़ुव्वत पाओगे और तुम औरशलीम और सारी यहूदियः
और सामरः में इनतिहाय ज़मीन तक मेरे गवाह होगे *
९ और वुह ये बातें कहके उनके देखते हुऐ ऊपर उठाया गया
और बदली ने उसे उनकी नज़र से आप में छिपा लिया *
१० और वुह जब चला जाता था और वे आसमान की सिम्त तक
रहे थे देखो कि दो मर्द सफ़ेद पोशाक में उन पास हाज़िर
११ हुऐ * और कहने लगे कि ऐ जलीली लोगो तुम खड़े आसमान
को क्या तकते हो यही ईसा जो तुम पास से आसमान पर उठाया
गया है जिस तरह तुमने उसे आसमान को जाते देखा उसी
१२ तरह आयेगा * तब वे उस कोह से जो ज़ैतून कहलाता है
और औरशलीम से नज़दीक ऐसा कि ऐक रोज़ सबत की राह
१३ पर है औरशलीम को फिरे * और जब दाख़िल हुऐ तो
ऐक बालाख़ानः पर गये जहां पतरस और यअ़क़ूब और
यूहन्ना और अंद्रयास और फ़िलबूस और तूमा और बारःतूल्मा
और मत्ती और हल्फ़ा का बेटा यअ़क़ूब और शमऊन ग़यूर

१४ और यअ़कूब का भाई यहूदा मुक़ीम थे * ये सब रंडियों के और ईसा की मा मरयम के और उसके भाइओं के साथ
१५ दिल लगाके नमाज़ और दुआ कर रहे थे * उनही रोज़ों में पतरस शागिर्दों के दरमियान जो तमाम और कमाल ऐक सौ बीस
१६ के क़रीब थे खड़ा होके बोला * ऐ मर्द भाईओ वुह किताब जो रूहि कुद्स ने दाऊद की ज़बानी यहूदी के हक़ में जो ईसा के पकड़नेवालों का रहनुमा हूआ पेशतर कही उसका
१७ पूरा होना ज़रूर था * क्यूंकि वुह हम में गिना जाता था
१८ और उस ने उस ख़िदमत से हिस्सः पाया * सो उस शख़्स ने बदी की उजरत से ऐक ज़मीन मोल ली और वुह औंधे मुंह गिरा और उसका पेट फट गया और उस की सारी
१९ अंतड़ियां निकल पड़ीं * और यिह औरशलीम के सारे बशिंदों को मअ़लूम हूआ यहां तक कि उस ज़मीन का नाम उनकी ज़बान में हूक़लदमा हूआ जिसका तरजमः खून
२० की ज़मीन है * इसलिये कि ज़बूर की किताब में लिखा है कि उस को आबादी वीरान हो और उस में कोई बसने
२१ वाला न बसे और उसकी ख़िदमत दूसरा ले * पस जो लोग
२२ कि उस मुद्दत में हरदम हमारे साथ थे * यअ़ने जब से कि ख़ुदावंद ईसा इस्तिबाग़ यहया की इब्तिदा से लेके हमारे दरमियान आमद ओ शुद करता रहा यहां तक कि हमारे पास से ऊपर उठाया गया उन में से चाहिये कि ऐक शख़्स जो उस के जी

२३ उठने का गवाह है हमारे साथ मुक़र्रर हो * तब उन्हों ने दो को मुक़र्रर किया एक यूसुफ़ जिसका अर्फ़ बारसाबास और लक़ब जसतस
२४ था और दूसरा मतसैयास * और दुआ में कहा ऐ ख़ुदावंद जो सब आदमियों के दिलों से आगाह है दिखा कि उन
२५ दोनो में से तू ने किस को इख़तियार किया है * कि वुह उस ख़िदमत और रिसालत से जिस से यहूदा महरूम हूआ
२६ हिस्सः लेके मकानि ख़ास को जाए * और उन्हों ने क़ुरअ डाला और क़ुरअ मतसैयास के नाम पर पड़ा तब वुह ग्यारह शागिर्दों में शामिल किया गया *

दूसरा बाब

१ और जब ईदि असनूअ बराबर आ पहुंची वे सब बिल्इत्तिफ़ाक़
२ इकट्ठे थे * तब नागाह आसमान से एक आवाज़ आई जैसे बड़ी शिद्दत की आंधी की होती है कि उस से सारा
३ घर जिस में वे बैठे थे गूंज गया * और उन्हें आतिश के ज़बाने से मुतफ़र्रिक़ दिखलाई दिये और उन में से हर एक पर
४ पड़े * तब वे सब रूहि क़ुद्स से भर गये और अजनबी ज़बानें जैसा रूह ने उन्हें तलफ़्फ़ुज़ बख़्शा बोलने लगे *
५ और कितने मुत्तक़ी यहूदी हर एक सिनफ़ में से जो आसमान के तले है उसवक़्त औरशलीम में आरहे थे *
६ अब जब कि यिह मशहूर हूआ लोग जमअ होके आये और दंग हूए क्यूंकि हर एक ने उन्हें अपने लुग़त बोलते

७ सुना * और वे सब मुतअज्जिब और हैरान होकर आपस में कहने लगे कि देखो क्या ये सब जो बोलते हैं जलीली
८ नहीं * पस क्यूंकर हर एक हम में से अपने वतन की बोली
९ सुनता है * हम फ़ारसी और माज़ी और ऐलामी और इराक़ि अजम और यहूदियः और कपादूकियः और पनतस और
१० आसिया के * और फ़रूजियः और पमफ़ूलियः और मिसर और लीबिः की उस नवाही के बाशिंदे जो क़ीना के क़रीब है और रूमी मुसाफ़िर और असली और दाख़िली यहूदी *
११ क़रीती और अरब देखते हैं कि वे हमारी बोलियों में ख़ुदा की
१२ उमदः बातें बयान करते हैं * और वे सब हैरान हुए और
१३ तरद्दुद से एक दूसरे को कहता था कि क्या होगा * बअ़ज़े
१४ हंसी से बोले कि यिह शराब के निशे में हैं * तब पतरस ने उन ग्यारह के साथ खड़े होके उन्हें बुलंद आवाज़ से मुफ़स्सल कहा ऐ यहूदी मर्दो और ऐ औरशलीम के सारे रहनेवालो यिह तुम्हें मअ़लूम होवे मेरा कलाम कान धर
१५ के सुनो * कि ये आदमी जैसा तुम गुमान करते हो मतवाले नहीं इसलिये कि यिह दिन की तीसरी साअ़त हैगी *
१६ पर यिह वुह है कि जोईल नबी की मअ़रिफ़त से
१७ फ़रमाया गया * कि ख़ुदा कहता है ज़मानि अख़ीर में यूं होगा कि मैं हर बशर में अपनी रूह डालूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटीयां पेशीन गोइ करेंगी और तुम्हारे जवान

ख़ियालात मुआयनः करेंगे और तुम्हारे बूढ़े ख़्वाब देखेंगे *
१८ मैं उन दिनों में अपने गुलामों और लौंडियों में अपनी रूह
१९ डालूंगा वे पेशीं गोई करेंगे * और मैं आसमान में ऊपर
अजाइब और नीचे ज़मीन पर ग़राइब दिखाऊंगा यअने ख़ून
२० और आतिश और धूयें के उठान होंगे * पेशतर उस से
कि ख़ुदावंद का बड़ा बुज़ुर्ग दिन आवे आफ़ताब अंधेरा और
२१ माहताब लहू हो जायगा * और यूं होगा कि जो कोई ख़ुदावंद
२२ का नाम लेगा नजात पावेगा * ऐ बनी इसराईल ये बातें सुनो
कि ईसा नासरी एक मर्द था जिसका ख़ुदा की तरफ़ से होना
उन मुअजिज़ों और करामातों और निशानों के सबब से जो
ख़ुदा ने उस की मारिफ़त तुम्हारे बीच दिखाये जैसा तुम जानते
२३ हो तुम्हारे नज़दीक साबित हुआ * उसे जब वुह ख़ुदा की
क़ज़ा और क़दर और इल्मि अज़ली से हवालः किया गया
तुम ने पकड़ा और बुरे हाथों से मेख़ें गाड़ के क़तल किया *
२४ उसे ख़ुदा ने मौत के बंदिशों को खोल के फिर उठाया क्यूंकि
२५ यिह मुमकिन न था कि वुह मौत में गिरिफ़्तार रहे * इसलिये
कि दाऊद उस के हक़ में कहता है कि मैं ने ख़ुदावंद को
आगे से हमेशः अपने पास हाज़िर देखा कि वुह मेरे दहनी
२६ तरफ़ है ता न होवे कि मैं कंप होऊं * लिहाज़ा मेरा दिल
शाद है और मेरी ज़बान ख़ुश बल्कि मेरा बदन भी उम्मेद में
२७ चैन से रहेगा * क्यूंकि तू मेरी रूह क़ैदि अदम में न छोड़ेगा

२८ और न तू अपने क़ुद्दूस को फ़ासिद होने देगा * तू ने मुझे
ज़िंदगी की राहों की शिनाख़्त बख़्शी तू मुझे अपने दीदार
२९ के सबब ख़ुशी से भर देगा * ऐ मर्द भाईओ रवा है कि मैं
क़ौम के रईस दाऊद का ज़िक्र तुम से बेपरवा करूं कि वुह
मरा और गाड़ा भी गया और आज तक उसकी गोर हम में
३० है * सो बिनाबर उस के कि वुह नबी था और जानता था
कि ख़ुदा ने उस से क़सम करके कहा कि मैं मसीह को जिस्म
की हैसीयत से तेरे सुल्ब के समरे से मबऊस करूंगा कि तेरे
३१ तख़्त पर बैठे * उस ने यिह पहले जान के ईसा के जी उठने
की बात कही कि उस की रूह क़ैदि अदम में हमेशः रखी
३२ न गई न उसका जिस्म फ़ासिद हूआ * उस ईसा को
३३ ख़ुदा ने उठाया और उस बात के हम सब गवाह हैं * पस
ख़ुदा के दहने हाथ मुरतफ़अ होके और बाप से रूहि क़ुद्स
का वअ़दः पाके उस ने यिह जो तुम अब देखते और
३४ सुनते हो बहाया * इसलिये कि दाऊद आसमान पर नहीं
गया लेकिन उस ने कहा कि ख़ुदावंद ने मेरे ख़ुदावंद को कहा *
३५ कि जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांओं रखने की चौकी
३६ करूं तू मेरे दहने हाथ बैठ * पस इसराईल का सारा
घराना यक़ीन जाने कि ख़ुदा ने उसी ईसा को जिसे तुम ने
३७ सूली पर खैंचा ख़ुदावंद और मसीह किया * जब उन्हों ने
यिह सुना तो उन के दिल छिद गये और पतरस और

बाक़ी हवारियों को कहा कि ऐ मर्द भाईओ हम क्या करें *
३८ तब पतरस ने उन्हें कहा तौबः करो और हर ऐक तुम में से
गुनाहों की मग़फ़िरत के लिये ईसा मसीह के नाम से इस़्तिबाग़ पावे
३९ कि तुम रूहि क़ुद्स इनआ़म पाओगे * इसलिये कि यिह
वअ़्दः तुम से और तुम्हारे लड़कों से है और उन में से जो दूर
हैं जितनों को हमारा ख़ुदा ख़ुदावंद तलब करेगा उन सब से है *
४० और वुह बहुतेरी और बातों से दलीलें लाया किया और उन्हें तरग़ीब
करके कहा कि आप को इस कज बाज़ क़ौम से नजात इख़्तियार
४१ करो * तब उन्हों ने उसकी बात ख़ुशी से क़बूल करके इस़्तिबाग़ पाया
और उस ही रोज़ तीन हज़ार आदमी के क़रीब उन में शामिल
४२ हूऐ * और वे हवारियों की तअ़्लीम और मिलनसारी और रोटी
४३ तोड़ने और नमाज़ करने पर पायदार रहे * और हर नफ़्स को
ख़ौफ़ आया और बहुत से अ़जाइब ओ ग़राइब हवारियों से
४४ ज़ाहिर हूऐ * और वे सब जो ईमान लाये थे मुत्तफ़िक़ थे और
४५ सब निअ़्मतें उन्हें बराबर मिली थीं * और अपने माल ओ असबाब
को बेचके सब को जितनी जिसे हाजत थी बांट के देते रहे *
४६ और वे ईका करके रोज़ रोज़ बिलानाग़ः हैकल में होके और
ख़ानः बख़ानः रोटियां तोड़के ख़ुशी और साफ़ दिली से बाहम
४७ खाते थे * और ख़ुदा की सना करते थे और सब लोगों के नज़दीक
अ़ज़ीज़ थे और ख़ुदावंद हर रोज़ कलीसया में नजात पाने
वालों को ज़ियादः करता था *

तीसरा बाब

१ ऐक दिन पत्रस और यूहन्ना बाहम नमाज़ के वक़्त नवीं
२ साअ़त को हैकल में जाने लगे * और लोग ऐक मादरज़ाद
लंगड़े को ले गये थे उसे हर रोज़ हैकल के दरवाज़े पर जिसका
नाम ख़ुशनुमा है बिठलाते थे ता कि उन से जो हैकल में
३ दाख़िल होते थे ख़ैरात मांगे * उसने जो पत्रस और यूहन्ना को
४ हैकल में जाते देखा तो उन से ख़ैरात मांगी * तब पत्रस ने
यूहन्ना के साथ उसको ग़ौर से देखके कहा कि हम पर नज़र
५ कर * वुह उस उम्मेद से कि उन से कुछ पावे उन को तकता
६ रहा * तब पत्रस ने कहा कि रूपा और सोना मुझ पास नहीं
पर जो मुझ पास है मैं तुझे देता हूं ईसा मसीह नसरी के नाम
७ से उठ और चल * और उसका दहना हाथ पकड़ के उठाया
८ तब उस के पांओं और टख़ने फ़िलफ़ौर उस्तवार होगये * और वुह
कूदके उठ खड़ा हूआ और चला और चलता फिरता और
उछलता कूदता और ख़ुदा की सना करता हूआ उनके साथ
९ हैकल में दाख़िल हूआ * और सब लोगों ने उसे चलते फिरते
१० और ख़ुदा का शुक्र करते देखा * और पहचाना यिह वही
है जो हैकल के ख़ुशनुमा दरवाज़े पर भीख मांगने बैठा था
और वे उस से जो उस पर वाक़िअ़ हूआ निपट मुतहैयर
११ और दंग होगये * और जिस वक़्त वुह लंगड़ा जो चंगा
हूआ पत्रस और यूहन्ना को लपटा जाता था रवाक़ि सुलैमान

१२ में सब लोग बड़ी हैरानी से उनकी तरफ़ दौड़े आते थे * तब
पत्रस ने देख के गरोह से ख़िताब किया ऐ बनी इसराईल
तुम उस शख़्स पर क्यूं तअ़ज्जुब करते हो और क्यूं हमें देख रहे
हो गोया कि हम ने अपनी तवानाई ओ पारसाई से इस शख़्स
१३ को ख़िरामां किया * इबराहीम और इसहाक़ और यअ़क़ूब
के ख़ुदा ने हमारे आबा के ख़ुदा ने अपने बेटे ईसा को जलाल
से मुज़ैयन किया उसे तुम ने पकड़वाया और पीलातूस के
हुज़ूर उस का इनकार किया उस ने मुनासिब जाना कि उसे
१४ रिहा करे * पर तुम ने उस पाकबाज़ और रास्तबाज़ का
इनकार किया और एक क़ातिल की तलब की कि तुम्हारे
१५ लिये छोड़ दिया जाय * और हयात के पेशवा को क़तल
किया पर ख़ुदा ने उसे मुरदों में से उठाया और उसके हम
१६ गवाह हैं * और जब उस के नाम पर ईमान लाया गया
उस के नाम ने उस शख़्स को जिसे तुम देखते हो और
जानते हो उस्तवार किया और उस इअ़तिक़ाद ने जो उस पर
है तुम सब के साम्हने उसे ऐसी सिह्हत कामिलः बख़्शी *
१७ और अब ऐ भाईओ मैं ने जाना कि यिह तुम ने और तुम्हारे
१८ सरदारों ने भी जिहालत से किया * पर ख़ुदा ने जो कुछ
आगे अंबिया की मअ़रिफ़त से कहा था कि मसीह दुख पायगा
१९ इस तरह पूरा किया * पस तौबः करो और बाज़ आओ
ता कि तुम्हारे गुनाह धोये जाएं ता कि ख़ुदावंद के हुज़ूर से

२० ताज़ः दम होने के दिन आवें * और वुह ईसा मसीह
२१ को जिसकी ख़बर आगे से तुम्हें दी गई है भेजे * इसलिये
कि जबतक सब बातें जो ख़ुदा ने अपने सारे पाक पैग़म्बरों की
मअरिफ़त इब्तिदा से कहीं साबित नहो जायें ज़रूर है
२२ कि आसमान उसे लिये रहे * कि मूसा ने आबा से कहा
कि ख़ुदावंद जो तुम्हारा ख़ुदा है तुम्हारे भाइओं में से तुम्हारे
लिये एक पैग़म्बर मुझ जैसा मबऊस करेगा तुम सब चीज़ों में
जो कुछ कि वुह तुम्हें कहे उस की इताअत करो *
२३ और ऐसा होगा जो नफ़स कि उस नबी की न सुनेगा
२४ उम्मत में से निकाल दिया जायगा * बल्कि सब नबियों ने
समूईल से लेके उन तक जो बअद हैं जितनों ने ख़बर दी है
२५ उन दिनों की भी ख़बर दी है * तुम उन नबियों की औलाद
हो जो वअदः ख़ुदा ने हमारे बाप दादों से करके इब्राहीम
से कहा कि तेरे तुख़्म के सबब से ज़मीन के सारे क़बीले नेकबख़्त
२६ होंगे तुम उस वअदे के लोग हो * ख़ुदा ने अपने बेटे ईसा
को उठा के पहले तुम्हारे पास भेजा कि वुह तुम में से
हर एक को उस की बदियों से फिर के तुम्हें सआदत बख़्शी *

चौथा बाब

१ और जब वे गरोह से कह रहे थे काहिन और हैकल के रईस और
२ ज़ादूक़ी उन पर लपके * कि वे उस से नाख़ुश हुए कि उन्हों
ने गरोह को तअलीम दी और ख़बर दी कि मुरदे ईसा के सबब

३ से उठेंगे * तब उन्हों ने उन पर हात डाले और दूसरे दिन तक
४ क़ैद में रखा क्यूं कि यिह शाम के वक़्त हूआ था * लेकिन
बअ़्ज़ उन में से जिन्हों ने सुख़न सुना ईमान लावे और
५ सब समेत गिनती में पांच हज़ार के क़रीब हूऐ * और
दूसरे रोज़ यों हूआ कि उन के रईस और मशाइख़ और
६ कातिब * और सरदारि काहिन ह़न्नान और क़याफ़ा और यूह़न्ना
और सिकंदर और बअ़्ज़ से जो सरदारि काहिन के
७ क़राबती थे सब ओरशलीम में जमअ़ हूऐ * और उन्हें बीच
में खड़ा कर के पूछा कि तुम ने किस क़ुव्वत और किस नाम
८ से यिह किया * उस वक़्त पत़रस ने रूह़ि क़ुदस से मअ़मूर
होके उन्हें कहा कि ऐ गरोह के सादारो और इसराईल
९ के बुज़ुर्गो * अगर उस इह़सान की बाबत जो उस माज़ूर
आदमी पर किया गया हम से आज पुरसिश की जाती
१० है कि वुह क्यूं कर सह़ीह़ हूआ * तो तुम सब को और
सारी क़ौमि इसराईल को यिह मअ़लूम हो कि ईसा
मसीह़ नास़री के नाम से जिसे तुम ने स़लीब पर खैंचा और
जिसे ख़ुदा ने फिर के जिलाया उसी से यिह मर्द तुम्हारे साम्हने
११ सह़ीह़ खड़ा है * यिह वुह पत्थर है जिसे तुम मिअ़मारों
१२ ने नाचीज़ किया था जो कोने का सिर हूआ * और
किसी दूसरे में सलामती नहीं इस लिये कि आसमान के
तले ऐसा और दूसरा नाम नहीं जो इनसानों को बख़्शा गया

१३ हो कि हम उस से नजात पा सकें * जब उन्हों ने पत्‌रस और यूहन्ना की ढिठाई देखी और दरयाफ़्त किया कि वे बेतरबियत और उम्मी लोग हैं मुतअज्जिब हूए फिर
१४ मअ़लूम किया कि वे ईसा के साथ थे * और उस शख़्स को जो चंगा किया गया था उनके साथ खड़ा देख के
१५ लाजवाब हूए * तब उन्हें हुक्म करके कि वे महफ़िल से बाहर जावें आपस में कहने लगे कि हम इन
१६ आदमियों से क्या करें * इस लिये कि यिह् आरशलीम के सारे रहनेवालों पर ज़ाहिर है कि उन्हों ने मुअ़तबर मुअ़जिज़ः दिखलाया और हम इनकार नहीं कर सकते *
१७ पर ता कि यिह् ख़ल्क़ में ज़ियादः मशहूर न हो आओ हम उन्हें ख़ूब धमकावें कि वे आगे को उस नाम की बात
१८ किसी से न करें * तब उन्हों ने उन्हें बुलाके कहा कि ईसा
१९ का नाम मुतलक़ और न लो न उसकी तअ़लीम दो * तब पत्‌रस और यूहन्ना ने जवाब दिया और उन्हें कहा आया ख़ुदा के साम्हने यिह् दुरुस्त है कि हम ख़ुदा की इताअ़त से तुम्हारी ज़ियादः इताअ़त करें कि नहीं तुम ही हुक्म
२० करो * क्यूंकि मुमकिन नहीं कि हम उन चीज़ों को जो
२१ हम ने देखीं और सुनी हैं न कहें * तब उन्हों ने उनको ज़ियादः धमका के छोड़ दिया इस लिये कि उन्हों ने कोई हुज्जत न पाई कि उन्हें सज़ा देवें और लोगों से भी डरे कि

तमाम गरोह उस के वास्ते जो वाक़िअ़ हुआ था ख़ुदा की
२२ सना करती थी * और उस शख़्स की उ़मर जिसकी शिफ़ा से
२३ मुअ़्जिज़ः दिखाया गया चालीस बरस से ऊपर थी * और
वे छूटके अपने रफ़ीक़ों के पास गये और सब कुछ
जो सरदार काहिनों और मशाइख़ ने उन्हें कहा था बयान किया *
२४ उन्हों ने यिह सुन कर दिल ब इत्तिफ़ाक़ ख़ुदा की तरफ़ आवाज़ें बलंद
कीं और बोले ऐ मख़दूम तू वह ख़ुदा है जिसने आसमान
और ज़मीन और दरया और सब कुछ जो उन में हैं बनाया *
२५ तू ने अपने ख़ादिम दाऊद की ज़बान से कहा अक़ाम
क्यूं धूम मचाते हैं और लोग ख़ियालि बातिल करते
२६ हैं * ख़ुदावंद पर और उस के मसीह पर बरअ़क्स होके
ज़मीन के बादशाहों ने ख़ुरूज किया और रईस बाहम जमअ़
२७ हुए * कि फ़िलहक़ीक़त हीरोदीस और पन्तयूस पिलातूस
अक़ाम और इसराईली लोगों के साथ तेरे फ़रज़ंदि मुक़द्दस
ईसा की अ़दावत से जिस पर तू ने मसीह किया मुजतमिअ़
२८ हुए * ता कि वह जो तेरे दस्त क़ुदरत ने पहले मुअ़य्यन किया
२९ कि वक़ूअ़ में आवे उसे करें * और ऐ ख़ुदावंद अब उन
की धमकियों को देख और अपने बंदों को यिह अ़ता कर
३० कि वे कमाल दिलेरी से तेरी बात बयान करें * पस इसलिये
अपना हाथ शिफ़ा देने को लंबा कर और ऐसा कर कि तेरे
फ़रज़ंदि मुक़द्दस ईसा के नाम से अ़जाइब ओ ग़राइब वाक़िअ़

३१ छावें * और जो वे दुआ मांगचुके वुह मकान जिस में वे इकट्ठे थे लरज़ा और वे सब रूहिक़ुद्स से भर गये और
३२ खुदा की बात वेबाक बोले * और ईमानदारों की गरोह एक जान औ दिल थी कोई अपने असबाब में से किसी चीज़ को अपना
३३ न कहा बल्कि हर चीज़ सब की थी * और हवारियों ने बड़ी कुव्वत से खुदावंद ईसा के फिर उठने पर गवाही दी
३४ और उन सब पर बड़ा फ़ज़्ल था * उनके दरमियान कोई मुहताज न था इसलिये कि सब जितने कि ज़मीनों और घरों के मालिक थे उन्हें वेचते थे और वेच वेचके उन की क़ीमतें
३५ लाते थे * और हवारियों के क़दमों पास रखते थे और हर किसी को जितनी जिसे हाजत थी हिस्सः दिया जाता था *
३६ और यूसफ ने जिसको हवारियों ने बरनबास यअने तसल्ली का बेटा लक़ब दिया जो फ़िरक़ः में लोई और क़ुपरस का मुतवत्तिन था अपनी ज़मीन को जो उस के तसर्रुफ़ में थी वेचा और क़ीमत को लेके हवारियों के क़दमों पास रखा *

पांचवां बाब

१ और हनानिया नाम एक मर्द ने अपनी जोरू सफ़ीरा के साथ
२ बाहम होके अपना कुछ माल वेचा * और क़ीमत में से कुछ रख छोड़ा उस की जोरू भी जानती थी और कुछ लाके हवारियों
३ के क़दमों पास रखा * तब पत्रस ने कहा ऐ हनानिया क्यूं तेरे दिल में शैतान समा गया कि रूहिक़ुद्स के साम्हने

झूठा हूआ और ज़मीन की क़ीमत में से कुछ रख छोड़ा *
४ क्या यिह जबतक तेरे तसर्रुफ़ में थी तेरी न थी और अब बेची गई
तो क्या तेरे इख़तियार में न थी तू ने अपने दिल में इस बात को
क्यूं आने दिया तू आदमी के साम्हने नहीं ख़ुदा के आगे
५ झूठा हूआ * तब हननियाह ये बातें सुनते ही गिरपड़ा और
मरगया तब उन सब को जिन्हों ने ये बातें सुनीं बहुत ख़ौफ़
६ आया * और जवानों ने आकर उसे कफ़नाया और बाहर
७ लेजाके दफ़न किया * और क़रीब तीन साअतों के गुज़रीं
८ कि उस की जोरू उस वाक़िआ से बेख़बर आई * तब
पतरस ने उस से कहा मुझे बता तू ने ज़मीन इतने को बेची
९ वुह बोली हां इतने को * फिर पतरस ने उसे कहा कि तुम
ने किस सबब से इका किया कि रूहि इलही को आज़माओ
देख जिन्हों ने तेरे शौहर को गाड़ा उन के पांओं आस्तान पर
१० हैं और तुझे भी लेजायेंगे * तब वोंहीं वुह उस के क़दमों
पास गिर पड़ी और जान बहक़ हूई और जवानों ने आके
उसे मरी पाया और बाहर लेजा के उस के शौहर के मुत्तसिल
११ गाड़ा * उस वक़्त सारी कलीसया को और उन सब को जिन्हों
१२ ने ये बातें सुनीं बहुत ख़ौफ़ आया * और गरोह के
दरमियान हवारियों के हाथों से बहुत से अजाइब ओ ग़राइब
वाक़िअ हूऐ और वे बितिफ़ाक़ रवाक़ि सुलैमान में रहते थे *
१३ और बाक़ी लोगों से किसी ने जुरअत नकी कि उन में शामिल

१४ हो बैठे लेकिन गरोह ने उन की तकरीम की * और मर्द ओ ज़न गरोह गरोह ख़ुदावंद पर ईमान लाके ज़ियादः होते
१५ जाते थे * यहां तक कि लोग रंजूरों को बाज़ारों में लाके बिछौनों और तख़्तों पर रखते थे ता कि गुज़रते हूए किसी पर
१६ उन में से पतरस की परछाईं पड़े * और बहुत से लोग चारसू के शहरों के भी रंजूरों को और उन के जो पलीद रूहों के मुबतला थे उठा लाके औरशलीम में जमअ़ होते थे
१७ और सब शिफ़ा पाते थे * तब सरदारि काहिन ने और उस के सारे रफ़ीक़ों ने जो ज़ादूक़ियों के फ़िरक़े में के थे हसद से
१८ पुर होके * हवारियों पर हाथ डाले और ज़िंदान अ़वाम
१९ में क़ैद किया * तब ख़ुदावंद के फ़िरिश्ते ने शब को ज़िंदान
२० के दरवाज़े खोले और उन्हें बाहर निकाल के कहा * जाओ हैकल में खड़े होके उस हयात की सारी बातें ख़ल्क़ से कहो *
२१ वे यिह सुनके सवेरे सुबह को हैकल में दाख़िल होके तअ़लीम देने लगे तब सरदारि काहिन और उस के रफ़ीक़ों ने हाज़िर होके महफ़िल को और बनी इसराईल के सब मशाइख़ को इकट्ठे बुलाया
२२ और हुक्म करके ज़िंदान में भेजा कि उन्हें लेआवें * पर पियादों ने वहां पहुंचके उन्हें ज़िंदान में न पाया तब उलटे फिर के ख़बर दी *
२३ कि हम ने तो ज़िंदान को बड़ी इहतियात से बंद और ज़िंदानबानों को दरवाज़ों पास खड़े हूए देखा पर हम
२४ ने जब खोला तो किसी को अंदर न पाया * अब जब बड़े

रोज़मर्रः हैकल में और हर घर में तअलीम देने से और ईसा मसीह की बशारत देने से बाज़ न रहे *

छठा बाब

१ और उन रोज़ों में जब शागिर्दों की कसरत होने लगी यूनानियों ने इबरानियों पर हंगामः बरपा किया क्यूंकि ख़िदमत हररोज़ः करने में उनकी रांडों से आना कानी करते थे * तब उन बारह
२ ने शागिर्दों की जमाअत को बुला के कहा मुनासिब नहीं कि हम ख़ुदा की बात को छोड़ के दस्तरख़्वानों की ख़िदमत करें *
३ पस ऐ भाईओ तुम आप में से सात मुअतबर मर्द जो रूहि क़ुद्स और दानिश से मअमूर हों इन्तिख़ाब करो उन्हें हम
४ इस काम पर मुक़र्रर करें * और हम आप नमाज़ में और
५ कलिमः की ख़िदमत में हमेशः मसरूफ़ रहेंगे * और उस कलाम से सारी जमाअत राज़ी हुई और उन्हों ने इस्तीफ़नास नाम एक शख़्स को जो ईमान और रूहि क़ुद्स से भरा था और फ़ेलबूस और परकरस और नीक़ानूर और तैमून और पारमनास और नीक़लाऊस नौ यहूदी इनताकी को इन्तिख़ाब
६ किया * उन्हें उन्हों ने हवारियों के साम्हने खड़ा किया और
७ उन्हों ने नमाज़ करके उन पर हाथ रखे * और ख़ुदा के कलिमः ने तरक़्क़ी की और औरशलीम के बीच शागिर्दों की जमाअत बहुत बढ़ती गई और काहिनों का बड़ा अंबोह ईमान
८ का ताबिअ हुआ * और इस्तीफ़ान जो ईमान और क़ुव्वत

से भरा हूआ था बड़े मुअजिज़े और अजाइब ख़ल्क़ को
९ दिखाया किया * तब लीबरतियों और क़रनियों और क़लक़िया
और असिया के लोगों के मजमअ में से बअज़े उठ के इस्तीफ़ान
१० से बहस करने लगे * और वुह ऐसी अक़्ल और रूह से
११ तकल्लुम करता था कि वे उस का साम्हना न कर सके * तब
उन्हों ने लोगों को भड़काया और वे बोले कि हम ने उसे
१२ मूसा और ख़ुदा के हक़ में कुफ़र कहते सुना है * उन्हों ने
गरोह और मशाइख़ और कातिबों को उकसाया और लपक
१३ के उसे पकड़ा और महफ़िल में लाये * और झूठे गवाह खड़े
किये उन्हों ने कहा कि यिह मर्द उस मक़ामि मुक़द्दस और
शरीअत के हक़ में कुफ़र कहने से बाज़ नहीं आता *
१४ इसलिये कि हम ने उसे कहते सुना है कि ईसा नासरी इस
मकान को ढायगा और उन रसमों को जो मूसा ने हम को
१५ सौंपे बदल डालेगा * तब सब ने जो महफ़िल में बैठे थे डूबके
उस पर नज़र की और उस के चिहरे को देखा कि फ़िरिश्तः
का सा चिहरः था *

सातवां बाब

१ तब सरदारि काहिन ने पूछा कि ये बातें यूं हैं *
२ वुह बोला कि ऐ मर्द भाईओ और ऐ आबाओ सुनो कि
हमारे बाप इबराहीम पर जब वुह इरम नहरें में था उस
से पहले कि वुह हरान में मुक़ीम हो ख़ुदाय ज़ुल्जलाल

३ नमूद हुआ * और उसे कहा कि अपने मुल्क और
अपने ख़ेशावंदों में से निकल आ और उस ज़मीन में जो
४ मैं तुझे दिखाऊंगा चला आ * तब उसने कलदियों के
मुल्क से बाहर आके ख़रान में बूद ओ बाश की और वहां
से जब उसका बाप मरगया इस ज़मीन में जिस में तुम अब
५ बसे हो उठ आया * और उसको ख़ुदा ने वहां कुछ मीरास
बल्कि क़दम भर ज़मीन न दी पर उस ने वअ़दः किया कि
मैं यिह ज़मीन तेरे और बअ़द तेरे तेरी नस्ल के तसर्रुफ़
६ में दूंगा अगरचिः उस वक़्त उसे कोई फ़रज़ंद नथा * और
ख़ुदा ने फ़रमाया कि तेरी नस्ल अजनबी मुल्क में जा रहेगी
और वे उन को ग़ुलामी में लायेंगे और चारसौ बरस तक बद
७ सलूकी करेंगे * और ख़ुदा ने फ़रमाया कि उस क़ौम को
जिसके वे ग़ुलाम होंगे मैं सज़ा दूंगा और बअ़द उस के वे
८ बाहर आवेंगे और उस जगह मेरी बंदगी करेंगे * और
उसने उसे ख़तनः का वसीक़ः दिया सो उस से इसहाक़
पैदा हुआ और आठवें दिन उसका ख़तनः किया और
इसहाक़ से यअ़क़ूब और यअ़क़ूब से घराने के बारह सरदार
९ पैदा हुए * और सरदारों ने रश्क से यूसुफ़ को नईं
१० मिसर में बेचा और ख़ुदा उस के साथ था * और उसे सारे
रंजों से रिहाई दी और बादशाहि फिरऊ़न के आगे उसे
निअ़मत ओ हुकूमत बख़्शी और उस ने उसे मिसर और अपने

११ सब घर का ख़ाली किया * अब सारे मुल्कि मिस्र और किनआ़न में काल हूआ और बड़ी मुसीबत पड़ी और हमारे आबा को
१२ कूत न मिलता था * जब यअ़कूब ने सुना कि मिस्र में
१३ अनाज है उसने पहले हमारे आबा को भेजा * और दूसरी बार यूसुफ़ ने आप को अपने भाइओं पर ज़ाहिर किया और
१४ यूसुफ़ का नसब फ़िरऊ़न को दरयाफ़्त हूआ * तब यूसुफ़ ने भेज कर अपने बाप यअ़कूब को और अपने सब कुनबे को जो
१५ तीन कोड़ी और पंदरह शख़्स थे बुलवाया * सो यअ़कूब मिस्र
१६ में पहुंचा और वुह और हमारे आबा मरगये * और उन्हें शकीम में लेगये और उस मक़बरे में जो इबराहीम ने कुछ नक़्दी देके बनी हमूर अबू शकीम से मोल लिया था गाड़ा *
१७ पर जब उस वअ़दे का वक़्त जिस पर ख़ुदा ने इबराहीम से क़सम की थी नज़दीक पहुंचा क़ौम बढ़ने लगी और मिस्र में कसरत होने
१८ लगी * जब तक दूसरा बादशाह हूआ जो यूसुफ़ को नजानता था *
१९ उसने हमारे ख़ेशावंदों से दग़ा करके हमारे आबा से बद सलूकी की यहां तक कि उसने उन के लड़कों को निकलवा दिया ता कि
२० वे जीते न रहें * उसी वक़्त मूसा पैदा हूआ जो निहायत ख़ूब सूरत था और तीन महीने तक अपने बाप के घर में
२१ पला * और जब वुह निकाला गया फ़िरऊ़न की दुख़्तर ने
२२ उसे उठा के बेटा करके ले पाला * और मूसा ने मिस्रियों की सारी हिकमत में तरबियत पाई और क़ौल ओ फ़िऐ़ल

२३ में बड़ा रहा था * जब वुह पूरे चालीस बरस का हूआ तो उसके दिल में आया कि अपने भाइओं बनी इसराईल से
२४ मिले * और एक को उन में से सितम उठाते देखके उस ने हिमायत की और उस मिसरी को जान से मार के मज़लूम
२५ का इनतिक़ाम लिया * इसलिये कि उसने गुमान किया कि उसके भाई समझे कि ख़ुदा उन्हें उसकी मअरिफ़त रुस्तगारी
२६ देता है लेकिन वे न समझे * फिर दूसरे दिन उनसे जिस वक़्त वे लड़ रहे थे दोचार हूआ और चाहा कि उन्हें मिलादे और बोला कि ऐ मर्दो तुम भाई हो तुम क्यूं एक दूसरे
२७ पर जफ़ा करते हो * लेकिन उसने जो अपने क़रीब पर ज़ुल्म कर रहा था उसको मुज़ाहमत करके कहा कि तुझे किसने हम पर हाकिम और फ़रमान फ़रमा मुक़र्रर किया है *
२८ क्या जिस तरह कल तूने मिसरी को क़तल किया मुझ को
२९ क़तल किया चाहता है * फिर मूसा उस कहने पर भागा और चंदे सरज़मीन मदीन में जा रहा वहां उस से दो
३० बेटे पैदा हूए * और जब चालीस बरस गुज़र गये तो ख़ुदावंद का फ़िरिश्तः कोहि सैना के बियाबान में एक मुशतिअ़ल पूदः
३१ के शुअ़लः में उस पर ज़ाहिर हूआ * मूसा देख कर उस रुआयत से मुतअ़ज्जिब हूआ और जब नज़दीक गया कि उसे
३२ बख़ूबी देखे तो ख़ुदा की आवाज़ उस तक आई * कि मैं तेरे आबा का ख़ुदा इबराहीम का ख़ुदा और इसहाक़ का ख़ुदा

और यअ़क़ूब का ख़ुदा तब मूसा कांप गया और जुरअत न की
३३ कि देखे * तब ख़ुदा ने उसे कहा कि जूती अपने पांओं
से उतार कि यिह जगह जहां तू खड़ा है मुक़द्दस ज़मीन
३४ है * मैं अपने लोगों का दुख जो मिसर में हैं देख रहा
हूं और मैं ने उनका नालः सुना उन्हें छुड़ाने उतरा हूं अब
३५ तू इधर आ मैं तुझे मिसर में भेजूंगा * यिह मूसा जिस का
उन्हों ने इनकार करके कहा किसने तुझे हम पर हाकिम
और क़ाज़ी किया उसी को ख़ुदा ने उस फ़िरिश्ते की मअ़रिफ़त से
जो बूटे में उस पर ज़ाहिर हुआ हाकिम और रिहाई
३६ देनेवाला करके भेजा * यिह शख़्स ज़मीनि मिसर में और
दरयाय सुर्ख़ और बियाबान में चालीस बरस अ़जाइब ओ
३७ ग़राइब दिखलाके उन्हें बाहर निकाल लाया * यिह है वुह
मूसा जिसने बनी इसराईल को कहा कि ख़ुदा ख़ुदावंद तुम्हारे
भाइओं में से मुझ सा एक नबी तुम्हारे लिये मबऊ़स करेगा
३८ तुम उसकी इताअ़त करो * यिह है वुह जो कलीसिया के
दरमियान बियाबान उस फ़िरिश्ते के जो उस से कोहि सैना में
बोला और हमारे आबा के साथ था उसी को ज़िंदगी का
३९ कलाम मिला कि हम को सौंपे * हमारे आबा ने उसकी
इताअ़त से किनारः किया बल्कि अपने पास से दफ़अ़ किया
४० और उनके दिल मिसर को फिरे * और हारून को कहा
हमारे लिये ऐसे ख़ुदा जो हमारे आगे चलें बना इसलिये

कि यिह मूसा जिसने हमें मिसर की ज़मीन से बाहर निकाला
४१ हम नहीं जानते उसे क्या हूआ है * और उन दिनों में
उन्हों ने ऐक बछड़ा बनाया और बुत को हदयः गुज़राना और
४२ अपनी दस्तकारियों से मसरूर हूऐ * तब ख़ुदा ने
फिर के उन्हें इख़्तियार दिया कि आसमानी लशकर की
इबादत करें चुनांचिः नबियों की किताब में लिखा है कि ऐ
इसराईल के घराने तुम ही ने चालीस बरस बियाबान में मुझे
४३ हदये और क़ुरबानियां गुज़रानीं * हां तुम ने मलकूम के क़ुब्बः
और अपने ख़ुदा रमफ़ान के सितारे को यअ़ने उन सूरतों को
जो तुम ने परस्तिश करने को बनाईं साथ उठाया और मैं तुम्हें
४४ बाबुल से परे उठा लेजाऊंगा * हमारे आबा के दरमियान
गवाही का ख़ीमः बियाबान में था चुनांचिः उस ने जो मूसा से
हमकलाम था बनाया कि जैसा तू ने देखा था उस डौल का ऐक
४५ बना * उसे हमारे बापदादे अगलों से पाके यहूशूअ़ के साथ
अ़वाम के मुल्क में लाये उन्हें ख़ुदा हमारे आबा के साम्हने
४६ दाऊद के अ़सर तक ख़ारिज करता रहा * और दाऊद पर
ख़ुदा की इनायत हूई और मुराद मांगी कि यअ़क़ूब के ख़ुदा
४७ के लिये ऐक मसकन बनाऐ * पर सुलैमान ने उस के लिये
४८ घर बनाया * लेकिन ख़ुदावंद तअ़ला उन इबादत खानों मे जो
दस्तकारी से बने हैं नहीं रहता चुनांचिः नबी कहता है *
४९ आसमान मेरा तख़्त और ज़मीन मेरा फ़र्श पाअन्दाज़ है ख़ुदा

कहता है तुम मेरे लिये कौनसा घर बनाओगे और मेरे
५० आराम का कौनसा मकान है * क्या मेरे हाथ ने यिह सब
५१ चीज़ें नहीं बनाईं * ऐ गर्दनकशो और ऐ दलों और कानों
के नामख़तूनो तुम हमेशः रूहि क़ुद्स की मुख़ालफ़त करते
हो जिस तरह तुम्हारे आबा ने की ऐसा ही तुम भी करते हो *
५२ कौन नबियों में है जिसे तुम्हारे आबा ने न सताया उन्हों ने
उन को जो उस रास्तबाज़ के आने की ख़बर देनेवाले थे क़तल
किया और तुम अब उसके पकड़वाने वाले और क़ातिल
५३ हुए हो * तुम ने शरीअत को फ़िरिश्तों की वसातत से
५४ पाया और हिफ़्ज़ न किया * वे ये बातें सुनतेही दिलों में
५५ कट गये और उस पर दांत किचकिचाने लगे * पर उस ने
रूहि क़ुद्स से मअमूर होके आसमान पर ग़ौर से निगाह
की और ख़ुदा के जलाल को और ईसा को ख़ुदा के दहने
५६ हाथ खड़ा हुआ देखा * और कहा देखो मैं आसमान
को खुला और इबनि आदम को ख़ुदा के दहने हाथ खड़े
५७ देखता हूं * तब उन्हों ने बड़े शोर से चिल्ला के अपने कानों को
५८ बंद किया और मुत्तफ़िक़ होके उस पर लपके * और शहर से
बाहर निकाल के संगसार किया और गवाहों ने अपने कपड़ों
५९ को साऊल नाम एक जवान के पांओं पास रख दिया * और
उन्हों ने इस्तीफ़ान को संगसार किया वुह उस वक़्त दुआ
करता और कहता था कि ऐ ख़ुदावंद ईसा मेरी रूह को

६० क़बूल कर * वुह घुटने टेक के बलंद आवाज़ से पुकारा कि ऐ ख़ुदावंद यिह गुनाह उन पर साबित न कर और यिह कह के सो गया *

आठवां बाब

१ और सौलूस भी उस के क़तल पर मुत्तफ़क़ था और उस रोज़ औरशलीम के अहलि कलीसया पर बड़ा रंज हूआ और हवारियों के सिवा वे सब यहूदियः और सामरः की सरज़मीनों
२ में मुतफ़र्रक़ होगये * और बअ़ज़े अच्छे लोगों ने इस्तीफ़ान
३ को दफ़न किया और उस पर बहुत सा रोये पीटे * और सौलूस घर घर घुसके अहलि कलीसया को ख़्वार करता था और मर्दों और रंडियों को खैंच के क़ैद में डालता था *
४ पर वे परागंदः होके हर जगह बात की बशारत देते गये *
५ और फ़ैलबूस ने सामरः के एक शहर में जाके उनको मसीह
६ की बशारत दी * और लोगों ने उन मुअ़जिज़ों को जो फ़ैलबूस दिखाता था सुन के और देख के उस की बातें बिल इत्तिफ़ाक़ दिल
७ से सुनीं * इसलिये कि पलीद रूहें बहुत से लोगों पर से जो आसेब ज़दः थे बलंद आवाज़ से चिल्ला के उतरीं और
८ बहुतेरे शल और लंगड़े चंगे हूए * और उस शहर में बड़ी
९ ख़ुशी हूई * और उस से पेशतर शमऊन नामीदः एक शख़्स सामरः में ज़ाहिर हूआ था जिसने जादूकर के अहलि सामरः को बेहवास कर दिया था और कहता था कि मैं भी बड़ा कोई

१० हूं * और अदना से अअ़्ला तक सब उस के मुअ़्तक़िद हो के कहते थे कि यिह् शख़्स ख़ुदा की बड़ी क़ुव्वत है *
११ और वे उस सबब से कि उसने एक मुद्दत से जादू करके उन्हें बेहवास कर दिया था उस के मुरीद हो रहे थे *
१२ पर जब उन्हों ने ख़ुदा की ममलुकत और ईसा मसीह् के नाम की बशारत को जो फ़ैलबूस देता था बावर किया तो क्या मर्द
१३ और क्या रंडियां सब इस्तिबाग़ पाने लगे * और शमऊ़न ख़ुद भी ईमान लाया और इस्तिबाग़ पाके हमेशः फ़ैलबूस के साथ रहा और मुअ़्जिज़े और बड़ी करामतें जो ज़ाहिर हुईं थीं देखके दंग हुआ *
१४ अब हवारियों ने जो औरशलीम में थे सुनकर कि सामरियों ने ख़ुदा की बात मान ली पत़रस और यहिया को उन कने
१५ भेजा * उन्हों ने वहां जाके उनको हक़ में दुआ़ मांगी कि वे
१६ रूहि क़ुदस पावें * इस लिये कि उस वक़्त तक उसने उन में से किसी में हुलूल न किया था उन्हें सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा
१७ के नाम से इस्तिबाग़ दिया गया था * तब उन्हों ने उन पर
१८ हाथ रखे और उन्हों ने रूहि क़ुदस को पाया * जब शमऊ़न ने देखा कि हवारियों के हाथ रखने से रूहि क़ुदस दिया
१९ जाता है तो उनको रूपे गुज़राने * और कहा मुझ को भी यहीं तवानाई दो कि जिस पर मैं अपने हाथ रखूं वुह रूहि
२० क़ुदस को पा जाय * तब पत़रस ने उसे कहा कि तेरा माल तेरे साथ बरबाद हो इस लिये कि तू ने गुमान किया

२१ कि खुदा का अतीयः दौलत से मोल लिया जाता है * तेरा उस बात में न हिस्सः है न बख़रा है क्यूंकि खुदा के आगे
२२ तेरा दिल सीधा नहीं * पस अपनी इस शरारत से तौबः कर और खुदा से मांग ता शायद कि तेरे दिल का गुमान मुआफ़
२३ किया जाय * इस लिये कि मैं देखता हूं कि तू कड़वाहट के
२४ पित्ते में और बदी की बंद में है * तब शमऊन ने जवाब में कहा कि तुम मेरे लिये खुदा से दुआ मांगो कि उन चीज़ों
२५ से जो तुम बयान कीं कुछ मेरे आगे न आवे * और वे गवाही देके और खुदावंद की बात बोलके औरशलीम को फिरे और सामरियों की बहुत सी बस्तियों मे बशारत दी *
२६ और खुदावंद के फिरिश्ते ने फ़ैलबूस को खिताब करके कहा उठ और जुनूब की तरफ़ उस राह से जो औरशलीम से
२७ ग़ज़ः को जाती है और दश्त है जा * पस उठके रवानः हूआ और देखो कि एक मर्द हबशी ख़ोजः सरा जो हबश की मलिकः कंदाक़ी का एक अमीर उसके सारे ख़ज़ाने का मुख़्तार था और औरशलीम में इबादत के लिये आया था *
२८ फिर चला जाता था अपनी बहल पर बैठा था और अशइया
२९ नबी की किताब पढ़ता था * तब रूह ने फ़ैलबूस को कहा
३० कि नज़दीक जा और अपने तईं उस बहल से मिला * तब फ़ैलबूस ने उधर दौड़ के उसे अशइया नबी पढ़ते सुना और कहा कि आया तू जो कुछ कि पढ़ता है समझता है *

३१ वुह बोला जबतक न कोई मुझे हिदायत करे यिह मुझ से
क्यूंकर हो सके और उसने फ़ैलबूस से ख़्वाहिश की सवार हूए
३२ और उसके साथ बैठे * उस किताब की फ़स्ल जो वुह
पढ़ता था यिह थी कि वुह जैसे गोसपंद जो ज़बह करने
को लाया गया और जैसे बर्रः जो अपने बाल कतरने वाले
३३ के आगे बेसदा है अपना मुंह नहीं खोलता * उसकी
फ़रोतनी से उसका इनसाफ़ न होने पाया और उसके अ़स्र
के लोगों का कौन ज़िक्र करेगा क्यूंकि उसकी तो जान भी
३४ ज़मीन पर से उठा डाली * और वुह ख़्वाजःसरा फ़ैलबूस को
कहने लगा मैं तुझ से इलतिमास करता हूं नबी किसके
३५ हक़ में यिह कहता है अपने या दूसरे शख़्स के * तब
फ़ैलबूस अपना मुंह खोल के और उस किताब के बाइस क़ाबू पाके
३६ ईसा की बशारत देने लगा * और वे सफ़र करते हूए एक
होज़ के नज़दीक पहुंचे तब ख़्वाजःसरा ने कहा कि देख
पानी अब मुझे इस्तिबाग़ पाने से कौन सी चीज़ रोकती है *
३७ फ़ैलबूस बोला कि अगर तू बिल्कुल अपने सारे दिल से
ईमान लाया है तो रवा है उसने जवाब में कहा कि मैं
३८ ईमान लाता हूं कि ईसा मसीह ख़ुदा का बेटा है * तब
उसने हुक्म किया कि गाड़ी खड़ी करें और वे दोनो फ़ैलबूस
और ख़्वाजःसरा पानी में उतरे और उस ने उसे इस्तिबाग़
३९ दिया * और जब वे पानी से निकले ख़ुदावंद की रूह

ने फ़ैलबूस को पकड़ लिया और ख़्वाजः सरा ने उसे फिर न देखा
४० और ख़ुशी से अपनी राह चला गया * और फ़ैलबूस अज़ोतुस
में नमूद हूआ और उस ने गुज़रते हूए जब तक क़ैसरियः
में आया सब शहरों में बशारत दी *

नवां बाब

१ और साऊल हनोज़ ख़ुदावंद के शागिर्दों के तहदीद ओ क़तल
२ पर जी चलाके सरदार काहिन पास गया * और उस से
दमिश्क़ के मजमओं के लिये इस मज़मून के ख़त मांगे कि
अगर मैं किसी को इस तरीक़ पर पाऊं ख़्वाह रंडियां ख़्वाह
३ मर्द तो उन्हें बांध के ओरशलीम में लाऊं * और असनाय
सफ़र में जब वुह दमिश्क़ के मुत्तसिल आया ऐसा हूआ
कि नागाह एक नूर आसमान से उसके गिर्द चमका *
४ तब वुह ज़मीन पर गिर पड़ा और एक आवाज़ सुनी कि
उसे कहा साऊल ऐ साऊल तू मुझे क्यूं सताता है *
५ उस ने पूछा कि ऐ ख़ुदावंद तू कौन है ख़ुदावंद ने कहा
कि मैं ईसा हूं जिसे तू सताता है तुझ पर दुशवार है
६ कि अनयों पर लात मारे * उस ने लर्ज़ां ओ हैरान होके
कहा ऐ ख़ुदावंद तू क्या चाहता है मैं क्या करूं ख़ुदावंद
ने उसे कहा उठ और शहर में दाख़िल हो और वुह जो
७ तुझ पर वाजिब है कि करे तुझे कहा जायगा * और उसके
साथवाले मर्द मबहूत खड़े रह गये कि आवाज़ सुनते थे पर

८ किसी को न देखते थे * और सूलूस ज़मीन पर से उठा और आंखें खुलीं होते हूऐ उसे कुछ न सूझा और उसका
९ हाथ पकड़के दमिश्क़ में लाये * और वुह तीन दिन तक
१० बे बसारत था और न खाता था न पीता था * तब दमिश्क़ में हननिया नाम ऐक शागिर्द था जिसे खुदा ने ब कश्फ़ कहा कि ऐ हनानिया वुह बोला कि देख मैं ऐ खुदावंद *
११ खुदावंद ने उसे कहा कि उठकर उस राह जो मुस्तक़ीम है जा सूलूस नाम ऐक शख़्स तरसी यहूदा के घर में है उसे
१२ ढूंढ देख कि वुह दुआ करता है * और उसने ख़ियाल में देखा है कि हनानिया नामीदः ऐक शख़्स ने दाख़िल होके
१३ उस पर हाथ रखे ता कि वुह अपनी बसारत पावे * तब हननिया ने जवाब दिया कि ऐ खुदावंद मैं ने बहुतों से उस शख़्स के हक़ में सुना है कि उसने औरशलीम में तेरे
१४ मुक़द्दस बंदों के साथ बहुत बदियां कियां हैं * और यहां वुह रईस काहिनों की तरफ़ से मुख़्तार है कि उन सब को
१५ जो तेरा नाम लेते हैं बांधे * पर खुदावंद ने कहा कि रवानः हो इस लिये कि वुह मेरा ज़र्फ़ि बरगुज़ीदः है ता कि अवाम और बादशाहों और बनी इसराईल के आगे मेरा नाम करे *
१६ क्यूंकि मैं उसे दिखाऊंगा कि उसे मेरे नाम के लिये कैसा
१७ बड़ा दुख उठाना ज़रूर है * और हनानिया गया और उस घर में दाख़िल हूआ और अपने हाथ उस पर रखके

कहा कि ऐ भाई साऊल ख़ुदावंद ने यअ़ने ईसा ने जो तुझ
पर उस राह में जिस से तू आया ज़ाहिर हुआ मुझ को भेजा
है ता कि तू अपनी बसारत पावे और रूहि क़ुदस से भर जावे *
१८ और वोंहीं उसकी आंखों से कुछ छिलके से गिरे और
उसने फ़िलफ़ौर बसारत पाई और उठके इस्तिबाग़ पाया *
१९ और कुछ खुराक खाके क़ुव्वत पाई फिर सूलूस कई दिन
२० दमिश्क़ी शागिर्दों के साथ रहा * और फ़िलफ़ौर मजमओं में
२१ मसीह़ की बशारत दी कि वुह ख़ुदा का बेटा है * और सब
जो सुनते थे दंग होगये और बोले आया यिह वुह नहीं
जिसने उन्हें जो उस नाम को लेते थे ओरशलीम में ख़्वार
किया और यहां उस इरादे पर आया कि उनको बांध के
२२ सरदारि काहिनों पास लावे * लेकिन सूलूस ने और भी
दिलेरी की और साबित करके कि यिह वही है यहूदियों
२३ को जो दमिश्क़ के बाशिंदे थे घबराया और जब कई दिन
२४ गुज़रे तो यहूदियों ने उस के क़तल पर मशवरत की * पर
उनका कमीं करना सूलूस को मअ़लूम हुआ और उन्हों ने
रात और दिन दरवाज़ों की ख़बरदारी की ता कि उसे क़तल
२५ करें * तब शागिर्दों ने रात को उसे लिया और टोकरी में बिठा
२६ के दीवार पर से तले लटका दिया * और सूलूस ने
ओरशलीम में आके क़स्द किया कि शागिर्दों में दाख़िल
होजाय पर वे उस से डरते थे और बावर न करते थे कि वुह

२७ शागिर्द है * तब बरनवास ने उसे लिया और हवारियों पास लाया और उन से बयान किया कि उस ने खुदावंद को राह में यूं देखा और वुह उस से बोला और उसने यूं दिलेरी से
२८ दमिश्क़ में ईसा के नाम की बशारत दी * वुह उनके साथ
२९ औरशलीम में आता जाता था * और खुदावंद ईसा के नाम से दिलेरनः कहता था और यूनानियों से गुफ़्गू और मुबाहसः करता था वे उसके क़तल के दर्पे हूए *
३० और भाई यिह जान के उसे क़ैसरियः में लाये और तरसूस की
३१ तरफ़ रवानः किया * तब सारी यहूदियः और जलील और सामरः की कलीसयाओं के लोगों ने आराम पाया और बनगये और खुदावंद के ख़ौफ़ और रूहि क़ुद्स की तसल्ली
३२ से फिर किये और ज़ियादः हूए * और यों हूआ कि पतरस सब कहीं फिरके उन मक़बूलों पास भी जो लद्दा में
३३ बसते थे आया * और वहां अनियास नामीदः एक शख़्स को पाया जो आठ बरस से बिस्तर पर पड़ा था और शल था *
३४ पतरस ने उसे कहा कि ऐ अनियास ईसा मसीह तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना दुरुस्त कर वुह
३५ फ़िलफ़ौर उठा * तब लद्दा और सारूनः के सब बाशिंदे उसे
३६ देखकर खुदावंद की तरफ़ फिरे * और याफ़ा में एक शागिर्द रंडी थी ताबीसा नाम जिसका तरजमः ग़िज़ालः है यिह अच्छे अमलों और ख़ैरात के कामों से जो उसने किये थे भरी थी *

३७ ऐसा हूआ कि वुह उन दिनों में बीमार पड़ी और मरगई
३८ उसे भला कर बालाख़ाने पर रखा * और इसलिये कि
लद्दा याफ़ा से मुत्तसिल था और शागिर्दों ने सुना था कि
पत़रस वहीं है उन्हों ने दो शख़्सों को भेजकर पत़रस से
३९ इल्तिमास किया कि हम पास आने से देर न कर * उठ के
उनके हमराह हूआ जब वुह उनकने पहुंचा उसे बालाख़ाने
के ऊपर लाये और सब रांडें उसके साम्हने खड़ी होके
रोती थीं और कुरते और जामे जो ग़िज़ालः ने जब वुह उनके
४० साथ थी बनाये थे दिखाती थीं * पत़रस ने उन सब को
निकाल दिया और घुटने टेक के दुआ की और लाश की
तरफ़ मुतवज्जिह होके कहा कि ताबीता उठ उसने
अपनी आंखें खोलीं और पत़रस को देखके उठ बैठी *
४१ और उसने हाथ देकर उसे खड़ा किया और मक़्दूसों और
४२ बेओं को बुलाके उसे जीता उनके सुपुर्द किया * यिह सारे
याफ़ा में मशहूर हूआ और बहुतेरे ख़ुदावंद के मुअतक़िद
४३ हूए और यों हूआ कि वुह बहुत दिनों तक याफ़ा में
शमऊन नाम एक शख़्स के यहां जो दबाग़ था रहा *

दसवां बाब

१ क़ैसरियः में कुरनीलियुस नाम एक मर्द था जो उस जमाअत में
२ जो इटालीकी कहलाती थी एक जमअदार था * और अपने
सारे घराने समेत मुत्तक़ी और ख़ुदा तर्स था और ख़ल्क़ को

३ वक़्त ख़ैरात देता था और ख़ुदा से नित दुआ मैं था * उसने ख़ियाल में आशकारा दिन की नवीं साअ़त के .क़रीब .ख़ुदा का एक फ़िरिश्तः देखा कि उस पास आया और उसे कहा ४ कि ऐ .करनीलियूस * उसने उस पर ग़ौर से नज़र की और हिरसां होके बोला कि ऐ ख़ुदावंद क्या है उसने उसे कहा तेरी नमाज़ें और तेरी ख़ैरात अरज़दाश्त के लिये ख़ुदा के .हुज़ूर ५ पहुंचीं * अब याफ़ा में लोगों को भेज और शमऊ़न को जिसका ६ लक़ब पतरस है बुला * वुह एक शख़्स के साथ जो शमऊ़न दबाग़ है रहता है उसका घर लबे दरया है जो कुछ करना ७ तुझ पर वाजिब है वुह तुझ से बयान करेगा * और जब वुह फ़िरिश्तः जो करनीलियूस से हम कलाम हो जाता रहा उस ने अपने चाकरों से दो को और एक मुत्तक़ी सिपाही को उन में से जो उस पास नित हाज़िर रहते थे तलब ८ करके * सब बातें उनसे बयान कियां और याफ़ा में भेजा * ९ सुबह को जिसवक़्त वे राह चले जाते थे और शहर के मुत्तसिल पहुंचे थे पतरस छठी साअ़त के .क़रीब कोठे पर नमाज़ करने १० चढ़ा * उसे भूख लगी और चाहा कि कुछ चखे और वे ११ तैयार कर रहे थे कि उसे बेख़ुदी ने लिया * उसने देखा कि आसमान खुले और एक बासन जैसे बड़ा दस्तरख़ान जिसके चारों कोनें उलट के बंधे हों उसके बराबर ज़मीन १२ तक लटक आया * उस में ज़मीन के बहायमों के सब अक़्साम

१२ और दश्ती दरिंदे और कीड़े और हवा के परिंदे थे * और
१३ उसे आवाज़ आई कि उठ ऐ पतरस हलाल कर और खा *
१४ पतरस बोला ऐ खुदावंद हरगिज़ नहीं इसलिये कि मैं ने
१५ कभी कोई आमी या नापाक चीज़ नहीं खाई * तब दूसरी
बार उसे फिर आवाज़ आई जिन्हें खुदा ने पाक किया है
१६ तू आमी मत कह * यिह तीन बार कहा गया और तुरत
१७ ज़र्फ़ फिर आसमान को खैंच लिया * जिसवक्त पतरस दिल
में हैरान था कि यिह ख़ियाल जो मैं ने देखा है क्या
होगा ऐकाऐक वे मर्द जिन्हें क़रनीलियूस ने भेजा था शमऊन
१८ का घर पूछके दरवाज़े पर खड़े थे * उन्हों ने पुकार के पूछा
कि आया शमऊन जिसका लक़ब पतरस है यहीं रहता है *
१९ जब पतरस उस ख़ियाल को सोच रहा था रूह ने उसे कहा
२० कि देख तीन शख़्स तुझे ढूंढते हैं * उठके उतर और बे
वसवास उनके साथ जा कि उनको तईं मैं ने भेजा है *
२१ तब पतरस ने उन लोगों पास जो क़रनीलियूस के भेजे हूए थे
उतर जाके कहा कि देखो वुह जिसे तुम तलब करते हो
२२ मैं हूं क्या बाइस तुम किस लिये आये हो * वे बोले कि
क़रनीलियूस जमअदार को जो मर्द रास्तबाज़ और खुदा तर्स
और यहूदियों की सारी क़ौम में नेकनाम है खुदा की तरफ़
से ऐक मुक़द्दस फ़िरिश्ते की बशारत हूई कि तुझे अपने
२३ घर में बुलवाये और तुझ से बातें सुने * तब उसने उन्हें

अंदर बुलाके ख़ातिरदारी की और दूसरे रोज़ पतरस उनके साथ गया और बअज़े उन भाइओं में से जो याफ़ा के थे
२४ उस के हमराह हूए * और उसके दूसरे दिन वे क़ैसरियः में दाख़िल हूए और क़ारनीलियूस अपने रिश्तः मंदों और जानी दोस्तों को जमअ किये हूए उन की राह तकता
२५ था * पतरस के दाख़िल होते हूए क़ारनीलियूस ने उस का इस्तिक़बाल किया और उसके क़दमों पर गिर के सिजदः
२६ किया * पतरस ने उसे उठाके कहा कि खड़ा हो कि मैं
२७ खुद भी इनसान हूं * और उस से बातें करता हूआ अंदर
२८ गया और बहुत से लोगों को इकट्ठे पाया * उन्हें कहा कि तुम जानते हो कि यहूदी को हलाल नहीं कि किसी से जो दूसरी क़ौम का हो इख़तिलात करे या उसके यहां आवे लेकिन खुदा ने मुझ को दिखलाया है कि मैं किसी इनसान
२९ को आमी और नापाक न कहूं * इसलिये मैं जों बुलाया गया बिला उज़र आया सो मैं पूछता हूं कि तुमने मुझे किस
३० काम के लिये तलब किया * क़ारनीलियूस ने कहा चार दिन गुज़रे कि मैं ने सुबह से इसी साअत तक रोज़ः रखा था और नवीं साअत अपने घर में दुआ करता था कि नागाह एक मर्द नूरानी लिबास में मेरे साम्हने खड़ा हूआ *
३१ और बोला ऐ क़ारनीलियूस तेरी दुआ पज़ीर हूई और तेरे
३२ सदक़े खुदा के आगे क़बूल किये गये * अब याफ़ा में भेज

और शमऊन को जिसका लक़ब पतरस है यहां बुला वुह
लुवि दरया शमऊन दवाग़ के घर में रहता है वुह जब
३३ आवेगा तुझे कहेगा * इसलिये फ़िल्फ़ौर मैं ने तुझ पास
भेजा तू ने अच्छा किया कि तू आया सो अब हम सब यहां
ख़ुदा के आगे हाज़िर हैं ता कि सब चीज़ें जो तुझे ख़ुदा
३४ ने फ़रमाई हैं सुनें * तब पतरस ने ज़बान खोल के कहा कि
फ़िलहक़ीक़त मैं जानता हूं कि ख़ुदा तशख़्ख़ुस पर नज़र
३५ नहीं करता * बल्कि हर उम्मत में जो कि उस से डरता है
३६ और अदल के काम करता है उसका मक़बूल है * यिह वही
बात है जो ख़ुदा नें बनी इसराईल को कहला भेजी क्यूंकि
उसने बशारत दी कि ईसा मसीह से जो कुल का ख़ुदावंद है
३७ सलामती मिलेगी * वुह माजिरे जो बअद उस इस्तिबाग़ के
जिसकी मुनादी यहया ने की जलील से शुरूअ होके सारे
३८ यहूदियः में होता रहा तुम जानते हो * यअने ईसा नासरी
की बात कि ख़ुदा ने उसे रूहिल क़ुदस और क़ुव्वत से किस
तरह मसह किया और वुह नेकी करता रहा और सब को
जो इबलीस से मग़लूब हुए थे शिफ़ा बख़्शता फिरा इसलिये
३९ कि ख़ुदा उस के साथ था * और हम उन सब कामों पर जो
उसने यहूदियों की सरज़मीन और औरशलम में किये गवाह
४० हैं उसको उन्हों ने लकड़े पर जकड़ के क़तल किया * ख़ुदा
ने उसे तीसरे दिन उठाया और इनायत से अलानिया ज़ाहिर

४१ किया * और सारी गरोह पर नहीं बल्कि बअज़े गवाहों पर जो पहले से खुदा के बरगुज़ीदः हूए बअज़े हम पर ज़ाहिर किया कि हम ने उसके जी उठने के बअद उसके
४१ साथ खाया और पिया * उसने हमें हुक्म किया कि ख़ल्क़ में मुनादी करें और गवाही दो कि मैं वुह हूं जिसे खुदा ने मुक़र्रर किया कि ज़िन्दों और मुरदों का हाकिम हो *
४३ उस के लिये सब अम्बिया गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर ईमान लावेगा उसके नाम से उसके गुनाहों की मग़फ़िरत
४४ होगी * पतरस यिह बातें कह रहा था कि रूहि कुद्स उन
४५ सब पर जो सुनते थे पड़ा * और मख़्तूनों ईमानदार जो पतरस के साथ आये थे हैरान हूए कि अवाम पर भी रूहि
४६ कुद्स की बख़्शिश जारी हूई * क्यूंकि उन्हों ने देखा कि वे मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलते और खुदा की सना करते थे तब
४७ पतरस कहने लगा * क्या कोई पानी बंद कर सकता है कि वे जिन्हों ने हमारी तरह रूहि कुद्स को पाया इस्तिबाग़
४८ न पावें * तब उसने फ़रमान दिया कि उन्हें खुदावंद के नाम से गुसलि इस्तिबाग़ दिया जाय फिर उन्हों ने उस से तमन्ना की कि चंदे यहां रहिये *

ग्यारहवां बाब

१ और हवारियों और भाइओं ने जो यहूदियः में थे सुना
२ कि अवाम ने भी खुदा का कलाम क़बूल किया * और जब

में लोग भेज और शमऊन को जिसका लक़ब पतरस है
१४ बुला * वुह तुझे ऐसी बातें जिस से तू और तेरा सारा घर
१५ नजात पावेगा बता देगा * और ज्यों मैं ने कहना शुरूअ
किया रूहि क़ुदस जिस तरह से हम पर पड़ा था उन पर
१६ पड़ा * उस वक़्त मैं ने ख़ुदावंद की कही बात याद की कि
यह्या ने तो पानी से इस्तिबाग़ दिया लेकिन तुम को रूहि
१७ क़ुदस से इस्तिबाग़ दिया जायगा * क्योंकि जब ख़ुदा ने उन को
वही निअमत बख़्शी जो हम को जब हम ख़ुदावंद ईसा मसीह पर
१८ ईमान लाये मैं कौन था जो ख़ुदा को बाज़ रख सकता * जब
उन्हों ने ये बातें सुनीं चुप रहे और यों ख़ुदा की सिताइश की कि
पस बेशक ख़ुदा ने ग़ैरक़ौम को भी हयात के लिये तौबः बख़्शा *
१९ अब उन्हों ने जो उस मुसीबत के सबब जो इस्तीफ़ान के
अम्र में पड़ी थी परागंदः होगये थे फ़ूनीके और क़ुप्रूस
और अन्ताकियः तक गुज़र गया पर यहूदियों के सिवा किसी
२० को बात न बताई थी * और कितने उनमें क़ुप्रूस के और
क़ुरेनियः के बाशिंदे थे जिन्हों ने अन्ताकियः में दाख़िल
होकर यूनानी यहूदियों से कलाम किया और ख़ुदावंद ईसा की
२१ बशारत दी * और ख़ुदावंद उनका दस्तगीर था और बड़ी
२२ जमाअत ईमान लाके ख़ुदावंद की तरफ़ फिरी * तब इन
बातों की ख़बर औरशलीम की कलीसिया के कानों तक पहुंची
और उन्हों ने बरनबास को भेजा कि अन्ताकियः तक गुज़रे

२३ करे * वुह आके और ख़ुदा की निअ़मत को देखके शादमान हूआ और उन सब को तरग़ीब किया कि दिल में ठानके
२४ ख़ुदावंद से मिले रहें * कि वुह नेकमर्द और रूहिक़ुदस और ईमान से भरा हूआ था और ऐक और ख़ासी जमाअ़त
२५ ख़ुदावंद के लोगों में बढ़ गये * तब बरनबास सूलूस की तलाश
२६ में तरसूस को रवानः हूआ * और उसे पाके अन्ताकियः में लेआया और यों हूआ कि वे ऐक बरस कामिल कलीसया में इकठे रहे और बहुत सी ख़ल्क़ को तअ़लीम किया और
२७ शागिर्द पहले अन्ताकियः में मसीही कहलाये * उन्हीं दिनों में कई ऐक नबी औरशलीम से अन्ताकियः में आये *
२८ ऐक ने उन में से जिसका नाम अजबस था उठके रूह के बाइस से बतलाया कि सारे जहान में अनक़रीब बड़ा काल
२९ पड़ेगा जैसा क़्लादयूस क़ैसर के अ़हद में पड़ा था * उस वक़्त शागिर्दों में से हरऐक ने जैसा जिसकी तौफ़ीक़ थी इरादः किया कि उन भाइओं की मदद के लिये जो यहूदियः में
३० रहते थे नक़दी भेजें * सो उन्हों ने किया और बरनाबास और सूलूस की वसातत से बुज़ुर्गों पास भेजी *

बारहवां बाब

१ और उसी अ़हद में हीरूदीस बादशाह ने हाथ डाले कि
२ कलीसया में से बअ़ज़ों को दुख देवे * और यूहन्ना के भाई
३ यअ़क़ूब को तलवार से मारडाला * और जब उसने देखा

कि यिह यहूदियों को खुश आया तो उस पर तरक्क़ी करके पतरस
४ को ईदि फ़तीर के ऐयाम में पकड़लिया * और उसने उसे
पकड़ के क़ैद में डाला और उस इरादे से कि बअद फ़सह
के उसको गरोह कने लेजावे सिपाहियों के चारपहरों के
५ हवालः किया कि उस की ख़बरदारी करें * सो क़ैद में
पतरस की निगहबानी होती थी पर कलीसया में खुदा से
६ उस के लिये ब दिल ओ जान दुआ मांगते थे * और जब
हीरूदीस ने चाहा कि उसे बाहर निकाले उस रात पतरस
दो ज़ंजीरों से जगड़ा हूआ दो सिपाहियों के बीच सोता था
और निगहबान क़ैदख़ाने के दरवाज़ों पर निगहबानी करते थे *
७ कि नागहां खुदा का फ़िरिश्तः उस पर नाज़िल हूआ और
उस मकान में एक नूर चमका और उसने उसकी पसली पर
हाथ मारा और उसे यिह कहके उठाया कि जल्द उठ तब
८ ज़ंजीरें उसके हाथों से गिर पड़ीं * और फ़िरिश्ते ने उसे
कहा कि कमर बांध और अपनी जूती पहन उसने यिह
किया तब उसने कहा कि अपनी क़बा पहनले और मेरे
९ पीछे होले * और वुह निकल के उसके पीछे होलिया
और नजाना कि यिह जो फ़िरिश्ते ने किया वाक़िअ में है
१० पर गुमान किया कि कुछ धोखा सा है * जब वे पहले
और दूसरे पहरे मे से निकलगये तो लोहे के दरवाज़ः जो
शहर की तरफ़ था पहुंचे वुह खुदबखुद उनके लिये खुलगया

और वे निकल के एक बाज़ारवार लों चले गये और तुरत
११ फ़िरिश्तः उसके पास से ग़ाइब हुआ * तब पतरस ने आप में
आके कहा अब मैं ने तहक़ीक़ जाना कि ख़ुदावंद ने
अपने फ़िरिश्ते को भेजा और हीरूदीस के हाथ से और
यहूदियों के गरोह से बाहर उन सारी जिगरबाज़ी के जो वे
१२ करते थे मुझे बचा लिया * जब उसने मालूम किया तो
मरयम के घर में जो यूहन्ना की मा थी जिसका लक़ब मरक़ुस
था आया वहां बहुत से जमअ होके दुआ कर रहे थे *
१३ और जों पतरस ने घर का दरवाज़ः खटखटाया एक जारियः
१४ जिसका नाम रूदा था गई ता कि सुने * और पतरस की
आवाज़ पहचान कर उसने मारे ख़ुशी के दरवाज़ः न खोला
और दौड़ के कहा कि पतरस दरवाज़े पर खड़ा है *
१५ वे बोले कि तू दीवानी है उसने मुकर्रर कहा कि अलबत्तः
१६ यूंही है, तब वे बोले कि उसका फ़िरिश्तः होगा * तब
पतरस खटखटाये गया उन्हों ने खोल के उस को देखा तो
१७ दंग हो गये * और उसने उन्हें हाथ से इशारः करके कि
चुप रहें बयान किया कि ख़ुदा ने मुझे क़ैद से यूं रिहाई
दी फिर कहा कि यिह ख़बर यअक़ूब को और भाइयों को
पहुंचाओ फिर वुह रवानः होके किसी और मकान को गया *
१८ और जब सुबह हुई सिपाहियों को बड़ा इज़्तिराब हुआ कि
१९ पतरस क्या हुआ * और हीरूदीस ने उसको तलाश कर

जब न पाया तो निगहबानों का इम्तिहान करके क़त्ल का
२० हुक्म किया और यहूदियः से क़ैसरियः में जा रहा * और
हीरूदीस सूरियों और सैदाइयों से निहायत नाख़ुश था फिर वे
एक गरोह होके उस पास आये और ब्लास्तुस से जो बादशाह
के ख़्वाबगाह का नाज़िर था मेल करके सुलह चाही इसलिये
कि उन की मम्लुकत की क़ूत बादशाह के मुल्क से मिलता
२१ था * हीरूदीस ने एक रोज़ जो मुक़र्रर हुआ था लिबासि
शाहानः पहन कर तख़्त पर बैठ के उन से ख़िताब किया *
२२ और दंगल पुकारा कि यिह तो ख़ुदा की आवाज़ है आदमी
२३ की नहीं * और वोंहीं ख़ुदा के फ़िरिश्ते ने उसे मारा क्योंकि
उस ने उस सिताइश का मरजअ ख़ुदा को न जाना और उसे
२४ कीड़े खा गये और दम आख़िर हुआ * और ख़ुदा का
२५ कलाम बढ़ा और बहुत हुआ * और बरनबास और सूलूस
औरशलीम से ख़िदमत करके फिरे और यूहन्ना को जिसका
लक़ब मार्कुस था अपने साथ लाये *

तेरहवां बाब

१ और अन्ताकियः के बअ़ज़े लोग वहां की कलीसिया के नबी
और मुअल्लिम थे उनके नाम ये हैं बरनबास और शमऊन
जिसका लक़ब नैजार था और लूकियूस कूरीनी और मानायन
जो हाकिम रुबअ़ हीरूदीस का दूध भाई था और सूलूस *
२ और जिस वक़्त वे ख़ुदावंद के लिये नमाज़ जमाअत करते

और रोज़े रखते थे रूहिल्कुदस ने कहा कि मेरे लिये बरनबास और पूलस को अलेहदः करो ता कि वुह काम
३ जिसके लिये मैं ने उन्हें तलब किया करें * तब उन्हों ने रोज़े रख के और दुआयें करके और हाथ उन पर रखके
४ उन्हें विदाअ किया * फिर वे रूहिल्कुदस के भेजे हूए सलूकियः को गये और वहां से तरी की राह जज़ीरै क़बरस
५ को चले * और शहरि सलमीन पहुंच के यहूदियों के मजमओं में खुदा के कलाम की वअज़ कही और यूहन्ना
६ उनका ख़िद्मतगुज़ार था * और उस जज़ीरे में बिलकुल सैर करके पफ़ास तक पहुंचके उन्हों ने ऐक यहूदी के जादूगर
७ और मुतनब्बी जिसका नाम बरियूअ था पाया * जो उस मुल्क के हाकिम सरजयूस पूलस के साथ था यिह साहिबि तमीज़ था उसने बरनबास ओ साऊल को बुला के चाहा कि
८ खुदा का कलाम सुने * पर अलमास ने जिसका तरजमः हकीम है उस इरादे से कि हाकिम को ईमान की राह से
९ फेर दे उन से मुक़ाबलः किया * तब साऊल यअने पलस
१० ने रूहिल्कुदस से मअमूर होके उस पर निगाह की * और बोला कि अरे ओ तू जो निरे मकर ओ फ़रेब से बना हूआ है शैतान के बच्चे और हर क़िसम की रास्ती के दुशमन क्यूं तू खुदा की सीधी राहों के कज करने में सुस्ती न करेगा *
११ पर अब देख खुदावंद का हाथ तुझ पर बैठा है और तू

अंधा होजायगा मुद्दत तक आफ़ताब न देखेगा और वोंहीं
उस पर ज़ुल्मत और तारीकी आगई और ढूंढता फिरा कि
१२ कोई उसका हाथ पकड़े * उस वक़्त हाकिम यिह वाक़िआ
देखकर ख़ुदावंद की तअ्लीम से हैरान होके ईमान लाया *
१३ तब पूलुस के हमराही पफ़ुस से किश्ती खोलके परजा में जो
पमफ़ूलियः की ममलुकत में एक शहर है आये और यूहन्ना
१४ उनसे जुदा होकर औरशलीम को फिरा * और वे परजा से
गुज़र के पिसिदिया के अन्ताकिया में आये और हफ़्ते के रोज़
१५ मजमअ में जा बैठे * और तौरेत और अंबिया के तिलावत
के बअ्द मजमअ के रईसों ने उन्हें कहला भेजा कि मर्द
भाईओ अगर वअ्ज़ का कोई कलिमः ख़ल्क़ के वास्ते तुम
१६ पास है तो कहो * तब पूलुस खड़ा हुआ और हाथ से
बना के बोला कि ऐ बनी इसराईल और ऐ लोगो जो ख़ुदा से
१७ डरते हो मुतवज्जिह होके सुनो * इस इसराईली क़ौम के ख़ुदा
ने हमारे आबा को बरगुज़ीदः किया और उम्मत को जब
वुह मिसर की सरज़मीन में बईदुलवतन थी सरबुलंद किया
१८ और हाथ बाला से उन्हें वहां से निकाला * और बरस चालीस
१९ एक तक वुह बियाबान में उनका मुतहम्मिल था * और
उसने सात फ़िरक़ों को जो किनआन की ज़मीन में थे हलाक
२० करके उनकी ज़मीन को उन पर तक़सीम किया * और
बअ्द उसके उसने उन में एक चार सौ पचास बरस समूईल

२१ नबी के वक़्त तक इन्साफ़ करने वाले भेजे * और आख़िर कार उन्हों ने बादशाह तलब किया तब ख़ुदा ने उनको साऊल इबनि क़ैस जो बनीमीन के क़बीले में का था अता करके उसे
२२ चालीस बरस उन में रहने दिया * और उसे मअज़ूल करके दाऊद को बरपा किया ता उनका बादशाह हो और उस के लिये यिह गवाही दी कि मैं ने दाऊद इबनि इस्सा को अपना दिलचस्प पाया जो मेरी सब ख़ाहिशों पर अमल
२३ करेगा * उस शख़्स के तुख़्म से ख़ुदा ने अपने वअदे पर इसराईल के लिये ऐक नजात देनेवाला यअने ईसा बरपा
२४ किया * और यह्या ने उसके आने से पेशतर सारी इसराईली
२५ क़ौम को इस्तिबाग़ तौबः की ख़बर दी * और यह्या जब अपने दौर को पूरा करने पर था बोला तुम क्या गुमान करते हो मैं कौन हूं मैं कोई शख़्स नहीं लेकिन देखो कि मेरे बाद ऐक शख़्स आता है मैं जिसकी पापोश का तस्मः
२६ खोलने के लाइक़ नहीं * ऐ मर्द भाईओ ऐ इबराहीम के फ़रज़ंदो और ऐ लोगो जो ख़ुदा तर्स हो तुम्हारे लिये उस
२७ नजात की ख़बर भेजी गई है * इसलिये कि औरशलीम के बाशिंदों ने और उन के रईसों ने इस सबब से कि उसे और नबियों के उन कलिमों को जो हर सबत को पढ़ेजाते
२८ हैं न जाना उसे मुजरिम करके उन्हें पूरा किया * और अगरचिः उन्हों ने उस के क़तल का मूजिब न पाया पर उन्हों

२९ ने पीलातूस से उसके क़त्ल की दरख़्वास्त की * और जब वे सब कुछ जो लिखा था कि उस पर होगा पूरा कर चुके
३० तो उसे चोब पर से उतार के क़बरमें में डाला * लेकिन ख़ुदा
३१ ने उसे जिलाया * और वुह बहुत दिनों तक उन्हें जो उसके साथ जलील से औरशलीम में आये थे दिखाई दिया
३२ वे ख़ल्क़ के आगे उसके गवाह हैं * और हम तुम को ख़ुश ख़बर देते हैं कि वुह वअ्दः जो बाप दादों से किया
३३ गया था * ख़ुदा ने उसको उनके लड़कों के वास्ते जो हम हैं पूरा किया है कि उसने ईसा को फिर जिलाया चुनांचिः दूसरे मज़्मूर में यिह लिखा है कि तू मेरा बेटा है आज
३४ के दिन तू मुझ से पैदा हूआ * और उस ने उस सबब से कि उसे जिलाया ता कि वुह फ़ासिद न होवे यों फ़रमाया
३५ कि मैं तुम पर दाऊद का हसनात साबित करूंगा * इसलिये उसने दूसरे मक़ाम में कहा कि तू अपने क़ुद्दूस को फ़ासिद
३६ होने न देगा * दाऊद तो अपने अहद के लवाज़िम अदा करके ख़ुदा की रज़ा पर सोगया और अपने आबा के दरमियान
३७ गया और फ़ासिद हूआ * लेकिन यिह जिस को ख़ुदा ने
३८ फिर उठाया फ़ासिद न हूआ * इस लिये ऐ मर्द भाईओ तुमको मअ्लूम होवे कि गुनाहों की मग़फ़िरत उसी शख़्स के सबब
३९ से तुम्हारे लिये बयान की जाती है * और हरएक शख़्स उन सब गुनाहों से जिन से तुम मूसा के शरीअत में पाक

४० न होसके उसे के बाइस ईमान लाने पाक होता है * पस
हज़र करो ता नहोवे कि वुह जो अम्बिया की किताबों में
४१ फ़रमाया गया है तुम पर आ पड़े * कि देखो ऐ इहानत
करनेवालो और तअ़ज्जुब करो और नाचीज़ होजाओ कि
मैं तुम्हारे ऐयाम में ऐसा एक काम करता हूं जिसको तुम
४२ हरचंद कोई तुम से कहे अस्लन बावर नकरोगे * और
जब यहूदी मजमअ़ से निकल गये अक़्वाम ने दरख़्वास्त किया
४३ कि ये बातें दूसरे सबत को हमसे कही जायें * और जब
भीड़ छुट गई बहुत से यहूदियों और मुत्तक़ी नौयहूदियों
ने पूलुस और बरनबास की पैरवी की और उन्हों ने उन से
हम कलाम होके तरग़ीब किया कि तुम ख़ुदा की निअ़मत
४४ पर साबित रहो * और हफ़्तः आयंदे को क़रीब सारे शहर
४५ के बाहम आया ता कि ख़ुदा का कलाम सुने * लेकिन यहूदी
दंगलों को देखकर रश्क से भरगये और उन बातों के बरख़िलाफ़
जो पूलुस ने कहीं यों बोले और मुख़ालफ़त करने और कुफ़र
४६ कहने लगे * तब पूलुस और बरनबास ने जुरअत से कहा लाज़िम
था कि ख़ुदा का कलाम पहले तुम्हें कहा जाता पर उस सबबसे
कि तुम उसे रद करते हो और तुम अपनेही इक़रार से हयात
अबद के लाइक़ नहीं हो देखो हम अक़्वाम की तिरफ़ मुतवज्जिह
४७ होते हैं * क्यूंकि ख़ुदावंद ने हमको यूं फ़रमाया कि मैं ने
तुझ को अक़्वाम का नूर कर रखा ता कि तू जहान की इन्तिहा

४८ तक सरदारी का बाइस हो * औ अवाम यिह सुन्तेही खुश हुये और खुदावंद के कलाम की सिताइश की और जितने वो हयात अबदी के लिये तैयार किये गये थे ईमान लाये *
४९ और खुदावंद का कलाम उस सारी विलायत में मशहूर
५० हुआ * पर यहूदियों ने रंडियों को जो इबादत करने वालीं और इज्जत वालियां थीं और शहर के रईसों को तहरीक और पूलुस और बरनबास पर फ़ितनः बरपा किया और
५१ अपने सरहदों से ख़ारिज किया * पर वे अपने पांओं की गर्द उनपर झाड़ के यकूनियों को आये और शागिर्द
५२ खुशी और रूहि कुद्दस से भरगये *

चौदहवां बाब

१ और यकूनियों में यों हूआ कि वे यहूदियों के मजमअ में बाहम किये और ऐसी बअज़ कही कि यहूदियों और
२ यूनानियों की बड़ी जमाअत ईमान लाई * लेकिन वेईमान यहूदियों ने अवाम को भड़काया और उनके दिलों को भाइओं
३ से बदगुमान किया * सो एक मुद्दत तक वे खुदावंद की कुमक से दिलेरानः कहते रहे और वुह अपने हर्फ़ि निअमत की गवाही देता रहा और यिह इनायत की कि
४ अजाइब ओ गराइब काम उनके हाथों से होते रहे * और शहर के लोगों में इख्तिलाफ़ पड़ा कुछ तो यहूदियों के साथ
५ रहे और कुछ हवारियों के * और जब अवाम और यहूदियों

ने अपने रईसों समेत हंगामः बरपा किया कि उन्हें बेहुरमत
६ कर डलें और संगसार करें * वे आगाह होगये लसतरः
और दरबः में जो लकाउनियः के शहर हैं और उस नवाह
७ की ममलुकत में भाग गये * और वहां इंजील की बशारत
८ देते रहे * और लसतरः का एक शख़्स पांओं का नाक़िस
जो मादरज़ाद लंगड़ा था बैठा था और कभी चला न था *
९ उसने पूलुस को बातें करते देखा उसने उसे ग़ौर से देख के
और दरयाफ़्त करके कि उसे शिफ़ा पाने का इअतिक़ाद है *
१० बलंद आवाज़ से कहा अपने पांओं पर सीधा खड़ा हो
११ वुह फ़िलफ़ौर उछला और चलने लगा * लेग यिह देख
के जो पूलुस ने किया था लकाउनियः की लुग़त में चिल्लाके
कहने लगे कि खुदावंद ने इनसान सूरत होके हम पर
१२ नज़ूल किया * और उन्हों ने बरनबास का मुश्तरी और पूलुस
का उत़ारिद नाम रखा क्यूंकि वुह सबक़त करके बोला करता था *
१३ और वे मुश्तरी को अपने शहर का हामी जानते थे सो उसके
माहूली ने दंगलों समेत बैल और फूलों के हार दरवाज़ों पर
१४ लाके इरादः किया कि क़ुरबानी करे * तब बरनबास और
पूलुस दोनों हवारियों ने सुन के अपने कपड़े फाड़े और
१५ दंगल में जुस्त करके कहा * कि मर्दो तुम ये बातें क्यूं करते
हो हम भी ऐसी ही आदमी हैं जैसे तुम हो और तुम को
बशारत देते हैं ता कि तुम उन बातिल खियालों से बाज़ आके

ख़ुदाय हई की तरफ़ फिरो कि उस ही ने आसमान ओ
१५ ज़मीन ओ दरया और सब कुछ जो उन में है ख़ल्क़ किया * और
उसने पुश्त दर पुश्त सारी उम्मतों को छोड़ दिया कि अपनी
१७ अपनी राह चलें * बावजूद उस के उस ने अपने तईं बे गवाह
न रखा इसलिये कि उस ने इन्सान से आसमानी बारान और
मेवः लाने वाले मौसिम हम को देके हमारे दिलों को तर
१८ ओ ताज़िगी और ख़ुशी से भरा * और बावजूद उन बातों
के जो उन्हों ने कहीं उन्हों ने बदशवारी दंगलों को क़ुरबानी
१९ करने से बाज़ रखा * और बअ़ज़े यहूदियों ने अन्ताकियः
और यक़ीनों से आकर दंगलों को माइल करके पूलुस को
संगसार किया और यिह जान के कि वुह मर गया शहर
२० से बाहर खिंचवाया * लेकिन जों शागिर्द उसके गिर्द पेश
जमअ़ हूए वुह उठके शहर में आया और दूसरे दिन
२१ बरनबस के साथ दरबः को चला गया * और उन्हों ने उस
शहर को इंजील की बशारत देके और बहुतों को दीन में
लाके लस्तरः और एक़ूनियों और अन्ताकियः को फिरते
२२ हूए * शागिर्दों के दिलों को तक़वीयत दी और ताकीद की
कि ईमान पर साबित रहें और कहा हम पर वाजिब है
कि बड़ी मशक़्क़तों से ख़ुदा की ममलुकत में दाख़िल होवें *
२३ और उन्हों ने हरएक कलीसया के लिये कई एक पेशवा मुक़र्रर
किये और रोज़े नमाज़ें करके उन के तईं ख़ुदावंद को जिसके

२४ वे मुअ़न्निक़ीत हुऐ होंगा * और फ़सद्यः से गुज़र के पम्फ़ीलियः
२५ में आये * और बरजा में सुख़न को बयान करके अत्तालियः
२६ में उतर आये * और वहां से तरी की राह अन्ताकियः में
उतर आये वहां से वे उस काम के वास्ते जो अब उन्हों ने
२७ कामिल किया ख़ुदा के फ़ज़्ल के सुपुर्द किये गये थे * और आके
मजमअ़ को बाहम जमअ़ करके बयान किया कि ख़ुदा ने
हमारी मअ़रिफ़त यूं किया और अ़वाम के लिये ईमान का
२८ दरवाज़ः खोला * और वे एक मुद्दत तक शागिर्दों के साथ
वहां रहे *

पंदरहवां बाब

१ और बअ़ज़े लोगों ने यहूदियः से आके भाइयों को तअ़लीम
किया कि बग़ैर उसके कि तुम मूसा की शरीअ़त के मुताबिक़
२ ख़तनः कराओ तुम नजात पा नहीं सकते * जब निज़ाअ़
हुई और पूलुस और बरनबास ने उन से बहुत मुबाहसः
किया तो उन्हों ने इरादः किया कि पूलुस और बरनबास
हम में से बअ़ज़ों को साथ लेके उस सुवाल के लिये हवारियों
३ और पेश्वाओं कने ओरशलीम में जावें * से वे अहल
कलीसिया से आगे बढ़के फ़ूनीक़ी और सामरः से गुज़र के
अ़वाम के रुजूअ़ होने की ख़बर देते थे और भाइयों को बड़ी
४ ख़ुश वक़्ती के बाइस हुऐ * और जब ओरशलीम में पहुंचे
अहल कलीसिया और हवारियों और पेश्वाओं ने उन को

ख़ातिर दारी की और उन्हों ने सब कुछ जो ख़ुदा ने उन से
५ किया था बयान किया * तब कई एक उन में से जो ईमान
लाने से आगे फ़रीसियों के फ़िरक़े में थे बोल उठे कि उनका
ख़तनः करना और उन्हें हुक्म करना कि शरीअ़त मूसा पर
६ चलें वाजिब है * तब हवारी और सब पेशवा बाहम जमअ़
७ हुए कि इस कलाम में तअम्मुल करें * और जब बहुत बहस
हुई पत्रस खड़ा होके बोला कि ऐ मर्दो भाईओ तुम जानते
हो कि ख़ुदा ने ऐयामि क़दीम से हम में इख़्तियार किया
कि अवाम मेरी ज़बान से इंजील की बात सुनें और ईमान
८ लावें * और ख़ुदा ने जो आ़रिफ़ुल क़ुलूब है उनके लिये
गवाही दी इसलिये कि उसने जैसा हम को रूहि क़ुदुस
९ उनको भी बख़्शी * और उनके दिलों को ईमान के
बाइस पाक करके हम में और उन में कुछ फ़र्क़ न रक्खा *
१० पस अब तुम क्यूं ख़ुदा को आज़माते हो और शागिर्दों की
गर्दन पर जुआ रखते हो जिसके उठाने पर न हमारे आबा
११ क़ादिर थे न हम हैं * और हम को यक़ीन है कि हम
ईसा मसीह ख़ुदावंद ही की निअ़मत से उन की तरह नजात
१२ पावेंगे * तब सारी जमाअ़त चुप हुई और बरनबास और
पूलुस से उन मुअ्जिज़ों और करामतों का बयान जो ख़ुदा ने
१३ उनके वास्तः से उम्मतों के तईं दिखलाये सुनने लगे * और
जब वे चुप रहे यअ़क़ूब ने कहा कि ऐ मर्दो भाईओ मेरी

१४ सुनो * शमऊन ने ख़बर दी है कि ख़ुदा ने जो इरादः किया कि अक़्वाम में से अपने नाम का एक गरोह चुन ले
१५ उसकी इब्तिदा क्यूंकर हुई * और अंबिया की बातें उस से
१६ मिलती हैं चुनांचिः लिखा है * बअ़द उसके मैं रजअ़त करूंगा और दाऊद के मस्कन को जो गिर गया है फिर के बिना करूंगा और उस की शिकस्त रेख़ को फिर बनाऊंगा
१७ और दुरुस्त करूंगा * ता कि बाक़ी के लोग और सारे अक़्वाम जो मेरे नाम के हैं ख़ुदावंद को तलब करें यिह ख़ुदावंद का फ़रमान है और वुह उन सब बातों को पूरा करेगा *
१८ ख़ुदा को उस के सब काम आग़ाज़े आफ़रीनिश से मअ़लूम
१९ हैं * सो मेरी सलाह यिह है कि उनको जो अ़वाम में से ख़ुदा
२० की तरफ़ फिरे हैं तकलीफ़ न दीजाय * पर उन्हें लिखिये कि बुतों की नजासतों से और हरामकारी और मुरदार चीज़ों
२१ से और लहू खाने से परहेज़ करें * क्यूंकि क़दीमुल ऐयाम से हरएक शहर में ऐसे लोग हैं जो मूसा के लिये मुनादी करते हैं चुनांचिः मजमओं में उसकी किताब हर हफ़्ते को तिलावत
२२ की जाती है * तब हवारियों और पेशवाओं ने सारी कलीसया समेत बिहतर समझा कि आप में से कई एक मर्द चुनके पूलूस और बरनबास के साथ अन्ताकियः को भेजें चुनांचिः उन्हों ने यहूदा को जिसका लक़ब बरसबास था और सीलास को जो
२३ बिरादरी में मुक़द्दम थे चुनके * उनकी मअ़रिफ़त से लिख भेजा

कि भाइओं को जो अन्ताकियः ओ शाम ओ क़ीलीक़िया में हैं और आगे अराम में थे हवारियों और पेशवाओं और

२४ भाइओं का सलाम * अज़ बसकि हमने सुना कि बअज़ों ने हम में से निकल के तुम्हें बातें कहके परेशान किया तुम्हारे दिलों को यिह कहके तहओवालः किया कि ख़तनः करवाओ, शरीअत पर चलो बावजूदि कि हमने उन्हें यिह हुक्म न दिया

२५ था * सो हमने बाहम मुनासब जाना कि दो मर्द चुनके तुम कने भेजें और अपने अज़ीज़ों बरनबास और पूलूस को *

२५ जो ऐसे मर्द हैं कि उन्हों ने अपनी जानों को हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम के लिये वक़्फ़ किया उनके साथ

२७ कर दें * सो हमने यहूदा और सीलास को भेजा कि वे

२८ मुंह से भी ये बातें कहेंगे * क्यूंकि रूहि क़ुदस को और हम को भी अच्छा लगा कि सिवा उन कामों के जो ज़रूर हैं

२९ तुम पर ज़ियादः बोझ नडालें * कि तुम बुतों पर की क़ुरबानियों से और लहू और मुरदार चीज़ें खाने से और हरामकारी से परहेज़ करो उन से अगर तुम अपने तईं दूर रखो तो भला

३० करोगे तुम्हारा भला होवे * सो वे रुख़सत होके अन्ताकियः में आये और जमाअत को इकट्ठे करके पैग़ाम पहुंचाया *

३१ वे उस तसल्ली नामे को पढ़के ख़ुश हुईं (३२) और यहूदा और सीलास ने जो ख़ुद भी नबी थे बहुत सी बातों से भाइओं

३३ को तहरीस किया और उन्हें क़ाइम किया * और वे कुछ

रह के मिलाप में भाइओं से रुख़सत होके हवारियों की तरफ़
३४ गये * लेकिन सीलास को यों ख़ुश आया कि आप वहीं रहे *
३५ पूलूस और बरनबास ने भी और बहुतों के साथ ख़ुदावंद का
कलाम तअलीम करते और बशारत देते हुए अन्ताकियः
३६ में इक़ामत की * चंद रोज़ के बअद पूलूस ने बरनबास से
कहा आओ अपने भाइओं से हर एक शहर में जहां
हम ने ख़ुदावंद के कलाम की बशारत दी है फिर के मुलाक़ात
३७ करें और देखें उनका क्या हाल है * और बरनबास ने क़स्द
किया कि यूहन्ना को जिसका लक़ब मरक़ुस था साथ लेवे *
३८ पर पूलूस समझा कि एक शख़्स को जो पमफ़ूलियः में उन से
जुदा हो गया और काम के वास्ते उन के हमराह न आया साथ
३९ लेना ख़ूब नहीं * और उन में ऐसी आज़ुर्दगी हुई कि
वे आपस में जुदे होगये और बरनबास मरक़ुस को लेके
४० क़ब्रस को तरी से रवानः हुआ * और पूलूस ने सीलास को
लिया और भाइओं से ख़ुदा की निहर के सपुर्द होके चला
४१ गया * और वुह शाम और क़िलिक़िया से कलीसियाओं
को मज़बूत करता हुआ गुज़रा *

सोलहवां बाब

१ फिर वुह दरबः और लुसतरः में पहुंचा और वहां तीमताऊस नामे
एक शागिर्द था जिसकी मा यहूदियः थी जो ईमान लाई और
२ उस का बाप यूनानी था * लुसतरः और इक़ूनियुम के भाई उसकी

३ ख़ूबियों से मशहूर थे * उस को पूलूस ने चाहा कि अपने साथ ले चले
चुनांचिः लिया और उन यहूदियों के लिये जो उस अतराफ़ में थे
उसका ख़तनः किया क्योंकि वे जानते थे कि उसका बाप यूनानी था *
४ और उन्हों ने शहरों में गुज़रते हुए उन हुक्मों को जो
हवारियों और पेशवाओं ने जो औरशलम में थे मुक़र्रर कियां
५ हिफ़्ज़ करने को लिये पहुंचाया * और सब कलीसियाएं
इअ़तिक़ाद में उस्तुवार हुईं और उनका अदद हररोज़ बेशतर
६ हुआ * और जब फ़रूजियः और सरज़मीन ग़लातियः से
गुज़रे रूहि क़ुद्स ने उन्हें मनअ़ किया कि असिया में
७ कलाम की बशारत न दें * तब मूसियः में आके उन्हों ने
क़स्द किया कि बथूनियः को जावें पर रूह ने उन्हें
८ रुख़सत न दी * सो वे मूसियः से गुज़र कर तरवास में उतर
९ आये * पूलूस के तईं रात को ख़्याल में दिखाई दिया कि
मक़दूनियः का एक मर्द खड़ा हुआ उस की मिन्नत करके
कहता है पार उतर मक़दूनियः में आ और हमारी मदद
१० कर * और जब उसको ख़्याल दिखाई दिया त्योंहीं हम
ने मक़दूनियः का इरादः किया इस लिये कि हम ने यों
मअ़लूम किया कि ख़ुदावंद ने हमें बुलाया है ता कि उन
११ में इंजील की बशारत देवें * पस हम तरवास से किश्ती
पर सीधे सामूत्राकी को आये और दूसरे दिन नियापुलिस
१२ को * और वहां से फ़िलपी को जो मक़दूनियः के उस तरफ़ के

शहरों में बड़ा शहर और मुसाफ़िरों की बस्ती है आके उस
१३ शहर में चंद रहे * और सबत के दिन हम उस शहर
से निकल के लबि नहर वहां जहां मअमूल था कि नमाज़
पढ़ी जावे गये और बैठ के उन रंडियों से जो फ़राहम हुईं
१४ बातें करने लगे * और शहरि सुआतिरः की ऐक ख़ुदा परस्त रंडी
लूदियः नाम जो क़िरमज़ फ़रोश थी सुनती था उसके दिल
को ख़ुदा ने खोला कि उन बातों को जो पूलुस कहता था
१५ दिल लगा के सुन्ने लगी * और जो अपने घराने समेत
इस्तिबाग़ पाचुकी तो मिन्नत करके कहने लगी कि अगर
तुम मुझको ख़ुदा की मोमिनः जानते हो मेरे घर में आके
१६ रहो और हमको बजोर लेगई * और ऐक रोज़ जब हम
नमाज़ को चले ऐसा हुआ कि ऐक छोकरी हमको मिली
जो आसेब रूहःग़ी से ग़ैब की ख़बर देती थी और अपने
१७ वारिसों को पेशगोई से बहुत कुछ कमाता देती थी * वुह
पूलुस के और हमारे पीछे होके चिल्लाई कि ये मर्द ख़ुदाताला
के बंदे हैं और हमको नजात की राह दिखलाते हैं *
१८ और वुह बहुत दिनों तक यिह किया की आख़िर पूलुस रंज़
होकर मुतवज्जिह हुआ और आसेब को कहा मैं ईसा
मसीह के नाम से तुझ को हुक्म करता हूं उस पर से उतर
१९ वुह उसी वक़्त उस पर से उतर गया * और उसके वारिसों
ने जो देखा कि कमाई की उम्मेद जाती रही तो पूलुस और

सीलास को पकड़ा और बाज़ार में खैंचे हुए रईसों कने ले
२० चले * और उन्हें हाकिमों पास लाये और कहा कि ये
मर्द हमारी बस्ती को निपट सताते हैं क्यूंकि यहूदी हैं *
२१ और हमको वे रसूम सिखलाते हैं जिनको क़बूल करना
और अमल में लाना हमारे लिये नारवा है कि हम रूमी
२२ हैं * तब दंगल ने बाहम उन पर हमलः किया और
हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़े और हुक्म किया कि छड़ी
२३ से मारें * और ख़ूब सा मार के उनको क़ैद में डाला और
ज़िंदान बान को हुक्म किया कि उन्हें बहुत ख़बरदारी से
२४ रखे * उस ने यिह हुक्म पाके उनको अंदरूनी क़ैदख़ाने
२५ में धकेला और उन के पाओं काठ में डाले * आधीरात को
पूलूस और सीलास नमाज़ में ख़ुदा की मुनाजात गाने लगे
२६ और बंधवे सुनते थे * कि नागाह बड़ा ज़लज़ला आया
ऐसा कि क़ैद ख़ाने के दरओदीवार सरासर हिल गये और
फ़िलफ़ौर सब दरवाज़े वा हुए और हरएक की ज़ंजीरें खुल
२७ गईं * तब ज़िंदानबान ने नींद से उठकर और क़ैदख़ाने के
दरवाज़े खुले देखकर गुमान किया कि बंधवे भागे और
२८ तरवार खैंचकर चाहा कि आप को जान से मारे * तब पूलूस
ने नअ़रः मार के कहा कि अपने तईं दुख न दे इसलिये
२९ कि हम सब यहीं हैं * तब वुह चिराग़ मंगवा के लपक
कर अंदर गया और थरथराता पूलूस और सीलास के आगे

३० दाक पर गिर पड़ा * और उन्हें बाहर लाके कहा ऐ
३१ साहिबो मैं क्या करूं जो बच जाऊं * वे बोले कि खुदावंद
ईसा मसीह पर ईमान ला कि तू और तेरा घराना बच
३२ जायगा * तब उन्हों ने उसको और उन सब को जो
३३ उसके घर में थे खुदावंद का सुखन कहा * उसने उन्हें उसी
दम रात को लेके उन के ज़ख्मों को धोया और वोंहीं उस
३४ ने और सब ने जो उसके थे इस्तिबाग़ पाया * और उसने
उनको अपने घर में लाके दस्तरख्वान बिछाया और अपने
सारे घर समेत खुदा पर इअतिक़ाद करके खुशवक्त हुआ *
३५ और जब सुबह हुई हाकिमों ने पियादों कि मअरिफ़त कह
३६ भेजा कि उन मर्दों को छोड़ दो * ज़िंदानबान ने यिह बातें
पूलुस को कह सुनाईं कि हाकिमों ने कहला भेजा है कि
३७ तुम को छोड़ दूं सो अब निकल के सलामत जाईये * लेकिन
पूलुस ने उन से कहा कि उन्हों ने हमको गुनाह साबित
करने से पेशतर बरअक्सके हम रूमी हैं अलानियः मारा और
क़ैदखाने में डाला और अब वे हमको चुपके निकाले देते हैं
३८ कभी न होगा वे आप आके हमको निकालें * पियादों ने
ये बातें हाकिमों को जा कहीं वे सुन के कि वे रूमी हैं डरे *
३९ और आके उनकी मिन्नत की और बाहर लाके साइल हुए
४० कि शहर से बाहर जावें * वे क़ैद से निकल के लूदियः पास गये
और भाइयों को देख के दिलासा दिया और वहां से रवानः हुए *

सतरहवां बाब

१ अब वे अमफ़ूलिस और अफ़लूनियः से गुज़र करके तसलूनीकी
२ में जहां यहूदियों का एक मजमअ़ था आये * पूलुस अपने
मअ़मूल पर उन के दरमियान गया और तीन हफ़्तों तक
३ किताबें पढ़ के उन्हें सुनाता रहा * और खोल के और
दलील लाके कहता था ज़रूरी था कि मसीह दुख उठावे
और जी उठे और यिह ईसा जिसकी मैं तुम्हें बशारत देता
४ हूं मसीह है * तब उन में से बअ़ज़े ईमान लाये और
पूलुस और सीलास के शरीक हुए और एतक़ादी दीनदार यूनानियों
में से एक बड़ी गरोह और एतक़ादी उमदः रंडियों में से
५ कितनी * और यहूदियों ने जो बेईमान थे बाज़ारियों में से
कितने एक शरीरों को अपने हमराह लिया और जमाअ़त पैदा
करके सारे शहर में हंगामः किया और यासून के घर को घेरके तक़ाज़ा
६ किया कि उन्हें गरोह पास हाज़िर करे * और वे उन को न पाकर
यासून को बअ़ज़े भाइओं के साथ शहर के रईसों कने खैंच लाये
और चिल्लाते जाते थे कि जिन्हों ने जहान को उलट दिया यहां भी
७ आये हैं * उनको यासून लिये गया और ये सब क़ैसर के
हुक्मों के बरअ़क्स करके कहते हैं कि बादशाह तो दूसरा
८ है ईसा * सो उन्हों ने दंगल और शहर के रईसों को ये
९ सुना कर घबराया * तब उन्हों ने यासून को और दूसरों
१० को ज़ामिन लेके छोड़ दिया * और भाइओं ने फ़िलफ़ौर

पूलूस और सैलास को रातों रात शहरि बरय: को रवानः
११ किया वे वहां आके यहूदियों के मजमअ में गये * यहां के
तसलूनीकी के लोगों से शरीफ़ तर थे कि उन्हों ने सुख़न को बड़ी
दिल ख़ुशी से मान लिया और हररोज़ किताबों में ढूंढ़ते रहे
१२ कि आया ये चीज़ें यूं हैं * और बहुत उन में से और
यूनानी अशरफ़ रंडियों में से भी और मर्दों में से बहुतेरे
१३ ईमान लाये * और जब तसलूनीकी के यहूदियों ने जाना
कि पूलूस बरय: में भी ख़ुदा के सुख़न की बशारत देता है
१४ उन्हों ने वहां आके दंगलों में बखेड़ा किया * और भाइओं
ने फ़िलफ़ौर उसी वक़्त पूलूस को रवानः किया कि यों जावे
जैसे दरया को जाते हैं लेकिन सैलास और तीमताउस वहीं
१५ रहे * और वे जो पूलूस के रहबर थे उसे असीनः में लाये
और सैलास और तीमताउस पर हुक्म लेके कि ता मक़दूर
१६ जल्द उस पास आवें चल निकले * अब पूलूस जो असीनः
में उनकी राह तकता था जब उसने सारे शहर को बुत्
१७ परस्त देखा तो उसका दिल सीने में मुश्तइल हुआ * उस
सबब मजमअ में यहूदियों से और दीनदारों से बाज़ार में और
१८ उन से जो उसे मिलते थे हररोज़ बहस करता था * तब
अपकूरी और सतूइकी फ़ैलसूफ़ों में से कई एक उसके साम्हने
हुए और बअज़ों ने कहा कि यिह यावह गो क्या कहा
चाहता है और बअज़े बोले कि यिह तो अजनबी ख़ुदाओं

का ज़ाहिर करने वाला मअ़लूम होता है क्यूंकि वुह उन्हें
१९ ईसा और क़ियामत की ख़बर देता था * सो उन्हों ने उसे
पकड़ा और कोहि मिर्रीख़ में लाके कहा कि आया हमको
मअ़लूम हो सकता है यिह नई बात जो तू सिखाता है क्या
२० है * क्यूंकि तू अजनबी बातें हमारे कानों तलक पहुंचाता
है हम उन चीज़ों के मअ़नी दरयाफ़्त किया चाहते हैं *
२१ यिह इसलिये था कि सारे अहलि असीनः और मुसाफ़िर
जो वहां जा रहे थे सिवा नई बात कहने या सुन्ने के
२२ अपना वक़्त किसी और काम में न खोते थे * तब पूलुस
कोहि मिर्रीख़ के वसत़ पर खड़ा होके बोला कि ऐ असीनः
के मरदो मैं तुम को फ़िलजुमलः दीनदार सा जानता हूं *
२३ क्यूंकि मैं ने गुज़रते हूए और तुम्हारे मअ़बूदों पर नज़र
करते हूए एक मज़बह पाया जिस का कुतावा यिह है
ख़ुदा का जो ग़ाइब है सो जिसे तुम बिन पहचाने पूजते हो
२४ मैं तो तुमको उसी की ख़बर देता हूं * ख़ुदा जिस ने आ़लम
और सब कुछ जो उस में है पैदा किया अज़ बसकि आसमान
ओ ज़मीन का ख़ुदावंद है हैकलों में जो हाथों से बनाई
२५ गई हैं सुकूनत नहीं करता * और न वुह इसलिये कि
किसी चीज़ का मुहताज है आदमी के हाथों से ख़िदमत करवाता
है कि उसी ने सबको हयात और तनफ़्फ़ुस और सब कुछ बख़्शा *
२६ और एक लहू से इनसान की सब क़िसमें ख़ल्क़ किया ता कि

तमाम ज़मीन पर सुकूनत करें और मुरत्तब वक़्तों को और
२७ उनकी सुकूनत की हद्दों को मुअ़ैयन किया * ताकि ख़ुदावंद
को ढूंढें शायद कि उसको टटोलकर पावें बावजूदेकि वुह
२८ तो हमारे बीच में किसी से दूर नहीं * क्यूंकि हम उसी से
जीते और चलते फिरते और मौजूद हैं चुनांचि: तुम्हारे ही
बअ़्ज़े शाइरों ने कहा है कि हम तो उसी की जिन्स हैं *
२९ पस हरगाह कि हम ख़ुदा की जिन्स हैं हमको लाज़िम
नहीं कि यिह गुमान करें कि लाहूत सोने या रूपे या
पत्थर की किसी चीज़ के मानंद है जो आदमी की हुनरमंदी
३० और तदबीर से तराशी गई है * सो जिहालत के वक़्तों से
इग़माज़ करके अब फ़रमाता है कि हरएक आदमी जो
३१ जहां है तौब: करे * क्यूंकि उसने एक दिन मुक़र्रर किया
है कि एक मर्द की विसातत से जिसे उसने मुअ़ैयन किया
है आलम की सच्ची अदालत करेगा और उसने सबको उस
मर्द के फिर जिलाने से उस बात का इअ़्तिक़ाद बख़्शा *
३२ और जब उन्हों ने मुरदों के जीने की सुनी बअ़्ज़ों ने तमस्ख़ुर
किया पर औरों ने कहा हम तुझ से उस की फिर सुनेंगे *
३३ बअ़्द उसके पूलूस उनके दरमियान से रवान: हूआ *
३४ लेकिन बअ़्ज़े लोग उसके साथ मुलहिक़ होके ईमान लाईं
उन में कोहि मिर्रीख़ के हाकिमों से एक शख़्स दैयूनूसयूस
था और एक रंडी दमारस नामीद: और उनके साथ कितने थे *

अठारहवां बाब

१ बअद उसके पूलूस असीनः से रवानः होकर क़ारनतूस में आया *
२ और अकला नाम ऐक यहूदी को पाया जो पनतस का बासी था और उन्हीं दिनों में अपनी जोरू परसकला के साथ ऐतालिया से आया था इसलिये कि क़लादयूस ने हुक्म किया था कि सारे यहूदी रूमियः से निकल जावें सो वुह
३ उन पास आया * और इसलिये कि वुह उन्हीं का हम पेशः था उनके साथ रहा और काम करने लगा कि उनका
४ पेशः ख़ीमःदोज़ी था * और उसने हर सबत को मजमअ में इरशाद किया और यहूदियों और यूनानियों को क़ाइल
५ किया * और जब सीलास और तीमताउस मक़दूनियः से आये पूलूस जान से तंग आके यहूदियों पास गवाही देता था कि
६ ईसा मसीह है * और जब उन्हों ने रद्दोबदल किया और कुफ़र बका उस ने दामन झाड़ के उन्हें कहा तुम्हारा ख़ून तुम्हारी गर्दन में पाक हों सो मैं अब अवाम की तरफ़
७ जाता हूं * फिर वुह वहां से रवानः होके ऐक ख़ुदापरस्त शख़्स के घर में दाख़िल हूआ उसका नाम यूसतूस था और
८ उसका घर मजमअ से पैवस्तः था * तब करसपूस मजमअ का रईस अपने सारे घर समेत ख़ुदावंद पर ईमान लाया और बहुत से करन्थी सुनके मुअतक़िद हूऐ उनको
९ इस्तिबाग़ दिया गया * तब ख़ुदावंद ने रात को ख़्वाब में

पूलुस को कहा कि डर मत कहेजा और चुपका मत रह * कि मैं तेरे साथ हूं और किसी का हाथ न पड़ेगा कि तुझे
१० सतावे कि इस शहर में मेरे लोग बहुत हैं * और वुह
११ ऐक बरस छः महीने वहां इक़ामत करके ख़ुदा का कलाम
१२ उनके बीच तअ़लीम करता रहा * और जब जलयून अखाइया का वाली हूआ यहूदियों ने ईका करके पूलुस को
१३ आ घेरा और उसे अदालत गाह में लाके कहा * कि यिह लोगों को तरग़ीब करता है कि बरख़िलाफ़ शरीअ़त ख़ुदा को
१४ पूजें * जों पूलुस ने चाहा कि मुंह खोले जलियों ने यहूदियों को कहा कि ऐ यहूदिओ अगर कुछ ज़ुल्म या नटखटी
१५ होती वाजिब था कि मैं तुम्हारी हिमायत करूं * लेकिन अगर यिह कलाम का और नामों का और तुम्हारी शरीअ़त का मुबाहसः है तुम जानो मैं नहीं चाहता कि उसका
१६ मुनसिफ़ होऊं * और उसने अदालत गाह से उन्हें हांक
१७ दिया * तब सब यूनानियों ने ससनेस को जो मजमअ़ का बड़ा रईस था पकड़ा और उसे तख़्तगाह के आगे मारा और
१८ जलियों ने उन चीज़ों की कुछ परवा न की * और पूलुस और भी ऐक मुद्दत तक वहां रहा फिर भाइओं से रुख़सत होके कंनरिया में अपना सिर मुंडा कर कि उस ने नज़र रखी थी परसकला और अकला के साथ तरी की राह सिरिया
१९ को रवानः हूआ * और वुह अफ़सस तक आया और वहां

उन्हें छोड़ा और आप मजमअ़ में दाख़िल हूआ और
२० यहूदियों से बातें करने लगा * जब उन्हों ने ख़्वाहिश करके
कहा कि ऐक मुद्दत हमारे साथ रह तो उस ने न माना *
२१ और उन से यिह कहके विदाअ़ हूआ कि बहर सूरत
मुझ पर वाजिब है कि मैं ईद आयेंदे को औरशलेम में
होऊं और वहीं ईद करूं लेकिन इनशा अल्लाह मैं तुम
पास फिर आऊंगा और उसने अफ़सस से बादबान खैंचा *
२२ और क़ैसरियः में पहुंचा और किनारे पर गया और कलीसया
२३ पर सलाम करके अन्ताकियः को उतर पड़ा * वहां चंदे
रह कर रवानः हूआ और सब शागिर्दों को ज़ोर बख़शता
हूआ तरतीब से मुल्कि गलातियः और बरजियः में फिरा *
२४ और अफ़लूस नाम ऐक यहूदी इस्कंदरियः का वतनी ऐक
फ़सीह इनसान और किताबदानी में बड़ा ज़ोरावर अफ़सस
२५ में आया * उस मर्द ने ख़ुदावंद की राह की तरतीब पाई
थी और दिल गरमी से ख़ुदावंद की बातें दुरुस्त बोलता
और सिखलाता था पर फ़क़त यहया के इस्तिबाग़ तक
२६ जानता था * उसने जुरअत से मजमअ़ में कहना शुरूअ़ किया
अकला और परसकला ने उसका कलाम सुनके उसे लिया
२७ और ख़ुदा की राह ज़ियादः दुरुस्ती से उसे बतलादी * और
जब उसने इरादः किया कि अख़ाया के पार उतरे जाय
तो भाइओं ने भेजके उनकी जो फ़ज़ल के सबब मुअ़तक़िद

१८ से थे बहुत कुमक की * क्यूंकि उसने बड़े ज़ोर शोर से यहूदियों को किताबों में ज़ाहिर कर कि ईसा मसीह था अलानियः इल्ज़ाम दिया *

उन्नीसवां बाब

१ और यों हुआ कि जब अफ़लूस करन्तूस में था पूलूस ऊपर की नवाही में फिर कर अफ़सस में आया और बअ़ज़े शागिर्दों
२ को पाकर * उन्हें कहा कि आया जब से तुम ईमान लाये तुम ने रूहि कुद्दस को पाया उन्हों ने उसे कहा हमने तो
३ यिह भी नहीं सुना कि रूहि कुद्दस है * उसने उन्हें कहा पस तुम ने कैसा इस्तिबाग़ पाया वे बोले कि हमने यहया
४ का इस्तिबाग़ पाया * तब पूलूस ने कहा कि यहया ने तौबः का इस्तिबाग़ देते हुए उम्मत को यूं कहा कि तुम उस पर जो
५ मेरे बअ़द आवेगा यअ़ने ईसा पर ईमान लाओ * वे यिह
६ सुन के ख़ुदावंद ईसा के नाम से इस्तिबाग़ पाये * और जब पूलूस ने उन पर हाथ रखे रूहि कुद्दस उन पर पड़ी और
७ वे मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोले और पेशीन गोई करने लगे * वे सब
८ मर्द बारह एक थे * और वुह मजमअ़ में दाख़िल होके तीन महीने तक ख़ुदा की ममलुकत की बातों का मुनाज़रः
९ करता रहा और तरग़ीब किया किया * और जब बअ़ज़े जो कटर और बे ईमान थे गरोह के आगे उस राह को बुरा कहने लगे वुह उन से जुदा होकर शागिर्दों को अलग

१० लेके तरनस के मदरसः में रोज़मर्रः बहस करने लगा * और
दो बरस की मुद्दत तक यही हूआ किया यहां तक कि
आसिया के बाशिंदों ने क्या यहूदी और क्या यूनानी सब
११ ने ख़ुदावंद ईसा का कलाम सुना * और ख़ुदा पूलूस के
१२ हाथ से ख़ास मुअजिज़े दिखलाता था * यहां तक कि रूमाल
और लुंगी उसके बदन को छूआके बीमारों पर डालते थे और
उनकी बीमारियां जाती रहती थीं और बुरे आसेब उन पर
१३ से उतर जाते थे * तब दरबदर फिरने वाले मन्तर पढ़ने
वाले जादूगर यहूदियों में से बाज़ों ने यिह पेशः
इख़तियार किया कि उन पर जिन्हें बुरी रूहों का सायः
था ख़ुदावंद ईसा का नाम पढ़के कहने लगे कि हम तुम
को ईसा की पूलूस जिसकी बशारत देता है क़सम देते हैं *
१४ और सक्वा यहूदी सरदार काहिन के सात बेटे थे जो
१५ यही करते थे * तब बुरे आसेब ने जवाब दिया और कहा
ईसा को मैं जानता हूं और पूलूस से भी वाक़िफ़ हूं पर
१६ तुम कौन हो * और वुह शख़्स जिसको बुरी रूह का
सायः था हमलः करके उनपर आ गिरा और उनपर ग़ालिब
होके ऐसे चुहटे मारे कि वे घरसे नंगे और ज़ख़मी निकल
१७ भागे * और यिह सब यहूदियों और यूनानियों को जो
अफ़सस के बाशिंदे थे मअलूम हूआ उन सब को डर लगा
१८ और ख़ुदावंद ईसा का नाम बुज़ुर्ग हूआ * और बहुत से

जो ईमान लाये थे आके इक़रार करते और अपने पेशों
१९ को बयान करने लगे * और बहुतेरे उनमें से भी जो
शुअबदः बाज़ी करते थे अपनी किताबें इकट्ठी लाये और
सब के सामने जला दीं और उन्हों ने उनकी क़ीमत का जो
२० हिसाब किया तो पचास हज़ार रुपे हुए * चुनांचिः ख़ुदावंद
२१ का कलाम बहुत से बढ़ा और ग़ालिब हुआ * जब ये
बातें हो चुकीं पौलुस ने जी में इरादः किया कि मक़दूनियः
और आख़ायः से गुज़र कर औरशलीम को जावें और कहा
कि जब मैं वहां हो लूं तो ज़रूर है कि रूमियः को भी
२२ देखूं * सो उसने दो उन में से जो उसकी ख़िदमत करते
थे मक़दूनियः में भेजे ऐक तीमताऊस और दूसरा आरसतस
२३ लेकिन वुह आप असिया में चंदे रहा * और उसवक़्त वहां
२४ उस तरीक़ के बाबत बड़ा फ़साद उठा * इस लिये कि ऐक
दीमीत्रियुस नाम ऐक सुनार था जो अरतमस के मअबद के
नक़रई बुत के बना बना कर उनके लिये जो वुह पेशः रखते
२५ थे बहुत मज़दूरी पैदा करता था * उसने उन को ऐसे काम
वालों के साथ इकट्ठे जमअ करके कहा यारो जानते हो कि
२६ हमारी दौलत उसी कसब से है * और तुम तो देखते और
सुनते हो कि सिर्फ़ अफ़सस में नहीं बल्कि असिया के अकसर
निवाह में उस पौलुस ने बहुत सी ख़िल्क़त को चरब ज़बानी से
बेराह किया है कि कहा करता है जो हाथों से बने हैं

२७ सो ख़ुदा नहीं होते * सो ख़ाली यही भी ख़ौफ़ नहीं कि
हमारा हिरफ़ः बेक़द्र हो जाय बल्कि बड़ी ख़ुदाई अरतमस
का मअ़बद भी नाचीज़ हो जायगा और उसकी जिसे तमाम
आसिया और जहान पूजता है बुज़ुर्गी घट जायगी *
२८ वे यिह सुन के गुस्से से भर गये और चिल्लाके यूं बोले कि
२९ अफ़सियों की अरतमस बुज़ुर्ग है * तब सारे शहर में बड़ा
फ़साद हुआ और जइयूस और अरसतारख़स को जो मकदूनियः
के रहने वाले और पौलुस के हमसफ़र थे पकड़के एक दिल होके
३० तमाशःगाह को दौड़ गये * और जब पौलुस ने चाहा कि
३१ जमाअ़त में दाख़िल होवे शागिर्दों ने उसे न छोड़ा * और
आसिया के सरदारों में से भी बअ़ज़ों ने जो उस के दोस्त थे
उसे मिन्नत कहला भेजा कि तू तमाशःगाह में जाने से
३२ बाज़ रह * तब बअ़ज़ों ने कुछ चिल्लाके कहा और बअ़ज़ों
ने कुछ इस लिये कि जमाअ़त मुशव्वश थी और अक्सर
३३ न जानते थे कि हम किस लिये जमअ़ हुए हैं * और
उन्हों ने इसकंदर को हंगले में से बढ़ाया और यहूदी उसे
धकियाते थे और इसकंदर ने हाथ से इशारः करके चाहा कि
३४ ख़ल्क़ के आगे अपनी मअ़ज़रत करे * पर जब उन्हों ने
जाना कि वुह यहूदी है तो सब के सब गले मिलाके
दो साअ़त तक चिल्लाये कि अफ़सियों की अरतमस बुज़ुर्ग है *
३५ और जब कातिब ने जमाअ़त को ठंडा किया तो कहा कि ऐ

अफ़सी मर्दो कौन सा इनसान है जो नहीं जानता कि
अफ़सस का शहर बड़ी सुदाई अरतमस का और उस बुत का
३६ जो मुश्तरी से गिरा है ख़िदमती है * पस अज़ बस कि ये
बातें इनकार के लाइक़ नहीं तुमको लाज़िम है कि चैन से
३७ रहो और बेतअम्मुल कुछ न करो * इस लिये कि तुम उन
मर्दों को यहां लाये हो जो न तो मअबद के चोर हैं और
३८ न तुम्हारी सुदाई की तक्फ़ीर करने वाले * लिहाज़ा अगर
दीमीत्रियूस और अहलि हिरफ़: जो उसके साथ हैं किसी
पर दावा रखते हैं आज अदालत बैठी है और हाकिम
३९ हैं एक दूसरे से इद्दिआ करें * लेकिन अगर तुम्हारा
परसिश और तरह से है तो वुह शरई महफ़िल में खोली
जाएगी क्योंकि हम आज के काम के सबब से ख़तरे में हैं
कि हम पर बग़ावत की तुहमत न की जाय इस लिये
कि कोई सबब ऐसा नहीं जो हम पास इस झगड़े की
४० ज़ुम्मान हो सके * और उसने यूं कहके उस महफ़िल को
बरहम मारा *

बीसवां बाब

१ जब फ़ौग़ा फ़र्द हुआ पूलुस ने शागिर्दों को बुलाया और
२ रुख़सत होके निकला कि मक़दूनियः को * जावे और उस दे
स नवाही से गुज़र के उनको बहुतसा कुछ कहके दिलासा
३ दिया और यूनान में आया * तीन महीने के बअद जब

वुह् सूरिया में जानेपर था यहूदी उसकी घात लगे तब उसने
४ मसलहत जानी कि मकदूनियः की राह से जावे * और
सूपतरस बेरई और इसतरखस और सकूंदस जो तसलूनेकी
थे और जायूस दरबी और तीमथाउस और दो शख्स असियाय
तखकस और तरफ़मस आसिया तक उस के हम सफ़र थे *
५ ये आगे जाके त्रवास में हमारी राह देखने लगे * (६) और
ईदे फ़तीर के बअ़द हम फ़िलप्पी से किश्ती पर रवानः हूऐ
और पांच रोज़ के बअ़द त्रवास में उन पास पहुंचे और
७ सात दिन वहां काटे * और ऐकशम्बः को जब शागिर्द इकठ्ठे
होके रोटी तोड़ने आये पूलुस तयार होके कि सुबह चला
जाय उनसे बातें करने लगा और यहां तक सुखन को
८ तूल दिया कि आधी रात हो गई * और ऊपर के मकान
९ में जहां के बाहम जमअ थे बहुत से चिराग़ थे * वहां
ऐक जवान यूतुखस नाम खिड़की में बैठा था जो सो चला और
जूंहीं कि पूलुस ने बातें बढ़ाईं वुह नींद में ग़र्क़ होके
तीसरे दरजः से गिर पड़ा उसे उठाया तो मरा हूआ था *
१० तब पूलुस उतर के उसे लपट गया और गले लगा के कहा
तुम मत घबराओ इसलिये कि उसकी जान उस में है *
११ फिर वुह ऊपर आके और रोटी तोड़ के और खाके देरतक
बातें करता रहा यहांतक कि सहर हूई तब वुह रवानः
१२ हूआ * और वे उस लड़के को जीता लाये और बहुत

मैं रूह से बंधा हुआ यरूशलीम को चला हूं जानता नहीं
२३ कि वहां मुझ पर क्या कुछ वारिद होगा * मगर इतना
कि रूहि क़ुदस हरेक बस्ती में दिए कहके गवाही देता
है कि बंधीरें और दुख दर्द उसके लिये तैयार हैं *
२४ पर मैं उसे कुछ माल नहीं बूझता और न मैं आप
अपनी जान को अज़ीज़ जानता हूं ता कि मैं अपने दौर
को ख़ुशी से तमाम करूं और उस ख़िदमत को जो मुझे
ख़ुदावन्द ईसा से मिली कि ख़ुदा की निअ़मत की बशारत दे,
२५ मुकम्मल करूं * और अब देखो मुझे यक़ीन है कि कोई
तुम में से जिनके दरमियान में ख़ुदा की ममलुकत की बशारत
२६ देता फिरा हूं फिर मेरा मुंह न देखेगा * लिहाज़ा मैं आज
के दिन साफ़ तुम्हें कह सुनाता हूं किसी का ख़ून मुझ पर
२७ नहीं * क्यूंकि मैं तुम्हारे आगे ख़ुदा की सारी मश्वरतों को
२८ शरह करने से बाज़ न रहा * पस अपने लिये और उस
सारे गलः के लिये जिस में से तुम्हें रूहि क़ुदस ने निगहबान
किया इहतियात़ करो ता कि ख़ुदा की कलीसया को जिसे
२९ उसने अपना ख़ास लहू देके मोल लिया चराओ * क्यूंकि
मैं यिह जानता हूं कि मेरी रवानगी के बअ़द बड़े भेड़िये
३० तुम में दाख़िल होंगे जो गलः पर अफ़सोस न करेंगे * तुम्हारे
अपने ही बीच से कितने मर्द उठेंगे जो टेढ़ी बातें कहेंगे
३१ ता कि शागिर्दों को अपनी तरफ़ खैंच ले जावें * इसलिये

जागते रहो और याद रखो कि मैं तीन बरस तक रात और
३२ दिन रो रो के हर एक को नित आगाह करता रहा * और
अब ऐ भाइओ मैं तुम्हें ख़ुदा को और उसकी निअमत
के कलिमः को सौंपता हूं कि जो क़ादिर है कि तुम्हें कामिल
३३ बनावे और तुम्हें सारे मुक़द्दसों में मीरास बख़्शे * मैं ने
३४ किसी के रुपे या सोने या कपड़े की तमअ नकी * तुम
जानते हो कि इनहीं हाथों ने मेरी ज़रूरी ख़िदमतें और
३५ मेरे रफ़ीक़ों की ख़िदमतें कीं * मैं ने तुम्हें सब चीज़ें बता
दियां हैं क्यूंकि तुम पर वाजिब है कि तुम ज़ईफ़ों को
यूं मिहनत करके इआनत करो और ख़ुदावन्द ईसा की बातें
याद करो कि उसने कहा है कि देना लेने से ज़ियादः
३६ तर मुबारक है * और उसने यूं कह के घुटने टेके और
३७ उन सब के साथ दुआ की * और वे सब निपट रोये और
३८ पौलुस की गर्दन पर गिर गिर के उसे चूमा * और ख़ुसूसन
उसकी उस बात पर जो उसने कही कि तुम मेरा मुंह
फिर न देखोगे बहुत ग़मगीन हुए और किश्ती तक उस के
हमराह गये *

इक्कीसवां बाब

१ और जब हम उन से दूर पड़े और किश्ती खोली तो हम
सीधी राह क़ौस में आये और दूसरे दिन रूदस को और
२ वहां से पतरः को गये * और एक किश्ती पर फ़ूनकी को

३ आती हुई पाकर हम उसपर चढ़े और चल बैठे * और जब जज़ीरै क़बरस नज़र आया उसे बएं हाथ छोड़ के सिरिया को चले और सूर में लगाया क्यूंकि वहां किश्ती का ४ बार उतारना था * और शागिर्दों को पाके हम ने वहां सात दिन सुकूनत की और उन्हों ने रूह के इलहाम से पूलुस ५ को कहा कि ओरशलीम को न जा * और उन रोज़ों को तमाम करके हम रवानः हुए और अपनी राह ली और वे सब जोरूओं और लड़कों समेत शहर के बाहर तक हमारे साथ आये और हमने लब्बि दरया घुठने टेक के ६ दुआ की * और हम आपस से विदाअ होकर किश्ती पर चढ़े ७ और वे अपने अपने घरों को फिरे * और हम तमाम नदी की सैर करके सूर से अक्कः में आये भाइओं को सलाम ८ किया और एक दिन उनके साथ रहे * दूसरे दिन हम जो पूलुस के रफ़ीक़ थे रवानः होके क़ैसरियः में आये और फ़ैलबूस इंजील नवीस के यहां जो उन सात में से था उतर ९ के उसके साथ रहे * और उस शख़्स की कुआरी चार बेटियां १० थीं जो पेशीनगोई करती थीं * और जब हमने वहां बहुत दिनों तक इक़ामत की यहूदियः से अग़बस नामीदः एक ११ नबी आया * उसने हमारे पास आकर पूलुस का कमर बंद उठा लिया और अपने हाथ पांओं बांध के कहा कि रूहिल क़ुद्स ने यूं कहा है कि यहूदी ओरशलीम में उस मर्द को

जिसका यिह कमर बंद है यूं बांधेंगे और अ़ग़ाम के हाथ
१२ में सौंपेंगे * जब हमने ये बातें सुनीं तो हमने और वहां
के बाशिंदों ने उस की मिन्नत की कि औरशलीम को नजावे *
१३ तब पूलुस ने जवाब दिया तुम क्यूं रोते हो और मेरा दिल
तोड़ते हो कि में ने सिर्फ़ बांधे जाने को बल्कि औरशलीम में
१४ ख़ुदावंद ईसा के नाम के लिये मरने को भी तैयार हूं * और
जब उसने न माना हम यूं कहके कि ख़ुदा की ख़ाहिश होवे
१५ चुप हूए * और उन रोज़ों के बअ़द हम अपना असबाब लेके
१६ औरशलीम को चले * तब हमारे साथ क़ैसरिया में के
बअ़ज़े शागिर्द भी गये ता कि हम को ऐक शख़्स मनासून
क़बरसी क़दीम शागिर्द के यहां लेजाऐं कि हम उसके घर
१७ रहें * जब हम औरशलीम में पहुंचे भाइओं ने ख़ुशी से
१८ हमारा इस्तिक़बाल किया * और दूसरे दिन पूलुस हमारे
साथ यअ़क़ूब के यहां आया तब सारे पेशवा हाज़िर थे *
१९ और उसने उन्हें सलाम करके सब कामों को जो ख़ुदा ने
अ़ग़ाम के दरमियान उसकी ख़िदमत की विसातत से किये थे
२० जुदा जुदा बयान किया * उन्हों ने सुनके ख़ुदावंद की सिताइश
की और उसे कहा कि भाई तू देखता है कि कितने हज़ार
यहूदी हैं जो ईमान दार हैं और सबके सब शरीअ़त के
२१ ग़ैरतमंद हैं * उन्हों ने तेरी ख़बर पाई है कि तू सारे
यहूदिओं को जो अ़ग़ाम में हैं सिखलाता है कि मूसा से

फिरें कहता है कि अपनी औलाद का ख़तनः नकीजो
२१ और शरीअत के दस्तूरों पर नचलो * पस यिह क्या है
गरोह बेशक जमअ होगी क्यूंकि वे सुनेंगे तू आया है *
२३ अब तू यिह कर जो हम तुझे कहते हैं हम पास चार
२४ मर्द हैं जिन्हें नज़र अदा करना है * उनको लेके आप
को उनके साथ ज़ाहिर कर और उनके लिये कुछ ख़रच
कर कि वे अपना सिर मुंडावें तब सब जानजायेंगे कि वुह
बातें जो हमने उसके हक़ में सुनीं थीं कुछ नथीं बल्कि
२५ वुह भी शरीअत के तौर पर चलता है * वहीं उम्मतें
जो ईमान लाई हैं सो हमने उन्हें फ़रमान दिया है कि
हमने यूं ठहराया कि तुम ऐसी कोई चीज़ हिफ़्ज़ नकरो
मगर सिर्फ़ इतना करो कि बुतों की क़ुरबानियों से और लहू
से और मख़्नूक़ हैवान खाने से और ज़िना करने से परहेज़
२६ करो * तब पूलुस ने उन मर्दों को लिया और दूसरे दिन
उन के साथ तहारत करके हैकल में दाख़िल हुआ और
ख़बर दी कि जबतक उन में से हरएक की क़ुरबानी गुज़रानी
२७ जाय ऐय्यामि तत्हीर की तकमील हो जायगी * और जब
वुह सातदिन गुज़रने पर आये यहूदियों ने जो आसिया
के थे उसे हैकल में देखकर सारे दंगल को तहरीक किया *
२८ और उस पर हाथ डालके चिल्लाये कि ऐ इसराईली मर्दो यारी
करो यिह वुह मर्द है जो हर जगह उम्मत के और शरीअत

काहिन भी और तमाम मशाइख़ मेरे लिये गवाही देते हैं
उनसे मैं भाइओं के लिये नामे पाकर दमिश्क़ को जाता था
कि उन्हें भी जो वहां होएं बांधके औरशलीम में लाऊं कि
६ सज़ा पावें * जब मैं ने सफ़र किया और दमिश्क़ के
नज़दीक पहुंचा दो पहर के क़रीब यों हूआ कि मेरे गिर्दा
गिर्द नागाह आसमान से नूरि अज़ीम की तजल्ली हूई *
७ मैं ज़मीन पर गिरपड़ा और एक आवाज़ सुनी कि मुझे
८ कहा साऊल साऊल तू मुझे क्यूं सताता है * तब मैं ने जवाब
में कहा ख़ुदावंद तू कौन है उसने मुझे कहा मैं ईसा
९ नासरी हूं जिसे तू सताता है * चुनांचिः उन्हों ने जो मेरे
साथ थे नूर को देखा और हिरासां हूए लेकिन उसकी आवाज़
१० जो मुझ से बोला न सुनी * तब मैं ने कहा कि ऐ
ख़ुदावंद मैं क्या करूं ख़ुदावंद ने मुझे फ़रमाया कि उठकर
दमिश्क़ में जा और वहां सब चीज़ें जो मुक़र्रर की गईं
११ हैं कि तू करे तुझे कही जायेंगी * और अज़बस कि
उस नूर की शौकत के सबब मैं देख नसका मैं अपने रफ़ीक़ों
१२ की दस्तगीरी से दमिश्क़ में आया * और एक शख़्स
हनानियास नामीदः ज़ाहिदि मुतशरिअ़ जिसकी ख़ूबी के सारे
१३ यहूदी क़ाइल थे * मुझ पास आया और खड़े रहके मुझे
कहा ऐ भाइ साऊल अपनी बसारत पा उसी दम मैं ने
१४ उस पर निगाह की * उसने कहा कि हमारे आबा के

खुदा ने तुझे बरगुज़ीदः किया है ता कि तू उसकी ख़ाहिश
को जाने और उस आदिल को देखे और उस के मुंह
१५ की आवाज़ सुने * इसलिये कि तू सब लोगों के आगे उसके
वास्ते इन सब चीज़ों का जो तूने देखीं और सुनी हैं
१६ गवाह होगा * और अब तू क्यूं तवक़्क़ुफ़ करता है उठ
इस्तिबाग़ पा और खुदावंद का नाम ले के अपने गुनाहों को
१७ धोडाल * जब मैं औरशलीम में फिर गया और हैकल में
नमाज़ करने लगा यूं हुआ कि बेखुदी ने मुझे लिया *
१८ और उसको देखा कि मुझे कहता था जल्दी कर और औरशलीम
से शिताब निकल इसलिये कि मेरे हक़ में तेरी गवाही क़बूल
१९ नकरेंगे * मैं ने कहा कि ऐ खुदावंद वे जानते हैं कि
मैं उन्हें जो तेरे मुअतक़िद हुए क़ैद करता रहा और
२० हर मजमअ में मारा गया * और जब कि इस्तीफ़ान तेरे
शहीद का खून बहाया गया मैं भी हाज़िर था और उसके
खून का राज़ी था और उस के क़ातिलों के लिबास की निगहबानी
२१ करता था * तब उस ने मुझे फ़रमाया कि रवानः हो कि
२२ मैं तुझे अक़्वाम पास दूर भेजूंगा * और उन्हों ने उस बात तक
उसकी सुनी तब अपनी आवाज़ें बलंद करके कहा ऐसे को
ज़मीन पर से उठा डाल क्यूंकि उसका जीना मुनासिब नहीं *
२३ और जब वे चिल्लाये और अपने कपड़े फेंके और खाक उड़ाने
२४ लगे * सरदार ने हुक्म किया कि उसे क़िलअः में लावें और कहा

कि उसे कोड़े मारके आज़मावें ता कि दरयाफ़ करें कि वै
२५ क्यूं उसकी ज़िद से यूं चिल्लाये * और जब उन्हों ने उसे तसमों
से बांधा पूलूस ने जमअदार को जो नज़दीक खड़ा था कहा
क्या तुम्हारे लिये रवा है कि ऐक मर्द को जो रूमी है
२६ और बेजुरम कोड़े मारो * जमअदार सुनके गया और
सरदार को कहा हज़र कर तू क्या किया चाहता है कि यिह
मर्द तो रूमी है सरदार ने पास आके उसे कहा कि मुझ
२७ से कह क्या तू रूमी है वुह बोला हां * तब सरदार बोला
कि मैं ने मवलग़ि ख़तीर देके यिह बतन हासिल किया
२८ पूलूस बोला लेकिन मैं तो ऐसाही पैदा हूआ * तब वे जो
उसे आज़माया चाहते थे उस से दस्तबरदार हूए और सरदार भी
यिह जान के कि वुह रूमी है और मैं उसे बांधा डर
२९ गया * सुबह को इस इरादे से कि हक़ीक़त को जाने कि
यहूदियों ने उसे क्यूं मत्तहिम किया उसने उसके ज़ंजीरें
खोलीं और हुक्म किया कि सरदारि काहिन और उनकी
सारी महफ़िल हाज़िर होवे और पूलूस को निकाल के उनके
बीच में खड़ा किया *

तेईसवां बाब

१ तब पूलूस ने महफ़िल को घूरके कहा ऐ मर्द भाइओ मैं ने
कमाल इतमीनानि नफ़स से इस दिनतक ख़ुदा के आगे उमर
२ बसर की * उस वक़्त हननियाह सरदारि काहिन ने उनको

जो उस पास हाज़िर थे ऊक्म किया कि उसके मुंह पर
२ थपेड़ा मारें * पूलूस ने उसे कहा कि ए दीवार मजसूस खुदा
तुह्र को थपेड़ा मारेगा तू बैठा है कि मुह्र पर शरअ़ के
मुवाफ़िक़ फ़तवे दे और शरअ़ के बरख़िलाफ़ ऊक्म करता
४ है कि मुझे तमाचः मारें * वे जो उसके नज़्दीक थे
कहने लगे कि क्यूं तू खुदा के सरदारि काहिन को मलामत
५ करता है * तब पूलूस ने कहा भाइओ मैं नजानता था कि
यिह सरदारि काहिन है इसलिये कि लिखा है कि तू
६ उम्मत के अमीर को बुरा मत कह * और जब पूलूस ने
मअ़लूम किया कि एक फ़िरक़ः उन में ज़ादूक़ी है और
एक फ़िरक़ः फ़रीसी तो महफ़िल में चिल्लाया कि ऐ मर्द
भाइओ मैं फ़रीसी बेटा फ़रीसी का हूं हशर होने के
७ इनतिज़ार के वास्ते मुझपर सियासत करते हैं * जब उसने
यूं कहा फ़रीसियों और ज़ादूक़ियों में निज़ाअ़ हूआ और
८ गरोह के दो फ़रीक़ होगये * क्यूंकि ज़ादूक़ी हशर और
फ़िरिश्तः और रूह के वजूद के मुनकिर हैं और फ़रीसी सब
९ का इक़रार करते हैं * तब वहां बड़ी ग़ुल हूई और फ़रीसियों
के फ़िरक़े के कातिब उठे और मुबाहिसः करके कहने लगे कि
हम इस मर्द में बदी नहीं पाते पस अगर किसी रूह
या फ़िरिश्ते ने उससे कहा है आओ हम खुदा से जंग
१० न करें * और जब बड़ी निज़ाअ़ हूआ तो लश्कर के

सरदार ने उस ख़ौफ़ से कि मबादा वे पूलूस के पारचे करें सिपाहियों को हुक्म किया कि निकलें और उसे उनके
११ दरमियान से बज़ोर निकाल के क़िलअः में लायें * उसी रात ख़ुदावंद ने उस पास आके कहा ऐ पूलूस ख़ातिर मजअ रख कि जिस तरह तू ने मेरी बातों पर औरशलीम में गवाही दी है तुझ पर वाजिब है कि रूम में भी गवाही दे *
१२ और जब दिन हूआ यहूदियों में से बअज़ों ने ईका किया और कहा कि हम पर लअनत है हम जब तक पूलूस
१३ को क़तल नकरें नखायेंगे न पीयेंगे * और वे जिन्हों ने यिह
१४ इत्तिफ़ाक़ किया था चालीस से उपर थे * सो उन्हों ने सरदारि काहिनों और पेशवाओं पास आके कहा कि हमने आप पर लअनत पर लअनत की है कि हम जब तक पूलूस
१५ को क़तल नकरें कुछ नचखें * पस महफ़िल से बाहम होके लशकर के सरदार को ईमा करो कि कल उसको तुम पास निकाल लाये गोया तुम चाहते हो कि उसकी हक़ीक़त को ज़ियदः दरयाफ़्त करे और हम उस से पहले कि उसतक आवें
१६ उसके क़तल करने पर तैयार हो रहेंगे * पूलूस का भानजा उनके मकरि निहानी सुनकर गया और क़िलअः में दाख़िल होके
१७ पूलूस से कह दिया * तब पूलूस ने जमअदारों में से एक को बुलाकर कहा कि उस जवान को लशकर के सरदार
१८ पास लेजाकर उस से कुछ कहा चाहता है * चुनांचिः वुह

उसे लेगया और लशकर के सरदार कने लाके कहा कि पूलूस क़ैदी ने मुझे बुलाके दरख़्वास्त की कि इस जवान को
१९ तुझ कने लाऊं कि तुझ से कुछ कहा चाहता है * तब लशकर के सरदार ने उस का हाथ पकड़ा और ख़ल्वत में
२० लेजाके पूछा कि तू मुझे क्या कहा चाहता है * उसने कहा कि यहूदियों ने ईका किया कि तुझ से दरख़्वास्त करें कि तू पूलूस को कल महफ़िल में निकाल लाए गोया कि वे उसके अहवाल की बख़ूबी तहक़ीक़ात किया चाहते हैं *
२१ पर तू उनका इअतिमाद नकर कि उनमें चालीस से ज़ियादः हैं जो उस की घात लग रहे हैं और बाहम क़समी हूए हैं कि जब तक उसे क़तल नकरें नखाएं नपीएं और अब
२२ वे तैयार होके तेरे वअदः के मुन्तज़िर हैं * तब लशकर के सरदार ने उस जवान को रुख़सत दी कि जावे और फ़रमाया कि ख़बरदार कोई नजाने कि तूने ये बातें मुझसे
२३ कहीं * और दो जमअदारों को बुलाके कहा कि दो सै सीपाही क़ैसरियः जाने के लिये और सत्तर सवार और दोसै
२४ भाले बरदार पहर रात गये तैयार रहें * और दो अब हाज़िर करो ता कि वे पूलूस को सवार करके फ़ीलकस हाकिम कने
२५ सलामत पहुंचावें * फिर उस ने उस मज़मून का ख़त लिखा *
२६ क्लादीवीस लसयास का फ़ीलकस हाकिमि फ़ाज़िल को सलाम *
२७ इस मर्द को यहूदियों ने पकड़ा और उन के हाथ से मारा

जाता था और यिह समझ के कि वुह रूमी है मैं ने मर्दे
२८ फ़ौज जाके उसे छुड़ाया * ता कि दरयाफ़ करूं उन्हें ने
किस सबब से उस पर तुहमत की उसे उनकी मह़फ़िल में
२९ ह़ाज़िर किया * सो उसे मैं ने उनके शरीअ़त के मसाइल
में मुत्तहम पाया पर कोई बात जो उसके क़तल या क़ैद
३० का बाइस होए नपाई * और जब मुझे ख़बर पहुंची कि
यहूदी उस मर्द के लिये कमीं में हैं मैं ने फ़िलफ़ौर तुझ
कने भेजा और उस के तुहमत करनेवालों को भी हुक्म
किया कि हुस्सूमत का सबब तेरे आगे बयान करें
३१ अस्सलाम * तब सिपाही हसबुलहुक्म पूलुस को लेके रातों
३२ रात अन्तपातरस में आये * और सुबह उन्हों ने सवारों
को छोड़ा कि उस के साथ जाएं और क़िलअ़: को फिरे *
३३ सो वे जब क़ैसरियः में आये नामः ह़ाकिम को दिया पूलुस
३४ को भी उस के आगे ह़ाज़िर किया * ह़ाकिम ने नामः
पढ़कर पूछा कि वुह किस मुल्क का है और दरयाफ़ करके
३५ कि वुह क़िलक़ियः का है * कहा कि मैं जब कि तेरे तुहमत
करनेवाले भी आ लेंगे तेरी हक़ीक़त सुनूंगा और हुक्म किया
कि उसे हीरूदीस के दारुलअ़मारः में रखें *

चौबीसवां बाब

१ पांच दिन के बअ़द सरदारि काहिन हनानिया पेशवाओं के
और तरतलस नामीदः एक सुख़नदां के साथ निकला और

२ हाकिम के आगे पूलूस की खुसूमत का बयान किया * और जब वुह बुलाया गया तरतलस ने उसे यूं कहके उस पर फ़र्याद करना शुरूअ किया कि ऐ अमीरि अअ्ज़म फ़ीलकस हम पूरी शुक्रगुज़ारी से हरवक्त और हर जगह मुसल्लम
३ रखते हैं * कि हम तेरे सबब से बड़ा चैन पाते हैं और तेरीही पेशबीनी से इस क़ौम को बहुत सी मनफ़अतें हैं *
४ लेकिन ता कि मैं ज़ियादः तेरा मुतसद्दिअ नहोऊं मैं इतना अ़र्ज़ करता हूं कि तू अपने करम से हमारी दो बातें
५ सुन * कि हमने इस मर्द को सब यहूदियों के दरमियान जो जहान में हैं मुफ़सिद और फ़ित्नः अंगेज़ पाया
६ नासिरियों की बुरी सनफ़ का सरदार है * उस ने यिह इरादः भी किया था कि हैकल को नापाक करे उसे हमने पकड़ा और चाहा कि अपनी शरीअत के मुवाफ़िक़ इनसाफ़ करें *
७ लेकिन लसयास लशकर के सरदार ने आकर बड़े जब्र से
८ उसको हमारे हाथ से छीन लिया * और उस के तुहमत करनेवालों को अमर किया कि तुझ पास आवें कि तू खुद उसे जांच के उन सब बातों को जिनकी हम उसपर तुहमत
९ करते हैं दरयाफ़्त कर सकता है * और यहूदियों ने भी
१० मुवाफ़िक़ होके कहा कि ये बातें यूं ही हैं * फिर जब हाकिम ने पूलूस को इशारः किया कि जवाब देवे वुह बोला अज़ बसकि मैं जानता हूं कि तू बहुत बरसों से उस क़ौम

का क़ाज़ी है सो ख़ियाद्ः तर दिल जमई से अपना जवाब
११ देता हूं * कि तू दरयाफ़ कर सकता है कि बारह दिन से
ज़ियादः नहीं हूए जिसे कि मैं इबादत के लिये औरशलीम में
१२ गया था * और उन्हों ने मुझे किसी के साथ बहस करते
या लोगों को भड़काते न पाया न तो मजमअ में न शहर में *
१३ और न वे उन चीज़ों को जिनकी वे मुझ पर तुहमत करते
१४ हैं साबित कर सकते हैं * लेकिन मैं तुझ पास यिह
इक़रार करता हूं कि उस तरीक़ के मुवाफ़िक़ जिसे वे बिदअत
कहते हैं मैं अपने आबा की परस्तिश करता हूं सब चीज़ों
को जो शरीअत और अम्बिया में लिखी हैं यक़ीन जानता हूं *
१५ और ख़ुदा से यिह उम्मेद रखता हूं कि मुरदों का हश्र
होगा क्या आदिल और क्या ज़ालिम उसे वे आप भी
१६ मानते हैं * और मैं इसी रियाज़त में रहता हूं कि ख़ुदा और
१७ ख़ल्क़ के आगे कभू मेरा न नफ़्स मुझे मलामत न करे * अब
बहुत बरसों के बअद मैं आया कि अपनी गरोह के लिये
१८ सदक़ात और हदये लाऊं * इस में आसया के बअज़े
यहूदियों ने मुझ को तहारत किये हूए हैकल में पाया मैं
१९ कुछ फ़ितनः ओ फ़साद में शरीक न था * उन्हें ज़रूर
हूआ कि तेरे आगे हाज़िर हों और अगर उनका मुझ
२० पर कुछ दावा होवे ख़ुसूमत करें * या ये ही जो हैं
कहें अगर उन्हों ने जिस वक़्त मैं महफ़िल के आगे खड़ा

२१ हुआ मुह् में कुछ बरकारी पाई * मगर यिह् एक आवाज़ के लिये है कि मैं उन में खड़े हूऐ चिल्लाया कि ह़शर होने के बाइस से आज तुम मुह् से मुत़ालबः करते हो *
२२ फ़ीलकास ने जो त़रीक़ से ख़ूब मुत्तिलअ़ था ये चीज़ें सुनके उन्हें दफ़अ़ किया और कहा कि जब लूसयास लश्कर का सरदार आयेगा मैं तुम्हारा ह़ाल बिल्कुल दरयाफ़्त करूंगा *
२३ फिर उसने एक जमअ़दार को हुक्म किया कि पूलूस को निगाह् में रख और उसे चैन करने दे और उसके जान पह्चानों को उस की ख़िद्मत करने से और उस पास
२४ आने से मनअ़ मत कर * और कितने दिनों के बअ़द फ़ीलकास अपनी जोरू दरूसल्लः के साथ जो यहूदियः थी आया और पूलूस को बुला के मसीह् के दिन की उस से
२५ सुनी * और जब वुह् रास्तबाज़ी और परहेज़गारी और अ़दालति आयँदः का बयान कर रहा था फ़ीलकास कांप गया और जवाब दिया कि बिलफ़िअ़ल तू चला जा मैं अच्छा वक़्त
२६ पाके फिर तुझे बुला भेजूंगा * उसे यिह् उम्मेद भी थी कि पूलूस से कुछ नक़्दी पावे ता कि उसे छोड़ दे चुनांचिः वुह् उसे अक्सर बुलाया किया और गुफ़्तगू करता रहा *
२७ और दो साल के बअ़द बरकयूस फ़स्तूस फ़ीलकास के क़ाइम मक़ाम होके आया और फ़ीलकास ने यिह् चाह्कर कि यहूदियों को अपना ममनून करे पूलूस को मुक़ैयद छोड़ा *

पचीसवां बाब

१ और फ़सतुस उस सूबे में दाख़िल होके तीन दिन बअद
२ क़ैसरियः से औरशलीम को गया * तब सरदारि काहिन और
उमरय यहूद ने उस पास पूलूस की फ़रयाद की और उस
३ की मिन्नत की * और उस से इतनी मिहरबानी के तालिब
हूए कि वुह उसे औरशलीम में बुला ले और घात में थे
४ कि उसे राह में मार लें * तब फ़सतुस ने जवाब में कहा
कि पूलूस क़ैसरियः ही में रहे और मैं ख़ुद आज़िम हूं
५ कि जल्द वहां जाऊं * और वे जो तुम में से मेरे साथ
सफ़र करसकें चलें और अगर उस में कुछ बदी है उसकी
६ नालिश करें * सो उनके दरमियान दसदिन से ऊपर रहके
क़ैसरियः को गया और पहुंच के दूसरे दिन मसनदि अदालत
७ पर बैठकर हुक्म किया कि पूलूस को ले आवें * जब वुह
हाज़िर हूआ यहूदियों ने जो औरशलीम से आये थे उसके
पास खड़े होके पूलूस पर बहुत बुरी तुहमतें कियां वे साबित
८ न कर सके * तब वुह अपनी बेगुनाही ज़ाहिर करने को
यही कहता गया कि मैं ने कोई काम न तो यहूदियों के
बरख़िलाफ़ शरीअत किया और न हैकल के और न क़ैसर के
९ बरख़िलाफ़ * तब फ़सतुस ने यहूदियों पर मिन्नत रखने को
पूलूस से कहा आया तू राज़ी है कि औरशलीम को जावे
और वहां मेरे हुज़ूर उन तुहमतों की तहक़ीक़ात की जाय *

१० पूलुस ने कहा कि मैं मह्कमे क़ैसरी में हाज़िर हूं चाहिये कि मेरा इनसाफ़ यहां किया जाय यहूदियों का मैं ने कोई
११ गुनाह नहीं किया चुनांचिः तू बिहतर जानता है * इसलिये कि अगर मैं मुजरिमः हूं या मैं ने ऐसा कोई काम जिस से मेरा क़तल वाजिब हो किया है मैं क़तल का मानिअ नहीं होता और अगर उन तुह्मतों में से जो ये मुझ पर करते हैं कुछ नहीं कोई मुझको उनके हवालः नहीं कर सकता मैं
१२ क़ैसर की दुहाई देता हूं * तब फ़सतूस ने मह्फ़िल से रद बदल करके जवाब दिया कि तू क़ैसर की दुहाई देता है
१३ तू क़ैसर ही पास भेजा जावेगा * और कितने दिनों के बअद अग्रपा सुलतान और बरनीक़ी क़ैसरियः में पहुंचे
१४ कि फ़सतूस से सलाम अलैका करें * और जब वे वहां कई दिन रहे फ़सतूस ने पूलूस का हाल सुलतान से कहा कि यहां एक शख़्स है जिसे फ़ीलकस क़ैद में छोड़ गया *
१५ जब मैं औरशलीम में था सरदारि काहिनों और यहूदियों के पेशवाओं ने उसकी बाबत ख़बर देके चाहा कि उस की
१६ तक़्सीर होवे * उन्हें मैं ने जवाब दिया कि रूमियों का यिह दस्तूर नहीं कि मुद्दा अलैह जब तक कि अपने मुद्दईओं के रूबरू नहोवे और दअवी के जवाब में उज़्र
१७ नकरनेपावे उसे जल्लाद के हवालः करें * सो जब वे यहां इकट्ठे आये मैं ने दूसरे दिन पर मौक़ूफ़ न रखा बल्कि

सुबह ही को मैं ने मसनदि अदालत पर बैठ के हुक्म किया
१८ कि उस शख़्स को हाज़िर करें * पर उस के मुद्दईओं ने हाज़िर
होकर उन तुहमतों में से जो मैं गुमान करता था कोई बात
१९ बयान न की * मगर वे अपने दीन की और किसी ईसा की
बाबत जो मरगया जिसे पूलुस कहता है जीता है कुछ
२० इअतिराज़ें उस पर करते थे * और अज़्बस कि मैं उस
तौर की इअतिराज़ों से शक में पड़ा मैं ने पूछा कि अगर
तू चाहे तो औरशलीम में जा और वहां उन बातों का
२१ इनसाफ़ किया जाय * लेकिन जब पूलूस ने इल्तिमासः किया
कि मेरा इनसाफ़ जनाबि आली की अदालत पर मौक़ूफ़
रखा जाय मैं ने हुक्म किया कि उसे रखें जब तक उसे
२२ क़ैसर के पास भेजूं * तब अग़रपा ने फ़सतूस को कहा मैं भी
चाहता हूं कि उसकी ज़बान से सुनू वुह बोला कि कल
२३ सुनेगा * और सुबह को जब अग़रपा और बरनीकी बड़ी
शान शौकत से अमीरानि लशकर औ उमदगानि शहर के
साथ दीवानि समाअत में दाख़िल हूए फ़सतूस के हुक्म से
२४ पूलूस हाज़िर किया गया * तब फ़सतूस ने कहा कि ऐ
बादशाह अग़रपा और ऐ हाज़रानि मजलिस तुम इस मर्द
को देखते हो जिसके सबब यहूदियों की तमाम गरोह
औरशलीम से लेके यहां तक मेरे पीछे पड़ी है और यहां
२५ भी चिल्लाते हैं वाजिब है कि उसे जीता नछोड़ो * लेकिन जब

मैं ने दरयाफ़ किया कि उस ने कोई काम जिस से वुह वाजिबुल क़तल होवे नहीं किया और वुह ख़ुद जनाबि आली से इस्तिग़ासः करता है मैं ने अज़्म किया है कि उसे
२६ भेज दूं * मुझे उसके हक़ में किसी बात का यक़ीन नहीं जो मैं अपने ख़ुदावंद को लिखूं लिहाज़ा मैं ने उसे तुम्हारे आगे और ख़ुसूसन ऐ बादशाह अग़रपा तेरे आगे हाज़िर किया है
२७ ता कि बअद तहक़ीक़ के मैं कुछ लिख सकूं * क्यूंकि मुझे बेवजअ मअलूम होता है कि एक बंधुवे को भेजिये और
२८ तुहमतों को जो उस पर हैं वाज़िह न कीजिये *

छबीसवां बाब

१ तब अग़रपा ने पूलूस को कहा कि तुझे परवानगी है अपना उज़्र बयान कर पूलूस ने हाथ लंबा करके अपना उज़्रियः
२ जवाब दिया * कि ऐ बादशाह अग़रपा मैं जो आज के दिन तेरे आगे उन सब तुहमतों में जो यहूदी मुझ पर करते हैं अपना उज़्र बयान करूं यिह मेरी दानिस्त में
३ मेरी सआदत है * इसलिये कि तू यहूदियों के सारे दस्तूरों और मसलों से ख़ूब वाक़िफ़ है लिहाज़ा मैं तेरी मिन्नत करके
४ चाहता हूं कि तू तअम्मुल से मेरी सुने * आग़ाज़ि जवानी से जैसी कुछ कि मेरी ख़सलतें थीं सब यहूदी जानते हैं *
५ इसलिये कि इबतिदा से मेरी बूद बाश औरशलीम में अपने क़ौम के दरमियान थी अगर वे गवाही दिया चाहें तो मेरा

अव्वलाल अह्ल से जानते हैं कि मैं उनके दीनके बड़े मुहतात फ़िर्क़े के मुवाफ़िक़औक़ात गुज़ारी करता था यअ्ने ऐक फ़रीसी
६ था * और अब मैं उस वअ्दे की उम्मैद में जो ख़ुदा ने हमारे बापदादों से किया दारुलअदालत में हाज़िर किया
७ गया हूं * और हमारे बारह फ़िरक़े शब ओ रोज़ बड़े शौक़ से इबादत गुज़ारी में उम्मेदवार हैं कि उस वअ्द: तक पहुंचें ऐ बादशाह अग्रपा इसही उम्मेद के सबब से यहूदियों
८ ने मुझ पर तुहमत की है * यिह क्या तुम पास इअ्तिमाद
९ के क़ाबिल नहीं कि ख़ुदा मुरदों को जिलाये * बहर हाल मैं ख़ियाल करता था कि मुझ पर वाजिब है कि ईसा नासरी
१० के नाम के बर ख़िलाफ़ बहुत से काम करूं * सो यही मैं ने औरशलम में किया और सरदार काहिनों से इख़्तियार पाकर बहुत से मुक़द्देसों को ज़िंदान में बंद किया और जब वे क़तल किये जाते थे मैं उन के क़तल की तजवीज़ करता
११ था * और मैं ने अकसर हरऐक मजमअ में उन्हें ईज़ा देकर ज़बरदस्ती कुफ़र कहवाया बल्कि मैं अज़ बस कि उनकी अदावत में निहायत जोश ख़रोश पर था उन शहरों
१२ में भी जो यहूदियः से ख़ारिज थे जाके सताता था * इस वज़्अ से जब मैं सरदार काहिनों से इक़्तिदार और इजाज़त
१३ पाकर दमिश्क़ को चला जाता था * दिन को दोपहर के वक़्त ऐ बादशाह मैं ने राह में ऐक नूरि आसमानी आफ़ताब से

रौशनतर देखा कि मेरे और मेरे हमसफ़रों के गिर्द चमका *
१४ और जब हमसब ज़मीन पर गिर पड़े मैं ने किसी की
आवाज़ सुन कि इबरानी लुग़त में मुझे यों कहा कि ऐ
साऊल साऊल तू मुझे क्यूं सताता है मुशकिल है कि तू
१५ कोंचः खाके लात फेंके * तब मैं ने कहा ऐ ख़ुदावंद तू कौन
१६ है वुह बोला कि मैं ईसा हूं जिसे तू सताता है * अब
उठ और अपने पांओं पर खड़ा हो कि मैं ने अपने तईं
इसलिये तुझे देखाया है कि तुझे उन चीज़ों का जो तूने
देखी हैं और उन चीज़ों का जो मैं तुझ को दिखाऊंगा ख़ादिम
१७ और शाहिद बनाऊं * तुझे उस उम्मत से और अवाम से
रिहाई दूंगा और उन पास अब मैं तुझे भेज देता हूं *
१८ ता कि उन की आंखों को खोलूं और अंधेरे से उजाले की
तरफ़ और शैतान के तसल्लुत से ख़ुदा की सिम्त को फेरूं
ता कि वे गुनाहों से पाक हों और उन के दरमियान जो मेरे
१९ मुअतक़िद होके मुक़द्दस होऐं मीरास पावें * सो ऐ बादशाह
अग़रपा मैं आसमानी ख़ियाल का नाफ़रमां बरदार
२० न हूआ * बल्कि पहले उन को जो दमिश्क़ में और
औरशलीम में और तमाम नवाही यहूदियः में हैं कहा और
बअद उन के उम्मतों को कहा कि तौबः करो और ख़ुदा की तरफ़
२१ फेरो और वे काम जो तौबः के लाइक़ हैं करो * उन
चीज़ों के सबब से यहूदी हैकल में मुझे पकड़ के साई हूऐ

२२ कि क्रतल करें * सो खुदा की हिमायत पाकर मैं आज
के दिन तक छोटे और बड़े के आगे गवाही देता रहा और
उन चीज़ों के सिवा जिनके होने की ख़बर नबियों ने और
२३ मूसा ने दी कुछ नकहता था * कि मसीह दुख उठानेवाला
होगा और मुरदों में से पहले जी उठके उम्मत और अवाम
२४ के आगे नूर को जलवःगर करेगा * और जब उसने यों
अपना उज़्र बयान किया फ़सतस ने बलंद आवाज़ से कहा
कि ऐ पूलूस तू आप में नहीं है इल्म की कसरत ने तुझे
२५ आख़िर को बावला कर दिया * तब उसने कहा कि ऐ
अमीरि अज़ीम फ़सतस मैं बावला नहीं बल्कि सिद्क़ ओ
२६ होशयारी की बातें मुंह से निकालता हूं * कि उनबातों
को बादशाह जानता है और मैं उस के हुज़ूर साफ़ बेपरवा
कहता हूं क्यूंकि मुझ पर यक़ीन है कि उन में से कोई
चीज़ उस पर मख़फ़ी नहीं इसवास्ते कि यिह माजरा तो
२७ गोशे में नहीं वाक़िअ हूआ * ऐ बादशाह अगरपा आया
तू नबियों का मुअतक़िद है मैं जानता हूं कि तू मुअतक़िद
२८ है * तब अगरपा ने पूलूस को कहा नज़दीक है कि तेरी
२९ तरग़ीब मुझे मसीही बनाडाले * पूलूस बोला मं तो ख़ुदा से
चाहता हूं कि तूही फ़क़त नहीं बल्कि सबके सब जो आजके
दिन मेरी सुनते हैं नज़दीक क्या पूरे ऐसही होते जैसा
३० मैं हूं पर बिग़ैर उन ज़ंजीरों के * और जब उसने यूं कहा

बादशाह और हाकिम और बरनीकी उन के हमनशीनों
३१ ने बरख़ास्त की * और जब वे ऐक तरफ़ गये आपस में
कहने लगे कि यिह मर्द ते। ऐसा कुछ नहीं करता जो
३२ क़तल या हबस का मूजिब होवे * तब अगरपा ने फ़सतूस
से कहा अगर यिह शख़्स क़ैसर से दादख़्वाह नहोता तो
मुमकिन था कि क़ैद से छूट जाय *

सताईसवां बाब

१ और जब यिह अज़्म किया गया कि हम तरी से ऐतलियः
को जावें उन्हों ने पूलूस को बअज़े और क़ैदियों के साथ
यूलयूस नाम जमअदार को जो अगसतूसी फ़ौज में था हवालः
२ किया * और हम ने अरमतीनी किश्ती पर बैठके उस
इरादे से कि क़ुदूद असया से होकर जायें किश्ती खोली
और अरसतरख़स मक़दूनी तसलनीक़ी हमारे साथ था *
३ दूसरे दिन हम सैदा में पहुंचे और यूलियूस ने पूलूस से
ख़ुश सलूकी करके उसे रिहाई दी कि अपने दोस्तों में जाके
४ चैन करे * हम वहां से रवानः होके क़बरस के नीचे पहुंचे
५ हवा मुख़ालिफ़ थी * और जब हम दरयाय क़लकियः और
६ पामफ़ूलियः के पार गये तो लूक़ीयः के मरा में आये * वहां
उस जमअदार ने ऐक किश्ती इस्कंदरानी ऐतलियः को जाते
७ हुऐ पाके हमको उसपर चढ़ाया * और जब हम बहुत
दिनों तक आहिस्तः चलेगये और दुशवारी से कंदस के पार

आये कि हवा ने हम से मुवाफ़क़त नकी तो हम क़रीती को
८ सलमूनी के मुक़ाबिल चले * और बदुश्वारी उस से गुज़र करके
ऐक मक़ाम में जिसका नाम हुस्न बंदर है आये शहरि
९ लासिया वहां से नज़्दीक था * और जब वक़्त बहुत गुज़रा
और चले जाने में ख़ौफ़ था क्यूंकि रोज़ः के ऐयाम गुज़रे
१० थे पूलूस ने आगाह किया * और उन्हें कहा यारो मैं
देखता हूं कि इस सफ़र में अज़ीयत होगी और बहुत
नुक़सान न सिर्फ़ असबाब का और किश्ती का बल्कि हमारी
११ जानों का भी * लेकिन जमअ़दार को पूलूस की बातों की
निसबत से सुक्कानी और ना ख़ुदा का ज़ियादः इअ़्तिक़ाद
१२ था * और इसलिये कि वुह बंदर इसलाइक़ नथा कि वहां
जाड़ा काटा जावे बहुतों ने सलाह दी कि वहां से भी चल निकलें
ता कि किसी तरह से फ़ीनेकी तक पहुंच के जाड़ा काटें कि
वुह क़रीती का घाट था नैरत और वाइब की सिम्त को *
१३ और जब जनूबी हवा चली उन्हों ने यक़ीन करके कि कामयाब
हुऐ किश्ती खोली और क़रीती के नज़्दीक हो के रवानः हुऐ *
१४ लेकिन ऐक थोड़ी मुद्दत के बअ़्द तूफ़ानी हवा ने जिसका
१५ नाम ऐरानी है किश्ती को उड़ाया * और जब किश्ती रोकी गई
१६ और हवा से ठहर नसकी * हम ने छोड़ दी कि चली जाय
और ऐक जज़ीरे के तले बह जाके जिसका नाम क़्लौदी
है हम बड़ी दुश्वारी से छोटी किश्ती को क़ाबू में लाये *

१७ सो जब उन्हों ने थामा तब तदबीरें करके किश्ती को बांधा और उस डर से कि मबादा हम रेते में फस जायें बादबानों को
१८ गिरादिया और उस तरह चले जाते थे * और जब हम आंधी से निपट सताये गये तो दूसरे दिन उन्हों ने किश्ती को
१९ हलका किया * और तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से
२० किश्ती का असबाब फेंक दिया * और जब बहुत दिनों तक न आफ़ताब दिखाई दिया और न सितारे और हवा क़ए न चली
२१ आख़िर रिहाई की उम्मेद हमसे बिल्कुल जाती रही * और बहुत से फ़ाक़ों के बअ़द पूलूस उनके दरमियान खड़ा होके बोला कि मर्दी तुमको लाज़िम था कि मेरी सुनते और क़रीती से न चलते ता कि
२२ ईज़ा और नुक़सान न उठाते * और अब मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूं ख़ातिर जमअ़ रखो तुम्हारे दरमियान किसीकी जान का
२३ नुक़सान नहोगा मगर किश्ती का * क्यूंकि जिस ख़ुदा का मैं हूं और जिसकी बंदगी करता हूं उसके फ़िरिश्ते ने रात को
२४ मुझ पास आके * यों कहा कि ऐ पूलूस मत डर वाजिब है कि तू क़ैसर के आगे हाज़िर होवे और देख कि ख़ुदा
२५ ने ये सब जो तेरे हमसफ़ीनः हैं तुझको बख़्शे * लिहाज़ा मर्दों ख़ातिर जमअ़ रखो क्यूंकि मैं ख़ुदा पर इअ़तिक़ाद रखता
२६ हूं कि जैसा मुझ को कहा किया ऐसा ही होगा * लेकिन
२७ ख़्वाह नख़्वाह हम किसी जज़ीरे में जा पड़ेंगे * सो जब चौदहवीं रात आई और हम हदरया के तलातुम में आधी

रात के क़रीब मल्लाहों ने अटकल से जाना कि किसी मुल्क
२८ के नज़्दीक पहुंचे * तब पानी की थाह ली और बीस बाग़
पाया और थोड़ा आगे जाकर फिर थाह ली तो पंद्रह बाग़
२९ पाया * तब उस डर से कि मबादा पत्थरों पर जाती रहे
उन्हों ने किश्ती की पतवार से चार लंगर डाले और सुबह के
३० मुन्तज़िर रहे * और जब किश्ती बानों ने चाहा कि किश्ती
पर से भाग जायें और छोटी किश्ती इस बहाने से उतारी कि
३१ गलही से लंगर डालें * पूलुस ने जमअदार और सिपाहियों
को कहा कि अगर ये किश्ती पर न रहें तो तुम बच नहीं
३२ सकते * तब सिपाहियों ने छोटी किश्ती की रस्सियां काटीं और
३३ उसे बहा दिया * और जब दिन चढ़ने लगा पूलुस ने
सब से इल्तिमास किया कि खाना खाओ और कहा कि तुम
चौदह दिन से तकते हो और फ़ाक़ः करते रहे और कुछ
३४ नहीं खाया * अब मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूं कुछ खालो
कि इस में तुम्हारी सलामती है क्योंकि तुम से किसी के
३५ सिर का एक बाल न गिरेगा * उसने यूं कहके रोटी ली
और उन सबके साम्हने ख़ुदा का शुक्र किया और तोड़के
३६ खाने लगा * तब उनसब की ख़ातिर जमअ हुई भी खाने
३७ लगे * और हम तमाम आदमी उस किश्ती पर दोसौ
३८ छहत्तर थे * और जब वुह रजके खाचुके तो उन्हों ने गेहूं
३९ दरया में डाल के किश्ती को हलका किया * जिसवक़्त

सुबह हुई उन्हों ने उस ज़मीन को न पहचाना लेकिन एक खोल देखी जिसके किनारे पर रेता था उस पर उन्हों ने इरादः किया कि अगर होसके तो किश्ती को धकाया के लेजावें * ४० तब उन्हों ने लंगर काट के दरया में छोड़े और वोंहीं पतवार की रस्सी खोलीं और हवा के रुख़ पर पाल चढ़ा के किनारे की तरफ़ गये * ४१ और एक जगह जहां दो दरया मिले थे पहुंच के किश्ती को ज़मीन पर दौड़ा दिया तब गलही धंस्के फिरगई और मौजों के ज़ोर से पतवार की धज्जियां उड़ गईं * ४२ तब सिपाहियों का मश्वरः यों था कि बंधुओं को मार डालें ता नहोवे कि उन में से कोई पैर निकले और चल दे * ४३ लेकिन जमअदार ने उस इरादे से कि पौलूस को बचावे उनके तईं मतलब से बाज़ रखा और हुक्म किया कि वे जो पैर सकते हैं पहले कूद के ज़मीन पर जायें * ४४ और बाक़ी के बअज़े तख़्तों पर और बअज़े किश्ती के टुकड़ों पर और यूंही हुआ कि वे सबके सब ज़मीन पर सलामत पहुंचे *

अठ्ठाईसवां बाब

१ और मख़लसी के बअद उन्हों ने दरयाफ़्त किया कि उस जज़ीरः का नाम मलता था * २ और वहां के वहशी लोगों ने हम पर निहायत मिहरबानी की क्यूंकि उन्हों ने आग सुलगा के उस सबब से कि मिंह की झड़ी और जाड़ा था हम को

३ पास बुलाया * और जब पूलूस ने लकड़ियां जमअ़ करके आग पर रखीं ऐक सांप गरमी पाकर निकला और उसके हाथ
४ पर लपटा * तब उन जंगली लोगों ने उस हैवान को उस के हाथ पर लटकते देखकर आपस में कहा कि बेशक यिह मर्द कोई ख़ूनी है जिसे दावजूद उसके कि दरया से ख़लास
५ हूआ है ववाल जीने नहीं देता * और उसने उस हैवान
६ को आग में झटक दिया और कुछ ज़रर न पाया * पर वे देखते रहे कि वुह सूज जायगा या नागाह गिरके मर जायगा लेकिन जब उन्हों ने देरतक इनतिज़ार करके देखा कि उसे कुछ ज़रर न हूआ तब कुछ और ख़ियाल किया और
७ बोले कि यिह ऐक ख़ुदा है * उस नवाही में उस जज़ीरे के ठाकुर की अमलाक थी उसका नाम पबलयूस था उसने हमें घर लेजाके लुत्फ़ से तीनदिन तक हमारी ज़ियाफ़त
८ की * और यूं हूआ कि पबलयूस का बाप तपसे और इस्तसार से रंजूर पड़ा था पूलूस ने उस पास जाके दुआ की
९ और अपने हाथ उस पर रखके उसे चंगा किया * चुनांचिः जब यिह हूआ तो औरभी जो उस जज़ीरे में रंजूर थे आये
१० और चंगे हूऐ * उन्हों ने भी हमको बहुत इ़ज़्ज़त बख़्शी और जब हम रवानः होने लगे सफ़र के असबाब से हमको
११ बे नियाज़ किया * तीन महीने के बअ़द हम ऐक जहाज़ि इस्कंदरनी पर बैठके जो जाड़े भर जज़ीरे में था रवानः हूऐ

उस जहाज़ की अलामत की जगह दो देव बचे बने हूए थे॰
१३ और सीराकूसी में लगाके तीन दिन रहे (१३) फिर वहां से चक्कर खाके रीज़ूम में आये और एक रोज़ के बअद जनूबा हवा चली तो हम दूसरे दिन पतयूली में पहुंचे॰
१४ वहां हमने भाइओं को पाया उनकी इलतिमास से सातदिन
१५ वहां रहे और होते होते रूम में आये ॰ वहां से भाइओं ने हमारा सुना तो सूक़ अपयूस और तीन सरातक हमारे इस्तिक़बाल को आये पूलूस ने उन्हें देखके ख़ुदा का शुक्र
१६ किया और जान पाई ॰ और जब हम रूम में आये जमअदार ने बंधोओं को ख़ास रिसाले के सरदार के हवालः किया लेकिन पूलूस को परवानगी थी कि अकेला उस पियादे के साथ जो
१७ उसका निगहबान था रहे ॰ और यूं हूआ कि तीन दिनके बअद पूलूस ने मुअतबर यहूदियों को बाहम बुलाया जब वे इकठ्ठे आये उन्हें कहा ऐ भाइओ मैं ने कोई काम उम्मतके और अपने दस्तूर आबा के बरख़िलाफ़ नहीं किया लेकिन मैं उस पर होके औरशलीम से रूमियों के हाथ में सौंपा गया ॰
१८ उन्हों ने मेरा हाल दरयाफ़्त करके चाहा कि छोड़ दें क्यूंकि
१९ कोई बात नथी जिस से मैं वाजिबुलक़तल होऊं ॰ पर जब यहूदियों ने मुख़ालफ़त की बातें कहीं मैं ने लाचारी से चाहा कि क़ैसर के आगे फ़रयाद करूं न यिह कि मैं अपनी उम्मत
२० पर किसी चीज़ की तुहमत करूं ॰ सु इसीसबब से मैं ने

तुम्हें बुलाया कि देखूं और गुफ़्तगू करूं क्यूंकि इसराईलीयों
२१ उम्मेद के लिये मैं इस ज़ंजीर से बंधा हूं * उन्हों ने उसे कहा
कि हम ने तेरे हक़ में यहूदियः के सुतूतः नहीं पाये और
न किसी ने भाइओं में से आके कुछ ख़बर दी या तेरी कुछ
२२ बदी बयान की * लेकिन हम ममनून होंगे अगर तू हमें
कह सुनावे कि तेरा मज़नः क्या है क्यूंकि हमको मअलूम
है कि हरऐक जगह उस फ़रक़े की बदगोई की जाती
२३ है * और वे उसके साथ ऐक दिन मुक़र्रर करके उसके
मकान में कसरत से आये उनके आगे वुह बयान करके क्या
मूसा की शरीअत के रू से क्या अम्बिया के रू से सुबह शाम तक
ख़ुदा की ममलुकत पर गवाही देता और ईसा के दीन पर
२४ दलीलें लाता रहा * तब बअज़ों ने उन बातों को जो कही
२५ जाती थीं बावर किया और बअज़ों ने न किया * जब वे बाहम
मुत्तफ़क़ न ठहरे पेशतर उस से कि वे चले जाऐं पूलूस ने उन्हें
यिह सुख़न कहा कि रूहि क़ुदस ने हमारे आबा को
२६ अशइया नबी की मअरिफ़त से ख़ूब कहा * कि गरोह के
पास जा और कह तुम कानों से सुनोगे और न समझोगे
२७ आंखों से देखोगे और दरयाफ़्त न करोगे * क्यूंकि उस गरोह
का दिल सख़्त हूआ और उनके कान सुन्ने में भारी हैं *
२८ और उन्हों ने अपनी आंखें मोच ली हैं ता नहोवे कि वे
आंखों से देखें और कानों से सुनें और दिल में समझें

२९ और रुजूअ़ होवे और मैं उन्हें शिफ़ा बख़शूं * पस यिह
तुमको मअ़लूम होवे कि ख़ुदा की मग़फ़िरत अ़वाम को भेजीगई
३० है और वे उसे सुन लेंगे * जब वुह ये बातें कह चुका
यहूदी आपस में बड़ा मुबाहसः करते हूए चले गये और
और पूलूस कामिल दो बरस किराये के घर में रहा और
३१ उन सब को जो उस पास आये क़बूल करके * कमाल
बे परवाई से ख़ुदा की ममलुकत की मुनादी करता रहा और
ख़ुदावंद ईसा मसीह की राह की तअ़लीम दिया किया और
कोई उसका मानिअ़ न हूआ *

पूलूस का मकतूब रूमियों को

पहला बाब

१ ईसा मसीह का बंदः पूलूस जो बरगुज़ीदः हवारी और अलग
२ किया गया है * कि ख़ुदा के उस मुज़्दे का इश्तिहार दे
जो उसने अपने नबियों की मअ़रिफ़त मुक़द्दस किताबों में *
३ अपने बेटे की बाबत दिया यअ़ने उस शख़्स की बाबत जो
४ जिसम की जिहत से दाऊद के तुख़्म से हूआ * पर रूहि
क़ुद्स की निसबत जैसा कि उसके जी उठने की दलीलि क़वी
से साबित हूआ ख़ुदा का बेटा है यअ़ने हमारे ख़ुदावंद ईसा
५ मसीह * जिसके हाथ से हमने निअ़मत और रिसालत पाई
ता कि सारी गरोहें उस के नाम पर ईमान लाके इताअ़त करें *
६ कि तुम भी उन्हीं में शामिल होके ईसा मसीह के बरगुज़ीदः
७ हो * उन सब रूमियों को जो ख़ुदा के महबूब और

बरगुज़ीदगानि मतलूब हैं लिखता है हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से निअ़मत और आराम
८ तुम्हारे लिये हो * पहले मैं अपने ख़ुदा का ईसा मसीह की मअ़रिफ़त से तुम सब के लिये शुक्र करता हूं कि तुम्हारी
९ ईमानदारी सारी दुनया में मशहूर है * ख़ुदा जिसकी इबादत में अपनी रूह से उसके बेटे की इंजील में करता हूं वही मेरा गवाह है कि मैं क्यूंकर तुम्हारा ज़िक्र नित करता
१० हूं * और हमेशः अपनी दुआओं में दरख़्वास्त करता हूं कि अगर अब ख़ुदा की मरज़ी से मेरा सफ़र बख़ैर हो तो
११ तुम्हारे पास आऊं * क्यूंकि मैं तुम्हारी मुलाक़ात का निपट मुश्ताक़ हूं कि ता कि कोई रूहानी इनआम तुमको पहुंचा दूं कि
१२ तुम मज़बूत होजाओ * यअ़ने कि मैं तुम में शामिल होके बसबब उस ईमान के जो तुम में और मुझ में है आपस
१३ में तसल्ली पाऊं * ऐ भाइओ मैं चाहता हूं कि तुम इस से नावाक़िफ़ न रहो कि मैं ने तुम्हारे पास आने का क़सद बारहा किया ता कि मैं ने जैसा दूसरी क़ौमों से हासिल पाया वैसाही कुछ तुम से भी पाऊं पर आज तक रुका रहा *
१४ कि मैं यूनानियों और वर्वरियों और हकीमों और जाहिलों
१५ का क़रज़दार हूं * सो मैं तुम को भी जो रूम में हो ता
१६ मक़दूर इंजील की ख़बर देने पर तैयार हूं * क्यूंकि मैं मसीह की इंजील की बाबत शरमाता नहीं कि उसके वसीलः

ख़ुदा क़ादिर है कि हरएक को जो ईमान लाता है नजात
१७ बख़्शे पहले यहूदी को और फिर यूनानी को * क्यूंकि इस में
इलाही रास्तबाज़ी ज़ाहिर होती है जो सरासर ईमान से है
चुनांचिः लिखा है वुह जो ईमान से रास्तबाज़ है सोही जीता
१८ रहेगा * ख़ुदा का ग़ुस्सः आदमियों की सारी बेदीनी और ना
रास्ती पर आसमान से आशकारा हूआ कि वे सच्चाई को
१९ नारास्ती से क़ैद करते हैं * क्यूंकि ख़ुदा का हाल जो कुछ
कि मअलूम होसकता है उन पर ज़ाहिर है कि ख़ुदा ने
२० उनपर उसको ज़ाहिर किया है * कि उस की सिफ़तें जो
आफ़िरीनिशि आलम से ना दीदनी हैं और उसकी क़ुदरति
बे पायान और ख़ुदाई जब ख़िलक़त पर बग़ौर नज़र कीजिये
२१ तो देखी जाती हैं पस उन पास कुछ उज़र नहीं * क्यूंकि
उन्हों ने बावजूदे कि ख़ुदा को पहचाना उसकी तक़दीस उस
की ख़ुदाई के लाइक़ नकी और न शुक्र गुज़ारी की पर
अपने ख़ियालों से गुमराह होगये और उनके दिल नाफ़हमी
२२ से तारीक हूऐ * वे अपने तईं हकीम ठहराके अहमक़
२३ होगये * और उन्हों ने ख़ुदाय ग़ैर फ़ानी के जलाल को आदमि फ़ानी
की और परिंदों और चारपायों और रेंगने वाली चीज़ों की
२४ शकल की शबीह से बदल किया * इसवास्ते ख़ुदा ने उन्हें
तर्क किया कि अपने दिलों की ख़्वाहिशों के मुताबिक़
नापाकी में रहें और आपस में अपनी बदियों को बेहुरमत

२५ करें * उन्हों ने हक़ीक़ति इलाही की जगह झूठ को क़ाइम किया और पैदा करने वाले को जो अबद्तक सिताइश के लाइक़ है छोड़ के बनाई हुई चीज़ की परस्तिश और बंदगी
२६ की * इसलिये ख़ुदा ने उन्हें ज़लील तमन्नाओं में गिरिफ़्तार रहने दिया कि उनकी रंडियों ने भी अपने तबई काम को उस से
२७ जो अस्ल का उलटा है बदल डाला * और इसी तरह उनके मर्द भी रंडियों से तबई इस्तैमाल को छोड़ कर बाहम अपनी शहवतों में सोख़्त होगये मर्द ने मर्द के साथ रूसियाही के काम किये और वुह मुकाफ़ात जो उनकी गुमराही के
२८ दरख़ुर थी अपने में पाई * और जैसा उन्हों ने पसंद न किया कि ख़ुदा को पहचान के याद रखें ख़ुदा ने भी उन्हें नापसंद फ़हमीद में छोड़ा कि वे नालाइक़ काम करें *
२९ और तमाम नारस्ती हरामकारी मुफ़सिदी लालच और बदी से फिर जायें और हसद और क़तल और झगड़े और दग़ाबाज़ी और बदख़्वाही से मअमूर होवें और सरगोशी करने वाले *
३० और ऐबजो ख़ुदा के दुश्मन ज़ालिम मग़रूर ख़ुदपरस्त
३१ बदियों के बानी मा बाप के नाफ़रमां बरदार * बे अक़्ल
३२ बदअ़हद बेदर्द बेउलफ़त बेरहम होवें * और वे बावजूदि कि ख़ुदा के हुक्म को जानते हैं कि ऐसे काम करने वाले वाजिबुल क़तल हैं फ़क़त आपही नहीं करते बल्कि करनेवालों से भी रज़ामंद हैं *

दूसरा बाब

१ पस ऐ शख़्स तू जो ऐब जोई करता है जवाब नहीं रखता इसलिये कि जिस बात में तू दूसरे को ऐब लगाता है अपने तईं इलज़ाम देता है इसवास्ते कि तू जो ऐब लगाता
२ है ख़ुद वही काम किया करता है * और हम यक़ीन जानते हैं कि ख़ुदा की तरफ़ से अलबत्तः ऐसे काम करने वालों पर
३ सज़ा का हुक्म होगा * पस ऐ इनसान तू जो ऐसे काम करने वालों को इलज़ाम देता है और ख़ुद उन्हीं फ़िअ़लों का करने वाला है तू क्या यिह गुमान करता है कि तू ख़ुदा के
४ अदल से भागकर बच रहेगा * तू उस की कमाल मिहर और मुहलत और सबर को हक़ीर जानता है और नहीं जानता कि ख़ुदाकी मिहर तो सिर्फ़ इतने लिये है कि तू
५ तौबः कर बैठे * और तू गर्दन कशी करके और दिलपर क़सावत रखके अपने लिये क़हरों को और क़हर के दिन और ख़ुदा के ज़हूरि अदालत के दिन नमूद होंगे अपने
६ लिये जमअ़ करता है * वुह हरएक को उसके कामों के
७ मुवाफ़िक़ मुकाफ़ात देवेगा * उन्हें जो नेकी की राह में पायदार होके मजद और इज़्ज़त और बक़ा के तालिब हैं
८ हयाति अबदी देगा * पर उनके लिये जो फ़सादी और रास्ती के मुख़ालिफ़ और नारास्ती के ताबिअ़ हैं ग़ुस्सः
९ और ग़ज़ब होगा * कि हर नफ़स बशर को जो बुरा करता

है सियासत और अज़ाब होगा पहले यहूदी को फिर यूनानी
१० को * और हर शख़्स को जो भला करता है बुज़ुर्गी और
इज़्ज़त और आराम मिलेगा पहले यहूदी को फिर यूनानी
११ को * इसलिये कि ख़ुदा कुछ ज़ाहिर हैं नहीं है कि
जिन्हों ने गुनाह किये हैं और अहलि शरअ़ नहीं हैं
१२ वे विग़ैर शरअ़ हलाक होंगे * और जिन्हों ने गुनाह
किये और अहलि शरअ़ हैं उनका इनसाफ़ शरअ़ ही के
१३ मुवाफ़िक़ किया जायगा * कि न शरअ़ के सुननेवाले ख़ुदा के
पास रास्तबाज़ हैं बल्कि शरअ़ पर अमल करने वाले रास्तबाज़
१४ ठहराये जायेंगे * क्यूंकि जब वुह गरोहें जिन को शरअ़ नहीं
मिली अपनी सिरिश्त से शरई अअ़माल करते हैं तू वे शरअ़
१५ नरख के आपही अपनी शरअ़ हैं * वे शरअ़ का काम अपने
दिलों में लिखा हूआ दिखलाते हैं कि उनकी सिरिश्त गवाही
देती है और उनके ख़ियालात बाहम दअ़वी करते हैं या
१६ उज़्र करते हैं * चुनांचिः जिसदिन ख़ुदा मेरे वअ़ज़ के मुवाफ़िक़
ईसा मसीह की मअ़रिफ़त से आदमियों के निहानी अमलों
१७ का इनसाफ़ करेगा ज़ाहिर होगा * देख तू यहूदी कहलाता
है और शरअ़ पर तकियः करता है और ख़ुदा पर फ़ख़र
१८ करता है * और उस की मरज़ी जानता है और शरअ़
की तअ़लीम पाकर मुख़तलिफ़ चीज़ों में इमतियाज़ कर
१९ जानता है * और अपने तईं यक़ीनन जानता है कि मैं

अंधों का रहनुमा और उनको जो तारीकी में हैं रोशनी
२० हूं * और जाहिलों का सिखलानेवाला और लड़कों का
मुअल्लिम हूं और दानाई और सच्चाई का नमूनः मेरे लिये
२१ शरअ में है * पस तू जो दूसरे को सिखलाता है अपने
तईं नहीं सिखलाता तू जो वअज़ कहता है कि चोरी नकरना
२२ आपही चोरी करता है * तू जो कहता है कि ज़िना
नकरना आपही ज़िना करता है तू जो बुतों से बेज़ार
२३ है आपही बुतखाने को ग़ारत करता है * तू जो शरअ
पर फ़ख्र करता है फिर तूही शरअ से अदूल करके ख़ुदा
२४ के नाम को बे हुरमत करता है * और जैसा लिखा है
ख़ुदा का नाम क़ौमों के बीच तुम्हारे सबब बदी से याद किया
२५ जाता है * ख़तनः फ़ायदःमंद है अगर तू शरअ पर
अमल किया करे पर अगर तू शरअ से अदूल करे तो तेरा
२६ ख़तनः नामख़तूनी है * पस अगर नामख़तून लोग शरअ के
क़ानूनों पर चलते हैं तो क्या उनकी नामख़तूनी ख़तनों में
२७ न की जायगी * और जो नामख़तून होवे और शरअ की
पैरवी तें सिरश्त से कामिल होगा वुह तुझे अगर तू
बावजूद अलफ़ाज़ि शरअ के और ख़तनः के शरअ से अदूल
२८ करे इलज़ाम नदेगा * जो ज़ाहिर में यहूदी हैं यहूदी
नहीं ज़ाहिरी ख़तनः जो जिसमानी है ख़तनः नहीं *
२९ बल्कि जो बातिन में यहूदी है यहूदी है और ख़तनः

वही है जो दिली और मअ़नवी न कि लफ़्ज़ी कि उसकी सिताइश न आदमियों से बल्कि ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ है *

तीसरा बाब

१ पस क्या यहूदी को कुछ फ़ज़ीलत और ख़तनः का कुछ
२ फ़ायदः नहीं * बहर हाल बहुत है ख़ुसूसन यिह कि वे कलामि
३ इलाही के अमानतदार हैं * अगर कई ऐक अमानतदार न निकले तो क्या हुआ क्या उनकी बेदियानती ख़ुदा के इअ़तिबार
४ को बातिल कर सकती है * ऐसा न होवे बल्कि ख़ुदा सच्चा और हरऐक आदमी झूठा रहे चुनांचिः लिखा है ता कि तू अपनी बातों में सादिक़ होवे और जब तेरी अ़दालत की जाय
५ तू ग़ालिब निकले * और अगर हमारी नारास्ती ख़ुदा की रास्तबाज़ी को नमूद करती है तो हम क्या कहें कि ख़ुदा ज़ालिम है जो सज़ा देता है मैं तो आदमियों की तरह
६ बोलता हूं * ऐसा नहीं नहीं तो ख़ुदा क्यूंकर जहान की
७ अ़दालत करेगा * क्यूंकि अगर मेरे झूठ के सबब ख़ुदा की रास्ती ज़ाहिर हुई और उस से उसका जलाल ज़ियादः हुआ फिर किस लिये मैं गुनाहगार की तरह महकमः में पकड़ा
८ जाता हूं * और हम क्यूं बुराई नहीं करते ताकि भले निकले चुनांचिः यिह तुहमत तो हम पर की जाती है और बअ़ज़े बोलते हैं कि हम कहते हैं सो उनका फ़तवा
९ हक़ है * पस क्या हम अफ़ज़ल हैं हरगिज़ नहीं हम

तो पहले बयान करचुके कि यहूदी और यूनानी भी सबके
१० सब गुनाहों के नीचे दबे हूए हैं * और लिखा भी है कि
११ मुतलक़न एक भी रास्तबाज़ नहीं * कोई समझनेवाला नहीं
१२ कोई ख़ुदा का ढूंढनेवाला नहीं * सब गुमराह हैं सबके सब
१३ निकम्मे हैं कोई नेकोकार नहीं एक भी नहीं * उनके
गले खुली हूई गोरें हैं उन्हों ने ज़बनों से छलबल किया
१४ है उनके लबों के अंदर सांपों का ज़हर है * उनके दहन
१५ लअनत और कड़वाहट से लबरेज़ हैं * उनके पांओं खूं रेज़ी
१६ के लिये परवाज़ में हैं * दलनामसलना उनकी राहों में
१७ है * और उन्हों ने आराम की राह नहीं पहचानी *
१८ उनकी आंखों के साम्हने ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं (१९) अब
हम जानते हैं कि शरअ जो कुछ कहती है अहलि शरअही
को कहती है ता कि हरएक का मुंह बंद होवे और सारी
२० दुनया ख़ुदा के साम्हने गुनहगार ठहरे * पस कोई आदमी
शरअ पर अमल करने से उसके हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर नहीं
२१ सकता क्यूंकि शरअ ही से गुनाह ज़ाहिर हूआ * पर अब
इलाही रास्तबाज़ी जो कि शरीअत से बाहर है ज़ाहिर हूई
२२ है जिस पर शरअ और नबियों ने गवाही दी है * यिह
इलाही रास्तबाज़ी वुह है जो ईसा मसीह पर ईमान लाने
से मिलती है और उन सबके लिये और उनसब में है जो
२३ ईमान लाते हैं कि उन में कुछ तफ़ावत नहीं * इसवास्ते

कि सभों ने गुनाह किया है और इतने न होरहे कि खुदा के
२४ समूदः हों * सो वे उसके फ़ज़ल के सबब मसीह ईसा के
फ़िदा होने के वसीले से मुफ़्त में रास्तबाज़ गिने जाते हैं *
२५ कि इलाह ने उस के तईं ऐसा ज़ाहिर किया कि वुह उनके
लिये जो उसके लोहू पर ईमान लावें सुलह का सबब हो
ता कि वुह अपनी रास्तबाज़ी को ज़हूर में लावे इसवास्ते
कि खुदा पिछले गुनाहों से मुहलत के दिनों में गुज़र गया
सो उसने यिह कुछ किया ता कि वुह इस ज़माने में
२६ अपनी रास्तबाज़ी को ज़हूर में लावे * कि वुह आपही
रास्तबाज़ रहे और उस को जो ईसा मसीह पर ईमान
२७ लाता है रास्तबाज़ जाने * पस तफ़ाख़ुर कहां रहा वुह
तो उड़ गया किस राह से अमलों से नहीं बल्कि ईमान की
२८ राह से * पस हम यिह नतीजः निकालते हैं कि आदमी
ईमान से बिग़ैर अअ़माल शरअ़ के रास्तबाज़ गिना जाता है *
२९ क्या वुह सिर्फ़ यहूदी का खुदा है और ग़ैरों का नहीं
३० ग़ैरों का भी है * क्यूंकि एकही खुदा है जो मख़्तून को
ईमान के बाइस से और नामख़्तून को भी
३१ ईमान ही की राह से रास्तबाज़ जानेगा * और क्या शरअ़
को हम ईमान से बातिल करते हैं ऐसा नहोवे हम तो
शरअ़ को क़ाइम करते हैं *

चौथा बाब

१ पस इबराहीम जो जिसम की जिहत से हमारा बाप है तो
२ क्या हम कहें कि उसने कुछ पाया * क्योंकि अगर
इबराहीम अमलों के सबब से रास्तबाज़ गिना जाता तो उसको
३ फ़ख़र की जगह थी लेकिन न ख़ुदा के आगे * इसलिये
कि किताब कहती है कि इबराहीम ख़ुदा पर ईमान लाया
४ और यिह उसके लिये रास्तबाज़ी ठहरी * अब मज़दूर को
मज़दूरी देना बख़शिश नहीं बल्कि अदाये दैन है *
५ पर वुह जो काम नहीं करता बल्कि उस पर जो गुनहगार
को रास्तबाज़ों में शुमार करता है ईमान लाता है उसी का
६ ईमान रास्तबाज़ों में गिना जाता है * चुनांचिः दाऊद भी
उस आदमी की नेकबख़्ती का ज़िक्र करता है जिसकी तरफ़
ख़ुदा बिग़ैर उसके कि वुह अमल करे रास्तबाज़ी की निसबत
७ करता है * कि नेकबख़्त वे हैं जिनकी ख़तायें बख़शी गईं
८ और गुनाह छांपे गये * नेकबख़्त वुह है जिसकी तरफ़
९ ख़ुदावंद गुनाह की निसबत नहीं करता * पस क्या नेकबख़्ती
फ़क़त मख़तूनों की है या ना मख़तूनों की भी है हम कहते
१० हैं कि इबराहीम का ईमान रास्तबाज़ी में गिना गया * पस
वुह कब गिना गया उसकी मख़तूनी की या नामख़तूनी की हालत
११ में मख़तूनी में नहीं बल्कि ना मख़तूनी में * और उसने ख़तनः
बतौर ख़िलाफ़ निशान के पाया कि वुह उसकी ईमानी रास्तबाज़ी पर जो

नामख़्तूनी में मिली थी मिहर होवे ता कि वुह उनसब का जो नामख़्तूनी में ईमान लाते हैं बाप हो ता कि उसकी तरफ़
१२ भी रास्तबाज़ी की निसबत की जाय * और मख़्तूनों का भी हो न उनका जो निरे मख़्तून हैं बल्कि उनका जो हमारे बाप ईब्राहीम के ईमान की जो नामख़्तूनी में था पैरवी
१३ करते हैं * क्यूंकि यिह वअ़्दः जो इब्राहीम से और उसकी नसल से हूआ कि तू दुनया का वारिस होगा शरअ के सबब नहीं बल्कि ईमानी रास्तबाज़ी के बाइस से किया
१४ गया * क्यूंकि अगर अहलि शरअ ही वारिस होवें तो
१५ ईमान अबस और वअ़्दः ख़िलाफ़ होगा * कि शरअ ग़ुस्सः का सबब पड़ती है इसलिये कि जहां कहीं शरअ नहीं
१६ अदूल भी नहीं * सो इसलिये ईमान के सबब से किया गया ता कि वुह करम ठहरे और सारी नसल के लिये न सिर्फ़ अहलि शरअ के वास्ते बल्कि उनके वास्ते भी जो ईमानि
१७ इब्राहीमी के पैरो हैं बाक़ी रहे * और वुह उसकी मशीयत से जिस पर वुह ईमान लाया यअ़्ने वुह ख़ुदा जो मुरदों का जिलाने वाला है और उन चीज़ों का जो हनोज़ मअ़्दूम हैं इस तरह ज़िक्र करता है जैसे वे मौजूद हैं हम सब का बाप है चुनांचिः लिखा है कि मैं ने तुझे बहुत सी क़ौमों
१८ का बाप बनाया * वुह नाउम्मेदी के मक़ाम में उम्मेद से ईमान लाया ता कि वुह उस नविश्तः के मुताबिक़ कि तेरी

नस्ल ऐसी कसीर होगी वक़्त से गरोहों का बाप होवे *
१९ और उसने अज़्बस कि ज़ईफ़ुलईमान नथा अपने फ़रतूत बदन
का बाअ़्दूदे कि उसकी उमर सौ बरस के क़रीब थी और
२० सरः की रहम की अफ़सुर्दगी का भी ख़ियाल नकिया * और वे
इअ़्तिक़ाद नथा कि ख़ुदा के वअ़्दे में शक लाता बल्कि
२१ ईमान की उस्तवारी से ख़ुदा की तमजीद करता था * और
उसने यक़ीन क़तई किया कि जो कुछ उसने वअ़्दः किया
२२ है उस के ईफ़ा पर क़ादर है * इसवास्ते उसकी तरफ़
२३ रास्तबाज़ी की निसवत हुई * और यिह बात कि रास्तबाज़ी
की निसवत उस की तरफ़ हुई सिर्फ़ उसीके हक़ में नहीं *
२४ बल्कि हमारे हक़ में भी है अगर हम ईमान लावें कि
२५ उसने हमारे ख़ुदावंद ईसा को जिलाया * और वुह हमारी
ख़ताओं के सबब से पकड़ा गया और ता कि हम रास्तबाज़ों
में गिने जावें फिर के जिलाया गया *

पाचवां बाब

१ पस जब कि हम ईमान लाके रास्तबाज़ जाने गये तो हम
में और ख़ुदा में हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की विसातत
२ से मिलाप है * और उसी के वसीले से हम उस निअ़्मत पर
ईमान लाके रसाई रखते हैं और उस निअ़्मत में क़ाइम
रहते हैं और मजदि इलाही की उम्मैदवारी में फ़ख़र
३ करते हैं * और सिर्फ़ इतनाही नहीं बल्कि मुसीबतों में भी

फ़ख़र करते हैं कि जानते हैं कि मुसीबत से सबर *
४ और सबर से तजरिबः और तजरिबः से उम्मेद पैदा होती
५ है * और उम्मेद शरमसार नहीं करती क्यूंकि हमारे दिलों
में इसलिये कि रूहि कुदस हमें बख़शा गया ख़ुदा की
६ महब्बत भाई गई है * कि जब हम कम कुव्वत थे तब मसीह
७ ऐन वक्त पर वेदीनों की ख़ातिर मूआ * कि ऐसा कम है
कि कोइ किसी आदिल के वास्ते जान दे और शायद किसी
में यिह जुरअत हो कि किसी ख़ुशख़ुल्क़ के लिये
८ जानसे गुज़रे * पर ख़ुदा ने अपनी महब्बत को हमारे साथ
इस तौर से आशकारा किया कि जब हम गुनाह करते
९ चले जाते थे मसीह हमारे वास्ते मूआ * पस अज़्बस कि
हम उसके लोहू के बहने से रास्तबाज़ ठहरे तो अब बतरीक़
१० औला उस के सबब से क़हर से बच रहेंगे * क्यूंकि जब ख़ुदा
ने हम से जिस वक्त कि हम दुशमन थे अपने बेटे की मौत
के सबब मेल किया पस हम अब मिलकर उस की ज़िंदगी
११ के सबब बतरीक़ औला बच जायेंगे * बल्कि हम अपने
ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से जिस के सबब से हम अब
मिला लिये गये ख़ुदा पर फ़ख़र करते हूए बच जायेंगे *
१२ पस जिस तरह कि एक आदमी के सबब से गुनाह ने और
गुनाह के सबब से मर्ग ने दुनया में दख़ल पाया तो इसी
तरह मौत ने सारे आदमियों पर उस सबब से कि सबके सब

१३ गुनहगार हैं तसह्हुत पाया * क्यूंकि गुनाह तो इबतिदा से शरअ़ के मौजूद होने तक दुनया में था पर जब शरअ़ न होवे तो गुनाह किसी की तरफ़ मनसूब नहीं होता *
१४ लेकिन जैसा आदम पर उसकी ख़ताकारी से हूआ वैसाही मौत ने आदम से लेकर मूसा तक उन पर भी जिन्हों ने ख़ता न की तसह्हुत पाया और आदम उसका जो आने
१५ वाला था नमूना नथा * पर यिह नहीं कि जिस क़दर ख़ता थी उसी क़दर अ़ता है इसलिये कि हरचंद ऐकही आदमी की ख़ता से बहुत मूऐ लेकिन इस सबब से कि ख़ुदा ने ऐक आदमी यअ़ने ईसा मसीह दूनायत किया उसका करम
१६ और इनआ़म बहुतों पर बहुत ज़ियादः वसीर है * और ऐसा नहीं कि इनअ़म उसके जो कुछ कि गुनहगार से सादिर हूआ बराबर है क्यूंकि अ़दालत जो ऐक ख़ता के सबब से हूई वहांतक पहुंचाती है कि सियासत के लाइक़ होवें पर बहुत सी ख़ताओं की बख़शीश वहांतक पहुंचाती है कि रास्तबाज़
१७ ठहरें * पस अगर ऐक आदमी की ख़ता के सबब मौत ने ऐकही के वसीले से तसह्हुत पाया तो वे जो फ़ज़्लि फ़िरावां और रास्तबाज़ी के इनअ़म बे पायान को पाते हैं ऐक ईसा मसीह के वसीले से बतरीक़ औला हयात में बादशाहत करेंगे *
१८ ग़रज़ जैसा ऐक ख़ता से सारे आदमियों पर ग़ज़ब आया कि वे सज़ा के मुस्तौजिब हूऐ वैसही ऐक सवाब के सबब से सारे

आदमियों पर करम हुआ कि हयात के सज़ावार हुऐ *
१९ क्यूंकि जैसा ऐक आदमी के नाफ़रमां बरदार हो जाने से बहुत से लोग गुनहगार ठहराये गये वैसही ऐक के फ़रमां बरदार होने से बहुत से लोग रास्तबाज़ ठहराये जायेंगे *
२० और इस सब के सिवा शरअ आई ता कि ख़ताकारी बहुत होवे लेकिन जहां गुनाह बहुत हूआ फ़ज़ल उस की निस्बत
२१ बहुत ज़ियादः हूआ * ता कि जैसा गुनाह ने मौत को मुल्हक़ किया वैसही फ़ज़ल रास्तबाज़ी से यहां ऐक मुसल्लत हो कि हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से हयाति अबदी तक पहुंचावे *

छठा बाब

१ पस अब हम क्या कहें क्या हम गुनाह किया करें ता कि
२ करम ज़ियादः हूआ करे * ऐसा नहो कि हम तो गुनाह की निसबत मूऐ हैं फिर किस तरह आगे को उस में जियेंगे *
३ क्या तुम इस से नावाक़िफ़ हो कि जिस किसी ने हम में से ईसा मसीह का इस्तिबाग़ पाया उसने उसकी मौत का इस्तिबाग़
४ पाया * इसवास्ते हम मौत वाले इस्तिबाग़ के सबब से उसके साथ गाड़े गये ता कि जिस तरह मसीह बाप के जलाल के साथ मरके जी उठा हम भी नई हयात में क़दम मारें *
५ क्यूंकि जब हम उसकी मौत से मुशाबहत पैदा करके उसके साथ बंधे गये तो हम उसके उठने में भी उसके बराबर होंगे *
६ कि हम यिह जानते हैं कि हमारी अगली इनसानियत उसके साथ

सलीब पर खैंची गई ता कि गुनाह का जिसम फ़ना होवे
७ ता कि हम आगे को गुनाह के बंदे नहो रहें * कि जो
८ मरा सो गुनाह से छूटा * पस हम अगर मसीह के साथ
मरे हैं तो यक़ीन जानते हैं कि उस के साथ जीयेंगे *
९ हम जानते हैं कि मसीह जब मरके जिया फिर न मरेगा
१० और मौत उस पर फिर मुसल्लत न होगी * क्यूंकि वुह
जो मूआ तो गुनाह की निसबत दफ़अतन मूआ वुह जो
११ जीता है सो खुदा की निसबत से जीता है * इसी तरह तुम
आप को गुनाह की निसबत मुरदः जानो पर खुदा की निसबत
१२ हमारे खुदावंद ईसा मसीह से ज़िंदः समझो * पस गुनाह
तुम्हारे मुरदः जिसम में तसल्लुत न पावे कि तुम जिसमी
१३ ख़ाहिशों में उसके फ़रमांबरदार हो रहो * और अपने
अज़ज़ों को गुनाह के सुपुर्द नकरो ता कि शरारत के आलात
बनें बल्कि अपने तईं इस तरह से कि जैसे सच मुच
मरके जी उठे हो खुदा को सौंपो और अपने अज़ज़ों को खुदा
१४ के सुपुर्द करो कि रास्ती के हथियार होजायें * क्यूंकि
गुनाह तुम पर ग़ालिब नहोगा इसवास्ते कि तुम शरअ के
१५ तहत नहीं हो बल्कि निअमत में हो * पस क्या इसलिये
कि हम शरअ के तहत नहीं हैं बल्कि निअमत में हैं हम
१६ गुनाह करें ऐसा नहोगा * क्या तुम्हें यिह मअलूम नहीं
कि तुम ने आप को जिस किसी के सुपुर्द किया ता कि

ग़ुलाम के मानिंद फ़रमांबरदारी करे तुम उसके फ़रमान के बंदे हो ख़्वाह गुनाह के जिसका अंजाम मर्ग है या
१७ इबादत के जिसका अंजाम रास्तबाज़ी है * पर शुक्र ख़ुदा का तुम जो आगे गुनाह के बंदे थे तअलीम के नमूनः के सुपुर्द
१८ होके दिल से फ़रमांबरदार हूए * और गुनाह से आज़ादी
१९ पाकर रास्तबाज़ी के ग़ुलाम हूए * मैं तुम्हारे जिस्म की नातवानी की रिआयत करके आदमी की तरह बयान करता हूं सो जैसा तुम ने अपने अज़्वों को नापाकी के और दरजाति शरारत के सुपुर्द किया था कि उन के बंदे होवें वसही अब अपने अज़्वों को रास्तबाज़ी के सुपुर्द करो कि उसके
२० बंदे होकर पाक हो * क्यूंकि जब तुम गुनाह के बंदे थे तब
२१ रास्तबाज़ी से बेगाने थे * और तुम ने उन कामों से जिन से तुम पशेमान हो क्या फल पाया कि उन चीज़ों की ग़ायत मौत
२२ है * पर अब तुम गुनाह से आज़ाद होकर ख़ुदा के बंदे बनके तक़द्दुस के लिये फल लाते हो और अंजाम हयाति अबदी है *
२३ क्यूंकि गुनाह का इवज़ मौत है पर ख़ुदा की बख़्शिश हयाति अबदी है जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के सबब से है *

सातवां बाब

१ ऐ भाइओ क्या तुम उस से नावाक़िफ़ हो जो मैं शरअ के आलिमों से कहता हूं कि आदमी जबतक जीता है शरअ
२ की बंद में है * क्यूंकि मनकूहः रंडी अपने शौहर की

ज़िंदगी तक शरअ से बंधी हूई है पर जब उसका शौहर
३ मरे अपने शौहर की शरअ से छूट जाती है * पस वुह
अगर अपने ख़सम के जीतेजी दूसरे मर्द की हो जावे तो
ज़ानियः कहलायगी पर अगर शौहर मरे तो वुह उसकी
शरअ से बाहर हूई चुनांचिः अगर वुह दूसरे मर्द की
४ होवे तो ज़ानियः नहीं * सो ऐ भाईओ तुम भी मसीह से
ऐकातन होके शरअ के रूसे मरगये और ऐक दूसरे के यअ़ने
उसके जो मरके जी उठा होऐ ता कि हम ख़ुदा के लिये
५ फल लावें * क्यूंकि जब हम जिसमानी थे तब गुनाहों की
ख़ाहिशें जो शरअ के सबब थीं हमारे बंद बंद में ऐसी
६ तासीर करती थीं कि मौत का फल लावें * पर हम अब
शरअ के रूसे फ़ना हूऐ क्यूंकि वुह चीज़ जिसके साथ
हम वाबस्तः थे मूऐ इसवास्ते हम रूहि मुजद्दिद सेबंदगी
७ करते हैं न कि पुराने हरफ़ों से * पस हम क्या कहें कि
शरअ गुनाह है ऐसा नहोवे पर मैं शरअ के बिग़ैर गुनाह से
वाक़िफ़ नहीं बल्कि मैं हिर्सके मअ़ने को दरयाफ़्त न करता अगर
८ शरअ न कहती कि तू हिर्स न कर * पर गुनाह ने क़ाबू पाके
शरअ के सबब से मुझ में सब तरह की लालच पैदा की
९ क्यूंकि शरअ के बिग़ैर गुनाह नापैदा है * कि मैं आगे
बे शरअ होके ज़िंदः था पर जब हुक्म आया तब गुनाह
१० जी उठा और मैं मुरदः हूआ * और वुह हुक्म जो

ज़िंदगी के लिये दिया गया सोही मेरे लिये मौत का सबब
११ हूआ * कि गुनाह ने हुक्म के वसीले से क़ाबू पाके मुझे ठगा
१२ और उसी के वसीले से क़त्ल किया * पस शरअ पाकीज़ः
है और हुक्म भी पाकीज़ः और बरहक़ है और ख़ूब है *
१३ पस जो चीज़ ख़ूब है क्या वही मेरे हक़ में मौत ठहरी
ऐसा न होवे पर गुनाह ने ता कि उसका गुनाह होना
ज़ाहिर हो अच्छी चीज़ के वसीले से मौत को मुझ मे पैदा
किया ता कि हुक्म के वसीले से गुनाह का क़ुबह वे निहायत
१४ हो * क्यूंकि हम जानते हैं कि शरअ रूहानी है और
१५ मैं जिसमानी और गुनाह के हाथ में बिक गया हूं * इसवास्ते
कि जो काम मैं करता हूं उसे पसंद नहीं करता क्यूंकि
मैं जिस पर राग़िब हूं सो नहीं बल्कि जिस से नफ़रत
१६ रखता हूं वही करता हूं * सो जब मैं वुह जो नहीं किया चाहता
१७ हूं करूं तो मैं शरअ की ख़ूबी का मुक़िर्र हूं * पस अब मैं उस
का फ़ाइल नहीं बल्कि गुनाह जो मुझमें बसता है वुह
१८ फ़ाइल है * कि मैं जानता हूं कि मुझ में यअ़ने मेरे
जिसम में ख़ूबी नहीं बसती इसलिये कि ख़ाहिश मुझ में
मौजूद है और अच्छा अ़मल करने नहीं पाता हूं *
१९ क्यूंकि मैं न उस ख़ूब को जिसे किया चाहता हूं करता हूं
२० पर उस बद को जिसे चाहता हूं नकरूं करता हूं * पस
अगर मैं जिसे नहीं चाहता हूं करूं तो मैं नहीं हूं

जो करता हूं बल्कि गुनाह जो मुझ में बसता है वही
२१ करता है * गरज़ मैं एक क़ानून पाता हूं कि जब मैं
अच्छा किया चाहता हूं तब मुझ पास बद मौजूद होता
२२ है * कि मैं अपनी इनसानियत मअनवी में खुदा की
२३ शरअ से राज़ी हूं * और दूसरी शरअ को अपने बंद बंद
में देखता हूं जिस को मेरी खिरद की शरअ से जंग है और
मैं गुनाह की शरअ का जो मेरे बंद बंद में है असीर हूं *
२४ आह मुझ पर सख़्त मुसीबत है कौन मुझे उस बदनी मौत
२५ से छुड़ावेगा * मैं खुदा का शुक्र करता हूं हमारे खुदावंद
ईसा मसीह के वसीले से यों होगा गरज़, मैं अपनी अक़्ल से
तो शरअ इलाही का परस्तार हूं पर जिसम की राह से
गुनाह की शरअ का बंदः हूं *

आठवां बाब

१ पस जो लोग ईसा मसीह में हैं और उनका रफ़्तार जिसम
के तौर पर नहीं बल्कि रूही वज़अ पर है उन पर कोई
२ इलज़ाम नहीं * क्यूंकि रूह हयात की शरअ ने जो ईसा
मसीह में है मुझ को गुनाह औ मौत की शरअ से रिहाई
३ बख़्शी है * शरअ से जिस काम का होना मुहाल था इसलिये
कि जिसम के हक़ में उसकी तासीर कम थी उसे खुदा ने
कर लिया कि उसने अपने बेटे को जिसमि ख़ाती की सूरत
में गुनाह की इल्लत से भेजकर गुनाह को जो जिसम में है

४ हलाक किया * ता कि शरअ के वाजिबात हम से जो न जिस्म के मुवाफ़िक़ बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं पूरे होवें *
५ क्यूंकि जो जिस्म की तरफ़ मनसूब हैं उनका मिज़ाज भी जिस्मानी है और जो रूह की तरफ़ मनसूब हैं उनकी
६ सरिश्त भी रूहानी है * कि तबीअति जिस्मानी मौत है
७ और मिज़ाजि रूहानी ज़िंदगी और आराम है * क्यूंकि तबए जिस्मानी ख़ुदा के मुक़ाबिल अदावत है कि वुह शरअ
८ इलाही की महकूम नहीं और न होसकती है * और जो जिस्म की तरफ़ मनसूब हैं सो ख़ुदा को राज़ी नहीं
९ कर सकते * पर तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रूहानी हो बशरते कि रूहि इलाही तुम में बसे पर जिस में मसीह की
१० रूह नहीं है वुह उसका नहीं है * और अगर मसीह हम में है तो बदन गुनाह के सबब मुरदः है मगर रूह रास्तबाज़ी
११ के सबब से हयात है * और अगर उसकी रूह जिस ने ईसा को फिर के जिलाया तुम में बसे तो मसीह का जिलाने वाला तुम्हारे फ़ानी जिस्मों को अपनी उस रूह के वसीले
१२ से जो तुम में बसती है जिलायेगा * पस ऐ भाईओ जिस्म का तुम पर कुछ ऐसा दबाओ नहीं है कि हम जिस्मही
१३ के तौर पर ज़िंदगी बसर करें * इसलिये कि अगर तुम जिस्मानी वज़अ पर ज़िंदगी करो तो मरोगे और अगर तुम रूह की कुमक से बदन की आदतों को मारो तो हयात

१४ पाओगे * क्यूंकि जो ख़ुदा की रूह से हिदायत पाते हैं
१५ वे ख़ुदा के बेटे हैं * कि तुम्हें दोबारः गुलामों की सी
तबीअत नहीं मिली जो तुम तरसां हो बल्कि तुम ने लेपालकों
की सी रूह पाई है जिस से हम आबा यअने ऐ बाप
१६ पुकार पुकार कहते हैं * वुह रूह हमारी रूह के साथ
१७ होके गवाही देती है कि हम ख़ुदा के फ़रज़ंद हैं * और
जब फ़रज़ंद हूए तो वारिस ठहरे यअने ख़ुदा के वारिस
और मीरास में मसीह के शरीक हैं और यिह जब हो
कि हम उसके साथ दुख उठाएं तो हम उस के साथ जलाल
१८ का दरजः पाएं * कि मेरी अटकल में ज़मानि हाल के
दुख दर्दों को यिह लियाक़त है नहीं कि उस जलाल से
१९ जो हम पर जलवःगर होगा मुनासबत रखें * कि
आफ़रीनिश का इनतिज़ार ख़ुदा के फ़रज़ंदों के ज़हूर की
२० तवक़्क़ुअ से है * क्यूंकि आफ़रीनिश बतालत के महकूम है
न रग़बत से बल्कि उसकी जब्र से जिस ने उसे महकूम
२१ कर दिया * और उम्मेद से है कि ज़िंदगानि फ़साद से निकल
के अबनाय इलाही के जलाल की आज़ादगी में
२२ दाख़िल होवे * क्यूंकि हम जानते हैं कि सारी ख़िल्क़त
मिलके अबतलक चीखें मारती है और उसे दर्द लगे हैं *
२३ और फ़क़त वही नहीं बल्कि हम भी कि हमने रूह का
पहला हासिल पाया आपमें कराहते में और अपने जिस्मों

के रिहा होने की जो हमारा लेपालक होना है राह तकते
२४ हैं * हम उम्मेद के वाइस बच गये हैं पर जब उम्मेद
बरआई तो उम्मेद न रही इसवास्ते कि जिसे कोई देखता
२५ है क्यूंकर उसका उम्मेदवार है * पर जिसे हम नहीं
देखते अगर हम उसके उम्मेदवार हैं तो हम सबर से उसकी
२६ राह देखते हैं * इसी तरह वुह रूह भी हमारी सुस्तियों
में हमारा मऊविन है क्यूंकि जैसा चाहिये हम नहीं जानते
कि क्या दुआ मांगे पर वुह रूह ऐसी आहें करके जिनका
२७ बयान नहीं होसकता हमारी विकालत करता है * और
वुह जो आरिफुलक़लूब जानता है कि रूह का क्या मतलब
है कि वुह खुदा की मशीयत के मुताबिक़ मुक़द्दसों की विकालत
२८ करता है * और हम जानते हैं कि सारी चीज़ें उनकी
भलाई के लिये जो खुदा के मुहिब्ब हैं मिल के काम में मशगूल
हैं ये वे हैं जो उसकी क़ज़ाय अज़ली में बरगुज़ीदः हूए *
२९ कि जिन्हें उसने इबतिदा में जाना उन के लिये यिह
तक़दीर किया कि उसके बेटे के हम सूरत हों ता कि वुह
३० भाइओं के मजमअ में बड़ा होवे * और जिन के लिये उसने
तक़दीर की उसने उनको तलब किया और जिन्हें तलब किया
उनको रास्तबाज़ जाना और जिनको रास्तबाज़ जाना उनको
३१ जलाल बख़्शा * पस हम इनबातों को क्या कहें अगर खुदा
३२ हमारी तरफ़ है तो कौन हमारा मुख़ालिफ़ होगा * जिसने

अपने बेटेही को दरेग़ न किया और हमसब के बदले
३२ दिया तो वुह उसके साथ सब चीज़ें क्यूंकर नदेगा * ख़ुदा
के बरगुज़ीदों पर कौन दअ़वी करेगा ख़ुदा उन्हें रस्तबाज़
३४ जानता है * कौन सज़ा का फ़तवा देगा मसीह् मरगया बल्कि
जिया और ख़ुदा की दाहनी तरफ़ बैठा है और हमारी
३५ विकालत करता है * कौन हमको मसीह् की मह़ब्बत से जुदा
करेगा मुसीबत या शिकंजः या तसदीअ़ या क़ह़त या उरयानी
३६ या ख़सवास या तलवार * चुनांचिः लिखा है कि हम तेरी
ख़ातिर दिनभर हलाक किये जाते हैं और ऐसे शुमार किये
३७ गये हैं जैसे भेड़ें जो ज़वह् के लिये हैं * बल्कि हम
इनसब चीज़ों में उसके वसीले से जिसने हम से मह़ब्बत की
३८ हर ग़ालिब पर ग़ालिब हैं * क्यूंकि मुझ् को यक़ीन कुल्ली
है कि न मौत न ज़िंदगी न फ़िरिश्ते न अहलि हुकूमत
और न अरबाबि कुव्वत और न मौजूदाति ह़ाली न इस्तिक़्बाली *
३९ न बुलंदी न पस्ती और न कोई और शै हमको ख़ुदा की उस
मह़ब्बत से जो हमारे ख़ुदावंद मसीह् ईसा के सबब है जुदा
कर सकेगी *

नवां बाब

१ मैं मसीह् के साम्हने सच बोलता हूं झूठ नहीं कहता और
मेरा दिल भी रूहि क़ुद्स की मअ़रिफ़त से मुझ् समेत
२ गवाही देता है * कि मुझे बड़ा ग़म है और रंज मेरे दिल का

३ हम दम है * कि मैं यहां तक चाहता था कि मैं अपने भाइओं के बदले जो जिसम के रू से मेरे क़राबती हैं मसीह
४ से महरूम होऊं * वे बनी इसराईल हैं और लेपालक होना और जलाल और वसीके और शरीअत पाना उनका हक़
५ है * और बाप दादे उन्हीं में के हैं और जिसम की हैसीयत से मसीह भी उन में से निकला है वही सब का अल्लाह
६ तअ़ला है जो महमूद अबदी है आमीन * लेकिन गुमान न किया जावे कि खुदा का अहद बातिल है इसलिये कि
७ सारे बनी इसराईल इसराईल नहीं * और न इस सबब से कि वे इबराहीम की नसल से हैं फ़रज़ंद हैं क्यूंकि फरमाया है कि इसहाक़ ही से तेरे लिये नसल तलब की
८ जायगी * यअ़ने न वे जो फ़क़त जिसम के बेटे हैं खुदा के फ़रज़ंद हैं बल्कि वही नसल जो वअ़दः की मिसदाक़ है
९ नसल कहलाती है * क्यूंकि वअ़दः की बात यही है कि
१० मैं उसी वक़्त आऊंगा और सारः एक बेटा जनेगी * और सिर्फ़ इतनाही नहीं बल्कि रबक़ः भी जद एक से यअ़ने
११ हमारे बाप इसहाक़ से ह़ामिलः हूई * हनोज़ लड़के पैदा न हूए थे और न नेक बद के फ़ाइल थे उस से कहा
१२ गया कि बड़ा छोटे की इताअ़त करेगा * ता कि ज़ाहिर होवे कि खुदा का इरादः जो उसके मन के मुवाफ़िक़ है कामों पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि उसकी ज़ात पर जो तलब करनेवाला

१३ है मौक़ूफ़ है * जैसा लिखा है कि मैं ने यअ़क़ूब से
१४ महब्बत की और अ़स्सू से अ़दावत रखी * पस हम क्या कहें
१५ ख़ुदा के पास बेइनसाफ़ी है ऐसा नहोवे * कि वुह मूसा
से कहता है मैं ने जिस पर रहम किया उस पर रहम
१६ करूंगा और जिसपर मिहर की उस पर मिहर करूंगा * पस यिह
न मुरीद के इरादे पर न दविंदः की दव पर बल्कि ख़ुदाय
१७ रहीम के रहम पर मौक़ूफ़ है * और किताब फ़िरऊन से
कहती है कि मैं ने इसी लिये तुझे बढ़ाया कि तेरे वसीले
से अपनी क़ुदरत ज़ाहिर करूं और मेरा नाम तमाम रूए
१८ ज़मीन में मशहूर होवे * पस वुह जिस पर चाहता है
१९ रहम करता है और जिसे चाहता है सख़्त करता है * पस तू
यिह मुझ से कहेगा फिर वुह क्यूं मलामत करता है कौन
२० उसके इरादे से मुक़ाबिल हो सकता है * ऐ आदमी तू
कौन है जो ख़ुदा से तकरार करता है क्या मसनूअ़ सानिअ़
२१ को कह सकता है कि तू ने मुझे क्यूं ऐसा बनाया * और
क्या कुम्हार गिल पर मुख़्तार नहीं कि वुह एकही थवे
में से एक ज़रफ़ इ़ज़्ज़तवाला और दूसरा बेइ़ज़्ज़त बनावे *
२२ और क्या हूआ अगर ख़ुदा ने उस इरादे से कि अपने
ग़ुस्सः को ज़ाहिर और क़ुदरत को हवेदा करे ग़ज़ब के ज़रफ़ों
२३ की जो तबाह करने के लाइक़ थे बरदाश्त की * ता कि अपनी
हशमत की फ़िरावानी को रहम के उन ज़रफ़ों पर जो उसने

हश्मत के लिये आगे बनाये ज़ाहिर करे कि उसने उन
२४ ज़रफ़ों को * यअ़ने हम को न फ़क़त यहूदियों में से बल्कि
२५ और गरोहों में से भी बुलाया * चुनांचिः होशअ़ की किताब
में यूं कहता है कि मैं क़ौमि ग़ैर को अपनी क़ौम कहूंगा
२६ और जो महबूब नहीं उसे महबूब कहूंगा * और जिस
जगह में यिह उनसे कहा गया कि तुम मेरी क़ौम नहीं
हो उसी जगह यिह होगा कि वे हैइ क़ैयूम के बेटे
२७ कहलावेंगे * और अशइया इसराईल की बाबत पुकारता है
कि अगरचिः बनी इसराईल शुमार में ऐसे हैं जैसे दरया
२८ की रेत के दाने लेकिन उन में से थोड़े बचाये जायेंगे * क्यूंकि
वुह हिसाब एकजा करेगा और सिद्‌क़ से तमाम करेगा कि
२९ ख़ुदावंद ज़मीन पर मुख़्तसर हिसाब करेगा * और चुनांचिः अशइया
ने आगे कहा कि अगर सबूत का ख़ुदावंद हमारे लिये
तुख़्म बाक़ी न छोड़ता तो हम सदूम के मानंद और ग़मरः के
३० बराबर होते * पस अब क्या कहें सिवा इसके कि गरोहों
ने जो रास्तबाज़ी की तलाश में नथीं एक रास्तबाज़ी हासिल
३१ की वुह रास्तबाज़ी ईमानी है * पर इसराईल रास्तबाज़ी की
शरअ़ की तलाश करके रास्तबाज़ी की शरअ़ तक नहीं पहुंचा
३२ है * इसलिये कि उन्हों ने उसको न ईमान से बल्कि
अअ़मालि शरई से समझ के उसकी तलाश की क्यूंकि उन्हों
३३ ने ठोकर खिलानेवाले पत्थर से ठोकर खाई * चुनांचिः लिखा

है कि देखो मैं सैहून में एक सद्मः देनेवाली चट्टान और ठोकर खिलाने वाला पत्थर रखता हूं और जो कोई उस पर ईमान लाता है सो पशेमान न होगा *

दसवां बाब

१ ऐ भाईओ मेरे दिल में एक तमन्ना और मेरी मुनाजात
२ खुदा से इसराईल की नजात के वास्ते है * मैं इअतिराफ़ करता हूं कि वे खुदा की राह में गैरतमंद तो हैं पर वे अक़ली के
३ साथ * इसलिये कि वे खुदा की रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ हैं और यिह चाह के कि अपनी रास्तबाज़ी को साबित करें
४ खुदा की रास्तबाज़ी के ताबिअ नहीं * क्यूंकि शरअ की गायत यिह है कि मसीह हरएक ईमानदार की रास्तबाज़ी होवे *
५ कि वुह रास्तबाज़ी जो शरअ की है मूसा उसका ज़िक्र करता है कि जिस इनसान ने उन कामों को किया वुह उनके सबब
६ जीता रहेगा * पर वुह रास्तबाज़ी जो ईमानी है यूं कहती है कि तू अपने दिल में मत कह कि आसमान पर कौन
७ चढ़ेगा यिह मसीह का उतरना है * या अमक़ में कौन
८ डूबेगा यिह मसीह का मुरदों में से ऊपर आना है * फिर वुह क्या कहती है यिह कि कलाम तेरे नज़दीक तेरे मुंह और तेरे दिल में है यिह वही कलामि ईमानी है जिसकी
९ हम मुनादी करते हैं * कि अगर तू अपनी ज़बान से खुदावंद ईसा का इक़रार करे और अपने दिल से ईमान लावे कि

१० ख़ुदा ने उसे फिरके जिलाया तो तू बचाया जायगा * क्यूंकि रास्तबाज़ी के लिये दिल से ईमान लाया चाहिये और नजात
११ की ख़ातिर मुंह से इक़रार किया चाहिये * चुनांचिः किताब यिह बोलती है फिर जो कोई उस पर ईमान लाता है से।
१२ पशेमान न होगा * पस यहूदियों और यूनानियों में कुछ तफ़ावुत नरहा कि वुह जो सब का ख़ुदावंद है ऐसा ग़नी है कि सब को जो उसके नाम लेने वाले हैं अता करता है *
१३ कि हरऐक जो ख़ुदावंद का नाम लेगा सो बचाया जायगा *
१४ पस जिस पर वे ईमान नहीं लाये उसका नाम क्यूंकर लेवें और जिसका ज़िक्र उन्हों ने नहीं सुना उस पर क्यूंकर इअतिक़ाद करें और वे विग़ैर उस के कि कोई मुनादी करे
१५ क्यूंकर हो सकता है कि सुनें * और अगर भेजे नजावें तो क्यूंकर मुनादी करेंगे चुनांचिः यिह लिखा है कि जो सुलह की और अच्छी चीज़ों की बशारत देते हैं क्या ख़ुश
१६ क़दम हैं * लेकिन न सब उस ख़ुश ख़बरी के मुअतक़िद हूऐ हैं कि अशइया कहता है ऐ ख़ुदावंद कौन हमारी
१७ मुनादी पर ईमान लाया * पस ईमान सुनलेने से और
१८ सुनलेना ख़ुदा की बात कहने से आता है * पर मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना उनकी तो आवाज़ तमाम रूऐ ज़मीन में फैली और उनकी बातें इनतिहाय दुनया
१९ तक पहुंचीं * सो मैं कहता हूं क्या इसराईल आगाह

अ हूआ मूसा ने तो पहले कहा कि मैं ऐसा करूंगा कि तुम को गैर क़ौम पर रश्क आवे और क़ौमि नादान
१० से तुम ग़ुस्सः खाओ * पर अशइया बड़ा बेपरवा है और कहता है जिन्हों ने मेरी जुस्तजू नहीं की मुझ को पागये जिन्हों ने मेरी तलब नकी मैं उन पर अयां हूआ *
२१ लेकिन वुह इसराईल को यूं कहता है कि मैं अपने हाथ तमाम दिन हूआ कि ऐक क़ौम के लिये जो नाफ़रमां बरदार और मुनकिर है लंबे किये हूऐ हूं *

ग्यारहवां बाब

१ पस मैं कहता हूं क्या ख़ुदा ने अपनी क़ौम को ख़ारिज कर दिया ऐसा नहोवे क्यूंकि मैं भी इसराईली इबराहीम की
२ औलाद में और बिनि इमन के फ़िरक़ः से हूं * ख़ुदा ने अपनी उस क़ौम को जिसे उसने अव्वल में जाना ख़ारिज नहीं किया क्या तुम नहीं जानते हो कि इलयास के हक़ में किताब क्या कहती है कि वुह क्यूंकर ख़ुदा से
३ इसराईल पर फ़रयाद करके कहता है * कि ऐ ख़ुदावंद उन्हों ने तेरे नबियों को क़तल किया और तेरे मज़बहों को ढाया अब मैं अकेला बाक़ी हूं और वे मेरी जान के भी
४ ख़ाहां हैं * पर कलामि इलाही उसको क्या कहता है कि मैं ने अपने लिये सात हज़ार आदमी अलहदः किये हैं
५ जो बअल के आगे ख़म नहीं हूऐ * पस इसी तरह

६ करम से उसवक़्त भी ऐक गूल बरगुज़ीदः होके बाक़ी रहा है * पस अगर फ़ज़ल से है ता अमलों से नहीं नहीं ता फ़ज़ल फ़ज़ल नरहेगा अगर अमलों से है ता करम फिर कुछ नहीं वरनाह

७ अमल अमल नरहेगा * पस यिह क्या है कि इसराईल जिस चीज़ की तलाश करता है वुह उसको न मिली और बरगुज़ीदों

८ को मिली और बाक़ी सब आज तक गिर्यं ख़ातिर रहे * चुनांचिः लिखा है कि ख़ुदा ने उन्हें ऊंघने वाली रूह और

९ अंधी आंखें और बहरे कान दिये हैं * और फिर दाऊद कहता है कि उनका दस्तारख़्वां जाल और फंदा और ठोकर खिलानेवाला

१० पत्थर और उनकासज़ा देनेवाला होवे * और उनकी आंखें तारीक होजावें कि वे नदेख सकें और तू उनकी पुश्तको हमेशः

११ ख़म रख * पस मैं कहता हूं कि क्या उन्हों ने ऐसी ठोकर खाई है कि गिर पड़ें ऐसा नहोवे मगर उनकी ख़ताओं के बाइस

१२ नजात ग़ैर क़ौमों को मिली ताकि उन्हें चालाक करे * पर अगर उनकी ख़ता दुनया के लिये दौलत हूई और उनका नुक़्स ग़ैर क़ौमों के लिये फ़िरावानी हो तो उनका कमाल क्या

१३ बतरीक़ औला दौलत नहोगा * मैं बेगानः गरोह का हवारी होकर तुमसे जो गरोह बेगानः हो बोलता हूं और

१४ अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र करता हूं * ता कि मैं किसी तरह से अपने रिश्तःदारों को चालाक करूं और उन में से बअज़े

१५ को बचाऊं * कि अगर उनका ख़ारिज होजाना जहान की

मसालिहत का बाइस है तो उनका आ मिलना कैसा कुछ
१६ होगा हां ऐसा मुर्दों का उठना * क्यूंकि अगर पहली
ढेरी मुतबर्रक होवे तो तमाम ढेरी ऐसही होगी और अगर
१७ जड़ मुक़र्रम हो तो डालियां भी ऐसी ही होंगी * सो अगर
डालियों में से कई एक तोड़ी गईं और तू जो जंगली ज़ैतून
था उनका पैवंद हूआ और ज़ैतून की जड़ और दुहनियत
१८ में शरीक हूआ * तो तू उन डालियों पर मत फ़ख़र कर
और अगर फ़ख़र करे तो कहा जायगा कि तू तो जड़ का
१९ हामिल नहीं बल्कि जड़ तेरी हामिल है * तब तू कहेगा
२० कि डालियां इसवास्ते तोड़ी गईं ता कि मैं पैवंद हूं * अच्छा
वे बेईमानी के सबब तोड़ी गईं और तू ईमान के सबब क़ाइम
२१ है पस ग़ुरूर मत मर बल्कि डर * क्यूंकि अगर ख़ुदा ने
असली शाख़ों पर रहम न किया ख़बरदार न हो कि तुझ पर
२२ भी रहम न करे * पस ख़ुदा की नरमी और दुरुश्ती को देख
दुरुश्ती उन से जो साक़ित हूए हैं और नरमी तुझसे अगर
तू ख़ूबी पर क़ाइम रहे और नहीं तो तू भी काटा जायगा *
२३ और अगर वे भी बेईमान न रहें तो पैवंद किये जायेंगे कि
२४ ख़ुदा क़ादिर है उन्हें दुबारः पैवस्तः करे * इसलिये कि तू
जब उस ज़ैतून के दरख़्त से जो असल जंगली है काटा गया
और बरख़िलाफ़ असल बुस्तानी ज़ैतून का पैवंद हूआ तो वे
जो असल डालियां हैं क्या बतरीक़ औला अपने ख़ास ज़ैतून

२५ में पैवस्तः नकी जायगी * ऐ भाईओ नहोवे कि तुम अपने नई अक़्ज़ल समझो मैं चाहता हूं तुम इस सिर्रि ग़ैबी से नावाक़िफ़ नहो कि कोरी इसराईल के वअ़्ज़े औलाद पर आ पड़ी और रहेगी जबतक कि अग़यार अ़दद में पूरे होवे

२६ आवें * सो सारे इसराईल बचाया जायगा चुनांचिः लिखा है कि छोड़ानेवाला सैहून से निकलेगा और बदीनी को यअ़कूब

२७ से दफ़अ़ करेगा * मेरा यिह अ़हद्नः उनके साथ होगा

२८ जब मैं उनके गुनाहों को बख़्शूंगा * वे तो इंजील की बाबत तुम्हारे सबब से मबग़ूज़ हैं लेकिन अपने आबा के सबब

२९ बरगुज़ीदःगी को राह से महबूब हैं * इसवास्ते कि ख़ुदा

३० अपने इनआमों से और तलब से फिर नहीं जाता * क्यूंकि जिस तरह तुम आगे ख़ुदा पर ईमान न लाये बल्कि अब

३१ उनकी बेईमानी के सबब से मौरिदि रहम हुऐ * वैसा वे भी अभी तुम्हारे मरहूम होने के सबब ईमान नलाये ता कि उन

३२ पर भी रहम किया जावे * इसलिये कि ख़ुदा ने सबको बेईमानी में बंद कर लिया ता कि सब पर रहम करे *

३३ वाह ख़ुदा की हिकमत ओ दानिश्त किसक़ां की गहराई उसकी क़ज़ाऐं क्या ही तफ़तीश से बाहर हैं और उसकी

३४ राहें सुराग़ि नक़्शि क़दम से मुबर्रा हैं * किसने ख़ुदावंद की

३५ नीयत को जाना है या कौन उसका मशीर कार था * किसने सबक़त करके उसे कुछ दिया है कि उसे फिर दिया जायगा *

३६ क्यूंकि उसी से और उसी के सबब और उसी के लिये सारी चीज़ें हूई हैं इमद अबद तक उसी के लिये है

बारहवां बाब

१ पस ऐ भाईओ मैं ख़ुदा की रहमतों का वास्तः दे के तुम से यिह इलतिमास करता हूं कि तुम अपने बदनों को ख़ुदा पर तफ़वीज़ करो ता कि क़ुरबानी ज़िंदः ओ मुक़द्दस ओ पसंदीदः
२ हो कि यिह तुम्हारी ज़ानी ख़िदमत है * और इस जहान के हम शिकल मत हो बल्कि बातिन तजद्दुद से अपनी शकल बदल डालो ता कि तुम ख़ुदा के मतलब को यक़ीन से जानो
३ कि वुह जैयद और लतीफ़ और कामिल है * मैं उस निअमत से जो मुझे इनायत हूई है तुम में से हर एक को कहता हूं कि अपने मरतबः से ज़ियादः आली मिज़ाज न बनो बल्कि इअतिदाल से बाहर न जाके ऐसा मिज़ाज रखो जैसा ख़ुदा ने हरऐक शख़्स को अंदाज़ः से ईमान दिया *
४ क्यूंकि जैसा मेरे ऐक बदन में बहुत से अअज़ा हैं और हर
५ अज़ो का ऐक शुग़ल जुदा है * ऐसही हम जो बहुत से हैं मिल के मसीह का ऐक बदन हूऐ हैं और बाहमदीगर अज़ो हैं *
६ पस हम ने उस निअमत के मुवाफ़िक़ जो हमें इनायत हूई जुदा जुदा इनआम पाया सो अगर वुह नबूवत है तो हम नबूवत ईमान
७ के अंदाज़ः के साथ करें * अगर ख़िदमत है तो ख़िदमत में रहें अगर कोई मुअल्लिम होवे तो तअलीम पर और नासिह अपनी

८ नसीहत पर क़ाइम रहे * और क़ासिम ख़ैरात इनसाफ़ से और अमानत करनेवाला जिद ओ जिहद से और इबादत
९ करनेवाला खुशदिली से अपने काम पर रहे * महब्बत बे रिया होवे और बद के अदू और नेक से पैवस्तः रहो *
१० मिहरबरदारी से एक दूसरे पर शफ़क़त करो तअज़ीम की
११ राह से एक एक को फ़रमत दो * कोशिश में कहालत न करो और रूह से चालाक हो खुदावंद की ख़िदमत में रहो *
१२ उम्मेद में शादां बला में साबिर दुआ में पायदार रहो *
१३ मुक़द्दसों की इहतियाज को बांट लो मुसाफ़िर परवरी के जोयां
१४ रहो * उनके लिये जो तुम्हें इज़ा देते हैं बरकत चाहो और
१५ मनाओ लअनत न करो * तुम अहलि सुरूर के साथ मसरूर रहना और रोनेवालों के साथ रोना एकसा मिज़ाज
१६ रखो * आली तबीअत मत हो पस्तों के साथ हमनशीनी
१७ करो अपने तईं ख़िरदमंद मत समझो * बदी के इवज़ में किसी से बदी न करो उनकामों पर जो सारी ख़ल्क़ के आगे
१८ भले हैं आगे से ध्यान रखो * अगर तुमसे हो सके तो
१९ तामक़दूर हर इनसान के साथ मिले रहो * अज़ीज़ो अपना इनतिक़ाम मत लो बल्कि ग़ुस्से की राह छोड़ दो क्योंकि यिह लिखा है कि खुदावंद कहता है कि इनतिक़ाम लेना मेरा
२० काम मैंही मुकाफ़ात करूंगा * पस अगर तेरा दुश्मन भूखा हो उसको लुक़मः दे अगर पियासा हो उसे पानी दे क्योंकि

तू यूं करके उसके सिरपर आग के अंगारों का ढेर करेगा *
२१ बदी का मग़लूब नहो बल्कि बदी पर नेकी से ग़ालिब हो *

तेरहवां बाब

१ हरएक शख़्स कुदरत का जो उस से बालातर है महकूम
२ रहे * क्यूंकि ऐसी कोई कुदरत नहीं जो खुदा की तरफ़
से नहो और जितनी कुदरतें मौजूद हैं सो खुदा ने मुअय्यन
३ की हैं * पस जो कोई कुदरत का साम्हना करता है सो
खुदा की तईनात का मुख़ालिफ़ है और वे जो मुख़ालिफ़ हैं
४ सो अपनी सज़ा के तालिब हैं * कि हुक्काम न इसलिये
डर आते हैं कि नेकोकारी नकरें बल्कि इसलिये कि बदकारी
नकरें पस अगर तू चाहे कि कुदरत से निडर रहे तो नेकी
५ कर कि वुह तेरी मदद करेगा * क्यूंकि वुह ख़ादिमि इलाही
तेरी बिहतरी के लिये है पर अगर तू बद करे तो डर कि
वुह तलवार अबस नहीं पकड़ता कि वुह खुदा का ख़ादिम
६ इसलिये है कि बदकारों को सज़ा देवे * सो तुम सिर्फ़
न उनके गुस्सः से डरके बल्कि तैइब ख़ातिर से अलबत्तः
७ महकूम हो * इसलिये तुम महसूल भी दो कि वे इसी काम
८ के शग़ल के लिये खुदा के ख़ादिम हैं * पस सब का हक़
अदा करो जिस को महसूल चाहिये महसूल और जिसको
ख़िराज चाहिये ख़िराज दो और जिस से डरा चाहिये डरो और
९ जिसकी इज़्ज़त किया चाहिये इज़्ज़त करो * और सिवाय

दीन महब्बत के हमदीगर किसी के मदयून न रहो क्यूंकि
१० जो औरों से महब्बत करता है शरअ़ में पूरा है * इसवास्ते
कि ये हुक्म जो हैं कि तू ज़िना न कर चोरी न कर क़तल न कर
झूठी गवाही न दे तमअ़ न रख और और अह़काम जो उनके
सिवा हैं सब उसके तहत में मुनदरज हैं कि तू अपने
पड़ोसी को ऐसा प्यार कर जैसा आप को करता है *
११ कि महब्बत वुह है जो अपने क़रीब से बदी नहीं करती
इसवास्ते शरअ़ की तकमील जो है वुह ही महब्बत है *
१२ और वक़्त पहचान के इस सब पर अ़मल करो क्यूंकि वक़्त आ
पहुंचा कि हम नींद से जागें इसलिये कि जिस वक़्त
हम ईमान लाये उसवक़्त की निसबत से अब हमारी नजात
१३ नज़दीकतर है * रात बहुत गुज़र गई और सुबह़ नज़दीक
हुई पस आओ हम अंधेरे के शग़लों को तरक करें और
१४ रोशनी की सलाह पहनें * और जैसा दिन को दस्तूर है
आरास्तः होके ख़िराम करें न कि रागरंग और मस्तियां और
ह़राम कारियां और बद परहेज़ियां और झगड़ा और तुंद
१५ मिज़ाजी करें * बल्कि ख़ुदावंद ईसा मसीह़ से मुलब्बस हो
और जिसमानी अंदेशे यहां तक न करो कि तुम त़ामिअ़
बन जाओ *

चौदहवां बाब

१ जो सुस्त इअ़तिक़ाद है उस को आप में शामिल कर लो पर

३ न इसलिये कि बारीक मज़मूनों का मुबाहसः करो * एक
इअतक़ादि करता है कि हरएक चीज़ खा सकता है पर
जो सुस्त इअतिक़ाद है सो सिर्फ़ घास पात खाता है *
३ पस वुह जो खाता है उसको जो नहीं खाता हक़ीर नजाने
और वुह जो नहीं खाता उसको जो खाता है ऐब नकरे
४ क्यूंकि खुदा ने उसको क़बूल किया है * पस तू कौन है
जो दूसरे के नौकर पर तहक्कुम करता है वुह तो अपने आक़ा
के आगे खड़ा है या पड़ा है और वुह खड़ा हो जायगा
५ इसवास्ते कि खुदा उस के खड़ा करने पर क़ादिर है * कोई
एक दिन को दूसरे दिन से अफ़ज़ल जानता है और कोई
सब दिनों को बराबर जानता है जाने हरएक अपने जी में
६ इअतिक़ाद कामिल रखे * और वुह जो दिनों का ख़ियाल
करता है सो खुदावंद के वास्ते ख़ियाल करता है और जो
दिन का ख़ियाल नहीं करता सो खुदावंद के वास्ते नहीं करता
जो खाता है सो खुदावंद के वास्ते खाता है क्यूंकि वुह खुदा
का शुक्र करता है और जो नहीं खाता सो खुदावंद के वास्ते
७ नहीं खाता और खुदा का शुक्र करता है * कि कोई हम
में से अपने वास्ते नहीं जीता और कोई अपने वास्ते
८ नहीं मरता * अगर हम जीते हैं तो खुदावंद के वास्ते
जीते हैं और अगर हम मरते हैं तो खुदावंद के वास्ते
मरते हैं इसलिये हम जीते मरते खुदावंद ही के हैं *

९ और मसीह इसी लिये मूआ और उठा और जिआ कि
१० मुर्दों ज़िंदों का ख़ुदावंद हो * तू किसलिये अपने भाई
पर तहक्कुम करता है और तू किस लिये अपने भाई को ना
चीज़ जानता है कि हम सब मसीह के तख़्त के आगे हाज़िर
११ किये जावेंगे * चुनांचिः यिह लिखा है कि ख़ुदावंद कहता
है कि अपनी हयात की क़सम है हरएक घुटना मेरे आगे
झुकेगा और हरएक ज़बान ख़ुदा के साम्हने इक़रार
१२ करेगी * पस हरएक हम में से ख़ुदा को अपना अपना
१३ हिसाब देगा * पस चाहिये कि हम एक दूसरे पर तहक्कुम नकरें
बल्कि यिह मुक़र्रर करें कि वुह चीज़ जो ठोकर का या
१४ गिरने का बाइस होवे अपने भाई के मुक़ाबिल नरखें * मैं
ख़ुदावंद ईसा के इरशाद से वाक़िफ़ हूं और यक़ीन जानता
हूं कि कोई चीज़ बिज़्ज़ात नापाक नहीं है लेकिन जो
१५ उसको नापाक जानता है उसके लिये नापाक है * पर अगर तेरा
भाई तेरे खानेसे दिक़ होता है तो तू महब्बत के तौर पर
नहीं चलता तू अपनी ख़ुरिश से उसको जिस के वास्ते
१६ मसीह मूआ मत खो दे * चाहिये कि तेरी ख़ूबी की मज़म्मत
१७ नकीजावे * क्यूंकि ख़ुदा की बादशाहत खाना या पीना
नहीं बल्कि वुह रास्ती और आराम और ख़ुश्वक़्ती है जो
१८ रूहि क़ुद्स के सबब से हो * और जो कोई उनही
बातों में मसीह की इताअत करता है ख़ुदा का बरगुज़ीदः

१९ और आदमी का पसंदीदः है * पस ऐसे कामों की पैरवी
करे जो सुलह के मूजिब हों और जिसे एक दूसरे को वढ़ा
२० सके * और खुरिश के लिये खुदा के काम को मत बिगाड़ो
सारी चीज़ें तो पाक हैं पर वुह उस इनसान के लिये जो खाके
२१ ठोकर खिलाता है बुरा है * भला यिह है कि गोश्त न
खाये शराब नपीवे और ऐसा काम नकरे जिस से तेरा भाई
२२ धक्का या ठोकर खाये या सुस्त होजाये * तेरी ईमानदारी मुसल्लम
है तू उसे खुदा के हुज़ूर अपने लिये रख छोड़ नेकवख़्त वुह है जो
अपनेतईं उस काम के सबब जेसे वुह पसंद करके करता है
२३ मलामत नकरे * पर जो किसी चीज़ में शुबहः रखता है अगर
उसे खावे तो गुनहगार ठहरा इसवास्ते कि उसका काम उसके ईमान
से बाहर है और जो कुछ ईमान से बाहर है सो गुनाह है *

पंद्रहवां बाब

१ हमको जो तवाना हैं चाहिये कि नातवानों की सुस्तियों के
२ मुतहम्मिल हों और खुद पसंदी नकरें * बल्कि हर कोई
हम में से भलाई की नीयत से अपने हमसाये की दिलजूई
३ करे ता कि वुह आरास्तः हो * क्यूंकि मसीह भी अपनी
खुशी का जूयां नथा बल्कि जैसा लिखा है कि तेरे मलामत
करनेवालों की मलामतें मुझपर आ पड़ीं ऐसही वाक़िअ
४ हूआ * जो कुछ कि आगे लिखा गया सो हमारी तअ़लीम
के लिये लिखा गया ता हम सबर करके उस इतमीनान के

५ सबब जो किताबों से हासिल होता है उम्मैद रखें * और अब ख़ुदा जो सबर और तसल्ली का मूजिद है तुमको बख़्शे कि तुम मसीह ईसा की बाबत आपस में ऐक दिल रहो *
६ कि तुम ऐक दिल और ऐक ज़बान हो के ख़ुदा की जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का बाप है सिताइश करो *
७ इसवास्ते हरऐक तुम में से दूसरे को शामिल करे चुनांचिः कि मसीह ने भी हमको ख़ुदा की हशमत में शामिल कर लिया *
८ कि मैं कहता हूं कि ईसा मसीह मख़्तूनों का ख़ादिम ख़ुदा की रास्ती के लिये हूआ कि उन वअदों को जो बाप दादों
९ से किये गये ईफ़ा करे * और सारी उम्मतें भी रहम के सबब से जो उनपर हूआ ख़ुदा की तक़दीस करें चुनांचिः लिखागया है कि इसवास्ते मैं ग़ैर क़ौमों के बीच तेरा इक़रार
१० करूंगा और तेरे नाम की मुनक़बत गाऊंगा * और वुह फिर कहता है कि ऐ उम्मतो उस की क़ौम के साथ शादमानी करो *
११ और फिर यिह कहता है कि ऐ सारी उम्मतो ख़ुदावंद की तअरीफ़ करो और ऐ गरोहो तुम सब उसकी सिताइश करो *
१२ और फिर अशइया यिह कहता है कि ऐसा की जड़ रह जायगी और ऐक शख़्स उम्मतों पर ऊकमरानी के लिये
१३ मबऊस होकर सारी उम्मतों का उम्मैदगाह होगा * अब ख़ुदा जो उम्मैदगाह है तुम्हें ईमान लाने के बाइस फ़रहत कामिल और सुलह से लबालब करे ता कि रूहि क़ुदस

१४ की तासीर से तुम्हारी उम्मेद क़वीतर होती जाय * और ऐ मेरे भाईओ मेरा तो तुम्हारे हक़ में यिह इअतिक़ाद है कि तुम ख़ूबियों से मअमूर और अनवाअ दानिश से भरे हो
१५ और बाहम नसीहत करसकते हो * पर ऐ भाईओ मैं ने फ़िलजुमलः जुरअत करके याद दिही के तौर पर कुछ थोड़ासा तुम्हें लिख भेजा क्यूंकि ख़ुदा ने मुझ को इसलिये निअमत बख़शी *
१६ कि मैं ईसा मसीह की जानिब से उम्मतों का पेशवा होकर इंजीलि इलाही की ख़िदमत करूं ता कि उम्मतों की क़ुरबानी
१७ रूहि क़ुदस से तक़्दियः पाकर मक़बूल होजाय * पस मैं उनकामों में जो ख़ुदा के हैं ईसा की बाबत फ़ख़र करसकता
१८ हूं * क्यूंकि करामतों और मुअजिज़ों की क़ुव्वत से और रूहि इलाही की क़ुदरत से जो काम कि मसीह ने मुझ से क़ौलन् और फ़िअलन् कराये ता कि उम्मतें फ़रमांबरदार हों यहांतक कि मैं ने औरशलीम से दौरह करके अलूरक़ून
१९ तक मसीह की इंजील की पूरी मुनादी की * मैं उनके सिवा किसी काम के ज़िकर करने की जुरअत नहीं रखता
२० हूं * सो मैं इस ख़िदमत का मुशताक़ था कि जहां जहां मसीह का नाम नहीं लिया गया वहां बशारत दूं ता न होवे
२१ कि मैं दूसरे की नेव पर रदा रखूं * ता कि जैसा लिखा है कि वे जिन्हों को उसकी ख़बर नहीं पहुंची देखेंगे और
२२ जिन्हों ने नहीं सुना समझेंगे वैसाही होवे * इसी

सबब से मैं तुम्हारे पास आने से अकसर मजबूर हूं *
२३ पर अब इसलिये कि इन अक़्लीमों में जगह बाक़ी नरही
और तुम्हारी मुलाक़ात का भी सालहाय फ़िरवां हूऐ कि
मुश्ताक़ हूं जब असफ़नयः को रवानः हूंगा तुम पस भी
२४ आजाऊंगा * मैं असनाय सफ़र में पहले तुम्हारी दीद करूंगा
और तुम्हारी मुलाक़ात से फ़िलजुमलः सेर होके उम्मैदवार रहूंगा
२५ कि तुम मुझे आगे उसकी सिम्त को रवानः कर दो * पर
बिलफ़िअल मैं औरशलीम को जाता हूं ता कि मुक़द्दस
२६ लोगों की कुछ ख़िदमत करूं * क्यूंकि अहलि मक़दूनियः औ
अख़ाइयः की मरज़ी यों है कि औरशलीम के मुफ़लिस मुक़द्दसों
२७ के लिये कुछ भेजें * यिह उनकी मरज़ी हूई और ये
उनके मदयून भी हैं क्यूंकि जब अग़यार रूहानियात में
उनके शरीक हूऐ हैं तो लाज़िम है कि ये जिसमानियात
२८ में उनकी ख़िदमत करें * पस मैं उसकाम को करके और
ये मेवे उनके क़बज़े में देके तुम पास से होकर असफ़नयः
२९ को जाऊंगा * और मैं जानता हूं कि मेरा आना तुम्हारे
३० पास इंजीलि मसीह की बरकत की मअ़मूरी से होगा * और
ऐ भाईओ मैं तुमसे अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह का और
रूह की महब्बत का वास्तः देके इलतिमास करता हूं कि तुम
मेरेवास्ते मेरे साथ ख़ुदा से दुआऐं मांगने में मिहनत बलीग़
३१ करो * ता कि मैं यहूदियः के बेईमानों से ख़लासी पाऊं और

मेरी वुह ख़िदमत जो औरशलीम के लिये है सो मुक़द्दस
३१ लोगों को पसंद पड़े * तो मैं तुम्हारे पास इनशाल्लाह खुशी
३२ से आऊं और तुम्हारे साथ आसूदगी पाऊं * अब सुलह
३३ खाह खुदा सभों का यार रहे आमीन *

सोलहवां बाब

१ मैं तुमसे फ़ूवा की सुफ़ारिश करता हूं वुह हमारी बहिन है
२ और शहर कंकरयः में कलीसया की ख़ादिमः है * तुम
उस को खुदावंद के वास्ते यूं क़बूल करो जैसा मुक़द्दसों को
लाइक़ है और जिस जिस काम में वुह तुम्हारी मुहताज
हो तुम उसके मददगार हो क्यूंकि वुह बहतों की बल्कि
३ मेरी भी हामियः थी * परसकला और अकला को मेरा
सलाम कहो कि उन्हों ने मेरे साथ होके ईसा मसीह की
४ ख़िदमत की * और मेरी जानके बदले अपना सिर धरदिया
और न सिर्फ़ मैं बल्कि उम्मतों की सारी कलीसयाईं उनकी
५ ममनून हैं * और कलीसया को जो उनके घर में है सलाम
कहो और मेरे महबूब अपीनतस को जो अख़ाइयः का
६ मसीही पहला फल है सलाम कहो * और मरयम को
७ जिसने हमारे वास्ते बहुत मिहनत की सलाम कहो * और
अंदरनीक़स और यूनयः को सलाम कहो कि वे मेरे रिश्तःदार
हैं और ज़िंदान में मेरे शरीक थे और हवारियों में नामदार
हैं और मुझ से पहले मसीह के वारह तन हूए सलाम

८ कहो * और इलयास को जो ख़ुदावंद में होके मेरा हबीब
९ है सलाम कहो * और औरबानूस को जो मसीह के कामों
में मेरा हम ख़िदमत है और मेरे अज़ीज़ अस्ताख़ूस को
१० सलाम कहो * और अपल्ला को जो मअ़्तबर मसीही है
सलाम कहो और अरस्तबूलस के लोगों को सलाम कहो *
११ और मेरे रिश्तःदार हिरूदियों को सलाम कहो और नरगस
१२ के लोगों को जो ख़ुदावंद में हैं सलाम कहो * और त्रूफ़िना
और त्रूफ़ूसा को जो ख़ुदावंद के वास्ते मिहनत करती है सलाम
कहो और अज़ीज़ः परस को जिसने ख़ुदावंद के लिये बहुत
१३ मिहनत की है सलाम कहो * और रूफ़स को जो ख़ुदावंद
के उज़्वों में बरगुज़ीदः है और उसकी मा को जो मेरीही
१४ मा है सलाम कहो * और असनक्रितुस और फ़लजून और
हरमा और पत्रबा और हरमास और भाइओं को जो उनके
१५ साथ हैं सलाम कहो * और फ़ल्लजूस और यूलिया और
नेरूस और उसकी बहिन को और अलम्पास और सारे मुक़द्दसों
१६ को जो उनके साथ हैं सलाम कहो * और तुम मुक़द्दसानः
बोसः लेके बाहम एक दूसरे को सलाम करो और मसीह की
१७ कलीसयाईं तुम्हें सलाम कहती हैं * ऐ भाईओ मैं तुम
से मिन्नत इलतिमास करता हूं कि तुम उनलोगों को जो उस
तअ़्लीम के बरख़िलाफ़ जो तुम ने पाई फ़साद के और ठोकर
खिलाने के बानी हैं पहचान रखो और उनसे किनारः करो

१८ हो * क्यूंकि जो ऐसे हैं सो हमारे खुदावंद ईसा मसीह की नहीं
बल्कि अपनी शिकम की बंदगी करते हैं और खुशनुमा बातें और
१९ दुआये खेर से सादःदिलों को फ़रेव देते हैं * तुम्हारी इताअत सब
में मशहूर हुई है इसवास्ते मैं तुम से खुश हूं लेकिन मै चिह
२० चाहता हूं कि तुम नेकी में पुख़्तःकार और वदीसे मुवर्रा रहो * और
खुदा जो सुलह ख़्वाह है शैतान तुम्हारे पाओं तले जल्द लटरवायेगा
हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़्ल तुम्हारे साथ हमेशः
२१ होवे * और मेरा हमपेशः तीमताउस और मेरे रिश्तःदार लूकयूस
२२ और यासूसों और सूस पतरस तुम्हें सलाम कहते हैं * और
मैं तरतयूस जो इस नामः का नवीसिंदः हूं तुमको खुदावंद में
२३ होके सलाम कहता हूं * और जावूस जो मेरा और सारी
कलीसया का मेज़्वान है तुम्हें सलाम कहता है और यरास्तस
ख़ज़ांची शहर और भाई क्वारतस तुमको सलाम कहते हैं *
२४ अब हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़्ल तुम सब पर रहे
२५ आमीम * वुह जो तुमको उस बात पर जिसकी मैं ने खुशख़बरी
दी और जिस में ईसा मसीह की मुनादी की जाती है यअ़ने
उस सिर्र निहां पर क़ाइम रख सकता है जो अज़ल से निहां
२६ था और अब अयां हुआ * और नबियों की किताबों के सबब
खुदाय अबदी फ़रमान के मुताबिक सारी उम्मतोंपर आशकारा किया
२७ गया के ईमान लाके फ़रमांबरदार हों * उसको वुह जो खुदाय वाहिद
दाना है ईसा मसीह की वसातत से हम्द पहुंचा करे आमीन *

पूलूस का पहला मकतूब क़ुरिन्तियों को

पहला बाब

१ पूलूस की तरफ़ से जो ख़ुदा के हुक्म से ईसा मसीह का
२ बरगुज़ीद: हवारी है और भाई सूसतनीस ✱ ख़ुदा की उस कलीसा को जो क़ुरिन्तस में है यअ़ने उनको जो ईसा मसीह में होके पाक हूए और बरगुज़ीदगान मुक़द्दस हैं उन सब समेत जो हर मकान में ईसा मसीह का नाम जो हमारा
३ और उनका ख़ुदावंद है लिया करते हैं ✱ हमारे बाप ख़ुदा की और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से निअ़मत और
४ आराम तुम्हारे लिये होवे ✱ मैं तुम्हारे लिये हमेश: अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूं कि ख़ुदा की निअ़मत तुमको इस
५ सबब से कि ईसा मसीह में हो दी गई ✱ और हर चीज़ की और तमाम बयान और तमाम फ़हमीद की इस्तिअ़दाद

६ उसके सबब से तुम में बख़्त है * चुनांचिः ख़ुद्र गवाही जो
७ मसीह पर दी गई तुम में साबित हुई * ता बहहे कि तुम
किसी कएमत में कमतर नहीं और हमारे ख़ुदावंद ईसा
८ मसीह के फ़हूर को राह तकते हो * वही तुम्हें इनतिहा
तक साबित क़दम रखेगा कि तुम हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
९ की अदालत के दिन इलज़ाम के सज़ावार नहो * ख़ुदा
अमीन है उसी ने तुमको तलब किया कि उसके बेटे
१० और हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के शरीक हो * ऐ भाईओ
मैं तुमसे ईसा मसीह के नाम के वास्ते जो हमारा ख़ुदावंद
है इलतिमास करता हूं कि अब तुमसब एकही बात बोलो
और दोई तुम में नहोवे बल्कि फ़हम और मफ़हूम में
११ मुत्तहिद हो * भाईओ मुझे क़्लाइ के लोगों से यूं मअलूम
१२ हूआ कि बाहम तुम में झगड़े हैं * मेरा मतलब यिह है
कि तुम में से हरएक कहता है कि मैं पूलूस का मैं अफ़लूस
१३ का मैं कफ़ा का मैं मसीह का हूं * तो क्या मसीह मुनक़सम
होगया या पूलूस तुम्हारे वास्ते सलीब पर खैंचा गया या
१४ तुमने पूलूस के नाम से इस्तिबाग़ पाया * बल्कि मैं ख़ुदा का
शुकर करता हूं कि मैं ने तुम में से किसी को क़रसपस
१५ और जायस के सिवा इस्तिबाग़ नहीं दिया * न होवे कि
१६ कोई कहे कि उसने अपने नामसे इस्तिबाग़ दिया * और
मैं ने इस्तफ़ान के ख़ानदान को भी इस्तिबाग़ दिया और सिवा

उनके मैं नहीं जानता कि मैं ने किसी और को इस्तिबाग़
१७ दिया है * क्यूंकि मसीह ने मुझे इस्तिबाग़ देने को नहीं
भेजा इसलिये भेजा कि इंजील की ख़बर दूं पर न नुत्क़ के
१८ हीलों से मबादा मसीह की सलीब बे नफ़अ ठहरे * सलीब
की रवायत उनके लिये जो अहलि हलाकत हैं हिमाक़त
है पर हमारे लिये जो नाजी हैं ख़ुदा की क़ुदरत है *
१९ लिखा है कि मैं हकीमों की हिकमत को न पैदा और
२० फ़हीमों के फ़हम को नेस्त करूंगा * कहां हकीम कहां
कातिब कहां इस जहान का बहस करनेवाला क्या ख़ुदा ने
२१ दुनया की हिकमत को हिमाक़त नहीं किया * इसलिये
कि जब हिकमति इलाही से यूं हुआ कि दुनया ने अपनी
हिकमत से ख़ुदा को न पहचाना तो ख़ुदा की यिह मरज़ी
२२ हुई कि बशारत की हिमाक़त से मोमिनों को बचावे * चुनांचि
यहूदी कोई अलामत तलब करते हैं और यूनानी लोग
२३ हिकमत की तलाश करते हैं * हम मसीह की जो मसलूब
हुआ मुनादी करते हैं कि वुह यहूदियों के लिये संगि मसादम
२४ और यूनानियों के लिये हिमाक़त है * मसीह उनके लिये जो
तलब किये गये हैं क्या यहूदी क्या यूनानी ख़ुदा की क़ुदरत और
२५ ख़ुदा की हिकमत है * क्यूंकि ख़ुदा का अहमक़ानः काम आदमियों
से आक़िलतर और ख़ुदा का ज़ईफ़ानः फ़िअल आदमियों से
२६ क़वीतर है * ऐ भाईओ तुम उन पर जो तलब किये गये

हैं निगाह करो कि उनमें बहुत से दुनयवी हकीम और
२७ बहुत अमीर और बहुत से शरीफ़ नहीं हैं * बल्कि खुदा ने
दुनया की अबलह चीज़ों को बरगुज़ीदः किया ता कि हकीमों
को खजिल करे और खुदा ने दुनया की कमज़ोर चीज़ों को
२८ पसंद किया ता कि ज़ोरआवर चीज़ों को शरमिंदः करे * और
दुनया के कमज़ाती और हकीरों को और उन चीज़ों को जो
मौजूद नहीं गिनी जातीं खुदा ने इनतिख़ाब किया ता कि उन
२९ चीज़ों को जो मौजूद हैं मअदूम करे * ता कि कोई बशर
३० उसके आगे फ़ख़र न कर सके * लेकिन तुम ईसा मसीह
में होके उसके हो कि वुह हमारे लिये हिकमति इलाही
३१ और रास्तबाज़ी और तहारत और ख़लासी है * ता कि जैसा
लिखा है कि जो फ़ख़र करे सो खुदावंद पर करे ऐसाही
वाक़िअ होवे *

दूसरा बाब

१ और ऐ भाईओ मैं तुम्हारे पास जब आया तब न नुतक़
हिकमत की फ़ज़ीलत बयान करता हूआ बल्कि खुदा के
२ इरशाद की ख़बर देता आया * क्यूंकि मैं ने सिवा इसके
कि ईसा मसीह को और उसके मसलूब होने को तुम में
जानूं और किसी चीज़ का पहचानना तसमीम नहीं किया *
३ और मैं नातवान और हिरासां और निपट लरज़ां तुम्हारे
४ पास था * और मेरी बातें और मेरी मुनादी हिकमति

इनसानी की मुद्दलल बातें नहीं बल्कि रूह औ तासीर की
५ बुरहान के साथ था * ता कि तुम्हारा ईमान न हिकमति
इनसानी से बल्कि ख़ुदा की क़ुदरत से मुतअ़ल्लिक़ होवे *
६ लेकिन हम कामिलों के आगे हिकमत की बात बोल जाते हैं
मगर इस जहान की और इस जहान के फ़ानी हाकिमों की
७ हिकमत नहीं बोलते * बल्कि हम वुह हिकमति इलाही
बोलते हैं जो सिर्रिनिहां है यअ़ने वुह पोशीदः हिकमत जिसे
ख़ुदा ने क़बल अज़् वुजूदि आ़लम हमारी हशमत के ख़ातिर
८ मुक़र्रर किया * पर किसी ने दुनयवी हाकिमों में से उसको
नजाना कि अगर वे जानते होते तो ख़ुदावंद हशमत को
९ मस्लूब नकरते * लेकिन जैसा लिखा था ख़ुदा ने अपने
आ़शिक़ों के लिये वे चीज़ें तैयार कियां जो न आंखों ने देखीं
न कानों ने सुनीं और इनसान के फ़हम में नहीं आतीं *
१० और ख़ुदा ने उनको अपनी रूह की वसातत से हम पर
आशकारा किया कि रूह सारी चीज़ों को बल्कि बहरि उलूहियत
११ के उमक़ को भी दरयाफ़्त करता है * कि आदमी की रूह
के सिवा जो उस में है कौन उसके अह़वाल को जानता
है इसी तरह कोई ख़ुदा की रूह के सिवा ख़ुदा का हाल
१२ नहीं जानता * अब हमने न दुनया की रूह बल्कि वुह
रूह जो ख़ुदा की जानिब से है पाई ता कि हम उनचीज़ों
१३ को जो ख़ुदा ने हमें बख़्शीं जानें * और हम उनचीज़ों

को न हिकमति इनसानी के बनाये हूए लफ़ज़ों में बल्कि रूहि क़ुद्स की सिखलाई हुई बातों में ग़रज़ रूहानी चीज़ों को रूहानी इबारत से मुक़ारिन करके बयान करते हैं *
१४ मगर नफ़सानी आदमी ख़ुदा की रूह की बातों को क़बूल नहीं करता कि वुह उसके आगे हिमाक़तें हैं और न वुह उनको जान सकता है क्यूंकि वे रूहानियत के तौर पर बूझी
१५ जाती हैं * और वुह जो रूहानी है सो सब बातों को मअ़लूम करता है पर वुह आप किसी को मअ़लूम नहीं होता इसलिये कि ख़ुदावंद की फ़हमीद को किसने जाना है कि उसका मुशीर हो मगर मसीह का फ़हम हम में है *

तीसरा बाब

१ और ऐ भाईओ मुमकिन नथा कि मैं तुमसे यूं बोलूं जैसा रूहानियों से बल्कि यूं बोलाहूं जैसा जिसमानियों से
२ और उनसे जो मसीह में तिफ़्ल हैं * मैं ने तुम्हें गोश्त न खिलाया बल्कि दूध पिलाया क्यूंकि तुम क़ादिर नथे और
३ अबतक क़ादिर नहीं कि हनोज़ जिसमानी हो * क्यूंकि हरगाह तुन्दी और क़ज़ियःगरी और जुदाई तुम में है तो क्या यिह नहीं कि तुम जिसमानी हो और आदमी की
४ रविश पर चलते हो * इसलिये कि जब ऐक कहता है कि मैं पूलूस का हूं और दूसरा कि मैं अफ़लूस का हूं
५ तो क्या तुम जिसमानी नहीं * पूलूस कौन और अफ़लूस

कौन है ख़िद्मत करनेवाले जिनके वसीले से तुम ईमान लाये
६ सो भी इतना जितना खुदावंद ने हरऐक को बख़्शा * मैं ने
दरख़्त लगाया और अफ़लूस ने पानी दिया पर ख़ुदा ने बढ़ाया *
७ पस लगानेवाला कुछ चीज़ नहीं और न पानीदेनेवाला मगर
८ ख़ुदा जो बढ़ानेवाला है * लगाने वाला और पानीदेनेवाला
दोनों ऐक हैं और हरऐक मिहनत के मुवाफ़िक़ अपना
९ अज्र पावेगा * कि हम सब ख़ुदाके मज़्दूरे हैं और तुम
१० ख़ुदाकी ज़राअत और ख़ुदा की इमारत हो * मैं ने ख़ुदा की
निअ्मत के मुवाफ़िक़ जो मुझे दी गई आक़िल मिअ्मार की
मानंद नेव डाली और दूसरा उस पर रद्दा धरता है सो हरऐक
११ ग़ौर करे कि वुह किस तौर से धरता है * क्यूंकि सिवा
उस नेव के जो डाली गई कोई दूसरी नेव डाल नहीं सकता वुह
१२ ईसा मसीह है * पर अगर कोई उस नेव पर सोने रूपे
१३ बेशक़ीमत पत्थर लकड़ी घास भूस का रद्दा रखे * तो हरऐक
का काम ज़ाहिर होगा कि वुह दिन उसको ज़ाहिर करेगा
कि ऐसे काम आगसे परखे जाते हैं और जिसका काम
१४ जैसा है आग साबित करेगी * जिसका बनाया हूआ काम
१५ क़ाइम रहेगा वुह अज्र पावेगा * और जिसका काम
जल जायगा वुह ख़िसारः उठायगा वुह आप तो बच जायगा पर
ऐसा जैसा कोई आतिशज़दःगी से आप बच रहता है *
१६ क्या तुम नहीं जानते कि तुम इबादतख़ानए ख़ुदा हो और

१७ ख़ुदा की रूह तुम में बस्ती है * और कोई ख़ुदा का
इबादतख़ानः उजाड़े तो ख़ुदा उसको उजाड़ेगा क्यूंकि ख़ुदा का
१८ इबादतख़ानः मुक़द्दस है और वुह तुम हो * जो कोई
तुम्हारे दरमियान आपको दुनयवी उमूर में हिकमी जाने तो
१९ अबलह बने ता कि साहिबि हिकाम होवे * क्यूंकि दुनया की
हिकमत ख़ुदा के आगे हिमाक़त है यिह लिखा है कि वुह
साहिबि हिकमतों को उनही की चतुराईयों से गिरिफ़्तार करता
२० है * और यिह कि ख़ुदावंद अहलि हिकमत के ख़ियालों
२१ को जानता है कि बातिल हैं * पस कोई इनसान इनसान
२२ पर नाज़िश नकरे कि सारी चीज़ें तुम्हारी हैं * क्या
पूलूस क्या अफ़लूस क्या काफ़ा क्या दुनया क्या ज़िंदगी
क्या मौत और क्या हाल की चीज़ें और क्या आयंदः की
२३ सब तुम्हारी हैं * और तुम मसीह के हो और मसीह
ख़ुदा का है *

चौथा बाब

१ आदमी हमको ऐसाही जाने जैसे मसीह के ख़िदमतगुज़ार
२ और ख़ुदा के असरार के मुख़्तार कार * और मुख़्तार कार
में इस बात की तलाश की जाती है कि वुह दियानतदार
३ होवे * लेकिन मुझको कुछ उसकी परवा नहीं कि मुझे
तुम्हारी या किसी इनसान की आदम शिनासी परखे बल्कि में
४ आप भी आपको नहीं परखता * क्यूंकि मेरा नफ़्स किसी

बात में मुझे मलामत नहीं करता पर मैं कुछ इस से रास्तबाज़
५ नहीं ठहरता मेरा परखनेवाला ख़ुदावंद है * इसवास्ते जबतक
कि ख़ुदावंद न आवे तुम क़बल अज़ वक़्त इनसाफ़ न करो
वुह उनचीज़ों को जो तारीकी में हैं रोशन करेगा
और दिलों के भेदों को ज़ाहिर करेगा उस वक़्त हरएक
६ शख़्स ख़ुदा का ममदूह होगा * और ऐ भाईओ मैं ने इन बातों
में तुम्हारे फ़ायदे के वास्ते अपना और अफ़लूस का ज़िक्र मिसाल
के तौर पर किया ता कि तुम ऐसे ख़ियाल जो मकतूब से
बालातर हैं हमारी वसातत से सीखके न करो न होवे कि तुम
७ एक की निसबत दूसरी की बुराई करके फूलो * कौन तुझे
दूसरे से मुमताज़ करता है और तुझपने क्या है जो तू ने
दूसरे से नहीं पाया और जब तूने दूसरे से पाया तो क्यूं
८ यूं फ़ख़र करता है कि गोया दूसरे से नहीं पाया * तुम
आप तो आसूदः और दौलतमंद हूऐ और हमसब से
मुस्तग़नी हो ख़ैर काशकि तुम मुस्तग़नी होते तो हम भी तुम्हारे
९ साथ मुस्तग़नी होते * मेरी दानिस्त में ख़ुदा ने हमको जो
पिछले हवारी हैं ऐसा नुमूद किया गोया हमारे क़तल पर
फ़तवा दिया गया है कि हम दुनया और फ़िरिश्तों और
१० आदमियों के लिये एक सैर अंग ठहरे हैं * हम मसीह
के सबब से अहमक़ हैं पर तुम मसीह में होके ख़िरदमंद
हो हम नातवान तुम तवानां हो तुम इज़्ज़तवाले हम बेइज़्ज़त

११ हैं * हम इस दम तक भूखे प्यासे नंगे मारखानेवाले और
१२ आवारः हैं * और अपने हाथों से मिह्नतें करते हैं वे
मलामत करते हैं हम भला मनाते हैं वे सताते हैं हम
१३ सहते हैं * वे बद गोई करते हैं हम समाजत करते हैं
और दुनया में कूड़े की और सब चीज़ों की कसाफ़त की
१४ मानंद आज तक हैं * मैं तुम्हें इसतौर से यिह बातें
नहीं लिखता हूं कि तुम नदामत खैंचो बल्कि उस तौर से
कि गोया अपने अज़ीज़ फ़रज़ंद को नसीहत करता हूं *
१५ क्यूंकि अगरचिः तुमने मसीह में होके दस हज़ार मुअल्लिम रखे
पर तुम्हारे बाप बहुत से न हूए इसलिये कि मैं अकेला
इंजील के वसीले से मसीह ईसा के आलम में तुम्हारा बाप
१६ हूआ * पस मैं तुम से यिह इलतिमास करता हूं कि तुम
१७ मेरी पैरवी करो * इसवास्ते मैं ने तीमताऊस को जो
मेरा फ़रज़ंद अरजमंद और ख़ुदा की बात में दियानतदार है
तुम पास भेजा कि वुह मेरी रविशें जो मसीह में हैं जिसतरह
मैं हरकहीं हरएक कलीसया में बतलाता हूं तुम को याद
१८ दिलावे * बअज़े यिह समझ के फूलते हैं कि मैं तुम्हारे
१९ पास नहीं आनेका * पर अगर ख़ुदावंद चाहे तो मैं तुम्हारे
पास जल्द आऊंगा न शेख़ीकरनेवालों की बातों को बल्कि उनके
२० इख़्तिअदाद को दरयाफ़्त करूंगा * क्यूंकि ख़ुदा की बादशाहत
२१ बात से मुतअल्लिक़ नहीं वुह तो क़ुव्वत से है * तुम क्या

चाहते हो मैं तुम्हारे पास लठ पकड़ के आऊं या महब्बत और रूही फ़रोतनी से *

पांचवां बाब

१ इसका तमाम शुहरा है कि तुम्हारे बीच हरामकारी होती है और ऐसी हरामकारी जिस का ग़ैर क़ौमों में भी कोई मज़कूर नाम नहीं कि आदमी अपने बाप की जोरू को रखता है *
२ और तुम फूलते हो ग़म नहीं खाते जो वाजिब था ता कि जिसने यिह काम किया वुह तुम्हारे बीच से निकाला जावे *
३ कि मैं ने ग़ैबति जिसमानी में हुज़ूरि रूही से इस तरह कि गोया सचमुच हाज़िर था उस पर जिसने ऐसा किया
४ यिह फ़तवा दिया * कि तुम और रूह जो मेरी है हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की क़ुव्वत के साथ बाहम होकर ऐसे
५ शख़्स को हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का नाम लेके * शैतान को सौंपो ता कि जिसमी दुख खैंचे कि उसकी रूह ख़ुदावंद
६ ईसा मसीह के दिन बचाई जावे * तुम्हारा फ़ख़र करना ख़ूब नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ासा ख़मीर सारे पिंडे को
७ ख़मीर कर डालता है * पस तुम पुराने ख़मीर को निकाल फेंको ता कि तुम क़ुर्स ताज़ः बनो तुम भी फ़तीरी हो इसलिये कि हमारा भी फ़सह यअ़ने मसीह हमारे लिये क़ुरबानी
८ किया गया * इसलिये आओ हम न पुराने ख़मीर से और न बदी और शरारत के ख़मीर से बल्कि ख़ुलूस और रास्ती

९ की फ़क़ीरी रोटी से ईद करें * मैं ने नामः में तुमको यिह
१० लिखा कि तुम हराम कारों में मत मिले रहो * लेकिन न
यिह कि बिल्कुल दुनया के हराम कारों या लालचियों या
ज़ालिमों या बुतपरस्तों से नमिलो नहीं तो तुम्हें दुनया से
११ निकलना ज़रूर होता * पर मैं ने अब तुम्हें यिह लिखा
है कि अगर कोई जो वनाम भाई होके हरामकारी या लालच
या बुतपरस्ती या फ़ह्हाशी या मै परस्ती या ग़ारतगरी करे तो तुम
उस से मेल नरखना बल्कि ऐसेके साथ खाना तक नखाना *
१२ क्यूंकि मुझे क्या काम है जो ख़ारजियों पर हुक्म करूं क्या
तुम्हें उन पर जो तुम में शामिल हैं हुक्म करना नहीं
१३ पहुंचता * कि उन पर जो ख़ारिज हैं ख़ुदा हुक्म करता है
ग़रज़ तुम उस बुरे आदमी को अपने दरमियान से ख़ारिज करो *

छठा बाब

१ आया तुम में से किसी की यिह जुरअत है कि दूसरे से मुनाक़शः
करके फ़ैसलः के लिये वेदीनों पास जावे न कि मुक़द्दसों पास *
२ क्या तुम नहीं जानते कि अहलि मुक़द्दस दुनया का फ़ैसलः करेंगे
पस अगर दुनया का फ़ैसलः तुमसे किया जायगा तो क्या तुम सहल
३ क़ज़ियों के इनफ़िसाल करने के लाइक़ नहीं हो * क्या तुम
नहीं जानते कि हम फ़िरिश्तों का फ़ैसलः करेंगे पस क्या उमूरि
४ दुनयवी का इनफ़िसाल नकरेंगे * इसवास्ते अगर तुम में दुनयवी
क़ज़ये हों तो कलीसया के उन शख़्सों जो हक़ीर हैं पंच

५ मानो * मैं यिह इसलिये कहता हूं कि तुम शरमिंदः हो
क्या ऐसा है कि तुम्हारे दरमियान एक ख़िरदमंद भी नहीं
६ जो अपने भाइओं का इनसाफ़ से फ़ैसलः करसके * कि
भाई भाई से क़ज़ियः करता है और बेईमानों के आगे करता
७ है * पर यिह तुम्हारा क़ुसूरि कुल्ली है कि तुम आपस में
क़ज़ियः करते हो मज़लूम होना क्यूं नहीं इख़्तियार करते
८ और अपना नुक़सान क्यूं नहीं क़बूल करते * कि तुम
आपही एक तो ज़ुल्म और ज़बरदस्ती करते हो और दूसरे
९ भाइओं पर * पस क्या तुम बेइत्तिलाअ हो कि कजबाज़ लोग
ख़ुदा की बादशाहत के वारिस् नहोंगे फ़रेब नखाओ कि हरम
कार और बुतपरस्त और ज़ानी और माबून और लाती *
१० और चोर और लालची और मै परस्त और फ़ह्हाश और
११ ग़ारतगर ख़ुदा की बादशाहत के वारिस् नहोंगे * और बअ़ज़े
तुम्हारे दरमियान ऐसे थे पर तुम ख़ुदावंद ईसा के नाम से
और हमारे ख़ुदा की रूह से ग़ुसल याफ़्तः और पाक हूए
१२ और रास्तबाज़ भी ठहरे * सारी चीज़ें मेरे लिये रवा हैं पर
न सब मुनासिब हैं अगरचिः सब मेरे बस में हैं पर मैं किसी के
१३ बस में न हूंगा * ख़ुरिशें पेट के लिये हैं और पेट ख़ुरिशों के लिये
पर ख़ुदा उसको और उनको नाबूद करेगा मगर बदन हरमकारी
के लिये नहीं बल्कि ख़ुदावंद के लिये है और ख़ुदावंद बदन के
१४ लिये * और ख़ुदा ने ख़ुदावंद को उठा बैठाया है और तुमको भी

१५ अपनी क़ुदरत से उठायगा * क्या तुम आगाह नहीं कि
तुम्हारे अबदान मसीह के अअज़ा हैं पस क्या मैं मसीह के
१६ अज़वों को लेकर फ़ाहिशः के अअज़ा बनाऊं * ख़ुदा नकरे
क्या तुमको ख़बर नहीं कि जो कोई क़हबः से मुजामअत
करता है सो उस से ऐक तन हूआ क्यूंकि वही कहता है
१७ कि ऐसे दोनों ऐक तन होंगे * पर वुह जो ख़ुदावंद से
मिला हूआ है सो उसके साथ ऐक जान हूआ है *
१८ हरामकारी से भागो जो गुनाह आदमी करता है वुह बदन
के बाहर है पर ज़िना करनेवाला अपने बदन का गुनहगार
१९ है * क्या तुम इस से जाहिल हो कि तुम रूहि क़ुदस के
जो तुम में बसता है जिसको तुमने ख़ुदा से पाया है महल्ल
२० हो और तुम अपने नहीं हो * क्यूंकि तुम मोल लिये
गये हो पस तुम अपने तन से और अपने मनसे जो ख़ुदा के
हैं ख़ुदा की तक़दीस करो *

सातवां बाब

१ बाक़ी जिस मुक़द्दमे में तुमने मुझे लिखा है सो बिहतर तो
२ यिह है कि मर्द रंडी को मस न करे * लेकिन हराम से
बच रहने को हर ऐक मर्द ऐक जोरू और हरऐक रंडी ऐक
३ ख़सम करे * ख़सम जोरू पर ऐसी मिहरबानियां करे जो
४ लाइक़ हैं और ऐसही जोरू ख़सम पर * जोरू अपने बदन
की मुख़तार नहीं बल्कि ख़सम मुख़तार है इसी तरह ख़सम

भी अपने बदन का मुख़तार नहीं बल्कि जोरू मुख़तार है *
५ तुम एक दूसरे से जुदा नरहो मगर थोड़ी मुद्दत तरफ़ैन की रज़ामन्दी से ताकि रोज़ः और दुआ करने के वास्ते फ़राग़त हासिल करो और फिर बाहम एकजा होओ ताकि शैतान तुम को तुम्हारी बे इमतिज़ाती के सबब से बरग़लाने
६ नपाये * और मैं जवाज़न कहता हूं हुक्म नहीं करता *
७ कि मैं यिह चाहता हूं कि जैसा मैं हूं ऐसेही सब होवें पर सब ने अपना अपना हिस्सः ख़ुदा के यहां से पाया
८ एक ने यों और दूसरे ने वों * सो मैं नाकदख़ुदा मर्दों और बेओं से यिह कहता हूं कि औला यों है कि वे ऐसे
९ रहें जैसा मैं हूं * लेकिन अगर ज़बत नकर सकें तो व्याह करें इसवास्ते कि व्याह करना जलजाने से बिहतर है *
१० पर मैं उनको जिन का व्याह हुआ है हुक्म करता हूं मैं नहीं ख़ुदावंद हुक्म करता है कि जोरू अपने ख़सम
११ को नछोड़े * और अगर छोड़े तो वुह बे निकाह रहे या अपने ख़सम से फिरे सुलह करे और ख़सम अपनी
१२ जोरू को तरक नकरे * और बाक़ी जो कुछ है ख़ुदावंद नहीं कहता मैं कहता हूं कि अगर किसी भाई की जोरू बेईमान हो और उसके साथ रहने को रज़ामंद
१३ हो तो वुह उसको नछोड़े * या किसी रंडी का ख़सम बेईमान होए और वुह उसको साथ रखने पर रज़ामंद हो

१४ तो वुह भी उस को नछोड़े * क्यूंकि वे ईमान ख़सम अपनी जोरू के सबब से पाक हूआ और वेईमान जोरू ख़सम के बाइस से पाक हूई है नहीं तो तुम्हारे फ़रज़ंद नापाक
१५ होते पर अब पाक हैं * पर अगर वेईमान आप को जुदा करे तो करे लेकिन हमारे भाई और बहिनें ऐसी बातों के क़ैद ओ बंद में नहीं और खुदाने हमको मिलाप में
१६ बुलाया है * ऐ रंडी क्या जाने तू अपने ख़सम को बचावे
१७ और ऐ मर्द क्या जाने तू अपनी जोरू को बचावे * ख़ैर जैसा खुदा से हरएक को हिस्सः मिला और जिसतरह से खुदा ने हरएक को बुलाया वुह वैसाही रहे और मैं सारी
१८ कलीसयाओं में ऐसाही मुक़र्रर करता हूं * अगर कोई मख़्तून होकर बुलाया गया तो ना मख़्तून नहो और अगर कोई
१९ नामख़्तूनी में बुलाया गया तो मख़्तून नहोवे * ख़तना कुछ नहीं और ना मख़्तूनी भी कुछ नहीं बल्कि खुदा के हुक्मों पर
२० चलना है जो है * जो जिस पेशे में बुलाया गया वुह उसी
२१ में रहे * क्या तू ग़ुलामी की हालत में बुलाया गया तू अंदेशः नकर और अगर तुझे आज़ाद होने की क़ुदरत है तो उसे
२२ इख़्तियार कर * क्यूंकि जिस ग़ुलाम को खुदावंद ने बुलाया वुह खुदावंद का आज़ाद किया हूआ आदमी है और इसी तरह जिस आज़ाद का तलब किया वुह मसीह का ग़ुलाम
२३ है * तुम मोल लिये गये हो पस तुम आदमी के बंदे

२४ नहीं * ग़रज़ ऐ भाईओ जो जिस हालत में बुलाया गया
२५ सो उसी हालत में ख़ुदा के हुज़ूर रहे * पर कुंआरियों के हक़ में ख़ुदावंद का कोई हुक्म मुझ पास नहीं लेकिन जैसा मैं ख़ुदावंद का मूरिदि रह्म होके दियानतदार बना हूं ऐसही
२६ मसलहत देता हूं * सो मेरा यिह गुमान है कि इस ज़माने की तकलीफ़ों पर नज़र करके यिह बिह्तर है क्या बिह्तर
२७ है यिह कि आदमी इस तौर के होवें * कि अगर तू जोरू के बंद में है तो उस से छुटकारा मत चाह और अगर तूने
२८ छुटकारा पाया है तो फिर जोरू मत ढूंढ * लेकिन अगर तू निकाह करे तो गुनाह नहीं करता और अगर कुंआरी ब्याही जावे तो वुह गुनाह नहीं करती पर ऐसे लोग जिसमानी तसदिअ पावेंगे और मैं तुम पर अफ़सोस करता
२९ हूं * और ऐ भाईओ मैं तुमसे यिह कहता हू कि वक़्त तंग है इसवास्ते चाहिये कि जोरूवाले ऐसे होवें जैसे उनके
३० जोरूआं नहीं * और रोनेवाले ऐसे जैसा वे नहीं रोते और ख़ुशीकरनेवाले जैसे वे ख़ुशी नहीं करते और ख़रीदनेवाले ऐसे
३१ जैसे वे मालिक नहीं * और दुनया के कारबार करनेवाले ऐसे होवें कि उनका काम इफ़रात को नपहुंचे क्यूंकि दुनया का तमाशा
३२ गुज़रता चलाजाता है * सो मैं यिह चाहता हूं कि तुम बेअंदेशः रहो वुह जो मुजर्रद है सो ख़ुदावंद के लिये अंदेशःमंद रहता है कि वुह क्यूंकर ख़ुदावंद को राज़ी करे *

३३ पर वुह जो कदखुदा है सो दुनया के वास्ते सोच बिचार करता है कि क्यूंकर वुह अपनी जोरू को राज़ी करे *
३४ व्याही और बिन व्याही में यिह फ़र्क़ है कि बिन व्याही खुदावंद के लिये अंदेशःमंद रहती है कि वुह बदन और रूह में मुक़द्दस बने पर व्याही हुई दुनया के लिये मुतरद्दिद
३५ रहती है कि क्यूंकर अपने ख़सम को ख़ुश आवे * पर मुझे इस कहने से तुम्हारा फ़ाइदः मनज़ूर है यिह नहीं कि मैं तुमपर जाल मारूं बल्कि इसलिये कहता हूं कि तुम आरास्तः हो और खुदावंद की ख़िदमत पर ख़ातिरजमई से क़ाइम
३६ रहो * और अगर कोई अपनी कुंआरी लड़की के हक़ में नामुनासिब जाने कि वुह बलूग़ियत से गुज़रजाये और ऐसाही ज़रूर जाने तो जो चाहता है करले कि वुह गुनाह नहीं
३७ करता निकाह करें * पर जो कोई नाज़रूरी समझ के अपने दिल में मुस्तक़ीम रहे और अपने इरादे के इतमाम पर क़ादिर हो और अपने दिल में यिह ठाने कि मैं अपनी लड़की को बिन व्याही रहने दूंगा तो वुह बिहतर करता है *
३८ ग़रज़ वुह जो व्याह देता है अच्छा करता है और जो व्याह
३९ नहीं देता सो बिहतर करता है * रंडी शरअ से बंधी है जबतक कि उसका ख़सम जीता है पर अगर उसका ख़सम ख़्वाबि अदम करे तब वुह जिस से चाहे निकाह करे मुख़्तार है सिर्फ़ इतना चाहिये कि वुह खुदावंद में निकाह करे *

४० पर अगर वुह वेशौहर रहे तो वुह मेरी दानिस्त में सआदतमंदतर है और मैं जानता हूं कि ख़ुदा की रूह मुझ में है॥

आठवां बाब

१ रहीं वे चीज़ें जो बुतों पर क़ुरबानी की जाती हैं सो हम यिह जानते हैं कि हम सब अहलि फ़हमीद हैं फ़हमीद
२ फलाती है पर उल्फ़त तअमीर करती है॥ और अगर कोई जाने कि कुछ जानता है तो वुह हनोज़ जैसा चाहिये कि
३ जाने नहीं जानता॥ और जो कोई ख़ुदा की महब्बत पैदा करे वुह उसे पहचानता है॥ सो उन चीज़ों की हलाल होने
४ की बाबत जो बुतों पर क़ुरबानी की जाती हैं हम जानते हैं कि बुत मुतलक़न् कुछ चीज़ नहीं और कोई ख़ुदा नहीं
५ मगर एक॥ क्यूंकि हरचंद आसमान ओ ज़मीन में बक़्त से ख़ुदा गुमान किये जाते हैं चुनांचिः बक़ौतेरे ख़ुदा और
६ बक़ौतेरे ख़ुदावंद हैं॥ लेकिन हमारा एक ख़ुदा है जो बाप है जिस से सारी चीज़ें हुईं और हमारी बाज़गश्त उसतक है और एक ख़ुदावंद है जो ईसा मसीह है जिसके सबब से सारी चीज़ें हुईं और हम उसके वसीले से जाते हैं॥
७ लेकिन सबको यिह शिनाख़ नहीं बल्कि कितने बुत पर इअतिक़ाद करके बुतों पर की क़ुरबानी उसनीयत से कि बुत की है आजतक खाते हैं और उनके दिलों में जो ज़ईफ़ हैं

८ आलूदगी पैदा होती है * खाना नहीं जो हमें ख़ुदा से मिलाता है क्यूंकि अगर खावें तो हमें फ़ज़ीलत नहीं और
९ जो नखावें तो नुक़सान नहीं * लेकिन ख़बरदार नहोवे कि जोअख़्ज़ जो तुम्हारे लिये है कहीं कमज़ोरों के लिये
१० संगि मसादिम हो * क्यूंकि अगर कोई तुझे जो ख़िरदमंद है बुतकदे में खाने देखे तो क्या उसका दिल कम ख़िरदी
११ के सबब से बुतों की क़ुरबानी खाने पर दिलेर नहोगा * और तेरा वुह कमज़ोर भाई जिसके लिये मसीह मूआ तेरी ख़िरद से
१२ हलाक होगा * पस तुम भाइओं के यों गुनहगार होके और उनकी अक़्ले नाक़िस को मजरूह करके मसीह के गुनहगार
१३ ठहरते हो * सो अगर कोई ख़ुरिश मेरे भाई के ठोकर खाजाने का बाइस होवे मैं तो अबद तक गोश्त नखाऊं ता नहोवे कि मैं अपने भाई की ठोकर का सबब होऊं *

नवां बाब

१ क्या मैं हवारी नहीं हूं और आज़ाद नहीं हूं और क्या मैं ने ईसा मसीह को जो हमसब का ख़ुदावंद है नहीं देखा है और तुम ख़ुदावंद के कारख़ाने में मेरे बनाये हूए नहीं
२ हो * और अगर मैं दूसरों का हवारी नहीं पर तुम्हारा तो बे शक हूं कि तुम्हारा ख़ुदावंद में होना मेरी रसालत पर मुहर
३ है * और जो मुझे ताड़ते हैं उनके लिये मेरा वुह जवाब
४ है * कि क्या हमें खाने पीने का इख़्तियार नहीं (५) और

क्या हमको यिह क़ुदरत नहीं कि किसी ख़ादिमि मसीही को अक़्द में लावें अपने साथ लिये फिरें जैसा और
६ हवारी और ख़ुदावंद के भाई और काफ़ा करते हैं * या सिर्फ़ मुझे और बरनाबास को मिह्नत न करने का इख़्तियार नहीं *
७ कौन अपना ख़रच करके सिपाहगरी करता है और कौन ताकिस्तान लगाता है कि उसका फल नहीं खाता या कौन गल्ले की पासबानी करता है जो उस गल्ले का कुछ दूध
८ नहीं पीता * क्या मैं आदति इनसानी पर ऐसी बातें बोलता
९ हूं क्या शरअ यूं नहीं कहती * मूसा की शरअ में तो यिह लिखा है कि तू खलियान करते हुए बैल का मुंह
१० मत बांधियो क्या ख़ुदा को बैल की कुछ परवा है * या कि वुह हमारेवास्ते यूं कहता है हां यिह हमारेवास्ते बेशक लिखा है कि चाहिये जोतनेवाला उम्मेद से जोते और जिस
११ उम्मेद से खलियान करता है उस उम्मेद को पावे * सो अगर हमने तुम्हारे लिये रूहानि चीज़ें बोई हैं तो क्या यिह बड़ी बात है कि हम तुम्हारी जिसमानी चीज़ें दूर करें *
१२ और अगर दूसरे लोगों का तुम पर यिह इख़्तियार है तो क्या बतरीक़ औला हमारा इख़्तियार नहीं लेकिन हमने अपना इख़्तियार ज़ाहिर न किया बल्कि सारी बातें सहते हैं न होवे
१३ कि हम मसीह की इंजील के मुज़ाहिम होवें * क्या तुम नहीं जानते कि जो हैकल की ख़िदमत करते हैं सो हैकल

में से खाते हैं और जो क़ुरबानगाह में हाज़िर हूआ करते हैं
१४ सो क़ुरबानगाह में से हिस्सः लेते हैं * और ऐसा ही
ख़ुदावंद ने भी इरशाद किया है कि जो इंजील की बशारत
१५ देनेवाले हैं इंजील से असबाबि ज़िंदगी पावें * पर मैं ने
उन इख़्तियारों में से किसी पर अमल न किया और मैं ने उस
नीयत से नहीं लिखा कि मेरे हक़ में यूं किया जावे क्यूंकि
मुझे मरना क़बूल है न यिह कि कोई मेरे फ़ख़र को खोवे *
१६ इस लिये कि अगर मैं फ़क़त इंजील की ख़बर दूं तो कुछ
मेरा फ़ख़र नहीं क्यूंकि मुझे ज़रूरत पड़ी है और मुझ पर
१७ वावैला है अगर मैं इंजील की ख़बर न दूं * कि अगर मैं
यिह रज़ामंदी से करूं तो अज्र पाऊंगा पर अगर कराहत
से करूं तो तौभी मैं उस ख़ानसामानी से जो मुझे अमानत
१८ दीगई है निकल नहीं गया * पस किसराह से मुझे अज्र
मिलेगा इसराह से कि मैं इंजील की ख़बर देके मसीह की
इंजील को बेमुज़्द ठहराऊं ता कि मैं अपने उस इख़्तियार को
जो इंजील की बाबत है इफ़रात को न पहुंचाऊं *
१९ कि मैं ने सबसे आज़ाद होकर आप को सब का बंदः किया
२० ता कि मैं बहुत से भाई पैदा करूं * और मैं यहूदियों
के दरमियान यहूदीसा हूआ ता कि मैं यहूदी नफ़अ में
पाऊं और मुतशर्रिअ में मैं वैसाही मुतशर्रिअ बना ता कि मैं
२१ मुतशर्रिअ लोग नफ़अ में पाऊं * और वे शरओं को

में वेशरअ़सा हूआ यअ़ने मैं ख़ुदा के नज़्दीक वेशरअ़ नहीं हूआ बल्कि मसीहकी मुतशर्रिअ़ था ता कि मैं वेशरअ़ओं
२१ को नफ़अ़ में लूं * और मैं कमज़ोरों में कमज़ोरसा हूआ ता कि मैं कमज़ोरों को नफ़अ़ में लूं मैं सब आदमियों के वास्ते सब कुछ बना ता कि मैं हरएक तरह से कितनों
२३ को बचाऊं * और मैं यिह इंजील के वास्ते करता हूं ता कि मैं औरों की क़ैल में होके उस में शरीक होजाऊं *
२४ क्या तुम नहीं जानते हो कि मिज़मार में जब दौड़ते हैं तो सब दौड़ते हैं पर बाज़ी ऐकही जीतता है पस तुम ऐसा
२५ दौड़ो कि तुमही जीतो * और हरऐक हरीफ़ सब बातों में मुतक़बित होता है सो वे उस हारके लिये जो फ़ानी है और हम वुह हार पाने को जो ग़ैरफ़ानी है यिह करते
२६ हैं * सो मैं दौड़ता हूं और मैं ऐसा नहीं दौड़ता जैसा मक़सूद वेसिवान की तरफ़ दौड़ते हैं मैं घूसे लड़ता
२७ हूं और हवा को नहीं मारता * बल्कि मैं अपने बदन को पीसे डालता हूं और बांधके घसीटे लिये फिरता हूं नहोवे कि मैं दूसरों को नसीहत करके आप फ़ज़ीहत में पड़ूं *

दसवां बाब

१ पर ए भाईओ मैं नहीं चाहता कि तुम इस से नावाक़िफ़ रहो कि हमारे बापदादे सब अबर के नीचे थे और वे सब
२ दरया में से होकर निकलगये * और सभों ने उस अबर

३ और दरया से मूसाई इस्तिबाग़ पाया * और सभों ने ऐकही
४ क़िस्म का रूहानी खाना खाया * और सभों ने ऐकही नौअ का
रूही पानी पीआ क्यूंकि उन्हों ने उस रूहानी पहाड़ी से
जो उनके साथ चली पानी पीआ और वुह पहाड़ी मसीह
५ था * पर ख़ुदा बहुतों से उनमें नाराज़ था जो वे मैदान में
६ बिछ गये * और वे हादिसे आप हमारे वास्ते नमूनः हूऐ
७ ता कि हम बुराइयों के तालिब नहोवें जैसा वे हूऐ * और
तुम बुत परस्ती नकरो चुनांचिः उन में कई ऐक थे जैसा लिखा
है कि यिह क़ौम खाने पीने बैठी फिर नाचने उठी *
८ और हम हरामकारी नकरें चुनांचिः उनमें से कई ऐक ने की
९ और दिन भर में तीस हज़ार मरगये * और हम मसीह को
ग़ुस्सः नदिलाऐं चुनांचिः उन में से बअ़ज़ों ने दिलाया और
१० सांपों ने उन्हें हलाक किया * और तुम न गिड़गिड़ाओ
चुनांचिः उन में से कई ऐक गिड़गिड़ाये और क़ाबिज़ुल अरवाह
११ ने उन्हें हलाक किया * और ये सब हादिसे जो उन पर
पड़े बाइस इबरत हूऐ और हम जो ज़मानि आख़ीर में हैं
१२ हमारी नसीहत के वास्ते लिखे गये हैं * पस जो कोई
अपने तईं क़ाइम बूझता है सो ख़बरदार रहे ऐसा नहो
१३ कि गिर पड़े * और तुम किसी नौअ के इमतिहान में
सिवा उसके जो इनसान से किया जाता है नहीं पड़े और
ख़ुदा वफ़ा करनेवाला है कि वुह तुमको तुम्हारी वसअ ताक़त

से ज़ियादः इमतिहान में पड़ने न देगा बल्कि वुह इमतिहान के साथ निकलेगी रवील भी ठहरायगा ता कि तुम मुतहम्मिल
१४ हो सको * इसवास्ते ऐ मेरे प्यारे तुम बुत परस्ती से गुरेज़
१५ करो * मै तुम जैसे इमतियाज़ वालों से बोलता हूं तुम मेरे
१६ मतलब को जांचो * क्या यिह बरकत का जाम जिस पर हम बरकत मांगते हैं मसीह के लोहू की शराकत नहीं और क्या हमारा इस रोटी को तोड़ना मसीह के बदन में
१७ शरीक होना नहीं * क्यूंकि हरचंद हम बहुतसे हैं पर जिस के ऐक कुर्स और ऐक तन हैं हमसब ऐक गरोह
१८ में शरीक हैं * तुम उन पर जो जिसनकी राहसे इसराईल में नज़र करो कि जो कुरबानी खानेवाले हैं क्या वे कुरबान
१९ गाह के शरीक नहीं * पस मेरा मतलब क्या यिह है कि बुत
२० या बुतों पर कुरबानी कुछ चीज़ है नहीं * लेकिन अक़्वामि गैर जो कुरबानी करते हैं देवों के लिये करते हैं न खुदा के लिये और मैं नहीं चाहता कि तुम देवों के शरीक हो *
२१ तुम खुदावंद का और देवों का प्यालः नहीं पीसकते और तुम खुदावंद की और देवों की मेज़ में शरीक नहीं हो
२२ सकते * क्या हम खुदावंद को रश्क खिलाया चाहते हैं
२३ क्या हम उस से क़वीतर हैं * सब कुछ मेरे लिये हलाल है पर न कि सब कुछ मुनासिब है और सब कुछ मुझे रवाहै
२४ पर सारी चीज़ें तअमीर कुनिंदः नहीं * कोई अपनी

बिहतरी नढूंढे बल्कि हरएक दूसरे की बिहतरी चाहे *
२५ पस जो कुछ क़स्साबों की दुकानों में पकता है सो खाओ
२६ और दीनदारी के लिये पुरसिश नकरो * क्यूंकि ज़मीन और
२७ उसकी आबादी ख़ुदावंद की है * और अगर बेईमानों में से
कोई तुम्हारी दअ़्वत करे और तुम क़बूल करो तो जो जो कुछ
तुम्हारे साम्हने रखा जाय सो सब खाओ और दीनदारी के लिये
२८ पुरसिश नकरो * पर अगर कोई तुम्हें जता दे कि यिह
बुतों की क़ुरबानी है तो उसकी ख़ातिर जिसने जताया और
दीनदारी की ख़ातिर नखाओ ज़मीन और उसकी आबादी
२९ ख़ुदावंद की है * और उस से मेरा इरादः न तेरी दीनदारी
बल्कि दूसरे की है कि मेरी आज़ादगी को किसवास्ते दूसरे
३० की दीनदारी बदनाम ठहराये * और अगर मैं शुक्र करके
शिरकत करता हूं तो जिस चीज़ पर शुक्र करता हूं उसके
३१ सबब काहेको अपने तईं मलऊ़न कहलाऊं * पस तुम खाते
पीते सब कुछ करते हुए सब कुछ ख़ुदाके जलाल के लिये
३२ करो * तुम यहूदियों को आज़ुर्दः नकरो न यूनानियों को
३३ न ख़ुदा की कलीसया को * चुनांचिः मैं सब बातों में सबको
राज़ी रखता हूं कि न अपना फ़ाइदः बल्कि अकसरों का
ढूंढता हूं ता कि वे नजात पावें *

ग्यारहवां बाब

१ तुम मेरी पैरवी करो चुनांचिः मैंभी मसीह की करता हूं *

२ और ऐ भाईओ मैं तुम्हारी सिताइश करता हूं कि तुम हर बात में मुझे याद रखते हो और तुम उन बातों को जो सोंपी गईं हैं ऐसा हिफ़ज़ करते हो जैसा मैं ने तुम्हारे सुपुर्द
३ किया है * मैं चाहता हूं तुम जानो कि हरएक मर्द का सिर मसीह है और रंडी का सिर मर्द है और मसीह का
४ सिर ख़ुदा है * वुह मर्द जो दुआ या नसीहत करतेवक़्त अपने सिर को ढांपता है अपने सिर को बेक़ुरमत करता है *
५ और वुह रंडी जो नंगे सिर दुआ या नसीहत करती है अपने सिर को बेक़ुरमत करती है वुह ऐसी है जैसे उसका
६ सिर मुंडाया गया * क्यूंकि अगर रंडी ओढ़नी न ओढ़े तो क्या उसकी चोटी कट गई और अगर रंडी चोटी कटने से या
७ सर मुंडने से बेक़ुरमत होती है तो ओढ़नी ओढ़े * मर्द को सर ढांपना ज़रूर नहीं कि वुह ख़ुदा की शबीह और उसका
८ नूर है पर रंडी मर्द का नूर है * इसलिये कि मर्द रंडी से
९ नहीं है बल्कि रंडी मर्द से है * और मर्द रंडी के लिये
१० नहीं बल्कि रंडी मर्द के लिये पैदा की गई है * पस चाहिये कि रंडी अपने सिर को ढांपा रखे क्यूंकि फ़िरिश्ते
११ मौजूद हैं * मगर ख़ुदावंद में न मर्द रंडी से जूदा न रंडी
१२ मर्द से जूदा है * क्यूंकि जैसा रंडी मर्द से है वैसाही मर्द रंडी से है और सारी चीज़ें ख़ुदा से हैं तुम आपही तजवीज़
१३ करो * क्यूं मुनासिब है कि रंडी बेपर्दः होकर ख़ुदा से दुआ मांगे *

१४ क्या खिलक़्त से तुमको मअ़लूम नहीं होता कि अगर मर्द
१५ चोटी रखे तो उसकी बेइ़ज़्ज़ती है * पर अगर रंडी के लंबे
बाल हों तो उसकी शौकत है क्यूंकि यिह उसे सुत्र के वास्ते
१६ दिया गया * लेकिन अगर कोई जंग जो होवे तो
मअ़लूम रहे कि न हमारा न ख़ुदा के कलीसयाओं का यिह
१७ दस्तूर है * और मैं यिह तुम्हें कहता हूं और इस में
तुम्हारी तअ़रीफ़ नहीं करता कि तुम बाहम जमअ़ होके
आते हो कुछ उस में तुम्हारी बिहतरी नहीं बल्कि बदतरी
१८ है * क्यूंकि मैं सुनता हूं कि जब तुम पहले कलीसया
में बाहम होके आते हो तो तुम्हारे बीच इख़्तिलाफ़ होता
१९ है और मैं उसको थोड़ासा बावर करता हूं * क्यूंकि ज़रूर
है कि तुम्हारे बीच कोई बिदअ़त होवे ता कि वे जो मक़बूल
२० हैं तुम में आशकारा होजायें * और फिर जो तुम एकही
मक़ाम में जमअ़ होके आते हो यिह तो ख़ुदावंद तआ़मि
२१ अ़शा खाने के लिये नहीं है * क्यूंकि हरएक दूसरे से
सबक़त करके अपना तआ़म खालेता है और बअ़ज़े भूखे
२२ और बअ़ज़े मस्त होते हैं * क्या तुम खाने पीने के लिये
घर नहीं रखते हो या ख़ुदा की कलीसयाओं को हक़ीर जानते हो
और मिसकीनों को शरमिंदः करते हो अब मैं तुम से क्या कहूं
क्या मैं तुम्हारी तअ़रीफ़ करूं मैं उस अमर में तुम्हारी तअ़रीफ़
२३ नहीं करने का * कि मैं ने यिह बात ख़ुदा से ली और तुम्हें भी

२४ सौंपी कि ख़ुदावंद ईसा ने जिसरात पकड़वाया गया रोटी ली * और शुक्र करके तोड़ी और कहा कि लो खाओ यिह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है तुम मेरी यादगारी के लिये यिह
२५ किया करो * और उसी तरह उसने अशा के बअद पियाला भी लिया और कहा कि यिह पियालः वुह वसीक़ः है जो मेरे लोहू से मौसिक़ है जब जब तुम पीओ मेरी यादगारी के
२६ लिये यूं करो * क्यूंकि जब जब तुम यिह रोटी खाते और यिह पियालः पीते हो तो तुम ख़ुदावंद की मौत को जबतक
२७ कि वुह आजाय दिखाते रहते हो * इसवास्ते जो कोई नामुनासिब वज़अ से यिह रोटी खावे या ख़ुदावंद का पियालः पीवे तो वुह ख़ुदावंद के बदन और लोहू का मुजरिम होगा *
२८ पस आदमी पहले आप को जांचे और इसी तरह रोटी
२९ खावे और पियालः पीवे * क्यूंकि जो बेवजह से खाता और पीता है सो ख़ुदावंद के बदन का अंदेशः न करके अपनी सज़ा
३० खाता और पीता है * इसी सबब से तुम में बहुतेरे कमज़ोर
३१ और बेआराम हैं और कितने सो सो जाते हैं * अगर हम अपने तईं जांचते तो हम सज़ा के मौरद न होते *
३२ और ख़ुदावंद हमें सज़ा देके तरबीयत करता है नहोवे कि हम दुनया के साथ क़तल के हुक्म में शरीक हो जावें *
३३ पस ऐ मेरे भाईओ जबतुम बाहम होके खानेको आओ
३४ तो एक दूसरे का इन्तिज़ार करो * और अगर किसी को

ऐसी ही भूख लगे तो अपने घर में खावे नहोवे कि तुम सज़ा पाने को बाहम आओ बाक़ी बातें सो मैं आगे मुरत्तब करूंगा

बारहवां बाब

१ ए भाइओ मैं नहीं चाहता कि तुम रूहानी निअ़मतों से
२ नावाक़िफ़ रहो * तुम जानते हो कि तुम अजनबी क़ौम थे और गूंगे बुतों के पीछे जिसतरह चलाये गये चलते थे *
३ पस मैं यिह इत्तिलाअ़ देता हूं कि वुह जो ईसा को मलऊ़न कहता है रूहि इलाही के इलहाम से नहीं बोलता और कोई रूहि क़ुदस के इलहाम बिग़ैर ईसा को ख़ुदावंद कह
४ नहीं सकता है * और बख़शिशों के अक़साम हैं रूह ऐकही
५ है * और ख़िदमतों के भी अनवाअ़ हैं पर मख़दूम ऐकही
६ है * और अअ़माल कई तरह के हैं पर ख़ुदा ऐकही
७ है जो सब में सब कुछ करता है * और रूह जो हरऐक
८ में ज़हूर करती है फ़ाइदः आम के लिये है * ऐक को रूह से दानिश की बात मिलती है और दूसरे को उसी रूह से
९ इल्म की बात * और बअ़ज़े को उसी रूह से ईमान और बअ़ज़े
१० को उसी रूह से शिफ़ा बख़शने की क़ुदरत * और बअ़ज़ों को वे अअ़माल जो मुअ़जिज़ हैं और बअ़ज़े को नबूवत और बअ़ज़े रूहों की शिनाख़ और बअ़ज़े को अनवाअ़ ज़बानें और बअ़ज़े को ज़बानों
११ का तरजमः करना * लेकिन वही ऐक रूह उन सब अमलों का

बाइस है और वही जैसा चाहता है हरएक को बांटा करता है *
१२ क्योंकि जिस तरह बदन एक है और अअ़ज़ा बहुत और
एक बदन में ये अअ़ज़ाय कसीर मिलके एक हैं मसीह
१३ भी ऐसाही है * कि हम सबने क्या यहूदी क्या यूनानी
क्या बंदः क्या आज़ाद एकही रूह में एक बदन बन्ने
के लिये ग़ुसल पाया और हम सब को इत्तिहाद रूही के
१४ लिये पिलाया है * और बदन में एक अज़्व नहीं बल्कि
१५ बहुत से हैं * अगर पांओं कहे कि मैं हाथ नहीं तो क्या
१६ वुह इस सबब से बदन का नहीं * और अगर कान कहे
कि मैं आंख नहीं मैं बदन का नहीं तो क्या वुह इस
१७ सबब से बदन का नहीं * अगर सारा बदन आंख होता
तो सुन्ना कहां होता और अगर सब क़ुव्वत सामिअ़ होती
१८ तो शामः कहां होता * पर अब ख़ुदा ने हरएक अ़ज़्व
१९ को बदन में अपनी मरज़ी के मुवाफ़िक़ रखा * पर अगर
२० वे सब एकही अ़ज़्व होते तो बदन कहां होता * पर
२१ अब बहुत से अ़ज़्व हैं लेकिन बदन एक है * आंख
हाथ से नहीं कह सकती कि मैं तेरी मुहताज नहीं और
सिर भी पांओं से नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारा मुहताज
२२ नहीं * बल्कि बदन में वे अ़ज़्व जो ज़ईफ़ मअ़लूम
२३ होते हैं सब से ज़ियादः ज़रूर हैं * और हम जिन
अ़ज़्वों को औरों की निसबत बेइज़्ज़त जानते हैं उन्हीं को

ज़ियादः इज़्ज़त देते हैं और हमारे बेडौल अज़्व बहुत ख़ुश्डौल
२४ होजाते हैं * मगर हमारे ख़ुश्डौल अअ्ज़ा उसके मुहताज
नहीं पर ख़ुदा ने कमतरीन अज़्वों को ज़ियादःतर इ़ज़्ज़त
२५ देके बदन को मुरक्कब किया * ता कि किसी तरह की
जुदाई बदन में नहोवे बल्कि सारे अअ्ज़ा बाहम एक
२६ दूसरे के हमदर्द रहें * और अगर एक अज़्व कुछ
रंज पाता है तो सारे अअ्ज़ा उसके साथ रंज पाते
हैं और अगर एक अज़्व इज़्ज़त पावे तो सारे अअ्ज़ा
२७ उसके साथ ख़ुश होते हैं * तुम मिलके मसीह के बदन
२८ हो और जुदा जुदा अज़्व हो * और कलीसया में ख़ुदा ने
कितनों को मुक़र्रर किया पहले हवारियों को और दूसरे
नबियों को और तीसरे मुअ़ल्लिमों को बअ़्द उसके मुअ़जिज़े
और शिफ़ा बख़्शने की क़ुदरतें और मुआ़विनत और मुख़्तारी
२९ और मुख़्तलिफ़ लुग़तें बख़्शीं * क्या सारे हवारी हैं और
सारे नबी हैं और सारे मुअ़ल्लिम हैं सारे मुआ़जिज़े हैं *
३० और क्या सब को शिफ़ा बख़्शने की क़ुदरत है और क्या हर एक
मुख़्तलिफ़ लुग़तें बोलता है और क्या सब के सब तरजमः
३१ करते हैं * तुम अच्छी अच्छी निअ़्मतों के मुश्ताक़ रहो
में एक राह जो उनसे कहीं अफ़ज़ल है तुम्हें बतलाता हूं *

तेरहवां बाब

१ अगर मैं आदमी या फ़िरिश्तों की ज़बानें बोलूं और

महब्बत न रखूं तो मैं ठनठनाता पतेल या ठनठनाता झांझ
१ हूं * और अगर मैं नबूवत की शराफ़त रखूं और ग़ैब
की सारी बातों और सारे इल्मों को जानूं और मेरा ईमान
कामिल हो यहां तक कि मैं पहाड़ों को चलाऊं पर महब्बत
३ न रखूं तो मैं कुछ चीज़ नहीं हूं * और अगर मैं
अपना सारा माल दे डालूं या अगर मैं अपना बदन दूं कि जिलाया
जाय पर महब्बत न रखूं तो मुझे कुछ फ़ाइदः नहीं *
४ महब्बत साबिर है मुलाइम है महब्बत हसद नहीं करती
५ महब्बत लाफ़ज़न् नहीं मग़रूर नहीं * नाज़ेबा नहीं करती
अपना नफ़अ नहीं तलब करती तुंद् वज़अ नहीं बदगुमानी
६ नहीं करती * बदकारी से ख़ुश नहीं बल्कि रास्ती से बाहम
७ ख़ुश है * सब बातों को छिपाती है सब कुछ बावर करती
है सब चीज़ की उम्मेद रखती है सब का तहम्मुल करती
८ है * महब्बत कभी जुदा नहीं होती अगर नबूवतें हैं तो
मअदूम होंगीं अगर ज़बानें हैं बंद हो जायेंगीं अगर
९ इल्म है तो लाहासिल हो जायगा * क्यूंकि हमारा इल्म
१० नाक़िस है और हमारी नबूवत ना तमाम * पर जब कमाल
११ होगा तो नाक़िस नेस्त हो जायगा * जब मैं लड़का था
तब मेरी बोली लड़के की सी और मिज़ाज लड़के का सा
और फ़हमीद लड़के की सी थी पर जब जवान
१२ हुआ तब मैं ने लड़काई से हाथ उठाया * क

अब हम आईने में इनहृकास को तौर पर देखते हैं पर उस वक़्त रूवरू देखेंगे इसवक़्त मेरा इल्म नाक़िस है पर उस वक़्त मैं इस तरह जानूंगा जिस तरह वुह मुझे १३ जानता है * अवतो ईमान और उम्मेद और महब्बत ये तीनों मौजूद हैं पर इन में जो अअ़्ला है सो है महब्बत *

चौदहवां बाब

१ महब्बत का पीछा करो और रूहानी निअ़मतों की तमन्ना करो २ ख़ुसूसन् उस निअ़मत की कि तुम नबूवत करो * क्यूंकि जो कोई कोई लुग़त बोलता है वुह आदमियों से नहीं ख़ुदा से बोलता है इसलिये गो कि कोई नहीं समझता लेकिन वुह ३ मअ़नन असरारि ग़ैबी बोलता है * और जो कोई नबूवत करता है सो बातों से आदमियों को आपसूदगी और तशफ़्फ़ी ४ और तसल्ली बख़्शता है * और जो कोई किसी लुग़त में तकल्लुम करता है सो अपनी तअ़मीर करता है पर जो कोई ५ नबूवत करता है कलीसया की तअ़मीर करता है * मैं चाहता हूं कि तुम सब के सब ज़बानें बोलो और बिलख़ुसूस चाहता हूं कि नबूवत करो नबूवत करनेवाला उस से जो ज़बानें बोलता है बड़ा है अगर वुह तरजमः उस नीयत से ६ नकरे कि कलीसया तरतीब पावे * अब ऐ भाईओ अगर मैं हरएक ज़बान बोलता हूआ तुमपास आता और तुमसे खोलके समझाके नबूवत या तअ़लीम से नबोलता तो मुझ से

७ तुमको क्या फ़ाइदः होता * चुनांचिः बेजान चीज़ें जिनसे आवाज़ें निकलती हैं जैसे तुरई या बीन अगर उसके बोल इमतियाज़ के साथ नहों तो जो फूका या बजाया जाता है
८ क्यूंकर बूझा जायगा * और अगर नरसिंग मश्कूक आवाज़
९ देवे तो कौन आप को जंग पर आमादः करेगा * वैसही तुम भी अगर सहीह बात अपनी ज़बानों से नबोलो तो बात क्यूंकर समझी जायगी तुम हवा से बकबक करनेवाले होजाओगे *
१० कितनी कितनी अनवाअ ज़बानें दुनया में हैं कोई उनमें से
११ बेआवाज़ नहीं * पर अगर वुह ज़बान मुझे नआती हो तो मैं मुतकल्लिम के आगे अजनबी रहूंगा और मुतकल्लिम मेरे
१२ आगे * पस तुम हरगाह रूहानी निअमतों के मुश्ताक़ हो तो यिह दुआ मांगो कि कलीसया की तरतीब के लिये तुम्हें फ़ज़ीलत
१३ फ़िरावां हो * इसवास्ते जो जिस लुग़त में बोलता है दुआ
१४ मांगे कि तरजमः भी कर सके * क्यूंकि अगर मैं किसी अजनबी ज़बान में दुआमांगूं तो मेरी रूह दुआ मांगती
१५ है पर मेरी अक़्ल बेकार है * पस मैं क्या करूं मैं रूह से दुआ मांगूंगा और अक़्ल से भी और रूह से दुआएं
१६ गाऊंगा और अक़्ल से भी * नहीं तो अगर तू रूह से बरकत की बात बोले तो वुह जो बमनज़िल आमी है तेरी शुक्र गुज़ारी में आमीन क्यूंकर कहेगा इसवास्ते कि जो कुछ
१७ तू कहता है वुह उसे नहीं जानता * तू तो अच्छी तरह

१८ शुक्र करता है पर दूसरा नहीं बनाया जाता * मैं अपने
ख़ुदा का शुक्र करता हूं कि मैं तुम सभों से ज़ियादः ज़बानें
१९ बोलता हूं * लेकिन मैं कलीसया में पांच बातें अपनी अक़्ल
से बोलना उस नीयत से कि औरों को सिखाऊं उन दसहज़ार
बातों से जो किसी ज़बान में बोलूं ज़ियादः पसंद करता
२० हूं * ऐ भाईओ तुम अक़्ल के आलम में लड़के न बने
रहो तुम बदी में लड़के रहो पर अक़्लों में बालिग़ हो *
२१ शरअ में लिखा है कि ख़ुदावंद कहता है कि मैं ग़ैरों की
ज़बान से दूसरी बोली में उस क़ौम के साथ बोलूंगा तो भी वे
२२ मेरी न सुनेंगे * पस ज़बानों का इख़्तिलाफ़ न ईमानदारों के
लिये बल्कि बेईमानों के वास्ते निशान है पर नबूवत बेईमानों
२३ के लिये नहीं बल्कि ईमानदारों के लिये है * पस अगर
सारे अहलि कलीसया एक मक़ाम में बाहम आवें और
सबके सब मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलें और आमी या बेईमान लोग
उन में दर आवें तो क्या वे न कहेंगे कि वे दीवाने हैं *
२४ पर अगर सब वअ़ज़ करें और कोई बेईमान या आमी
अंदर आजाय तो हरएक उस को क़ायिल करेगा और हरएक
२५ उसे परखेगा * और यूं उस के दिलके भेद सब ज़ाहिर
होंगे तब वुह औंधा गिरके ख़ुदा को सिजदः करेगा और
२६ मुअ़तरिफ़ होगा कि ख़ुदा सच मुच तुम्हारे बीच है * पस
ऐ भाईओ क्या है कि जब तुम बाहम आते हो तब तुम

में हरऐक के साथ मज़मूर या कोई तअलीम होती है या कोई ज़बान या इलहामि ग़ैबी का कलाम या कोई तरजमः पस चाहिये कि हरऐक चीज़ आरास्तः करने के लिये हो *
२७ अगर कोई किसी ज़बान में बोले तो दोदो और निहायत तीन तीन ऐक ऐक करके बोलें और हरऐक शख़्स तरजमः
२८ करे * पर अगर कोई मुतरजिम नहो वुह कलीसिया में चुपका
२९ रहे और बाख़ुद ओ ख़ुदा बोले * सोही दो या तीन बोलें
३० और बाक़ी इनताफ़ करें * पर अगर बात दूसरे पर जो
३१ बैठा है खुलजावे तो पहला चुपका रहे * कि तुम सब के सब ऐक ऐक करके नबूवत कर सकते हो ता कि सब सीखें
३२ और सब तसल्ली पावें * और नबियों की रूहें नबियों की
३३ फ़रमांबरदार हैं * ख़ुदा अबतरी का राज़ी नहीं बल्कि सुलह का राज़ी है चुनांचिः मुक़द्दस लोगों की सारी कलीसयाओं में
३४ है * तुम्हारी रंडियां कलीसयाओं में चुपकी रहें कि उन्हें बोलने का नहीं बल्कि फ़रमांबरदारी करने का हुक्म किया गया
३५ है * अगर वे कोई बात पूछा चाहें तो घर में अपने शौहर से पूछें क्यूंकि यिह बेशरमी है कि रंडियां कलीसया में
३६ बोलें * क्यूं क्या ख़ुदा की बात तुमहीं से निकली या सिर्फ़
३७ तुमहीं तक पहुंची है * अगर कोई अपने तईं नबी या रूहानी जाने तो वुह उन बातों का जो मैं तुम्हें कहता हूं
३८ इक़रार करे कि ख़ुदावंद के अहकाम यिह हैं * और

३९ अगर कोई नजाने तो नजाने * ग़रज़ ऐ भाईओ नबूवत करने के आरज़ूमंद रहो लेकिन ज़बानें बोलने से मनअ
४० नकरो * और सारी बातें क़रीनः और तरतीब से होवें *

पंदरहवां बाब

१ अब ऐ भाईओ मैं तुम्हें उसकी ख़बर देता हूं वही जो
२ मैं ने तुम्हें दी और तुमने पाई * और उस पर क़ाइम हो उसीके सबब तुम बच जाते हो अगर हरएक बात जो मैं ने तुम्हें कही हिफ़्ज़ करो नहीं तो तुम्हारा ईमान लाना अबस
३ है * क्यूंकि वुह बात जो मैं ने पाई पहली बातों के ज़िमन में सौंपी कि मसीह जैसा नबियों की किताबों में लिखा
४ गया है हमारे गुनाहों के वास्ते मूआ * और गाड़ा गया
५ और तीसरे दिन नविश्तों के मुताबिक़ जी उठा * और काफ़ा
६ को और उस के बअ़द बारहों को दिखाई दिया * बअ़द उसके पांच सौ भाई से ज़ियादः थे जिन्हें वुह एकबारः दिखाई दिया और अकसर उन में से हनोज़ मौजूद हैं पर कईएक
७ सो गये * फिर यअ़क़ूब को दिखाई दिया फिर सारे हवारियों
८ को * और सबके पीछे मुझ को जो साक़ित शुदः हमल
९ हूं दिखाई दिया * कि मैं सारे हवारियों से कमतर हूं और लाइक़ नहीं हूं कि हवारी कहलाऊं इसवास्ते कि मैं ने
१० ख़ुदा की कलीसया को सताया * पर मैं ख़ुदा के फ़ज़ल से हूं जो हूं और उसका फ़ज़ल जो मुझ पर हूआ सो

लाहासिल न हूआ पर मैं ने उन सब से ज़ियादः मिहनत
११ की न मैं ने ख़ुदा के फ़ज़्ल ने जो मेरे साथ था * पस
क्या मैं क्या वे ऐसी मुनादी करते हैं और तुम वैसाही
१२ ईमान लाये हो * अब अगर मुनादी की जाती है कि
मसीह मुरदों में से उठा तो तुम में से कई एक क्यूं कहते
१३ हैं कि मुरदों का हश्र नहोगा * और जब मुरदे नहीं
१४ उठते तो मसीह भी फिर नहीं उठा * और अगर मसीह फिर
नहीं उठा तो हमारी मुनादी अबस है और तुम्हारा ईमान
१५ भी अबस * और हम ख़ुदा के झूठे गवाह ठहरे क्यूंकि हमने
ख़ुदा के लिये गवाही दी है कि उसने मसीह को फिर उठाया
है अगर मुरदे नहीं उठते तो उसने उसको भी नहीं
१६ उठाया * क्यूंकि अगर मुरदे नहीं उठते तो मसीह भी नहीं
१७ उठा * और अगर मसीह फिर नहीं उठा तो हमारा
ईमान लग़ो है और तुम अबतक अपने गुनाहों में मुबतला
१८ हो * और जो मसीह में होके सोगये हैं सो फ़ना हूए *
१९ अगर हम सिर्फ़ इसी जहान में मसीह से उम्मेदवार रहें
२० तो हम सारे आदमियों से कमबख़्त तर हैं * अब मसीह
तो मुरदों में से उठा है और उन में जो सोगये हैं पहला
२१ फल हूआ * कि जब आदमी के सबबसे मौत है तो
२२ आदमीही के सबब से मुरदों का उठना है * जैसा आदम
के सबब से सारे मरते हैं वैसाही मसीह के सबब से सारे

२३ जिलाये जायेंगे * लेकिन हरएक अपने अपने नौबत में पहले मसीह फिर वे जो मसीह के हैं उसके आये पर *
२४ और बअ़द उसके इनतिहा है तब वुह बादशाहत ख़ुदा को जो बाप है फेर देगा और सारी हुकूमत और सारे
२५ इख़तियार क़ुदरत को खो देगा * क्यूंकि जबतक वुह सारे दुशमनों को पाओं तले न लाये ज़रूर है कि बादशाहत
२६ करे * मौत भी जो आख़िरी दुशमन है मअ़दूम होगी *
२७ कि उसने सारी चीज़ें उसके ज़ेरपा किया और जब वुह यिह कहता है कि सारी चीज़ें उसके ज़ेरपा हुईं तो ज़ाहिर है कि ऐक वही जिसने सब कुछ उसके ज़ेरपा करदिया
२८ बाक़ी रहा * और जब सब कुछ उसके ज़ेरपा होलेगा तब बेटा आप उसके जिसने सब चीज़ें उसके नीचे कियां न वे
२९ होगा ता कि कुल में कुल ख़ुदा होवे * नहीं तो वे जो मुरदों के ऊपर इस्तिबाग़ पाते हैं सो क्या करेंगे अगर मुरदे असलन्
३० न उठें और क्यूं मुरदों के ऊपर इस्तिबाग़ पाते हैं * और फिर हम क्यूं हरऐक साअ़त ख़तरजान को क़बूल किये हुऐ
३१ हैं * मुझे अपने उस फ़ख़र की जो ख़ुदावंद मसीह ईसा
३२ से है क़सम कि मैं हररोज़ मरता हूं * अगर मैं अफ़सस के आदमियों के साथ ऐसा जैसा दरिंदगान के साथ लड़ा तो मुझे क्या फ़ाइदः अगर मुरदे न उठें पस आओ खायें
३३ पीवें कि कल के दिन मरेंगे * फ़रेब नखाओ कि बुरी सुहबतें

३४ अच्छी आदतों को बिगाड़ती हैं * तुम सहीक़ानः जागो और गुनाह नकरो कि कितनों में ख़ुदा शिनासी नहीं मैं
३५ इसलिये यूं कहता हूं कि तुम शरमिंदः हो * शायद कोई कहे कि मुरदे किसतरह उठते हैं और किस बदन में
३६ आते हैं * ऐ नादान जो चीज़ कि तू बोता है अगर वुह
३७ नमरे तो कभी जिलाई नजायगी * और यिह जो तू बोता है न वुह बदन है जो होवेगा बल्कि ऐकदानः नेरा है
३८ ख़ाह गेहूं ख़ाह कुछ और * पर ख़ुदा उसको जैसा उसने चाहा ऐक बदन देता है और हरऐक बीज का ऐक ख़ास बदन है *
३९ सारे अजसाम ऐकही से नहीं बल्कि आदमियों का जिसम और है बहायम का और है मछलियों का और है परिंदों का
४० और * और अजसामि समावी भी हैं और अरज़ी भी हैं पर आसमानियों की शौकत और है और ख़ाकियों की शौकत
४१ और * आफ़ताब की शौकत और है माहताब की शौकत और और सितारों की शौकत और है कि सितारों की शौकतें
४२ मुतफ़ाविर हैं * मुरदों का हश्र ऐसाही है कि वुह फ़साद
४३ में बोया जाता है और बक़ा में उठता है * बेक़दरमती से बोया जाता है और जलाल से उठता है कमज़ोरी में बोया
४४ जाता है तवानाई में उठता है * हयवानी बदन बोया जाता है और रूहानी उठता है ऐक हयवानी बदन है और ऐक
४५ रूहानी बदन * चुनांचिः लिखा है कि पहला आदमी

यऊने आदम जीती जान हूआ और पिछला आदम रूहि
४६ ज़ां बख़्श * लेकिन रूहानियत पहले नथी बल्कि नफ़सानियत
४७ थी और बअद उसके रूहानियत हूई * पहला आदमी
ज़मीन से बनके ख़ाकी हूआ और दूसरा आदमी ख़ुदावंद है
४८ जो आसमानी है * जैसा ख़ाकी वैसेही ख़ाकी हैं और जैसा
४९ आसमानी था वैसेही आसमानी हैं * और जिसतरह हमने
ख़ाकी की सूरत पाई है हम आसमानी की सूरत भी पायेंगे *
५० ऐ भाईओ मैं यिह कहता हूं कि जिसम और ख़ून ख़ुदा की
बादशाहत के वारिस नहीं होसकते और न फ़साद बक़ा का
५१ वारिस होसकता है * देखो मैं तुम्हें गैब की ऐक बात कहता हूं
५२ कि हम सब न सोऐंगे पर हम सब मुबद्दल होंगे * ऐक
दम में ऐक पल में पिछली सूर फुंकते हूऐ सूर फूंका
जायगा और मुर्दे उठेंगे और हम मुबद्दल होजायेंगे *
५३ कि चाहिये यिह फ़ासिद बक़ा को पहने और यिह मरनेवाला
५४ हयाति अबदी को पहने * और जब यिह फ़ानी गैर
फ़ानी को और यिह मरनेवाला हयाति अबदी को पहन
चुकेगा तब वुह बात जो लिखी है होगी कि ग़लबःने
५५ मौत को निगल लिया * ऐ मौत तेरा नेश कहां है और
५६ ऐ गोर तेरा ग़लबः कहां रहा * मौत का नेश गुनाह है
५७ और गुनाह का ज़ोर शरअ है * पर शुक्र ख़ुदा को जिसने
हमें हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से ग़लबः बख़्शा *

५८ पस ऐ मेरे अज़ीज़ भाईओ तुम साबित क़दम और पायदार और ख़ुदा के काम में हमेशः मसरूफ़ हो कि तुम जानते हो कि तुम्हारी मिहनत ख़ुदावंद के नज़दीक अबस् नहोगी *

सोलहवां बाब

१ अब उस बिहरी की बाबत जो मुक़द्दस लोगों के वास्ते है जैसा मैं ने ग़लतियः के कलीसयाओं को हुक्म किया है
२ वैसा तुम भी करो * कि हर हफ़्ते के पहले दिन तुम में से हरकोई अपनी आमद के मवाफ़िक़ जमअ़ करके अपने पास रहने दे ता कि जब मैं आऊं तो बिहरी में देर नहोवे *
३ और मैं आके तुम्हारे हदये उन्हीं की मअ़रिफ़त जिनको तुम अपने दस्ख़तों से मुअ़तबर ठहराओगे औरशलीम को
४ भेज दूंगा * और अगर मेरा भी जाना मुनासिब होगा तो
५ वे मेरे ही साथ जायेंगे * और जब मैं मक़दूनियः में होके निकलूंगा कि मैं अलबत्तः मक़दूनियः को जाऊंगा तब मैं
६ तुम्हारे पास आऊंगा * शायद मैं तुम पास ठहरूं बल्कि जाड़ा भी काटूं ता कि तुम मुझे आगे को जहां का मैं क़स्द रखता
७ हूं रवानः कर दो * कि मैं नहीं चाहता कि इस मरतबः तुम्हारी दीद करके जल्द गुज़र जाऊं बल्कि अगर ख़ुदावंद रुख़्सत
८ दे तो उम्मेदवार हूं कि तुम्हारे पास चंदे रहूं * और मैं
९ ईदि असंफूज़ तक अफ़सस में रहूंगा * कि एक बड़ा दरवाज़ः जो काम बख़्श है मेरे लिये खुला है और रोकनेवाले बहुत से

१० हैं * और अगर तीमताऊस आवे तो ख़बरदार ऐसा करे
कि वुह तुम्हारे पास बेख़ौफ़ रहे कि वुह मेरी तरह ख़ुदावंद
११ का काम करता है * पस कोई उसकी तहक़ीर नकरे बल्कि
तुम उसको सलामत ऊधर को रवानः कीजो कि मेरे पास
पहुंचे क्यूंकि मैं राह देखता हूं कि वुह भाईओं समेत
१२ आवे * रहा अफ़लूस भाई सो मैं ने उस से बहुत इल्तिमास
किया कि वुह तुम्हारे पास भाइओं के साथ जाय उसका
इरादः मुतलक़ नथा कि इस दफ़अ जाय पर जो इत्तिफ़ाक़
१३ होजायगा तो वुह आ निकलेगा * बेदार हो ईमान में
१४ मुस्तक़ीम हो मरदानगी करो ज़ोरआवर हो * और तुम्हारे सब
१५ काम महब्बत के साथ हों * अब ऐ भाईओ मैं तुम से अरज़
करता हूं तुम इस्तिफ़ान के ख़ानदान को जानते हो वुह अख़ानियः
का पहला फल है और वे ख़ुब मुक़द्दस लोगों की ख़िदमत
१६ करने को मुस्तइद रहे हैं * सो तुम ऐसों की रज़ा जोई
करो और हरएक के साथ जो कार कुन और मिहनत कश है
१७ ऐसही करो * और मैं इस्तिफ़ान फ़रतूनातस और अख़ायकस
के आने से ख़ुश हूं क्यूंकि उन्हों ने मेरी कमती को जो
१८ तुम्हारी दूरी में हुई भर दिया * उन्हों ने मेरी और तुम्हारी
रूह को ताज़ः किया इसलिये तुम ऐसों को मानो और
१९ आसया की कलीसयाईं तुम्हें सलाम कहती हैं * और फ़रसकला
इस कलीसया समेत जो उनके घर में है तुम्हें ख़ुदावंद के

२० वास्ते बहुत बहुत सलाम कहते हैं * और सारे भाई तुम्हें सलाम कहते हैं पस तुम मुक़द्दसानः बोसा लेके बाहम
२१ सलाम करो * पूलूस का सलाम इसके हाथ से (२२) और अगर कोई ख़ुदावंद ईसा मसीह को दोस्त नहीं रखता वुह
२३ मलऊन मरन आती होवे * ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़्ल
२४ तुम पर होवे * और मुझे तुमसब के साथ ईसा मसीह में महब्बत है आमीन *

पूलूस का दूसरा मक्तूब क़ुरिन्तियों के लिये

पहला बाब

१ पूलूस की जो ख़ुदा की मर्ज़ी से ईसा मसीह का हवारी है और भाई तीमताऊस की तरफ़ से ख़ुदा की कलीसया को जो क़ुरिन्तुस में है और सारे मुक़द्दस लोगों को जो
२ तमाम अख़ायः में हैं * निअ़मत और आराम हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हारे लिये होवे *
३ वुह जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का ख़ुदा और बाप है वुह बाप जो लुत्फ़ की बुनयाद और वुह ख़ुदा जो

४ सब नेमत को तसल्ली का वली है मुबारक है * वही हर रंज में हम को तसल्ली देता है ता कि हम उसही तसल्ली के सबब से जो हमें ख़ुदा से मिलती है उन को भी जो किसी तरह के रंज में मुबतला हैं दिलासा दे
५ सकें * क्यूंकि जिस तरह हमारे मसीह़ी रंज फ़िज़ूं हैं
६ हमारी तसल्ली भी मसीह के सबब से बे पायान है * और हम जो अज़ीयत पाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली और नजात के वास्ते है इसलिये कि तुम जब उन मुसीबतों में जो हम पर भी पड़ती हैं मुसाबरत करते हो तुम्हारी तसल्ली और नजात होती है और हम जो तसल्ली पाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली और नजात के लिये है और मेरी उम्मेद
७ जो तुम्हारी बाबत है वासिक़तर है * क्यूंकि हम जानते हैं जैसा तुम दुखों में शरीक हो ऐसा ही तसल्ली में भी
८ हो * ऐ भाईओ हम नहीं चाहते कि तुम उस मुसीबत से जो आसया में हम पर पड़ी नावाक़िफ़ रहो हम अपनी ताक़त से बाहर बशिद्दत दबगये यहांतक कि हम ज़िंदगी
९ से ना उम्मेद हूए * लेकिन हमारे दिल हमारे क़तल होने पर गवाही देते हैं ता कि हम न अपना बल्कि ख़ुदा का
१० जो मुरदों को जिलाता है भरोसा रखें * उसने ऐसी बड़ी हलाकत से हम को रिहाई दी और देता है और हम को उस से फिर उम्मेद है कि वुह आगे को भी रिहाई

११ देगा * और तुम मिल के दुआ से हमारे कुमकी होा ता कि
वुह वख़शिश जो वक़ुत से लोगों की दुआ से हम को
१२ मिली वक़ुत से लोग उसका शुक्र भी हमारे लिये करें * और
हमारा तफ़ाखुर इस से है कि हमारा दिल गवाही देता है
कि हमने खुदा की सफ़ाई और सच्चाई के साथ न हिकमति
दुनयावी से वल्कि फ़ज़्लि इलाही से दुनया में गुज़रान की
१३ अलल्खसूस तुम्हारे नज़दीक * और हम न और बातें
बल्कि वही बातें तुम्हें लिखते हैं जिन्हें तुम जानते हो
और मानते हो और मैं उम्मेदवार हूं कि तुम इन्तिहा तक
१४ मानोगे * क्यूंकि तुमने थोड़ासा माना है कि हम खुदावंद
१५ ईसा के दिन तुम्हारे फ़ख़र हैं जैसा तुम हमारे * और
मैं ने उसी इअतिक़ाद से इरादः किया कि मैं पहले तुम्हारे
१६ पास आऊं ता कि तुम दूसरी निअमत पाओ * और फिर
मैं तुम में होकर मक़दूनियः को जाऊं और मक़दूनियः से
फिर तुम्हारे पास आऊं और तुम मुझे आगे यहूदियः को
१७ रवानः करो * पस मैंने जो यिह इरादः किया तो क्या
मैं हलका हूआ या कि जो इरादः मैं करता हूं वशरियत से
करता हूं कि हां हां और नहीं नहीं भी मुझ पास होवे *
१८ सच्चे खुदा की क़सम हमारी जो बात तुमसे थी सो हां
१९ और नहीं नहीं * कि खुदा का बेटा ईसा मसीह जिसकी
मुनादी हमने यअने मैं ने और सलवानिस और तीमताऊस

ने तुम्हारे बीच की सो हां और नहीं नठहरा बल्कि हां
२० उस से ठहरा * कि खुदा के जितने वअदे कि उस से हां
हूए सो उस में आमीन भी हैं ता कि हम से खुदा की
२१ तक़दीस की जावे * और जो हमको तुम्हारे साथ मसीह
में क़ाइम करता है और जिसने हमको मसह करके मुक़र्रर
२२ किया सो खुदा है * और उसने हमपर मिहर भी की और
२३ रूह को हमारे दिलों में ज़ामिन दिया * ग़रज़ मैं खुदा
को अपने दिलपर गवाह लाता हूं कि मैं तुम पर रहम
करके अबतक क़रिनतस में नहीं आया लेकिन हम तुम्हारे
ईमान पर खुदावंदी नहीं करते हैं बल्कि तुम्हारी खुशी की
कुमकी हैं कि तुम ईमान में साबित क़दम हो *

दूसरा बाब

१ मैं ने अपने दिलमें यिह ठाना कि मैं तुम्हारे पास फिरके
२ ग़मगीन न आऊं * क्यूंकि अगर मैं तुम्हें ग़मगीन करूं तो
कौन सिवा उसके जिसे मैं ने ग़मगीन किया मुझे खुश
३ कर सकता है * और मैं तुम सभों की तरफ़ से यक़ीन करके
कि जो मेरी खुशी है वही तुम सभों की खुशी है तुमको
यिह लिखा है ता न होवे कि मैं आकर उनसे जिनसे
४ चाहिये कि मैं खुश हूं ग़मगीन होऊं * कि मैं ने बड़ी
अज़ीयत और दिलगीरी से बहुत से आंसू बहा बहा कर
तुम्हें लिखा और इसवास्ते नहीं कि तुम ग़मगीन होओ

पर ता कि तुम मेरी उस उलफ़त फ़िरावां को जो मुझे तुम से
५ है जानो * और अगर किसी ने ग़मगीन किया तो उसने
न मुझी को बल्कि तुम सब को नहीं तो अकसरों को तो ग़मगीन
६ किया मैं मुबालग़ः नहीं करता * पस अकसरों ही की
यिह मलामत जो उस शख़्स पर हुई ऐसे आदमी के वास्ते
७ बस है * सो बिहतर है कि तुम बरख़िलाफ़ इसके उसको
बख़्शो और तसल्ली दो ता कहीं ऐसा न हो कि ग़म बेपायान
८ उसे खाजाय * पस मैं तुमसे यिह अरज़ करता हूं कि
९ तुम उस के साथ अपनी महब्बत साबित करो * कि मैं ने
इसवास्ते भी लिखा है कि मैं तुम्हारे अंजाम को जानूं कि
१० तुम सारी बातों में फ़रमांबरदार हो या नहीं * पर जिसका
गुनाह तुम बख़्शते हो उसका मैं भी बख़्शता हूं और मैं ने
जिसका कोई गुनाह तुम्हारी ख़ातिर से मुआफ़ किया सो
११ मसीह के क़ाइम मक़ाम होकर मुआफ़ किया * ता न होवे
कि शैतान हमारे माल से कुछ लेनेपावे क्योंकि हम उसके
१२ मतालिब से नावाक़िफ़ नहीं * और जब मैं इंजील मसीह
की बशारत देने को त्रवास में आया और ख़ुदावंद के वास्तः
१३ से एक दरवाज़ः मुझपर खुल गया * अज़बस कि मैं ने
अपने भाई तीतुस को वहां न पाया मेरे दिल को आराम
न रहा और मैं उन से रुख़सत होकर वहां से मक़दूनियः
१४ में आया * अब शुक्र ख़ुदा का जो ख़ुदावंद में हमको

हमेशः बड़े तजम्मुल से गश्त करवाता है और अपनी मअरिफ़त
१४ की बूको हमसे, हरएक जगह ज़ाहिर करवाता है * क्यूंकि
हम खुदाके आगे उनके लिये जो बचाये जाते हैं और उन के
१६ लिये जो हलाक होते हैं मसीह की खुशबूई हैं * बअज़ों
के वास्ते मौत की बू हैं जो कुशिंदः है और बअज़ों के
लिये हयात की बू हैं जो ज़िंदगी बख़्श है पस इनबातों
१७ के लाइक़ किसका ज़मीर है * कि हम अकसर की मानंद
खुदाकी बातों में मिलौनी नहीं करते बल्कि हम अहलि सफ़ा
और अहलि इलाह की मानंद खुदा के हुज़ूर में बोलते हैं *

तीसरा बाब

१ क्या हमने अपनी सिफ़ारिश करवाना फिर शुरूअ किया है
और क्या हम बअज़ों की तरह मुहताज हैं कि सिफ़ारिश
नामे तुम पास लावें या तुम्हारे सिफ़ारिश नामे लेजावें *
२ हमारा ख़त जो हमारे दिलों पर लिखा है तुम हो और
३ उसे सारे आदमी जानते और पढ़ते हैं * कि तुम
अलानियः मसीह के ख़त हो जिसके हम शामिल हैं और
वुह सियाही से नहीं बल्कि जीते खुदा की रूह से और
पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि दिल की तख़्तियों पर
४ जो गोश्त की रक़म किया गया है * और हम मसीह
५ के तुफ़ैल से खुदा पर ऐसे मुतवक्किल हैं * न कि आप से
इस क़ाबिल हैं कि अपने पास से ईजाद करके कोई

मज़मून बांधें बल्कि हमारी क़ाबलियत ख़ुदा से है *
६ और उसने हमको यिह लियाक़त दी कि हम नये अ़ह्द के
के न कि लफ़्ज़ के बल्कि रूह के ख़ादिम होवें लफ़्ज़
७ हलाक करता है रूह जिलाती है * और अगर मौत
की वुह ख़िदमत जो लफ़्ज़ी थी और पत्थरों पर खोदी
गई इतनी हश्मत के साथ हूई कि बनी इसराईल मूसा
के चिहरे पर बसबबि उस हश्मत के जो उस के चिहरे पर
८ थी और पायदार नथी नज़र न कर सके * तो रूह की
ख़िदमत बतरीक़ औला क्यूंकर हश्मत के साथ नहोगी *
९ और अगर इल्ज़ाम देनेवाली ख़िदमत जलाल है तो रास्तबाज़ी
की ख़िदमत का जलाल बतरीक़ औला कितना ज़ियादा होगा
१० बल्कि वुह जो हश्मत वाला था उस की निस्बत यअ़ने
उस मजिद ग़ालिब की निस्बत मजद ही न था *
११ और अगर मअ़दूमत होनेवाली चीज़ हश्मत के साथ थी तो
वुह जो क़ाइम रहनेवाली है बतरीक़ औला हश्मत के साथ
१२ है * इसवास्ते हम ऐसही उम्मेद रखके बहुत बेपरवा बोलते
१३ हैं * और हम मूसा की तरह नहीं करते हैं जिसने
अपने चिहरे पर नक़ाब डाला ता कि बनी इसराईल उस
१४ बातिल होनेवाली बात की ग़ाइत को नदेखें * लेकिन उनके
फ़हम अंधे होगये कि अबतलक वुह पर्दः पुराने वसीक़ः के
पढ़ने में नामकशूफ़ रहा इसवास्ते कि वुह पर्दः मसीह से

१५ फ़ना होता है * पर आजतक जब मूसा को पढ़ी जाती है
१६ तो वुह पर्दः उनके दिल पर पड़ा रहता है * लेकिन जब
वुह खुदावंद की तरफ़ फिरेगा तब वुह पर्दः हरतरफ़ से
१७ उठा लिया जायगा * और खुदावंद वही रूह है और जहां
१८ कहीं खुदावंद की रूह है वहीं रिहाई है * और हमसब
बे पर्दः खुदावंद के अक्स को आईने में देख देख के उसकी
सूरत के बने जाते हैं और मज्द से मज्द पर तरक़्क़ी करते
हैं और इसलिये कि खुदावंद रूह है चाहिये कि यूंही हो *

चौथा बाब

१ सो हम उसके रहम से यिह मुनसब पाके उदास नहीं
२ होते * और हमने शरम के पोशीदः कामों से किनारः किया
और दग़ाबाज़ी के ढाल नहीं चलते और न खुदा की बात
में मलूनी करते हैं बल्कि रास्ती को ज़ाहिर करके हरएक
३ आदमी के दिलमें खुदा के हुज़ूर जगह करते हैं * और
हमारी इंजील किसी पर पोशीदः होवे तो उन्हीं पर जो
४ हलाक होते हैं पोशीदः है * कि इस जहान के रब्ब ने उनके
फ़हमों को जो बेईमान हैं अंधा करदिया है ता नहोवे कि
रोशनी इंजील की जो हशमति मसीह की जो खुदा की
५ सूरत है ज़ाहिर करती है उन पर पड़े * कि हम न
अपनी बल्कि मसीह ईसा खुदावंद की मुनादी करते हैं और
६ हम आप तो ईसा के लिये तुम्हारे नौकर हैं * क्यूंकि

ख़ुदा ने जिसने हुक्म किया कि तारीकी से रोशनी चमके हमारे दिलों को रोशन किया ता कि हम ख़ुदा की उस मजद का जो ईसा मसीह के चिहरे में है नूरे मअरिफ़त
७ बख़्शें पर हमारा यिह ख़ज़ानः ज़रूफ़ के बासनों में रहता है ता कि क़ुदरत की बुज़ुर्गी ख़ुदा की न कि हमारी मअलूम
८ होवे * और हम तो हरतरफ़ से रंज में हैं लेकिन शकंजः में नहीं पड़े हैरान हैं पर लाचार नहीं हैं *
९ सताये जाते हैं पर अकेले नहीं छोड़े गये गिराये जाते हैं
१० पर हलाक नहीं हूऐ * कि हम ख़ुदावंद ईसा की वफ़ात को अपने बदन में लिये फिरते हैं ता कि ईसा की ज़िंदगी
११ भी हमारे जिसम में ज़ाहिर होवे * कि हम जीते जी ईसा की ख़ातिर मौत के हवालः किये जाते हैं ताकि ईसा की ज़िंदगी भी
१२ हमारे फ़ना होनेवाले जिसम में ज़ाहिर होवे * पस मौत का हम
१३ में और ज़िंदगी का तुम में असर होता है * पर उस सबब से कि रूह ईमान हम में है जैसा लिखा है कि मैं ईमान लाया और इसलिये बोला हम ईमान लाये और
१४ इसी वास्ते बोलते हैं * कि हम जानते हैं कि जिसने ख़ुदावंद ईसा को जिलाया सो हम को भी ईसा के सबब से जिलावेगा और तुम्हारे साथ अपने हुज़ूर हाज़िर करेगा *
१५ क्यूंकि सारी चीज़ें तुम्हारेही वास्ते हैं ता कि निअमत वाफ़िर होके बहुतों की शुक्रगुज़ारी से ख़ुदा की मजद की

१६ ज़ियादती का सबब होवे * इसलिये हम उदास नहीं होते हैं पर अगरचिः हमारी ज़ाहिरी इनसानियत फ़ना होती है
१७ लेकिन बातिनी रोज़ बरोज़ नई होती है * कि हमारे हाल का हलका रंज निहायत फ़िरवानी से मजद के अबदी
१८ बोझ को हमारे लिये पैदा करता रहता हैं * और हम न उन चीज़ों पर जो देखने में आती हैं बल्कि उन चीज़ों पर जो देखने में नहीं आतीं नज़र करते हैं क्यूंकि जो चीज़ें देखने में आती हैं चंदरोज़ः हैं और वे जो देखने में नहीं आतीं अबदी हैं *

पांचवां बाब

१ हम जानते हैं कि अगर हमारी सकूनत का ख़ाकी मकान उजड़ जावे तो हम एक इमारत ख़ुदा से पावेंगे वुह एक मसकन है जो हाथों से नहीं बना और अबदी है आसमान
२ पर है * क्यूंकि हम इस में रहकर आहें खैंचते हैं और आरज़ूमंद हैं कि अपने मसकनि आसमानी को पहनें *
३ कि हम मुलब्बस होके नंगे रखे नजाएंगे (४) कि हम तो जबतक इस मसकन में हैं बोझ से दबके आह खैचते हैं लेकिन नहीं चाहते हैं कि उतारें बल्कि चाहते हैं कि
५ मुलब्बस हों ता कि हयाति फ़ना को निगल जाय * और जिसने हमको इस कामके लिये आरास्तः किया उसने यअ़ने
६ ख़ुदा ने हमको रूह पेशगी दी * इसलिये हम

हमेशः मुत्मैयन हैं और जानते हैं कि जबतक हम बदन के वतन में रहते हैं सफ़र करके ख़ुदावंद से दूर पड़े हैं *
७ कि ईमान से न कि बीनाई से औक़ात बसर करते हैं *
८ हमारी ख़ातिर जमअ है और हम बेशतर चाहते हैं कि बदन से अजनबी और ख़ुदावंद के हम वतन होवें *
९ इसवास्ते हम उस इज़्ज़त के तालिब हैं कि हम क्या देस में
१० और क्या परदेस में उस को भावें * क्यूंकि हम सब को ज़रूर है कि मसीह की मसनदि अदालत के आगे हाज़िर होवें ता कि हरऐक मुवाफ़िक़ उसके जो उसने किया क्या
११ भला क्या बुरा अपने बदन के किये को पावे * इसवास्ते हम ख़ुदावंद के क़हर को जानकर आदमियों को समझाते हैं और ख़ुदा हम को पहचानता है और उम्मेदवार हूं कि तुम्हारे
१२ दिल भी हमको पहचानें * कि हम फिर अपनी सिफ़ारिश तुम से नहीं करते हैं पर तुम्हें जगह देते हैं कि तुम हमारे सबब से फ़ख़र करो ता कि तुम उनको जो ज़ाहिर पर फ़ख़र करते हैं और बातिन पर नहीं जवाब देसको *
१३ क्यूंकि अगर हम बेख़ुद हैं तो ख़ुदा के वास्ते हैं और
१४ अगर हुशयार हैं तो तुम्हारे वास्ते हैं * कि मसीह की महब्बत हम को खैंचती है क्यूंकि हम यिह समझे कि जब
१५ ऐक सबके वास्ते मूआ तो सब मुर्दः ठहरे * और वुह सब के वास्ते मूआ ताकि जो जीते हैं सो न अपने लिये

बल्कि उसके लिये जो उनके वास्ते मूआ और फिर उठा आगे
१६ चलके जीवें * इसवास्ते हम अबसे किसी को जिसमानी शिनाख़्त
से नहीं पहचानते हैं और अगरचिः हमने मसीह को भी
जिसमानी शिनाख़्त से पहचाना है पर अब आगेको इस
१७ वज़अ से न पहचानेंगे * पस अगर कोई मसीह में है
तो वुह नया मख़लूक़ है पुरानी चीज़ें गुज़र गईं और सारी
१८ चीज़ें नई हुईं * और यिह सारी चीज़ें ख़ुदा से हैं जिसने
ईसा मसीह के सबब हमको आपसे मिला लिया और
१९ मिलाप करवाने की ख़िदमत हमें दी * यअ़ने ख़ुदाने मसीह
के सबब से दुनया को यों मिला लिया कि उसने उनकी
तक़सीरों का हिसाब नकिया और मिलाप का मज़मून हमनें
२० रखा * इसलिये हम मसीह की इलचीगरी करते हैं गोया कि
ख़ुदा हमारे वसीले से तरग़ीब करता है सो हम मसीह की
तरफ़ से मिन्नत करते हैं कि तुम ख़ुदा से मिल जाओ *
२१ क्यूंकि उस ने उसको जो गुनाह से वाक़िफ़ नथा हमारे बदिले
गुनाह ठहराया ता कि हम उस के सबब से रास्तबाज़ी
इलही बनें *

छठा बाब

१ और हम बाहम हमख़िदमत होकर तुम से इलतिमास
करते हैं कि तुम ख़ुदा की निअ़मत को अबस न जानो *
२ कि वुह कहता है कि मैं ने रज़ामंदी के मौसिम में तेरी

सुनी और नजात के दिन. तेरी कुमक की देखो कि रज़ामंदी का मौसिम यिह है और देखो कि नजात का दिन यिह
३ है * और हम किसी के ठोकर खाने के बाइस नहीं होते
४ ता कि कुछ ख़िदमत दूखी न जाय * पर आप को हर एक बात में ऐसा ज़ाहिर करते हैं जैसे ख़ुदा के ख़ादिम होते हैं यअने बहुत तहम्मुल करके और दुख उठाके और
५ इहतियाजों और तंगियों में पड़के * और कोड़े खाके और क़ैद होके और हंगामों में पड़के और मिहनतें
६ और बेदारियां और फ़ाक़े करके * पाकीज़गी और तमीज़ और सबर और मिहरबानी से रूह पाक और महब्बत सादिक़ *
७ और सच्चाई की बात और ख़ुदा की कुदरत से रास्तबाज़ी
८ की हथयारों से जो दहने बाऐं हैं * और इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती और बदगोई और ख़ुशगोई से दग़ाबाज़ और सच्चे
९ कहलाके * गुमनाम और मशहूर होके मर मरके और हनोज़ हम जीते हैं तंबीह पाके पर न क़तल होकर *
१० ग़मगीन और ख़ुश होकर कंगाल होके पर बहुतों को दौलतमंद करके नादार होके पर सारी चीज़ों के मालिक होकर
११ ज़ाहिर करते हैं * ऐ करिन्तिओ हमारी ज़बान तुम्हारी
१२ तरफ़ खुली हमारा दिल कुशादः है * तुम हमारे सबब
१३ तंग नहीं हो पर अपने ही बातिनों से तंग हो * और उसकी मुकाफ़ात में मैं तो तुम से जैसा फ़रज़ंदों से कहता

१४ क्यूं तुम भी कुशादः दिल रहो * और तुम बेईमानों के साथ बराबर होके एक जोय में मत जुते जाओ रास्ती और नारास्ती में कौन सी शिरकत है और रोशनी को तारीकी से
१५ कौन सा मेल है * और मसीह को बलीआल के साथ कौन सी हमआवाज़ी है और ईमानदार का बेईमान के साथ क्या
१६ हिस्सः है * और ख़ुदा के इबादतख़ानः को बुतों से कौन सी मुवाफ़क़त है तुम तो जीते ख़ुदा के घर हो चुनांचि ख़ुदा ने कहा है कि मैं उन में रहूंगा और उन में चलूंगा और
१७ मैं उनका ख़ुदा हूंगा और वे मेरे लोग होंगे * इसवास्ते ख़ुदावंद यिह कहता है कि तुम उन के दरमियान से निकल आओ और जुदा होओ और नापाक चीज़ को मत छूओ
१८ और मैं तुम को क़बूल करूंगा * और मैं तुम्हारा बाप हूंगा और तुम मेरे बेटे बेटियां होगे यिह ख़ुदावंद क़दीर का इरशाद है *

सातवां बाब

१ पस ऐ अज़ीज़ो हम को लाज़िम है कि अज़्बसकि उसने हम से ये वअदे किये अपने तईं हरमौअ की नजासत जिस्मी और रूही से पाक करके ख़ुदातरसी से तहारत को
२ कामिल करें * हम को क़बूल कर लो हम ने किसी पर ज़ुल्म नहीं किया किसी को ख़राब नहीं किया किसी का कुछ छीन
३ नहीं लिया * मैं उस नीयत से नहीं कहता कि इलज़ाम

हूं मैं तो आगे ही कह चुका हूं कि तुम हमारे दिलों में हो यहांतक कि हम चाहते हैं तुम्हारे ही साथ जीयें
४ और मरें * मैं कमाल बेख़ौफ़ ओ फ़तर तुम्हारा ज़िक्र करता हूं और तुम्हारे सबब से कमाल फ़ख़र करता हूं तसल्ली से भरा हुआ हूं मैं सब मुसीबतों में जो हम प‍र हैं सहूर से लबालब
५ होके बह चला हूं * जब हम मक़दूनिय: में आये हमारे जिस्म को असलन् आराम नथा बल्कि हम हरतरफ़ से दुख पाते
६ थे बाहर झगड़े अंदर धड़के * लेकिन ख़ुदा ने जो बेचारों को दिलासा देता है तीतस के आपहुंचने से हमें तसल्ली
७ बख़्शी * और न फ़क़त उसी के आजाने से बल्कि उस दिलासे से भी जो उसने तुम्हारे बीच रह के पाया दुहरी तसल्ली बख़्शी कि उसने तुम्हारे शौक़ और तुम्हारी ज़ारी और तुम्हारी सरगरमी को जो मेरी बाबत थी हमारे आगे
८ बयान किया यहांतक कि मैं ज़ियाद:तर ख़ुश हुआ * और अगरचि: मैं कुछ कुछ तुमको लिखके तुम्हारे ग़म का बाइस हुआ तो अगर मैं आगे पशेमान था अब नहीं हूं कि देखता हूं तुम उस नामे से थोड़ी मुद्दत तक तो मग़मूम हो
९ रहे * लेकिन अब मैं ख़ुश हुआ हूं न इसवास्ते कि तुम मग़मूम हुऐ पर इसवास्ते कि तुम्हारे ग़म का अंजाम तौब: हुआ क्यूंकि तुम ख़ुदा के लिये मग़मूम हुऐ सो तुम ने हम
१० से कुछ ज़रर नपाया * कि ग़मि इलाही का अंजाम ऐसा

ही तौबः है जो नजात तक पहुंचाता है जिससे कोई पशेमानी नहीं खैंचता पर ग़मि दुनया का अंजाम मौत होती है * देखो कि तुम्हारे ग़म ने जो ख़ुदा के लिये था तुम में क्याही चालाकी किया है मअज़िरत कियां है इनफ़िआल किया है ख़फ़गी किया है दहशत किया है इश्क़ किया है सरगरमी किया है क़ुव्वति इनतिक़ामियः पैदा की और तुम ने बख़ूबी साबित किया कि तुम इस बात में आलूदः नहीं हो * ग़रज़ अगरचिः मैं ने तुम्हें लिखा पर मैं ने न उस ज़ालिम की और न उस मज़लूम की ख़ातिर से बल्कि इसलिये लिखा कि हमारा तरद्दुद जो तुम्हारे लिये है ख़ुदा के ऊज़ूर तुम पर ज़ाहिर होवे * इसलिये हम ने तुम्हारी तसल्ली से तसल्ली पाई और तीतस की ख़ुशी से बहुत ज़ियादः ख़ुश हुए कि उसकी रूह ने तुम सभों से राहत पाई * और अगर मैं ने उसके साम्हने तुम्हारे बसबब कुछ फ़ख़र किया तो शरमिंदः नहीं पर जैसा सारी बातें जो हम ने तुमसे कहीं सच सच हैं वैसा ही हमारा फ़ख़र जो तीतस के साम्हने था हक़ है * और उसकी दिली शफ़क़त तुम पर ज़ियादः तर है कि उसको तुम सब की फ़रमांबरदारी याद है कि तुमने डरके और थरथरके उसे क़बूल किया * मैं ख़ुश हूं कि हरएक बात में तुम से मेरी ख़ातिर जमअ है *

आठवां बाब

१ और ऐ भाईओ हम ख़ुदा के उस फ़ज़्ल की जो मक़दूनियः की कलीसयाओं पर किया गया है तुमको इत्तिलाअ देते हैं॰
२ उनकी ख़ुशी फ़िरावां ने और उनके इफ़्लासि कामिल ने उनकी सख़ावत की कसरत को ज़ियादः ज़ाहिर किया॰
३ क्यूंकि मैं यिह गवाही देता हूं कि उन्हों ने ना मक़दूर
४ बल्कि मक़दूर से ज़ियादः अज़् ख़ुद ख़ैरात की॰ और उन्हों ने बहुत सा इल्तिमास करके चाहा कि हम उस बख़्शिश को
५ लेवें॰ और जितना हम उम्मेद्वार थे उन्हों ने उतना न किया बल्कि अपने तईं पहले ख़ुदावंद को और ख़ुदा की ख़ाहिश
६ से हमारे सुपुर्द किया॰ इसवास्ते हमने तीतुस से यिह इल्तिमास किया कि जैसा उसने शुरूअ किया था तुम्हारी
७ ख़ैरात को कामिल करे॰ और जैसा तुम्हारी हरऐक बात यअ्नी ईमान और गोयाई और पहचान और जिद्दि शदीद और वुह महब्बत जो तुम्हें हम से है कामिल है
८ वैसाही तुम्हारी वुह निअ्मत भी कामिल हो॰ और मैं कुछ हुक्म नहीं करता पर दूसरों को चालाक देखकर और इस लिये कि तुम्हारा सिद्क़ महब्बत ज़ाहिर होजाय ऐसा बोलता हूं॰
९ कि तुम हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के फ़ज़्ल को जानते हो। वुह दौलतमंद था और तुम्हारे वास्ते मुफ़लिस हुआ ता कि
१० तुम उसकी मुफ़लिसी से दौलतमंद हो जाओ॰ और मैं

इस बात में सलाह देता हूं क्यूंकि यही तुम्हारे वास्ते मुनासिब है कि तुम ने न फ़क़त यिह काम करना शुरूअ किया बल्कि एक बरस आगे से इरादः किया कि इसे करें ॥
११ पस अब काम को भी तुम तमाम करो ता जिस मुवाफ़िक़ तुम्हें इरादः करने में शिताबी थी वैसाही मक़दूर के मुवाफ़िक़
१२ तमामी भी होवे ॥ क्यूंकि अगर नीयत पहले होवे तो आदमी मुवाफ़िक़ अपनी क़दरि दौलत के न मुवाफ़िक़ि उस दौलत के
१३ जो उसकी नहीं मक़बूल होगा ॥ और यिह मेरा मतलब नहीं कि दूसरों के लिये आसानी और तुम्हारे लिये दुशवारी
१४ होवे ॥ पर यिह कि सब बराबरी के तौर पर होवे ता कि उस वक़्त तुम्हारी ज़ियादती उनकी कमती को पूरा करे और उनकी ज़ियादती तुम्हारी कमती को ता
१५ बराबरी होजावे ॥ चुनांचिः यिह लिखा है कि जिसने बहुत जमअ किया है उस पास बहुत नहीं और जिसने थोड़ा जमअ किया उस पास थोड़ा नहीं ॥
१६ अब ख़ुदा का शुक्र कि जिसने तुम्हारे लिये इस जिद ओ जिहद
१७ को तीतस के दिल में डाला ॥ कि उसने उस दअवत को तो क़बूल किया लेकिन बहुत चालाक होकर आप अपने
१८ इख़तियार से तुम पास निकल गया ॥ और हमने उसके साथ उस भाई को भेजा जिसकी तअरीफ़ इंजील के लिये
१९ सारी कलीसयाओं में है ॥ और इतनाही फ़क़त नहीं

बल्कि वुह कलीसयाओं का बरगुज़ीदः भी हूआ है, कि वुह हमारा हमसफ़र होके यिह बख़्शिश साथ लेजाये कि इस बख़्शिश के लिये हम ख़ादिम हैं ता कि एक ख़ुदावंद की सिताइश की जाय और तुम्हारी चालाकी ज़ाहिर होय *

२० हमने यिह पेशबीनी की कि कोई उस ख़ैरात फ़िरवां में
२१ जिसके हम ख़ादिम हैं हमको मुत्तहम नकरे * इसलिये कि जो बात न सिर्फ़ ख़ुदावंद के आगे बल्कि आदमियों को
२२ भी आगे भली है हम उसकी दूरअंदेशी करते हैं * और हमने उनके साथ अपने उस भाई को भेजा जिसे हमने बहुतसी बातों में बारहा आज़माकर चालाक पाया पर अब उस कामिल इअ़तिक़ाद के सबब से जो उसका तुम पर है
२३ ज़ियादः तर चालाक पाया * बाक़ी तीतस मेरा शरीक और तुम्हारे वास्ते मेरा हम ख़िद्मत है और हमारे भाई जो हैं तो
२४ कलीसयाओं के रसूल और मसीह के जलाल हैं * इसवास्ते तुम अपनी महब्बत को और हमारे उस फ़ख़र को जो तुम्हारे सबब हूआ है उन पर और कलीसयाओं पर साबित करो *

नवां बाब

१ पर उस ख़िद्मत की बाबत जो मुक़द्दस लोगों के वास्ते है
२ मेरा लिखना तुम को ज़ाइद है * क्यूंकि मैं तुम्हारी हिम्मत को जानता हूं और यही बाइस है जो मैं मक़दूनियों के आगे तुम्हारे सबब से यिह फ़ख़र करता हूं कि मुल्कि

अफ़सुर्दः एकबरस के आगे हैरानहोने पर तैयार था और
२ तुम्हारी सरगरमी ने बहुतों को तहरीक किया * लेकिन
मैं ने भाइओं को भेजा ता कि हमारा वुह तफ़ाख़ुर जो
इस बात में तुम से था आता नरहे ता कि जैसा मैं ने कहा
४ है तुम तैयार हो रहो * और कहीं ऐसा न होवे कि
अगर मक़दूनीलोग मेरे साथ आवें और तुम्हें नातैयार पावें
तो हम नहीं कहते कि तुम बल्कि हम उस फ़ख़र पर
५ इअतिमाद करने से शरमिंदः होवें * इसवास्ते मैं भाइओं
से यिह इलतिमास करना ज़रूर समझा कि वे तुम पास
पहले जावें और तुम्हारी ख़ैरात मौऊद को मुहैया कर रखें
ता कि वुह बख़्शिश आज़ादानः न कि मानिंद बख़ील की
६ तरह मौजूद रहे * पर यिह मअलूम रहे कि जो थोड़ा
बोता है थोड़ा काटेगा और जो इफ़रात से बोता है इफ़रात
७ से काटेगा * और हरएक जो कुछ करे अपनी दिल की
ख़्वाहिश से करे न कि ग़म से या ज़रूरत से क्यूंकि ख़ुदा
८ उसी को जो ख़ुशी से देता है प्यार करता है * और ख़ुदा
तुम को हर तरह की निअमत फ़िरावां दे सकता है ता कि
तुम हरबात में हमेशः कमाल क़ाबिल होके हर नौअ की
९ नेकोकारी से मअमूर हो जाओ * चुनांचिः लिखा है कि
उसने बिखराया है और मिसकीनों को दिया है और उसकी
१० सदाक़त अबदी है * अब जो बोनेके लिये तुख़्म और

खाने को रोटी बख़्शता है सो तुम को भी बख़्शे और तुम्हारे बीजों में जो बोये गये हैं बरकत बख़्शे और तुम्हारी सदक़ात
११ का हासिल बढ़ावे * ता कि तुम हरएक बात में ग़नी होके कमाल फ़ैज़रसान हो कि ऐसे फ़ैज़ के सबब हमारे वसीले से
१२ ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी होती है * क्यूंकि इस सदक़ः की ख़िदमत न सिर्फ़ मुक़द्दिसों की मकतूनों को पूरा करती है बल्कि बहुतों के वसीले से ख़ुदा के वास्ते शुक्र गुज़ारियों में
१३ भी फ़िरावानी बख़्शती है * इसवास्ते कि वे उस ख़िदमत की सनद से इसलिये ख़ुदा की सना करेंगे कि तुम मुत्तहिद होके मसीह की इंजील के मुतीअ हो और बहुत इख़लास
१४ से उनके और सबके शरीक हो * और वे ख़ुदा के उस फ़ज़्ल अफ़ज़ल के लिये जो तुम पर है तुम्हारे लिये बड़े
१५ शौक़ से दुआ मांगेंगे * और ख़ुदा का उसकी उस बख़्शिश पर जो बयान से बाहर है शुक्र है *

दसवां बाब

१ और मैं पूलूस जो तुम्हारे हुज़ूर तुम में हक़ीर और ग़ैबत में तुम पर दिलेर हूं मसीह की फ़रोतनी और तहम्मुल का
२ वास्तः देके तुम से अरज़ करता हूं * और यिह चाहता हूं कि मैं हाज़िर होके उन पर जिनके नज़्दीक हमारी रविश जिसमानी है वुह दिलेरी जो मैं किया चाहता हूं
३ न करूं * क्यूंकि हम अगरचिः जिस्म लिये हुए चलते हैं

४ पर जिसम की वज़अ पर लड़ते नहीं हैं * इसलिये कि
हमारी लड़ाई के हथियार जिसमानी नहीं पर ख़ुदा के सबब
५ क़िलओं के ढा देने पर क़ादिर हैं * कि हम तसव्वुरों को और
हरएक बलंदी को जो ख़ुदाशिनासी की मुख़ालफ़त से आप
को बाला करती है गिरा देते हैं और हरएक ख़ियाल को
६ असीर कर के मसीह का फ़रमांबरदार करते हैं * और हम
मुस्तइद हैं कि जब तुम्हारी फ़रमांबरदारी हद को पहुंच जाय
तो हम हर नौअ की नाफ़रमांबरदारी का इन्तिक़ाम लेवें *
७ क्या तुम ज़ाहिर की नमूद पर नज़र करते हो अगर किसी
को इसका यक़ीन है कि वुह आप मसीह का है तो वुह
फिर भी आपसे ग़ौर करे कि जैसा वुह मसीह का है हम
८ भी मसीह के हैं * कि अगर मैं उस मुख़तारी के सबब
जो ख़ुदावंद ने तअमीर के वास्ते न तुम्हारे ढा देने को हमें
९ दी है कुछ ज़ियादः फ़ख़र करूं शर्मिंदः न हूंगा * और
मैं यिह कहता हूं न होवे कि मैं ऐसा ज़ाहिर होऊं कि
१० नामे लिखके तुम्हें डराता हूं * क्यूंकि कोई कहता है
कि उसके नामे भारी और ज़ोरआवर हैं पर उसकी सूरत
११ जिसमी कमज़ोर और बोल चाल निकम्मी है * सो कहनेवाला
समझ रखे कि जैसी ग़ैबत में हमारे मक्तूबी अक़वाल हैं
वैसेही जब हम हाज़िर होंगे हमारे फ़िअल भी होंगे *
१२ क्यूंकि हमारी यिह जुरअत नहीं कि हम अपने तईं उन

में शुमार करें या उनसे मुक़ाबलः करें जो अपनी तअरीफ़ करते हैं लेकिन वे आपसे अपनी पैमाइश करके और
१३ आपसे अपना मुक़ाबलः करके नादान ठहरते हैं * पर हम पैमाने से बाहर जाकर फ़ख़र नकरेंगे बल्कि जिस क़ानून को पैमाइस ख़ुदा ने हमें बांट दी जो तुम तक पहुंची है हम
१४ उसीके मुवाफ़िक़ फ़ख़र करेंगे * ऐसा नहीं कि हम तुम तक
१५ भी मसीह की इंजील को ले पहुंचते हैं * और हम पैमाने के बाहर जाकर दूसरों की मिहनतों से फ़ख़र नहीं करते पर उम्मेदवार हैं कि तुम अपने ईमान में तरक़्क़ी करके हमको हमारे
१६ क़ानून में बहुत ज़ियादः बढ़ादो * ता कि हम तुम्हारी सरहद के उसपार जाके इंजील पहुंचावें और यिह नहीं कि हम दूसरों के क़ानून पर जहां सब तैयार हैं जाकर
१७ फ़ख़र करें * पस जो फ़ख़र करता है सो ख़ुदावंद से फ़ख़र
१८ करे * क्यूंकि न वुह जो अपनी सिताइश करता है पर वुह जिसकी सिताइश ख़ुदावंद करता है मक़बूल है *

ग्यारहवां बाब

१ काशकि तुम क़दरः मेरी बेवक़ूफ़ी की बरदाश्त करो और तुम
२ तो मेरी बरदाश्त करते हो * मुझे तुम्हारे लिये बशिद्दत रश्क आता है क्यूंकि मैं ने तुम्हें संवारा ता कि मैं तुम को पाकदामन कुंआरी के मानंद एक ही शौहर के पास
३ यअ़ने मसीह के पास हाज़िर करूं * पर मैं डरता हूं

कहीं ऐसा नहोवे कि जैसा सांप ने अपनी दग़ाबाज़ी से
हव्वा को ठगा ऐसही तुम्हारी फ़हमीद भी उस ख़ालिस
४ ऱुफ़ाई को जो मसीह के साथ है गुम करे * कि जो कोई
आता है अगर दूसरे ईसा की जिसकी हम ने मुनादी
नहीं की करता या अगर तुम कोई और रूह जिसे तुम
ने नपाया था या दूसरी इंजील जिसे तुम ने नलिया था
५ पाते तो तुम्हारा मुतह़म्मिल होना बजा होता * मैं अपने
६ तईं भी बड़े ह़वारियों से कमतर नहीं बूझता हूं * क्यूंकि
अगर मेरी बोल चाल अवाम कीसी है पर मेरी दानिश
उनकी सी नहीं लेकिन हम तो हरएक बात में तुम्हारे
७ नज़दीक सब में मशहूर हुए हैं * मैं ने जो अपने
तईं फ़रोतन किया ता कि तुम बलंद होओ क्या मैं ने
गुनाह किया क्यूंकि मैं ने तुम्हें ख़ुदा की इंजील मुफ़ दी *
८ और मैं ने तो दूसरी कलीसयाओं को लूट लिया कि मैं ने
९ तुम्हारी ख़िदमत के लिये उनसे महीनः लिया * और मैं
तुम्हारे पास ह़ाज़िर रहकर जब मुह़ताज हुआ तब भी
किसी का बारख़ातिर नहूआ क्यूंकि मेरी इह़तियाज को उन
भाइओं ने जो मकदूनियः से आये थे रफ़अ किया और
हरएक बात में मैं तुम पर बार होने से बाज़ रहा और बाज़
१० रहूंगा * मसीह की उस सच्चाई की जो मुझ में है
क़सम कि वुह तफ़ाख़ुर अख़ाईयः के अक़लीमों में मुझ से

११ जुदा न होगा * किसवास्ते क्या इसवास्ते कि मैं तुम से
१२ मुहब्बत नहीं रखता ख़ुदा को मालूम है * पर मैं जो
करता हूं सोही करता रहूंगा कि मैं उनको जो बहाना
ढूंढते हैं बहाना पाने न दूं ताकि जिस बात में वे फ़ख़र
१३ करते हैं ऐसे जैसे हम हैं पाये जावें * क्यूंकि ऐसे लोग
झूठे हवारी और दग़ाबाज़ कारकुन हैं और वे अपनी
१४ सूरतों को मसीह के हवारियों से मुबद्दल करते हैं * और
यिह तअज्जुब नहीं कि शैतान भी अपनी सूरत को नूर के
१५ फ़िरिश्ते से मुबद्दल करता है * इसवास्ते अगर उसके ख़ादिम
भी सूरतों को रास्तबाज़ी के ख़ादिमों की सूरतों से मुबद्दल करें
तो कुछ यिह बड़ी बात नहीं पर उनका अंजाम उनके कामों
१६ के मुवाफ़िक़ होगा * और फिर मैं यिह कहता हूं कि
कोई मुझे बेवक़ूफ़ न समझे और नहीं तो तुम मुझे बेवक़ूफ़
१७ जानकर क़बूल करो कि मैं भी ज़रा फ़ख़र करूं * जो कुछ
कि मैं फ़ख़र के इस्तिक़लाल से कहता हूं सो ख़ुदावंद की
१८ तरह से नहीं बल्कि बेवक़ूफ़ी से कहता हूं * अज़बसकि
बहुत से जिस्मानी तरह पर फ़ख़र करते हैं मैं भी फ़ख़र
१९ करूंगा * क्यूंकि तुम आप दानिशमंद होकर बेवक़ूफ़ों की
२० बरदाश्त बख़ुशी करते हो * इसलिये कि जब कोई तुम्हें
बंदः करता है या जब कोई तुम्हें निगलता है या जब
कोई तुम से कुछ लेता है या जब कोई आपको बलंद करता

है या जब कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारता है तो तुम
२१ बरदाश्त करते हो * और गोया इसवास्ते कि हम भी
कमज़ोर हैं मैं ज़लील बातें बोलता हूं पर जिस बात में
कोई जरी है तो मैं बेवक़ूफ़ी से यिह कहता हूं कि मैं
२२ भी उस में जरी हूं * क्या वे इबरानी हैं तो मैं भी हूं
या इसराईली हैं तो मैं भी हूं या इबराहीम की नसल से
२३ हैं तो मैं भी हूं * या मसीह के ख़ादिम हैं तो मैं
नादानी से कहता हूं कि मैं ज़ियादः तर हूं यअ्ने
मिहनतों में ज़ियादः और कोड़े खाने में हद से ज़ियादः
२४ और क़ैदों में बेशतर और मौतों में अकसर * और मैं ने
पांच बार हरदफ़्अ यहूदियों के ऐक कम चालीस कोड़े
२५ खाये * और तीन बार छड़ियों से मार खाई और ऐक दफ़्अ
पत्थरों की मार खाई और तीन मरतबः मेरी नाओ तोड़ी
२६ गई और ऐक रात दिन दरया में काटा * और मैं सफ़रों
में बहुत और नदियों के ख़तरों में और चोरों के ख़तरों
में और अपनी उम्मत से ख़तरों में और अक़वाम से ख़तरों
में और शहर के बीच ख़तरों में और बियाबान के बीच
ख़तरों में और समुंदर के बीच ख़तरों में और दग़ाबाज़ भाइओं
२७ के बीच ख़तरों में रहा हूं * मिहनत और दर्दअंगेज़ी
में बारहा बेदारियों में भूख और प्यास में अकसर बार
फ़ाक़ाकशियों में सर्दी और उरयानी में भी रहा हूं *

२८ इन बाहरवाली चीज़ों के सिवा सारी कलीसियाओं का फ़िक्र
२९ मुझ को हर रोज़ दबाता है * कौन कमज़ोर है कि मैं कमज़ोर नहीं और कौन बेज़ार होता है कि मैं नहीं
३० जलता * अगर फ़ख़र किया चाहे तो मैं अपनी कमज़ोरियों
३१ पर फ़ख़र करूंगा * ख़ुदा हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का बाप जो अबद तक ममदूह है जानता है कि मैं झूठ
३२ नहीं बोलता * और दमिश्क़ में उस हाकिम ने जो बादशाह हारिस की तरफ़ से था इस इरादे से कि मुझे
३३ पकड़ ले दमिश्क़ियों के शहर पर चौकी बिठलाई * तब मैं खिड़की की राह से टोकरी में दीवार पर से लटका दिया गया और उसके हाथों से बच निकला *

बारहवां बाब

१ बे शुबह: मुझे लाइक़ नहीं कि अपना फ़ख़र करूं कि मैं ख़ुदावंद के ख़ियालों और वहिओं को बयान किया चाहता हूं *
२ मैं जानता हूं कि एक आदमी मसीह में होके चौदह बरस गुज़रे होंगे या तो बदन के साथ कि मुझे उसका इल्म नहीं या बिग़ैर बदन के कि मुझे उसका भी इल्म नहीं पर ख़ुदा को मअ़लूम है तीसरे आसमान तक नागाह पहुंचाया
३ गया * और मैं जानता हूं कि वुह आदमी या बदन के साथ या बदन के बिग़ैर कि मुझे मअ़लूम नहीं पर ख़ुदा को
४ मअ़लूम है * फ़िरदौस तक नागाह पहुंचाया गया और उसने

वे बातें सुनीं जो कहने की नहीं और जिनको बोलना बशर
५ का मक़दूर नहीं * ऐसही आदमी पर मैं फ़ख़र करूंगा
पर मैं आप पर सिवा उसके कि अपनी कमज़ोरियों पर
६ फ़ख़र करूं फ़ख़र नकरूंगा * कि अगर मैं फ़ख़र किया
चाहता तो मैं बेवक़ूफ़ न बनता इसलिये कि मैं सदाक़त से
बोलता पर मैं आप को बाज़ रखता हूं ता नहोवे कि कोई
मुझे उस से जैसा मुझे देखता है या जैसा मेरे हक़ में
७ सुनता है बाला जाने * और ता कि मैं बहीओं की नअ़मतों
से मग़रूर नबनूं मेरे जिसम में कांटा जो शैतान का पैक
है कि मुझे घूंसे मारे रखागया ता कि मैं मग़रूर नहोने
८ पाऊं * और उसके लिये मैंने ख़ुदावंद से तीनवार
९ इलतिमास किया कि यिह मुझ में से दूर हो जावे * पर
उसने यिह मुझसे कहा कि मेरी नअ़मत ही तुझे काफ़ी है
क्यूंकि मेरा ज़ोर कमज़ोरी में मुकम्मल होता है इसवास्ते मैं
अपने कमज़ोरियों पर फ़ख़र करना बहुत ख़ुशी से पसंद करता
१० हूं ता कि मसीह का ज़ोर मुझ पर सायः डाले * सो मैं
मसीह के वास्ते कमज़ोरियों में और मलामतों और दरमांदगियों
में और अज़ीयतों में और तंगियों में राज़ी हूं कि जब
११ मैं कमज़ोर हूं तबही ज़ोरआवर हूं * मैं फ़ख़र करने
से बेवक़ूफ़ बना हूं पर मैं ने तुम से मजबूर होके किया
क्यूंकि चाहता था कि तुम मेरी सिताइश करते इसलिये कि

मैं बहुत बड़े ह़वारियों से कुछ कमतर नहीं हूं अगरचि
१२ नचीज़ हूं * और ह़वारी होने की दलीलें कमाल तह़म्मुल
से और मुअजिज़ों और अजाइब औ ग़राइब के सबब से
१३ तुम्हारे बीच रोशन हुईं * तुम कौनसी बात में दूसरी
कलीसियाओं से कमतर थे सिवा उस के कि मैं तुम्हारा
बारख़ातिर न था तुम मेरी यिह बेइनसाफ़ी मुआफ़ करो *
१४ देखो कि मैं फिर तीसरी बार तुम्हारे पास आने पर तैयार
हूं पर फिर भी तुम पर बार न हूंगा क्यूंकि मैं ने तुम्हारा
कुछ बल्कि तुम्हीं को ढूंढता हूं इसलिये कि चाहिये कि
मा बाप फ़रज़ंदों के लिये न कि फ़रज़ंद मा बाप के लिये
१५ जमअ करें * और मैं तुम्हारी जानों के वास्ते बहुत ख़ुशी से
ख़रच करूंगा और ख़रच हो जाऊंगा अगरचि मैं जितना
१६ ज़ियादः प्यार करता हूं उतनाही कमतर प्याराहोऊं * पर
फ़रज़ किया कि मैं तुम्हारा बारख़ातिर न था लेकिन शायद
१७ मैं ने पुरफ़न कारी से तुम्हें फ़रेब करके फसाया * जिन्हें मैं ने
तुम पास भेजा उनमें से किसी के वसीले से कुछ तुम से नफ़अ
पाया मैं ने तीतस से इलतिमास किया और उस के साथ एक
१८ भाई को भेजा * तो क्या तीतस ने तुमसे कुछ नफ़अ पाया
और क्या हम एक ही रूह से और एकही नक़्श पा पर
१९ न चलते थे * और क्या तुम गुमान करते हो कि हम तुमसे
उज़्र करते हैं सो नहीं हम ख़ुदा के आगे मसीह़ से बोलते

हैं ऐ हबीबो यिह सारी बातें तुम्हारी तअमीर के लिये हैं ✱
२० मैं डरता हूं कहीं ऐसा नहो कि मैं आकर जैसा तुम्हें
चाहता हूं वैसा नपाऊं और नहो कि मुझे भी जैसा तुम
चाहते हो वैसा पाओ और नहो शायद क़ज़ीये और हसद
और ग़ज़ब और ख़रख़शे और ग़ीबतें और सिरगोशियां
२१ और शेख़ियां और हंगामे होवें ✱ और नहो कि जब
आऊं तब मेरा ख़ुदा मुझे तुम्हारे पास पस्त करे और नहो
कि मैं उनमें से अकसरों के वास्ते जिन्हों ने आगे गुनाह
किया और अपनी नापाकी और ज़िना और शहवत से
तौबः नकिया अफ़सोस करूं ✱

तेरहवां बाब

१ यिह तीसरा मरतबः है कि मैं तुम्हारे पास आता हूं और दो
या तीन गवाहों के मुंह से हरएक बात पक्की हो जायगी ✱
२ मैं ने आगे यिह कहा है और मैं आपको हाज़िर फ़र्ज़ करके
दूसरी बार आगेसे कहदेता हूं और अब ग़ीबत में उनको
जिन्हों ने आगे गुनाह किये और बाक़ी सभों को भी यिह
कहता हूं कि अगर मैं फिर आऊं तो तग़ाफ़ुल न करूंगा ✱
३ क्यूंकि तुम इसबात की सनद के तालिब हो कि मसीह मुझ
में बोलता है वुह तुम्हारे नज़दीक कमज़ोर नहीं है बल्कि
४ तुम में क़वी है ✱ अगरचिः वुह कमज़ोरी से सलीब पर
मारा गया लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत से वुह जीता है और हम

भी उस में होके कमज़ोर हैं पर उसके साथ ख़ुदा की
५ क़ुदरत से जो तुम्हारे हक़ में है जीते होंगे * तुम आप
को जांचो कि तुम ईमान के साथ हो कि नहीं अपने
तईं परखो क्या तुम आप को नहीं जानते कि ईसा मसीह
६ तुम में है और नहीं तो तुम नामक़बूल हो * पर मैं
उम्मेदवार हूं कि तुम मअ़लूम करो कि हम नामक़बूल
७ नहीं * और मैं ख़ुदा से यिह दुआ मांगता हूं कि तुम
कुछ बुरा नकरो सो न इसवास्ते कि हम मक़बूल ज़ाहिर होवें
पर इसवास्ते कि तुम भला करो गोकि हम नामक़बूल की
८ मानंद रहें * क्यूंकि हम रास्ती के बरख़िलाफ़ कुछ नहीं
९ पर रास्ती के वास्ते सब कुछ कर सकते हैं * कि जब तुम
क़ूवतवर हो गोकि हम कमज़ोर हैं हम ख़ुश होते हैं और
हम उसके लिये यअ़ने तुम्हारी तकमील के लिये भी दुआ मांगते
१० हैं * इसलिये मैं तुम्हारी ग़ीबत में ये बातें लिखता हूं
ता कि मैं तुम पास हाज़िर होकर उस इक़तिदार से जो
ख़ुदावंद ने मुझे तअ़मीर के वास्ते और नफ़ा देने के वास्ते दिया
११ है तुम पर सख़्ती नकरूं * ग़रज़ ऐ भाईओ अब ख़ुश
रहो कामिल हो ख़ातिर जमअ़ रखो ऐक दिल हो मिले
रहो ख़ुदा जो महब्बत और सुलह का मूजिद है तुम्हारा
१२ यार रहे * तुम ऐक दूसरे का पाक बोसः लेके सलाम
१३ करो * सारे मुक़द्दस लोग तुम्हें सलाम कहते हैं (१४) अब

ख़ुदावंद ईसा मसीह की निअ़मत और ख़ुदा की महब्बत और रूहि क़ुद्दस की आमेज़िश तुम सभों के साथ हमेशः होवे आमीन *

पूलुस का मक्तूब ग़लतियों के लिये

पहला बाब

१ पूलुस जो न आदमी के तक़र्रुर से न आदमी के वसीले से बल्कि ईसा मसीह के और उसके बाप ख़ुदा के फ़रमूदः से जिसने उसको मुरदों में से फिर के जिलाया हवारी हूआ *
२ और सारे भाइओं की तरफ़ से जो मेरे साथ हैं ग़लतियः
३ की कलीसयाओं को * हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से निअ़मत औ आराम तुम्हारे लिये होवे *
४ उसने हमारे गुनाहों के बदले में अपने तईं दिया ता कि वुह हमको हमारे बाप ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ इस
५ दुन्याय दनी से बचाले * जलालि अबदी उसी का है आमीन *

६ मैं हैरान हूं कि तुम उसको जिसने तुम्हें फ़ज़्लि मसीह में
७ बुलाया छोड़कर औरही इंजील के होगये * सो वुह कुछ चीज़
नहीं सिवा उसके कि बअ़ज़े तुम्हें घबराते हैं और इंजील
८ मसीह को पेच गिरते हैं * लेकिन अगर हम या आसमान
से कोई फ़िरिश्तः सिवा उस बशारत के जो हमने तुम्हें दी
कोई दूसरी बशारत तुम पास लावे वुह मलऊन होवे *
९ जैसा हमने आगे कहा वैसा मैं दोबारः फ़िर कहता हूं
कि अगर कोई किसी इंजील को सिवा उसके जिसे तुमने
१० पाया तुम पास लावे वुह मलऊन होवे * और मैं आदमियों
का मक़बूल हूं या ख़ुदा का क्या मैं आदमी की रज़ामंदी
चाहता हूं अगर मैं आदमियों को ख़ुश आता तो मैं
११ मसीह का बंदः नहोता * पर ऐ भाईओ मैं तुम्हें जताता हूं
कि वुह इंजील जिसकी ख़बर मैं ने दी सो आदमियों की
१२ तरफ़ से नहीं है * इसलिये कि मैं ने उसको आदमी के हाथ
से नहीं पाया और न आदमी से सीखा पर ईसा मसीह
१३ के इज़हार से पाया * तुम मेरी रविश से जब मैं यहूदियों
की तरीक़ पर चलता था मुत्तिलअ़ हो मैं ख़ुदाकी कलीस्या
१४ को बेनिहायत सताता था और वीरान करता था * और अपनी
क़ौम में अपने अकसर हमउमरों के बीच दीनि यहूदी में
मुमताज़ था कि अपने बाप दादों की सुन्नतों पर ज़ियादः सरगरम
१५ था * पर जब ख़ुदा जिस ने मुझे माके पेट से अलग होते हुये

१६ अलग किया और अपने फ़ज़ल से बुलाया राज़ी हूआ * कि अपने बेटे को मुझ में ज़ाहिर करे ता कि मैं उसकी खुशख़बरी ग़ैर क़ौमों के बीच दूं तद उन दिनों में मैं ने गोश्त और
१७ लहू से इख़तिलात न किया * और न उन पास जो मुझ से पहले हवारी हूये थे औरशलीम में गया अरब को गया फिर
१८ वहां से दमिश्क़ को फिरा * फिर तीन बरस बअ़द पतरस से मुलाक़ात करने औरशलीम को गया वहां उस पास पंदरह
१९ दिन रहा * और हवारियों में से किसी दूसरे को नहीं देखा
२० मगर खुदावंद के भाई यअ़क़ूब को * जो बातें मैं तुमको
२१ लिखता हूं खुदा के आगे कहता हूं कि झूठी नहीं * बअ़द
२२ उसके मैं सिरिया और क़लक़िया की अक़लीमों में आया *
२३ और यहूदियः की मसीही जमाअ़तें मेरी सूरत से ना आशना रहीं * सिर्फ़ वे सुनते थे कि जो हमको आगे सताता था सो उस ईमान की जिसे आगे वुह ख़राब करता था अब बशारत देता है और वे मेरी बाबत खुदा की सना करते थे *

दूसरा बाब

१ फिर चौदह बरस बअ़द मैं बरनाबास के साथ तीतस को लिये
२ हूए औरशलीम को फिर गया * और मेरा जाना हुक्म इलाही से हूआ और वुह इंजील जिसकी मुनादी मैं ग़ैर क़ौमों में करता हूं उन्हें सुनाई और मुअ़तबरों को अलग सुनाई ता न होवे कि मेरी तगओदौ गुज़श्तः ओ हाल की

३ वेफ़ायदः हो * पर तीतस को भी जो मेरे साथ था और यूनानी है
४ मख़तून होने को तकलीफ़ नहीं की गई * और यिह
झूठे भाइओं के सबब से जो छिपके घुस आये ता कि उस
आज़ादगी को जो ईसा मसीह में हमको मिली है जासूसी
५ करके दरयाफ़्त करें ता कि वे हमको बंदः करें * पर हम
ने ऐक साअ़त भी ज़ेरदस्त होके उन की फ़रमांबरदारी नकी ता
६ कि इंजील की हक़ीक़त तुम्हारे पास साबित रहे * पर वे
जो नज़र में कुछ चीज़ थे सो जैसे थे वैसे थे मुझे कुछ काम
नहीं है कि ख़ुदा ज़ाहिर बीन नहीं ख़ैर उन्हों ने जो
७ मुअ़तमिद थे मुझे कुछ मसलहत नदी * बरख़िलाफ़ इसके
जब यअ़क़ूब और काफ़ा और यूहन्ना ने जो अरकान से
मअ़लूम होते थे देखा कि मुझे यिह सांपा गया कि
नामख़्तूनों को इंजील दूं जैसा पतरस के सुपुर्द हूआ कि
८ मख़तूनों को इंजील पहुंचाये * क्यूंकि जिसने पतरस को
मख़तूनों पास भेजके उसके काम में तासीर बख़्शी उस ने
ग़ैरक़ौमों के दरमियान मेरे काम में भी असर बख़्शा *
९ और उन्हों ने उस निअ़मत को जो मुझे दी गई थी दरयाफ़्त
किया मुझे और बरनाबास को शिरकत की सह से दहने
हाथ दिये कि हम ग़ैर क़ौमों के और वे मख़तूनों के पास
१० जावें * मगर इतना कहा कि तुम मुफ़लिसों को याद रखो
११ सो मैं उस अमर में चालाक था * और जब पतरस

इनाकियः में आया ता इसलिये कि वुह सज़ावारि मलामत
१२ था मैं ने रूबरू उस से मुक़ाबलः किया * क्यूंकि वुह
पेशतर उस से कि कई शख़्स यअक़ूब की तरफ़ से आवें
ग़ैर क़ौमों के साथ खाया करता था पर जब वे आये तब
१३ वुह मख़्तूनों से डरके पीछे हटा और अलग हूआ * और
बाक़ी यहूदियों ने भी उसीकी तरह दोरंगी की यहांतक कि
१४ उनकी दोरंगी ने बरनाबास को भी लेलिया * जब मैं ने
देखा कि ये इंजील की सहि रस्त पर सीधी नहीं चलते
मैं ने सभों के साम्हने पतरस को कहा कि जब तू यहूदी
होकर अजनबियों की तरह न कि यहूदियों की तरह औक़ात
काटता है पस तू किसवास्ते ग़ैरक़ौमों को यिह तकलीफ़ देता
१५ है कि यहूदियानः मआश रखें * हम भी जो क़ौम के
१६ यहूदी हैं और अजनबियों में के गुनहगार नहीं * यिह
जानकर कि आदमी न शरअ के काम करने से बल्कि ईसा
मसीह पर ईमान लाने से रास्तबाज़ गिना जाता है ईसा मसीह
पर ईमान लाये ता कि हम ईसा मसीह पर ईमान लने
से नकि शरअ के काम करने से रास्तबाज़ गिने जावें क्यूंकि
कोई बशर शरई अअमाल करने से रास्तबाज़ गिना नजायगा *
१७ और हम अगर यिह जानके कि मसीह के सबब से रास्तबाज़
गिने जावें गुनहगार हैं ता मसीह गुनाह का सबब है ख़ुदा
१८ नकरे * क्यूंकि जिन चीज़ों को मैं ने ढा दिया अगर उन्हें

फिरके बनाऊं तो मैं अपने तईं मुजरिम ठहराता हूं *
१९ इसवास्ते कि मैं शरअ ही के बाइस शरअ की बनिस्बत
हलाक हूआ ता कि मैं ख़ुदा के आगे ज़िंदः हो जाऊं *
२० और मैं मसीह के साथ सलीब पर खैंचा गया हूं और मैं
जो ज़िंदः हूं सो न मैं बल्कि मसीह मुझ में ज़िंदः है और
मेरी ज़िंदगी जो अब ख़सम रखती हूई है सो ख़ुदा के बेटे
पर ईमान लानेसे है कि उसने मुझ से महब्बत की और
२१ आप को मेरे बदले दिया * और मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल को
नाचीज़ नहीं करता क्यूंकि रास्तबाज़ी अगर शरअ से मिलती है
तो मसीह अबस मूआ *

तीसरा बाब

१ ऐ बावले ग़लतियो किसकी जादूभरी आंखों ने तुमको मारा कि
तुम रास्ती के नाफ़रमांबरदार हूए बावजूदे कि ईसा मसीह
तुम्हारी आंखों के साम्हने यूं नुमायां किया गया कि गोया
२ तुम्हारे दरमियान सलीब पर खैंचा गया * और मैं सिर्फ़
यिह चाहता हूं तुमसे इतना दरयाफ़्त करूं कि तुमने शरई
३ अमल करके रूह पाई या ईमानदारी से सुनके * क्या
तुम ऐसे बावले हो क्या तुम रूह से इबतिदा करके
४ जिस्मी कामों से मुकम्मल हो सकते हो * क्या तुमने इतनी
५ चीज़ों की बरदाश्त अबस की पर शायद अबस नहीं * पस
वुह जो तुम्हें रूह बख़्शता है और तुम में मुअजिज़ः

को कुदरत पैदा करता है सो शरअ के अमलों से या कि समाअ़नि ईमानी से ऐसा करता है * चुनांचिः इबराहीम खुदा पर ईमान लाया और उसको तरफ़ रास्तबाज़ी मनसूब हुई * पस जानो कि जो अहलि ईमान हैं सोही इबराहीम के बेटे हैं * और किताब ने यिह पेशबीनी करके कि खुदा अजनबियों को भी ईमान की राह से रास्तबाज़ ठहराता है इबराहीम को आगेही यिह खुशखबरी दी कि तमाम अक़वामि अजनबी तेरे बाइस से नेकबख़्त होंगे * पस जो ईमान वाले हैं सो ईमानदार इबराहीम के साथ बरकत पाते हैं * क्यूंकि वे सब जिनका मदार अअ़मालि शरई पर है लअ़नती हैं कि लिखा है कि हरऐक शख़्स जो इनबातों के करने पर जो शरअ की किताब में लिखी हैं पायदार नहीं रहता मलऊ़न है * पर यिह बात कि कोई खुदा के नज़दीक शरअ से रास्तबाज़ नहीं ठहरता सो ज़ाहिर है क्यूंकि जो ईमान से रास्तबाज़ हूआ सोही जीयेगा * अब शरअ ईमान में दाख़िल नहीं बल्कि वुह आदमी जिसने उन हुक्मों पर अमल किया सो जीयेगा * मसीह ने हमें मोल लेकर शरअ की लअ़नत से छुड़ाया कि वुह हमारे बदले मौरदि लअ़न हूआ क्यूंकि लिखा है कि हरऐक जो लकड़े से जकड़ा हूआ है सो मलऊ़न है * ता कि इबराहीम की बरकत ग़ैर क़ौमों तक ईसा मसीह से पहुंचे ता कि हम रूहि मौऊ़द

१५ पावे * ऐ भाइओ मैं आदमी की तरह बोलता हूं आदमी की वसीयत को जो मुक़र्रर हुई कोई बातिल नहीं करता
१६ और न उस पर कुछ ईज़ाद करता है * अब इबराहीम और उसकी नसल से वअदे किये गये सो वुह उसे नहीं कहता कि और तेरी नसलों को जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है पर जैसा ऐक के वास्ते कहा जाता है कहता है कि और तेरी नसल को सो वुह मसीह
१७ है * अब मैं यिह कहता हूं कि उस वसीयत को जो ख़ुदा ने मसीह के हक़में आगे मुक़र्रर की शरअ जो वसीयत से चारसै तीस बरस के बअद आई बरबाद नहीं करती कि
१८ वुह वअदः ख़िलाफ़ हो जावे * क्यूंकि अगर मीरास शरअ के वसीले से है तो फिर वअदे के सबब से नहीं पर
१९ ख़ुदा ने वुह इबराहीम को वअदः हीसे बख़शी * पस शरअ किस काम की है वुह गुनाहों के लिये ईज़ाद की गई जबतक कि वुह नसल जिसके लिये वअदः किया गया आवे और वुह शरअ फ़िरिश्तों की वसातत से और ऐक वास्तः की मअरिफ़त
२० से सुपुर्द की गई * अब वास्तः ऐक का नहीं होता पर
२१ ख़ुदा ऐकही है * पस शरअ क्या ख़ुदा के वअदों की मुख़ालिफ़ है ऐसा नहोवे क्यूंकि अगर कोई ज़िंदगी बख़्श शरअ दी गई होती तो सच मुच रास्तबाज़ी शरअ से मिलती *
२२ पर किताब ने सबको बाहम गुनाह के तहत शामिल किया ता कि

बुह बअदः जो ईसा मसीह पर ईमान लानेके वसीले से
२२ है ईमानदारों को दिया जावे * पस ईमान के आने से
पेशतर हम शरअ की बंद में कैद थे और उस ईमान के
२४ वास्ते जो ज़ाहिर होने वाला था बाहम बंद थे * पस शरअ
हमारा उस्ताद ठहरा कि हमको मसीह तक पहुंचावे तद
२५ हम ईमान से रास्तबाज़ गिने जावें * पर जब ईमान
आ चुका तो फिर हम उस्ताद की बंद में नहीं रहते *
२६ क्यूंकि तुम सब के सब उस ईमानके सबब से जो ईसा मसीह
२७ पर है ख़ुदा के फ़रज़ंद हो * कि तुम सब ने जो इस्तिबाग़ि
२८ मसीही पाया मसीह को पहन लिया * वहां न यहूदी न यूनानी
है न बंदः न आज़ाद है क्यूंकि तुम सब के सब मसीह
२९ ईसा में एकही हो * और अगर तुम मसीही हो तो
इबराहीम की नसल हो और बअदः के मुताबिक़ वारिस हो *

चौथा बाब

१ और मैं कहता हूं कि वारिस जबतक नाबालिग़ है उस में
और ग़ुलाम में फ़रक़ नहीं बुह अगरचिः सबका ख़ुदावंद
२ है * लेकिन उस वक़्त तक जो बाप ने मुक़र्रर किया है अमीनों
३ और नाइबों के हुक्म में रहता है * सो हम भी जब लड़के
थे तबतक तरबियत करने वाली रसमों की जो दुनयवी हैं
४ बंद में थे * पर जब वक़्त आख़िर हूआ तब ख़ुदा ने अपने
बेटे को भेजा बुह रंडी के पेटसे शरअ का महकूम होके पैदा

५ हुआ * ता कि वुह अहलि शरीअत को मोल ले और
६ हम लेपालक होनेका दरजः पावें * और अज़बसकि तुम
बेटे हो खुदाने अपने बेटे की रूह जो आबा यअने
बाप बाप पुकारती है रवानः करके तुम्हारे दिलों में डल दी *
७ पस तू अब बंदः नहीं बल्कि बेटा और जब कि बेटा है तो
८ मसीह के सबब से खुदा का वारिस है * लेकिन तुम आगे
जब खुदाशिनास नथे उनके जो हक़ीक़त में खुदा नहीं
९ बंदे थे * पर अब जो तुमने खुदा को पहचाना बल्कि खुदाने
तुम को जाना तुम क्यूं दोबारः उन सुस्त अदना इब्तिदाई
की तरफ़ फिरते हो और चाहते हो कि सरिनौ उनकी बंदगी
१० करो * तुम दिनों महीनों वक़्तों बरसों को मानते हो *
११ मैं तुमसे डरता हूं नहोवे कि मैं ने जो तुम पर मिहनत
१२ की है ज़ायअ हो * तुम मुझ जैसे होजाओ कि मैं तो
तुम जैसा बनगया हूं ऐ भाइओ मैं तुम से अरज़ करता
१३ हूं कि तुमने मेरा कुछ ख़ला बिगाड़ा नहीं * तुम जानते
हो कि मैं आगे जिसमकी कमज़ोरी में तुम को बशारत दी *
१४ और तुमने मेरे उस इमतिहान को मेरे जिसम में हक़ीर
नजाना और न नफ़रत किया बल्कि मुझे खुदा के फ़िरिश्ते
की मानंद और मसीह ईसा की मानंद क़बूल किया *
१५ और तुमने क्याही फ़ैज़ अज़ीम समझा था मैं तुम्हारा गवाह हूं
कि अगर होसकता तो तुम अपनी आंखें निकाल के मुझे

१६ देते * पस क्या तुमने इस सबब से कि मैं सच बोला
१७ मुझे नफ़रत किया * वे तुम्हारे दिलसोज़ हैं पर बखूबी
नहीं और हम को निकाल दिया चाहते हैं ता कि तुम
१८ उनके दिलसोज़ हो * ऐ मेरे बच्चो कि मुझे तुम्हारे सबब
सोरेनौ दर्दिज़ह है जबतक मसीह तुम में सूरत पकड़े *
१९ अच्छी बात पर मुदावमत से सरगरम रहना अच्छा है न
२० कि सिर्फ़ जबही तक कि मैं हाज़िर हूं * मैं चाहता हूं
अब तुम पास आऊं और अपनी आवाज़ बदलूं क्योंकि
२१ मुझे तुम्हारी तरफ़ से शुबह है * मुझ से कहो तो तुम
जो शरीअत के तालिब हो क्या तुम नहीं सुनते कि शरीअत
२२ क्या कहती है * यिह लिखा है कि इब्राहीम के दो बेटे
२३ थे एक कनीज़ से दूसरा आज़ाद से * वुह जो जारियः से था
जिसम की वज़अ पर पैदा हूआ और जो आज़ाद से था सो
२४ वअदः के तौर पर मुतवल्लद हूआ * यिह मअने ज़ाहिर
के हैं इसलिये कि यिह रंडियां दो वसीयतें हैं एक तो कोहि
सनिया की जो निरे गुलाम जनती है यिह हाजिरः है *
२५ कि हाजिरः अरब का कोह सनयः है और यहां की
औरशलीम की हमजिन्स है और अपने लड़कों के साथ
२६ बंदगी में है * पर ऊपर की औरशलीम आज़ाद है सो हमसभों
२७ की मा है * क्यूंकि यिह लिखा है कि ऐ बांझ जो
जनेवाली नहीं जी जान से ख़ुश हो और तू जो दर्दिज़ह

नहीं जानती अब फूले नसमा और चीखें मार क्यूंकि निखसमी
१८ के लड़के खसमवाली के लड़कों से ज़ियादः हैं * और ऐ
भाइओ हम इसहाक़ की तरह वअ्दः के फ़रज़ंद हैं *
१९ पर जैसा उसवक़्त वुह जिसकी पैदाइश जिसमानी थी उसे
जिसका तवल्लुद रूह् नी था सताता था वैसा अब भी होता
२० है * पर किताब क्या कहती है कि लौंडी को और उस के
बेटे को निकाल क्यूंकि लौंडी का बेटा हुर्रः के बेटे के साथ
२१ वारिस् नहोगा * ऐ भाइओ हम लौंडी के बेटे नहीं पर
आज़ाद के बेटे हैं *

पांचवां बाब

१ पस जो आज़ादगी मसीह् ने तुम्हें बख़्शी तुम उस पर
२ क़ाइम रहो और असीरी के जूये तले दोबारः नजुतो * देखो
मैं पूलूस तुमसे कहता हूं अगर तुम ख़तनः करवाओ तो
३ मसीह् से तुम्हें कुछ फ़ाइदः नहोगा * मैं हरएक आदमीको
जो ख़तनः करवाता है फिर साफ़ कह सुनाता हूं कि उसे
शरअ् के सारे हुक्मों पर अ़मल करना वाजिब हूआ *
४ तुम अगर शरअ् के रू से रास्तबाज़ बनाचाहते हो तो तुम
मसीह् से बेबहरः हूए तुम फ़ज़्ल की नज़र से गिरे *
५ हमतो ईमान की राहसे उस रास्तबाज़ी का जिसके हम
६ उम्मैदवार हैं रूहसे इस्तिक़्बाल करते हैं * इसलिये कि मसीह्
ईसा की तरीक़ में मख़्तूनी और नामख़्तूनी बेदख़्ल हैं मगर ईमान

जो महब्बत की राहसे तासीर करता है सोही शफ़ा है *
७ तुम तो अच्छी तरह दौड़ते थे किसने तुम्हें रोक दिया जो
८ तुम अब रास्ती से बाग़ी हूए * यिह इअ्तिक़ाद तुम्हारे
९ तालिब की तरफ़ का नहीं * थोड़ासा ख़मीर सारे पेड़े को
१० ख़मीर बना देता है * तुम्हारी बाबत ख़ुदावंद के फ़ज़ल से
मुझ पर यक़ीन है कि तुम्हारी तीनत असलन् मुबद्दल
नहोगी लेकिन वुह जो तुम्हें घबराता है कोई क्यूं नहो
११ अज़ाब का बारबरदार होगा * और मैं जो हूं ऐ भाइओ अगर
मैं अब ख़तनः की मुनादी करूं तो मैं क्यूं हनोज़ दुख
पाता हूं कि इस तक़दीर पर सलीब संगि मसादिम नाहीं *
१२ मैं यिह चाहता हूं कि जो तुमको मुशव्विश करते हैं वे ख़ुद कट
१३ जाऐं * ऐ भाइओ तुम तो आज़ादगी के लिये बुलाये गये फ़क़त
तुम उस आज़ादगी को फ़ाइदः जिसमानी मत बनाओ बल्कि
१४ महब्बत से ऐक दूसरे के बंदे होरहो * इसलिये कि सारी
शरअ़ इसही ऐक बात में पूरी हो सकती है कि तू अपने
१५ क़रीब को ऐसा प्यार कर जैसा आपको करता है * पर अगर
तुम ऐक दूसरे को दांतोंसे काट खाओ तो ख़बरदार नहोवे
१६ कि तुम बाहम ऐक दूसरे को निंगल जाओ * पर मैं
चाहता हूं कि तुम रूही चलन चलो तो तुम जिसमी हिरस
१७ को पूरा नकरोगे * क्यूंकि जिसम का इश्तियाक़ रूहका
मुख़ालिफ़ और रूह की आरज़ू जिसम के बरख़िलाफ़ है

ये बाहम बरअक्स हैं ता कि तुम जो कुछ किया चाहते
१८ हो उसे नकरो * और अगर तुम रूहसे हिदायत पातेहो
१९ तो तुम शरअ की बंद में नहीं हो * और जिसम के काम
तो ज़ाहिर हैं कि यही हैं ज़िना हरामकारी नापाकी
२० शहवत * बुत परस्ती जादूगरी दुशमनियां झगड़े तुंदियां ग़ज़ब
२१ तकरारें जुदाइयां बिदअतें * हसद क़तल मस्तियां और
शोर ओ शर्र और जो काम कि उनकी मानंद हैं और
उनकी बाबत में तुम्हें आगेही कहता हूं जैसा मैं ने आगे
कहा यही है कि ऐसे काम करनेवाले ख़ुदा की बादशाहत
२२ के वारिस नहोंगे * पर रूहका फल जो है सो महब्बत
और सरूर और आराम और सबर और मुलायमत और
२३ खुशख़ोई और ईमान * और फ़रोतनी और परहेज़ है
२४ और कोई शरीअत उन कामों के मुख़ालिफ़ नहीं * अब
उन्हों ने जो मसीह के जिसम को जिसमी हवा ओ हवस समेत
२५ सलीब पर मारा है * अगर हमारी हयात रूहानी है
२६ तो हमारी रफ़्तार रूहानी हो * हम नामक़बूल सिताइश
के मुश्ताक़ न होवें और नएक दूसरे को खिजाये और न ऐक
दूसरे पर हसद करे *

छठां बाब

१ ऐ भाइओ अगर कोई शख़्स किसी ख़ता में मुबतला होवे
तो तुम जो रूहानी हो ऐसे शख़्स को रूही फ़रोतनी से

थाम लो और तू अपनी ख़बर ले न होवे कि तू भी इमतिहान
१ में पड़े * तुम बाहम एक दूसरे का बार उठा लो और
२ इसतरह से मसीह की शरअ को पूरा करो * और अगर
३ कोई नाचीज़ होते हुए आप को कुछ चीज़ समझे तो वुह
४ अपने तईं फुसलाता है * लेकिन चाहिये कि हरएक
अपने काम को जांचे कि तब फ़ख़र करना सिर्फ़ उसका
५ हक़ होगा न कि दूसरे का * कि हरएक अपना ही बोझ
६ उठाता है * और जो कोई किसी से सुख़न सीखे
७ सिखलानेवाले को सारी निअमतों में शरीक करे * तुम
दग़ा न खाओ क्यूंकि ख़ुदा ठठों में नहीं उड़ाया जाता कि
८ आदमी जो कुछ बोता है उसको दिरौ करेगा * इसलिये
कि जो कोई अपने जिसम में बोता है सो जिसम से फ़साद लेगा
और जो रूह में बोता है रूह से हयाति अबद दिरौ करेगा *
९ हमें चाहिये कि अच्छे काम करने में आजिज़ नहोवें
१० अगर हम सुस्त नहोवें तो बरवक़्त काटेंगे * पस हम
चाहिये कि जब जब क़ाबू पावें सब से नेकी करें
११ अललख़सूस उनसे जो अहलि बैति ईमान हैं * तुम देखते
हो कि मैं ने कैसा अपने हाथ से लंबा ख़त तुम्हें लिखा
है वे सब जो जिसम की ज़िबाइश चाहते हैं वे ही तुम्हें
ख़तनः की तकलीफ़ करते हैं सो सिर्फ़ इसनेवास्ते कि वे
१२ मसीह की सलीब की बाबत सताये नजाऐं * क्यूंकि जो

ख़तनः करवाते हैं सो भी शरअ को नहीं मानते पर चाहते हैं कि तुम ख़तनः करवाओ कि वे तुम्हारे जिसम की बाबत
१३ फ़ख़र करें * पर ख़ुदा नकरे कि मैं फ़ख़र करूं सिवा उसके कि अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह की सलीब की बाबत नाज़िश करूं जिस से दुनया मेरे आगे सलीब पर खैंची गई
१५ और मैं दुनया के आगे * क्यूंकि मसीह ईसा की तरीक़ में मख़तूनी ओ नामख़तूनी बेदख़ल हैं लेकिन सरिनौ
१६ से ख़ल्क़ होना शरत है * और जितने उस क़ानून पर चलते हैं आराम और रहम उनके लिये और ख़ुदा के
१७ इसराईल के लिये है * आयंदः कोई मुझे तसदीअ नदे क्यूंकि मैं अपने बदन पर ख़ुदावंद ईसा वाले दाग़
१८ लिये फिरता हूं * ऐ भाईओ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी रूह पर होवे आमीन *

पूलुस का मकतूब अफ़सियों के लिये

पहला बाब

१ पूलुस की तरफ़ से जो ख़ुदा की मरज़ी से ईसा मसीह़ का ह़वारी है उन मुक़द्दस लोगों को जो अफ़सस में मुक़ीम और
२ मसीह़ ईसा में मुस्तक़ीम हैं * हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह़ की तरफ़ से निअ़मत औ आराम तुम्हारे
३ लिये होवे * हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह़ का बाप ख़ुदा ममदूह रहे जिसने हमको आसमान पर के अजरों में
४ हर नौअ़ की रूह़ानी बरकत बख़्शी * चुनांचिः उसनें हम को पेश अज़् बिनाय आ़लम उस के लिये इख़्तियार किया था कि हम उसके आगे मह़ब्बत में पाक और बेऐ़ब होवें *
५ कि उसने हमारे लिये यों तक़दीर किया कि अपने ख़ातिर ख़्वाह ईसा मसीह़ के वसीले से हम को अपने लेपालक

६ करके * अपने फ़ज़्ल की अज़मत को नुमायां करे और वुह उसी फ़ज़्ल से हमपर उस महबूब में मिहरबान
७ हुआ * कि हम उस में होके उसके ख़ून की बदौलत रिहाई पाते हैं यअ़ने उसके फ़ज़्लि फ़िरवां से हमारे
८ गुनाह अफ़ू होते हैं * और उसने उसी फ़ज़्ल से हम को हिक्मति कामिल और इम्तियाज़ि वाफ़िर इनायत
९ किया * कि उसने अपने मतलबि निहानी को जो उसने अपने ख़ातिरख़्वाह अज़ल में मुक़र्रर किया हम पर आशकारा
१० किया * कि वुह वक़्तों की तकमील के इन्तिज़ाम पर सब चीज़ों के सिरे मसीह में मिलायेगा वे चीज़ें ख़्वाह आसमान
११ वाली हों ख़्वाह ज़मीनवाली * उसके सबब हम मीरास् बने और उसकी क़ज़ाय अज़ली के मवाफ़िक़ जो अपने मतलब की मस्लहत के मुताबिक़ सब कुछ करता है मुक़र्रर
१२ किये गये * ताकि हम जिन्हों ने मसीह पर पहले तकया
१३ किया उसके जलाल की मद्ह के बाइस होवें * और तुमने भी कलामि हक़ यअ़ने अपनी नजात का मुज़्दः सुनकर उसपर तवक्कुल किया उसके सबब से भी तुमको जो ईमान लाये रूह वअ़्दः बजाय मिहर मिली वुह रूहि क़ुद्स है *
१४ जो हमारे मीरास् पानेका बैआ़नः है जबतक कि ख़रीदी हुई जिन्स ख़लास की जाय और उसकी हश्मत की सना
१५ होवे * इसलिये मैं यिह सुनके कि तुम ख़ुदावंद ईसा पर

ईमान लाय और सारे मुक़द्दस लोगों को मुहिब्ब हो ॥
१६ तुम्हारी बाबत शुक्र करना और अपनी दुआओं में तुम्हें
१७ याद करना नहीं छोड़ता ॥ ताकि हमारे ख़ुदावंद ईसा
मसीह का ख़ुदा जो अस्ल जलाल है तुम्हें रूह हिकमत
१८ ओ इज़्हार बख़्शे ताकि तुम उसको पहचानो ॥ तो
तुम्हारा दीदए फ़हमीद रोशन होजावे ऐसा कि तुम समझो
कि उसके बुलाने में क्या उम्मेद है और मुक़द्दस लोग जो
उसकी मीरास् बने हैं उस में क्या अज़मति अज़ीमः
१९ है ॥ और उसकी निहायत बुज़ुर्ग क़ुदरत हममें जो ईमान
लाते हैं किया है जो उसकी उस क़ुव्वति क़विय़ः की
२० तासीर है ॥ जो उसने मसीह में की कि उसने उसे फिर
के जिलाया और अपनी दाहनी तरफ़ आसमानी मक़ामों पर
२१ बिठा के ॥ सारी हुकूमत और इख़्तियार और क़ुदरत और
रियासत पर और हरएक नाम पर जो न सिर्फ़ इस जहान
में बल्कि जहानि आयंदे में भी लिया जाता है बाला
२२ किया ॥ और सब कुछ उसके ज़ेरिपा किया और उस को
२३ कलीसया के लिये सबका सिर बनाया ॥ कलीसया उसका बदन
और उसकी मअ्मूरी है जो कुल को कुल में भरता है ॥

दूसरा बाब

१ और उसने तुम्हें भी जो ख़ताओं और गुनाहों के सबब
२ मुरदः थे ज़िंदः किया ॥ कि तुम एसे होके इस जहान

की रविश की यअने ओहदिः हुकूमत हूये के सरदार की वज़अ पर जो वुह रूह है कि सरकश लोगों में
३ तासीर करती है चलते थे * और उनके दरमियान हम सब के सब अपनी जिसमी शहवतों के साथ ज़िंदगानी बसर करते थे कि हम जिसम और अक़ल की ख़ाहिशों के काम करते थे और दूसरों के मानंद बितबअ ग़ज़ब के फ़रज़ंद थे *
४ पर ख़ुदा ने जिसका रहम बेपायान है अपनी बड़ी महब्बत
५ से जो उसे हमसे थी * हमको जो गुनाहों के सबब मुरदः थे मसीह के साथ जिलाया कि तुम फ़ज़लही से बच गये *
६ और उसने हमको उसके साथ उठाया और मसीह ईसा के
७ सबब आसमानी मक़ामों पर उसके साथ बिठाया * ता कि वुह अपने उस लुत्फ़ से जो मसीह ईसा के सबब हम पर है ज़मानि आयंदे में अपने फ़ज़ल की दौलति बेनिहायत
८ को देखावे * क्यूंकि तुम फ़ज़ल के सबब ईमान लाके बचगये हो और तुम उसके फ़ाइल नहीं बल्कि वुह भी ख़ुदा की
९ बख़्शिश है * और यिह अमलों के सबब से नहीं नहों
१० कि कोई फ़ख़र करे * क्यूंकि हम उसकी सनअत हैं और ईसा मसीह में होके अच्छे कामों के वास्ते मख़लूक़ हूए हैं जिन्हें ख़ुदाने आगे तैयार किया था ता कि हम
११ उन्हें किया करें * इसवास्ते याद करें कि तुम आगे अजनबी लोग जिसमानी हालत पर थे ऐसे कि वे जो आप को

मख़्तून कहते हैं तुमको नामख़्तून कहते थे कि उनका
१२ ख़तनः जिस्मी और दस्तकारी से हूआ था * और उसवक्त
मसीह से जुदा थे और इसराईल की ममलुकत में परदेसी
और अ़हदः के वसीक़ों से ख़ारिज थे और बेउम्मैद थे
१३ और दुनया में ख़ुदा विग़ैर थे * पर अब मसीह ईसा में
होके तुम जो आगे दूर थे मसीह के लहू के सबब से नज़्दीक
१४ हूए * क्यूंकि वही हमारे मिलाप का मूजिब है जिसने
दोको एक किया और उस दीवार को जो दरमियान में
१५ हाइल थी ढादिया * और अपना जिसम देके अ़दावत को
यअ़ने हुक्मों के दस्तूर तकलीफ़ात को खो दिया ता कि वुह
सुलह करवाके दो से आप में एक नया इनसान बनावे *
१६ और दुशमनी को खोके सलीब के सबब से दोनों को एक तन
१७ बनाकर ख़ुदा से मिलावे * और उसने आके तुम्हें जो दूर
थे और उन्हें जो नज़्दीक थे सुलह की ख़ुशख़बरी दी *
१८ क्यूंकि उसीके वसीले से ऐकही रूह के सबब बापतक हम
१९ दोनों की रसाई है * सो अब तुम परदेसी और मुसाफ़िर
नहीं हो बल्कि अहलि तक़द्दुस के हमशहरी और ख़ुदा
२० के अहलि बैत हो * और हवारियों और नबियों पर जो नेव है
जहां ईसा मसीह ख़ुद कोने का सिर है रद्दे की तरह
२१ उठाये गये हो * और उस में सारी इमारत बाहम पैवस्तः
होकर मकान मुक़द्दस ख़ुदावंद के लिये उठता जाता है *

२२ और तुम भी उस में होके औरों के साथ बनाये जाते हो ता कि ख़ुदा के लिये रूहानी मस्कन बने *

तीसरा बाब

१ इसवास्ते मैं पूलूस जो तुम्हारे लिये जो अजनबी क़ौम हो
२ ईसा मसीह का असीर हूं * तुमने सुना है कि ख़ुदा की निअमत मुझे दी गई ता कि मैं तुम में बांटनेवाला ठहरूं *
३ कि उसने इलहाम से सिर्र ग़ैब को मुझ पर खोला चुनांचिः मैं
४ उसको इख़तिसार से लिख चुका * तुम उसे पढ़के जानसकते
५ हो कि मैं मर्ज़ मसीही को क्या समझा हूं * वुह अगले ज़मानों में बनी आदम को इसतरह न मअलूम हुआ जिसतरह उसके मुक़द्दस हवारियों और नबियों पर इलहामि
६ रूही से ज़ाहिर हुआ * कि अजनबी अक़वाम इंजील के वसीले से मीरास और बदन में शरीक और उसके वअदे
७ में जो मसीह के सबब है सहीम हों * और ख़ुदा के फ़ज़ल के उस फ़ैज़ से जो उसकी क़ुदरत की तासीर से मुझे मिला
८ मैं इस इंजील का ख़ादिम हूं * मुझे जो सारे हक़ीर मुक़द्दसों से हक़ीरतर हूं यिह निअमत दी गई कि मैं अजनबी क़ौमों के दरमियान मसीह की दौलति बेक़ियास
९ की ख़ुशख़बरी दूं * और सब पर यिह बात रोशन करूं कि वुह सिर्रि ग़ैब जो अज़ल से ख़ुदा में निहां था उसमें शिरकत क्यूंकर होती है उसने सारी चीज़ें ईसा मसीह की

१० वसातत से पैदा कियां * ता कि अब कलीसिया के वसीले से खुदा की गूना गून हिकमत अरबाबि हुकम ओ अख़्तियारि कुदरत पर जो आसमान के मक़ामों में हैं ज़ाहिर होवे *
११ चुनांचिः उसने हमारे खुदावंद ईसा मसीह के हक़ में रोज़ि
१२ अज़ल यों तक़दीर किया * कि हम उसमें होके ईमान
१३ के वसीले से बेपरवा और इअ़तिमाद से रसा होवें * सो मैं चाहता हूं कि तुम इस लिये कि मैं ने तुम्हारे वास्ते अज़ीयतें पाईं सुस्त मत हो क्यूंकि वे तुम्हारे लिये इज़्ज़त हैं *
१४ इसवास्ते मैं ईसा मसीह के बाप के आगे जो हमारा
१५ खुदावंद है * जिसके नाम से तमाम ख़ानदान आसमान
१६ ओ ज़मीन पर मनसूब हैं अपने घुटने टेकता हूं * कि वुह अपने फ़ज़्लि फ़िरावां की दौलत तुम्हें बख़्श दे कि तुम उसकी रूह के सबब मअ़नवी इनसानियत में बख़ूबी
१७ ज़ोरआवर होजाओ * और मसीह तुम्हारे दिलों में ईमान के वसीले से बसे और तुम महब्बत में जड़ पैदा करके
१८ और नेव डाल के * सारे मुक़द्दस लोगों समेत समझने की कुदरत पैदा करो कि उसका चौड़ान लंबान गहरापा और
१९ ऊंचान कितना है * और मसीह की उलफ़त को दरयाफ़्त करो जो दरयाफ़्त करने से बाहर है ताकि तुम खुदा की
२० सारी मअ़मूरी से मअ़मूर हो * अब वुह जो ऐसा क़ादिर है कि जो कुछ हम मांगते या तसव्वुर करते हैं उस

से निहायत ज़ियादः उस क़ुदरत के मुवाफ़िक़ जो हम में
२१ मूसिर है करसकती है * उसके लिये कलीसया के
दरमियान मसीह ईसा में अबदुलअबद हम्द होवे आमीन *

चौथा बाब *

१ पस मैं जो ख़ुदावंद के लिये असीर हूं तुम से इलतिमास
करता हूं कि तुम जिस तौर से तलब किये गये हो उसके
२ मुनासिब अमल करो * यअ़ने कमाल ख़ाकसारी और फ़रोतनी
३ से सबर करके मह़ब्बत से एक एक को बरदाश्त करो * और
कोशिश करो कि सुलह़ के इत्तफ़ाक़ः से इत्तिहादि रूह़ी
४ को ह़िफ़्ज़ कर रखो * एक बदन और एक रूह़ है
चुनांचिः हम जो तलब किये गये हैं हमारी उम्मेद एक है *
५ एक ख़ुदावंद एक ईमान एक इस्तिबाग़ (६) सब का एक
ख़ुदा और बाप जो सब से बाला और हम सब के दरमियान
७ और सब में है * पर हम में से हर एक को मसीह के
८ करम के अंदाज़ः के मुवाफ़िक़ निअ़मत दीगई है * इसवास्ते
वुह कहता है कि उसने ऊंचे पर चढ़के असीरी को असीर
९ किया और लोगों को इनआ़म दिये * और उसके ऊपर चढ़ने
को कुछ मअ़ने नहीं मगर यिह कि वुह पहले ज़मीन
१० के नीचे उतरा * वुह जो उतरा सो वही है जो सारे आसमानों
११ पर चढ़ा ता कि सब को मअ़मूर करे * और उसने
बअ़ज़ों को इनायत से ह़वारी किया और बअ़ज़ों को

नबी और बअ़ज़ों को इंजील का मुबश्शिर और बअ़ज़ों
१२ को पासबान और मुअ़ल्लिम किया * ताकि मुक़द्दस लोग
तकमिलि ख़िदमत में आरास्तः होते जाएं और मसीह़ का
१३ बदन बनता चला जाये * जबतक कि हम सबके सब
रफ़्तःरफ़्तः ईमान और इबनि इलाह की पहचान में मुत्तह़िद
और इनसानि कामिल होवें यअ़ने मसीह़ की कमाल की
१४ क़ामत के अंदाज़ः तक पहुंचें * ताकि हम आगे को लड़के
नरहें और ता नहोवे कि हम उस तअ़्लीम की मुख़्तलिफ़
हवाओं से उछलते बहते फिरें जो आदमियों की
पेचबाज़ी और गुमराह करनेवाली चालाकी से पैदा होती
१५ है * बल्कि मह़ब्बत से सच्चे होके हरएक सिम्त उस में
१६ जो सिर है यअ़ने मसीह़ में होके बढ़ते जावें * उस से
सारे अअ़ज़ा हरएक मफ़सल के जोड़के इत्तफ़ाक़ः से पैवस्तः
ओ उस्तवार होके बसबब उस तासीर के जो बक़द्रि हरजुज़ के
होती है बदन को बढ़ाते हैं ऐसा कि बदन आप को
१७ मह़ब्बत में तअ़मीर करता है * इसलिये मैं यिह कहता
हूं और ख़ुदावंद के आगे हुक्म करता हूं कि तुम आगेको
ऐसी चाल नचलो जैसे और अजनबी लोग अपने वहम
१८ की बतालत से चलते हैं * कि उनकी अक़्लें तारीक हो
गई हैं इसलिये कि वे बसबब उस नादानी के जो उन में
उनकी बेदिली से पैदा हुई ह़यातिइलही से जुदा हैं *

१९ उन्हों ने सुन होके आपको बदपरहेज़ी के सुपुर्द किया ताकि हरनौअ की नापाकी के काम हिर्स से करें ॥
२० तुम ने मसीह से इस तरह तअ्लीम नहीं पाई ॥
२१ तुम ने तो उस से सुना है और उससे आमोख़्तः हूए हो चुनांचिः
२२ ईसा में सच्चाई है ॥ कि तुम अगले चलन की बाबत उसपुरानी इनसानियत को जो ख़ाइन शह्वतों के सबब
२३ से फ़ासिद है उतारो ॥ और अपने जी जान में नये
२४ बनो ॥ और तुम नई इनसानियत को जो ख़ुदा के मुताबिक़ रास्तबाज़ी में और तक़्हुसि हक़ में मख़्लूक़ हो
२५ पहनो ॥ सो दरोग़गोई छोड़के हरएक शख़्स अपने क़रीब से सच बोले इसलिये कि हम तो बाहम एक दूसरे के
२६ उज़ो हैं ॥ ख़फ़ा करो गुनाह मत करो ऐसा नहो कि आफ़ताब
२७ ग़ुरूब हो और तुम ख़फ़ा के ख़फ़ा रहो ॥ और न इबलीस
२८ को जगह दो ॥ जो चोर हो फिर चोरी नकरे बल्कि अच्छा पेशः इख़्तियार करके हाथों से मिहनत करे ताकि
२९ मुहताज को कुछ दे सके ॥ कोई गंदी बात तुम्हारे मुंहसे न निकले बल्कि वुह बात निकले जो तअ्मीर के लिये मुनासिब हो और उस काम के हो कि उससे सुननेवाले फ़ैज़
३० पावें ॥ और ख़ुदा की रूहि मुक़द्दस को जिससे तुम पर ख़लासी के दिन तक मुहर की गई है ग़मगीं नकरो ॥
३१ सारी तलख़ी और ग़ज़ब और ग़ुस्सः ग़ुल और बदगोई

३१ तमाम बदख़्वाहियों समेत तुमसे दफ़अ हो जावें * तुम ऐक दूसरे पर मिहरबान हो और रहीम और ऐक दूसरे को बख़्शा करो चूनांचिः ख़ुदाने भी मसीह के लिये तुम्हें बख़्शा है *

पांचवां बाब

१ पस तुम अज़ीज़ फ़रज़ंदों की तरह ख़ुदा की तबईयत करो *
२ और तअश्शुक़ के तौर पर चलो चुनांचिः मसीह ने हम से महब्बत की और हमारे ऐवज़ में अपने तईं ख़ुदा के आगे नज़र और क़ुरबान किया ताकि उसे ख़ुशबू मअलूम हो *
३ और हरामकारी और हर नौअ की नापाकी और लालच का तुम में ज़िक्र तक नहो जैसा मुक़द्दस लोगों को मुनासिब
४ है * और गंदगी और याव:गोई या बेमौक़अ लतीफ़ः
५ गोई नहोवे बल्कि बेशतर शुक्रगुज़ारी होवे * क्यूंकि तुम इससे वाक़िफ़ हो कि हरामकार और नापाक और लालची का जो ठीक बुतपरस्त है मसीह और ख़ुदा की बादशाहत
६ में मीरास नहीं है * कोई तुमको बेबुनयाद बातों से भुला नदे कि ऐसी बातों के सबब ख़ुदा का क़हर अबनाय बग़ावत पर
७ होता है * पस तुम उनके शरीक नहो (८) तुम आगे तारीकी थे पर अब ख़ुदावंद में होके नूर हो तुम अबनाय
९ नूर की तरह चलो * कि नूर का फल जो है सो कमाल
१० ख़ूबी और रास्तबाज़ी और सच्चाई है * और दिक़्क़त से
११ देखो कि ख़ुदा को क्या ख़ुश आता है * और तारीकी के

लाहासिल कामों में शरीक मत हो बल्कि बेशतर उनको
१२ इल्ज़ाम दो * क्यूंकि उनके निहानी कामों का ज़िक्र
१३ करना भी आर है * कि सारी चीज़ें जब उन पर रोशनी
पड़ती है तब देखी जाती हैं क्यूंकि हरएक चीज़ जो
१४ ज़ाहिर होती है सो रोशन है * इसी लिये वुह कहता है
अरे ओ तू जो सोता है जाग और मुरदों में से निकल
१५ कि मसीह तुझे रोशन करेगा * पस ख़बरदार तुम देख भाल
१६ के चलो न नादानों की बल्कि दानाओं की मानंद * वक़्त को
१७ ग़नीमत जानो क्यूंकि यिह दुखके दिन हैं * इसवास्ते
तुम वेतमीज़ नरहो बल्कि समझो कि ख़ुदावंद का क्या मतलब
१८ है * और शराब पीके मतवाले नहो कि उसमें बेदअन्दिाली
१९ होती है पर रूह से भर जाओ * और बाहम आपस में
मज़ामीर और मुनाजातें और रूहानी ग़ज़लें गाया करो
और अपने दिल देके ख़ुदावंद के लिये गाते बजाते रहो *
२० और सब बातों में हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम से
२१ हमेशः उसको जो ख़ुदा और बाप है शुक्र गुज़ार हो * और
२२ ख़ुदा से डरके एक दूसरे की फ़रमांबरदारी करो * ऐ रंडियो
अपने शौहरों की ऐसी महकूम हो जैसी ख़ुदावंद की हो *
२३ क्यूंकि शौहर जोरू का सिर है जैसा कि मसीह कलीसया का
२४ सिर और वुह बदन का बचानेवाला है * पस जैसा
कलीसया मसीह की महकूम है ऐसही जोरूआं भी हरबात में

२५ अपने शौहरों की महकूम होवें * ऐ मर्दी अपनी जोरूओं को चाहो जैसा मसीह ने भी कलीसया को चाहा और अपने तईं
२६ उसके बदले हवालः किया * ताकि वुह उसको पानी से गुसल देके पाक करके अपने कलाम से तक़द्दुस बख़्शे *
२७ और उसको अपने लिये तैयार करे यअने ऐसी कलीसया जिसमें दाग़ या चीन या कोई ऐसी चीज़ नहो बल्कि वुह
२८ मुक़द्दस और बेऐब हो * मर्द अपनी जोरूओं को चाहिये ऐसा चाहें जैसा अपने बदन को जो अपनी जोरूओं
२९ को चाहता है सो आप को चाहता है * किसने अपने जिसम से कदही दुशमनी की बल्कि वुह उसको पालता और सहलाता है चुनांचिः खुदावंद कलीसया से यिह सलूक
३० करता है * कि हम उसके बदन के अअज़ा और उसके
३१ जिसम के हैं और उसके उस्तख़ानों में से हैं * आदमी इसी सबब से अपने बाप को छोड़ेगा और अपनी जोरू
३२ से इकठा रहेगा और वे दोनो ऐक तन होंगे * यिह कलामि ग़ैब पढ़ा है पर मैं मसीह और कलीसयी की
३३ बाबत बोलता हूं * बहर हाल हरऐक तुम में अपनी अपनी जोरू को ऐसा चाहे जैसा आपको चाहता है और रंडी चाहिये कि अपने शौहर का अदब करे *

छठा बाब

१ ऐ फ़रज़ंदो तुम खुदावंद के लिये अपने माबापके महकूम

२ हो क्यूंकि यिह् वाजिब है * तू अपने मावाप की इ़ज़्ज़त
३ दे कि वुह् पहला हुक्म है जिसके साथ वअ़्दः है * तो
तेरा भला होगा और ज़मीन पर तेरी उ़मर दराज़ होगी *
४ और ऐ वच्चेवालो तुम अपने फ़रज़ंदों को ग़ुस्सः नकरो पर
ख़ुदावंद वाली तरबियत और नसीहत करके उनकी परवरिश
५ करो * ऐ ख़िद्मतगारो तुम उनके जो जहान में तुम्हारे
ख़ाविंद हैं अपनी नीयतों की सफ़ाई से डरते और थरथराते
६ हूए ऐसे फ़रमांबरदार हो जैसे मसीह् के हो * और
न आंखों के साम्हने की ख़िद्मत करके ऐसे हो जैसे आदमी
के लगा लेने वाले हैं बल्कि मसीह् के चाकरों की मनंद
७ न दिल से ख़ुदा की मरज़ी पर चलो * और ख़ैरख़्वाही से
८ ख़ुदावंद की बंदगी करो नकि आदमियों की * कि तुम
जानते हो जो कोई कुछ अच्छा काम करेगा क्या बंदः क्या
९ आज़ाद ख़ुदावंद से ऐसाही पावेगा * ऐ ख़ुदावंदो तुम भी
उनसे ऐसही करो और धमकी देने में इअ़्तिदाल से बाहर
नजाओ कि तुम जानते हो तुम्हारा भी ख़ाविंद है जो आसमान
१० पर है और वुह् ज़ाहिर परस्त नहीं है * बाक़ी ऐ मेरे
भाइओ ख़ुदावंद की कुमक और उस की क़ुदरत की क़ुव्वत से
११ मज़बूत बनो * ख़ुदा के सारे हथियार बांधो ता कि तुम
इब्लीस की बंदिशों के मुक़ाबिल क़ाइम रह सको *
१२ क्यूंकि हमें जिसम और ख़ून से कुश्ती नहीं बल्कि रियासतों

से और क़ुद्रतों से और दुनया की तारीकी के शाहनशाहों से और शरीर रूहानियों से है जो बलंद मकान में हैं *
१३ इसवास्ते तुम ख़ुदा के सारे हथयार उठा लो ता कि तुम दुखके दिन मुक़ाबलः कर सको और सब काम करके खड़े
१४ रहसको * इसलिये तुम अपनी कमर को सच्चाई से कसके
१५ सदाक़त का जोशन पहनके * पांव में मुज़्दः सुलह की
१६ चालाकी बांधक़ * और उन सब के उपर ईमान की सिपर लगाके जिससे तुम उस ख़बीस के सारे आतिशी भालों को
१७ बुझा सको क़ाइम रहो * और नजात का ख़ोद और रूहकी
१८ तलवार जो ख़ुदा का कलाम है लेओ * और जिस चीज़ के लिये तुम दुआ और मिन्नत करो उसे हमेशः रूह की मदद से मांगा करो और उस पर कमाल इस्तिक़लाल और
१९ तजस्सुस से सारे मुक़द्दस लोगों के वास्ते बेदार रहो * और मेरे वास्ते भी दुआ करो ता कि गोयाई दी जावे कि मेरा
२० मुंह बेपरवाई से खुलजावे तो मैं इंजील के सिर्र को * जिसके लिये मैं क़ैदी रसूल हूं रोशन करूं ता कि मैं उसको
२१ बेपरवाई से ऐसा कहूं जैसा मुझे कहा चाहिये * और ता कि तुम भी मेरे अह्वाल को जानो कि मैं क्या करता हूं सो तख़िक़स जो प्यारा भाई और ख़ुदावंद का मुअतमिद ख़ादिम
२२ है तुमको सब बातें बताएगा * कि मैं ने उसे तुम्हारे पास इसी वास्ते भेजा कि तुम हमारी हालतों को जानो और वुह

२३ तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे * अब भाइओं को आराम हो
और बाप ख़ुदा की और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से
२४ ईमान के साथ महब्बत मिले * फ़ज़ल उन सब पर जो
हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह से उलफ़ति बातिनी रखते हैं
होवे आमीन *

पूलुस का मकतूब फ़लपियों के लिये

पहला बाब

१ पूलुस और तीमताऊस की तरफ़ से जो ईसा मसीह के बंदे
हैं फ़लपी की बस्ती के उन सब बाशिंदों को जो मसीह ईसा
में होके पाक हूए हैं और असक़ुफ़ों और ख़ादिमों को *
२ फ़ज़ल और आराम हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा
३ मसीह की तरफ़ से तुम्हारे लिये होवे * मैं जब जब
४ तुम्हें याद करता हूं अपने ख़ुदा का शुक्र करता हूं * और
मैं अपनी हर एक दुआ में ख़ुशी से हमेशः तुम सबके
५ लिये दुआ मांगता हूं * क्यूंकि तुम रोज़ि अव्वल से आज तक
६ इंजील में शरीक रहे * मुझे यिह यक़ीन है कि वुह
जिसने तुम में नेककाम शुरूअ किया है सो ईसा मसीह के
७ दिन तक करता चला जायगा * चुनांचिः लायक़ है कि मैं

तुम सब के हक़ में ऐसाही गुमान करूं क्यूंकि मेरे दिलमें तुम्हारा तसव्वुर ऐसा है कि तुम सब मेरी ज़ंजीरों में और इंजील की तौजीह और इसबात में भी मेरे शरीकि फ़ज़्ल
८ हो। * ख़ुदा मेरा गवाह है कि मैं ईसा मसीह की सी
९ शफ़क़त करके तुम सब का मुश्ताक़ हूं * और मैं दुआ करता हूं तुम्हारा इश्क़ि इरफ़ान और इदराकि कामिल के साथ
१० बढ़ता चला जाय * ता कि तुम मुतफ़ावत चीज़ों में इमतियाज़ करो और मसीह के दिन तक ख़ालिस रहो और ठोकर नखाओ *
११ और रास्तबाज़ी के फलों से जो ईसा मसीह के सबब से हैं भरे रहो ता कि ख़ुदा की मदह और हम्द की जाय *
१२ और ऐ भाइओ मैं चाहता हूं कि तुम जानो जो मुझ पर हुआ है सो इंजील की तरक़्क़ी के लिये ज़ाहिर हुआ *
१३ यहांतक कि दारुलअम्मारः में और बाक़ी सब मकानों में मशहूर
१४ हुआ कि मैं मसीह के वास्ते बस्तए ज़ंजीर हुआ * और अकसर ने उनमें से जो ख़ुदावंद में भाई हैं मेरी ज़ंजीरों से मुतमइन होके कलाम को बेख़ौफ़ बोलने की ज़ियादः जुरअत
१५ पैदा की * बअज़े तो रश्क और क़ज़यःगरी से और
१६ बअज़े रज़ामंदी से मसीह की मुनादी करते हैं * झगड़ालू इस ख़ियाल में कि मेरी ज़ंजीरों पर और रंज अफ़ज़ूद
१७ करें सफ़ाई से मसीह की ख़बर नहीं देते * पर उल्फ़त वाले यिह जानकर मुनादी करते हैं कि मैं इंजील की तौजीह

१८ के वास्ते मुक़र्रर हुआ हूं * पस क्या है वहर हाल मसीह़ की ख़बर ख़्वाह रिया से ख़्वाह रास्ती से दीजाती है मैं उसमें
१९ ख़ुश हूं और ख़ुशी करूंगा * कि मैं जानता हूं तुम्हारी दुआ से और ईसा मसीह़ की रूह़ की किफ़ायत से उसका
२० अंजाम मेरी नजात होगी * चुनांचिः मेरी तवक़्क़ुअ़ और उम्मेद यिह है कि मैं किसी बात में शर्मिंदः नहूं बल्कि मेरी कमाल बेपरवाई के सबब से जैसा गुज़िश्तः में हमेशः था वैसा अब भी मसीह़ मेरे बदन से मेरे जीते जी या मेरे
२१ मरने पर बुज़ुर्ग होगा * क्यूंकि ज़िंदगी मेरे लिये मसीह़
२२ है और मौत नफ़अ़ है * अगर मैं आलमि जिसमानी में रहूं तो यिह मेरी मिह़नत अकारथ नजावगी लेकिन मैं
२३ नहीं जानता मैं क्या इख़्तियार करूंगा * कि मैं दो से जकड़ा हुआ हूं मैं मुश्ताक़ हूं कि रिहाई पाऊं और मसीह़
२४ के साथ रहूं कि यिह बहुत बिहतर है * पर जिस्म में
२५ रहना तुम्हारी ख़ातिर बहुत ज़रूर है * और मैं यिह इअ़तिक़ाद करके जानता हूं कि मैं रहूंगा और तुम सब के साथ ठहरूंगा ताकि तुम तरक़्क़ी करो और ख़ुश इअ़तिक़ाद
२६ होओ * कि तुम्हारा फ़ख़र जो मसीह़ ईसा की बाबत मेरे सबब से है सो मेरे तुम्हारे पास फिर आयेसे ज़ियादः होवे *
२७ सिर्फ़ मसीह़ की इंजील के मुवाफ़िक़ गुज़रान करो ख़्वाह मैं आऊं और तुम्हें देखूं ख़्वाह न आऊं तुम्हारा यिह अह़वाल

सुनूं कि तुम रूह में मुत्तहिद हो रहे हो और ईमानि
इंजीली के लिये एक जान होके जिद ओ जिहद करते
१८ हो * और अपने मुख़ालफ़त करनेवालों से किसी बात में
मत हिहको कि वुह उनके लिये हलाकत का पर तुम्हारे
१९ वास्ते नजात का ख़ुदा की तरफ़ से निशान है * क्यूंकि मसीह
की बाबत तुम्हें यही नहीं बख़्शा गया कि तुम फ़क़त उस
पर ईमान लाओ बल्कि यिह कि उसकी राह में दुख भी
३० पाओ * क्यूंकि तुम ऐसी ज़ोरआज़माई करते रहे जैसा तुम
ने मुझे करते देखा और अब सुनते हो कि मैं करता हूं *

दूसरा बाब *

१ सो अगर मसीहवाला कुछ दिलासा और अगर कुछ महब्बत
की तसल्ली और अगर रूही कुछ शिराकत और अगर कुछ
२ रहम और दर्दमंदी है * तो मेरी रज़ामंदी को पूरा करो
कि एकसा मिज़ाज रखो एक महब्बत रखो एक जान होओ
३ एक तबीअत रखो * झगड़े और ख़ुशामद से कुछ नकरो
पर ख़ाकसारी से एक दूसरे को अपने ऊपर फ़ौक़ियत दे *
४ और तुममें से हरएक नअपने अहवाल पर बल्कि हरएक
५ दूसरों के अहवाल पर ग़ौर करे * तुम्हारा मिज़ाज वुही
६ होवे जो मसीह ईसा का था * कि उसने ख़ुदा की सूरत होके
७ ख़ुदा के बराबर होना ज़ुल्म नजाना * लेकिन उसने आप
को हेच किया बन्दः की सूरत पकड़ी आदमी की शकल

८ बना * और उसने तरकीबि इनसानी में नुमूद होकर आपको हक़ीर किया और मरने तक सलीबी मौत तक फ़रमां
९ बरदार रहा * इसवास्ते ख़ुदाने भी उसे सिरफ़राज़ी से बुलंद किया और उसको ऐसा नाम जो हर नाम के ऊपर है
१० बख़्शा * ताकि ईसा के नाम से आस्मनियों के और ज़मीनियों के और जो ज़मीन के नीचे हैं घुटने टेके
११ जावें * और हरएक ज़बान इक़रार करे कि ईसा मसीह ख़ुदावंद
१२ है ताकि ख़ुदा बाप की सिताइश की जावे * सो ऐ मेरे प्यारो जिस तरह तुम हमेशः फ़रमां बरदारी करते आये हो उसी तरह तुम न मेरी हुज़ूरी में फ़क़त बल्कि अब मेरी ग़ैबत में बतरीक़ औला डरके और थरथराके अपनी नजात
१३ के काम किये जाओ * क्यूंकि ख़ुदा है वुह जो तुम में ईजाद करता है कि तुम उसकी मरज़ी के मुवाफ़िक़ चाहो
१४ और काम करो * सब काम बेमुकाबरः और बिन तकरार करो *
१५ ताकि तुम बे इलज़ाम और बेबद होके टेढ़ी तिरछी क़ौम
१६ के दरमियान ख़ुदा के बेऐब फ़रज़ंद बने रहो * और तुम उन में हयात का कलिमः लिये हुए अजरामि नूरी की मानदं जो दुनया में हैं दिखाई दो ताकि मसीह के दिन मेरे फ़ख़र की जगह हो कि मेरी दौड़ और मिहनत
१७ अबस न हुई * पर अगर मैं तुम्हारी ईमानी क़ुरबानी और ख़िदमः पर ढाला जाऊं तो मैं ख़ुश हूं और तुमसब को

१८ मुक़र्रर: देता हूं * तुम भी वैसीही ख़ुशी करो और मुझे
१९ मुबारकबाद दो * और मुझे ख़ुदावंद ईसा से यिह उम्मेद
है कि तीमताऊस को तुम कने शिताब भेजूं और तुम्हारा
२० अह्‌वाल दरयाफ़्त करके मैं भी ख़ातिर जमअ रखूं * क्यूंकि
मेरा कोई ऐसा ऐकदिल रफ़ीक़ नहीं जो मुजानसत की
२१ राह से तुम्हारे लिये फ़िक्रमंद होवे * कि सब लोग उनचीज़ों
की तलाश में हैं जो उनकी हैं नउनकी जो ईसा मसीह
२२ की हैं * और तुम उसकी ख़ूबी पर उसे बुरहान जानो कि वुह
इंजील की ख़िदमत के लिये मेरे साथ जैसा बाप के
२३ साथ बेटा बंदः बना रहा * सो मैं उम्मेदवार हूं कि अपने
२४ अह्‌वाल का अंजाम देखके फ़िल्फ़ौर उसे भेज दूं * और
मुझे ख़ुदावंद से उम्मेद है कि मैं आप भी जल्द आऊं *
२५ अब मैंने अपफ़रदीतीस को जो मेरा भाई और हमख़िदमत
और शरीकि जिहाद और तुम्हारा फ़िरिस्तादः और मेरी इह्‌तियाज
का रफ़अ करनेवाला है तुम पास भेजना ज़रूर जाना *
२६ कि वुह तुम सभों का निपट मुश्ताक़ है और इसवास्ते कि
तुमने उसकी बीमारी का हाल सुना था उदास रहता था *
२७ वुह तो बीमारी से मरने पर था पर ख़ुदा ने उस पर रहम
किया और फ़क़त उसपर नहीं बल्कि मुझपर भी तो नहोवे
२८ कि मैं दाग़ पर दाग़ उठाऊं * सो मैंने उसे बहुत शौक़
से भेजा ताकि तुम उसकी मुलाक़ात दोबारः से ख़ुश हो

२९ और मेरा भी ग़म घटे * पस तुम उसको ख़ुदावंद के नाम कमाल ख़ुशी से क़बूल करो और ऐसों को इज़्ज़त दो *
३० इसलिये कि वुह मसीह ही काम के लिये मरने परथा उसने अपनी ज़िंदगी को नाचीज़ जाना ताकि वुह उस कमी को जो तुमने मेरी ख़िदमत करने में की थी पूरा करे *

तीसरा बाब

१ बाक़ी ऐ मेरे भाईओ ख़ुदावंद में ख़ुश रहो कि ऐकही बात तुम्हें फिर फिर लिखना मेरे लिये तकलीफ़ नहीं और
२ तुम्हारे लिये सलामती का बाइस है * कुत्तों से हज़र बदकारों से इहतिराज़ करो क़तअ बुरीदवालों से परहेज़ करो *
३ चूंकि हक़ीक़ी ख़तनः हम हैं जो रूह से ख़ुदा की इबादत करते हैं और मसीह ईसा पर फ़ख़र करते हैं और जिसम का भरोसा नहीं
४ रखते * लेकिन मैं जिसम का भरोसा रख सकता हूं अगर और कोई
५ जिसम पर भरोसा करसके तो मैं बतरीक़ औला * कि मेरा ख़तनः आठवें दिन हूआ और मैं इसराईल की औलाद बनीमीन के फ़िरक़े
६ में इबरानियों का इबरानी शरीअत का फ़रीसी हूं * ग़ैरतमें पूछो तो कलीसया का सतानेवाला और शरई रास्तबाज़ी में
७ बेजुरम था * लेकिन जितनी चीज़ें मेरे नफ़अ की थीं
८ में उन्हीं को मसीह की ख़ातिर नुक़सान समझा * बल्कि मैं सारी चीज़ों को नुक़सान समझता हूं कि मेरे नज़दीक अपने ख़ुदावंद मसीह ईसा को जानना अफ़ज़ल है मैं ने

उसकी ख़ातिर हर चीज़ का नुक़सान उठाया और उन्हें कसाफ़त
९ जानता हूं ता कि मसीह मेरा नफ़अ होवे * और ता कि
मैं उस में मौजूद होऊं यअने न यिह कि अपनी रास्तबाज़ी
के साथ जो शरई है होऊं बल्कि उस रास्तबाज़ी के साथ
जो मसीह पर ईमान लाने से यअने उस रास्तबाज़ी के साथ
जो ख़ुदा की तरफ़ से ईमान की राह में मिलती है होऊं *
१० और मैं उसकी हक़ीक़त को और उसकी जी उठने की क़ुव्वति
मुअस्सिरः को और उसके साथ दुखों में शरीक होनेके मअनों को
दरयाफ़्त करूं और उसकी मौत से मुनासबत पैदा करूं *
११ ता कि मैं किसी तरह से मुर्दों के जी उठने के दरजःतक
१२ पहुंचूं * क्यूंकि मैं हनोज़ मुतसर्रिफ़ बाकामिल नहीं
हूआ बल्कि पीछा किये जाता हूं ता कि जिसचीज़ के लिये
१३ मुझे मसीह ईसा ने पकड़ा मैं उसे जा पकड़ूं * ऐ भाईओ
१४ मेरा यिह गुमान नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं * पर
इतना है कि मैं उन चीज़ों को जो पीछे छूटीं भुलाके उनके
लिये जो आगे हैं पड़ा हूआ सीधा निशान की तरफ़ चिला
जाता हूं ता कि मैं उस गोय को जिसके लिये ख़ुदा ने मुझ
को मसीह ईसा की मअरिफ़त से ऊपर बुलाया जाऊं *
१५ पस हम में जितने बालिग़ हैं ऐसा मिज़ाज पैदा करें
और हरचंद और किसी क़िसम का मिज़ाज हो ख़ुदा तुम
१६ को दिखलायगा कि वुह मिज़ाज कैसा है * बहर हाल जिस

दरजः तक हम पहुंचे हैं उसीके क़ानून से क़दम धरना *
१७ ऐ भाईओ तुम सब के सब मेरे मुक़ल्लिद हो और तुम उन
लोगों पर जो उस सिक्कः के मुवाफ़िक़ जो हम में तुम नुमायां
१८ देखते हो चलते हैं ग़ोर करो * क्यूंकि बहुतेरे राहरौ हैं
जिनका ज़िक्र तुम से बारहा किया और अब रोके कहता
१९ हूं कि वे मसीह़ी सलीब के दुश्मन हैं * उनका अंजाम
हलाकत है उनका ख़ुदा उनका पेट उनका नंग उनका फ़ख़र
२० है उनकी तीनत ख़ाकी है * हमारी मआश आसमान के
बाशिंदों कीसी है और हम रिहाई बख़्शने वाले ख़ुदावंद
२१ ईसा मसीह़ की राह तकते हैं कि वहां से आवे * कि वुह
अपनी क़ुव्वत के फ़िअल के मुताबिक़ जिस से वुह सब को
अपना मह़कूम करता है हमारे कसीफ़ बदन की शक्ल को
तबदील करके अपने जिस्मि लतीफ़ की मानंद बनायगा *

चौथा बाब *

१ इसवास्ते ऐ मेरे मह़बूब और मअशूक़ भाईओ जो मेरे चैन
और हार हो ऐ प्यारो तुम ख़ुदावंद में होके इसी तरह
२ मज़बूत रहो * मैं अयुदियः से इलतिमास करता हूं और
३ सनतख़ा से भी कि तुम ख़ुदावंद की राह में मुत्तफ़क़ रहो * और
ऐ वेरिया रफ़ीक़ मैं तेरी भी मिन्नत करता हूं कि तू उन रंडियों
की जिन्हों ने मेरे साथ ख़िदमति इंजील में जिद्द ओ जिहद
किया क़लीमनत और मेरे बाक़ी हमख़िदमतों समेत जिनके

४ नाम दफ़तरि हयात में हैं मदद कर * खुदावंद में हमेशः
५ खुश रहो और फिर कहता हूं कि खुश रहो * तुम्हारे मिज़ाज
का इअतिदाल सारे आदमियों पर ज़ाहिर हो खुदावंद
६ नज़दीक है * किसी बात में अंदेशःमंद मत हो बल्कि
चाहिये कि हर एक बात में तुम्हारी अरज़ मुनाजात और
७ दुआ से शुक्र गुज़ारी के साथ खुदा से की जाय * और
आरमि इलाही जो सारे फ़हमों से बाहर है तुम्हारे दिलों
और ज़ियलों को मसीह ईसा में निगहबानी करेगा *
८ बाक़ी ऐ भाईओ जितनी चीज़ें सच हैं और जितनी चीज़ें
मुनासिब हैं और जितनी चीज़ें सीधी हैं और जितनी
चीज़ें पाक हैं और जितनी चीज़ें हरदिल अज़ीज़ हैं
और जितनी चीज़ें नामी हैं बल्कि जो खूबी और जो
९ हुसन है उस में ग़ौर करो * और जिन चीज़ों को
तुमने मुझ से सीखा और क़बूल किया और सुना और देखा
उन पर अमल करो तब खुदा जो सुलह का बानी है
१० तुम्हारे साथ रहेगा * और मैं खुदावंद के सबब से बहुत
शादमान हूं इस वास्ते कि मेरे लिये खूबियों के गुल्शन में
आखिर कार फिर फूल लगे तुम तो आगे मेरे लिये अंदेशःमंद
११ थे पर मौक़ा न था * लेकिन मैं इहतियाज से नहीं
कहता क्यूंकि मैं ने यिह फ़न सीखा कि जिस हालत में हूं
१२ उसी पर क़ानिअ रहूं * और मैं घटना जानता हूं और

अफ़रना जानता हूं हर मक़ाम में और सब बातों में मैं
ने तअ़लीम पाई है सेर होने में भूखे होने में अफ़रने
१३ और घटने में * मसीह़ की तक़वीयत से मैं सब चीज़
१४ कर सकता हूं * बहर ह़ाल तुमने भला किया जो तुमने
१५ दुख में मेरी कुमक की * ऐ फ़लपीओ तुम जानो कि
इंजील की इबतिदाय मुनादी में जब मैं मक़दूनियः से
निकल आया तब किसी कलीसया ने सिवा तुम्हारे देने लेने
१६ में मेरी कुमक नकी * तसलनीक़ी में भी तुमने मेरी रफ़अ़
१७ इह़तियाज के लिये मुकर्रर कुछ भेजा * सो मैं इनआ़म नहीं
चाहता बल्कि चाहता हूं तुम ऐसे काम करो जो तुम्हारी
१८ मनफ़अ़त में महसूब हों * मुझ कने तो सब कुछ है ग़नी
हूं और मअ़मूर हूं कि मैं ने तुम्हारी भेजी हुई चीज़ें अपफ़रदीतुस
के हाथ से पाईं मुअ़तर शमीम और क़ुरबानी मक़बूल जो ख़ुदा
१९ के पसंद है * मेरा ख़ुदा अपने जलाल के गंजके मुवाफ़िक़ तुम्हारी
हर एक इह़तियाज मसीह़ी ईसा के तुफ़ैल रफ़अ़ करेगा *
२० हमारे बाप ख़ुदा के लिये अबदुलअबद ह़म्द होवे आमीन *
२१ हरऐक को जो मसीह़ी ईसा में होके पाक हैं सलाम सारे
२२ भाई जो मेरे साथ हैं तुम्हें सलाम कहते हैं * सारे
मुक़द्दस लोग ख़ुसूसन् वे जो क़ैसरी ख़ानदान के हैं तुमको
२३ सलाम कहते हैं * अब हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह़ का
फ़ज़ल तुम सब पर होवे आमीन *

पूलूस का मकतूब क़ुलस्सियों के लिये

पहला बाब

१ ख़ुदा की मरज़ी से ईसा मसीह के हवारी पूलूस की और
२ तीमताऊस भाई की तरफ़ से * उनके लिये जो क़ुलस्सूस
में मुक़द्दस लोग और मसीह में होके दीनदार भाई हैं
हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से
३ फ़ज़्ल और आराम तुम्हारे लिये होवे * हम जब से हमने
सुना कि तुम मसीह पर ईमान लाये और सब मुक़द्दस
४ लोगों को प्यार करते हो * तुम्हारे हक़ में सदा दुआ
५ करके उस सवाब के वास्ते जो तुम्हारे लिये आसमान पर
ज़ख़ीरः किया गया है * जिसका ज़िक्र तुमने इंजील के
कलामि हक़ में सुना अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह के ख़ुदा
६ और बाप का शुक्र करते हैं * कि वुह इंजील अब तुम

पास आई और आके सारी दुनया में फल देती है चुनांचिः तुम्हारे दरमियान भी जिस दिन से तुमने ख़ुदाके फ़ज़्ल को सुना और जैसा जानने का हक़ था जाना देती है *

७ तुम ने हमारे अज़ीज़ हम ख़िदमत इपफ़रास से जो तुम्हारे वास्ते मसीह का दियानतदार ख़ादिम है ऐसा ही सीखा था *

८ उसने तुम्हारी महब्बति रूही को हम पर ज़ाहिर किया *

९ सो हम ने भी जिस दिन से यिह सुना तुम्हारे वास्ते दुआ मांगने में ग़फ़लत नकी और यिह अरज़ करते रहते हैं कि तुम मअरिफ़ति कामिल पैदा करो कि उसकी मरज़ी क्या है और हिकमति वाफ़िर और दानिशि रूहानी से

१० भर जाओ * और तुम्हारी रविश ऐसी हो जैसा ख़ुदावंद के लोगों के लाइक़ है यहां तक कि रज़ाय कुल्ली हासिल करो और हरएक कार ख़ैर से बरोमंद हो और ख़ुदा के इरफ़ान

११ में तरक़्क़ी करो * और उसकी क़ुदरति जलील से सारी इस्तिअदादों में क़वी होजाओ ता कि तुम कमाल तहम्मुल

१२ और ख़ुशी से सबर * और बाप का शुक्र करते रहो जिसने हमको इस लाइक़ किया कि रोशनी में मुक़द्दस लोगों

१३ के साथ मीरास का हिस्सः लें * कि उसने हम को तारीकी के क़बज़े से रिहा किया और अपने प्यारे बेटे की बादशाहत

१४ में गुज़रना * और हम उसी में उसके लहू के सबब से

१५ नजात यअने गुनाहों की मग़फ़िरत पाते हैं * कि वुह उस

ख़ुदा की सूरत है जिसकी रवीयत मुहाल है और वुह
१६ सारी ख़िल्क़त से पहले मुतवल्लिद हूआ * क्यूंकि उस से
सारी चीज़ें जो आसमान और ज़मीन पर हैं दीदनी और
नादीदनी क्या तख़्त क्या ख़ाविंदियां क्या हुकूमतें क्या
मुख़्तारियां पैदा की गईं सारी चीज़ें उस से और उसके लिये
१७ पैदा हूई हैं * वुह सब से आगे है और उससे सारी
१८ चीज़ें बाहम मिली हैं * और वुह बदन का यअ़्ने कलीसिया
का सिर है वही आग़ाज़ है और सब मुरदों में से वही
पहले जिया ता कि सब के दरमियान अव्वलीयत उसमें हो *
१९ क्यूंकि उसे यिह अच्छा लगा कि सारी तकमील उस में
२० बसे * और उस के ख़ून के सबब जो सलीब पर बहा सुलह
करके सारी चीज़ों को मिला ले हां उसके सबब से सब
चीज़ों को क्या ज़मीन पर क्या आसमान पर अपनी तरफ़
२१ फिरा ले * और तुमको जो बद किरदारियों के सबब अजनबी
और बातिन में आगे मकरूह थे उस ने अब अपने
जिसमानी बदन में मर जाने के सबब से फर आया *
२२ ता कि वुह तुम्हें अपनी नज़र में मुक़द्दस और बेऐब और
२३ बेजुरम ठहराए * पर शरत यिह है कि तुम्हारी बुनयाद
ईमान पर हो और तुम मुस्तक़ीम हो और इंजील की
उमीद से जैसे तुमने सुना टल न जाओ उसी इंजील की
सुनादी हरएक मख़लूक़ के लिये आसमान के नीचे की गई

२४ और उसका मैं पूलूस ख़ादिम बना हूं * मैं अपनी उन अज़ीयतों से जो तुम्हारे वास्ते खैंचता हूं खुश हूं और मसीह की अज़ीयतों की कमतियां उसके बदन की यअ़ने कलीसया

२५ के वास्ते अपने जिसम से भरे देता हूं * और मैं उस कलीसया का ख़ादिम हूआ चुनांचिः यिह ख़ानसामानी ख़ुदा की तरफ़ से मुझे तुम्हारे लिये दी गई ता कि मैं ख़ुदा

२६ के कलाम को * यअ़ने उस भेद को जो हर अस्र में पुश्त बपुश्त पोशीदः रहा और अब उसके मुक़द्दस लोगों पर

२७ ज़ाहिर हूआ पूरा बयान करूं * कि ख़ुदा ने चाहा उन मुक़द्दस लोगों पर आश्कारा करे कि क़ौमों के वास्ते उस राज़ की हश्मत की फ़िरवानी किया है जो यिह है कि

२८ मसीह तुम में जलाल की उम्मेद है * हम उस की ख़बर देके हरएक आदमी को नसीहत करते हैं और हर शख़्स को कमाल दानिश से तअ़लीम देते हैं ता कि हम हर

२९ आदमी को मसीह ईसा में मुकम्मल कर रखें * और उसही लिये मैं उस फ़िअ़ल के मुवाफ़िक़ जो मुझ मे क़ुव्वत से मुसिर है जिद्द ओ जिहद से सई करता हूं *

दूसरा बाब

१ मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि मैं तुम्हारे और उनके वास्ते जो लाद़ीक़ियः में हैं और उन सब के वास्ते जिन्हों ने मेरी जिसमी सूरत नहीं देखी क्याही जांफ़िशानी करता हूं *

२ ता कि उनके दिल तसल्ली पावें और मुहब्बत के रिश्ते से बाहम पैवस्तः रहें यहांतक कि वे फ़हमीद में हक़ुलयक़ीन तक पहुंचें और ख़ुदा और बाप और मसीह के सिर्र को
३ जानें * कि उस में हिकमत और इरफ़ान के सारे ख़ज़ाने
४ गड़े हैं * मैं यिह कहता हूं नहोवे कि कोई चर्बज़बानी
५ से तुम्हारी अक़्ल को बहकावे * क्यूंकि अगरचिः मैं जिस्म से दूर हूं पर रूह से तुम पास हूं और तुम्हारे अमन ओ आमान को और तुम्हारे ईमान को जो मसीह पर
६ है उस्तवारी को देखके शादमान हूं * पस जैसा तुम ने मसीह ईसा को क़बूल किया कि ख़ुदावंद होवे वैसा उसमें चलन
७ चलो * और उस में जड़ बांधो और उस पर बनाये जाओ और जैसी तुमने ईमान में तरबीयत पाई है उस पर क़ाइम रहो
८ और उस में शुक्र गुज़ारी से तरक़्क़ी करो * देखो ऐसा नहो कि कोई फ़ैलसूफ़ी और लग़ो फ़रेब से जो आदमियों के दस्तूर और दुनयवी उस्तक़सात के मुवाफ़िक़ हैं न कि मसीह
९ के मुवाफ़िक़ तुम्हें लूट ले * क्यूंकि ख़ुदाई का सारा कमाल
१० उसमें मुजस्सिम हो रहा * और तुम उसमें मुकम्मल बने हो कि वुह सारी रियासत ओ क़ुदरत का सिर है *
११ तुम्हारा उसमें मअ़नवी ख़तनः किया गया यअ़ने तुम ने तमाम कमाल जिस्मी गुनाहों को मसीही ख़तनः के सबब
१२ से उतार फेंका * और उसके साथ इस्तिबाग़ के सबब से

गाड़े गये और उसही के सबब तुम उसके साथ जी उठे क्यूंकि तुम उस ख़ुदा की क़ुदरत पर जिसने उसको मुरदों में से
१३ जिलाया ईमान लाये * और उसने तुम्हें जो ख़ताओं से और अपने जिसम की नामख़्तूनी से मुरदः थे उसके साथ ज़िंदः किया कि उसने तुम्हारी सारी ख़ताओं को बख़्शा *
१४ और वुह रक़म जो हमारे मुख़ालिफ़ हमारी बाबत हुक्मों में था मिटा डाला और उसको तू सलीब पर चढ़ाके मेख़
१५ ठोंकके बीच से ख़ारिज किया * और अरबाबि हुकूमत ओ इख़्तियार को नंगा करके अलानियः अंगुश्तनुमा किया
१६ कि उसने उससे उन पर फ़ख़रियः शादमानी की * इसवास्ते कोई तुम्हें खाने पीने में या ईद या चांद करने में या
१७ ऐयाम सबत के मामले में मुजरिम नकरे * कि ये चीज़ें आनेवाली चीज़ों की सायः हैं पर बदन मसीह का है *
१८ ख़बरदार कोई तुम्हें ईजादी ख़ाकसारी और फ़िरिश्तों की इबादत करके तुम्हारे अजर से महरूम नकरे कि ऐसा शख़्स उन चीज़ों में जिन्हें उसने नहीं देखा दख़्ल देजा करता है और अपनी दुनयवी दानिश पर अबस अफरता है *
१९ और उस सिरको नहीं पकड़ता जिस से सारा बदन मुफ़स्सलों और अज़वों के बीच पड़ने से ग़िज़ा पाके और बाहम
२० जुड़जाके ख़ुदा की बढ़ाई बढ़ता है * पस अगर तुम मसीह के साथ मरके दुनयवी उस्तक़सात से गुज़र गये तो तुम

क्यूं उनकी मानंद जो दुनया में ज़िंदः हैं दस्तूर परस्त हो * २१ और कहते हो हां मत छूना देखियो चखियो मत हाथ २२ नलगाना * ये सारी चीज़ें मुस्तअमल होके फ़ासिद हो जाती हैं और फ़क़त आदमियों के ऊक्मों और तअलीमों २३ के मुवाफ़िक़ होती हैं * कि उन का ज़ाहिर दानिशमंदानः है इसवास्ते कि उन में इवादत औ ख़ाकसारी का ईजाद है और वदनी रियाज़त है और तनआसानी की तरफ़ तवज्जुह नहीं *

तीसरा वाव

१ पस अगर तुम मसीह के साथ जी उठे हो तो फ़ौक़ानी चीज़ों के तालिव हो जहां मसीह ख़ुदा के दाहने वैठा है * २ फ़ौक़ानी चीज़ों से दिल लगाओ न उन चीज़ों से जो ज़मीन ३ पर हैं * क्यूंकि तुम मरगये हो और तुम्हारी ज़िंदगी मसीह के ४ साथ ख़ुदा में मुतज़म्मिन है * जब मसीह जो हमारी ज़िंदगी है ज़ाहिर होगा उसके साथ तुम भी जलाल से ज़ाहिर ५ होगे * इसवास्ते तुम अपने अज़वों को जो ज़मीन पर हैं यअ़ने हरामकारी और नापाकी और वेजा तअश्शुक़ और बुरी ख़्वाहिश और लालच को जो एक क़िसम की ६ बुतपरस्ती है कुश्तः करो * उन्हीं के सवव से ख़ुदा का ग़ज़व ७ अवनाय वग़ावत पर नाज़िल होता है * और आगे जब तुम उनके बीच जीते थे उन में तुम भी यह चलते थे * ८ पर अब तुमने उन सब को यअ़ने ग़ुस्सः और ग़ज़व और

बदी और बदगोई और फ़ह्हाश को अपने मुंह से निकाल
९ फेंका है * एक दूसरे से झूठ नबोलो क्यूंकि तुमने पुरानी
१० इनसानियत को उसके फ़िअलों समेत उतार फेंका * और नई
इनसानियत को जो इरफ़ान में अपने पैदा करनेवाले की
११ सूरत के मुवाफ़िक़ नई बन रही है पहना * वहां न यूनानी
है न यहूदी न ख़तनः न नामख़तूनी न वरी न असकूती न
१२ बंदः न आज़ाद पर मसीह कुल और कुलमें है * पस ख़ुदा
के बरगुज़ीदों की मानंद जो मुक़द्दस और महबूब हैं
दिलि पुरदर्द और अख़लाक़ और ख़ाकसारी और फ़रोतनी और
१३ हिल्म से ज़ेबाइश पैदा करो * और अगर कोई किसीसे
नालां हो तो एक दूसरे की बरदाश्त करो और एक दूसरे
को मुआफ़ करो जैसा मसीह ने तुम्हें बख़शा वैसाही तुम भी
१४ करो * और उनसब पर अलावः महब्बत को पहन लो कि
१५ वुह कमालियत को उस्तवारी बख़शती है * सुलह इलाही
जिसकी तरफ़ तुम एकतन होकर बुलाये गयेहो तुम्हारे
१६ दिलों में बंदोबस्त करे शुक्र गुज़ार रहो * मसीह की बातें
तुम में फ़िरवानी से बसें और तुम एक दूसरे को कमाल दानिश
से तअलीम और पंद दो और मज़्मूर और मुनाजातें और रूहानी
ग़ज़लें शुक्रगुज़ारी के साथ ख़ुदावंद के लिये दिलों से गाओ *
१७ बल्कि जो कुछ करते हो बात और काम सब कुछ ख़ुदावंद ईसा
के नाम से करो और उसका नाम लेके ख़ुदा और बापका शुक्र

१८ करो * ऐ रंडियो अपने अपने ख़समों की फ़रमांबरदारी करो
१९ कि उनके लिये जो ख़ुदावंद में हैं यही मुनासिब है * ऐ मर्दो
अपनी जोरूओं को प्यार करो और उनसे कंखरापन नकरो *
२० ऐ लड़को तुम अपने मा बापकी हरऐक बात में फ़रमांबरदारी
२१ करो कि ख़ुदावंद को यही पसंद है * ऐ बच्चेवालो अपने
लड़कों को मत कलपाओ नहोवे कि वे नाउमेद हों *
२२ ऐ ख़िद्मत करने वालो तुम उनकी जो दुनया में तुम्हारे
ख़ाविंद हैं सब बातों में फ़रमांबरदारी करो पर यिह दिखाने
को नहो जैसा ख़ुशामदी लोगों का दस्तूर है वल्कि दिलकी
२३ सफ़ाई और ख़ुदातरसी से हो * और जो कुछ करो सो
जीसे ऐसा करो जैसा ख़ुदावंद के लिये करते हैं नकि
२४ आदमियों के लिये * कि तुम जानते हो तुम ख़ुदावंद से
अजर में मीरास पाओगे क्यूंकि वुह ख़ुदावंद जिसके तुम
२५ ख़ादिम हो मसीह है * पर वुह जो ख़ता करता है सो अपने
किये के मुवाफ़िक़ कमायगा और श़ख़सीयत मनज़ूर नहोगी *

चौथा बाब

१ ऐ मख़दूमो ख़ादिमों के हक़ में अदल और इनसाफ़ करो
२ कि तुम्हारा भी ऐक ख़ाविंद है जो आसमान पर है * इस्तिक़लाल
से दुआ मांगो और उस में शुक्रगुज़ारी के साथ हुशयार
३ रहो * और साथ उसके हमारे लिये भी दुआ करो कि
ख़ुदा हमारे लिये नुत्क़ का दरवाज़ः खोले ताकि मैं मसीह़ी

रज़ को जिसके सबब से असीर हूआ हूं बयान करूं *
४ तब तो मैं उसे ऐसा ज़ाहिर करूं जैसा मुझे लाज़िम है *
५ तुम वक़्त को ग़नीमत जानके ख़ारजियों के साथ दानाई ख़र्च
६ करो * चाहिये कि तुम्हारी बात हमेशः मिहर आमेज़
हो और नमकीं हो ताकि तुम जानो हरऐक को क्यूंकर
७ जवाब दिया चाहिये * तख़कस जो प्यारा भाई और
दियानतदार ख़ादिम और ख़ुदावंद की ख़िदमत में शरीक है
८ मेरे सारे अहवाल से तुमको इत्तलाअ देगा * उसको मैं ने
इसलिये तुम्हारे पास भेजा है कि वुह तुम्हारा हाल दरयाफ़्त
९ करे और तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे * और उसके साथ
उनीसमस को जो दियानतदार और प्यारा भाई है और
तुम्हारे फ़िरक़े में का है भेज दिया वे तुम्हें यहां की सारी
१० ख़बरें पहुंचायेंगे * अरस्तरख़स जो क़ैद में मेरा शरीक है
और मरक़ुस जो बरनबास का भानजा है जिसकी बाबत तुमने
अहकाम पाये अगर वुह तुम्हारे पास आवे तो उसे क़बूल *
११ और ईसा जो यूस्तुस कहलाता है ये सब जो मख़तूनों में से
हैं तुम को सलाम कहते हैं और फ़क़त येही ख़ुदा की बादशाहत
के वास्ते मेरे हमख़िदमत थे और मेरे लिये तसल्ली थे *
१२ और अपफ़रास जो तुम में से मसीह का बंदः है तुम को
सलाम कहता है और वुह तुम्हारे वास्ते हमेशः जिद्द औ
जिहद से दुआयें मांगता ता कि तुम ख़ुदा की सारी मर्ज़ीयतों

में वे तुरुस्त और कामिल हो रहो * मैं उसका गवाह हूं कि वह तुम्हारे और उन के वास्ते जो लादक़िया में और उनके
१४ लिये जो ईरूपलस में हैं बहुत सरगरम है * और लूक़ा
१५ प्यारा तबीब और दामा तुम्हें सलाम कहते हैं * तुम उन भाईओं को जो लादक़िया में हैं और नमफ़ा को और कलीसया को जो उस के घरमें है सलाम कहो *
१६ और जब यिह किताब तुम में पढ़ी जाय तो ऐसा करो कि लादक़ियों के कलीसया में भी पढ़े और लादक़िया की
१७ किताब को तुम भी पढ़ो * और अरख़प्पस से कहो कि तू उस ख़िदमत में जो तूने ख़ुदावंद में पाई है हुशयार रह
१८ कि तू उसे मुकम्मल तौर से करे * और मेरे हाथ से जो पूलूस हूं सलाम और मेरी ज़ंजीरों को याद करो और फ़ज़ल तुम पर होवे आमीन *

पूलूस्का पहला मकतूब तसलनीक़ियों को *

पहला बाब

१ पूलूस और सलवानस और तीमताऊस की तरफ़ से तसलनीक़ी कलीसया को जो बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह में हैं फ़ज़ल और आराम हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हारे लिये होवे *
२ हम तुम सब के वास्ते ख़ुदा का शुक्र हमेशः करते हैं और अपनी दुआओं में तुम्हें याद करते हैं * और हम अपने बाप ख़ुदा के आगे नित याद करते हैं तुम ईमान से काम और महब्बत से मिहनत करते हो और उम्मेदवार ३ होके हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के मुन्तज़िर हो * ऐ अज़ीज़ ४ भाईओ हम जानते हैं तुम ख़ुदाके बरगुज़ीदः हो *
५ क्यूंकि हमारी इंजील नफ़क़त अलफ़ाज़ के ज़िमन में बल्कि

वुह कुद्रत और रूहि कुद्स और पूरे इअतिक़ाद के साथ आई चुनांचिः तुम जानते हो तुम में हम तुम्हारे
६ वास्ते कैसे थे * और तुम उस कलाम को बड़ी नफ़्दीअ़ के साथ रूहि कुद्स की खुशी से पाकर हमारे और खुदावंद
७ के पैरो हूए * यहां तक कि तुम मक़्दूनियः और
८ अख़ाइयः के सारे ईमानदारों के लिये नमूने बने * क्यूंकि तुमसे खुदावंद के कलाम की शुहरत फ़क़त मक़्दूनियः और अख़ाइयः में नहूई बल्कि हरऐक जगह तुम्हारा ईमान जो खुदा पर है शायअ़ हूआ यहां तक कि हमारे कहने
९ की कुछ हाजत नहीं * इसवास्ते कि वे आप हमारा ज़िक्र करते हैं कि हमने तुम में कैसा दख़ल पाया और तुम क्यूंकर बुतों से खुदा की तरफ़ फिरे ता कि खुदा की
१० जो जीता और सच्चा है वंदगी करो * और उसके बेटे की जिसे उसने मुरदों में से जिलाया राह तको आसमान पर से आवे वुह ईसा है जो हमको ग़ज़बि आयँदे से रिहाई बख़्शता है *

दूसरा बाब

१ ऐ भाईओ तुम तो आप जानते हो कि हमारा दख़ल तुम
२ में अबस नथा * हम आगे शहरि फ़लप्पी में जैसा जानते हो दुख और रुसवाई उठाके अपने खुदा के सबब बेपरवाई से इंजीलि इलाही बात बड़ा जिद्दओ जिहद करके तुम से

३ कहते थे * कि हमारा वअ़ज़ कहना गुमराही और
४ नापाकी और दग़ाबाज़ी से न था * बल्कि जैसा ख़ुदा ने हमको मक़बूल जानके इंजील का अमानतदार किया वैसा ही हम बोलते हैं और न कि आदमियों को बल्कि ख़ुदा को जो हमारे
५ दिलों को आज़माता है रज़ामंद करते हैं * कि तुम जानते हो हम न कभी ख़ुशामद की बात बोलते थे न तमअ़ के पर्दे में
६ ख़ुदा शाहिद है * और न किसी आदमी से क्या तुम से क्या दूसरों से इज़्ज़त पाने के तालिब बने अगरचिः हम उस सबब से कि मसीह के हवारी हैं तुम पर बोझ डाल
७ सकते थे * पर हम तुम्हारे दरमियान ऐसे मुलायम रहे
८ जैसे दाई जो अपने बच्चों पर मिहर करती है * सो हम तुम्हारे मुश्ताक़ होकर राज़ी थे कि न फ़क़त ख़ुदा की इंजील बल्कि अपनी जानों तक तुम्हें देवें इसवास्ते कि तुम हमारे
९ प्यारे थे * ऐ भाईओ तुम हमारी बोझ और मिहनत को याद करते हो हमने इसलिये कि तुम में से किसी पर बार न हो रात दिन दस्तकारी करके तुम में इंजीलि इलाही
१० की मुनादी की * तुम गवाह हो और ख़ुदा भी है कि हम तुम ईमानदारों में क्याही ख़ुलूस और सदाक़त और
११ बेइल्ज़ामी से गुज़रान करते थे * चुनांचिः तुम जानते हो कि हम तुम में हरएक को यों दिलासा और तसल्ली
१२ देते और नसीहत करते थे जैसे बाप बच्चों को * ताकि

तुम्हारी रविश ख़ुदा की तलब के मुनासिब हो कि उसने
१२ तुम्हें अपनी बादशाहत औ जलाल में बुलाया * इसवास्ते
हम हमेशः ख़ुदा के शुक्रगुज़ार हैं कि जब वुह कलाम
जो ख़ुदा का है जिसे हम सुनाते हैं तुम को मिला तुमने
उसे न आदमियों का कलाम समझकर बल्कि ख़ुदा का
कलाम जानकर कि वुह फ़िलहक़ीक़त ऐसाही है क़बूल
१४ किया और वुह तुम ईमानदारों में मूसिर है * इसवास्ते
कि तुम ऐ भाईओ ख़ुदा की कलीसयाओं के जो यहूदियः
में ईसा मसीह की हैं पैरौ हूए क्यूंकि तुमने भी अपने
हम क़ौमों से वही दुख पाये जो उन्होंने यहूदियों से *
१५ जिन्हों ने ख़ुदावन्द ईसा को और अपने नबियों को मार डाला
और हमको सताया और वे ख़ुदा को ख़ुश नहीं आते और
१६ सारे आदमियों के मुख़ालिफ़ हैं * और वे ताकि उनके
गुनाह कमाल को हमेशः पहुंचते रहें हमको मनअ करते हैं
ताकि हम ग़ैर क़ौमों से वुह बातें जिससे उनकी नजात
होती है नकरें और ग़ज़ब जो उनपर है निहायत को
१७ पहुंचा * और हमने ऐ भाईओ तुमसे थोड़ी मुद्दत तक
बज़ाहिर न बदिल महजूर होके बहुत इश्तियाक़ से ज़ियादः
१८ तर कोशिश की कि तुम्हारा मुहं देखें * इसवास्ते हमने
यअने मैं ने जो पूलस हूं एकबा दोबार चाहा कि तुम्हारे
१९ पास आऊं पर शैतान ने हमें रोका * हमारी उम्मेद और

ख़ुशी और फ़ख़र का सिह्रा किया है क्या तुम हमारे ख़ुदावन्द ईसा मसीह् के साम्हने उसके आते वक़्त नहोगे *

२० यक़ीनन् तुम भी हमारे जलाल और ख़ुशी हो *

तीसरा बाब

१ इसवास्ते, जब हम आप को उससे ज़ियादः ज़ब्त् कर न सके तो हम राज़ी हूए कि वे हमको असूनिया में अकेला छोड़ें *

२ चुनांचिः हमने तीमताऊस को जो हमारा भाई और ख़ुदा का ख़ादिम और मसीह् की इंजील में हमारा हमख़िद्मत है भेजा कि वुह तुम को तुम्हारे ईमान में उस्तवार करे

३ और तसल्ली दे * ता कि कोई अज़ीयतों से मुतज़ल्ज़ल नहो क्यूंकि तुम आप जानते हो कि हम उनही के लिये

४ मुक़र्रर हूए हैं * जब हम तुम्हारे पास थे तब तुम्हें कहा करते थे कि हम अज़ीयत पावेंगे चुनांचिः वही हूआ और

५ तुमने जाना * इसवास्ते जब मैं उस से ज़ियादः ज़ब्त् न करसका तब तुम्हारा ईमान दर्याफ़्त करने को भेजा न होवे कि इम्तिहान करनेवाले ने तुम्हें गुमराह किया हो

६ और हमारी कोफ़्त अबस् होजाय * पर अब तीमताऊस जब तुमकने से हम पास आया और तुम्हारे ईमान और मह्ब्बत की ख़ुशख़बरी लाया और कहा कि तुम हमारा ज़िक्रि ख़ैर हमेशः करते हो और तुम हमारे देखने के मुश्ताक़ हो

७ जैसे हम तुम्हारे * इसलिये ऐ भाईओ हम अपनी सारी

अक़ीयत और इह़तियाज में तुम्हारे ईमान के सबब तुम
८ से तसल्ली पाई * क्यूंकि अब हम जीते अगर तुम ख़ुदावंद
९ में क़ाइम रहो * हम उस सरूर के मुक़ाबिलः जो हमें
तुम्हारी बाबत ख़ुदा के आगे हूआ क्यूंकर ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी
१० करें * हम रात दिन लगके दुआ मांगते हैं कि तुम्हारा
मुंह देखें और तुम्हारे ईमान की कमतियां भर दें *
११ और ख़ुदा और हमारा बाप आप और ख़ुदावंद ईसा मसीह़
१२ ऐसा करे कि हमारा गुज़र तुम्हारी तरफ़ होवे * और ख़ुदावंद
ऐसा करे कि जैसी हमको तुमसे मह़ब्बत है तुम्हारी मह़ब्बत
भी क्या आपस में और क्या दूसरों के साथ बढ़े और
१३ अफ़ज़ूद होवे * यहांतक कि वुह तुम को क़रार बख़्शे
ताकि जब हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह़ अपने मुक़द्दस
लोगों के साथ आवे तब तुम्हारे दिल हमारे बाप ख़ुदा के
साम्हने तक़द्दुस में बेजुरम निकलें *

चौथा बाब

१ बाक़ी ऐ भाईओ हम तुम से ख़ुदावंद ईसा के वास्ते अरज़
और इल्तिमास करते हैं कि तुम ने जो हमसे रविश
की और ख़ुदाके ख़ुश करने की वज़अ सीखी है सो उसमें
२ तुम तरक़्क़ी करो * तुम जानते हो कि हमने तुमको
३ ख़ुदावंद ईसा की तरफ़ से क्या अह़काम किये * कि ख़ुदा
का इरादः यिह है कि तुम मुक़द्दस होके ह़रामकारी से

४ अपने तईं पाक रखो * और हरएक तुम में से जाने कि अपनी तरफ़ को तक़द्दुस और इ़ज़्ज़त से रखा चाहिये *
५ न अजनबी क़ौमों के मानंद जो ख़ुदा को पहचानते नहीं
६ हैं हवा ओ हवस में * और अपने भाई से ज़बरदस्ती और दग़ाबाज़ी न करे क्यूंकि ख़ुदावंद ऐसे सारे फ़िअलों का इनतिक़ाम लेगा चुनांचिः हमने आगे भी तुमसे कहा और
७ गवाही दी * कि ख़ुदा ने हमको नापाकी में नहीं बल्कि
८ तक़द्दुस में बुलाया * इसवास्ते जो तहक़ीर करता है सो न आदमी की बल्कि ख़ुदा की जिसने अपनी मुक़द्दस रूह
९ भी हमें दी तहक़ीर करता है * अब मुहर बरदारी की बाबत तुम मुहताज उसके नहीं कि कोई तुम्हें कुछ लिखे क्यूंकि तुमने आपस की उलफ़त में ख़ुदा से तअ़लीम पाई *
१० चुनांचिः तुम उन सारे भाइओं से जो तमाम मक़दूनियः में हैं ऐसाही करते हो लेकिन ऐ भाईओ हम तुम से इल्तिमास
११ करते हैं कि तुम ज़ियादः तरक़्क़ी करो * और जिस तरह हमने तुम्हें हुक्म किया तुम चैन से रहने और आप अपने कारबार करने और अपने हाथों से काम करने की
१२ इ़ज़्ज़त के तालिब हो * ताकि तुम ख़ारिजियों के आगे इ़ज़्ज़त की चाल चलो और किसी के मुहताज न हो *
१३ और ऐ भाईओ मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उन के अहवाल से जो सोगये हैं नावाक़िफ़ रहो ताकि तुम औरों के मानंद

१४ जो नाउम्मैद हैं गम न करो * क्यूंकि हमने जो यिह माना कि ईसा मुआ और उठा तो माना चाहिये कि खुदा उन्हें जो सोगये हैं ईसा की खातिर उसके साथ ले
१५ आयगा * हम तुम्हें खुदावंद के अमर से यिह कहते हैं कि वे जो हम में से खुदावंद के ज़हूर के वक्त जीते
१६ होंगे उन पर जो सोगये हैं सबक़त न करेंगे * क्यूंकि खुदावंद आप धूमसे मुक़र्रब फ़िरिश्ते के इहतमाम के साथ खुदा का नरसिंगा फूंकते हुए आसमान पर से उतरेगा और
१७ जो मसीह में होके मुए हैं वे पहले उठेंगे * बअ़द उसके हममें से वे जो जीते छुटेंगे उन समेत बदलियों पर नागाह चढ़ाये जायेंगे ताकि हवा में खुदावंद से मुलाक़ात करें सो हम खुदावंद के साथ हमेशः रहेंगे *
१८ पस तुम उन बातों से बाहम एक एक को तसल्ली दो *

पांचवां बाब

१ और ऐ भाईओ तुम उसके मुहताज नहीं कि वक्तों और
२ मौसिमों का अहवाल कुछ तुम्हें लिखा जावे * इसवास्ते कि तुम आप खूब जानते हो कि खुदावंद का दिन इस तरह
३ आवेगा जिस तरह रात को चोर आता है * जिसवक्त लोग कहते होंगे कि सलामती और बेखतरी है तब जिस तरह हामिलः को दर्द लगते हैं उन पर नागहानी हलाकत आवेगी
४ और वे न बचेंगे * पर तुम ऐ भाईओ अंधेरे में नहीं

हो कि वुह दिन चोर की मानंद तुम्हें बेख़बर पकड़ ले *
५ तुम सब नूरके फ़रज़ंद और दिनको औलाद हो हम रात
६ के नहीं और न तारीकी के हैं * इसवास्ते चाहिये कि
औरों की तरह नसोवें बल्कि बेदार और होशयार रहें *
७ क्यूंकि जो सोते हैं सो शबही को सोते हैं और जो मतवाले
८ होते हैं रातही को मतवाले होते हैं * पर हम जो दिन
के हैं चाहिये कि हुशयार रहें और ईमान और इश्क़ का
चार आईनः और नजात की उम्मैद का ख़ोद पहनें *
९ क्यूंकि ख़ुदा ने हमको ग़ज़ब के लिये नहीं बल्कि इसलिये
मुक़र्रर किया कि हम अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह से नजात
१० हासिल करें * कि वुह हमारे वास्ते मुआ ताकि हम
११ क्या जागते क्या सोते उसके साथ जीयें * इसलिये तुम
एक एक को तसल्ली दो और एक एक को तअमीर करो
१२ चुनांचिः तुम यिह करते हो * और ऐ भाईओ हम तुमसे अरज़
करते हैं कि तुम उनको जो तुम में महनत करते हैं
और ख़ुदावंद के काम में तुम्हारे सरदार हैं और तुम को
१३ नसीहत करते हैं मानों * और उनके उहदः के लिये
महब्बत से उनकी बहुत तकरीम करो और आपस में मिले
१४ रहो * और ऐ भाईओ हम तुम से इलतमास करते हैं
कि तुम गर्दनकशों को पंद दो ज़ईफ़ दिलों को दिलासा
१५ कमज़ोरों को संभालो और सब की बरदाश्त करो * देखो

कोई किसी से बदी के इवज़ में बदी नकरे बल्कि तुम ऐक ऐक
१६ से और सब से बिल्कुल खुश सलूकी करे * हमेशः खुश रहो *
१७ नित दुआ मांगो (१८) हरऐक बात में शुक्रगुज़ारी करे क्यूंकि
खुदा चाहता है कि तुम मसीह ईसा में यही करे *
१९ रूह को मत बुझाओ (२०) नबूवतों की तहक़ीर न करे *
२१ सारी बातों का इमतिहान करे बिहतर को थामो (२२) हरऐक
२३ बातसे जिसका ज़ाहिर बद हो दूर रहो * खुदा जो सुलह
का बानी है आपही तुमको बिल्कुल पाकीज़ः करे और
तुम्हारा सब कुछ यआने तुम्हारी रूह और नफ़स और बदन
हमारे खुदावंद ईसा मसीह के आने तक बेइलज़ाम महफ़ूज़
२४ रहे * जिसने तुम्हें बुलाया बुह अमीन है बुह ऐसाही
२५ करेगा * भाईओ हमारे वास्ते दुआ मांगो (२६) और सारे
२७ भाईओं को मुक़द्दसानः बोसः लेके सलाम करे * मैं तुम्हें
खुदावंद की क़सम देता हूं यिह नामः सारे मुक़द्दस भाईओं में
२८ पढ़वाओ * अब हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम
पर होवे आमीन *

पूलूस का दूसरा मकतूब तसलनीकियों को *

पहला बाब *

१ पूलूस और सलवानिस और तीमताऊस की जानिब से मक़बूलों की तसलनीकी जमाअत को जो हमारे बाप ख़ुदा और
२ ख़ुदावंद ईसा मसीह में हैं * हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से फ़ज़्ल और आराम तुम्हारे
३ लिये होवे * ऐ भाईओ लाज़िम है कि हम तुम्हारे लिये हमेशः ख़ुदा का शुक्र करें यही लाइक़ है इसलिये कि तुम्हारा इअ़तिक़ाद बढ़ता जाता है और तुमसब में हरएक
४ की उल्फ़त दूसरे से ज़ियादः होती है * यहांतक कि हम आप ख़ुदा की कलीसयाओं में तुम्हारे सबब से फ़ख़र करते हैं कि तुम उन दुखों और रंजों में जो तुम पर पड़ते
५ हैं साबिर और ईमान दार हो * ख़ुदा की सच्ची तजवीज़

का यिह इश्हार है कि तुम ख़ुदा की बादशाहत के
६ लाइक़ गिने जाओ जिसके लिये तुम दुख पाते हो * क्यूंकि
ख़ुदा के नज़्दीक यिह इन्साफ़ है (७) कि जब ख़ुदावंद ईसा
८ आसमान से अपने क़वी फ़िरिश्तों के साथ * भड़कती आगमें
नमूद हूए और उनसे जो ख़ुदा को नहीं पहचानते और
उनसे जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की इंजील को नहीं
मानते इन्तिक़ाम लेवे तब वुह उन्हें जो तुम्हें अज़ीयत
देते हैं अज़ीयत और तुम्हें जो अज़ीयत पाते हो हमारे
साथ उसी दिन आराम देवे इसवास्ते कि हमारी गवाही
९ तुम्हारे पास यक़ीनी हूई * कि वे ख़ुदावंद के चिह्रे से और
उसकी क़ुद्रत की अज़मत से हलाकति अबदी की सज़ा
१० पावेंगे * उस वक़्त वुह आकर अपने मुक़द्दस लोगों में
जलाल से मुज़ेयन और सारे ईमान दारों में तअज्जुब का बाइस
११ होगा * सो हम तुम्हारे लिये सदा दुआ मांगते हैं कि
हमारा ख़ुदा तुम्हें उस तलब के लाइक़ जाने और सब
ख़ूबियों को जो उसे ख़ुश आईं और ईमानी अअमाल को
१२ क़ुद्रत से पूरा करे * ता कि हमारे ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा
मसीह के फ़ज़्ल के मुवाफ़िक़ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
का नाम तुम में जलील हो और तुम उस में *

दूसरा बाब

१ ऐ भाईओ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का आना और हमारा

उस पास फ़राहम होना यक़ीनी है सो हम तुम्हारी मिन्नत
१ करते हैं * कि तुम उस गुमान से कि मसीह् का दिन
सरिदस्त है जल्द अपनी अक़्ल मत गवांओ और किसी
रूह या कलाम से या किसू किताब से यिह सोच कर
२ कि वुह हमारी तरफ़ से है हिरासां मत हो * कोई तुम्हें
किसी तरह से फ़रेब न दे क्यूंकि वुह दिन नहीं आयेगा
मगर जबकि पहले इरतिदाद आवे और वुह गुनाह का शख़्स
४ यअ़ने इबनुल्हलाकत ज़ाहिर होवे * जो हरएक का जो
ख़ुदा या मअ़बूद कहलाता है मुख़ालिफ़ है और उन पर
आपको बाला करता है यहांतक कि वुह ख़ुदा को मअ़बद
में ख़ुदा बन बैठेगा और अपने तईं दिखलायगा कि मैं ख़ुदा
५ हूं क्या तुम्हें याद नहीं कि मैं तुम्हारे साथ होते हूये
६ तुम्हें यिह बातें कहता था * अब तुम जानते हो कि बरवक़्त
७ उसके ज़ाहिर होने में कौन मानिअ़ है * बदकारी का राज़
तो अब भी तासीर करता जाता है फ़क़त ज़रूर है कि
८ वुह जो अबतक मानिअ़ है बीचसे दूर किया जाय * तब
वुह बे शरअ़ ज़ाहिर होगा जिसे ख़ुदावंद अपने मुंह के दमसे
९ फ़ना और अपने आने के शिकोह से नेस्त कर देगा * और
उसका आना शैतान के किये से कामिल क़ुदरत और झूठे
१० अ़जाइब और ग़राइब के साथ होगा * और ऐसी बेशरई
के साथ जो हलाक होने वालों को पूरी दग़ा देगी इसवास्ते

कि उन्हों ने सदाक़त की उल्फ़त को जिस से वे बचाये जाते
११ नहीं पाया * इसलिये खुदा उन पास दग़ा की तासीर को भेजेगा
१२ चुनांचिः वे झूठ पर ईमान लावेंगे * ता कि वे सब जो रास्तबाज़ी पर
१३ ईमान नलाये बल्कि नारास्ती से राज़ी थे सज़ा पावें * पर ऐ भाईओ
तुम जो ख़ुदावंद के महबूब हो लाज़िम है कि हम तुम्हारे वास्ते
हमेशःख़ुदा की शुक्रगुज़ारी करें कि ख़ुदा ने तुम्हें इबतिदा से
इख़तियार किया ता कि तुम रूहीं तक़दुस हासिल करके और सच्चाई
१४ पर ईमान लाके नजात पाओ * और इसलिये तुम्हें हमारी
इंजील के वसीले से बुलाया कि तुम हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
१५ का जलाल हासिल करे * पस इसवास्ते ऐ भाईओ पायदार रहो
और उन बातों को जो तुम्हारे सुपुर्द की गईं जो तुम
१६ कलाम से या हमारी किताब से सीखे थामे रहो * अब
हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह आप और हमारा बाप ख़ुदा
जिसने हमें प्यार किया और हमें तफ़ज़्ज़ुल से अबदी तसल्ली
१७ और अच्छी उम्मैद दी * तुम्हारे दिलों को तसल्ली देवे
और तुम को हरएक अच्छे क़ौल और फ़िअल में मज़बूत करे *

तीसरा बाब

१ बाक़ी ऐ भाईओ हमारे हक़ में यिह दुआ करो कि ख़ुदावंद का
कलाम रिवाज पावे और ऐसा मुअज़्ज़ होवे जैसा तुम में है *
२ और यिह कि हम ना मअक़ूल और शरीर आदमियों से
३ छुटकारा पावें क्यूंकि सब ईमानदार नहीं * पर ख़ुदावंद

अमानतदार है वुह तुमको मज़बूत करेगा और उस शरीरसे
४ बचायगा * और तुम्हारी बाबत खुदावंद पर हमारा इअ़तिक़ाद
है कि तुम उन ऊ़क्मों पर जो हम तुम्हें देते हैं अ़मल
५ करते हो और करोगे * खुदावंद तुम्हारे दिलों को हिदायत
करे कि तुम खुदाको प्यार करो और मसीह़ की राह तको *
६ और ऐ भाईओ हम अपने खुदावंद ईसा मसीह़ के नाम
से तुम्हें ऊ़क्म करते हैं कि तुम हरएक भाई से जो क़ानून
के बरख़िलाफ़ चलता है और उस सौंपी हुई बात पर जो
७ उसको हमसे मिली अ़मल नहीं करता अलग चलो * क्योंकि
तुम आप जानते हो कि हमारी पैरवी क्यूंकर किया चाहिये
८ हमतो तुम्हारे बीच क़ानून के मुख़ालिफ़ चलते नथे * और
किसी की रोटी मुफ़्त नखाते थे बल्कि बोझ़ और मुशक्क़त से रातदिन
दस्तकारी करके खाते रहे ता कि हम किसी पर तुम में से
९ बार नहोवें * और न इसवास्ते कि हमको मक़दूर नहीं
पर इसलिये कि हम आप को तुम्हारे लिये नमूनः ठहरावें
१० ता कि तुम हमारी पैरवी करो * जब हम तुम्हारे साथ थे
तब हमने तुम्हें यिह ऊ़क्म किया कि जो कोई काम किया
११ नचाहे वुह खाना नपावे * हम सुनते हैं कि तुम में से कई एक
क़ानून के बरख़िलाफ़ चलते हैं अपने किसी काम में दस्तअंदाज़
१२ नहीं होते मगर औरों के काम में दख़ल करते हैं * हम
अपने खुदावंद ईसा मसीह़ से ऐसों को ऊ़क्म देते हैं और

उनसे इल्तिमास करते हैं कि वे चुपचाप काम करके अपनी
१३ ही रोटी खावें * और ऐ भाईओ तुम नेक काम करनेमें
१४ कहालत नकरो * पर अगर कोई हमारी बात को जो नामे में
है न माने तो उसे ताक रखो और उस से मिले नरहो ताकि
१५ वुह पशेमान होवे * लेकिन उस से नफ़रत नखाओ बल्कि भाई
१६ जानके नसीहत करो * अब खुदावंद जो सलामती का बानी
है तुम को बहर तौर हमेशः सिलामती बख़्शे खुदावंद तुम
१७ सब के साथ होवे * मेरे दस्तख़त से मुझ पूलूस का सलाम
से वुह हरएक किताब में निशान है उसी तरह मैं लिखता
१८ हूं * हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम सबपर
हो आमीन *

पूलूस का पहला मकतूब तीमताऊस को

पहला बाब

१ पूलूस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का हवारी है जिसे हमारे बचानेवाले ख़ुदा और हमारे उम्मेदगाह ख़ुदावंद ईसा मसीह
२ ने मुक़र्रर किया * तीमताऊस को जो ईमान में फ़रज़ंदि हक़ीक़ी है फ़ज़्ल रहम और आराम हमारे बाप ख़ुदा और हमारे
३ ख़ुदावंद ईसा मसीह की तरफ़ से तुम पर होवे * मैं ने मक़दूनियः जाते वक़्त तुझसे इलतिमास किया था कि अफ़सस में रहियो सो अब भी इलतिमास करता हूं ता कि तू बअज़ों को
४ ज़ुक्म करे कि नई अजीब बातें न सिखलावें * और नक़्लों और उन नसब नामों पर जिनकी इनतिहा नहीं नज़र न करें यिह सब कुछ मुबाहसः का बाइस होता है न कि तरबीयत
५ इलाही ईमानी का * और हुक्म का ख़ुलासः वुह प्यार है

जो दिलि पाक और नीयति नेक और ईमानि वेरिया से होता
६ है * पर बअज़े उनसे मुनहरिफ़ होके बेहूदः गोई की
७ तरफ फिरे हैं * कि शरई मुअल्लिम होने के मुश्ताक़ हैं
और नहीं बूझते कि क्या बातें बोलते हैं और किन बातों का
८ इक़रार करते हैं * हम जानते हैं कि शरीअत अच्छी
है बशरते कि कोई उस से शरअ के तौर पर काम ले *
९ और जाने कि शरअ आदिल के वास्ते नहीं बल्कि बेशरअ
ओ नाफ़रमांबरदार ओ बेदीन ओ गुनहगार ओ नापाक ओ फ़ासिक़
१० ओ पदरकुश ओ मादरकुश और खूनी * और हरामकार
और इग़लामी और बर्दःफ़रोश और दरोग़ गोयओं और
झूठी क़सम खानेवालों के वास्ते और उनके सिवा जो कुछ
उस तअलीम सहीह का मुखालिफ़ होवे उसके वास्ते है *
११ यिह मुबारक अल्लाह की इंजील के जो मुझे सौंपी गई मुवाफ़िक़ है *
१२ और मैं अपने खुदावंद मसीह ईसा का जिसने मुझे कुदरत
दी शुक्रगुज़ार हूं इसवास्ते कि वुह मुझे अमानतदार समझा
१३ और खिदमत पर मुक़र्रर किया * मैं तो आगे कुफ़र
बकनेवाला और ईज़ा दिहिंदः और जब्र करनेवाला था लेकिन
मैं ने रहमत पाई इसवास्ते कि मैं ने बेईमानी से जिहालत
१४ में किया जो किया * और हमारे खुदावंद का फ़ज़ल
ईमान और प्यार समेत जो मसीह ईसा में है बकुसरत ज़ियादः
१५ हूआ * यिह दियानत की बात और बिल्कुल पसंद के

लाइक़ है कि मसीह ईसा गुनहगारों के बचाने को दुनया
१६ में आया और मैं उन सब में बड़ा गुनहगार हूं * पर
मुझ पर इसलिये रहम किया गया कि ईसा मसीह मुझ
बड़े गुनहगार पर रहम करके अपने सबरि कामिल को
ज़ाहिर करे ता कि मैं उनके वास्ते जो उस पर हयाति
१७ अबदी के लिये ईमान लावेंगे नमूनः बनूं * अब मलिकुल
आलमीन के लिये जो फ़ना से मुबर्रा है जिसकी रवीयत
मुहाल है जो ख़ुदाय वहीद ओ हकीम है अबदुलआबाद
१८ इज़्ज़त ओ जलाल है आमीन * ऐ फ़रज़ंद तीमताऊस
मैं तुझे उन नबुव्वतों के मुवाफ़िक़ जो आगे तेरी बाबत की
गईं यिह हुक्म देता हूं तू उन नबुव्वतों के वसीले से अच्छी
१९ लड़ाई लड़ * और ईमान और नेक नीयती से जुदा नहो
कि उस पिछले को कितनों ने छोड़के ईमान की नाओ
२० तोड़ी * उन्हीं में से हमनाइस और सिकंदर हैं जिन्हें
मैं ने शैतान को सौंपा ता कि वे तंबीह पाके कलिमए कुफ़र
न बकें *

दूसरा बाब

१ अब मैं अमर करता हूं कि सब कामों से पहले मुनाजातें
और दुआयें और शिफ़ाअतें और शुक्रगुज़ारियां सारे आदमियों
२ के * और बादशाहों के और उन सब के लिये जो अहलि
इख़्तियार हैं की जावें ता कि हम पूरी सलाहियत और

ख़िज़ार में इतमीनान और आराम से ज़िंदगानी बसर करें * ३ क्यूंकि हमारे नजात देनेवाले ख़ुदा के आगे यही ख़मीदः औ ४ पसंदीदः है * वुह चाहता है कि सारे आदमी बचाये ५ जावें और रास्तबाज़ी की मअरिफ़त तक पहुंचें * इसलिये कि ख़ुदा एक है और ख़ुदा और आदमी में एक आदमी ६ यअने मसीह ईसा वासितः है * जिसने अपने तईं सबको कफ़ारः में दिया चुनांचिः बरवक़्त उस पर गवाही दी गई * ७ मैं मसीह में सच बोलता हूं और झूठ नहीं कहता और मैं उसके लिये मुनादी करनेवाला और हवारी ठहराया गया ८ ता कि ईमान और सदाक़त से ग़ैरों को सिखलाऊं * पस मेरी मरज़ी यिह है कि हरएक मकान में लोग दुआ मांगे ९ और पाक हाथों को बेग़ुस्सः औ बेनिज़ाअ उठावें * और यिह कि रंडियां अपने तईं ऐसी पोशाक से जो हिजाब और संजीदगी से मुज़ैयन हो संवारें न कि गूंधने और सोने १० और मोतियों और क़ीमती लिबास से * बल्कि जैसा रंडियों को जो ख़ुदापरस्ती का इक़रार करती हैं मुनासिब है नेक ११ कामों से संवारें * चाहिये कि रंडी अदब से और कमाल १२ फ़रमांबरदारी से सीखे * और मैं इजाज़त नहीं देता कि रंडी सिखलावे और अपने तईं शौहर परवर करे बल्कि १३ अदब से रहे * क्यूंकि पहले आदम बनाया गया बअद उसके १४ हव्वा * और आदम ने फ़रेब नहीं खाया पर रंडी फ़रेब

१५ खाके गुनहगार हुई * लेकिन वुह जनते वक़्त बचाई जायेगी अगर ईमान और महब्बत और तक़द्दुस पर हिशार से क़ाइम रहें *

तीसरा बाब

१ यिह मुअतबर बात है कि जो कोई इसक़ूफ़ों का काम किया
२ चाहता है वुह अच्छे काम का मुश्ताक़ है * पस चाहिये कि इसक़ूफ़ बेउज़ाम और एक जोरूका शोहर और हुशयार बुर्दबार शाइस्तः और मुसाफ़िर दोस्त और तअलीम देने पर
३ क़ादिर हो * नकि शराब ख़्वार या कोफ़्तः या लालची बल्कि हलीम और मिलनसार हो ज़रका आशिक़ नहो *
४ और अपने घरका बख़ूबी बंदोबस्त करे और कमाल फ़िक्र
५ से लड़कों को हुक्म में रखे * कि अगर कोई अपनेही घर का बंदोबस्त न कर जाने वुह ख़ुदा की कलीसया की
६ ख़बरदारी क्यूंकर करेगा * और नौ जवान नहोवे कहीं वुह गुरूर करके इबलीस की तरह ख़सवी में नपड़े *
७ और वुह चाहिये ऐसा होवे कि ख़ारजी तक उसके हक़ में भली गवाही देवे ता कि वुह मतऊन नहो और इबलीस
८ के फंदे में नफंसे * और इसी तरह चाहिये कि ख़िदमत करनेवाले बुर्दबार हों नकि लपाटे या बादःनोशी में इफ़रात
९ करनेवाले या लालची * और ईमान की रमज़ को साफ़
१० नीयती से याद कर रखें * और ये पहले आज़माये जावें उसके

११ वैसेही अगर वेजुर्म निकलें तो ख़िदमत करें * इसी तरह उनकी जोरूआं बुर्दवार हों न तुहमती ऊशयार और सारी
१२ बातों में दियानतदार होवें * ख़िदमत करनेवाले एक एक जोरू करें और अपने बच्चों और अपने घरों का वख़ूबी
१३ बंदोबस्त करते हों * क्यूंकि जिन्हों ने अच्छी तरह ख़िदमत की सो अपने लिये अच्छा दरजः और उस ईमान में जो
१४ मसीह ईसा पर है बहुत सी जुरअत पैदा करते हैं * मैं इस इरादे से कि तुझ पास जल्द आऊं तुझे ये बातें
१५ लिखता हूं * कि अगर इत्तिफ़ाक़न् देरी होजाय तो तू जानरखे कि ख़ुदा के घर में जो जीते ख़ुदा का कलीसया और रास्ती का सुतून और टेकन है क्यूंकर गुज़रान किया चाहिये *
१६ और यक़ीनन् सलाहियत का सिर्र गैब अज़ीम है ख़ुदा जिसम में ज़ाहिर हूआ रूहसे साबित किया गया फ़िरिश्तों को नज़र आया अगयार में उसको मुनादी की गई दुनया में उस पर ईमान लाये जलाल से ऊपर उठाया गया *

चौथा बाब

१ रूह साफ़ फ़रमाता है कि आख़िरी ज़माने में कितने ईमान से बरगश्तः होंगे कि वे गुमराह करनेवाली रूहों और देवों
२ की तअलीमों से जा लपटेंगे * यिह दरोग़ गोयओं की रियाकारी
३ से होगा जिनका दिल सुन होगया है * और वे निकाह करने से मनअ करेंगे और हुक्म करेंगे कि वुह ख़ुराकों

न खाओ जिन्हें खुदा ने इसलिये पैदा किया कि वे लोग जो ईमानदार और सिद्क़ के आरिफ़ हैं शुक्रगुज़ार होके तनावुल
४ करें * क्यूंकि खुदा की पैदा की हुई हर एक चीज़ अच्छी है और रद होनेके लाइक़ नहीं अगर शुक्र करके खावें *
५ इसवास्ते कि वुह खुदा के कलाम और दुआ से पाक होती है *
६ सो अगर तू भाईओं को यिह बातें याद दिलाये तो तू ईसा मसीह का ख़ादिमि सालिह बना रहेगा यअ्‌ने ईमान की और उस अच्छी तअ्‌लीम की बातों में जिसका तू मुक़ल्लिद है
७ तरबियत याफ़्तः होगा * पर बुढ़ियों कीसी याविह कहानियों से
८ मुंह मोड़ और दीनदारी में रियाज़त कर * बदनी रियाज़त का फ़ाइदः कम है पर दीनदारी सब बातों के वास्ते मुफ़ीद है कि हाल ओ इस्तिक़बाल की ज़िंदगी का वअ्‌दः उसीके लिये
९ है * यिह सुख़न हक़ है और कमाल क़बूलियत के लाइक़
१० है * हमारा मिहनत करना और लअ्‌न तअ्‌न सहना इसलिये है कि हमने ज़िंदे खुदा पर जो सब आदमियों का अलल्ख़ुसूस ईमानदारों का बचानेवाला है तवक्कुल किया
११ है * उन बातों को फ़रमा और सिखा (१२) किसी को अपनी जवानी की तहक़ीर न करने दे बल्कि गुफ़्तार और रफ़्तार और मिहर और रूह और ईमान और इस्मत से ईमानदारों
१३ के लिये नमूनः बन * जबतक मैं आऊं तू पढ़ना नसीहत
१४ करना तअ्‌लीम देना रह * तू उस निअ्‌मत से जो तुझ में

है और तुझे नबुव्वतों की राह से क़सीसों के हाथ रखने की
१५ बरकत से दी गई ग़ाफ़िल न हो * उन बातों में तअम्मुल कर और
उन्हीं का हो रहता कि तेरी तरक़्क़ी सभों पर ज़ाहिर होवे *
१६ आप पर और अपनी तअलीम पर धियान रख और
उन पर क़ाइम रह क्यूंकि तू आपको और उनको जो तेरी
सुनते हैं यिह करके बचायगा *

पांचवां बाब

१ तू किसी बुज़ुर्ग को मलामत न कर बल्कि उसकी इस तरह
मिन्नत कर जिस तरह बापकी करता है और जवानों को
२ यों जैसे भाईओं को * और बुज़ुर्ग रंडियों को यों जैसे
माओं को और जवान रंडियों को यों जैसे बहिनों
३ को कमाल तूहरत से नसीहत कर * रांडों को जो
४ सचमुच रंडें हैं इ़ज़्ज़त दे * अगर कोई रांड लड़कों या
पोतों वाली हो तो वे पहले यिह सीखें कि अपने ख़ानदान
का हक़ अदा करें और बापदादों का हक़ अदा करें क्यूंकि
५ यिह भला और ख़ुदा के आगे पसंदीदः है * और सच्ची रांड
और बेकस वुह है जो ख़ुदा पर मुतवक्किल है और रात
दिन मुनाजातों और दुआओं पर मुदावमत करती है *
६ पर जो ऐ़श ओ इ़शरत करती है सो जीते जी मरगई है *
७ और तू ये अह़काम कर ताकि वे बेमलामत ठहरें *
८ अगर कोई ख़ेशों के और ख़ुसूसन क़बीले के लिये अंदेशः

नकरे तो ईमान से मुनकिर और वेईमान से बदतर है *
९ अगर रांड शुमार में आवे तो सात बरस से कम की नहो
१० और उसने एकही शौहर का मुंह देखा हो * और लोग
उसकी नेकोकारी के मुक़िर्र हों यअ़ने उसने लड़कों की तरवियत
की हो या मुसाफ़िरों को अपने पास उतारा हो या मुक़द्दस
लोगों के पाओं धोये हों या दिलफ़िगारों की मदद की हो
११ और हरएक नेक काम की धन रखती हो * पर जवान
रंडों से काम न रखियो क्यूंकि जब वे मसीह के बरख़िलाफ़
१२ नख़ाकतें जतातियां हैं तो व्याह किया चाहती हैं * और
मुजरिम होती हैं क्यूंकि उन्होंने अगले इअ़तिवार को बातिल
१३ किया * और सिवा उसके वे वेकार होके घर घर दौड़ते
फिरना शिआर करती हैं और फ़क़त वेकार नहीं बल्कि
बकवासी और हर काम में दख़ील होती हैं और वेजा
१४ बात करती हैं * इसवास्ते मेरी मरज़ी है कि जवान रंडियां
व्याह करें और बच्चे जनें और ख़ानःदारी करें और ऐसा
१५ नकरें कि मुख़ालिफ़ लअ़न तअ़न की जगह पावे * क्यूंकि
१६ कई एक अभी शैतान की पैरवी को फिरी हैं * अगर
किसी मोमिन या मोमिनः के रांडें हों तो वही उनकी मदद
करे और कलीसया पर वार नहो ता कि वुह उनको जो
१७ सचमुच रांडें हैं इमदाद करे * और उन बुज़ुर्गों को जिन्हों
ने अच्छी तरह अमानत की ख़ुसूसन उनको जो कलाम और

तअ़लीम में मिहनत करते हैं दूनी जज़ा के लाइक़ जानो *
१८ क्यूंकि किताब यिह कहती है खलयान के बैलका मुंह मत
बांध और यिह कि काम करनेवाला अपनी मज़्दूरी का मुस्तहक़
१९ है * दअ़वी को जो बुज़ुर्ग पर होवे बिग़ैर दो तीन गवाहों
२० के मुसल्लम मत जान * गुनह्‌गारों को सब के साम्हने मुलज़िम
२१ कर ता कि औरों के लिये ग़ैरत हो * मैं खुदा और खुदावंद
ईसा मसीह और बरगुज़ीदः फिरिश्तों के आगे यिह तक्लीफ़
करता हूं कि उन बातों को बिग़ैर तरफ़दारी के हिफ़्ज़ कर और
२२ किसी काम में एक तरफ़ माइल मत हो * हाथ किसी पर
जल्द न रख और न दूसरों के गुनाहों में शरीक हो अपने
२३ तईं पाक रख * और अब तू सिर्फ़ पानी न पिया कर
बल्कि अपने मिअ़्दः और अक्सर सुस्तियों को रिआ़यत करके
२४ थोड़ी शराब पी * बअ़्ज़े आदमियों के गुनाह आपसे आप
ज़ाहिर हैं और अ़दालत में अव्वल पहुंचते जाते हैं
२५ और बअ़्ज़ों के गुनाह पीछे ज़ाहिर होते हैं * इसी
तरह से नेक काम उनके आगे ज़ाहिर हैं और वे काम
२६ जो और तरह के हैं छिप नहीं सकते *

छठा बाब

१ चाहिये कि जितने चाकर जूये के नीचे हैं अपने खाविंदों
को इज़्ज़त कामिल के लाइक़ जानें ता कि खुदा के नामकी
२ और तअ़लीम की तकफ़ीर नकी जावे * और वे जिनके

ख़ादिंद ईमानदार हैं उन्हें इसवास्ते कि भाई हैं हक़ीर नजानें बल्कि पेशतर बंदगी करें इसलिये कि वे ईमानदार और अज़ीज़ और निअ़मत में शरीक हैं ये बातें सिखला
२ और तरग़ीब कर * और अगर कोई दूसरी तअ़लीम देता है और हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के कलामि सहीह को और उस तअ़लीम को जो सलाहियत के मुनासिब है क़बूल
४ नहीं करता * वुह घमंड करता है और कुछ नहीं जानता पर उसे वहसों और तकरारों की बीमारी है जिनसे हसद और क़ज़ियः और बदगोईयां और बदगुमानियां *
५ और उन लोगों के से मुबाहिसे जिनकी अ़क़्ल फ़ासिद होगई है और जो सदाक़त से ख़ाली हैं और गुमान करते हैं कि सलाहियत
६ नफ़अ़ही पैदा होते हैं तू वैसों से परे रह * सलाहियत तो क़िनाअ़त
७ के साथ बड़ा नफ़अ़ है * क्यूंकि हम दुनया में कुछ नलाये ज़ाहिर
८ है और हम उस से कुछ लेजा नहीं सकते हैं * पस अगर हमने
९ ख़ुरिश और पोशिश पाई हमारे लिये बस है * कि वे जो दौलतमंद हूआ चाहते हैं सो इमतिहान और फंदे में और बहुतसी मुहमल और ज़ियांकार ख़ाहिशों में पड़ते हैं जो आदमियों को हलाकत और तबाही के दरया में ग़र्क़ करतीं
१० हैं * क्यूंकि ज़रदोस्ती सारी बुराईयों की जड़ है और बअ़ज़े उसके इश्तियाक़ में ईमान की राहसे भटक गये और ग़मोंके
११ अनवाअ़ से छिद गये * पर तू ऐ मर्दे ख़ुदा उन चीज़ों से भाग

और सिद्क़ और सलाह और ईमान और मिहर और सबर
१२ और फ़रोतनी का पीछा कर * ईमान की अच्छी कुश्ती
कचकचा के हयाति अबदी लेले जिसके लिये तू बुलाया
गया और तूने बहुतन से गवाहों के आगे भला इक़रार किया
१३ है * मैं ख़ुदा के जो सारी चीज़ों को जिलाता है और
मसीह ईसा के हुज़ूर जिसने पनतयूस पीलातूस के आगे
१४ भला इक़रार किया तुझे अमर करता हूं * कि तू उस
हुक्म को बेदाग़ और बेइलज़ाम हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह
१५ के ज़हूर तक हिफ़्ज़ कर * और वुह बवक़्त ज़हूर करेगा
जो मुबारक और वाहिद क़ादिर बादशाहों का बादशाह
१६ और ख़ुदावंदों का ख़ुदावंद है * बक़ा फ़क़त उसीको है वुह
उस नूर में रहता है जिस तक कोई नहीं पहुंच सकता
और उसे किसी इनसान ने न देखा न देख सकता है उसी को
१७ हुरमत और क़ुदरत अबदी है आमीन * इस जहान के
दौलतमंदों को हुक्म कर कि आली मिज़ाज न बनें और दौलति
बेसबात पर तकयः न करें बल्कि जीते ख़ुदा पर जिसने हमें
सब कुछ कसरत से दिया ता कि हम कामयाब हों तवक्कुल
१८ करें * और नेकोकार और भले काम करके दौलतमंद और
१९ सख़ावत पर तैयार और बांटने पर मुस्तइद होवें * और
आयंदः के लिये एक भली बुनयाद पैदा कर रखें ता कि वे
२० हयाति अबदी पर क़ाबिज़ होवें * ऐ तीमताऊस अमानत

को हिफ़ाज़त से रख और उन बेहूदः बातों से जो बेदीनी की हैं और उस चीज़ के मुआरिज़ः जिसका बिलअक्स इल्म
२१ नाम है मुंह फेर ले * कि बअज़े उस इल्म का इक़रार करके ईमान से कनिया किये हैं फ़ज़ल तुझ पर होवे आमीन *

पूलूस का दूसरा मकतूब तीमताऊस को

पहला बाब

१ पूलूस की तरफ़ से जो उस हयात के वअदः के लिये जो मसीह ईसा में है ख़ुदा की मरज़ी से ईसा मसीह का हवारी
२ है * फ़रज़ंद अज़ीज़ तीमताऊस को फ़ज़ल रहम और आराम बाप ख़ुदा और हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा की तरफ़
३ से होवे * शुक्र ख़ुदा को मैं जिसकी बंदगी नसलन नसलन् साफ़ नीयती से करता आया हूं कि मैं अपनी दुआओं में
४ रात दिन बिलानाग़ा तेरा ज़िक्र करता हूं * मैं तेरे अश्कों को याद करकरके तेरी मुलाक़ात का मुश्ताक़ हूं ता कि मैं सरूर
५ से मअमूर हो जाऊं * मुझे तेरा बेरिया अक़ीदः याद है जुस

तो पहले तेरी दादी लवीस का और तेरी मा यूनीका का
६ था और मुअतक़िद हूं कि वुह अब तेरा है * इस सबब
से मैं तुझे फिर फिर कहता हूं तू ख़ुदा की उस मौहबत को
जो मेरा हाथ रखने से तुझमें पैदा हुई फिरके सुलगाओ *
७ क्यूंकि ख़ुदाने हमको डरपोकनी रूह नहीं दी बल्कि कुव्वत
८ और महब्बत और इअतिदालवाली रूह हमें दी है * इसवास्ते
तू हमारे ख़ुदावंद की गवाही से मुझसे जो उसका असीर
हूं शरमिंदः नहो बल्कि ख़ुदा की कुदरत से इंजील के
९ दुखों में शरीक हो * कि उसने हमें बचाया और तक़द्दुस
में बुलाया न हमारे कामों के सबब से बल्कि अपनी तक़दीरि
ख़ास से और उस निअमत से जो मसीह ईसा के तुफ़ैल
१० से अज़ल में हमें दी गई * और अब हमारे बचाने वाले ईसा
मसीह के ज़हूर से ज़ाहिर हुई कि उसने मौत को नेस्त किया
११ और हयात ओ बक़ा को इंजील से रोशन किया * और
मैं उसके लिये मुनादी करनेवाला और हवारी और अजनबियों
१२ का मुअल्लिम ठहराया गया हूं * और उसही लिये मैं यिह
दुख पाता हूं लेकिन मैं ख़जल नहीं इसवास्ते कि मैं उसे
जिस पर मैं ईमान लाया हूं जानता हूं और मुअतक़िद
हूं कि वुह मेरी अमानत को उस दिन तक महफ़ूज़ रख
१३ सकता है * तू उन सहीह बातों को जो तूने मुझसे सुनीं
नमूनः बना रख और उस ईमान और महब्बत में जो मसीही

१४ ईूसवी है आदम रह * तो अपनी भली अमानत को रूहि कुद्स के वसीले से जो हम में बसता है महफ़ूज़ रख *
१५ तू यिह जानता है कि सब जो आसया में थे जिन में से फ़जल्लस और हरमजनास हैं मुझसे फिर गये हैं *
१६ खुदावंद अनीसफ़रस के घराने पर रहम करे क्यूंकि उसने बकुसरत मुझे ताज़ः दम किया और मेरी ज़ंजीर से शरमिंदः
१७ नहूआ * बल्कि उसने रूम में मुझे कोशिश से ढूंढा और
१८ पाया * खुदावंद उसे तौफ़ीक़ दे कि वुह खुदावंद से उस दिन रहमत पावे और जो खिदमत गुज़ारियां उसने शहरि अफ़सस में कियां तूही उन्हें बिहतर जानता है *

दूसरा बाब

१ ऐ मेरे फ़रज़ंद तू उस फ़ज़्ल की कुमक से जो मसीह
२ ईसा में है मज़बूत हो * और उन मेरी बातों को जो तूने बकुसरते गवाहों की मअरिफ़त सुनीं हैं ऐसे अमानतदारों
३ के सुपुर्द कर जो औरों को सिखा सकें * पस तू ईसा
४ मसीह के बड़े सिपाही की मानंद दुख सह * कोई जंग करनेवाला अपने तईं मआश के शग़लों में नहीं अटकाता
५ ता कि सरि लशकर उस से खुश हो * और अगर कोई कुश्ती करने में रहे तो हार नहीं पाता मगर जब कि आईन के
६ मुवाफ़िक रहे * चाहिये कि मिहनत कश दिहक़ान फलों
७ का हिस्सः पहले ले * जो बातें मैं कहता हूं तू उन को

सो रख और खुदावंद तुझे सब बातों की समझ देवे *
८ याद कर कि ईसा मसीह मुरदों में से जी उठा और दाऊद
९ के तुख्म से था * चुनांचिः मेरी बशारत का मज़मून है और मैं
उसीके लिये बदकार के मानंद यहां तक दुख पाता हूं कि बंद
१० में हूं पर खुदा का कलाम बंद नहीं होता * सो मैं
बरगुज़ीदः लोगोंके लिये सभी कुछ सहता हूं ता कि वुह
नजात जो ईसा मसीह में है जलालि अबदी समेत उनको
११ मिले * यिह यक़ीन सुखन है कि अगर हम उसके साथ मरें
तो हम उसके साथ सलतनत करेंगे अगर हम उसका इनकार
१२ करें तो वुह भी हमारा इनका करेगा * अगरचिः हम बेईमान
होजावें वुह अमानतदार बना है वुह आप अपना इनकार
१३ कर नहीं सकता * तू यिह बातें याद दिला और खुदावंद
के साम्हने यिह ख़बर दे कि वे जंगि सुखन नकरें कि उस से
कुछ हासिल नहीं मगर यिह कि सुननेवाले अंधे होजायें *
१४ कोशिश करके तू अपने तईं खुदा का मक़बूल और ऐसा
कारीगर जो खिजालत कश न हो और कलामि सिद्क़ का रास्तीसे
१५ शुरुअ करनेवाला कर देखला * पर बेदीनी की पूचगोईओं से
परहेज़ कर क्यूंकि वे आख़िर को बेदीनी के दरजो में तरक्की
१६ करेंगे * और उन का कलाम सर्जि खूरः की तरह खाता चला
१७ जायगा और उन में से हमनाए और फ़लीतस हैं * वे
यिह कहके कि क़ियामत होचुकी सच्चाई से मुनहरिफ़

१८ छूटे और बअ़ज़ों को ईमान से बरगश्तः करते हैं * बावजूद उसके ख़ुदा की बुनयाद उस्तवार है और उस पर यिह मुहर है कि ख़ुदावंद उन्हें जो उसके हैं पहचानता है पर चाहिये कि हरएक जो मसीह का नाम लेता है बदकारी से दूर
१९ रहे * सो बड़े घरमें फ़क़त सोने रूपेही के बरतन नहीं बल्कि चोबी और गिली भी होते हैं और बअ़ज़े इस्तिअ़माल
२० में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं और बअ़ज़े ज़लील * इसलिये अगर कोई अपने तईं उनसे साफ़ पाक करे तो वुह इ़ज़्ज़त का बरतन और मुमताज़ और ख़ाविंद के पास अ़ज़ीज़ और
२१ हरएक अच्छे मसर्फ़ के लिये मुहेया होगा * जवानी की शहवतों से गुरेज़ कर उनसब के साथ जो दिलि पाक से ख़ुदावंद का नाम लेते हैं सिद्क़ ओ ईमान ओ लुत्फ़ ओ
२२ आराम की पैरवी कर * पर अहमक़ानः और नामुफ़ीद मुनाज़िरों से परहेज़ कर कि तू जानता है वे मुफ़सदी
२३ पैदा करते हैं * और मुनासिब नहीं कि ख़ुदावंद का बंदः फ़साद बरपा करे बल्कि सबसे मिलनेवाला और सिखलाने पर
२४ मुस्तइद और दुखों का सहनेवाला होवे * और उन्हें जो मुक़ाबलः करते हैं फ़रोतनी से तअ़लीम दे कि शायद उन्हें ख़ुदा तौबः बख़्शे ता कि वे सिद्क़ का इअ़तिराफ़ करें *
२५ और वे जिन्हें शैतान ने शिकार किया है ता कि उसकी मरज़ी पर चलें होशयारी से उसके फंदे से छूटें *

तीसरा बाब

१ और तू यिह जान रख कि आख़िरी ज़माने में औक़ात
२ मुशकिल होंगी * आदमी ख़ुद ग़रज़ और ज़रदोस्त और
लाफ़ज़न् और मग़रूर और कुफ़्र बकनेवाले और मा बाप के
३ नाफ़रमांबरदार और नाशुक्र गुज़ार और बेदियानत * और
बेदर्द और बेवफ़ा और मुफ़तरी और नापरहेज़गार और बेरहम
४ और अच्छे लोगों से गुरेज़ां और नमकहराम * और सरकश
और फूलनेवाले और ख़ुदा से अशरत को ज़ियादः दोस्त
५ रखनेवाले * और बसूरत दीनदार पर दीनदारी की तासीर
६ के मुनकिर होंगे तू उनसे दूर रह * क्यूंकि उन में से वे हैं जो
घरों में घुसा करते हैं और उन छिछूड़ी रंडियों को जो
गुनाहों तले दबगई हैं और रंग बरंग शहवतों के साथ खैंची
७ जाती हैं * और हमेशः तअ़लीम पाती हैं पर सिद्क़
की मअ़रिफ़त तक पहुंच नहीं सकतीं असीर करते हैं *
८ और जिस तरह यानास और यम्बरस ने मूसा की मुख़ालफ़त
की उसी तरह वे भी सिद्क़ के मुख़ालिफ़ हैं बद दानिश
इनसान और ईमान से मुनहरिफ़ हैं और ईमानी बातों में
९ बेइमतियाज़ होके सचाई की मुख़ालफ़त करते हैं * पर वे आगे
नबढ़ेंगे इसवास्ते कि उन की हिमाक़त सभों पर ज़ाहिर होजायेगी
१० जिस तरह उनकी हुई * पर तूने मेरी तअ़लीम और गुज़रान
और तदबीर और ईमान और सबर और प्यार और तहम्मुल *

११ और तसदीअ़ और दुखों को जो अन्ताकियः और इकोनियूं
और लुस्त्र में मुझपर पड़े एक एक करके ख़ूब मअ़लूम किया
और मैं ने कैसे कैसे दुख उठाये और ख़ुदावंद ने मुझे उन
१२ सब से नजात दी * बल्कि सबके सब जो ईसा मसीह़ में
१३ सलाह़ियत से गुज़रान किया चाहते हैं तसदीअ़ पावेंगे * पर
ख़बून और दग़ाबाज़ आदमी फ़रेब देके और फ़रेब खाके
१४ बदी में तरक़्क़ी करते जायेंगे * पर तू उन बातों पर जो
तूने सीखीं और यक़ीन जानीं क़ाइम रह कि तू यिह जानता
१५ है तू किस से सीखा * और तू लड़काई से मुक़द्दस किताबों
से वाक़िफ़ है वे तुझे ऐसी दानिश बख़्शेंगी कि तू मसीह़
१६ ईसा पर ईमान लाके नजात पायगा * सारे दफ़्तर ख़ुदादाद
हैं और तअ़लीम के और इलज़ाम के और रास्ती के और
१७ सिदक़वाली तरबियत के वास्ते मुफ़ीद हैं * ता कि मर्दि ख़ुदा
कामिल हो और हरएक नेक काम में आरास्तगी पैदा करे *

चौथा बाब

१ पस मैं ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह़ के आगे जो ज़ुहूर
करके अपनी बादशाहत में ज़िंदों और मुरदों की अ़दालत
२ करेगा ज़ुक्म पहुंचाता हूं * कि तू कलाम की मुनादी कर और
बवक़्त और बेवक़्त काम में कमाल ह़िल्म से समझा समझाके
३ इलज़ाम दे मलामत और तरग़ीब कर * क्यूंकि वक़्त आयगा
कि जब वे सह़ीह़ तअ़लीम की बरदाश्त नकरेंगे पर

कान खुजलाते हुऐ अपने ख़ातिर ख़्वाह मुअल्लिम पर मुअल्लिम
४ बुलायेंगे * और कानों को सच्चाई की तरफ़ से फेरके अफ़सानों
५ की सिम्त फेरेंगे * अब तू सारी बातों में बेदार हो दुख उठा
बशीरों पर जो कुछ वाजिब है तू किया कर अपनी ख़िद्मत
६ को पूरा कर * क्यूंकि मैं अब बहा चला जाता हूं मेरी रिह्लत
७ का वक़्त आ पहुंचा है * मैं ने जंग अह्सन किया मैं दौड़कर
८ चुका मैं ने ईमान को रखलिया * बाक़ी सिद्क़ का ताज मेरे
लिये धरा हुआ है सो ख़ुदावंद जो सच्चा हाकिम है उस दिन मुझे
देगा और फ़क़त मुझे नहीं बल्कि उनसब को जो उसके ज़हूर
९ के मुश्ताक़ हैं * तू कोशिश कर ता कि मेरे पास जल्द
१० आवे * क्यूंकि दीमा ने उस जहान को पसंद करके मुझे
तरक किया और तसलुनीक़ी को चला गया क्रीसकनस ग़लतियः
११ में और तीतस दलमतियः में गया * लूक़ा अकेला मेरे
साथ है तू मरक़ुस को अपने साथ लेआ क्यूंकि वुह इस
१२ ख़िद्मत में मेरे काम का है * मैं ने तख़िकुस को अफ़सस भेजा
१३ तू वुह जुब्बः जिसे मैं ने तरवस में क़ारपुस के यहां छोड़ा और
१४ किताबें ख़ुसूसन् वुह चरमी औराक़ लेता आओ * सिकंदर ठठेरे ने
मुझसे बहुत बदी की ख़ुदावंद उसके कामों के मुवाफ़िक़ उससे
१५ सलूक करे * उस से तू भी परहेज़ कर क्यूंकि उसने हमारी
१६ बातों की बहुत मुख़ालफ़त की * मेरे पहले जवाब में कोई
मेरा रफ़ीक़ नथा सारे मुझे छोड़के चलते रहे उसका हिसाब

१७ उन्हें देना नपड़े * पर खुदावंद मेरे साथ रहा और उसने मुझे ज़ोर बख़शा कि मेरी मअरिफ़त से सब बातों की मुनादी को जावे और अजनबी उम्मतें सुनें और मैं बबर के मुंह से
१८ छुड़ाया गया * और खुदावंद मुझे हरएक ज़बून काम से बचावेगा और अपनी आसमानी बादशाहत तक महफ़ूज़ रखेगा उसका
१९ जलाल अबदुलआबाद है आमीन * परसक़ा और अक़ूला
२० और अनीसफ़रस के घराने को सलाम कह * आरस्तस क़ुरनतस में रहा तरफ़मस को मैं ने मीलीतस में बीमार छोड़ा *
२१ शिताबी कर कि तू जाड़े से पेशतर पहुंचे यूबूलस और पूदीस और लीनस और क़लूदिया और सारे भाई तुझे सलाम
२२ कहते हैं * खुदावंद ईसा मसीह तेरी रूह के साथ होवे फ़ज़ल तुमपर रहे * आमीन *

पूलूस का मकतूब तीतस को

पहला बाब

१ पूलूस की तरफ़ से जो ख़ुदा का बंदः है और ईसा मसीह़ का ह़वारी हूआ ताकि ख़ुदा के बरगुज़ीदः बंदे ईमान लावें और उस सच्चाई का जो सलाह़ आमेज़ है इअतिराफ़ किया जाय * और ह़याति अबदी की उम्मैदवारी हो कि
२ ख़ुदा ने जो सादिक़ है पेश अज़ दौरः ज़मानि ह़याति अबदी का वअदः किया * और निदा करनेवाले की मअरिफ़त
३ अपने कलाम को वक़्त पर आशकारा किया और मुनादी करने का काम ख़ुदा के इरशाद से जो हमसब का बचानेवाला है मेरे सुपुर्द किया * तीतस को जो ईमानि आम की रूह़
४ से फ़रज़ंदि ख़ास है फ़ज़ल रह़म और आराम बाप ख़ुदा की और उस हमारे बचानेवाले ख़ुदावंद ईसा मसीह़ की तरफ़ से

५ तेरे लिये होवे * मैं ने तुझे इसवास्ते क्रीता में छोड़ा ताकि तू बाक़ी चीज़ें मुरत्तब करे और बुज़ुर्गों को शहर बशहर जैसा
६ मैं ने तुझे हुक्म किया है बर पा करे * पर ऐसों को जो बे इलज़ाम और एक एक जोरू रखते हैं और उन के लड़के ईमानदार और ईस्राफ़ की मलामत से मुबर्रा और सुखनशनौ
७ होवें * क्यूंकि चाहिये कि असकूफ़ अज़बसकि ख़ुदा का ख़ानसामान है वे इलज़ाम हूए न कि ख़ुदराय या ग़ुस्सःवर या
८ बादःपरस्त या मुश्तज़न् लालची * बल्कि मुसाफ़िर दोस्त नेकोंका महब्बत मुअतदिल मिज़ाज सादिक़ दियानतदार परहेज़गार हो*
९ और इस सुख़न से जिस की तअलीम मुस्तक़ीम है मुतमस्सिक हो ताकि वुह सहीह तअलीम से तसल्ली देसके और ख़ुसूमत करनेवालों
१० को इलज़ाम देने पर क़ादिर होवे * क्यूंकि बहुत से नाफ़रमांबरदार और बेहूदः गो और दग़ाबाज़ हैं ख़सूसन् वे जो अहलि ख़तनः
११ हैं * सो उनका मुंह बंद किया चाहिये वे एक क़लील नफ़अ के वास्ते नामुनासिब बातें सिखलाके सारे घरनों को ज़ेर ज़बर करते
१२ हैं * उनमें से एक ने जो उन का नबी था कहा कि क्रीती हमेशः
१३ झूठे और बुरे दरिंदे और शिकम हैं * यिह गवाही सच है इसवास्ते तू उन्हें दुरश्ती से मलामत कर ताकि वे ईमान में सहीह
१४ होवें * और यहूदियानः अफ़सानों पर और ऐसे आदमियों के
१५ हुक्मों पर जो सच्चाई को मड़ोड़ते हैं कान न धरें * पाक लोगों के लिये सब कुछ पाक है और आलूदः गान के और वे ईमानों के

लिये कुछ पाक नहीं बल्कि उन की नीयतें और तीनतें आलूदः
१६ हैं * ख़ुदा के पहचान्ने का इक़रार करते हैं पर अपने कामों की राह
से उस का इनकार करते हैं और लाइक़ि नफ़रत और नाफ़रमांबरदार
हैं और किसी नेक काम के लिये पसंदीदः नहीं

दूसरा बाब

१ पर तू वे बातें कह जो सहीह तअ़लीम के मुनासिब हैं *
२ ताकि अधेड़ मर्द होशयार संजीदः बुर्दबार हों और ईमान और
३ प्यार और सबर में सहीह * और उसी तरह से अधेड़ रंडियां भी
अख़लाक़ि मुक़द्दसानः रखें और तुहमत करनेवालियां और
दायमुलख़मर नहोवें बल्कि अच्छी बातें सिखलानेवाली हों *
४ और जवान रंडियों को ऐसी संजीदगी बख़्शें कि वे अपने ख़समों
५ और बच्चों को प्यार करें * और चतुरी और इस्मतवालियां और
गोशःगीर और ख़ुश मिज़ाज और अपने ख़समों के कहे में
६ होवें तो ख़ुदा के कलाम की बदगोई नकी जावे * तू जवानों को
७ भी नसीहत कर कि वे संजीदगी पैदा करें * और सारी बातों में
पहले अपने तईं नेक कामों का नमूनः कर दिखला और तेरी
८ तअ़लीम बे फ़साद और बा विक़ार बा इख़लास * और तेरा कलाम
सलीम हो जो लाइक़ि इलज़ाम नहो ताकि जानिबि मुख़ालिफ़
९ तुम्हारे ख़ुल्स की बात बनाकर शरमिंदः हो * बंदे अपने ख़ाविंदों
के महकूम और सारी बातों में उन की रज़ा जो हूं नमुकाबरः गो *
१० और न ख़ियानत कार बल्कि तमाम नेक दियानती ज़ाहिर करनेवाले

हूं ताकि वे हमारे बचानेवाले ख़ुदा की तअ़लीम को सारी बातों में
११ रौनक़ देवें * क्यूंकि ख़ुदा की नजात और फ़ज़्ल सारे आदमियों
१२ पर ज़ाहिर हो * जो हमें तरबियत करता है के हम बेदीनी
और दुनयावी शहवतों से बेज़ार होके उस जहान में संजीदगी
१३ और सदाक़त और दीनदारी से गुज़रान करें * और उस मुबारक
उम्मेद के और बुज़ुर्ग ख़ुदा और अपने बचानेवाले ईसा मसीह के
१४ ज़हूरि जलील के मुन्तज़िर रहें * कि उसने आप तो हमारे
बदले दिया ताकि वुह हमें मोल लेकर सारी बदकारियों से छुड़ावे
और उम्मते ख़ास को जो नेकोकारी में बजान ओ दिल मसरूफ़
१५ होवें अपने लिये ज़ाहिर करे * यिह बातें कह नसीहत कर
और तमाम इक़तिदार से इलज़ाम दे कोई तेरी तहक़ीर न करे *

तीसरा बाब *

१ उन्हें याद दिला कि सलातीन और अहकाम के महकूम और
फ़रमांबरदार होवें और हरक़िसम की नेको कारी पर मुस्तइद रहें *
२ और किसी की बदगोई न करें और सुलहख़्वाह और हलीम
३ और सारे आदमियों से पूरी फ़रोतनी करें * क्यूंकि हम भी आगे
बेवक़ूफ़ सरकश फ़रेबखानेवाले और गूनागून शहवतों और
अ़शरतों के बंदे थे और बदख़्वाही और हसद से गुज़रान करते थे
और लायक़ि कराहत और दूसरों से नफ़रत रखनेवाले थे *
४ पर जब हमारे बचानेवाले ख़ुदा का लुत्फ़ और प्यार ज़ाहिर हूआ
५ तब उसने हम को * न सदाक़त के अ़मलों से जो हमने किये

वल्कि अपनी रहमत के वसवव नए जनम के ग़ुसल के और उस
६ रूहि क़ुद्स की नौसाज़ी के वाइस बचाया * जिसे उसने हमारे
बचानेवाले ईसा मसीह की मअरिफ़त से हम पर वइफ़रात डाला*
७ ताकि हम उसके फ़ज़्ल से रास्तवाज़ ठहर के वारिस बनके हयाति
८ जावेदानी के उम्मेदवार हों * यिह सुख़न हक़ है और मैं चाहता
हूं कि तू इन वातों के कहने में मुस्तक़िल रहे ताकि वे जो ख़ुदा पर
ईमान लाये हैं अंदेशः करके नेकोकारी में मशग़ूल रहें ये चीज़ें
९ भली और आदमियों के वास्ते नाफ़िअ हैं * और अहमक़ानः
मुबाहसों और ज़िक्र नसव से और क़ज़ियों और उन जंगों से जो
शरअ की वावत हों परहेज़ करे कि ये वेनफ़्अ और वेहूदः
१० हैं * उस आदमी से जो लोगों को तफ़रक़ः में डालता है व भ्द
उसके कि तू उसे दो मरतवः पंद देले किनारः कर जा *
११ तू जानता है कि वैसा आदमी फिर गया है और अपने तईं
१२ मुजरिम ठहरा के किनारः करता है * जब मैं अरतमास या तख़िकस
को तेरे पास भेजूं तब जल्दी कर कि तू मेरे पास नीक़फ़लस में
आवे क्यूंकि मैंने अज़्म किया है कि जाड़ा वहीं काटूं * फ़क़ीह
१३ ज़ेना और अफ़लूस को जल्द आगे भेज वे किसी चीज़ के
१४ मुहताज न होवें * और हमारे लोग भी फ़िक्रि मआश के लिये
१५ अच्छे पेशे इख़तियार करें ता कि वे वेवर न रहें *सव जो मेरे
साथ हैं तुझे सलाम कहते हैं उन को जो हम से महब्बत ईमानी
रखते हैं सलाम कह तुम सव के साथ फ़ज़्ल होवे आमीन *

पूलूस का मकतूब फ़लीमान को

पहला बाब

१ पूलूस की जो मसीह ईसा का क़ैदी और भाई तीमताऊस की तरफ़ से फ़लीमान को जो महबूब और हमारा हम
२ ख़िदमत है * और प्यारी अफ़या और अरख़पस हमारे साथ के सिपाही और उस कलीसया को जो तेरे घरमें है *
३ फ़ज़ल और आराम हमारे बाप ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा
४ मसीह की तरफ़ से तुम पर होवे * मैं तेरी महब्बत को जो सारे मुक़द्दसों से है और ईमान को जो ख़ुदावंद ईसा
५ पर है दरयाफ़्त करके * हमेशः अपनी दुआओं में तुझे याद
६ करके ख़ुदा की शुक्रगुज़ारी करता हूं * कि तेरी शिरकत ईमानी यिह तासीर है कि सारी नेकियां जो तुम ईसा
७ मसीह के वास्ते करते हो मुसल्लम हैं * क्यूंकि हम तेरी

महब्बत से बहुत ख़ुश और मुतमईन हैं कि तुझसे ऐ भाई
८ मुक़द्दस लोगों का जी आसाइश पाता है * सो अगरचिः मुझे
मसीह में इख़तियार कामिल है कि तुझे जो मुनासिब
९ होवे सो हुक्म करूं * लेकिन मुझे यिह पसंद आया कि
महब्बत की राहसे इलतिमास करूं क्यूंकि मैं पूलूस बुढ़ा
१० और अब ईसा मसीह का क़ैदी हूं * सो मैं अपने फ़रज़ंद
की बाबत जो क़ैदख़ाने में मेरे लिये पैदा हूआ यअ़ने अनीसमस
११ की बाबत अरज़ करता हूं * वुह आगे तेरेलिये नामुफ़ीद था
१२ पर अब तेरे और मेरे लिये बहुत मुफ़ीद हूआ * सो मैं ने
उसे भेजा है अब तू उसको यअ़ने मेरे लख़्तिजिगर को क़बूल
१३ कर * और मैं चाहा था कि उसे अपनेही पास रखूं
ता कि वुह तेरे इवज़ इंजीली ज़ंजीरों में मेरी ख़िदमत
१४ करे * पर तेरी मरज़ी बिग़ैर मैं ने नचाहा कि कुछ करूं
१५ ता कि तेरा नेककाम नजबरसे बल्कि रज़ामंदी से होवे * वुह
शायद तुझसे इसलिये थोड़ी मुद्दत जुदा रहा कि तू उसे
१६ फिर पाके हमेशः अपने पास रखे * न बंदे की तरह बल्कि
बंदे से बिहतर यअ़ने भाई की तरह जो मेरा बहुत अज़ीज़
है पस क्या वुह जिसम की राहसे और ख़ुदावंद के सबबसे
१७ तेरा महबूब नहोवेगा * सो अगर तू मुझे शरीक जानता है
१८ तो उसको उसतरह क़बूल कर जिस तरह मुझको * अगर
उसने तेरा कुछ नुक़सान किया है या कुछ तेरा धरता है तू

१९ उसे मेरे नाम लिख रख * मैं पूलूस अपने हाथ से लिखता हूं कि मैं आप अदा करूंगा मैं तुझसे नहीं कहता
२० कि मेरा क़र्ज़ जो तुझपर है तू है * ऐ भाई मिहर कर मैं तुझसे ख़ुदावंद में नफ़अ पाऊं मेरे कलेजे को ख़ुदावंद
२१ में सुखदे * मैं ने तेरी इताअत को यक़ीनी जानकर तुझे लिखा और मैं जानता हूं कि तू उस से जो मैं ने कहा
२२ ज़ियादः करेगा * उसके सिवा एक मसकन मेरे लिये तैयार कर कि मुझे यिह उम्मेद है कि मैं तुम्हारी दुआओं के
२३ वसीले से तुम्हें दिया जाऊं * अपफ़रास जो मसीह ईसा
२४ के वास्ते क़ैद में मेरा शरीक है * और मरक़ुस और अरसतरख़स और दीमा और लूक़ा जो मेरे हमख़िदमत हैं तुझे सलाम
२५ कहते हैं * हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की निअमत तुम्हारी रूह के साथ होवे आमीन *

पूलुस का मकतूब इ़बरानियों को

पहला बाब

१ ख़ुदा जिसने नबियों की मअ़रिफ़त आबा से बार बार और
२ तरह बतरह तकल्लुम किया * उस आख़िरी ज़माने में हमसे
बेटे की मअ़रिफ़त बोला यिह वुह है जिसे उसने सारी
चीज़ों का मालिक किया और जिससे उसने दोजहान बनाये *
३ वुह अ़क्स बलकि उसकी शौकत की शान और उसकी कुनह का
नक़्श है और अपनी क़ुव्वत के सुख़न से सारी चीज़ों को
संभालता है आपको देके हमारे गुनाहों को महो करके
जनाबि अक़्दस के दहनी तरफ़ बलंद आसमान पर जा बैठा *
४ वुह फ़िरिश्तों से उस क़दर बड़ा है जिसक़दर उसने मीरास में
५ उनके नामोंसे अफ़ज़ल नाम पाया * उसने फ़िरिश्तों में से
किसके हक़ में कभी यिह कहा कि तू मेरा बेटा है मैं

आज तेरा बाप हूआ और फिर यिह कि मैं उसका बाप
६ हूंगा और वुह मेरा बेटा होगा * और जब पहलौंटे को दुनया
में लाया तब कहा कि ख़ुदाके सारे फ़िरिश्ते उसको परस्तिश
७ करें * और वुह फ़िरिश्तों के हक़ में कहता है कि वुह
अपने फ़िरिश्तों को रूहें और अपने ख़ादिमों को आग का
८ शुअलः करता है * पर बेटे से कहता है कि ऐ ख़ुदा तेरा
तख़्त अबदुलआबाद है तेरी बादशाहत का असा हक़ का
९ असा है * तूने तो सिदक़ से दोस्ती और बेइनसाफ़ी से
दुशमनी की है इसवास्ते ख़ुदा ने हां तेरे ख़ुदाने फ़रहत
के रोग़न से तुझको तेरे शरीकों से ज़ियादः मुअत्तर किया *
१० और यिह कि ऐ ख़ुदावंद तूने इबतिदा में ज़मीन की नेव
११ बनाई और सब आसमान तेरे हाथों के बने हूए हैं * वे नेस्त
होजायेंगे पर तू बाक़ी है वे सब पोशाक की मानंद पुराने
१२ होंगे * और तू उन्हें लबादः की मानंद लपटेगा और वे
मुबद्दल होजायेंगे पर तू ऐकही है और तेरे बर्स नाक़िस
१३ नहोंगे * और उसने फ़िरिश्तों में से कौनसे को कभी कहा
तू मेरे दहने हाथ बैठ जबतक कि मैं तेरे दुशमनों को
१४ तेरे पांओं का फ़र्श पाअंदाज़ करूं * क्या वे सब ख़िदमत गुज़ार
रूहें नहीं जो नजात के वारिसों की ख़िदमत के लिये
भेजी गईं *

दूसरा बाब

१ इसवास्ते चाहिये कि हम उनबातों से जो हमने सुनीं खूब
२ पिलके रखें ता नहोवे कि हम उसे खोदें * क्यूंकि हरगाह
कलाम जो फ़िरिश्तों की मअरिफ़त कहा गया मुस्तहकम
हूआ और हर एक उदूल और नाफ़रमांबरदारी ने वाजबी
३ जज़ा पाई * तो हम क्यूंकर बचेंगे अगर इतनी बड़ी नजात
से ग़ाफ़िल होवें कि उस नजात के मज़मून ने इबतिदा में
खुदावंद के मअरिफ़त इश्तिहार पाया और उनके कहे से
४ जिन्हों ने सुना हमारे नज़दीक साबित हूआ * और
खुदा ने भी उनके साथ गवाही दी कि उसने अजाइब ओ
ग़राइब और मुखतलिफ़ मुअजिज़ों और रूहि क़ुदस की
गुनागून बखशिशों को जो उसने अपनी खुशी से तक़सीम किया
५ जिलवःगर किया * सो उसने जहानि आयंदः को जिसकी
बाबत हम बोलते हैं फ़िरिश्तों के क़ब्ज़ में नहीं किया *
६ पर किसी ने कहीं साफ़ कहा कि आदमी क्या चीज़ है
जो तू उसे याद करता है और आदमी का बेटा क्या है
७ कि तू उसके लिये फ़िक्र करता है * तूने उसको थोड़ी
मुद्दततक फ़िरिश्तों से दरजः में पस्त किया तूने उस को जलाल
और इज़्ज़त का ताज दिया और उसको अपने हाथों के
८ मसनूआत पर बाला ठहराया * तूने सारी चीज़ें उसके ज़ेरपा
कियां जब उसने सारी चीज़ें उसके ज़ेरपा कियां उसने कोई

चीज़ न छोड़ी जो उसके ज़ेरपा नहो अब हम नहीं देखते
९ कि सारी चीज़ें उसके नीचे रखीगईं हैं * मगर हम देखते
हैं कि ईसा जिसने मौत के रंज की बदौलत इज़्ज़त के जलाल
का अफ़सर पाया थोड़ी मुद्दत तक फ़िरिश्तों से दरजः में पस्त
हूआ ता कि वुह ख़ुदा के फ़ज़्ल से हरएक आदमी के इवज़
१० मौत का मज़ा चखे * क्यूंकि उसको जिस से और जिसके
सबब से सारी चीज़ें हैं यिह अच्छा लगा कि वुह जब
बहुत से बेटों को जलाल में लाये उनके नजात देनेवाले पेशवा
११ को अज़ियतें दिलाके कामिल करे * क्यूंकि वुह जो तक़द्दुस
बख़्शता है और वे जो तक़द्दुस पाते हैं सब एकही के हैं
उस सबब से वुह उन्हें भाई कहने से शरमिंदः नहीं है *
१२ कि वुह यिह कहता है में अपने भाइओं को तेरे नामकी
ख़बर दूंगा और कलीसया के दरमियान तेरी मद्‌ह को गाऊंगा *
१३ और फिर यिह कि मैं उस पर तवक्कुल करूंगा फिर यिह
१४ कि देख मैं और लड़के जो ख़ुदा ने मुझे दिये हैं * पस अज़्बस्
कि लड़के जिस्म और ख़ून में शरीक हैं उसने भी उनके
साथ बराबर हिस्सः लिया ता कि वुह मौत के वसीले से उसको
जिस पास मौत का ज़ोर है यअ़ने इबलीस को नाचीज़ करे *
१५ और उन्हें जो मौत के डर से ज़िंदगी भर असीरी में गिरिफ़्तार थे
१६ छुड़ावे * कि उसने तो फ़िरिश्तों को नहीं पकड़ा बल्कि इबराहीम
१७ की नसल को पकड़ा * इसवास्ते ज़रूर था कि वुह सारी बातों में

अपने भाईओं की बराबर हो जावे ता कि वुह ख़ुदा के मुआमलों
में दर्दमंद और मुतदैयन सरदारि काहिन होके लोगों के गुनाहों
१८ को मुआफ़ करवाये * क्यूं कि जब उस ने आपही इमतिहान में
पड़के दुख पाया तो वुह उनकी जो इमतिहान में पड़ते हैं
मदद कर सकता है *

तीसरा बाब

१ पस ऐ मुक़द्दस भाईओ जो आसमानी तलब में बाहम शामिल हो
तुम उस पर जो उस तरीक़ में जिसका हम इक़रार करते हैं रसूल
और सरदारि काहिन है यअने मसीह ईसा पर नज़र करो *
२ चुनांचिः वुह उसके आगे जिसने उसे मुक़र्रर किया अमानतदार है
३ जिस तरह मूसा उसके सारे घर में अमानतदार था * और घर
से घर बनानेवाले की इज़्ज़त जिस क़दर अफ़ज़ूद है उसी क़दर
४ उस की इज़्ज़त मूसा से ज़ियादः है * कि हर घर का
ऐक बनानेवाला है पर जिसने सारी चीज़ें बनाईं सो ख़ुदा है *
५ और मूसा उसके सारे घर में ख़ादिम की तरह अमानतदार था
ता कि उन चीज़ों पर जिस का बयान इस्तिक़बाल पर मौक़ूफ़ था
गवाही दे पर मसीह उस के घर में ऐसा अमानतदार था जैसा
६ बेटा होता है * और उस का घर हम हैं बशरते कि हम उस
जुरअत ओ तफ़ाख़ुर को जो उम्मैद की बाबत है मज़बूत थामे
७ रहें * इसवास्ते जैसा रूहि क़ूदस कहता है आज अगर तुम
८ उस की आवाज़ सुनो * तुम अपने दिलों को सख़्त न करो जैसा

९ ग़ुस्सः करते हुए इम्तिहान के रोज़ दश्त में गिरते थे * अगर उस वक़्त तुम्हारे बापदादों ने चालीस बरस तक मुझे आज़माया और
१० इम्तिहान किया और मेरे कामों को देखा * इसवास्ते मैंने उस पुश्त के लोगों से ख़फ़गी की और कहा कि यिह दिल में हमेशः बहके
११ हुए हैं और उन्हें ने मेरे रस्ते न पहचाने * सो मैंने अपने ग़ुस्सः में क़सम खाके कहा कि ये मेरे आराम में दाख़िल न होंगे *
१२ ऐ भाईओ ख़िबरदार न होवे कि तुम में से किसी के सीने में ख़बून और बे ईमान दिल हो जो तुम को ख़ुदाय हैइ की
१३ हुज़ूरी से फेर दे * पर जबतक कि आज का ज़िक्र किया जाता है तुम हर रोज़ आपको बाहम नसीहत करो ता न होवे कि तुम में
१४ से कोई गुनाह से दग़ा पाके सख़्त हो जावे * क्यूंकि हम मसीह में शरीक हुए हैं बशर्ते कि हम उस इअ्तिमाद को जो
१५ इब्तिदा में था इन्तिहातक मज़बूत थामे रहें * जबतक यिह कहा जाता है कि आज अगर तुम उस की आवाज़ सुनो तबतक तुम अपने दिलों को ऐसा जैसा ख़फ़गी के वक़्त करते थे सख़्त करो *
१६ कि बअ्ज़ों ने सुनके उसे आज़ुर्दः किया लेकिन न उन सभों ने
१७ जो मूसा की हिदायत से मिस्र से निकले * और उसने जिनसे साथ चालीस बरस तक ख़फ़गी की क्या उनसे नहीं जिन्हों ने गुनाह
१८ किया और उनके अअ्ज़ा बियाबान में पड़े रहे * और उसने जिनकी बाबत क़सम खाके कहा कि यिह मेरे आराम में दाख़िल न
१९ होंगे मगर उनही की बाबत जो ईमान न लाये * सो हम

देखते हैं कि वे बेईमानी ही के सबब से दाख़िल न हो सके *

चौथा बाब

१ अब बस कि हासिल यिह हूआ कि उस के आराम में दाख़िल होना मौजूद है तो चाहिये कि हम तरसां रहें ता न होवे कि
२ कोई एक तुम में से पहुंचने न पावे * क्यूंकि हमारे लिये भी खुश ख़बरी की मुनादी की गई जैसा उन के लिये की गई पर कलाम जो उन्हों ने सुना उन के लिये मुफ़ीद न हूआ इसवास्ते कि वुह
३ सुन्ने वालों के पास ईमान आमेज़ न था * कि हम जो ईमान लाये हैं आराम में दाख़िल होते हैं चुनांचिः उसने कहा पस मैं ने गुस्सः करके क़सम खाई कि वे मेरे आराम में दाख़िल न होवेंगे
४ अगरचिः मस्नूआत इबतिदाय आलम से बने * कि उसने सातवें दिन की बाबत कहीं यूं कहा कि खुदा ने अपने सारे काम करके
५ सातवें दिन आराम किया * लेकिन उस मक़ाम में फिर कहता
६ है कि वुह मेरे आराम में दाख़िल न होवेंगे * कि कई एक उस में दाख़िल होते हैं और वे जिन के वास्ते खुशख़बरी की मुनादी
७ आगे की गई वे ईमानी के बसबब दाख़िल न हूए * पस वुह एक और दिन का ज़िक्र करता है कि इतनी मुद्दत के बअ़द दाऊद की मअ़रिफ़त कहता है जैसा मज़कूर हूआ कि आज अगर तुम उस की आवाज़ सुनो तो अपने दिलों को सख़्त मत करो *
८ क्यूंकि अगर ईसा ने उन्हें आराम में दाख़िल किया होता तो वुह,
९ बअ़द उस के दूसरे दिन का ज़िक्र न करता * हासिलि कलाम

१० आराम खुदा के लोगों के वास्ते है * क्यूंकि जो कि अपने आराम में दाखिल हूआ उसने अपने काम करके आराम किया जैसा कि
११ खुदा ने अपने काम करके किया * इसवास्ते आओ हम कोशिश करें कि हम उस आराम में दाखिल होवें ता ऐसा न होवे कि
१२ कोई बे ईमानी के सबब से उन के मानंद गिर पड़े * क्यूंकि खुदा का कलाम जिंदः और मूग्रिर और दोधारी तलवार से तेज़तर है और जान और रूह को और बंदबंद और गूदे को जुदा जुदा करके गुज़र जाता है और तमन्नाओं और तसव्वुरों को जो दिल में
१३ हैं जांचता है * और कोई मख़लूक़ उस से पोशीदः नहीं पर उस की नज़रों में जिस से हम को काम है सारी चीज़ें उरियां और
१४ ज़ाहिर हैं * पस अज़बस कि हमारे लिये एक बड़ा सरदारि काहिन जो आसमान से पार गुज़र गया यअ़ने खुदा का बेटा ईसा
१५ है अपने इक़रार को थामे रहें * क्यूंकि हमारा ऐसा सरदारि काहिन नहीं जो हमारी सुस्तियों में हमारा हमदर्द न होसके बल्कि सारी बातों में गुनाह के सिवा बराबर आज़माया गया *
१६ इसवास्ते आओ हम फ़ज़ल के तख़्त के पास बे परवा आवें ता कि हम पर रहमत होवे और निअ़मत को वक़्त पर मददगार हो पावें *

पांचवां बाब

१ कि हरएक सरदारि काहिन आदमियों के वास्ते खुदा की ख़िदमत पर आदमियों ही में से मुन्तख़ब होके मुऐयन होता है ता कि

गुनाहों की मुआफ़ी के लिये नज़्रें और क़ुरबानियां लावे * २ और नादानों और गुमराहों के साथ मुलायमत करने पर क़ादिर हो ३ इसवास्ते कि उसे भी तो कमज़ोरियों ने घेर रखा है * सो उस सबब से फ़रज़ है कि वुह जिस तरह लोगों की तरफ़ से लाता है ४ अपनी तरफ़ से भी क़ुरबानियां लावे * और इक्सान न अपने इख़्तियार से उस इज़्ज़त का ताज लेता है बल्कि हारून की मानंद ५ वुह हो पाता है जिसे ख़ुदा ने तलब किया है * उसे तरह मसीह भी सरदारि काहिन होने की इज़्ज़त पर आप से क़ाबिज़ नहीं हूआ बल्कि जिस ने उसे कहा कि तू मेरा बेटा है मैं ६ आज तेरा बाप हूआ उसे यिह दिया * चुनांचिः वुह दूसरे मक़ाम में कहता है कि तू मल्की सिद्क़की तरह अबदी काहिन है * ७ और वुह जिन दिनों में जिसम रखता था बशिद्दत ला लेकरके और आंसू बहा बहाके उस के आगे जो उसे मौत से बचाने पर क़ादिर था दुआएं और मिन्नतें करके अपने तक़वे के बाइस से ८ मक़बूल हूआ * वुह अगरचिः बेटा था पर उन दुखों से जो उसने ९ पाये इताअत सीखी * और वुह मुकम्मल होकर अपनी फ़रमांबरदारों १० के लिये नजाति अबदी का बाइस हूआ * वुह ख़ुदा के ख़िताब से मल्की सिद्क़ की सफ़ में से सरदारि काहिन कहलाया * ११ उस की बाबत हमारी बातें बहुत हैं जिनका बयान मुशकिल है १२ इसवास्ते कि तुम्हारे कान भारी हैं * तुम्हें तो चाहिये था कि तुम उस वक़्त के मुअल्लिम हो सो तुम हनोज़ मुहताज हो कि कोई

तुम्हें फिर सिखलावे कि कलामि इलाही के पहले उसूलात क्या हैं
तुम उस लाइक़ हो कि तुम्हें दूध पिलाय न कि सख़ चीज़ें
१३ खिलाय * क्यूंकि जो कोई कि शीरख़्वार है सो रास्तबाज़ी के कलाम
१४ में न तजरिबःकार है क्यूंकि वुह बच्चः है * पर सख़ खाने
कामिलों के वास्ते हैं यअ़्ने उन के वास्ते जिन के हवास मश्क़ से
से मुसद्दद हूए हैं कि नेक ओ बद में इमतियाज़ करें *

छठा बाब

१ इसवास्ते हम कलामि मसीह की इबतिदा को छोड़कर कमाल की
तरफ़ पिले चले जावें और मुरदः कामों से पशेमान होने की और
२ खुदा पर ईमान लाने की * और तअ़्लीम के ग़ुसलों और हाथ
रखने और हशर मुरदगान की और अदालत अबदी की नेव
३ दोबारः नडालें * और इनशा अल्लाह हम यिह करेंगे *
४ क्यूंकि वे जो एक बार मुनव्वर हूए और आसमानी बख़शिश का
५ मज़ः चख गये और रूहि क़ुद्स में शरीक हूए * और खुदा की
भली बात और आनेवाले जहान के क़ुदरतों का मज़ः उठागये *
६ अगर गिर जायें तो मुमकिन नहीं कि उन्हें फिर तोबः करवाके
नया बनाये इसलिये कि वे खुदा के बेटे को दोबारः अपने लिये
७ सलीब पर खैंचते हैं और रुसवा करवाते हैं * क्यूंकि जो ज़मीन
उस मेंह को जो उस पर बार बार बरसता है पीती है और ऐसी
सबज़ियां जो किश्तकार करने वालों के लिये मुफ़ीद हैं जनती
८ है खुदा से बरकत पाती है * पर जो कांटे और ऊंट कटारे उगाती

फेंकती है ना मक़बूल और नज़्दीक है कि लअ़नती हो और उस
९ की इनतिहा जलना है * लेकिन ऐ भाईओ अगरचिः हम यों
बोलते हैं पर तुम्हारे ह़क़ में ऐसी बातों के मुअ़तक़िद हैं जो
१० बिह्तर और नजात वाली हैं * क्यूंकि ख़ुदा बे इनसाफ़ नहीं है
जो वुह तुम्हारे कामों को और उस मह़ब्बत की मिह़नत को जो
तुम उस के नाम पर मुक़द्दस लोगों की ख़िदमत करकरके दिखलाते
११ हो भूल बैठे * हमारी आरज़ू यिह है कि तुम में से हरऐक ऐसा
जिद्द ओ जिह्द करे कि इनतिहा तक उस की उम्मेद वासिक़ रहे*
१२ ता कि तुम सुस्त नहो बल्कि उन के पैरौ हो जो ईमान और सबर
१३ की राह से वअ़्दों के वारिस हूए * कि ख़ुदा ने इब्राहीम से वअ़्दः
करके किसी को अपने से बड़ा न पाया जिस की क़सम खाता तो
१४ अपनी क़सम करके कहा * यक़ीनन् मैं तुझे बहुत बहुत बरकतें
१५ दूंगा और तुझे कसीरुल औलाद करूंगा * और उसने सबर करके
१६ उस चीज़ को जिस के लिये वअ़्दः हूआ था पाया * और क़सम
जो कोई चीज़ साबित करने को की जाय तो सारे निज़ाअ़ को
१७ आख़िर देती है * पस ख़ुदा उस इरादे से कि वअ़्दः के वारिसों पर
दलीलि क़वी से साबित करे कि उस की मशीयत में तबदील बे
१८ दख़ल है क़सम को दरमियान लाया * ता कि उन दो चीज़ों से
जो बे तबदील हैं और मुमकिन नहीं कि ख़ुदा उन में झूठा
निकले हम जो दौड़े हैं कि उस उम्मेद को जो साम्हने रखी गई
१९ है पकड़ लेवें इतमीनानि कामिल पावें * वुह उम्मेद हमारी जानका

लंगर है जो साबित और मुस्तहिकम है और पर्दे के अंदर दाखिल
१० होता है * और वहां हमारा पेशरौ ईसा जो मलकी सिद्क़ की
तरह अबद के लिये सरदारि काहिन हूआ हमारे वास्ते दाखिल
हूआ *

सातवां बाब

१ यिह मलकी सिद्क़ शलीम का बादशाह और खुदा तआला
का काहिन था जिसने इबराहीम का जब वुह बादशाहों के
मारके फिर आता था इस्तिक़बाल किया और बरकत बख्शी *
२ उसको इबराहीम ने सब चीज़ों का दसवां हिस्सः गुज़राना वुह
पहले अपने नामके मअनों के मुवाफ़िक़ रास्ती का बादशाह है
और फिर शाहि शलीम हूआ यअ़ने सलामती का बादशाह *
३ यिह बेपदर बेमादर और मजहूलुन्नसब जिसकी उम्र का
आग़ाज़ और ज़िंदगी की इनतिहा नथा खुदा के बेटे के मानंद
४ था काहिनि दायमी हूआ * अब ग़ौर करो यिह क्याही
बड़ा था जिसको रईसुलआबाय आया इबराहीम ने ग़नीमत के मालों
५ दसवां हिस्सः दिया * अब लूई के उन बेटों को जो
किहानत का काम पाते हैं हुक्म है कि लोगों से यअ़ने
अपने भाइओं से अगरचिः वे इबराहीम के पुश्त से पैदा हूए
६ शरअ़ के मुवाफ़िक़ दसवां हिस्सः लेवें * पर उसने बावजूदे कि
उसको नसब उनकी नसब से जुदा है इबराहीम से दसवां
हिस्सः लिया और उसको जिस से वअ़दे किये गये दुआ दे

७ ख़र दी * और बिलाशक ओ शुबह छोटा बड़ेसे बरकत
८ पाता है * और यहां मरनेवाले आदमी दसवां हिस्सः लेते
हैं पर वहां वही लेता है जिसके हक़ में यिह गवाही
९ दी जाती है कि जीता है * और लूई ने भी तो जो
१० दसवां हिस्सः लेता है इबराहीम के वसीले से दिया * क्यूंकि
जिसवक्त मलकी सिद्क़ ने इस्तिक़बाल किया लूई अपने बाप
११ की सलब में मौजूद था * अगर तकमील लूई वाली किहानत
से थी कि उस से उम्मत ने शरीअत पाई तो फिर क्या
इहतियाज थी कि दूसरा काहिन मलकी सिद्क़ की तरफ़ से
१२ मबऊस हो न हारून की तरफ़ से बुलाया जावे * अगर किहानत
१३ टलजाय तो बज़रूरत शरअ भी टलजाती है * कि वुह
जिसकी बाबत ये बातें कही जातीं हैं दूसरे फ़िरक़े में से
है जिस में से किसी ने कुरबानगाह की ख़िदमत नहीं की *
१४ ज़ाहिर कि हमारा ख़ुदावंद यहूदा से तुलूअ हूआ और
उस फ़िरक़े की किहानत की बाबत मूसा ने कुछ नकहा *
१५ और ज़ाहिर ओ अज़हर है कि दूसरा काहिन मलकी सिद्क़
१६ के मुशाबह मबऊस होता है * जो न हुक्मि जिसमानी
की शरीअत के साथ बल्कि हयाति बेज़वाल की कुदरत
१७ के साथ बना है * के वुह गवाही देता है कि तू
मलकी सिद्क़ की तरफ़ में अबद तक काहिन है *
१८ पस अगला हुक्म इसलिये कमज़ोर और बेफ़ाइदः है बुतलान

१९ फ़क़ीर है * क्यूंकि शरअ़ ने कुछ मुकम्मल न किया पर वुह उम्मेदि अफ़ज़ल को जिस से हम ख़ुदा से नज़्दीक होते हैं
२० पहुंचा देनेवाली थी * और अज़्बसकि वुह बिग़ैर उसके कि क़सम खाई जाये मुक़र्रर नहूआ वे तो बिग़ैर क़सम खाये
२१ मुक़र्रर होते हैं * पर यिह साथ क़सम खानेके उसी से काहिन बना जिसने उस से कहा कि ख़ुदावंद ने क़सम खाई और तबदील नकरेगा तू मलको सिद्क़ की सफ़ में अबदतक
२२ काहिन है * सो इसवास्ते ईसा एक बिहतर वसीले का
२३ ज़ामिन हूआ * सिवा उस के वे जो काहिन होते चले आये हैं बहुत हैं इसवास्ते कि वे मौत के सबब दुनया
२४ में रह नसके * पर यिह इसवास्ते कि अबतक रहता है कहानति
२५ लायज़ाल का मालिक है * इसलिये वुह उन्हें जो उसके वसीले से ख़ुदा के पास आते हैं इनतिहा तक बचा सकता है क्यूंकि वुह उनकी शिफ़ाअ़त के लिये हमेशः जीता है *
२६ कि ऐसा सरदारि काहिन हमारे शायां था कि वुह पाक बेतक़सीर नामलूस गुनहगारों से जुदा और आसमानों से
२७ बाला है * और सरदारि काहिनों की मानंद मुहताज नहीं कि वुह पहले अपने और फिर लोगों के गुनाहों के वास्ते क़ुरबानी लावे क्यूंकि उसने आपको गुज़रान के यिह एक
२८ बार किया * कि शरअ़ आदमियों को जो कमज़ोर में काहिन ठहराती है पर क़सम वाला कलाम जो शरअ़ के बअ़्द था

बेटे को जो अबदतक मुकम्मल है काहिन ठहराता है *

आठवां बाब

१ उनबातों मे जो कहीगई हैं यिह ग़रज़ है कि हमारा ऐसा सरदारि काहिन है जो जनाबि अक़्दस के दहने को
२ आसमान पर बैठा है * जो मुक़द्दस कामों का और उस मसकनि हक़ीक़ी का ख़ादिम है जिसे ख़ुदावंद ने खड़ा
३ किया है नकि आदमी ने * कि हरऐक सरदारि काहिन इसवास्ते मुक़र्रर होता है कि नज़रें और क़ुरबानियां गुज़राने सो ज़रूर है कि उस पास भी गुज़राननेको कुछ हो *
४ अगर वुह ज़मीन पर होता तो काहिन नहोता इसवास्ते कि काहिन तो हैं जो शरअ के मुवाफ़िक़ क़ुरबानियां लाते
५ हैं * और उस जगह जो आसमानी चीज़ों का नमूनः और ज़िल है ख़िदमत करते हैं चुनांचिः मूसा को जब वुह मसकन बनाने पर था इलहाम से ख़बर दीगई कि वुह कहता है देख तू उस नक़्शः के मुवाफ़िक़ जो तुझे कोह
६ पर देखलाया गया सब चीज़ें बना * अब ज़ाहिर है कि उसे अफ़ज़ल ख़िदमत मिली कि वुह वसीक़े अफ़ज़ल का वासितः हूआ और वुह वसीक़. उन वअदों के साथ जो अफ़ज़ल
७ हैं मुक़र्रर हूआ * क्यूंकि अगर वुह पहला वसीक़ः बेऐब
८ होता तो दूसरे की जगह की तलाश नहोती * सो वुह उनका ऐब बताकर कहता है कि ख़ुदावंद फ़रमाता है देख

वे दिन आते हैं कि मैं इसराईल के घराने और यहूदा के
९ ख़ानदान के लिये एक नया वसीक़ः ठहराऊंगा * और यिह
उस वसीक़े के मानंद नहोगा जो मैं ने उनके आबा के साथ
उस दिन जब मैं ने उनका हाथ पकड़ा कि उन्हें मिसर से
निकाल लाऊं ठहराया इसवास्ते कि वे मेरे वसीक़ः पर क़ाइम
१० नहीं रहे और मैं ने उनका अंदेशः नकिया * ख़ुदावंद
ने यों फ़रमाया है बल्कि यिह वुह वसीक़ः है जो मैं
इसराईल के घराने को उनदिनों केबअ़द दूंगा कि मैं अपने क़ानूनों
को उनके फ़हमों में डालूंगा और उन्हें उनके दिलों की लाहों पर
११ लिखूंगा और मैं उनका ख़ुदा हूंगा और वे मेरे लोग होंगे * और
कोई अपने हमसाये को और कोई अपने भाईओं को नकहेगा कि
तू ख़ुदा को पहचान क्यूंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे पहचानेंगे *
१२ मैं उनकी बुराइयों पर रहम करूंगा और उनके गुनाहों और
१३ उनकी बेदीनी को कभी याद नकरूंगा * और जब उसने
कहा कि एक नया करता है उसने पहले को पुराना किया
और जो पुराना और कुहना हूआ सो फ़नाके नज़दीक होताहै *

नवां बाब

१ सो पहले वसीक़ः के लिये इबादत के रसूम थे और एक दुनयवी
२ मुक़द्दस मकान * एक मसकन बनाया गया उसके पहले दरजे में
शमअ़दान और चौकी और नज़र की रोटियां नहीं यिह मसकन
३ मुक़द्दस कहलाता है * और दूसरे पर्दे के अंदर वुह मसकन था

४ जो अक़्दस कहलाता है * उस में तिला का बख़ूरदान था और
वसीक़े का संदूक़ जो सरासर सुनहरा था उस में ऐक तिलाई ज़र्फ़:
मन से भरा हूआ और हारून का असा जिस में शाख़ फूटी थी और
५ वसीक़: की लौहें थियां * और उस के ऊपर जलाली करोबीम थे
जो रहमत के तख़्त पर सायः अफ़गन थे उस की तफ़सील अब कुछ
६ ज़रूर नहीं * ख़ैर जब यिह चीज़ें इस तौर से तैयार हो चुकीं तब
पहले मसकन में सब काहिन बरवक़्त दाख़िल होके ख़िदमत
७ बजालाते थे * पर दूसरे में सिर्फ़ सरदारि काहिन बरस में ऐकबार
लहू साथ लेके जिसे वुह अपनी और लोगों की सहवी ख़ताओं के
८ लिये गुज़रानता है * और रूहि क़ुद्स यिह ईमां करता था कि
जिस वक़्त पहला मसकन क़ाइम था मसकनि अक़्दस की राह
९ हनोज़ न खुली थी * वुह मसकन उसवक़्त तक ऐक मिसाल है
कि अबतक उस में नज़रें और क़ुरबानियां पहुंचाई जातीं हैं जो
१० इबादत करने वालों को कामिल दरून न कर सकीं * कि वे सिर्फ़
ख़ुर ओ नोश और अनवाअ के ग़ुसलों से और जिसमानी रसमों से
मुतअल्लिक़ थीं और यिह फ़क़त जब तक हैं कि इस्लाह का
११ वक़्त नहीं पहुंचा * पर जब मसीह आनेवाले हसनात का सरदारि
काहिन होआया तब उस मसकन के वसीले से जो बुज़ुर्गतर और
कामिलतर है और दस्तकारी से नहीं बना यअने उस मअमूरे में
१२ से नहीं * न बकरों और बछड़ों के ख़ून से बल्कि अपने ही
लहू के साथ मक़ामि अक़्दस में ऐक बार दाख़िल हूआ कि उस

१३ ने हमारे वास्ते अबदी ख़लासी हासिल की * क्यूंकि हरगाह बैलों और बकरों का लहू और बछया की राख जो नापाकों पर छिड़की जाय इतना तक़द्दुस बख़शती है कि जिसम पाक हो जाता है *
१४ तो कितना ज़ियादः ओह मसीह का ख़ून जिसने अपने तईं बे ऐबी के साथ रूहि अबदी से ख़ुदा के आगे क़ुरबानी किया तुम्हारी तीनत को उन कामों से जो मकरूह हैं पाक करेगा ता कि तुम जीते
१५ ख़ुदा की इबादत करो * और वुह इसी वास्ते नये वसीक़े का वासितः है ता कि जब उन ख़ताओं की कफ़्फ़ारत के लिये जो पहले वसीक़े में थीं मौत आवे तो वे जो बुलाये गये हैं मीरासि अबदी के वअ़दे
१६ को हासिल करें * क्यूंकि जहां वसीक़ः है वहां उसकी मौत जिसकी
१७ तरफ़ से वसीक़ः है ज़रूर है * क्यूंकि वसीक़ः मौत से उस्तवार होता है कि उस में कुछ क़ुव्वत नहीं जबतक कि वुह जिस की तरफ़ से
१८ वसीक़ः है जीता है * इसवास्ते पहला वसीक़ः भी बिग़ैर ख़ून के
१९ मुक़र्रर नहीं किया गया * कि जब मूसा ने सारी उम्मत को शरअ़ के सब अहकाम कह सुनाये तब बछड़ों और बकरों का ख़ून पानी और सुर्ख़ ऊन और ज़ूफ़ा के साथ लेकर उस किताब पर और
२० सारे लोगों पर छिड़क के कहा * कि यिह उस वसीक़े का ख़ून है
२१ जो ख़ुदा ने तुम्हारे लिये ठहराया * और उस ने उसी तौर से मसकन पर और उन चीज़ों पर जो ख़िदमति रब्बानी में इस्तिअ़माल
२२ की जाती हैं ख़ून छिड़का * और सारी चीज़ें मगर बअ़ज़े शरअ़ में ख़ून से पाक की जाती हैं और लहू बहाये बिग़ैर मग़फ़िरत नहीं

२३ होती * सो ज़रूर था कि आसमानी चीज़ों के नमूने ऐसी चीज़ों
से और आसमानी चीज़ें ऐसी क़ुरबानियों से जो उन से अफ़ज़ल
२४ हैं पाक की जायें * कि मसीह उस मक़ामि मुक़द्दस में जो हाथों
से बनाया गया और हक़ीक़ी चीज़ों का नमूनः है दाख़िल नहीं
हुआ बल्कि आसमानही में दाख़िल हुआ ता कि वुह ख़ुदा के
२५ हुज़ूर हमारे वास्ते हाज़िर होवे * पर ज़रूर न था कि वुह आप
को बार बार गुज़राने जैसा सरदारि काहिन मक़ामि मुक़द्दस में
२६ बरस बरस दूसरे के लहू के साथ दाख़िल होता है * इसलिये कि
अगर ऐसा होता तो ज़रूर था कि वुह बिनाय आलम से बार
बार मरा करे पर अब वुह आख़िरी ज़माने में ऐक बार ज़ाहिर
२७ हुआ ता कि अपनी क़ुरबानी से गुनाह को नेस्तकरे * और जैसा
सारे आदमियों के लिये ऐक बार मरना और बअद उस के अदालत
२८ मुक़र्रर हुई है * ऐसा ही मसीह ऐक बार क़ुरबानी होकर ता कि
वुह बहुतों के गुनाहों को उठावे दूसरे बार बिग़ैर गुनाह के देखा
जायगा ता कि उन को जो उस की राह तकते हैं नजात देवे *

दसवां बाब

१ अब शरअ जिस में आनेवाली अच्छी चीज़ों का परछावां है न
कि उन चीज़ों की हक़ीक़ी सूरत उन क़ुरबानियों की तकरार से
जो वे बरस बरस हमेशः लाते हैं उन को जो वहां आते हैं
२ मुकम्मल कभी नहीं कर सकती * नहीं तो क्या लोग क़ुरबानी
गुज़रानने से बाज़ न रहते इसवास्ते कि इबादत करनेवाले ऐक बार

३ पाक होके आपको गुनहगार न जानते * बल्कि क़ुरबानियां बरस
४ बरस गुनाहों को याद दिलाती हैं * मुहाल है कि बैलों और
५ बकरों का ख़ून गुनाहों को मिटावे * इस लिये वुह दुनया में
आते हूए कहता है कि तू ने ज़बह और क़ुरबानी को पसंद न
६ किया और मेरे लिये एक बदन तैयार किया * तू उन क़ुरबानियों
से जो जलके राख हूईं और उन क़ुरबानियों से जो गुनाहों के
७ वास्ते हैं राज़ी न था * तब मैं ने कहा कि देख मैं आता हूं किताब
के तूमार में मेरे लिये लिखा है ता कि ऐ ख़ुदा मैं तेरी मरज़ी
८ पर चलूं * ऊपर जब कहा कि तूने ज़बह और नज़र और उन
क़ुरबानियों की जो जलके राख हूईं और उन क़ुरबानियों की जो
गुनाहों के लिये हैं ख़्वाहिश न की और उन का राज़ी न हूआ
९ और यही चीज़ें शरअ़ के मुवाफ़िक़ गुज़रानी जाती हैं * तब
उसही ने कहा कि ऐ ख़ुदा देख मैं आता हूं ता कि तेरी मरज़ी
पर चलूं वुह पहले को अज़्ल करता है ता कि दूसरे नसबकरे *
१० और उस मरज़ी के सबब से हम जो ईसा मसीह के बदनके एक
११ बारः क़ुरबानी होने से आये हैं मुक़द्दस हूए हैं * और हरएक
काहिन हर रोज़ खड़ा रह के ख़िदमति इलाही करता है और
एकही नौअ़ की क़ुरबानियां जो गुनाह को दूर नहीं कर सकती
१२ हैं अकसर गुज़रानता रहता है * लेकिन वुह एकही क़ुरबानी
गुनाहों के वास्ते गुज़रान के ख़ुदा के दहने अबदतक बैठ रहा *
१३ और बाक़ी इनतिज़ार करता है कि उस के दुशमन उस के पाओं

१४ पाअंदाज़ हूं * क्यूंकि उसने एकबार की नज़र देने से उन्हें जो
१५ मुक़द्दस होते जाते हैं अबद के लिये मुकम्मल किया * और रूहि
क़ुद्दस भी हमारे पास गुवाही देता है क्यूंकि जब उस ने पहले
१६ कहा था * कि ख़ुदावंद फ़रमाता है यिह वुह वसीक़ः है जो मैं
उन दिनों के बअ़द उन्हें दूंगा कि मैं अपनी शरओं को उन के फ़हम
में डालूंगा और उन्हें उन के दिलों में लिखूंगा तब यिह भी
१७ कहा * और उन के गुनाहों और बे शरईओं को फिर याद न
१८ करूंगा * अब जहां कहीं उस की मग़फ़िरत है वहां गुनाह के
१९ वास्ते क़ुरबानी गुज़रानना नहीं * पस ऐ भाइओ जब कि हम को
इजाज़त मिली कि मक़ामि मुक़द्दस में ईसा के लहू से दख़ल
२० करें * इसवास्ते कि उस ने एक नई और जीती राह अपने
२१ जिसम के पर्दे को फाड़ के मुक़र्रर की * और हमारे लिये बड़ा
२२ काहिन है जो ख़ुदा के घर का मुख़्तार है * तो आओ हम
सच्चे दिल और ईमानि कामिल से अपने ख़बीस नीयत पर आब
पाशी करके नज़दीक आवें और अपने बदनों को साफ़ पानी से
२३ ग़ुसल दिलवा के * अपनी उम्मेद के इक़रार को बे जुंबिश थामें क्यूंकि
२४ वुह जिसने वअ़दः किया है अमीन है * और हम एक दूसरे
पर ग़ौर करें ता कि हम एक दूसरे को उल्फ़त और नेकोकारी
२५ की तरग़ीब करें * न ऐसा जैसा बअ़ज़ों की आदत है हम इकट्ठे
होने से बाज़ रहें बल्कि एक दूसरे को तह़रीक करें और यिह
बदरजे अतम ज़रूरी क्यूंकि तुम उस दिन को देखते हो कि चला

२६ आता है * क्यूंकि अगर हम बअद उस के कि मअरिफ़त हक़ हासिल कर चुके क़सदन् गुनाह करते हैं तो फिर कोई क़ुरबानी
२७ गुनाह के वास्ते बाक़ी नहीं * मगर अदालत का कोई हैबत अफ़ज़ा इनतिज़ार और ऐसा ग़ज़बि आतिशबार जो मुख़ालफ़ों को खालेगा
२८ बाक़ी है * जो कोई मूसा की शरअ को नाचीज़ जानता हो और यिह दो तीन गवाहों से साबित हो उस पर रहम नहीं किया
२९ जाता वुह मारा जाता है * पस ग़ौर कीजे वुह कितनी सख़्ततर सज़ा के लाइक़ जाना जायगा जिस ने ख़ुदा के बेटे को पामाल किया और वसीक़े का ख़ून जिस से वुह मुक़द्दस किया गया बेक़द्र
३० जाना और फ़ज़ल की रूह को ज़लील किया * क्यूंकि हम उसे जानते हैं जो यिह बोला कि इनतिक़ाम लेना मेरा काम है ख़ुदावंद फ़रमाता है कि मैं ही सज़ा दूंगा और फिर यिह कि ख़ुदावंद
३१ अपने लोगों का इनसाफ़ करेगा * जीते ख़ुदा के हाथों में गिरिफ़्तारी
३२ हैबतनाक है * पर गुज़रे हूए दिनों को याद करो जिन में तुम मुनव्वर होते हूए दुखों के साथ कुश्ती करने में साबिर रहे * कुछ
३३ तो इसवास्ते कि तुम लअन तअन और दुख दर्दों से अंगुश्तनुमा हूए और कुछ इसवास्ते कि तुम उन के जिन से यिह बदसलूकी
३४ होती थी शरीक थे * कि तुम ज़ंजीरों में मेरे हम दर्द थे और तुम ने अपने माल का लूटजाना ख़ुशी से क़बूल किया कि जानते थे हमारे लिये माल जो विहतर औ बाक़ी है आसमान पर है *
३५ पस तुम अपनी व पर्वाई को गुम न करो कि उस का बड़ा अज्र है *

३६ तुम्हें ज़रूर है कि सब्र करो ता कि तुम ख़ुदा की मरज़ी पर चल
३७ के वअ़दः हासिल करो * कि फिर थोड़ी सी मुद्दत है कि आने
३८ वाला आवेगा और देर न करेगा * और रास्तबाज़ ईमान से जीयेगा
और अगर वुह हट जावे तो मेरा जी उस से राज़ी न होगा *
३९ पर हम उन में से नहीं हैं जो हलाकत तक हटे जाते हैं बल्कि
उन में से हैं जो जान बचा रखने को ईमान लाते हैं *

ग्यारहवां बाब

१ अब ईमान यिह है कि उन चीज़ों पर जिनका इन्तिज़ार
किया जाता है इअ़तिमाद किया जावे और उन चीज़ों का
२ जो देखने में नहीं आतीं यक़ीन होवे * उसही से मशाइख़
३ के लिये गवाही दी गई * ईमानही के सबब से हम
जान गये कि आलम ख़ुदा के सुख़न से बन गया चुनांचि
वे चीज़ें जो देखी जाती हैं उन चीज़ों से जो देखने में
४ आती हैं नहीं बनीं * ईमान से हाबील ने क़ैन से
बिहतर क़ुरबानी ख़ुदा को गुज़रानी उसी के सबब उसके सहीक़
होनेपर गवाही दीगई कि ख़ुदा उसकी क़ुरबनियों पर गवाही
देता है और उसीके सबब उसके मरेपर भी हनोज़ उसका
५ ज़िक्र किया जाता है * ईमान के सबब से अख़नूख़ नक़लि
मकान कर गया ता कि वुह मौत को नदेखे और नमिला
क्यूंकि ख़ुदाने उसे नक़लि मकान करवाया क्यूंकि उस पर नक़ल
६ करने से पहले यिह गवाही गुज़री कि उसने अल्लाह को राज़ी

किया * और बिन ईमान रजामंदी मुमकिन नहीं क्यूंकि उस पर जो खुदाकी सिम्त आता है यिह वाजिब है कि यकीन करे कि वुह मौजूद है और यिह कि वुह उनका जो उसके जोयां हैं अजर
७ देनेवाला है ईमान से नूह ने उन चीजों की बाबत जो देखने में न आई मलोम होके खौफ से किश्ती बनाई ता कि अपने खानदान को बचावे और उसी ईमान से उसने दुनया को मुजरिम किया और उस रास्तबाजी का जो ईमान से मिलती
८ है वारिस हूआ * ईमान से इबराहीम जब बुलाया गया इताअत करके उस जगह चला गया जिसे वुह मीरास में लेनेवाला था और बावजूदे कि नजाना किधर जाता है निकला *
९ ईमान से उसने जमीनि मौऊद में यों मक़ाम किया जैसे वुह जमीन उसकी नथी कि वुह इसहाक़ और यअकूब समेत जो उसके साथ उसही वअदः के वारिस थे खीमों में
१० रहा * कि वुह उम्मेदवार था कि ऐसे शहर में जावे जिसके लिये बुनयाद है जिका बनानेवाला और बसानेवाला
११ खुदा है * ईमान से साए ने हामिलः होने की सकत पाई और मौसिम गुज़रे पर जनी उसने वअदः करने वाले को सच्चा
१२ अहद जाना * सो एक से वुह भी जो मुरदः सा था आसमान के सितारों के और साहिलि दरया की रेतके बेशुमार दानों के मानंद
१३ पैदा हूए * यिह सब ईमान में मरगये कि वे मुवाईद पर क़ाबिज़ न हूए पर दूरसे उन्हें देखा और मुअतक़िद हूए और सलाम को

हुके और इक़रार किया कि हम ज़मीन पर मुसाफ़िर और
१४ गुज़रनेवाले हैं * कि वे जो ऐसी बातें कहनेवाले हैं ज़ाहिर
१५ करते हैं कि हम ऐक वतन ढूंढते हैं * और अगर उन की
मुराद उस से वुह वतन था जिससे निकल आये तो उन का क़ाबू था
१६ कि वहां फिर जाते * हक़ीक़त यिह है कि वे वतन अफ़ज़ल के
जो आसमानी है मुश्ताक़ हैं सो ख़ुदा उससे हिजाब नहीं करता
कि उन का ख़ुदा कहलाये कि उस ने उन के लिये ऐक शहर तैयार
१७ किया * ईमान से इबराहीम ने जब इमतिहान किया गया इसहाक़
को क़ुरबानी के लिये गुज़रना और उस ने जिससे वअदे किये
१८ गये * और यिह कहा गया कि इसहाक़ से तेरी नसल नाम पैदा
१९ करेगी यकलौते को गुज़राना * क्यूंकि वुह समझा कि ख़ुदा मुरदों
के जिलाने पर क़ादिर है और उसने उसे ऐक नौअ के हशर में
२० पाया * ईमान से इसहाक़ ने आनेवाली चीज़ों की बाबत यअक़ूब
२१ और ऐसू को दुआ दी * ईमान से यअक़ूब ने मरते वक़्त
यूसुफ़ के हरऐक बेटे को दुआ दी और अपने सिर असा पर झुका *
२२ ईमान से यूसुफ़ ने जब मरने पर था बनी इसराईल के ख़ुरूज का
ज़िक्र किया और अपने हड्डियों की बाबत वसीयत की * ईमान
२३ से मूसा पैदा होके तीन महीनेतक अपने माबाप से छिपायागया
क्यूंकि उन्हों ने देखा कि लड़काख़ूब सूरत है और बादशाह के
२४ हुक्म से न डरे * ईमान से मूसा ने बालिग़ होके न चाहा कि
२५ फ़रऊन की बेटी का बेटा कहलावे * कि उसने ख़ुदा के लोगों के

साथ दुख पाना ज़ियादः पसंद किया न यिह कि गुनाहवाली इशरत
२६ में जो फ़ानी है मशग़ूल रहे * कि उसने उस लअ़न तअ़न को
सरवत को जो मसीही होने से है मिसर के ख़ज़ानों से बड़ा जाना
२७ क्योंकि उस की निगाह अजर पाने पर थी * ईमान से वुह बादशाह
के गुस्सः से न डरा और मिसर को तरक किया और उस की तरह जो
२८ मौजूद नादीदनी को देखे मुस्तक़िल रहा * ईमान से उसने फ़सह
और ख़ून अफ़शानी का अमल किया ता न होवे कि पहलौठे बेटों
२९ का हलाक करने वाला उन को छूवे * ईमान से वे दरयाय क़ुल्ज़ुम
से यूं गुज़रे जैसे ख़ुश्की पर गुज़रते हैं और मिसर के लोग उस
३० का इमतिहान करते हुए डूब गये * ईमान से अरीहा की शहरपनाह
३१ जब उसे सात दिनतक मुहासरः किया गिरगई * ईमान से रहाब
जो ज़ानियः थी बेईमानों के साथ हलाक न हुई कि उस ने जासूसों
३२ को सलामत अपने घर में आने दिया * अब मैं और क्या कहूं
कि जदऊ़न और बर्क़ और समसून और इफ़्ताह और दाऊद
और समूईल और नबियों की हिकायत तवील है और वक़्त कोताह *
३३ कि उन्होंने ईमान से ममलुकतों को मुसख़्ख़र किया और अदालतें
कियां और वअ़दों के ईफ़ातक पहुंच गये और शेरों के मुंह बंद
३४ किये * और आग की शिद्दत को तोड़ दिया तलवार की धारों को
कुंद किया वे सुस्ती से क़वी हुए जंग में बहादुर हुए और गैरों
३५ की फ़ौजों को हटा दिया * रंडियों ने अपने मर्दों को जी उठे हुए
पाया और बअ़ज़े पीटे गये और रिहाई क़बूल नकी ता कि बिहतर

३६ अफ़ज़ल तक पहुंचें * बअज़े उस इमतिहान में पड़े कि ठठों में
३७ उड़ाये गये कोड़े खाये और ज़ंजीरों और क़ैद में फंसे * संगसार किये
गये आरे से चीरे गये शिकंजः में खेंचें गये तलवार से मारे गये
आवारः हुए भेड़ों और बकरों के खाल ओढ़े हुए तंगदस्ती में रंज
३८ में आज़ुर्दगी में रहे * दुनया उन के लाइक़ नथी वे वियाबानों
और पहाड़ों और ग़ारों और ज़मीन के गढ़ों में ख़स्तः फिरा किये *
३९ और ये सब जिन के ईमान पर गवाही दीगई ईफ़ाय वअदः तक
४० न पहुंचे * कि ख़ुदा ने पेशबीनी करके हम पर तफ़ज़्ज़ुल ख़ास
किया ता कि वे हमारे बिग़ैर मुकम्मल न होवें *

बारहवां बाब

सो अज़ बसकि गवाहों का इतना बड़ा अबर आके हम पर छा
गया आओ हम भी हरएक बोझ और उलझानेवाले गुनाह को फेंके
के उस मुसाबक़ः में जो हमारे लिये मुक़र्रर कियागया इस्तिक़लाल
२ से दौड़ें * और ईसा को जो ईमान का पेशवा और मुतम्मिम है
देख रखें कि वुह उस सरूर के लिये जो उस के साम्हने था
ख़िजालत को नाचीज़ जान के सलीब का मुतहम्मिल हुआ और
३ ख़ुदा के तख़्त के दाहने बैठा * तुम उस शख़्स में जिसने
गुनाहगारों की इतनी बड़ी मुख़ालफ़त की बरदाश्त की फ़िक्र करो
४ नहो कि तुम परेशां ख़ातिर होके सुस्त हो रहो * तुम ने गुनाह
५ के मुक़ाबलः में ख़ूनतक हनोज़ जिहाद नहीं किया * और तुम
उस नसीहत को जो तुम को जैसा फ़रज़न्दों को की जाती है भूल

गये कि मेरे बेटे खुदावंद की तादीब को नाचीज़ मत जान और तू
६ जब वुह तुझे मलामत करे शिकस्तः दिल नहो ॥ कि खुदावंद जिसे
प्यार करता है उसे तंबीह करता है और हरएक बेटे को जिसे
७ वुह क़बूल करता है पीटा है ॥ अगर तुम तादीब पर सबर करते
हो खुदा तुम से जैसा फ़रज़ंदों से करते हैं सलूक करता है कौन
८ सा बेटा है जिसे बाप तादीब नहीं करता ॥ पर अगर वुह
तादीब जिस में सारे शरीक हैं तुम को नमिली जाय तो तुम हरामज़ादे
९ हो फ़रज़ंद नहीं ॥ और जब वे जो हमारे जिसमानी बाप थे
तादीब करनेवाले थे और हम ने उन की तअ़ज़ीम की क्या हम
बतरीक़ औला रूहों के बाप के महकूम न होंगे और जीयेंगे ॥
१० कि वे तो थोड़े दिनों के वास्ते अपनी खुशी के मुवाफ़िक़ तंबीह करते थे
पर वुह हमारी बिहतरी के लिये तादीब करता है ता कि हम उस
११ की तक़द्दुस में शरीक होवें ॥ और हरएक तादीब बिलफ़ेआ़ल फ़रहत
बख़्श नहीं बल्कि ग़म अफ़ज़ा नज़र आती है पर आगे को वुह
उन्हें जो उस के सबब से मिहनत कश हूए हैं सदाक़त के सलामत
१२ अफ़ज़ा मेवे देगी ॥ पस इसवास्ते ढीले हाथों और सुस्त घुटनों
१३ को सीधा करो ॥ और अपने पांओं केलिये सीधे रस्ते बनाओ ता कि
१४ जो लंगड़ा है गुमराह न होवे बल्कि चंगा होवे ॥ सारे आदमियों के
साथ मिले रहो और तक़द्दुस की पैरवी करो उस बिग़ैर कोई खुदावंद
१५ को न देखेगा ॥ और बग़ौर देखते रहो न होवे कि कोई खुदा की
निअ़मत से महरूम हो और न होवे कि कोई तलख़ी की जड़

सबब होके तसदीअ देवे और उस से बहुतेरे नापाक हो जायें॥
१६ न होवे कि कोई ईसू की मानंद ज़ानी या बेदीन हो जिस ने एक
ख़ुराक के वास्ते अपने हक़ को जो उस के पहलौंठे होने का था
१७ बेचा॥ क्यूंकि तुम जानते हो कि वुह उस के बअ्द जब उस ने
चाहा कि बरकत का वारिस हो रद्द किया गया और उस ने जगह
न पाई कि दिल को तबदील करे अगरचिः उसने उसे आंसू
१८ बहा बहा के ढूंढ़ा॥ कि तुम ऐसे कोह तक जिसे छू सकें और जो
आग से जलता है और काली बदली और तारीकी और तूफ़ान॥
१९ और नरसिंगे के शोर और बातों की आवाज़ को जिसे सुन्नेवालों ने
सुन के चाहा कि यिह कलाम हम से फिर न कहा जावे नहीं
२० आये हो॥ कि वे उस हुक्म का जो उन्हें दिया गया है तहम्मुल
न करते थे कि कहा गया अगर हैवान भी कोह को छूवे तो वुह
२१ संगसार हो जायगा या भाले से छेदः जायगा॥ और जो कुछ
नज़र आया सो ऐसा डरना था कि मूसा बोला मैं हैरान और
२२ लरज़ान हूं॥ बल्कि तुम कोहि सैहून और जीते ख़ुदा के शहर
में जो आसमानी औरशलीम है और लाखों फ़िरिश्तों के पास॥
२३ और पहलौठों की जमाअत और कलीसया में जिन के नाम
आसमान पर लिखे हैं और ख़ुदा के पास जो सबका हाकिम है
२४ और मुकम्मल रास्तबाज़ों की रूहों॥ और ईसा के जो नये
वसीक़ः का वास्तः है और उस लहू के जो छिड़का जाता है और
२५ हाबील से बिहतर बातें बोलता है पास आये हो॥ देखो तुम

बोलने वाले से ग़ाफ़िल न रहो क्यूंकि अगर वे भाग न निकले जो उस से जो ज़मीन पर फ़रमाता था ग़ाफ़िल रहे हम भी अगर हम उसी से जो आसमान से फ़रमाता है मुंह मोड़े बतरीक़ औला न २६ बचेंगे * कि उस की आवाज़ ने ज़मीन को उस वक़्त हिला दिया पर अब उस ने यिह कहके क़रार किया और यों कहा कि फिर एक बार मैं फ़क़त ज़मीन को नहीं बल्कि आसमान को २७ हिला दूंगा * और यिह बात कि फिर एक बार उस पर दलालत करती है कि वुह चीज़ें जो हिलाई जाती हैं टल जायें जैसा बनी हुई चीज़ों का मुक़तज़ा है ताकि वे चीज़ें जो हिलाई नहीं २८ जाती क़ाइम रहें * अज़बस कि हम को ऐसी बादशाहत मिली है जो हिलाई नहीं जाती आओ निअमत लेवें जिस से हम बक़जिह अह्सन तअ्ज़ीम और तक़्वे से ख़ुदा की ख़िदमत २९ करें * क्यूंकि हमारा ख़ुदा भसम करनेवाली आग है *

तेरहवां बाब *

१ बिरादराना उल्फ़त में साबित रहो * (२) मुसाफ़िर परवरी को मत भूलो क्यूंकि उसी से कितनों ने नागाह फ़िरिश्तों की मिहमानी २ की है * क़ैदियों को यूं याद करो गोया तुम उन के साथ क़ैद में शरीक हो और ऐसही उन को जो रंज में हैं याद करो कि ३ तुम्हारा भी उन्हीं का सा जिसम है * ब्याह करना सब मे भला काम है और बिस्तर नापाक नहीं पर ख़ुदा हरामकारों और ४ ज़ानियों को मुजरिम करेगा * तुम्हारी तीनत ज़रदोस्त न होवे

और मौजूद पर क़िनाअत करो क्यूंकि उस ने आप कहा है कि
मैं तुझे हरगिज़ न छोड़ूंगा और तुझे मुतलक़ तर्क न करूंगा *
५ इसवास्ते हम ख़ातिर जमाई से कहते हैं कि ख़ुदावंद मेरा
मददगार है और मैं न डरूंगा कि आदमी मेरा क्या करेगा *
६ तुम अपने पेशवाओं को जिन्हों ने तुम से ख़ुदा का बात कही
याद करो और उन के मुआश के अंजाम पर ग़ौर करके उन के
७ ईमान की पैरवी करो * ईसा मसीह कल और आज और अबद तक
८ ऐकसां है * तुम रंगा रंग अजीब तअलीमों के लिये दौड़ते न फिरो
यिह भला है कि दिल निअमत से मज़बूत हो न कि ख़ुराकों से
जिन से उन्हों ने जो उन के लिये दौड़ते फिरते थे नफ़अ न
९ पाया * हमारा तो ऐक क़ुरबानगाह है जिस में मसकन के ख़िदमत
१० करनेवालों का मक़दूर नहीं कि खायें * कि जिन जानवरों का
लहू सरदारि काहिन मक़ामि मुक़द्दस में गुनाह की कफ़ारत में
ले जाता है उन के बदन ख़ीमःगाह के बाहर जिलाये जाते हैं *
११ इसवास्ते ईसा भी ताकि लोगों को अपने लहू से मुक़द्दस बख़्शे
१२ दरवाज़े के बाहर मारा गया है * इस लिये आओ हम उस को
नंग ओ आर के मुतहम्मिल होके ख़ीमःगाह से बाहर उस पास
निकल चलें क्यूंकि यहां हमारी बूदओबाश का शहर नहीं हम
१३ तो उस शहर को जो आनेवाला है ढूंढते हैं * इसवास्ते आओ
हम उस के वसीले से सिताइश की क़ुरबानी यअने उन लबों का
१४ फल जो उस के नाम का इक़रार करते हैं ख़ुदा के लिये लावें पर

ख़ैरात और इह़सान करना मत भूलियो इस लिये कि ऐसी
१५ क़ुरबानियों से ख़ुदा ख़ुश होता है * तुम अपने पेशवाओं
के फ़रमांबरदार और मह़कूम हो कि वे उन के मानंद जो
१६ मुह़ासबः देंगे तुम्हारी जानों के वास्ते जागते रहते हैं ताकि वे
हिसाब ख़ुशी से करें न कि कराहत से जो तुम्हारे ही ह़क़ में
१७ मुज़िर है * हमारे वास्ते दुआ मांगो क्यूंकि हम यक़ीन जानते
हैं हम नेक नीयत हैं कि हम सारी बातों में अच्छी तरह
१८ गुज़रान किया चाहते हैं * और मैं तुम से बड़ी समाजत से
इलतिमास करता हूं कि तुम यिह करो ताकि मैं बहुत जल्द तुम
१९ पास फिर पहुंच जाऊं * ख़ुदा जो सलामती का बानी है और
उस को जो अबदी वसीक़ः के ख़ून से भेड़ों का बुज़ुर्ग गड़रिया है यअ़ने
२० हमारे ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से फिर लाया * तुम को हरएक
नेक काम में कामिल करे ताकि तुम उस की मरज़ी पर चलो और
जो कुछ कि उस के आगे ख़ुशआयंद है ईसा मसीह के वास्ते तुम
२१ में करे उस का जलाल अबदुलआबाद होवे * और ऐ भाईओ मैं
तुम से इलतिमास करता हूं कि तुम नसीह़त के कलाम को मान
२२ लो कि मैं ने मुख़्तसर कलाम से तुम को रुक़्अ़ किया * जानो कि
भाई तीमताऊस ने छुट्टी पाई और अगर वुह जल्दी आये तो उसी
२३ के साथ होके मैं तुम को देखूंगा * तुम अपने सारे पेशवाओं
और सारे मुक़द्दस लोगों को सलाम कहो जो ऐतालियः के हैं तुम्हें
२४ सलाम कहते हैं * फ़ज़्ल तुम सब पर होवे आमीन *

यअक़ूब का मकतूब

पहला बाब

१ यअक़ूब का जो ख़ुदा और ख़ुदावंद ईसा मसीह का बंदः है बारह
२ फ़िरक़ों को जो मुतफ़र्रिक़ हैं सलाम * ऐ मेरे भाईओ तुम
अपना गुनागून इमतिहानों में पड़ना ऐश कामिल समझो *
३ कि तुम जानते हो तुम्हारे ईमान का इमतिहान में पड़ना
४ तुम में सबर पैदा करता है * पर लाज़िम है कि सबर
को पूरा अमल करने दो ताकि तुम कामिल और पूरे हो और
५ किसी बात में नाक़िस न रहो * और अगर कोई तुम में से
नाक़िस राय होवे तो वुह ख़ुदा से जो सारी ख़ल्क़ को बे ग़रज़
देता है और मलामत नहीं करता है मांग ले कि उसे दिया
६ जायगा * लेकिन चाहिये कि ईमान से मांगे और कुछ शक
न लाये क्यूंकि शक लानेवाला दरया की मौज के मानंद है जो

७ हवा से रवां और गर्दां है * सो ऐसा इनसान गुमान न करे
८ कि मैं खुदावंद से कुछ पाऊंगा * दो दिला आदमी अपने
९ सारे रविशों में बे इस्तिक़लाल है * भाई जिस का मरतबः पस्त
१० है अपनी बलंदी पर फ़ख़र करे * पर दौलतमंद अपनी पस्ती
से इस लिये कि वुह नबातात के फूल की तरह मुरझा जायगा *
११ यही कि सूरज अपने क़ुव्वति सोज़िंदः के साथ तुलूअ हूआ
घास को सुखाया और वह फूल उस का झड़गया और उस के
चिहरे का हुस्न होचुका ऐसाही मालदार भी अपने सब रविशों में
१२ मुरझा जायगा * नेक बख़्त वुह इनसान है जो इमतिहान में साबिर
है क्यूंकि वुह साबित ठहर के हयात का हार पावेगा जिस का
१३ वअदः खुदावंद ने अपने मुहिब्बों से किया * जो कोई इमतिहान
में पड़े न कहे कि खुदा मुझे इमतिहान करता है कि अशरर
खुदा को इमतिहान नहीं कर सकते और न वुह किसी को
१४ इमतिहान करता है * पर हर कोई अपनी शहवत से
१५ गिरिफ़्तार और फ़रेफ़्तः होके इमतिहान किया जाता है * सो
शहवत हामिलः होकर गुनाह जनती है और गुनाह पूरा होके
१६ मौत को उछाल देता है * ऐ मेरे प्यारे भाईओ फ़रेब न
१७ खाओ * हरएक अच्छी बख़शिश और हर इनआम कामिल
ऊपर ही से है और वुह अस्ल अनवार से नाज़िल होता है जिस
में तबदील और सायः जो ज़वाल से होता है नहीं *
१८ उसने चाहकर हमें सच्चाई की बात से पैदा किया ताकि हम

१९ उस के मख़लूक़ों में पहले फलों की मानंद होवें * पस ऐ मेरे प्यारे भाईओ हर आदमी सुनलेने में तेज़ और बोल उठने में
२० धीमा और ग़ुस्सः में मुतअम्मिल होवे * क्यूंकि आदमी का ग़ुस्सः
२१ रास्तबाज़ी इलाही के काम नहीं करता * इसवास्ते ऐ भाईओ तुम सब तरह की गंदगी और अफ़री हूई बदी को फेंक के उस कलाम के दरख़्त को जो लगाया गया है फ़रोतनी से लेओ वुह
२२ तुम्हारी जानों को बचा सकता है * लेकिन कलाम पर अमल
२३ करते रहो न आप को फ़रेब देके फ़क़त सुना करो * इसलिये कि अगर कोई कलाम को सुना करे और अमल न करे तो वुह उस आदमी के मानंद है जो अपने असली चिहरे को आईने
२४ में देखता है * उसने आईने में देखा और चलागया और
२५ जल्द भुला दिया कि कैसा था * पर जो कोई आज़ादगी की कामिल शरीअत को सोचता है और उस में मुस्तक़िल है अज़बसकि यिह भुलकर सुननेवाला नहीं है बल्कि कामों
२६ का करने वाला है अपने कामों में नेक बख़्त होगा * अगर कोई तुम्हारे बीच आबिद सूरत आवे और अपने मुंह को लगाम न दे बल्कि अपने दिल में फ़रेबखावे तो उस की इबादत बातिल
२७ है * जो इबादत ख़ुदा और बाप के आगे पाक है और मलूस नहीं है यिह है कि यतीमों और रांडों की जब वे दुख में हों दीद कीजे और आप को दुनया की कसाफ़त से बेदाग़ रखिये *

दूसरा बाब

१ ऐ मेरे भाईओ तुम ईमान तुम जो हमारे खुदावंद ईसा मसीह पर जो ज़ूलजलाल है लाये हो चाहिये कि ज़ाहिर परस्ती के साथ

२ न हो * इस लिये कि अगर ऐक आदमी सोनेकी अंगोठी और ज़र्क़ बर्क़ की पोशाक पहने हो और ऐक ग़रीब कसीफ़

३ लिबास में * और तुम उस खुश लिबास आदमी की तरफ़ मुतवज्जिह हो और उस से कहो कि यहां बखूबी बैठो और उस ग़रीब को कहो कि वहां खड़ा रह या यहां मेरी पाओंदाज़ चौकी

४ के तले बैठ * तो क्या तुम अपने दरमियान फ़र्क़ नहीं करते

५ और मुनसिफ़ि बदतमीज़ नहीं हो * ऐ मेरे प्यारे भाईओ सुनो क्या खुदा ने दुनया के कंगालों को इख़तियार नहीं किया कि ईमान में ग़नी होवें और उस बादशाहत की जिस का इक़रार

६ उसने अपनी महब्बत करनेवालों से किया वारिस होवें * लेकिन तुम्हीं ने मुफ़लिस को बेज़रमत किया क्या अग़नियः तुम पर जबर नहीं करते और वही तुम को महकमे में नहीं खेंच लाते *

७ और क्या उस मुअज़्ज़ नाम की जिस के तुम कहलाते हो

८ बदगोई नहीं करते * सो अगर तुम सुलतानी शरीअत को जैसा किताब में है कि तू अपने हमसाये को ऐसा प्यार कर जैसा

९ आप को करता है पूरा करोगे तो भला करोगे * पर अगर ज़ाहिर परस्त हो तो गुनाह करते हो और शरअ तुम को अदूल

१० करनेवालों की तरह मुजरिम ठहराती है * इसलिये कि जो

कोई तमाम शरअ को माने और एक बात में ख़ता करे तो वुह
११ तमाम का मुजरिम है * क्योंकि जिस ने कहा कि ज़िना मत
कर उस ने यिह भी कहा कि क़तल न कर पस अगर तू ज़िना
न करे और क़तल करे तो तू शरअ से अदूल करनेवाला हुआ *
१२ तुम उनकी तरह जिन पर आज़ादगी की शरअ के मुवाफ़िक़ हुक्म
१३ किया जायगा कहो और करो * क्योंकि जिसने रहम न किया
उस का इनसाफ़ बेरहमी से होगा और रहम अदल पर फ़ख़र
१४ करता है * ऐ मेरे भाईओ अगर कोई कहे कि मैं ईमानदार
हूं और अमल न करे तो क्या फ़ाइद: क्या ईमान उस को बचा
१५ सकता है * अगर कोई भाई या बहिन उरियां और क़ूति
१६ लायमूत के लिये मुहताज हो * और तुममें से कोई उन्हें कहे
सलामत जाओ और गरमा गरम और सेर रहो और वुह चीज़
१७ बदन जिसका मुहताज है उन्हे न दो तो क्या हासिल * इसी तरह
अगर ईमान के साथ अमल नहीं तो वुह हक़ीक़त में मुरद:
१८ है * शायद कोई कहे कि तुझ में ईमान है और मुझ में
अअमाल पस तू अपना ईमान अपने अमलों से मुझे दिखा और
१९ मैं अपने अमलों से अपना ईमान तुझे दिखाऊं * तो ईमान
लाता है कि ख़ुदा एक है भला करता है शैतीन भी तो यिह
२० ईमान लाते हैं और कांपते हैं * पर ऐ वाही आदमी क्या
तुझ को कभी मअलूम होगा कि ईमान बे अमल मुरद: है *
२१ क्या हमारा बाप इबराहीम अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह

२२ पर क्या वह अमलों से रास्तबाज़ नहीं ठहरा * सो तू देखता है
कि ईमान ने उस के अमलों के साथ काम किया और अमलों से
२३ ईमान कामिल हुआ * और वुह किताब जो कहती है कि
इबराहीम ख़ुदा पर ईमान लाया और यिह उसके लिये रास्तबाज़ी
२४ ठहरी और वुह ख़लीलुल्लाह कहलाया पूरी हुई * तुम देखते
हो कि आदमी अमलों से न कि ख़ाली ईमान से रास्तबाज़
२५ ठहरता है * इसी तरह से क्या रहाब जो क़ाहिबः थी जिसने
जासूसों की मिहमानी की और उन्हें दूसरी राह से बाहर कर
२६ दिया अमलों से रास्तबाज़ न ठहरी * सो जिस तरह बदन
बेजान मुरदः है उसी तरह ईमान बे अमल मुरदः *

तीसरा बाब

१ ऐ मेरे भाईओ ऐसा न करो कि बहुतेरे तुम में से मुअ़ल्लिम बनें
२ तुम जानते हो कि हम को ज़ियादः अ़ज़ाब होगा * क्योंकि
हम सबके सब बहुत सी बातों में ख़ता करते हैं और अगर कोई
बात में ख़ता न करें वही मर्द कामिल है और क़ादिर है कि सारे
३ बदन को महकूम करे * देखो कि हम घोड़ों के मुंह में
लगामें देते हैं ताकि वे हम को मानें और उन के सारे जिस्म
४ को फेरते हैं * देखो किश्तियां भी बावजूदे कि कैसी कैसी बड़ी
हैं और ज़ोर की हवाओं से उड़ी जाती हैं बहुत छोटी पतवार
से जिधर हांकने की ख़्वाहिश चाहे फेरी जाती हैं ऐसाही ज़बान
५ एक छोटा सा उज़ो है पर बड़ाही लाफ़ज़न् * देखो कि थोड़ी

६ सी आग चीज़ों को बड़े बड़े ढेरों को जला देती है * सो ज़बान भी एक ज़बानः है और एक ज़ुल्म का आ़लम है हमारे उ़ज़्वों के मजमआ़ में ऐसी तू है कि सारे बदन को दाग़ लगाती है और दायरः जहान को जलाती है और उसने जहन्नम से जलन

७ को पाया है * हैवानों और चिड़ियों और कीड़ों और मछलियों का हरएक नौअ़ि नौअ़ इनसान से राम होता है और हूआ है *

८ मगर आदमियों में से कोई क़ादिर नहीं कि ज़बान को राम करे वुह एक बला है जो थमती नहीं ज़हरि क़ातिल से

९ लबालब है * हम उस से ख़ुदा को जो बाप है मुबारक कहते हैं और उस से आदमियों पर जो ख़ुदा की सूरत में पैदा हूए

१० लअ़नत करते हैं * मुंह ही से क्या बरकत का क्या लअ़नत का सुख़न निकलता है ऐ मेरे भाईओ मुनासिब नहीं कि यों हो *

११ क्या एकही सोता मुंहही से मीठा और खारी पानी उछालता है *

१२ ऐ मेरे भाईओ क्या मुमकिन है कि अंजीर में ज़ैतून और ताक में अंजीर लगें और एकही चश्मः खारी और मीठा पानी बख़्शे

१३ सो कोई चश्मः बुरा और मीठा पानी नहीं देता * तुम में से कौन आ़क़िल और दाना है वुह जो हुस्नि मआ़श से और

१४ फ़रूतनि मुलायमत से अपने अअ़माल को ज़ाहिर करे * पर अगर तुम कड़वी ग़ैरत और क़ज़ियः गरी अपने दिल में भर

१५ रखो हक़ पर फ़ख़र न करो और झूठ न बोलो * यिह ऐसी अ़क़्ल नहीं जो ऊपर से उतरती हो बल्कि दुनयावी नफ़सानी

१६ शैतानी है * क्यूंकि जहां ग़ैरत और कजिदेगरी है वहां
१७ हंगामः और हेक तरह की बदकारी है * पर जो अक़्ल उपर
से उतरी है सो पहले पाक है फिर मिलनसार हलीम नरम रहम
से और अच्छे फलों से लदी हुई न तरफ़दारी है और न मक्कार*
लेकिन रास्तबाज़ी का मेवः सुलह करनेवालों के लिये सुलह में
बोया जाता है *

चौथा बाब

१ मुक़ातले और लड़ाईयां तुम में कहां से है क्या तुम्हारी उन
२ शहवतों से जो तुम्हारे अज़ओं में जंगजू हैं नहीं * तुम ख़्वाहिश
करते हो और कुछ नहीं पाते तुम क़त्ल करते हो रश्क करते हो
और पहुंच नहीं सकते तुम जंग और लड़ाई करते हो पर तुम्हारी
३ हाथ कुछ नहीं लगता क्यूंकि तुम नहीं मांगते * मांगते हो
और नहीं लेते क्यूंकि बदनीयती से मांगते हो और उस लिये
४ कि अपनी अशरतों में ख़रच करो * ऐ ज़िना करनेवालो और
ज़िना करनेवालियो क्या तुम नहीं जानते कि दुनया से दोस्ती
करना ख़ुदा से दुशमनी करना है जो कोई चाहता है कि दुनया
५ का दोस्त हो आप को ख़ुदा का दुशमन ठहराता है * क्या तुम
यिह गुमान करते हो कि किताब का मज़मून लग़ो है क्या वुह
६ रूह जो हम में बसी है हसद उसी की ख़्वाहिश से है * वुह
तो ज़ियादःतर मिहरबानी बख़शती है चुनांचिः वुह कहती है
कि ख़ुदा मग़रूरों से मुक़ाबलः करता है और फ़रोतनों को

७ निहर बख़शता है * इसवास्ते ख़ुदा के महकूम बनो इबलीस से
८ मुक़ाबलः करो और वुह तुम से भाग निकलेगा * ख़ुदा के
नज़दीक जाओ वुह तुम्हारे नज़दीक आयेगा ऐ गुनहगारो
अपने हाथ पाक करो ऐ दो दिलो अपने दिलों को साफ़ करो *
९ ग़मगीन हो नालः करो रोओ तुम्हारा हंसना कुढ़ना और तुम्हारी
१० ख़ुशी उदासी से बदल हो * ख़ुदावंद के आगे फ़रोतनी
११ करो वुह तुम को बलंद करेगा * ऐ भाईओ एक दूसरे की
ग़ीबत न करो जो अपने भाई की ग़ीबत करता है और अपने
भाई को मुजरिम ठहराता है सो शरअ़ की ग़ीबत करता है और
शरअ़ को मुजरिम करता है पस अगर तू शरअ़ को मुजरिम करता है
तो तू शरअ़ पर अमल करनेवाला नहीं बल्कि उस का क़ाज़ी है *
१२ शरअ़ का एक वज़अ़ करनेवाला है जो नजात देने और हलाक
करने पर क़ादिर है तू कौन है जो दूसरे को मुजरिम करता है *
१३ अरे तुम जो कहते हो कि हम आज या कल फ़लानः शहर में
जायेंगे और वहां एक बरस रहेंगे और सौदागरी करेंगे और कुछ
१४ कमाएंगे * और नहीं जानते कि कल क्या होगा तुम्हारी ज़िंदगी
क्या चीज़ है वुह एक बुख़ार है जो थोड़े वक़्त तक तो नज़र
१५ आता है फिर फ़ना हो जाता है * चाहिये कि उस के
बरख़िलाफ़ कहो अगर ख़ुदावंद चाहे और हम जीवें तो हम
१६ ऐसा या वैसा करेंगे * अब तो तुम अपनी नख़्वतों पर फ़ख़र
१७ करते हो पर ऐसा तफ़ाख़ुर सरासर ज़बून है * पस जो भला

कर जानता है और नहीं करता उस पर गुनाह होता है *

पांचवां बाब

१ अब ऐ दौलतमंदो उन आफ़तों के ग़म से जो तुम पर आनेवाली
२ हैं चिल्ला चिल्ला रोओ * कि तुम्हारी दौलत बरबाद हुई
३ और तुम्हारे कपड़ों में कीड़ा लगा * तुम्हारे सोने रूपे में ज़ंग
लगा और उनका ज़ंग तुम पर गवाही देगा और आग की
तरह तुम्हारी बूटियां खायगा तुम ने ऐयामि अख़ीर के लिये
४ ख़ज़ानः जमअ किया * देखो उजरत उन मज़्दूरों की जिन्हों
ने तुम्हारे खेत काटे जिसे तुम ने ज़ुल्म कर के उड़ा दिया पुकारती
है और दिरौ करनेवालों के नाले रबुलअफ़वाज खुदावंद के कानों
५ तक पहुंचे * तुम ने ज़मीन पर ऐयाशी की और असराफ़
किया तुमने अपने दिलों को मोटा किया जैसा क़बह के दिन
६ के लिये करते हैं * रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराया और क़तल
७ किया और उसने तुम्हारा मुक़ाबलः न किया * सो अब ऐ
भाईओ खुदावंद के आनेतक सुसताओ देखो दिहक़ान ज़मीन
के तुहफ़ः मेवः का इन्तिज़ार करता है और सबर करता है
८ जबतक कि अव्वल ओ आख़िर का मेंह बरस जाय * सो तुम
भी सबर करो और दिलों को क़ुव्वत बख़्शो इसलिये कि खुदावंद का
९ ज़हूर नज़्दीक है * ऐ भाईओ एक दूसरे का गिलः न करो
ताकि तुम मुजरिम न बनो देखो क़ाज़ी दरवाज़े के साम्हने है *
१० ऐ मेरे भाईओ उन नबियों को जो खुदावंद का नाम लेकर बोलते

से दुख उठाने का और सबर करने का नमूनः जानो * ११ देखो हम साबिरों को नेकबख़्त कहते हैं तुमने अयूब का सबर सुना है और ख़ुदावंद का मतलब दरयाफ़्त किया है ख़ुदा बड़ा १२ अहलि दर्द और रहीम है * पर सब से पहले ऐ मेरे भाईओ तुम क़सम मत खाओ न आसमान की न ज़मीन की न और किसी चीज़ की बल्कि तुम्हारा हां हां हो और तुम्हारे नहीं नहीं १३ ताकि तुम रियाकार न ठहरो * तुम में कोई दिलफ़िगार है तो १४ दुआ मांगे दिलशाद है तो मज़मूर गावे * कोई तुम में बीमार है तो कलीसया के क़सीसों को बुलावे वे ख़ुदावंद का नाम १५ लेके उसके बदन पर तेल मलें और दुआ मांगें * और दुआ जो ईमान के साथ है उस मरीज़ को बचायगी और ख़ुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा और अगर उस ने गुनाह किये हों तो उसे १६ बख़्शे जायेंगे * बाहम अपनी ख़ताओं का इक़रार कर लो और एक दूसरे के लिये दुआ मांगो ताकि तुम शिफ़ा पाओ कि रास्तबाज़ की दुआ असर करने में सख़्त ज़ोरआवर है * १७ इलयास हमारा हम जिन्स इनसान था और उसने दुआ मांग के चाहा कि मेंह न बरसे तीन बरस छः महीने तक उस ज़मीन १८ पर बारिश न हुई * उसने फिर दुआ मांगी आसमान ने मेंह १९ भेजा और ज़मीन ने अपना फल नुमायां किया * ऐ भाईओ अगर कोई तुममें से सच्चाई की राह से भटके और दूसरा २० उसे फिरावे * वुह जाने कि जिसने एक गुनहगार को ज़लालत

की राह से फिरया हुआ एक जान को मौत से बचायेगा और गुनाहों की कसरत को छिपा डालेगा *

पत्रस का पहला मकतूब सब के लिये

पहला बाब

१ पत्रस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का हवारी है उन मुसाफ़िरों को जो पन्तस और गलातियः और कपदकियः और असिया और
२ बतूनः की बस्तियों में परागंदः हैं * जो बाप खुदा के इल्मि क़दीम में बरगुज़ीदः हूये हैं ताकि रूह के तक़्दुस से फ़रमांबरदार हों और ईसा मसीह की उन पर खूँफ़िशानी हो फ़ज़्ल
३ और आराम तुम्हारे लिये ज़ियादः होता जाये * हमारे खुदावंद ईसा मसीह का खुदा और बाप लाइक़ि हम्द है जिसने हम को अपनी रहमति वाफ़िर से ईसा मसीह के जी उठने के
४ बाइस जीती उम्मैद के लिये फेरके पैदा किया * ताकि हम वुह मीरास पावें जो बेज़वाल और नामलूस है और पज़्मुरदः
५ नहीं होती जो हमारे लिये आस्मान पर रख छोड़ी गई * और हम ईमान लाके खुदा की क़ुदरत से उस नजात तक जो

आख़िरी वक़्त में नमूद होने को तैयार है महफ़ूज़ रहतेहैं *

६ सो तुम उस से बहुत शादमान हो अगरचिः तुम बिलफ़िअल चंदरोज़ बिनाबिरि ज़रूरत रंगारंग इमतिहानों से ग़म में पड़े हो *

७ यिह सब इसलिये है ताकि तुम्हारे ईमान का सबूत तिलाय फ़ानी से हरचंद वुह भी आग ही में ताया जाता है अज़ीज़तर होके ईसा मसीह के ज़हूर के वक़्त मदिह और इज़्ज़त और

८ जलाल के लाइक़ निकले * उसे तो तुम बिन देखे प्यार करते हो और उस पर तुम बावजूदे कि नहीं देखते ईमान लाके ऐसी ख़ुशी ख़ुर्रमी करते हो जो बयान से बाहर और जलाल

९ से भरी है * और उसको जो ईमान लानेसे तुम्हारी ग़रज़

१० है यअ्ने जानों की नजात हासिल करते हो * उन नबियों ने जिन्होंने उस निअ्मत की बात जो तुम तक पहुंचती है पेशतर से कही उसी नजात की बाबत तलाश और तफ़तीश

११ की * वे यिह तफ़तीश करते थे कि मसीह की रूह जो उन में थी मसीह के दुखों की और फिर जलालों की जो गवाही देती थी किसवक़्त और किस तरह के वक़्त का बयान करती थी * सो

१२ उन पर यिह ज़ाहिर हूआ कि वे न अपनी बल्कि हमारी ख़िदमत के लिये वुह बातें कहते थे जिनकी ख़बर हम को उनकी मअ्रिफ़त से दी गई जिन्हों ने रूहि क़ुदस की क़ुदरत से जो आसमान से उन पर नाज़िल हूआ तुम्हें इंजील की बशारत दी और फ़िरिश्ते मुश्ताक़ हैं कि उन बातों में ग़ौर करें *

१३ इसवास्ते तुम अपनी कमरि हिम्मत बांधके हुशयारी से उस फ़ज़ल की उम्मैद वासिक़ रखो जो ईसा मसीह के ज़ाहिर होने
१४ वक़्त तुम पर होगा * तुम फ़रमांबरदार फ़रज़ंदों के मानंद बनकर उन ख़्वाहिशों के जिन में तुम ऐयामि जिहालत में
१५ गिरिफ़्तार थे हमशकल वने * बल्कि तुम जिस तरह तुम्हारा बुलानेवाला पाक है अपने सब शुग़लों में पाक रहो *
१६ क्यूंकि लिखा है कि तुम पाक बनो कि मैं पाक हूं *
१७ और अगर तुम उस को जो हरऐक के काम के मुवाफ़िक़ तशख़्ख़ुस पर नज़र न करके इनसाफ़ करता है बाप कहो तो अपने आलमि मुसाफ़रत में डरते हूऐ औक़ात काटो *
१८ क्यूंकि तुम यिह जानते हो कि तुम ने जो अपनी मैारूसी आदति बेहूदः से नजात पाई यिह कुछ फ़ानी चीज़ों के
१९ यअ़ने रूपे सोने के सबब से नहीं * बल्कि यिह उस के जो बेदाग़ और बेऐब बर्रः के मानंद है यअ़ने मसीह के बेशक़ीमत लहू
२० के सबब से है * कि वुह पेश अज़ बिनाय आलम मुक़र्रर हूआ लेकिन ज़मानि अख़ीर में तुम्हारे लिये ज़ाहिर हूआ *
२१ कि तुम उसके सबब से ख़ुदा पर ईमान लाये कि उसने उस को मुरदों में से जिलाया और जलाल दिया ताकि तुम्हारा ईमान और
२२ तवक्कुल ख़ुदा पर होवे * अज़्बसकि तुमने इताअ़त करके रूह की कुमक से अपने दिल के पाक किया यहांतक कि तुम में भाइओं की सी बेरिया महब्बत पैदा हूई पस तुम ऐक

२३ दूसरे को पाक दिल होके वशिद्दत प्यार करो * क्यूंकि तुम न तुख़्मि फ़ानी से वल्कि उस तुख़्म से जो फ़ानी नहीं यअ़्नें ख़ुदा की वात से जो हमेशः ज़िंदः और वाक़ी है फिर के पैदा
२४ हूए * क्यूंकि हरएक वशर घास के मानंद है और आदमी की सारी शान घास के फूल के मानंद घास सूख जाती
२५ है और फूल झड़ जाता है * लेकिन ख़ुदावंद की वात अवद तक रहती है थिह वही वात है जिसकी ख़ुशख़वरी तुम्हें दी गई है *

दूसरा वाव

१ इसवास्ते तुम हरऐक वदी और हरऐक दग़ा और मकरें और
२ कीनों और सारी वदगोइओं को छोड़के * उन वच्चों के मानंद जो इसी दम पैदा हूए कलिमः के ख़ालिस दूध के मुश्ताक़ हो
३ ताकि तुम उस से नश्व नुमा पाओ * कि तुमने ख़ुदावंद की
४ मिहरवानी का मज़ा पाया है * वुह ऐक जीता पत्थर है जिसे आदमियों नें ख़्वार किया पर ख़ुदाने मक़वूल और अज़ीज़
५ जाना सो तुम उस के पास आके * जीते पत्थरों के मानंद रूहानी घर वनें जाते हो और काहिनों की मुक़द्दस जमाअ़त हूए जाते हो ताकि रूहानी क़ुरवानियां जो ईसा मसीह के वास्तः से ख़ुदा को
६ पसंद हैं गुज़रानो * इसवास्ते किताव में मज़कूर है कि देख मैं ऐक पत्थर सैहून में रख देता हूं जो कोने का सिरा और मक़वूल और अज़ीज़ है जो कोई उस पर ईमान लाया शरमिंदः
७ न होवेगा * सो वुह तुम्हारे लिये जो ईमान लाये हो इज़्ज़त

है और नाफ़रमांबरदारों के लिये वही पत्थर जिसे बनाने वालों ने
८ रद किया कोने का सिर हुआ * और संगि मसादिम और
ठोकर खिलाने वाला पत्थर हुआ ये वे हैं जो सुख़न से सिरकशी
कर के ठोकर खाते हैं वे उसी के लिये मुक़र्रर भी हुए थे *
९ लेकिन तुम ख़ानदानि मक़बूल और शाहि काहिन और उम्मति
मुक़द्दस और क़ौमि मख़सूस हुए हो ताकि तुम उस की फ़ज़ीलतों
की जिसने तुम्हें तारीकी से अपनी अजीब रोशनी में बुलाया
१० ख़बर दो * तुम आगे क़ौम नथे पर अब ख़ुदा के लोग हो और
आगे तुम पर रहमत नथी पर अब तुम पर रहमत हुई *
११ हबीबो मैं तुम से यों जैसे परदेसियों और मुसाफ़िरों से
इल्तिमास करता हूं कि तुम जिस्मानी शहवों से जो जानके
१२ मुक़ाबिल लश्कर कश हैं परहेज़ करो * और अपनी मआश को
ग़ैर क़ौमों के बीच बा आबरू रखो ताकि वे जो तुम्हें बदकार
जानके तुम्हारी ग़ीबत करते हैं तुम्हारे भले कामों पर नज़र करके
१३ तवज्जुह के दिन ख़ुदा की सिताइश करें * पस तुम हरएक
तअइन के जो इनसानों की तरफ़ से है ख़ुदावंद की ख़ातिर से
मुतीअ हो बादशाह के इसलिये कि वुह सब से अअला है *
१४ और हाकिमों के इसलिये कि वे उस के भेजे हुए हैं ताकि
बदकारों को सज़ा दें और उन की जो नेकोकार हैं तअरीफ़
१५ करें * क्योंकि ख़ुदा की मरज़ी यों है कि तुम अच्छे अमल करके
१६ अहमक़ों की नादानी का मुंह बंद कररखो * और अपने

तईं आज़ाद जानो पर आज़ादी के पर्दे में बदी न होवे
१७ बल्कि आप को ख़ुदा के बंदे जानो * सब की हुरमत करो
भाइओं से उलफ़त करो ख़ुदा से डरो बादशाह को इज़्ज़त
१८ दो * ऐ चाकरो अपने ख़ाविंदों की न सिर्फ़ अच्छे और हलीमों
की बल्कि कजबहसों की भी कमाल अदब से महकूम हो *
१९ क्यूंकि अगर कोई ख़ुदा पर नज़र करके मज़लूम होके दुख में
२० सबर करे यिह फ़ज़ीलत है * कि अगर तुम गुनाह करके
ठोंके गये और सबर किया तो कौनसा फ़ख़र है पर अगर नेकी
करके दुख पाते हो और सबर करते हो उस में ख़ुदा के नज़दीक
२१ तुम्हारी फ़ज़ीलत है * कि तुम उसी के लिये बुलाये गये हो
क्यूंकि मसीह भी हमारे वास्ते दुख पाके एक नमूनः हमारे लिये
छोड़ गया है ताकि तुम उसके नक़श क़दम पर चले जाओ *
२२ कि उसने ख़ता न की और उसकी ज़बान में छल बल न
२३ था * वुह गालियां खाके गाली न देता था और दुख पाके
धमकाता न था बल्कि अपने तईं उसके जो अदालत शिआर
२४ है सुपुर्द करता था * और वुह हमारे गुनाह अपने बदन
पर उठा के सूली पर चढ़ गया ताकि हम गुनाहों को बंद से
मरके छूट जायें और रास्तबाज़ी के आलम में जीयें और
उन कोड़ों के सबब से जो उस पर पड़े तुम चंगे होगये *
२५ क्यूंकि तुम भटकी हुई भेड़ों के मानंद थे पर अब जानों
गड़ेरिये और निगाहबान पास फिर आये हो *

तीसरा बाब

१ इसी तरह ऐ रंडीओ तुम अपने शौहरों की फ़रमांबरदारी करो ताकि अगर कलिमः से कोई ऐक सिरकशी करें तो
२ वे बिग़ैर कलिमः के अपनी जोरूओं के चलन से * यअ़नें तुम्हारी सीरतों को जो ख़ौफ़ के साथ है पाकीज़ः देखके
३ नफ़अ़ में मिलें * और तुम्हारी ख़्वाहिश ज़ाहिरी नहो जैसे सिरगूंधना ज़ेवर का पहिन्ना या पोशाक से मुलब्बस होना *
४ बल्कि चाहिये कि दिली मअ़नवी इनसानियत रूहि हलीम ओ मुतमइन की ग़ैर फ़ानी ख़्वाहिश से आरास्तः हो कि यिह
५ ख़ुदा के आगे सब से बेश क़ीमत है * इसी तरह से मुक़द्दस रंडियां भी अगले वक़्त में जिन का तवक्कुल ख़ुदा पर था आपको संवारती थीं और अपने अपने ख़समों की
६ महकूम थीं * चुनांचिः सारह इबराहीम की इताअ़त करती थी और ख़ुदावंद कहती थी सो अगर तुम बेख़ौफ़ ओ
७ ख़तर नेकोकारी करो तो उस की बेटियां हो * वैसही तुम ऐ मर्दो दानिशमंदानः उनके साथ औक़ात बसर करो और रंडी को नाज़ुक बरतन समझके इज़्ज़त बख़्शो और जानो कि निअ़मति हयात की मीरास में हम दोनों शरीक हैं
८ ताकि हमारी दुआऐं मुनक़तअ़ न होजाऐं * ग़रज़ सबके सब ऐकदिल हो और हमदर्द हो बिरादरानः महब्बत करो
९ रहीम और मिहरबान हो * बदी के इवज़ बदी न करो

गाली के इवज़ गाली मत दो बल्कि बिलअकस बरकत की
बात कहो कि तुम जानते हो कि तुम बरकत के वारिस
१० होने को बुलाये गये हो * जो कोई चाहे कि ज़िंदगी
से खुश हो और अच्छे दिनों को देखे सो अपनी ज़ुबान
को बदी से और अपने लबों को दग़ा की बात बोलने से
११ बाज़ रखे * बद से किनारः करे और नेकी पर अमल करे
१२ सुलह की तलाश और पैरवी करे * क्यूंकि खुदावंद की
निगाह रास्तवाज़ों पर और उसके कान उनकी मुनाजात पर
१३ हैं पर खुदावंद का चिहरः बदकारों का मुख़ालिफ़ है * अगर
तुम नेकी की पैरवी किया करो कौन है जो तुम से बद
१४ सलूकी करे * पर अगर तुम रास्तवाज़ी के सबब दुख पाओ
तो नेक बख़्त हो और उनके डराने से मत डरो और न
१५ घबरा जाओ * बल्कि खुदावंद खुदा को अपने दिलों में
मुक़द्दस जानो और हमेशः मुस्तइद रहो कि हरएक को
जो तुम से उस उम्मेद की बाबत जो तुम में है पूछे फ़रोतनी
१६ और अदब से जवाब दो * और इतमीनानि नफ़्स को
मत खोओ ताकि वे जो तुम को अच्छी मसीही ख़सलतों
के सबब मलामत करते हैं उस से शरमिंदः हों कि तुम को
१७ बदकिरदार कहके तुम्हारी बदी करें * क्यूंकि अगर खुदा की
ख़्वाहिश यों है कि तुम दुख पाओ तो भला करके दुख पाना
१८ उस से बिहतर है कि बद करके दुख पाओ * क्यूंकि मसीह

ने भी एक बार गुनाहों के वास्ते रास्तबाज़ ने ज़ालिमों के
इवज़ दुखपाया ताकि वुह हम को खुदा के पास पहुंचाये
कि वुह तो जिसम की रूह से मारा गया लेकिन रूह से
१९ ज़िंदः किया गया * उसने व वज़अ रूहानी उन रूहों
२० को जो नज़र बंद थी जाके वअज़ कही * वे रूहें एक
मुद्दततक जिसवक्त खुदा के सवर ने मुहलत दी यअने नूह के
ऐयाम में जब किश्ती तैयार होती थी नाफ़रमाबरदार थीं और
उस किश्ती में थोड़ी सी जानें पानी से ऊपर आके बचाई
२१ गईं * और उसी की मिसल ग़ुसलि इस्तिबाग़ हम को अब
बचाता है वुह तो बदन के मैल का छुड़ाना नहीं बल्कि
इतमीनानि नफ़्स से खुदा को जवाब देना है और हमको
२२ ईसा मसीह के उठने के तुफ़ैल से बचाता है * कि वुह
आसमान पर जाके खुदा के दहने है और फ़िरिश्ते और कुव्वतें
२३ और कुदरतें उसकी महकूम हुई हैं *

चौथा बाब

१ पस हरगाह मसीह ने हमारे वास्ते जिसमी मौत पाई तो
तुम आप भी उसी अज़्म से मुसल्लह हो कि जिसने जिसमी
२ मौत पाई सो गुनाह से बाज़ रहा * यहां तक कि वुह न
आदमियों की शहवतों के मुवाफ़िक़ बल्कि खुदा की मशीयत
के मुताबिक़ जिसम में अपनी बाक़ी उमर काटता है *
३ इसवास्ते कि ग़ैरक़ौमों के तौर पर चलने को हमारी उमर

से जो कुछ गुज़रा वही बस है कि उस में हम फ़जूर और शहवतों और शराब की मस्ती और ज़मज़मे और बादः परस्ती और बुतों की मकरूह परस्तिश में औक़ात बसर करते थे *
४ और वे तअज्जुब करते हैं कि तुम उस फ़जूर के फ़साद में उनके साथ यिह नहीं गये और बदगोई करते हैं *
५ पर वे उसको जो ज़िंदों और मुरदों के इनसाफ़ करने पर तयार
६ हैं हिसाब देंगे * कि मुरदों को इंजील की बशारत इसलिये दी गई ताकि वे आदमियों के आगे जिस्म की राह से सज़ावारि क़तल हों लेकिन ख़ुदा के नज़दीक रूह में जीएं *
७ और सारी चीज़ों का इनतिहा नज़दीक है इसलिये हुशयार
८ और दुआ करते हुए बेदार रहो * अज़लकुल्ल एक दूसरे को शिद्दत से प्यार करो क्यूंकि महब्बत गुनाहों के वफ़ूर को
९ ढांप देती है * और बाहम बे मुनाक़शः मुसाफ़िर दोस्त
१० रहो * और जिसको जिसक़दर इनआम मिले वुह उसे उन की मानंद जो ख़ुदा की गूनागून निअमतों के ख़ासे
११ ख़ानसामान हैं आपस में बांटे * अगर कोई बोले तो वुह ख़ुदा के कलाम के मुताबिक़ बोले अगर कोई ख़िदमत करे तो इतनी करे जितना उसे ख़ुदा ने मक़दूर दिया है ताकि ईसा मसीह के वास्तः से सब में ख़ुदा का जलाल ज़िलवःगर हो कि शौकत और क़ुदरत अबदतक उस की है आमीन *
१२ ऐ हबीबो तुम उस तानेवाली सोज़िश से जो इमतिहान के

लिये तुम में पैदा हुई है यिह जानके तअज्जुब न करो
१३ कि हम पर अजब हादिसः होता है * बल्कि इसलिये
कि तुम मसीह के दुखों में शरीक हो ख़ुशी करो ताकि तुम
उस वक़्त जब उसका जलाल ज़ाहिर हो ख़ुशी से वज्द में
१४ आओ * अगर तुम मसीह के नाम के सबब से रुसवा
हो तो तुम्हारी सआदत है क्यूंकि जलाल की और ख़ुदा की रूह
तुम पर बैठती है वुह उनके बाइस से मौरिदि तकफ़ीर
१५ है लेकिन तुम्हारे सबब से मह्मूद है * और ख़बरदार
तुम में से कोई क़ातिल या चोर या बदकार या ग़रज़ः
१६ गर्दों का सा दुख न पावे * पर अगर कोई ईसाई होने के
सबब से दुख पावे तो न शरमावे बल्कि उस सबब से ख़ुदा का
१७ शुक्र करे * क्यूंकि अब वुह वक़्त आपहुंचा जिस में
ख़ुदा के ख़ानदान पर क़हर की इबतिदा होगी पस अगर
हम से शुरूअ है तो उनका जो ख़ुदा की इंजील के मह्कूम
१८ नहीं क्या अंजाम होगा * और अगर रास्तबाज़ दुशवारी
से बचाया जावे तो बेदीन और गुनाहगार का ठिकाना कहां *
१९ पस जो ख़ुदा की मरज़ी से दुख पाते हैं सो उस कोआलिक़ सादिक़
जानके नेकोकारी करते हुए अपनी जानों को उस के सुपुर्द करें

पांचवां बाब

१ क़सीसों से जो तुम्हारे बीच हैं मैं जो उनके साथ क़सीस
और मसीह की अज़ीयतों का गवाह और उस जलाल

में जो ज़िलअःगर होगा शरीक हो इलतिमास करता हूं *
२ कि तुम ख़ुदा के उस गल्ले की जो तुम्हारे बीच है पासवानी
करो न ज़रूरत से बल्कि ख़ुशी से न ख़ुदग़रज़ी से बल्कि
३ दिलख़्वाही से निगहबानी करो * और ख़ुदावंद की मीरास
४ की ख़ाविंदी न करो बल्कि गल्ले के लिये नमूने बनो * और
जब सरदारि शुबान नमूद होगा तब तुम जलाल का ऐसा
५ हार पाओगे जो मुरझाता नहीं * इसी तरह ऐ जवानो
तुम बुज़ुर्गों के महकूम हो और सब के सब दूसरे से फ़रोतर
होकर ख़ाकसारी को पहन लो क्यूंकि ख़ुदा मतकब्बिरों का साम्हना
६ करता है पर ख़ाकसारों को निअ़मत देता है * सो तुम
ख़ुदा के दस्ति क़वी के नीचे दबे रहो ताकि वुह तुम्हें वक़्त
७ पर सरफ़राज़ करे * और अपनी सारी फ़िक्र उस पर डाल
८ दो क्यूंकि वुह तुम्हारे वास्ते अंदेशःमंद है * हुशयार और
बेदार हो क्यूंकि तुम्हारा मुद्दई यअ़ने इबलीस बबरि ग़र्रा
९ के मानंद ढूंढता फिरता है कि किसू को खाजावे * पर तुम
ईमान में मुस्तक़िल होके उसका मुक़ाबलः करो और जान
रखियो कि वअ़इनः ऐसही नौअ़ की अज़ीयतें तुम्हारे भाईओं
१० पर जो दुनया में हैं वारिद होती हैं * अब ख़ुदा जो
सब निअ़मतों का बख़शिंद: है जिसने हम को अपने जलालि
अबदी के लिये मसीह ईसा में बुलाया है आपही तुमको
बअ़द उस के कि थोड़ासा दुख पाचुको मज़बूत और उस्तवार और

११ मुस्तक़िल और पायदार करे * जलाल और ज़ोर अबदतक
१२ उसी का है आमीन * मैं ने तुम्हें सिलवानिस की मअरिफ़त जो मेरी दानिस्त में दियानतदार भाई है इख़तिसार से लिखके तरग़ीब और गवाही दी कि ख़ुदा का फ़ज़्ल
१३ हाक़िक़ यही है जिस पर तुम्हारा क़ियाम है * अब बाबल के अहलि कलीसया जो तुम्हारे साथ बरगुज़ीदः हुए और मेरा
१४ बेटा मरक़स तुम्हें सलाम कहते हैं * तुम मुहिब्बानः बोसः लेके बाहम सलाम अलैक करो तुम सब को जो मसीह ईसा में हो आराम होवे आमीन *

पतरस का दूसरा मकतूब सब के लिये

पहला बाब

१ शमऊन पतरस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का बंदः और हवारी है उनको जिन्हों ने ख़ुदा और हमारे बचाने वाले ईसा मसीह की रास्तबाज़ी से ऐसा ईमान पाया जो हमारे ईमान का हम
२ क़ीमत है * ख़ुदा और हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की शिनाख़्त का फ़ज़्ल और आराम तुम्हारे लिये वफ़ूर से होवे *
३ चुनांचिः हम ने उसे जिसने हमें हशमत और नेकी के लिये तलब किया पहचान के ज़ोरि उलूहियत से ज़िंदगानी
४ और दीनदारी की सब चीज़ें पाईं * और इन चीज़ों से

निहायत बड़े और क़ीमती वअदे हमसे किये गये ताकि तुम उस फ़साद से जो दुनया में शहवत के सबब से है छुटकार उन के वसीले से उस तबीअत में जो इलही है शरीक हो
५ जाओ * पस तुम उस में कोशिश तमाम करके अपने ईमान पर
६ नेकी और नेकी पर इरफ़ान * और इरफ़ान पर परहेज़ और
७ परहेज़ पर सबर और सबर पर तक़ावत * और तक़ावत पर बिरादराना: उलफ़त और बिरादराना: उलफ़त पर महब्बत ईज़ाद
८ करो * कि ये चीज़ें अगर तुम में मौजूद और अफ़ज़ूद हों तो तुम को हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह की शिनाख़ में
९ निकम्मा और बेबर नहोने देंगे * जिस किसी के पास ये चीज़ें नहीं हैं वुह अंधा है और आंखें मूंदता है और यिह भूल गया कि उस के अगले गुनाह धोये गये थे *
१० पस ऐ भाईओ ज़ियाद: जिद्दओ जिहद करो कि तुम्हारा तलबीद: और बरगुज़ीद: होना साबित हो क्यूंकि तुम अगर
११ ऐसे काम करो तो कभी न गिरोगे * बल्कि तुम्हें उससे हमारे ख़ुदावंद और बचानेवाले ईसा मसीह की अबदी सलतनत
१२ में बहुत ज़ियाद: रसाई इनायत होगी * इसवास्ते मैं ग़ाफ़िल नहोके वुह बातें तुम्हें नित याद दिलाऊंगा हरचंद कि तुम वाक़िफ़ हो और उस सिद्क़ पर जो तुम्हारे पास है क़ाइम
१३ हो * बल्कि मैं उसे वाजिब जानता हूं कि जबतक मैं इस मसकन में हूं तुम्हें याद दिला दिलाके तहरीक करूं *

१४ कि मैं जानता हूं वक़्त नज़दीक पहुंचा है कि जैसा हमारे खुदावंद ईसा मसीह ने मुझे बतलाया मैं अपना मसकन छोड़
१५ दूं * सो मैं कोशिश में हूं कि तुम मेरी वफ़ात के बअ़द
१६ इन बातों को हमेशः याद किया करो * क्यूंकि हमने अपने खुदावंद ईसा मसीह की क़ुदरत और आमद को तुम पर न अफ़सून ओ अफ़सानः की पैरवी करके बल्कि उसकी बुज़ुर्गी
१७ के गवाह होके ज़ाहिर किया * कि उसने बाप खुदा से हुरमत और इज़्ज़त पाई कि जलाल ने जिसकी शान अअ़ज़म है उस के हक़ में ऐसी आवाज़ दी कि यिह मेरा प्यारा बेटा है
१८ जिससे मैं राज़ी हूं * और हमने जब उसके साथ कोहि मुक़द्दस पर थे यिह आवाज़ आसमान से आती सुनी *
१९ सो हम को नबियों की बात ज़ियादः यक़ीन हुआ और तुम अच्छा करते हो जो उस पर यिह समझ के नज़र करते हो कि वुह एक चिराग़ था जो अंधेरी जगह में जबतक पौ नफटती थी और सुबह का तारा तुम्हारे दिलों में ज़ाहिर
२० नहुआ था रोशनी बख़्शता था * कि तुम यिह सब से पहले जानते हो कि किताब में हरएक नबुव्वत की बात आप से
२१ आप बयान नहीं की गई * क्यूंकि नबुव्वत की बात आदमी की ख़्वाहिश से कभी नहीं हुई बल्कि खुदा के मुक़द्दस लोग रूहि क़ुद्स के बुलवाये बोलते थे *

दूसरा बाब

१ झूठे नबी भी उस क़ौम में थे चुनांचिः झूठे मुअल्लिम तुम में भी होंगे जो हलाक करने वाली बिदअतें ईजाद करेंगे और वे उस आक़ा का जिस ने उन्हें मोल लिया इनकार करेंगे
२ और आप को जल्द ख़राब करेंगे * बहुत से उनके फ़सादों की पैरवी करेंगे उनके बाइस से राहि रास्त मलामत की जायगी *
३ वे अपने लालच से पक्की बातों के पर्दः में तुम को अपने नफ़अ का बाइस बनायेंगे क़तल का फ़तवे जो मुद्दत से उन पर हुआ आने में कहालत नहीं करता और उनकी
४ ख़राबी ऊंघती नहीं * क्यूंकि जब ख़ुदा ने गुनहगार फ़िरिश्तों को नछोड़ा बल्कि जहन्नम में डालके तारीकी की ज़ंजीरों के
५ हवालः किया ताकि अदालत तक पड़े रहें * और अगली आबादी को भी नछोड़ा बल्कि तूफ़ान को मुनाफ़िक़ों के आलम पर मुसल्लत करके आठवें शख़्स नूह को जो रास्तबाज़ी की वअज़
६ कहता था महफ़ूज़ रखा * और सदूम और अमरः के शहरों को ख़ाकिस्तर करके सिर नगूं करने का हुक्म देके इस्तिक़बाल
७ के मुनाफ़िक़ों के लिये महल इबरत बनाया * और लूत को जो रास्तबाज़ और शरीरों की नापाक ख़सलतों से दिक़ था
८ रिहाई बख़्शी * कि वुह रास्तबाज़ उन में रहकर उनके बेशरअ अमलों को देख सुनके हररोज़ अपने बेरिया दिल
९ में कलपता था * पस वुह ख़ुदावंद दीनदारों को इमतिहान

से रिहा कर जानता है और वे दीनों को अदालत के
१० दिन तक अज़ाब में रख जानता है * ख़ुसूसन् उन को
जो नापाक शौक़ों से जिसम की पैरवी करते हैं और अरबाबि
हुकूमत को हक़ीर जानते हैं वे शोख़ ओ सिरकश हैं और
११ आलीक़दरों को बद कहते हूऐ नहीं डरते * अगरचि
फ़िरिश्ते जो कुव्वत और क़ुदरत में बालातर हैं ख़ुदावंद
के आगे गालियां देके उन पर दअवी नहीं करते *
१२ लेकिन वे उन हैवानों की मानंद जो ज़ाती वे नुतक़ हैं और
गिरिफ़्तार और ख़राब होने के लिये मौजूद हूऐ हैं उन चीज़ों
की जिन से वे नावाक़िफ़ हैं मज़म्मत करके अपने ही फ़साद
१३ में फ़ासिद होंगे * वे नारास्ती की मुकाफ़ात हासिल करते
हैं कि वे सहर तक ऐयाशी को पसंद करते हैं और सरापा
दाग़ और ऐब हैं और तुम्हारे साथ ज़ियाफ़त खाते हूऐ
१४ अपनी दग़ाबाज़ियों पर ख़ुश होते हैं * और उन की आंखें
ऐसी हैं जिन में फ़ाहिशः बसती है और गुनाह से बाज़
रह नहीं सकतीं वे वेइस्तिक़लाल जानों को दग़ा देते हैं
उन का दिल लालचों में मश्शाक़ है और वे लअनत की
१५ औलाद हैं * वे सीधी राह छोड़कर भटके हैं उन्हों ने
बिलआम बाऊर की तरीक़ की पैरवी की जिसने नारास्ती की
१६ उजरत को अज़ीज़ जाना * अपनी ख़ताकारी पर इलज़ाम
पाया कि बेज़बान गधे ने आदमी की तरह बोल के उस

१७ नदी की दीवानगी को रोक रखा * वे सूखे कूए और बदलियां हैं जिन्हें तूफ़ान दौड़ाता है अबदी तारीकी की
१८ कालक उनके लिये है * वे घमंड की वेहूदः बातें बोलके उन्हें जो गुमराहों में से साफ़ बच निकले थे जिसमी ख़्वाहिशों
१९ और फ़िस्क़ ओ फ़ुजूर में गिरिफ़्तार कर देते हैं * वे आज़ादगी का क़रार उनसे करके आप फ़साद के ग़ुलाम हैं क्यूंकि वुह जो किसी
२० का मग़लूब हुआ सो उसी का ग़ुलाम हुआ * सो अगर ख़ुदावंद और बचानेवाले ईसा मसीह की पिछान के सबब दुनया की आलूदगियों से बचकर उनमें फिरके फंसें और मग़लूब हों तो
२१ उनका पिछला हाल पहले से बदतर हो चुका * क्यूंकि रास्ती की राह न जानना उनके लिये उससे बिहतर था कि जानके उस मुक़द्दस हुक्म से जो उन्हें सौंपा गया फिर जावें *
२२ पर यिह सच्ची मसल उनका हसबि हाल है कि कुत्ता अपने इस्तिफ़राग़ की तरफ़ और धुई हुई सूअरनी दलदल में लोटने को फिर गये हैं *

तीसरा बाब

१ ऐ हबीबो मैं तुम्हें अब दूसरा मकतूब लिखता हूं और ख़तों की तकरार से तुम्हारे दिल को जो पाक है याद दिही
२ करके उभारता हूं * ता कि तुम उन बातों को जो मुक़द्दस नबियों ने पेशतर कहीं और हमने जो ख़ुदावंद और बचानेवाले के हवारी हैं जो हुक्म किया उस को याद रखो *

३ और यिह पहले जानरखो कि आख़िरी ज़माने में मज़ह़्ठाः
४ करनेवाले ज़ाहिर होंगे जो नफ़्स की पैरवी करेंगे * और
कहेंगे कि उसका वअ्दः क्या होगया क्यूंकि जब से बाप
दादे सोगये सब कुछ इबतिदाय आफ़िरीनिश से अबतक
५ वैसही है जैसा था * उसे जान बूझ के नावाक़िफ़ बने
हैं कि पहले ख़ुदा के ह़ुक्म से आसमान हूए और ज़मीन
६ पानी से पानी में बनी * और उन के सबब से क़दीम
७ आबादी पानी में डूब के तबाह हूई * पर आसमान औ
ज़मीन जो अब हैं उसी कलिमः से महफ़ूज़ हैं और
उसदिन तक कि बेदीनों के लिये अदालत और हलाकत
८ की नज़रबंद हें ता कि जिलाये जायें * पर ऐ ह़बीबो यिह
बात तुम पर छिपी न रहे कि ख़ुदावंद कने एक दिन हज़ार
बरस के बराबर है और हज़ार बरस एक दिन के बराबर *
९ ख़ुदावंद अपने वअ्दे में सुस्त नहीं चुनांचिः कई एक सुस्ती
का गुमान करते हैं पर हम को इसलिये मुहलत देता है
कि किसी की हलाकत नहीं चाहता बल्कि चाहता है कि
१० सब तौबः करें * लेकिन ख़ुदावंद का दिन जिसतरह रात
को चोर आता है आवेगा और उसी में सब आसमान सन्नाटे
से जाते रहेंगे और अनासिर जलकर पिघल जायेंगे और
ज़मीन उन सनायअ समेत जो उस में हैं जलके उड़ जायगी *
११ पस जबकि ये सब चीज़ें फ़ानी हैं तो तुम को पाक

१२ मईएतों और इबादतों में कैसा बना लाज़िम है * और ख़ुदा के उस दिन की आमद के मुन्तज़िर और मुश्ताक़ हो जिस में सब आसमान जलकर परागंदः हो जायेंगे और
१३ अनासुर सोख़्त होकर पिघल जायेंगे * पर हमने नये आस्मान और नई ज़मीन की जिन में रास्तबाज़ी रहती
१४ है उसके बअदे के मुवाफ़िक़ इन्तिज़ारी करते हैं * इसवास्ते ऐ हबीबो तुम उन चीज़ों के मुन्तज़िर बनके सई करो कि तुम बेदाग़ और बेऐब होके उसके आगे आसूदः हो *
१५ और हमारे ख़ुदावंद के सब्र को अपनी नजात जानो चुनांचिः हमारे प्यारे भाई पूलूस ने भी उस अक़्ल के मुवाफ़िक़ जो
१६ उसे दी गई तुम्हारे लिये तहरीर किया * चुनांचिः सारे मकतूबों में उन बातों की बाबत बोला है और उन में कईएक सुख़न हैं जिनका समझना मुश्किल है और वे जो जुहला और ज़ुअफ़ा हैं उनके मअनों को भी दूसरी किताबों के मज़मूनों की तरह अपनी हलाकत के लिये फेरते
१७ हैं * इसवास्ते ऐ अज़ीज़ो तुम आगे ही से जानकर परहेज़गार रहो न होवे कि तुम मुनाफ़िक़ों की ग़लती में और उनके
१८ साथ पड़के अपनी उस्तवारी से जाते रहो * बल्कि फ़ज़ल और हमारे ख़ुदावंद और बचानेवाले ईसा मसीह की शिनाख़्त में तरक़्क़ी करते रहो उसी का जलाल अब है और अबद तक होगा आमीन *

यूहन्ना का पहला मकतूब सबके लिये ।

पहला बाब

१ हयात के कलिमः की बाबत जो इब्तिदा से था जिसे हमने सुना और अपनी आंखों से देखा और ताक रखा जिसको हमारे हाथों ने छूआ हम ख़बर देते हैं * २ कि ज़िंदगी ज़ाहिर हुई और हयाति अबदी को जो बापके पास थी और हम पर नुमायां हुई हमने देखा उसकी गवाही देते हैं और तुमको मुत्तलअ करते हैं * ३ जो कुछ हमने सुना और देखा उसकी ख़बर तुम्हें देते हैं ताकि तुम भी हमारी तरह शामिल होओ और हमारा शामिल होना बाप में और उसके बेटे ईसा मसीह में है * ४ और हम यिह बातें तुम्हें इसवास्ते लिखते हैं कि तुम्हारा सरूर कामिल होवे *

५ और वुह ख़बर जो हमने उससे सुनी और फिर तुम्हें देते हैं सो यही है कि ख़ुदा नूर है और उस में ज़ुल्मत
६ असलन् नहीं * अगर हम कहें कि हम उस में मिले हुए हैं और हमारी रविश तारीकी में हो तो झूठे हैं
७ और सच पर अमल नहीं करते * पर अगर हम जिस तरह वुह नूर में है नूर में चलें तो हम आपस में आमेज़िशः हैं और उसके बेटे ईसा मसीह का लहू हम को सारे गुनाहों से पाक करता है * अगर बोलें कि हम बेगुनाह हैं तो हम अपने तईं फ़रेब देते हैं और रास्ती हम में
९ नहीं * अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वुह अपने सिद्क़ और अद्ल से हमारे गुनाह मुआफ़ करेगा और हमको हरनौअ की नारास्ती से पाक कर चुका *
१० और अगर कहें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम उसे झुठलाते हैं और उसकी बात हममें नहीं *

दूसरा बाब

१ ऐ मेरे बच्चो मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूं ताकि तुम गुनाह न करो और अगर कोई गुनाह करे तो ईसा मसीह बाप
२ के पास हमारा शफ़ीअ है * जो हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारः है फ़क़त् हमारे गुनाहों का नहीं बल्कि तमाम दुनया
३ के गुनाहों का * अगर हम उसके हुक्मों को याद रखें
४ तो हम उससे जानते हैं कि हमने उसको जाना * और वुह

जो कहता है कि मैं उसे जानता हूं और उसके हुक्मों को
याद नहीं रखता सो झूठा है और सच्चाई उसमें नहीं *
५ पर वुह जो उसकी बात याद रखता है यक़ीनन् उस में
ख़ुदा का इश्क़ कामिल हूआ हम उससे जानते हैं कि हम
६ उसमें हैं * वुह जो कहता है कि मैं उसमें बसता हूं चाहिये
७ कि वुह उस की अंदाज़ पर चले * ऐ भाईओ मैं तुम्हारे
लिये कोई नया फ़रमान नहीं लिखता मगर क़दीम हुक्म
जो तुम को इबतिदा में मिला पुराना हुक्म वुह बात है जो
८ तुमने इबतिदा में सुनी * बहरहाल एक नया हुक्म तुम्हें
लिखता हूं जिसका नया होना तुम में और उस में सच है
क्यूंकि तारीकी गुज़रन है और नूरि हक़ीक़ी अब चमकता
९ है * वुह जो कहता है कि मैं रोशनी में हूं और अपने
१० भाई का दुशमन है हनोज़ तारीकी में है * वुह जो अपने
भाई को दोस्त रखता है उजाले में रहता है और उस में
११ संगि राह नहीं * पर जो अपने भाई से दुशमनी रखता है
अंधेरे में है तारीकी में चलता है और नहीं जानता किधर
चला जाता है क्यूंकि तारीकी ने उसकी आंखे अंधी कीं
१२ हैं * ऐ बच्चो मैं तुम्हें लिखता हूं क्यूंकि तुम्हारे गुनाह
१३ उस के नाम से मुआफ़ हूए * ऐ आबा मैं तुम्हें लिखता
हूं क्यूंकि उसे जो इबतिदा से था तुमने जाना ऐ जवानो मैं
तुम्हें लिखता हूं क्यूंकि उस शरीर पर ग़ालिब हूए हो ऐ

बच्चो मैं तुम्हें लिखता हूं क्यूंकि तुमने बाप को जाना है *
१४ ऐ बुज़ुर्गो मैंने तुम्हें लिखा है क्यूंकि जो इबतिदा से था
उसे तुमने जाना ऐ जवानो मैं ने तुम्हें लिखा है क्यूंकि तुम
दिलेर हो और खुदा की बात तुममें बसती है और तुम
१५ शरीर पर ग़ालिब हूए हो * दुनया को और दुनयवी चीज़ों
को मत चाहो जो कोई दुनया को चाहे उस में बाप की
१६ चाह नहीं * क्यूंकि हरएक चीज़ जो दुनया मे है यअ़ने
हिरसि जिस्मी और हिरसि चश्मी और ग़ुरूरि ज़िंदगी
१७ बाप से नहीं दुनया से है * दुनया गुज़रन है और उस
की हिरस भी लेकिन जो खुदा की मरज़ी पर चलता है वही
१८ अबद तक रहता है * ऐ बच्चो पिछली साअ़त है और
जैसा तुम ने सुना है कि मसीह का मुख़ालिफ़ आता
है सो अभी बहुत से मसीह के मुख़ालिफ़ हूए हैं उससे
१९ हम जानते हैं कि पिछली साअ़त है * वे हम में से निकले
मगर हम में के नथे अगर वे हम में के होते तो हमारे साथ
रहते होते यिह इतने लिये कि ज़ाहिर होवे कि सब हम मे के
२० नहीं * और तुमने उस मुक़द्दस की तरफ़ से तदहीन पाई
२१ और सब कुछ जानते हो * मैं ने तुम्हें न इसवास्ते लिखा
कि तुम सच को नहीं जानते पर इस लिये कि तुम उसे
जानते हो और यिह कि हरएक झूठ सच में से नहीं है *
२२ कौन झूठा है मगर वुह जो इनकार करता है कि ईसा वुह

मसीह नहीं जो बाप और बेटे का इनकार करता है मसीह
२३ का मुख़ालिफ़ है * जो कोई बेटे का इनकार करता है सो
२४ बाप का इनकार करता है * इसीवास्ते जो तुमने इबतिदा
से सुना है वही तुम में बसे और अगर वुह जो तुमने
इबतिदा से सुना है तुम में रहे तो तुम भी बेटे और बाप में
२५ रहोगे * और उसने जो वअ़दः हम से किया है सो यही
२६ हयाति अबदी का है * मैंने ये बातें तुमको उनकी बाबत
२७ जो तुम्हें फ़रेब देते हैं लिखीं * जो तदहीन तुमने उससे
पाई तुम में रहती है और तुम उसके मुहताज नहीं कि
कोई तुम्हें सिखावे पर जैसा वुह तदहीन तुम्हें सब बातें
सिखाती है और सच है झूठ नहीं और जैसा उसने तुम्हें
२८ तअ़लीम दी है वैसा तुम उसमें रहो * अब ऐ बच्चो तुम
उसमें बसो ताकि जब वुह ज़ाहिर होवे तो हम बेपरवा होवें
२९ और जब वुह आवे उससे शरमिंदः नहोवें * अगर जानते
हो कि वुह रास्तबाज़ है तो जानते हो कि हरएक शख़्स जो
रास्तबाज़ी पर अ़मल करता है उसही से पैदा हुआ है *

तीसरा बाब

१ देखो क्या महब्बत बापने हमसे की कि हम ख़ुदा के फ़रज़ंद
कहलावें इसवास्ते दुनया हमको नहीं जानती कि उसने
२ उसी को नहीं जाना * अज़ीज़ो अब हम ख़ुदा के फ़रज़ंद
हैं और यिह तो हनोज़ ज़ाहिर नहीं होता कि हम

क्या होगी पर हम जानते हैं कि जब वुह ज़ाहिर होगा
हम उस जैसे होंगे क्यूंकि तब हम उसे वैसा जैसा वुह
३ है देख लेंगे * और जो कोई उससे यिह उम्मेद रखता
है वुह अपने तईं ऐसा जैसा वुह है पाक करता है *
४ और जो कोई गुनाह करता है सो ख़िलाफ़ि शरअ करता है
५ क्यूंकि गुनाह जो है ख़िलाफ़ि शरअ है * और तुम यिह
जानते हो कि वुह हमारे गुनाह उठाने को ज़ाहिर हूआ
६ और उस में गुनाह नहीं * जो कोई उस में बसता है
ख़ता नहीं करता और जो कोई ख़ता करता है उसने उसे
७ न देखा और न जाना * ऐ बच्चो तुम्हें कोई फ़रेब देने
न पावे जो कोई रास्तबाज़ी करता है सो रास्तबाज़ है जैसा
८ वुह रास्तबाज़ है * और जो गुनाह करता है सो इबलीस
का है कि इबलीस आग़ाज़ से आसी है और ख़ुदा का
बेटा इतनेही लिये ज़ाहिर हूआ कि इबलीस के अमलों
९ को नाबूद करे * वुह जो ख़ुदा से मुतवल्लिद हूआ है
गुनाह नहीं करता क्यूंकि उसका तुख़्म उस में बाक़ी है सो वुह
गुनाह नहीं कर सकता क्यूंकि वुह ख़ुदा से मुतवल्लिद हूआ
१० है * इसी से वे जाने गये कि ख़ुदा के फ़रज़ंद और शैतान के
फ़रज़ंद हैं और जो कोई रास्तबाज़ी नहीं करता ख़ुदा का नहीं
और न वुह जो अपने भाई को अज़ीज़ नहीं रखता
११ ख़ुदा का है * क्यूंकि वुह पैग़ाम जो तुमने इबतिदा से सुना

११ यही है कि हम एक एक को प्यार करें * और क़ैन के मानंद नहोवें कि वुह उस शरीर का था और अपने भाई को क़तल किया और उसने उसे क्यूं क़तल किया इसवास्ते कि उस के काम बुरे थे और उसके भाई के काम सालिह
१३ थे * ऐ मेरे भाइओ अगर दुनया तुम से दुश्मनी करे
१४ तअज्जुब न करो * हम तो जानते हैं हम मौत से गुज़र के ज़िंदगी में आये क्यूंकि हम भाईओं से उल्फ़त रखते हैं जो अपने
१५ भाई से उल्फ़त नहीं रखता सो मौत में रहता है * और जो कोई अपने भाई का बुग़ज़ रखता है ख़ूनी है और तुम जानते हो किसी ख़ूनी में हयाति अबदी नहीं बसती *
१६ हमने यहां से महब्बत को पहचाना कि उसने हमारे वास्ते अपनी जान फ़िदा की लाज़िम है कि हम भी भाईओं के
१७ वास्ते अपनी जान देवें * और जिस किसी पास मालि दुनया हो और वुह भाई को मुहताज देखे और अपने तईं रहम से बाज़ रखे तो ख़ुदा की महब्बत उस में क्यूंकर
१८ बसती है * ऐ मेरे बच्चो चाहिये कि हम न लफ़ज़ी और ज़बानी उल्फ़त बल्कि हक़ीक़ी और तहक़ीक़ी करें *
१९ हम तो इसही से जानते हैं कि हम सच के हैं और
२० अपने दिलों को उसके आगे इतमीनान बख़्शेंगे * क्यूंकि अगर हमारा दिल हमें इलज़ाम दे ख़ुदा तो हमारे दिल
२१ से बड़ा है और सब जानता है * ऐ ह़बीबो अगर हमारा

दिल हमें इलज़ाम न दे तो हम ख़ुदा के पास बे परवा हैं *
२२ हम जो कुछ उससे मांगते हैं लेते हैं क्यूंकि हम उसके हुक्मों
को याद रखते हैं और जो कुछ उसे ख़ुश आता है सो
२३ करते हैं * और उस का हुक्म यिह है कि हम उसके बेटे
ईसा मसीह के नाम पर ईमान लावें और एक एक को
२४ जैसा उसने हुक्म किया है प्यार करें * और जो उसके
हुक्मों को याद रखता है यिह उसमें और वुह इसमें रहता
है और उससे यअ़्ने रूह से जो उसने हमें दी है जानते
हैं कि वुह हममें रहता है *

चौथा बाब

१ ऐ हबीबो तुम हरएक रूह को मसदीक़ न करो बल्कि रूहों
को आज़माओ कि वे ख़ुदा की तरफ़ से हैं कि नहीं क्यूंकि
बहुत से झूठे पैग़म्बरों ने दुनया में ख़ुरूज किया है *
२ तुम उससे रूहि ख़ुदा को जानते हो कि जो रूह इक़रार
करती है कि ईसा मसीह जिसम में ज़ाहिर हूआ वुह ख़ुदा
३ की है * और जो रूह इक़रार नहीं करती कि ईसा
मसीह जिसम में आया ख़ुदा की तरफ़ से नहीं यही मसीह
की मुख़ालिफ़ है जिसकी ख़बर तुमने सुनी कि आती है और
४ वुह तो दुनया में आचुकी * ऐ बच्चो तुम तो ख़ुदा के हो
और उन पर ग़ालिब हूए हो क्यूंकि जो तुम में है सो उस में
५ जो दुनया में है अअ़ज़म है * वे दुनया के हैं इसवास्ते दुनया

६ को वोलते हैं और दुनया उनकी सुनती है॰ हम ख़ुदा के हैं जो ख़ुदा को पहचानता है हमारी सुनता है और जो ख़ुदा का नहीं हमारी नहीं सुनता हम उसी से हक़ीक़त
७ की रूह और गुमराही की रूह को जान लेते हैं॰ ऐ अज़ीज़ो आओ हम एक एक को प्यार करें क्योंकि महब्बत जो है ख़ुदा से है और जिस में महब्बत है वुह ख़ुदा से
८ मुतवल्लिद हुआ है और ख़ुदा को पहचानता है॰ जिस में महब्बत नहीं सो ख़ुदा को नहीं जानता क्योंकि ख़ुदा
९ महब्बत है॰ और ख़ुदा की महब्बत जो हम से है उससे ज़ाहिर हुई कि ख़ुदा ने अपने एकलौते बेटे को दुनया
१० में भेजा ताकि हम उसके सबब से हयात पावें॰ सो महब्बत उस में नहीं कि हमने ख़ुदा से महब्बत रखी बल्कि उस में है कि उस ने हम से महब्बत रखी और अपने बेटे को भेजा कि हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारः होवे॰
११ ऐ अज़ीज़ो हरगाह ख़ुदा ने हम से ऐसी महब्बत की तो लाज़िम
१२ है कि हम भी एक एक से महब्बत रखें॰ किसी ने ख़ुदा को कभी नहीं देखा अगर हम एक दूसरे को प्यार करें तो ख़ुदा हम में रहता है और उस की महब्बत हम में
१३ कामिल हुई॰ हम उसही से जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और वुह हम में कि उसने अपनी रूह में से
१४ हमें दिया॰ और हमने देखा है और गवाही देते हैं

१५ कि बाप ने बेटे को भेजा कि आलम को बचावे * जो कोई इक़रार करे कि ईसा ख़ुदा का बेटा है ख़ुदा उस में और १६ वुह ख़ुदा में रहता है * हमने ख़ुदा महब्बत को जो हम से है जाना और उस पर इअतिक़ाद किया ख़ुदा महब्बत है वुह जो महब्बत में रहता है ख़ुदा में रहता है और ख़ुदा उस में * १७ महब्बत के कामिल होने की दलील यिह है कि हम अदल के दिन बेपरवा रहें क्यूंकि जैसा वुह है वैसेही हम १८ दुनया में हैं * महब्बत में दहशत नहीं बल्कि महब्बत कामिल दहशत को निकाल देती है क्यूंकि दहशत में अज़ाब है वुह जो डरता है महब्बत में कामिल नहीं हूआ * १९ हम उसे प्यार करते हैं क्यूंकि पहले उसने हमें प्यार २० किया * अगर कोई कहे मैं ख़ुदा से महब्बत रखता हूं और अपने भाई से दुशमनी रखे झूठा है क्यूंकि अगर वुह अपने भाई की जिसे उसने देखा है महब्बत नहीं रखता तो ख़ुदा की जिसको उसने नहीं देखा क्यूंकार महब्बत २१ रख सकता है * हम ने उससे यिह हुक्म पाया है कि जो कोई ख़ुदा से महब्बत रखता है सो अपने भाई से भी महब्बत रखे *

पांचवां बाब

१ जो कोई ईमान लाता है कि ईसा वही मसीह है सो ख़ुदा से मुतवल्लिद हूआ है और जो कोई वालिद को दोस्त

रखता है वुह उससे भी जो उससे मुतवल्लिद हूआ है
१ मह़ब्बत रखता है॰ जब हम ख़ुदा से मह़ब्बत रखते हैं
और उसके ह़ुक्मों को याद करते हैं तो जानते हैं कि
२ हम ख़ुदा के फ़रज़ंदों से भी मह़ब्बत रखते हैं॰ क्यूंकि
ख़ुदा की मह़ब्बत यिह है कि हम उसके ह़ुक्मों को याद
४ रखें उसके अह़काम तो भारी नहीं॰ जो कि ख़ुदा से
मुतवल्लिद हूआ है दुनया पर ग़ालिब होता है और
वुह ज़फ़र दुनया जिसकी मग़लूब है हमारा ईमान है॰
५ कौन है जो दुनया पर ग़ालिब है मगर वही जिसका
६ इअ़तिक़ाद है कि ईसा ख़ुदा का बेटा है॰ यिह वही
है जो पानी और लहू के साथ आया यअ़ने ईसा मसीह़
जो न फ़क़त पानी से बल्कि पानी और लहू के साथ
आया और रूह़ है जो गवाही देता है और रूह़ सची है॰
७ क्यूंकि तीन हैं जो आसमान पर गवाही देते हैं बाप
और कलिमः और रूह़ि क़ुद्स और वे तीनों ऐक हैं॰
८ और तीन हैं जो ज़मीन पर गवाही देते हैं रूह़ और
पानी और लहू और ये तीनों ऐक में मुत्तह़िद हैं॰
९ अगर हम आदमियों की गवाही क़बूल करें तो ख़ुदा की
गवाही अअ़ज़म है क्यूंकि ख़ुदा की गवाही जो उसने
१० अपने बेटे के वास्ते दी है यिह है॰ जो कि ख़ुदा के
बेटे पर ईमान लाता है गवाही उसके बीच है जो ख़ुदा

पर ईमान नहीं लाया उसने उसको झूठा किया क्यूंकि उसने उस गवाही को जो ख़ुदा ने अपने बेटे के वास्ते दी
११ है यक़ीन नहीं किया ॰ और वुह गवाही यिह है कि ख़ुदा ने हमें हयाति अबदी बख़्शी और यिह हयात
१२ उसके बेटे में है ॰ जिस के साथ बेटा है उसके साथ हयात है जिस के साथ ख़ुदा के बेटा नहीं उस के साथ
१३ हयात नहीं ॰ मैं ने तुम को जो ख़ुदा के बेटे के नाम पर ईमान लाये हो यिह सब कुछ लिखा ता जानो कि हयाति अबदी तुम्हारे लिये है और ख़ुदा के बेटे के नाम पर
१४ ईमान लाओ ॰ और हमारी जुरअत जो उसके आगे है सो यही है कि अगर हम उसकी मरज़ी के मुवाफ़िक़ कुछ मांगें
१५ वुह हमारी सुनता है ॰ और अगर हम जानते हैं कि जो कुछ हम उससे तलब करते हैं वुह हमारी सुनता है तो हम जानते हैं कि जो कुछ हमने उससे तलब
१६ किया था सो हम पाते हैं ॰ अगर कोई अपने भाई को देखे कि एक गुनाह करता है जो क़तल का मूजिब नहीं तो वुह मांगे और उसे हयात बख़्शे यिह उन के हक़ में है जो ऐसा गुनाह नहीं करते जो क़तल का मूजिब है बअ़ज़ गुनाह ऐसा है जो मूजिबि क़तल होता है मैं नहीं कहता कि वुह उसके लिये साइल हो ॰
१७ जो नारस्ती है सो गुनाह है पर बअ़ज़ गुनाह है जो

१८ कलाम का मूजिब नहीं * हम जानते हैं कि जो कोई ख़ुदा से मुत्वल्लिद हुआ है गुनाह नहीं करता बल्कि वुह जो ख़ुदा का मौलूद है अपनी मुहाफ़ज़त करता है और उसको
१९ नहीं छूता * हम जानते हैं कि हम ख़ुदा से हैं और
२० सारी दुनया बुराई में पड़ी रहती है * हम जानते हैं ख़ुदा का बेटा आया और हमें यिह फ़हमीद बख़्शी कि उसको जो हक़ है जानें हम तो उसमें जो सच है रहते हैं यअने ईसा मसीह में जो उसका बेटा है ख़ुदाय हक़ीक़ी
२१ और हयाति अबदी यिह है * ऐ बच्चो तुम बुतों से बचे रहो आमीन *

यूहन्ना का दूसरा मक्तूब सबके लिये

---

१ क़सीस की तरफ़ से बरगुज़ीदः बीबी को और उसके फ़रज़न्दों को जिन्हें मैं रास्ती के वास्ते जो हममें रहती है और हमारे साथ हमेशः रहेगी सच्चाई से प्यार करता हूं *
२ और फ़क़त मैं ही नहीं बल्कि सारे जिन्हों ने रास्ती को
३ जाना है * निअमत और रहम और आराम बाप ख़ुदा की तरफ़ से तुम्हारे साथ रास्ती और महब्बत से रहे *
४ मैं बहुत ख़ुश हुआ कि मैं ने तेरे फ़रज़न्दों में से कई

ऐक को उस हुक्म के मुताबिक़ जो हमने बाप से लिया
५ रास्ती पर चलते पाया * और अब ऐ बीबी मैं तुझ को
कोई नया हुक्म नहीं बल्कि वही जो हमने इबतिदा से
लिया लिखता हूं तुझसे चाहता हूं कि हम ऐक ऐक को
६ प्यार करें * और मुहब्बत यही है कि हम उसके हुक्मों
पर चलें और यिह वही हुक्म है जैसा तुमने इबतिदा
७ से सुना है कि तुम उस पर चलो * क्यूंकि बहुत से
हीलःबाज़ दुनयां में निकले हैं जो इक़रार नहीं करते
कि ईसा मसीह जिसम में आया हीलःबाज़ और मुख़ालिफ़ि
८ मसीह यही है * ख़बरदार ताकि जो हमने मिहनत करके
किया है उसे हम ख़राब न करें बल्कि पूरा अज्र
९ लें * जो कोई मुख़ालफ़त करता है और मसीह की
तअलीम में नहीं रहता ख़ुदा उसका नहीं जो मसीह की
१० तअलीम में रहता है बाप बेटा उसके हैं * अगर कोई तुम्हारे
पास आवे और यिह तअलीम न लावे तो उसे घर में आने नदो
११ और उसे सलाम न करो * क्यूंकि जो कोई उसे सलाम करता है
उसके बुरे कामों में शरीक होता है * अगर्चि बहुत से
१२ मज़मून हैं जो मुझे तुम्हारे लिये लिखते हैं मैं ने न चाहा कि
काग़ज़ पर सियाही से लिखूं पर मैं उम्मेदवार हूं कि तुम पास
आऊं और रूबरू कहूं ताकि हमारी शादमानी कामिल हो *
तेरी बरगुज़ीदः बैना के लड़के तुझे सलाम कहते हैं आमीन *

यूहन्ना का तीसरा मकतूब सब के लिये

---

१ क़सीस की तरफ़ से गाइस को जो हबीब है जिसे मैं सदाक़त
२ से प्यार करता हूं * ऐ महबूब मैं सब से पहले यिह
दुआ मांगता हूं कि जिस तरह तेरी जान इक़बालमंद है
३ तू इक़बालमंद और तनदुरुस्त रहे * क्यूंकि जब भाईओं
ने आकर जैसा तू रास्ती से चलता है तेरी रास्ती पर गवाही
४ दी मैं निपट ख़ुश हूआ * मेरे लिये इससे बड़ी कोई
ख़ुशी नहीं कि मैं सुनूं मेरे फ़रज़ंद रास्तबाज़ी से चलते हैं *
५ ऐ महबूब तू जो कुछ भाईओं से और परदेसियों से करता
६ है सो ईमानदारी के लाइक़ है * उन्हों ने कलीसया के आगे
तेरी महब्बत पर गवाही दी तू अच्छा काम करेगा अगर
उन्हें उस तरह पर जो ख़ुदा के बंदों के लाइक़ है आगे
७ भेजे * क्यूंकि वे उस के नाम के वास्ते जा निकले और
८ ग़ैर क़ौमों से कुछ नहीं लिया * इसवास्ते लाज़िम है
कि हम ऐसों को क़बूल करें ताकि हम रास्ती की ख़िदमत

९ में उनके शरीक होवें * मैं ने कलीसया को लिखा है मगर दियातरफ़ीस जो उन में मुक़द्दम हूआ चाहता है हमें

१० क़बूल नहीं करता * सो जब मैं आऊंगा उसके कामों का ज़िक्र करूंगा कि हमारी ज़िद से बुराबुरा कुछ बकता चला जाता है और उन कामों पर इक्तिफ़ा न करके भाइओं को आप क़बूल नहीं करता और औरों को जो क़बूल किया चाहते हैं रोकता है और कलीसया से ख़ारिज करता है *

११ ऐ महबूब शर का पैरो मत हो बल्कि उस का हो जो ख़ैर है वुह जो नेक करता है ख़ुदा का है और उसने जो बदकिरदार है

१२ ख़ुदा को नहीं देखा * दीमीतरयूस के हक़ में सबने और रास्ती ने भी अच्छी गवाही दी है हम यही गवाही देते हैं और तुम तो जानते हो हमारी गवाही सच है *

१३ मुझे तू बहुत कुछ लिखना था मैं नहीं चाहता कि सियाही

१४ और क़लम से तेरे लिये लिखूं * पर उम्मेदवार हूं कि जल्द तुझ से मुलाक़ात करूं तब हम रूबरू कह सुन लेंगे तेरी ख़ैर होवे अस्सलाम अलैका सब दोस्त तुझे सलाम कहते हैं तू भी दोस्तों को नाम बनाम सलाम कह *

यहूदा का मकतूब सब के लिये

---

१ यहूदा की तरफ़ से जो ईसा मसीह का बंदः यअ़क़ूब का

भाई है उन को जो बाप ख़ुदा में मुक़द्दस हुए और ईसा
मसीह के लिये हिफ़ाज़त से रखे गये और बुलाये गये हैं *
२ रहम और आराम और मुहब्बत तुम में बढ़ते रहें *
३ ऐ हबीबो जब मैं सई बलेग़ करता था कि उस नजात की
बात जिसमें हम सब शरीक हैं तुम्हें लिखूं मुझे ज़रूर
पड़ा कि तुम को लिखके नसीहत करूं कि तुम उस ईमान
के लिये जो आगे मुक़द्दस लोगों के सुपुर्द किया गया
४ जिद्द ओ जिहद करो * क्योंकि बाज़े शख़्स आ घुसे जिनके
लिये मुद्दत से यिह सज़ा ठहराई गई है और बेदीन हैं
और हमारे ख़ुदा के फ़ज़्ल को फ़िस्क़ ओ फ़ुजूर से बदल
करते हैं और ख़ुदा का जो अकेला साहिबि इख़्तियार है और
ईसा मसीह का जो हमारा ख़ुदावंद है इनकार करते हैं *
५ मैं चाहता हूं कि तुम्हें जो उसे जान चुके याद दिलाऊं
कि ख़ुदावंद ने क़ौम को ज़मीनि मिस्र से बचाया फिर उन्हें
६ जो ईमान नहीं लाये मअदूम किया * और उन फ़िरिश्तों
को जो अपनी पहली हालत पर न रहे बल्कि अपने
७ मक़ामि ख़ास को छोड़ दिया उसने ज़ंजीरि दाइमी में तारीकी
के अंदर रोज़ि अज़ीम की अदालत तक रखा * उसी
तरह सदूम और अमूरः और उनके अतराफ़ के दियार
जिन्हों ने उन की मानंद ज़िना किया और जिस्मि हराम
का पीछा किया इबरत के वास्ते आतिशि अबदी के अज़ाब

८ में हैं * बावजूद उसके उसी तरह नये ख़्वाब देखनेवाले भी जिसम को नापाक करते हैं और अवाविर हुकूमत को नाचीज़ जानते हैं और मरतबों पर तअ़न करते हैं *
९ जब मीकाईल ने जो मुक़र्रिब फ़िरिश्तः है शैतान के साथ मूसः की लाश के वास्ते मुबाहसः करके गुफ़्तगू की तब उसने जुरअत न की कि उस पर लअ़नत करे बल्कि कहा कि
१० खुदावंद तुझे मलामत करे * लेकिन वे जिन चीज़ों को नहीं जानते हैं उन पर तअ़न करते हैं और जिनको बितबअ़ हैवानि मुतलक़ की मानिंद जानते हैं उनमें आप को
११ ख़राब करते हैं * हैफ़ उन पर है क्योंकि वे क़ैन की राह पर चले और बिलअ़मकीसी ज़लालत में उजरत के लिये आप को बहा दिया और क़ारह की बग़ावत में हलाक
१२ हुए हैं * ये तुम्हारी मुहब्बत की ज़ियाफ़तों में डूबे हुए पहाड़ हैं और तुम्हारी मजलिस में बैठके बेडर अपनी पेट भरते हैं वे अब्रि ख़ुश्क हैं जिसे हवायें हरतरफ़ फिराती हैं फलतुरहः दरख़्त हैं जिनका मेवः झड़ गया है और निकम्मे हैं दूहरे के मरगये हैं और उखाड़े गये हैं *
१३ समुंदर की जोशां ओ ख़रोशां मौजें हैं और अपनी ख़िजालतों का झाग भर लाते हैं सैयार सितारे हैं उनके लिये जावेदानी तारीकी
१४ की सियाही है * अख़नूख़ ने जो आदम की सातवीं पुश्त था उनकी बाबत पेशीनगोई की थी कि देख खुदावंद

१५ अपने लाखों मुक़द्दसों के साथ आता है * ताकि सभों पर हुक्म करे और उन्हें जो उन में से मुनाफ़िक़ हैं उनकी सारी नारास्ती के कामों पर जो उन्हों ने किये हैं और सारी सख़्त बातों पर जो मुनाफ़िक़
१६ गुनाहगारों ने उसे कहीं हैं इल्ज़ाम दे * ये शाकी और गिलःगुज़ार हैं और अपनी हिर्स के मुवाफ़िक़ चलते हैं और वे ज़बान से बड़े बोल बोलते हैं आदमियों के नख़्शुख़ुल को अपनी ग़रज़ के वास्ते बढ़ाते हैं *
१७ लेकिन ऐ हबीबो तुम उन बातों को याद रखो जो हमारे
१८ ख़ुदावंद ईसा मसीह के हवारियों ने आगे कहीं * कि उन्हों ने तुम्हें ख़बर दी कि आख़िरी ज़माने में मुस्तहज़ा करनेवाले पैदा होंगे जो अपनी शह्वत की ख़्वाहिशों पर चलेंगे *
१९ ये वही हैं कि अपने तईं अलग करते हैं ये नफ़सानी लोग
२० हैं और रूह उनमें नहीं है * पर तुम ऐ हबीबो आपको अपने ईमानि अक़्दस पर तअमीर करके रूहि पाक से
२१ दुआ करते हुए * अपने तईं ख़ुदा की मुहब्बत में महफ़ूज़ रखो और हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के मुन्तज़िर रहो ता
२२ कि तुम हयाति अबदी पाओ * और इमतियाज़ से बअज़ों
२३ पर रहम करो * और बअज़ों को डराते हुए आग में से निकाल के बचाओ और पोशाक से भी जो बदन से नापाक
२४ हुई है अदावत रखो * अब उस के लिये जो तुम को

लग़्ज़िश से महफ़ूज़ रख सकता है और अपने जलाल के साम्हने बेइलज़ाम बशाशत से खड़ा करसकता है *
२५ जो ख़ुदाय हकीम वाहिद और हमारे बचानेवाला है जलाल और अज़मत और तवानाई और क़ुदरत उस वक़्त से लेके अबदतक होवे आमीन *

यूहन्नाय इलाही के मुशाहदात मिअ़राजी की किताब

पहला बाब

१ ईसा मसीह की वही जो ख़ुदा ने उसे बख़्शी ताकि अपने बंदों को सब कुछ जो जल्द होनेवाला है दिखावे और उसने उसे अपने फ़िरिश्ते की मअ़रिफ़त से अपने बंदः यूहन्ना
२ पर भेजा और ज़ाहिर किया * यिह वुह है जिसने ख़ुदा के कलिमः और ईसा मसीह की गवाही पर और उन सब
३ चीज़ों पर जिन्हें उसने देखा गवाही दी * मुबारक वुह जो उस नबुव्वत का कलाम पढ़ता है और वे जो सुनते हैं और उन मज़मूनों जो उसमें लिखे हैं हिफ़्ज़ करते हैं
४ कि वक़्त नज़्दीक है * यूहन्ना उन सात कलीसयाओं को जो आसया में हैं लिखता है कि उसकी तरफ़ से जो है और था और आने पर है और सात रूहों की तरफ़
५ से जो उसके तख़्त के हुज़ूर हैं * और ईसा मसीह की

तरफ़ से जो गवाह अमीन और पहला उनमें जो मरके जी उठे और शाहानि ज़मीन का सुलतान है फ़ज़ल और आराम तुम्हारे लिये होवे वुह जिसने हमको प्यार किया
६ और अपने लहू से हमारे गुनह धो डाले * और हम को बादशाह और अपने बाप खुदा का काहिन बनाया शौकत और हुकूमत आबदुलआबाद उसी के लिये है आमीन *
७ देखो वुह बादलियों में आता है और हरएक की नज़र उस पर पड़ेगी और जिन्हों ने उसे छेदा उसे देखेंगे और ज़मीन पर के सारे फ़िरक़े उसके लिये छाती पीटेंगे ऐसा
८ होवे आमीन * खुदावंद यों फ़रमाता है कि मैं हूं अलफ़ा और उमगा इबतिदा और इनतिहा जो है और था और
९ आनेवाला है क़ादिरि मुतआल * मैं यूहन्ना जो तुम्हारा भाई और ईसा मसीह के दुख और बादशाहत और इन्तिज़ार में तुम्हारा शरीक हूं उस जज़ीरे में जो पतमस कहलाता है खुदा के कलाम और ईसा मसीह की गवाही के वास्ते आ
१० पड़ा * और मैं खुदावंद के दिन रूह में आगया तब मैंने तुरही सी एक बड़ी ही आवाज़ अपने पीछे होती
११ सुनी * कि मैं अलफ़ा और उमगा हूं और अव्वल ओ आख़िर हूं और जो कुछ तू देखता है किताब में लिख और सात कलीसियाओं के लिये जो आसया में यअने अफ़सस और समरनः और परजमस और सूवातीरः और सारदीस और

१२ फ़ुरादलफ़ियः और लादकियः में हैं भेज * तुमांचिः वुह आवाज़ जो मुझे आई मैं उसके देखने को फिरा और
१३ फिरकर सोनेके सात शमअ़दान देखे * उन सात शमअ़दानों के बीच एक शख़्स इबनि आदमसा देखा कि एक पैराहन
१४ पांओं तक पहने हुए और सोने का सीनःबंद सीने पर बंधा हुआ उस का सिर और बाल सफ़ेद ऊनके मानंद सफ़ेद बल्कि बरफ़ ऐसा सफ़ेद और उस की आंखें
१५ जैसे आग का शुअ़लः * और उसके पांओं ख़ालिस पीतलकेसे जो तनूर में दहकाया हुआ हो और उसकी
१६ आवाज़ बड़े पानीकोसी थी * और उसके दहने हाथ में सात तारे थे और उसके मुंह से दोधारी तेज़ तलवार निकलती थी और उसका चिहरः मिस्लि आफ़ताब था जो
१७ निहायत ज़ायदनूर हो * जब मैंने उसे देखा तब उसके पांओं पर मुरदः सा गिर पड़ा तब उसने अपना दहना हाथ मुझ पर रखा और बोला कि मत डर मैं अव्वल
१८ ओ आख़िर हूं * और वही हूं जो जीता हूं मूआ था और देख मैं अबद तक जीता हूं आमीन और अदम
१९ और मौत की कुंजियां मुझ पास हैं * जो तूने देखा है और जो हैं और जो बअ़द उनके होनेवाली हैं सब लिख
२० रख * और उन सात सितारों का जिन्हें तूने मेरे दहने हाथ में देखा और उन सोने के सात शमअ़दानों का राज़

यिह है कि सात सितारे सात कलीसयाओं के फ़िरिश्ते हैं और सातों शमअदान जो तूने देखे सात कलीसयाएं हैं *

दूसरा बाब

१ अफ़सस की कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख कि वुह जिसके दहने हाथ में सात सितारे हैं और सोनका सात शमअदानों के दरमियान फिरता है ये बातें कहता है *

२ कि मैं तेरे काम और तेरी महब्बत और तेरा सबर और यिह कि तू बदों की बरदाश्त कर नहीं सकता जानता हूं तूने उनको जो अपने तईं हवारी कहते हैं और नहीं

३ हैं ताड़ा और झूठा पाया * और तूने बरदाश्त की और साबिर है और मेरे नाम के वास्ते कोफ़ उठाई और उदास

४ न हूआ * मगर तुझ से यिह शिकायत रखता हूं कि

५ तूने अपनी अगली महब्बत छोड़ दी * सो याद कर कि तू कहांसे गिरा और तौबःकर और अपने अगले काम किया कर नहीं तो मैं तुझ पास जरद आनेवाला हूं और अगर तू तौबः नकरे तो तेरे शमअदान को जासे

६ बेजा करूंगा * पर तुझ में एक यही है कि तू नीकलाइओं के कामों से बुग्ज़ रखता है जिनसे मैं भी अदावत

७ रखता हूं * जिसके कान हैं सो सुने कि रूह कलीसयाओं को क्या कहता है कि मैं उसको जो ग़ालिब होता है यिह बख़शूंगा कि दरख़्ते हयात से जो फ़िरदौस इलही के बीचोंबीच

८ ह फल खावे * और समरनाई कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख कि वुह जो अव्वल ओ आख़िर है और मुआ
९ था और जीआ है ये बातें कहता है * कि मैं तेरे काम और दुख और ग़रीबी जानता हूं पर तू तो दौलतमंद है और उनका जो आपको यहूदी कहते हैं और नहीं बल्कि शैतान की जमाअत हैं कुफ़र बकना जानता हूं *
१० उन चीज़ों में से जिन्हें तू सहेगा किसी का ख़ौफ़ न रख देख इबलीस तुम में से कईएक को क़ैद में डालेगा कि तुम आज़माये जाओ और तुम दस दिन तक तसदीअ पाओगे पिर जबतक कि तू मरजाय ईमानदार रहियो और मैं
११ हयात का हार तुझे दूंगा * जिस के कान हैं सुने कि रूह कलीसयाओं को क्या कहता है कि जो ग़ालिब होता है
१२ दूसरी मौतसे ज़रर न पायगा * और परजमस की कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख वुह जो तेज़ दोधारे तेग़वाला है
१३ कहता है * कि मैं तेरे कामों को और तेरी बूदबाश की जागह जहां शैतान की मसनद है जानता हूं और तू मेरे नाम को पकड़ करता है और जिन दिनों कि अनतिपास मेरा ईमानदार गवाह तुम्हारे बीच वहां जहां शैतान रहता है मारा गया उन दिनों मेंभी तू मेरे ईमान से मुनकिर न हूआ *
१४ लेकिन मैं तुझ से कुछ शिकायतें रखता हूं कि तेरे यहां वे हैं जो बिलआमकीसी तअलीम के राज़ी हैं कि उसने

बिलऊक को सिखाया कि बनी इसराईल के आगे ठोकर खिलानेवाला पत्थर डाल रखे ताकि वे बुतों की कुरबानियां खावें
१५ और ज़िना करें * और यहां वे हैं जो नीकूलायओं की तअलीम के राज़ी हैं जिसका मैं मुख़ालिफ़ हूं *
१६ तौबःकर नहीं तो मैं तुझ पास जल्द आनेवाला हूं और मैं उनके साथ अपने मुंह की तलवार लेके लड़ूंगा *
१७ जिसके कान है सुने कि रूह कलीसयाओं को क्या कहता है कि जो ग़ालिब होता है मै उसे मख़फ़ी मन्न खाने दूंगा और मैं एक संगि सफ़ेद दूंगा जिस पर एक नया नाम लिखा है सिवाय उसके जिसने उसे पाया कोई और उसे नहीं
१८ जानता * और सूआतीरः की कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख कि ख़ुदा का बेटा जिसकी आंखें शुअले आतिश की मानंद हैं और पाओं ऐसे हैं जैसे ख़ालिस पीतल यूं
१९ कहता है * कि मैं तेरे कामों और महब्बत और ख़िदमत और ईमान और सब्र को जानता हूं और जानता हूं कि तेरे पिछले अअ्माल अगले अअ्माल से कसीर हैं *
२० पर मुझे तुझ से कुछकुछ शिकायतें हैं कि तू उस रंडी को जो ठीक यज़ाबील है और आपको पैग़म्बर कहती है इजाज़त देता है कि सिखाये और मेरे बंदों को गुमराह करे कि वे हरमकारी करें और बुतों परकी कुरबानियां खावें *
२१ और मैंने उसको फ़ुरसत दी कि अपनी हरमकारी से

२१ तौबः करे पर उसने तौबः न किया * देख कि मैं उसको बिस्तरी करदूंगा और उन्हें जो उसके साथ ज़िना करते हैं अगर अपने कामों से ताइब न होवें तो बड़ी तसदीअ में डालता हूं *
२३ और उसके फ़रज़ंदों को जान से मारूंगा और सारी कलीसयाओं को मअ़लूम होगा कि मैं वही हूं जो दिल और गुर्दों का जांचनेवाला है और मैं तुम में से हरऐक को
२४ तुम्हारे कामों के मुताबिक़ अजर दूंगा * पर तुम्हें और सूवातीरः के बाक़ी लोगों को जिनमें यिह तअ़लीम नहीं और जो शैतान के गहरापे को जिसका ज़िक्र करते हैं नहीं जानते यिह कहता हूं कि मैं और कुछ बोझ तुम पर
२५ न डालूंगा * मगर जो तुम पास है उस पर क़ाबिज़ रहो
२६ जब तक कि मैं आऊं * और मैं उसे जो ग़ालिब होता है और मेरे कामों को इनतिहा तक याद रखता है क़ौमोंका
२७ मुख़ार करूंगा * और वुह आहिनी असा लिये हूए उन पर हुकमरानी करेगा और वे सिफ़ाली माटी के बरतनों की मानंद चकनाचूर होंगे चुनांचिः मैंने अपने बाप से
२८ यिह पाया है * और मैं उसे सुबह का सितारः दूंगा *
२९ जिसके कान हैं सुने कि रूह कलीसयाओं को क्या कहता है *

तीसरा बाब

१ और सारदीस की कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख कि वुह जिस पास ख़ुदा की सात रूहें और सात सितारे हैं

यिह कहता है कि मैं तेरे कामों से और उस बात से आगाह हूं कि तू ज़िंदः कहलाता है पर मुरदः है *
२ बेदार हो और बाक़ी चीज़ों को जो फ़ना होने पर हैं उस्तवार कर क्यूंकि मैं ने तेरे कामों को ख़ुदा के आगे
३ मुकम्मल नहीं पाया * इसवास्ते याद कर कि तू ने किस तरह लिया और सुना और थाम और तौबः कर पस अगर तू बेदार न हो तो मैं तुझ पास चोर की तरह आऊंगा तुझ पर मअलूम न होगा कि मैं किस घड़ी तुझ पास
४ आऊंगा * सारदीस में तेरे भी कईएक नाम हैं जिन्हों ने अपनी पोशाक आलूदः नहीं की वे मेरे साथ सफ़ेद
५ पोश होकर फिरेंगे क्यूंकि वे अहलि लियाक़त हैं * जो ग़ालिब होता है उसे सफ़ेद पोशाक पहनाई जायगी और मैं उस का नाम किताबि हयात से महो न करूंगा बल्कि उसके नामका इक़रार अपने बाप और उसके फ़िरिश्तों के आगे करूंगा *
६ जिसके कान हैं सुने कि रूह कलीसयाओं से क्या कहता है *
७ और फ़िलादिलफ़ियः की कलीसया के फ़िरिश्ते को यूं लिख कि वुह जो मुक़द्दस है और बरहक़ है और दाऊद की कुंजी उस पास है वुह जो खोलता है कोई बंद नहीं करता वुह जो बंद करता है कोई नहीं खोलता यिह कहता है *
८ कि मैं तेरे कामों को जानता हूं देख मैं ने तुझे यिह दिया है कि तेरे आगे एक दरवाज़ः खोला उसे कोई बंद

नहीं धर सकता क्यूंकि तुझ में थोड़ा ज़ोर है और तू ने मेरे कलाम को हिफ़्ज़ किया है और मेरे नाम से ९ इनकार नहीं किया * देख जो कि अपने तईं यहूदी कहते हैं और नहीं बल्कि झूठ कहते हैं मैं उन्हें शैतान की जमाअत बनाता हूं और देख मैं बाइस हूंगा कि वे आकर तेरे पांओं पर सिजदः करें और जाने कि १० मैं ने तुझ से महब्बत की है * अज़बसकि तू ने मेरे सबर की बात को हिफ़्ज़ किया है मैं भी तुझे उस इमतिहान की घड़ी से जो तमाम आलम में ज़मीन के रहनेवालों की ११ आज़माइश के लिये आनेवाली है बचाऊंगा * देख मैं जलद पहुंचा जो तेरा है उस पर क़ाबिज़ रह कि कोई तेरा १२ ताज न लेले * मैं उसे जो ग़ालिब होता है अपने ख़ुदा के हैकल का सतून करूंगा और वुह फिर कभी बाहिर न निकलेगा और मैं अपने ख़ुदा का नाम और अपने ख़ुदा के शहर का यअ़ने नई औरशलीम का नाम जो मेरे ख़ुदा के हुज़ूर से आसमान पर से उतरती है और अपना १३ नया नाम उस पर लिखूंगा * जिसके कान है सुने कि १४ रूह कलीसयाओं से क्या कहता है * और लाउदिकिया की कलीसया के फ़िरिश्ते को लिख कि वुह जो अमीन है और गवाह अमीन और सादिक़ है और ख़ुदा की ख़िलक़त १५ का आग़ाज़ है यूं कहता है * कि मैं तेरे कामों को जानता

हूं तू न ठंडा न गरम है काशकि तू ठंडा या गरम होता *
१६ सो अज़्बस्कि तू घोर गरम है न ठंडा न गरम इसलिये मैं
१७ उसपर हूं कि तुझे अपने मुंहसे निकाल फेंकूं * तू आपको
कहता है मैं दौलतमंद हूं और मालदार हूआ हूं और
किसी चीज़ का मुहताज नहीं हूं और नहीं जानता कि
लाचार और आजिज़ और ग़रीब और अंधा और नंगा हूं *
१८ मैं तुझे यिह सलाह देता हूं कि तू सोना जो आग
में ताया गया मुझ से मोल ले ताकि दौलतमंद होवे और
सफ़ेद पोशाक ले ताकि मुलब्बस होवे और तेरी बरहनगी
जो जायशरम है ज़ाहिर न होवे और अपनी आंखों
१९ में सुरमः लगा ताकि तू बीना होवे * मैं जिनों को प्यार
करता हूं उन्हें इलज़ाम देता हूं और तंबीह करता हूं
२० इसवास्ते चुस्त चालाक हो और तौबः कर * देख मैं
दरवाज़े पर खड़ा हूं खटखटाता हूं अगर कोई मेरी आवाज़
सुने और दरवाज़ः खोले मैं उस पास अंदर आऊंगा और
२१ उसके साथ खाऊंगा और वुह मेरे साथ खायेगा * जो ग़ालिब
होता है मैं उसे अपने तख़्त पर बैठने दूंगा चुनांचि
मैं भी ग़ालिब हूआ और अपने बापके साथ उसके तख़्तपर
२२ बैठा * जिसके कान है सुने कि रूह कलीसयाओं को
क्या कहता है *

चौथा बाब

१ बअद उसके जो मैंने निगाह की देखे कि आसमान पर ऐक दरवाज़ः खुला हूआ था और पहली सदा जो मैंने सुनी नरसिंगेकीसी थी जो मुझ से बोला और कहा कि इधर ऊपर आ और मैं तुझे बतलाऊंगा कि इसके बअद
२ क्या होना है * तब वोहीं मैं रूह में आगया और देखे आसमान पर ऐक तख़्त धरा था उस तख़्त पर ऐक शख़्स
३ बैठा था * और उस जालिस का रंग येशम और अक़ीक़ कासा था और ऐक क़ौसिक़ुज़ह जिसका रंग ज़ुमुर्रद्कासा
४ था उस तख़्त के गिर्द था * और उस तख़्त के आसपास चौबीस तख़्त थे उन तख़्तों पर मैंने चौबीस बुज़ुर्ग सफ़ेद पोशाक पहने
५ हूऐ बैठे देखे उनके सिरों पर सोनेके ताज थे * और बर्क़ और रअद और आवाज़ें उस तख़्त से निकलती थीं और आतिश के सात चिराग़ उस तख़्त के आगे रोशन थे
६ यिह ख़ुदा की सात रूहें हैं * और उस तख़्त के आगे ऐक ज़ुजाजे दरया बिल्लौर की मानंद था और तख़्त के बसत पर और तख़्त के गिर्द चार जांदार थे जो पसोपेश
७ पुर अज़ चश्म थे * पहला जांदार बबरआसा था और दूसरा बछड़े की मानंद और तीसरे का चिहरः इनसान कासा
८ था और चौथा उड़ते उक़ाब के मिसल था * उन चारों जांदारों के छःछः पर थे और उनके चारों तरफ़ और अंदर

आंखें ही आंखें थीं और वे रात दिन उस ज़िक्र से बाज़ न रहते थे कि क़दूस क़दूस क़दूस ख़ुदावंद ख़ुदा क़ादिरि मुतलक़ जो
९ था और जो है और जो आनेवाला है * जब वुह जांदार उस की जो तख़्त पर बैठा है और अबद तक ज़िंदः है
१० तक़दीस और तकरीम और शुक्रगुज़ारी करते हैं * तब वे चौबीसों बुज़ुर्ग उसके साम्हने जो तख़्त पर बैठा है गिरपड़ते हैं और उसकी जो अबद तक ज़िंदः है परसतिश करते हैं और अपने हार यिह कहते हूए उस के तख़्त के आगे
११ डाल देते हैं * कि ऐ ख़ुदावंद तूही जलाल और इज़्ज़त और क़ुदरत का मुस्तहक़ है क्यूंकि तूही ने सारी चीज़ें पैदा कियां और वे तेरीही मरज़ी से हैं और पैदा हूईं हैं *

पांचवां बाब

१ और मैंने उसके जो तख़्त पर बैठा था दहने हाथ में ऐक किताब देखी जिसमें अंदर बाहर सब लिखा हूआ था
२ और सात मुहरों से बंद थी * और मैंने ऐक ज़ोरआवर फ़िरिश्ते को देखा कि बुलंद आवाज़ से यिह मुनादी करता था कौन इस लाइक़ है कि इस किताब को खोले और उसकी
३ मुहरें तोड़े * और किसीकी मजाल न हूई न आसमान पर न ज़मीन पर न ज़मीन के नीचे कि उस किताब को
४ खोले और उसको देखे * तब मैं बहुत रोया कि कोई इस लाइक़ न ठहरा कि किताब को खोले और पढ़े या

५ उसे देखे * तब उन बुज़ुर्गों में से ऐतने मुझे कहा कि मत रो देख वुह बबर जो क़ौमि यहूदा से है और दाऊद की असल है ग़ालिब हूआ है कि उस किताब को खोले
६ और उसकी सातों मुहरों को तोड़े * तब मैं ने निगाह की और देखा कि उस तख़्त और चारों जांदारों के दरमियान और उन बुज़ुर्गों के बीच ऐक बर्रः यूं खड़ा था कि गोया ज़बह किया गया था जिसके सात सींग और सात आंखें थीं जो ख़ुदा की सातों रूहें हैं और तमाम रूए ज़मीन पर
७ इरसाल की गई हैं * उसने आके उसके दहने हाथ
८ से जो तख़्त पर बैठा था उस किताब को लिया * और जब उसने किताब ली तब वे चारों जांदार और चौबीस बुज़ुर्ग उस बर्रः के आगे गिर पड़े और हरऐक के हाथ
९ में बरबत और ख़ुशबू से भरी हुई * सोने की पियालियां थीं तब वे ऐक नया राग गाये और बोले कि तूही इसलायक़ है कि इस किताब को लेवे और उसकी मुहरें तोड़े क्यूंकि तू मारा गया और हरऐक क़बीलः और ज़बान और मुल्क और क़ौम से हमको लिल्लाह अपने लहू से मोल लिया *
१० और हमको हमारे ख़ुदा के वास्ते सलातीन और अहलहावि किहानत बनाया और हम ज़मीन पर बादशाहत करेंगे *
११ फिर मैं ने निगाह की और तख़्त के गिरदागिर्द मे बहुत से फ़िरिश्तों और जांदारों की और उन बुज़ुर्गों की आवाज़ सुनी

जो शुमार में लक अंदर लक और हज़ार अंदर हज़ार थे *
१२ और पुकारे कहते थे कि बर्रः जो ज़बह किया गया उस
लाइक़ है कि कुदरत और दौलत और अक़्ल और ज़ोर
और इज़्ज़त और जलाल और बरकत का मालिक हो *
१३ और मैं ने हरऐक मख़लूक़ को जो आसमान पर और
ज़मीन पर और ज़मीन के नीचे हैं और उनको जो समुंदर
में हैं और सारी चीज़ों को जो उन में हैं यिह कहते
सुना कि उसके लिये जो तख़्त नशीन है और बर्रः के
लिये बरकत और इज़्ज़त और जलाल और ज़ोर अबदतक
१४ है * तब चारों जांदार आमीन बोले और चौबीस बुज़ुर्गों
ने गिरके उसकी जो अबदतक ज़िंदः है परस्तिश की *

छठा बाब

१ और जब बर्रः ने उन मुहरों में से ऐक को तोड़ा तब
मैं ने देखा और उन चारों जांदारों में से ऐक की आवाज़
२ बिजली के कड़कने के मानंद सुनी * कि वुह बोला
आ और देख और मैं ने नज़र की तो देखो ऐक नुक़रः
घोड़ा उसके राकिब के हात में कमान ऐक हार उसे दिया
गया वुह ग़ालबः से और ग़ालिब होने के लिये निकल आया *
३ और जब उसने दूसरी मुहर तोड़ी तब मैं ने दूसरे जांदार को
४ कहते देखा आ और देख * तब ऐक दूसरा सुरंग घोड़ा
और उसको जो उस पर सवार था यिह दिया गया कि सुलह

को ज़मीन पर से छीन लेवे और लोग एक एक को क़त्ल
५ करें और एक बड़ीही तलवार उसको दी गई * और
जब उसने तीसरी मुहर तोड़ी तब मैं ने आप सुना कि
तीसरे जांनदार ने कहा आ और देख फिर मैं ने नज़र
की तो देखो एक मुश्की घोड़ा उस पर एक शख़्स अपने
६ हाथ में तराज़ू लिये सवार था * और मैं ने एक आवाज़
सुनी जो उन चारों जांदारों के बीच में से हुई वुह यिह
थी कि गेहूं दीनारसेर और जौ दीनार से तीन सेर और
७ तू तेल और शराब मत घटाना * और जब उसने चौथी
मुहर तोड़ी मैं ने चौथे जांदार को यिह कहते देखा आ
८ और देख * फिर मैं ने ताका तो देखो शिरग़ा घोड़ा और
उस पर एक सवार उस का नाम मौत था और अदम
उसके पीछे पीछे रवां था और उन्हें रूऐ ज़मीन पर यिह
इख़तियार दिया गया कि वे तलवार और भूख और मरी से
और ज़मीन के दरिंदों से ख़िलक़त को बेजान करें *
९ जब उसने पांचवी मुहर तोड़ी मैं ने उनकी रूहों को जो
ख़ुदा के कलिमः के लिये और उस गवाही के लिये जो
१० उन्हों ने दी थी मारे गये क़ुरबानगाह के नीचे देखा * और
उन्हों ने बुलंद आवाज़ से चिल्लाके कहा कि ऐ मख़दूम पाक
औ सादिक़ कबतक अदालत न करेगा और मुक़ीमानि ख़ाक
११ से हमारे ख़ून का इंतिक़ाम न लेगा * तब उन में से

हर वाहिद को सफ़ेद पैराहन दिया गया और उन्हें कहा गया कि तुम और थोड़ा सबर करो जबतक कि तुम्हारे हमखिदमत लोग और तुम्हारे भाई जो चाहिये कि तुम्हारी
१२ तरह मारे जावें तमाम होवें * फिर मैं ने जो देखा कि उसने छठी मुहर तोड़ी तो देखो तब बड़ा ज़लज़लः हूआ और सूरज बालों के टाट की मानंद काला और चांद लहू
१३ सा होगया * और आसमान के सितारे उस तरह ज़मीन पर गिर पड़े जिस तरह अंजीर के दरख़्त से उसके फल बेवक़्त जब उसे शिद्दत की आंधी हर हराती गिरते हैं *
१४ और आसमान कागज़ की तरह लपेटे गये और सरक गये और हरएक पहाड़ और जज़ीरा अपनी अपनी जगह से
१५ टल गया * और दुनया के शाहों ने और अमीरों और मालदारों और सालारों और क़ूवत वालों ने और हरएक बंदः और हरएक आज़ाद ने अपने तईं ग़ारों में और पहाड़ों के पत्थरों की ओट में छिपाया *
१६ और पहाड़ों और पत्थरों से यिह कहा कि हम पर गिरो और हमको उसके मुवाजिह से जो तख़्त पर बैठा है और
१७ बर्रः के ग़ज़ब से छिपालो * क्यूंकि उसके क़हर का रोज़ि अज़ीम आ पहुंचा अब कौन ठहर सकता है *

सातवां बाब

१ बअद उसके मैं ने ज़मीन के चार कोनों पर चार फ़िरिश्ते

इस्तादः देखे कि ज़मीन पर चारों हवाओं को थामते थे ता न होवे कि हवा ज़मीन या दरया या दरख़्त पर चले *
२ फिर मैं ने एक और फ़िरिश्तः उठते देखा जो मशरिक़ से उठा उस पास जीते ख़ुदा की मुहर थी उसने उन चारों फ़िरिश्तों से जिन्हें यिह दिया गया था कि ज़मीन और दरया को मज़र्रत पहुंचाएं बलंद आवाज़ से पुकार के
३ कहा * जबतक हम अपने ख़ुदा के बंदों की पेशानियों पर मुहर नकर लें तुम ज़मीन और दरया और दरख़्तों को
४ ज़रर न पहुंचाना * और मैं ने उनका शुमार जिन पर मुहरें की गईं थीं सुना कि बनी इसराईल के फ़िरक़ों
५ में से एक सै चौंतालीस हज़ार मुहरी होए * क़ौमि यहूदा से बारह हज़ार क़ौमि रऊबन से बारह हज़ार क़ौमि
६ जद से बारह हज़ार * क़ौमि अशीर से बारह हज़ार क़ौमि नफ़ताली से बारह हज़ार क़ौमि मनश्शे से बारह हज़ार *
७ क़ौमि शमऊन से बारह हज़ार क़ौमि लूई से बारह हज़ार
८ क़ौमि यश्कार से बारह हज़ार * क़ौमि ज़बिलों से बारह हज़ार क़ौमि यूसुफ़ से बारह हज़ार क़ौमि बनीमीन से बारह
९ हज़ार * और बअ़द उसके मैं ने ताका तो देखो एक बड़ी जमाअ़त जिस में हर सिनिफ़ हरज़ात हर क़ौम हर ज़बान के लोग थे जिनको कोई शुमार न कर सका स्पेद जामे पहने और ख़ुरमः की डालियां हाथों में लिये उस

१० तख़्त और बर्रः के आगे खड़ी थी * और बलंद आवाज़ से चिल्लाके यूं कहती थी नजात का शुक्र हमारे ख़ुदा को जो
११ तख़्त नशीन है और बर्रः को * और सारे फ़िरिश्ते जो उस तख़्त और उन बुज़ुर्गों और उन चारों जांदारों के गिर्द खड़े थे सो उस तख़्त के आगे औंधे गिर पड़े और ख़ुदा को
१२ सिजदः किया और बोले * आमीन बरकत और जलाल और दानिश और शुक्रगुज़ारी और इज़्ज़त और क़ुदरत और
१३ क़ूवत ता अबद हमारे ख़ुदा के लिये आमीन * और उन बुज़ुर्गों में से ऐक मुझ को पूछने लगा कि ये जो सफ़ेद जामे पहने हुऐ हैं कौन हैं और कहां से आये हैं *
१४ मैं ने कहा कि ऐ साहिब तू जानता है तब उसने मुझे कहा ये वही हैं जो बड़ी तसदीअ से आये हैं और उन्हों ने अपने जामों को धोया है और अपने कपड़ों को बर्रः
१५ के लहू से सफ़ेद किया * उसही वास्ते वे ख़ुदा के तख़्त के आगे हैं और उसकी हैकल में शब ओ रोज़ उसकी बंदगी करते हैं और जो तख़्त पर बैठा है उन पर सायः अफ़गन
१६ होगा * वे अब कभी भूखे नहोगें और नप्यासे होंगे और
१७ वे धूप और गरमी में न पड़ेंगे * क्यूंकि जो तख़्त के वसत़ पर है उन की गल्लः बानी करेगा और उन्हें पानी के जीते चश्मों तक लेजायगा और ख़ुदा उन की आंखों से सिरशक का हरऐक क़त़रः पोंछेगा *

आठवां बाब

१ और जब उसने सातवीं मुहर तोड़ी तब आसमान पर क़रीब
२ आधी साअ़त के ख़ामोशी थी * और मैं ने उन सातों फ़िरिश्तों
को जो ख़ुदा के आगे खड़े थे देखा कि उन्हें सात नरसिंगे
३ दिये गये * फिर एक और फ़िरिश्तः आया और सोनेका ऊ़द्
सोज़ लिये हुए क़ुरबानगाह के पास जा खड़ा हुआ और बहुत सा
बख़ूर उसे दिया गया कि वुह उसे सारे मुक़द्दसों की दुआओं
से उस सोने के क़ुरबानगाह पर जो तख़्त के आगे था मिलावे *
४ और उस बख़ूर का धूआं मुक़द्दसों की दुआओं में
५ मिलके फ़िरिश्ते के हाथ से ख़ुदा के पास ऊपर गया * उस
फ़िरिश्ते ने ऊ़द्सोज़ को लिया और उस में क़ुरबानगाह की
आग भरी और ज़मीन पर फेंकी तब आवाज़ें हुईं और
६ रअ़द और बर्क़ और ज़ल्ज़लः * और सातों फ़िरिश्ते जिन
७ पास सात नरसिंगे थे फूंकने पर तैयार हुए * फिर पहिले
फ़िरिश्ते ने नरसिंगा फूंका तब तगर्ग और आतिश ख़ून
८ आमेज़ मौजूद हुईं और ज़मीन पर फेंकी गईं * फिर दूसरे
फ़िरिश्ते ने नरसिंगा फूंका तब गोया बड़ा पहाड़ आगसे जलता
हुआ समुंदर में फेंका गया और समुंदर का तीसरा हिस्सः
९ लहू होगया * और जितने हैवान जांदार समुंदर में थे तिहाई
१० मर गये और किश्तियां तबाह हुईं * फिर तीसरे फ़िरिश्ते
ने नरसिंगा फूंका तब बड़ा सितारः चिराग़ आसा जलता

हूआ आसमान से टूटा और नदियों और पानी की और

११ चश्मों की तिहाई पर जा गिरा * उस सितारे का नाम अफ़सनतीन है और तिहाई पानी अफ़सनतीन हो गया और

१२ बहुत से आदमी उस पानी के सबब से मर गये क्यूंकि वुह पानी कड़वा हो गया था * फिर चौथे फ़िरिश्ते ने नरसिंगा फूंका तो तिहाई आफ़ताब और तिहाई माहताब और तिहाई सितारे आफ़तज़द: हूए यहां तक कि उनकी तिहाई तारीक होगई और तिहाई में न

१३ दिन की अलामत न रात की ज़ाहिर हूई * फिर जो मैं ने ताका तो एक फ़िरिश्त: आसमान के वसत में उड़ रहा था और मैं ने आप सुना कि वुह बुलंद आवाज़ से बोला कि वे तीन फ़िरिश्ते जो फूंकने पर हैं जब बाक़ी नरसिंगे फूंकें तो ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस अफ़सोस अफ़सोस है *

नवां बाब

१ फिर पांचवें फ़िरिश्ते ने फूंका तब मैं ने देखा कि आसमान से एक सितार: ज़मीन पर गिरा और उस कूएं की कुंजी

२ जिसकी थाह नहीं उसे दी गई * और उसने उस कूएं को जिसकी थाह नहीं खोला तो उस कूएं से बड़े तनूरकासा धूआं उठा और उस कूएं के धूएं से आफ़ताब और हवा तारीक

३ हो गये * और उस धूएं में से ज़मीन पर टिड्डी निकली और उन्हें वैसही क़ुदरत दी गई जैसी ज़मीन के बिच्छूओं

४ को है * और उन्हें यिह हुक्म किया गया कि ज़मीन

की घास या कोई सबज़ी या किसी दरख़्त को ज़ियां न पहुंचाएं मगर सिर्फ़ उन आदमियों को जिनकी पेशानियों पर ख़ुदा
५ की मुहर नहीं * और उन्हें यिह फ़रमाया गया कि वे उनको जान से न मारें बल्कि पांच महीने तक अज़ाब करें और उनकी सिआसत का दुख ऐसा था जैसा अक़रब की नेश
६ ज़नी से आदमी को होता है * और उन दिनों में आदमी मौत ढूंढेंगे और न पायेंगे और मरने के मुश्ताक़ होंगे और
७ मौत उन से भागेगी * और उन टिड्डियों की सूरतें उन घोड़ों से जो जंगके लिये तैयार हों मुशाबह थीं और उनके सिरों पर सोने के ताज से और उनके चिहरे आदमीकेसे थे *
८ और उनके बाल रंडियों के से और उनके दांत बबर केसे
९ थे * और उन पर लोहे कीसी पाखर थी और उनके परों की आवाज़ गाड़ियों कीसी थी जिन्हें बहुत से घोड़े
१० खैंचें और लड़ाई पर दौड़े जाएं * और उनकी दुमें बिच्छू कीसी थीं और डंक उनकी दुमों में थे और उन्हें क़ुदरत थी कि पांच महीने तक आदमियों को सताएं *
११ और उनका एक बादशाह था वुह उस कूए का जिसकी थाह नहीं फ़िरिश्तः था उसका नाम इब्री में अबदून और
१२ यूनानी में अपलयून है * एक अफ़सोस गुज़र गया पर
१३ देखो दो अफ़सोस उनके बअ़द आनेवाले हैं * फिर छठे फ़िरिश्ते ने फूंका और मैं ने तिलाई क़ुरबानगाह की चारों

शाखों में से जो ख़ुदा के आगे है ऐक आवाज़ सुनी
जो उस फ़िरिश्ते के लिये जिस पास नरसिंगा था कही *
१४ कि उन चारों फ़िरिश्तों को जो फ़ुरात की बड़ी नदी में बंद
१५ हैं खोल दे * फिर वे चारों फ़िरिश्ते छूटे जो ऐक साअत
और ऐक दिन और ऐक महीने और ऐक बरस में मुस्तइद
१६ थे कि तिहाई ख़िलक़त मार डालें * और फ़ौजों के सवार
शुमार में दो लाख हज़ार थे और मैं ने उनको तअदाद
१७ यूं सुनी * और मैं ने आलमि रोयत में घोड़ों को और
उनको जो उन पर बैठे थे यूं देखा कि वे आतिशी और
संदली और किबरीती जौशन रखते थे और उनके घोड़ों के
सिर बबरों केसे थे और उनके मुंह से आग और धूऐं और
१८ गंधक निकलती थी * और उस आग और धूऐं और गंधक
से उन तीनों से जो उनके मुंह से निकलते थे तिहाई आदमी
१९ मारे गये * कि उन की कुदरतें उनके मुंह में थीं और
उनकी दुमें सांपों से मुशाबह हैं क्यूंकि उनको दुमों की
तरफ़ भी सिर हैं और वे उनके वसीले से दुख देते थे *
२० और बाक़ियों ने जो उन आफ़तों से मारे न गये अपने हाथों के
कामों से तौबः न किया जो देवों की और सोने और रूपे और
पीतल और पत्थर और लकड़ी की मूरतों की जो न देख न सुन
२१ न चल सकते हैं परस्तिश करते * और उन्हों ने अपने क़तल
और जादूगरियों और ज़िना और चोरियों से तौबः न किया *

दसवां बाब

१ फिर मैं ने एक और क़वी हैकल फ़िरिश्तः आसमान से नाज़िल होते देखा जो बदली में लपटा हूआ था उसके सिर पर क़ौसिक़ुज़ह था उसका चिहरः ख़ुरशेदआसा और उसके पांओं आगके सतूनों के मानंद थे ॥ २ उसके हाथ में एक छोटी किताब खुली हूई थी उसने अपना दहना पांओं समुंदर पर और बायां ज़मीन पर धरा ॥ ३ और बआवाज़ बलंद जिस तरह बबर गरजता है पुकारा और जब उसने पुकारा तब सात बादल गरजे ॥ ४ जब सात बादल गरज चुके मैं लिखने पर था कि मैं ने आसमान से एक आवाज़ सुनी जिसका ख़िताब मुझ से था कि उन चीज़ों पर जिन्हें सात रअदों ने तलफ़्फ़ुज़ किया मुहर कर और लिख मत ॥ ५ तब उस फ़िरिश्ते ने जिसे मैं ने समुंदर और ज़मीन पर इस्तादः देखा अपना हाथ आसमान की तरफ़ बलंद किया ॥ ६ और उसकी जो अबदुलआबाद ज़िंदः है जिसने आसमान को और सब को जो उसमें है और ज़मीन को और सब कुछ जो उस में हैं और दरया को और उन चीज़ों को जो उसमें हैं मौजूद किया क़सम करके कहा कि फिर ज़मानः न होगा ॥ ७ बल्कि सातवें फ़िरिश्ते की आवाज़ के ऐयाम में जब वुह फूंकने लगेगा ख़ुदा का रम्ज़ जैसा उसने अपने बंदों नबियों को मुज़्दः दिया पूरा होगा ॥ ८ और उस सदा ने जो मैं ने आसमान से सुनी फिर मुझसे यों ख़िताब

किया और कहा कि जा और वुह छोटी खुली हुई किताब जो उस फ़िरिश्ते के जो दरया और ज़मीन पर इस्ताद:

९ है हाथ में है ले ले * तब मैं ने उस फ़िरिश्ते के पास जाकर कहा कि छोटी किताब मुझ को दे उस ने मुझे कहा ले और उसे खाजा वुह तेरे मिअ़्द: को कड़वा कर देगी पर

१० तेरे मुंह में शहद की हलावत देगी * तब मैं ने वुह छोटी किताब उस फ़िरिश्ते के हाथ से ली और उसे खागया वुह मेरे मुंह में शहद की तरह शीरीं थी और मैं जों

११ उसे निगल गया मेरा मिअ़्द: तल्ख़ हो गया * और उसने मुझे कहा ज़रूर है कि तू बहुत से लोगों और क़ौमों और ज़बानों और बादशाहों के आगे नबुव्वत करे *

ग्यारहवां बाब

१ फिर असा जैसा एक किलक मुझे दिया गया और वुह फ़िरिश्त: खड़ा कहता था कि उठ और ख़ुदा की हैकल और क़ुरबानगाह को और उनको जो उसमें इबादत करते हैं

२ माप * मगर उस सहन को जो हैकल से ख़ारिज है छोड़दे और उसे मत माप क्यूंकि वुह ग़ैर क़ौमों को दिया गया है और वे उस मुक़द्दस शहर को बियालीस महीने तक पांओं

३ से लताड़ेंगे * और मैं अपने दो गवाहों को क़ुदरत बख़्शूंगा और वे टाट का लिबास पहन कर एक हज़ार दोसौ साठ

४ दिन तक नबुव्वत करेंगे * यिह वे दो दरख़्त ज़ैतून के

और दो शमअदान हैं जो खुदा के हुज़ूर खड़े हैं * ५ और अगर कोई चाहे कि उन्हें सताऐ तो उनके मुंह से आग निकलती है और उनके दुश्मनों को खा जाती है सो अगर कोई चाहे कि उन्हें सतावे ज़रूर है कि वुह उसी तरह ६ मारा जावे * उनमें कुद्रत है कि आसमान को बंद करें कि उनकी नबुव्वत के दिनों में पानी न बरसे और कुद्रत है कि पानियों को लहू बनाडालें और जब जब चाहें ७ ज़मीन पर हर तरह की बला लावें * वे जब अपनी गवाही अदा करचुकेंगे वुह हैवान जो उस कूऐ से जिसकी थाह नहीं निकलता है उनसे लड़ेगा उन पर ८ ग़ालिब होगा उन्हें मार डलेगा * और उनकी लाशें बड़े शहर के बाज़ार में जो रूहानी जिहत से सदूम और मिस्र कहलाता है जिस में हमारा खुदावंद भी सलीब पर खैंचा ९ गया पड़ी रहेंगीं * और क़ौमों और सनिफ़ों और ज़बानों और क़बीलों के लोग उनकी लाशों को साढ़े तीन दिन तक देखा करेंगे और उनकी लाशों को क़बर में रखने न १० देंगे * और साकिनानि ज़मीन उनकी मग़लूबियत पर खुशी खुर्रमी करेंगे और ऐक ऐक को हदये भेजेंगे क्यूंकि उन ११ दो नबियों ने ज़मीन के बाशिंदगान को सताया * और साढ़े तीन दिनके बअद हयात की रूह खुदा की तरफ़ से फिर उनमें दरआई और वे अपने पांओं पर खड़े होगये तब

१३ जिन्हें ने उन्हें देखा हिहन से डरे * और उन्हें ने आसमान से ऐक नअ़रः हुना जिसने उन्हें कहा कि इधर ऊपर आओ और वे बद्लो में आके आसमान पर चले गये और १२ उनके दुश्मनें ने उनको देखा * फिर उस साअ़त ज़िल्फ़ेर बड़ा ज़ल्ज़लः हूआ और उस शह्र का दसवां हिस्सः गिर गया उस ज़ल्ज़लः में सात हज़ार आदमी जान से गये और बाक़ी जो थे लरज़ गये और आसमान के ख़ुदा १४ की सिताइश की * दूसरा अफ़सोस भी गुज़र देखो कि १५ तीसरा अफ़सोस शिताब आता है * तब सातवें फ़िरिश्ते ने फूंका और आसमान पर बड़ी आवाज़ें हूईं जिनका मज़मून यिह् है कि इस जहान की सल्तनतें हमारे ख़ुदावंद और उसके मसीह् की हूईं और वुह अबद तक बाद्शाहत १६ करेगा * चैबीस बुज़ुर्ग जो अपनी मसनदें पर ख़ुदा के हुज़ूर बैठे थे मुंह् के बल गिरे और ख़ुदा को सिजदः किया १७ और बोले * कि ऐ ख़ुदावंद ख़ुदा क़ादिरि मुत्लक़ जो है और था और आनेवाला है हम तेरा शुक्र करते हैं कि तू ने अपनी बड़ी क़ुद्रत ले ली और बाद्शाहत करता है * १८ और सारे अक़्वाम ग़ुस्से थे और अब तेरा क़ह्र आया और वक़्त पहुंचा कि मुर्दें की अदालत की जाय और तू अपने बंदें नबियें और मुक़द्दस लेगें को और उनको जो तेरे नाम से डरते हैं क्या छेटे क्या बड़े अज्र बख़्शे और उनको जो

१९ ज़मीन को ख़राब करते हैं ख़राब करे * और ख़ुदा की हैकल आसमान में वा किया गया और उसकी हैकल में उसके वसीक़ः का संदूक़ देखा गया और बिजलियां कड़कीं और आवाज़ें और बादल गरजे ज़लज़लः आया और बड़े ओले पड़े *

बारहवां बाब

१ और एक बड़ा अजीब अमर आसमान में नज़र पड़ा एक रंडी आफ़ताब को ओढ़े हूए और माहताब उसके पांओं
२ तले उसके सिर पर बारह सितारों का ताज * वुह रंडी इसलिये कि हामिलः थी दर्द ज़िह से चिल्लाई और उस पर जन्ने की मशक़्क़त हूई फिर एक और अजीब अमर आसमान पर दिखाई दिया देखो एक बड़ा सुर्ख़ अज़दहा जिसके सात सिर और दस सींग और सात ताज उसके सिरों
३ पर थे * उसकी दुम से आसमान के तिहाई सितारे खिंच गये और ज़मीन पर गिरे पर अज़दहा उस रंडी के आगे जो जन्ने पर थी आ खड़ा हूआ कि जब वुह जने तो
४ उसके बच्चे को निगल जावे * और वुह फ़र्ज़न्द नरीनः जनी जो मुक़र्रर हूआ कि आहिनी असा लेके सारी क़ौमों पर हुक्मरानी करे उसके लड़के को ख़ुदा के और उसके तख़्त के
५ आगे उठा लेगये * और वुह रंडी वियाबान में जहां ख़ुदाने उसके लिये जागह तैयार की थी भागी ताकि वहां

६ बारह स साठ दिन तक परवरिश पावे * फिर आसमान पर मुक़ाबलः हुआ मीकाईल और उसके फ़िरिश्ते अज़्दहे
७ से लड़े अज़्दहा और उसके फ़िरिश्ते उनसे * पर उन पर ग़ालिब न होसके और न आसमान पर उनके लिये जगह
८ रही * फिर वह अज़्दहा निकाला गया वही पुराना सांप जिसका नाम इबलीस और शैतान है जो सारे जहान को दग़ा देता है ज़मीन पर गिराया गया उसके फ़िरिश्ते भी
९ उसके साथ गिराये गये * फिर मैं ने इस मज़मून की एक बड़ी आवाज़ आसमान से सुनी कि अब नजात और ज़ोर और हमारे ख़ुदा की सल्तनत और उसके मसीह की कुदरत आई क्यूंकि हमारे भाइओं का मुद्दई जो रात और दिन हमारे ख़ुदा के आगे उन पर तुहमत करता था गिराया
१० गया * और उन्हों ने बर्रः के लहू से और अपनी गवाही के सुख़न से उसे मग़लूब किया और उन्होंने अपनी जानों को
११ ता दमि मर्ग अज़ीज़ न जाना * इसवास्ते तुम ऐ अफ़लाक और तुम जो उन में रहते हो शादमानी करो अफ़सोस उन पर जो बरोबह्र के बाशिंदे हैं इसलिये कि इबलीस बड़े क़हर से तुम पर उतरा कि वुह जानता है कि मेरे
१२ वक़्त में थोड़ाही बाक़ी है * और जब उस अज़्दहे ने देखा कि ज़मीन पर गिराया गया तो उसने उस रंडी को
१३ जो फ़रज़ंद नरीनःजनी थी सताया * और उस रंडी को

बड़े उक़ाब के दो पर दिये गये ताकि वुह अझ़दहे के मुवाजिह से बियाबान को अपने मक़ाम तक परवाज़ करजाय जहां ऐक ज़मान और दो ज़मान और नीम ज़मान तक उसकी १४ परवरिश मुक़र्रर की गई * फिर उस सांपने अपने मुंह से पानी नदी की मानद उस रंडी के पीछे बहाया ताकि १५ उसे दरया से बहावे * पर ज़मीन ने उस रंडी की मदद की कि ज़मीन ने अपना दहन खोला और उस सैलाब को जो अझ़दहे ने अपने मुंह से बहाया था पी लिया * १६ और अझ़दहा रंडी पर ग़ुस्से हूआ और उसकी बक़ियः औलाद से जो ख़ुदा के अहकाम मानते हैं और ईसा मसीह की गवाही रखते हैं लड़ने गया *

तेरहवां बाब

१ और मैं समुंदर के रेते पर खड़ा था जब देखा कि ऐक हैवान समुंदर से निकला जिसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सींगों पर दस ताज और उसके सिरों २ पर कुफ़्र का नाम * और वुह हैवान जो मैंने देखा पलंग की शकल था और उसके पांओं रिछ के से दहान उसका बबर कासा उस अझ़दहे ने अपनी क़ुदरत अपना तख़्त ३ और बड़ा इख़्तिदार उसे दिया * और मैं ने उसके ऐक सिर पर मौत की जराहत देखी पर उसका मौत का घाओ चंगा होगया था और सारी दुनयां उस हैवान के पीछे

४ तअज्जुब करती थी * और उन्हों ने उस अज़दहे की जिसने उस हैवान को अपनी कुदरत दी परस्तिश की और उस हैवान की परस्तिश की और बोले कौन उस
५ हैवान जैसा है कौन उससे लड़ सकता है * और एक मुंह बड़े बोल बोलनेवाला और कुफ़र बकनेवाला उसे दिया गया और बियालीस महीने के जंग की ताक़त उसे दी
६ गई * और उसने ख़ुदा की तकफ़ीर पर अपना मुंह खोलकर उसके नाम और उसके मक़ाम की और उनकी
७ जो आसमान पर रहते हैं तकफ़ीर की * उसे यिह दिया गया कि मुक़द्दस लोगों से मुक़ाबलः करे और उन पर ग़ालिब होवे और सब सिलफ़ों और ज़बानों और क़ौमों पर उसे
८ इख़्तियार दिया गया * ज़मीन के तमाम बाशिंदे उसकी परस्तिश करेंगे उनके नाम उस बर्रः की किताबि हयात में जो बिनाय आलम से मक़तूल हुआ तहरीर नहीं हुऐ *
९ अगर किसी के कान हों तो सुने * (१०) कि जो क़ैदख़ाने तक लिये जाता है सो क़ैदख़ाने में पड़ेगा और जो तलवार से क़त्ल करता है अलबत्तः तलवार से क़त्ल होगा मुक़द्दस
११ लोगों का सबर और ईमान यहां है * फिर मैं ने देखा कि एक और हैवान ज़मीन से उठा बर्रः के मानंद उसके
१२ दो सींग थे और अज़दहे की बोली बोलता था * यिह पहले हैवान के सारे इख़्तियार को उसके आगे नमूद

करता है और ज़मीन से और उसके बाशिंदों से पहले हैवान की जिसका मौत का घाओ चंगा हूआ परस्तिश करवाता है *
१३ और वुह बड़े अजाइब ज़ाहिर करता है यहां तक कि वुह ख़ल्क़ की नज़र में आसमान से ज़मीन पर आग बरसाता है *
१४ और वुह उन मुअजिज़ों से जिनके देखाने की क़ुदरत उस हैवान के साम्हने उसे दी गई साकिनानि ज़मीन को दग़ा देता है कि ज़मीन के बाशिंदों से कहता है कि तुम उस हैवान की जिस में तलवार का घाओ था और
१५ जीआ ऐक शबीह बनाओ * और उसमें क़ुदरत थी कि उस हैवान की शबीह को जान बख़्शे कि उस हैवान की वुह शबीह बातें भी करे और उन सब को जो उस हैवान की
१६ शबीह को सिजदः न करें क़तल करवाये * और वुह उस अमर का बाइस होता है कि छोटे बड़े ग़नी और मिसकीन आज़ाद और बंदे सब के दाहने दस्त और माथों पर ऐक
१७ निशान पैदा हो * और कोई इनसान क़ादिर न हो कि मोल ले या बेचे मगर वही जिस में वुह निशान या उस हैवान का नाम या उसके नाम के शुमार का
१८ रक़म हो * दानिश यहां है वुह जो दानिशमंद है हैवान के अदद गिन जाये क्यूंकि वुह ऐक इनसान का अदद है और उसका अदद छः सौ छियासठ है *

चौधहवां बाब

१ फिर जो मैं ने निगाह की देखो एक बर्रः को सैहून पर खड़ा था और उसके साथ एक लाख चौंतालीस हज़ार जिन के माथे पर उसके बाप का नाम मनक़ूश था * २ फिर मैं ने आसमान से एक आवाज़ सुनी जो आबि कसीर के शोर और रअदि अज़ीम के मुशाबिह थी और मैं ने बरबत नवाज़ों की आवाज़ जो बरबत नवाज़ी कर रहे थे सुनी * ३ और वे तख़्त के हुज़ूर और उन चारों जांदारों और बुज़ुर्गों के आगे नये राग की मानंद कुछ गारहे थे और कोई उन एक लाख चौंतालीस हज़ार के सिवा जो ज़मीन से ख़रीदे गये थे उस गीत को सीख नसका * ४ ये वे लोग हैं जो रंडियों के साथ गंदगी में नपड़े कि वे पाक रहे ये वे हैं जो बर्रः के पीछे जहां कहीं वुह जाता है जाते हैं ये ख़ुदा और बर्रः के लिये पहले फल होके आदमियों में से मोल लिये गये हैं * ५ और उनके मुंह में मकर पाया नगया कि वे ख़ुदा के तख़्त के आगे बे ख़ता हैं * ६ और मैं ने एक और फ़िरिश्तः इंजीलि अबदी लिये हुए देखा कि आसमान के वसत में ऊड़ रहा था ताकि ज़मीन के बाशिंदगान के और हरएक फ़िरक़ः और क़ौम और सिनफ़ और ज़बान और क़ौम के दरमियान मुनादी करे * ७ और उसने बआवाज़ि बुलंद कहा ख़ुदा से डरो और उसकी सिताइश

करे कि उसकी अदालत की साअत आई और उसकी परस्तिश करे जिसने आसमान और ज़मीन और समुंदर और
८ पानी के चश्मे पैदा किये * और उसके पीछे एक दूसरा फ़िरिश्तः आकर यों बोला कि बाबुलों वुह बड़ी बस्ती गिर पड़ी गिर पड़ी क्यूंकि उसने अपनी हरामकारी के गज़ब
९ की मै सारे क़ौमों को पिलाई * फिर एक तीसरा फ़िरिश्तः उनके पीछे आया और बड़ी आवाज़ से बोला कि जो कोई उस हैवान और उसकी शबीह की परस्तिश करता है और
१० उसका नक़श अपने माथे या अपने हाथ पर लेने लेता है * वुह है खुदा के क़हर की शराब जो उसके क़हर के सागर में भरी गई पीयेगा और वुह मलायकः मुक़द्दस के और बर्रः
११ के आगे आग और गंधक में मुअज़्ज़ब होगा * और उनके अज़ाब का धूआं अबद तक उठता रहता है और उनको जो उस हैवान और उसकी शबीह की परस्तिश करते हैं और उसको जो उसके नाम का निशान लिये है रात दिन
१२ कभी आराम नहीं * मुक़द्दस लोगों का सबर यहां होवे जो खुदा के हुकमों और ईसाई ईमान को लिये रहते हैं
१३ यहां हैं * फिर मैं ने आसमान से एक आवाज़ सुनी जिसका मुझे खिताब था कि लिख वे मुरदे जो खुदावंद में मरते हैं अब से मुबारक हैं रूह कहती है कि हां वे अपने मिहनतों से आराम पाते हैं और उनके अअमाल उनके

१४ पीछे पीछे चले आते हैं * फिर मैं ने नज़र की और देखो एक सफ़ेद बदली और उस पर कोई इब्नि आदमसा जिसके सिर पर सोने का ताज और हाथ में एक तेज़ दरांती थी
१५ बैठा था * और एक और फ़िरिश्तः उसे जो अबर पर बैठा था बुलंद आवाज़ से पुकारता हूआ हैकल से निकला कि अपनी दरांती लगा और काट क्यूंकि तेरे काटने का वक़्त
१६ आया कि ज़मीन की ज़िराअत पक्की है * और उसने जो अबर पर बैठा था अपना हंसवा ज़मीन पर धरा और
१७ ज़मीन दिरौ कीगई * फिर एक और फ़िरिश्तः हैकल से जो आसमान में है निकला उस पास भी एक तेज़ हंसवा था *
१८ और एक और फ़िरिश्तः जिसका क़ुब्ज़ आग पर था क़ुरबानगाह से निकला उसने उसको जिसकने तेज़ हंसवा था बड़े शोर से पुकार के कहा कि अपना तेज़ हंसवा लगा और ताकि ज़मीन के ख़ोशे काट कि उसके अंगूर पुख़्तः हो चुके *
१९ फिर उस फ़िरिश्ते ने अपना हंसवा ज़मीन पर धरा और ताकि ज़मीन को काटा और ख़ुदाके ग़ज़ब के बड़े कोलहू
२० में डाल दिया * और उस कोलहू में शहर के बाहर रौंदा और उस कोलहू से लहू एक हज़ार छः सै तीर पर्ताव ऐसा बहा कि घोड़ों की बागों तक पहुंचा *

पंद्रहवां बाब

१ फिर मैं ने एक और निशान आसमान में देखा जो अज़ीम

और हैरतअफ़ज़ा था सात फ़िरिश्ते पिछली सातों आफ़तों के लिये हूए क्यूंकि ग़ज़बि इलाही उन में भर हूआ है *
२ और मैं ने कुछ आबगीनः का दरया सा आतिश मिला हूआ देखा और देखा कि वे जो उस हैवान और उसकी तसवीह और उसके नक़्श और उसके नाम के अदद पर ज़फ़रयाब हूए थे उस शीशे के समुंदर पर ख़ुदा के बरबत लिये
३ खड़े थे * वुह ख़ुदा के बंदः मूसा की गीत और बर्रः की गीत यिह कहके गाते हैं कि तेरे काम अज़ीम और हैरतअफ़ज़ा हैं ऐ ख़ुदावंद ख़ुदा क़ादिर मुतलक़ तेरी राहें
४ रास्त और दुरुस्त हैं ऐ मुक़द्दसोंके बादशाह * ऐ ख़ुदावंद कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की तक़्दीस न करेगा क्यूंकि तू तनहा मुक़द्दस है कि सारे अक़्वाम आवेंगे और तेरे आगे सिजदः करेंगे कि तेरी अदालतें आशकारा हूई हैं *
५ और बअद उसके जो मैं ने नज़र की तो देखा कि गवाही
६ के मसकन की हैकल आसमान पर खोली गई * और वे सातों फ़िरिश्ते उन सातों आफ़तों को लिये हूए साफ़ और बर्राक़ पोशाक पहने हूए और सोने के सीनः
७ बंद सीनों पर लपटे हूए हैकल से निकल आये * और उन चारों जांदारों में से एक ने सोने के सात पियालियां उस ख़ुदा के क़हर से भरी हूई जो अबदुलआबाद जीता
८ है उन सातों फ़िरिश्तों को दियां * और वुह हैकल ख़ुदाके

जलाल और उसकी क़ुदरत के सबब धूएं से भर गई और जब तक उन सातों फ़िरिश्तों की सात आफ़तें तमाम न हुईं कोई उस हैकल में दाख़िल न हो सका *

सोलहवां बाब

१ फिर मैं ने हैकल से एक बड़ी आवाज़ सुनी जो उन सातों फ़िरिश्तों से यूं मुख़ातिब हुई कि रवानः हो और क़हरि इलाही की उन प्यालों को ज़मीन पर उंडेलो *
२ पुनर्वि: पहला चला गया और अपनी प्याली ज़मीन पर उंडेली तब उन लोगों में जिन में उस हैवान का निशान था और उन में जो उसकी शबीह की परस्तिश करते थे
३ बुरी और ज़बून जराहतें पैदा हुईं * फिर दूसरे फ़िरिश्ते ने अपनी प्याली दरया में ऊलेंडी तब वुह मुरदः का लहूसा हो गया और हरएक जांदार जो दरया में था मुआ *
४ फिर तीसरे फ़िरिश्ते ने अपनी प्याली नद्दियों और पानी के
५ चश्मों में ऊलेंडो वे लहू होगये * और मैं ने आप सुना कि नद्दियों के फ़िरिश्ते ने कहा कि ऐ ख़ुदावंद जो है और था और होगा तू आदिल है कि तूने यूं अदालत
६ की * कि उन्हों ने मुक़द्दस लोगों और नबियों का ख़ून बहाया है सो तू ने पीने को उन्हें लहू दिया क्यूंकि वे उसी लाइक़
७ हैं * फिर मैं ने सुना कि दूसरा क़ुरबानगाह में से बोला कि हां ऐ ख़ुदावंद ख़ुदा क़ादिर मुतलक़ तेरी अदालतें सच्ची

८ और बादल हैं * फिर चौथे फ़िरिश्ते ने अपनी प्याली
खुरशेद पर उंडेली उसे क़ुदरत दी गई थी कि आदमियों
९ को आग से झुलसाये * और आदमी शिद्दत की गरमी से
झुलस गये और ख़ुदा के नाम की जो उन बलाओं पर क़ादिर
है तकफ़ीर की और ताइब न हूए कि उसकी सिताइश
१० करते * फिर पांचवें फ़िरिश्ते ने उस हैवान के तख़्त पर अपनी
पियाली उंडेली उसकी ममलुकत तारीकी से मअमूर हूई और
११ उन्हों ने मारे दर्द के अपनी ज़बानें चबाईं * और
अपने दर्दों और ज़ख़मों के बाइस आसमान के ख़ुदा की
१२ तकफ़ीर की और अपने कामों से तौबः न किया * फिर
छठे फ़िरिश्ते ने अपनी पियाली उस नहरि अज़ीम में जो
फ़ुरात है उंडेली उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक़ के
१३ शाहों के लिये राह बने * फिर मैं ने उस अज़्दहे के
मुंह से और उस हैवान के मुंह से और झूठे नबी के
मुंह से तीन पलीद रूहों को मेंडकों की शकल निकलते
१४ देखा * कि वे मुअजिज़े दिखाने वाले देवों की रूहें हैं जो
ज़मीन पर और सारी दुनया के शाहों पास सैर करते हैं
कि उन्हें क़ादिर मुतआल ख़ुदा के रोज़ि अज़ीम के मुक़ाबलः पर
१५ फ़राहम करें * देख मैं चोर के मानन्द आता हूं मुबारक
है वुह जो जागता है और अपनी पोशाक की ख़बरदारी
करता है ता न होवे कि वुह नंगा फिरे और लोग उसकी

१६ ख़िज़ालत देखें * फिर उसने उनको ऐक मकान में जिसका
१७ नाम इबरानी में अरमजदून है फ़राहम किया * फिर सातवें
फ़िरिश्ते ने अपनी पियाली हवा में उंडेली तब आसमान की
हैकल में तख़्त से ऐक बड़ी आवाज़ निकली जिसका मज़मून
१८ यिह था कि होचुका * तब आवाज़ें हूईं और गरजें
और चमकीं और बड़ा ज़लज़लः हूआ ऐसा कि जब से कि
आदमी ज़मीन पर हैं कभी न हूआ था ऐसा सख़्त और
१९ अज़ीम ज़लज़लः * और वुह बड़ा शहर तीन टुकड़े हो
गया और उम्मतों की बस्तियां गिर गईं और बड़ी बाबलून
ख़ुदा के हुज़ूर याद की गई ताकि उसे अपनी आतिशि क़हर
२० की मै का साग़र देवे * तब हरऐक जज़ीरः भागा और
२१ जिबाल कहीं न पाये गये * और आसमान से आदमियों पर
मनमन भर के ओले पड़े और आदमियों ने ओलों की मार से
ख़ुदा की तकफ़ीर की क्यूंकि ओलों की बला निहायत सख़्त थी

सतारहवां बाब

१ उसवक़्त ऐक उन सात फ़िरिश्तों में से जिनके पास सात
पियालियां थीं आया और मुझसे यों बोला कि ईधर आ
मैं तुझको उस बड़ी फ़ाहिशः की सज़ा जो बहुतसी
२ नदियों पर बैठी है दिखलाऊंगा * जिसके साथ ज़मीन के
बादशाहों ने हरामकारी की और जिसकी हरामकारी की मै
३ से ज़मीन के बाशिंदे मतवाले हूऐ * फिर वुह मुझे वज्द में

रूहानी बियाबान में लेगया वहां मैं ने ऐक रंडी ऐक क़िरमज़ी रंग हैवान पर जो कुफ़र के नामों से ममलूव था
४ और जिसके सात सिर और दस सींघ थे बैठे देखी * यिह रंडी इरग़वानी और क़िरमज़ी जोड़े पहने थी और सोने और जवाहिर और मोतियों से आरस्तः थी ऐक सोने का पियाला नफ़रतों से और अपनी हरामकारी की गंदगी से
५ भरा हूआ अपने हाथ में लिये थी * उसकी पेशानी पर ऐक नाम रक़म था यिह निहानी बड़ी बाबलून छिनालों और
६ ज़मीन की नफ़रतों की मा * मैं ने देखा कि वुह रंडी मुक़द्दस लोगों के ख़ून से और ईसा के शहीदों के लहू से मतवाली होरही थी उसको देखकर सख़्त हैरानी से दंग
७ होगया * तब उस फ़िरिश्ते ने मुझे कहा तू क्यूं हैरतज़दः है मैं उस रंडी और उस हैवान का राज़ जिसके सात
८ सिर और दस सींग हैं तुझसे कहूंगा * वुह हैवान जो तू ने देखा सो था और अब नहीं है और उस कूऐ से जिसकी थाह नहीं खुरूज करेगा और हलाकत में जायेगा और ज़मीन के बाशिंदे जिनके आसमान आग़ाज़ि आफ़रीनिश से हयात की किताब में क़लमबंद न हूऐ उस हैवान को देखके जो था और नहीं है बावजूदे कि
९ है हैरतज़दः होजायेंगे * जो राय कि साइब है यहां है वे सात सिर सात पहाड़ हैं जिन पर वुह रंडी बैठी

१० है * और सात बादशाह हैं पांच तो गिर गये एक है
और वुह दूसरा अबतक नहीं आया और जब आयेगा
११ थोड़ी मुद्दततक उसका रहना होगा * वुह हैवान जो
था और अब नहीं आठवां वही है और उन सातों में से
१२ है और हलाकत में जाता है * और दस सींग जो
तूने देखे दस बादशाह हैं जिन्हों ने अबतक सल्तनत
नहीं की लेकिन उस हैवान के साथ एक साअत तक
१३ बादशाहों की सी क़ुदरत पाते हैं * उन सब की एकही
राय है ये अपने क़ुव्वत औ क़ुदरत उस हैवान को देंगे *
१४ वे बर्रः से जंग करेंगे और बर्रः उन पर ग़ालिब होगा
क्यूंकि वुह खुदावन्दखुदाओंका खुदा और शाहनशाह है और वे जो
उसके साथ हैं सब तलबीदः बरगुज़ीदः पुर अक़ीदः हैं *
१५ फिर उसने मुझे कहा वुह नदियां जो तूने देखीं जिन पर
वुह फ़ाहिशः बैठी थी जमाअतें और गरोहें और क़िनफ़ें
१६ और ज़बानें हैं * और उस हैवान के दस सींघ जो
तूने देखे उस फ़ाहिशः से अदावत करेंगे उसे वेवाली और
उरयां करेंगे उसका गोश्त खायेंगे और उसे आगसे जलावेंगे *
१७ क्यूंकि खुदाने उनके दिलों में डाला कि उसकी मुराद पूरी
करें और मुत्तफ़क़ रहें और अपनी सल्तनत उस हैवान को
१८ दें जबतक कि खुदा की बातें पूरी हूईं * वुह रंडी जिसे तूने देखा
वुह शहरि अज़ीम है जो ज़मीन के बादशाहों पर मुसल्लत है *

अठारहवां बाब

१ बअ़द उन चीज़ों के मैं ने एक फ़िरिश्तः बड़ी क़ुदरत के साथ आसमान से उतरते देखा और ज़मीन उसके जलाल से मुनव्वर हो
२ गई * उसने बआवाज़ि बलंद ज़ोर से खूब पुकारके कहा कि बड़ी बाबलून गिरपड़ी गिरपड़ी वुह अब देवों का मसकन और हरएक गंदी रूह का महबस और हरएक नापाक मकरूह मुर्ग़ का
३ क़फ़स हुई * क्यूंकि सारी उम्मतों ने उसकी हरामकारी के ग़ज़ब की मै पी लीं और ज़मीन के बादशाहों ने उससे हरामकारी की और ज़मीन के तिजारत करनेवाले उसकी अ़शरतों की फ़िरवांनी से
४ ग़नी हुए * फिर मैं ने आसमान से एक और आवाज़ सुनी जो मुह से मुख़ातिब हुई कि ऐ मेरे लोगो उस में से बाहर आओ ताकि तुम उसके गुनाहों के हिस्सःदार न
५ होओ * और उसकी बलाओं में से कुछ न पाओ कि उसकी मअ़सीयतें आसमान तक पहुंचीं और ख़ुदा ने उसकी बदकारियां
६ याद कियां * जैसा उसने तुम से सलूक किया तुम भी उससे वैसाही सलूक करो और उसे उसके किरदार के मुवाफ़िक़ दोचंद दो उसके पियाले में जिसे उसने लबरेज़ किया दूना
७ भर दो * जितना उसने आपको शानदार बनाया और ऐयाशी की उतनाही उसको दर्द ओ ग़म दो क्यूंकि वुह अपने दिल में कहती है मैं मलिकः बन बैठी और मैं तो रांड
८ नहीं हूं और ग़मज़दः न हूंगी * सो उसकी बलायें एक

दिन आवेंगी यअ़ने मौत और ग़म और काल और वुह आग से जलाई जाइगी क्यूंकि खु़दावंदि खु़दा जो उसकी
९ अ़दालत करता है क़ुव्वतवर है * और शाहानि ज़मीन जिन्हें ने उसके साथ हरामकारी और ऐयाशी की है उसको जलते और उससे धूआं उठते देखके उसके लिये रूएंगे
१० पीटेंगे * उसके अ़ज़ाब से डरके दूर खड़े हूए कहेंगे हाय हाय वुह शहरि अ़ज़ीम वुह शहरि क़वी ऐकही साअ़त
११ में तेरी अ़दालत आपहुंची * और ज़मीन के सौदागर उस पर नौहः औ ग़म करेंगे कि अब कोई उनकी बिज़ाअ़त
१२ मोल नहीं लेता * यिह बिज़ाअ़त सोना और रूपा और जवाहिर और मोती और महीन और इरग़वानी और किरमज़ी कपड़े और हरऐक खु़शबू लकड़ी और गुनागून हाथी दांत के ज़ुरूफ़ और हरऐक तरह के गिरां बहा चोबी और मिसी
१३ और आहिनी और मरमरी बासन * और दारचीनी और खु़शबूइयां और इत्र और लुबान और शराब और तेल और साफ़ मैदः और गेहूं और मवाशी और भेड़ और घोड़े और गाड़ियां और बरदे और आदमियों की जानें हैं *
१४ अब तेरे दिल के शौक़ के मेवे तुझ से अलग होगये और सारी चिकनी और लतीफ़ चीज़ें तुझे छोड़ गईं तू उनको फिर
१५ कभी न पावगी * वे जो उन चीज़ों की तिजारत करते थे जो उसके सबब मालदार बने थे उसके अ़ज़ाब के खौ़फ़

१६ से दूर खड़े रहके रोयेंगे और ग़म करेंगे * और कहेंगे हाय हाय वुह बड़ी बस्ती जो महीन कपड़े और इरग़वानी और क़िरमज़ी पोशाक पहने और सोने और जवाहिर
१७ और मरवारीद से आरास्तः थी * क्यूंकि ऐसी अज़ीम दौलत ऐकही साअत में बरबाद होगई और हरऐक साहिबि सफ़ीनः और सारे किश्तीनशीन और उडो और जिताने कि दरया
१८ से काम रखते हैं दूर खड़े रहे * और उसके जलने का धूआं उठते देखकर यूं पुकार उठे कौन शहर उस शहरि
१९ अज़ीम की मानंद है * और उन्हों ने अपने सिरों पर ख़ाक उड़ाई और नालः औ फ़िग़ां करके यूं पुकार उठे हाय अफ़सोस ऐसा बड़ा शहर जिस में वे सब जिनके जहाज़ दरया में रवां थे उसकी कसरत ख़रच से दौलतमंद
२० होगये वुह ऐकही साअत में उजड़ गया * ऐ आसमान और मुक़द्दस हवारिओ और पैग़म्बरो उसके बिगड़ने पर शादमानी कर क्यूंकि ख़ुदाने उससे तुम्हारा इन्तिक़ाम लिया *
२१ फिर ऐक क़वी हैकल फ़िरिश्ते ने ऐक पत्थर जैसे भारी चक्की का पाट उठाया और यिह कहते हूऐ दरया में फेंका कि बावजूद वुह बड़े शहर यों ज़ोर से फेंका जायगा
२२ और फिर कभी पाया न जायगा * और बरबत नवाज़ों और गाने बजानेवालों और नाइओं और नरसिंघा फूंकनेवालों की आवाज़ तुझ में फिर न सुनी जायगी और

किसी तरह का पेशःवाला कोई पेशः क्यूं नहो तुझ में फिर पाया न जायगा और चक्की की आवाज़ तुझ में फिर
२३ न सुनी जायगी * और फिर तुझ में चिराग़ की रोशनी कभी न होगी और फिर तुझ में दूल्हा दुल्हिन की आवाज़ कभी कानतक न पहुंचेगी क्यूंकि तेरे सौदागर ज़मीन के अकाबिर थे कि तेरे जादूगरी से सब क़ौमें दग़ा खा गईं *
२४ और नबियों और मुक़द्दस लोगों का और जितने ज़मीन पर मक़तूल हुऐ उनका लहू उसी में पाया गया *

उन्नीसवां बाब

१ उन चीज़ों के बआद मैं ने आसमान पर ऐक बड़े दंगल का बड़ा शोर सुना जो कहते थे हल्लिलूयाह नजात और मुजद और इज़्ज़त और क़ुदरत ख़ुदावंद हमारे ख़ुदा की है *
२ क्यूंकि उसकी अदालतें रास्त और बरहक़ हैं इसलिये कि उसने उस बड़ी फ़ाहिशः जिसने अपनी ज़िनाकारी से ज़मीन को ख़राब किया अदालत की और अपने बंदों के लहू का
३ इन्तिक़ाम उसके हाथ से लिया * फिर दूसरी बार उन्होंने कहा कि हल्लिलूयाह और उसका धूआं अबदुलआबाद
४ उठा * और वे चौबीसों बुज़ुर्ग और वे चारों जांदार औंधे गिर पड़े और ख़ुदा की जो तख़्त पर बैठा है यूं कहके
५ परस्तिश की कि आमीन हल्लिलूयाह * तख़्त से यिह सदा निकली कि तुम जो उसके बंदे हो और तुम जो उससे

ख़ाइफ़ हो क्या छोटे और क्या बड़े सब हमारे ख़ुदा की सिताइश
६ करो * और मैं ने बड़े दंगल की सी आवाज़ और बहुत सैलाबों
की सी आवाज़ और रअदि शदीद की सी आवाज़ सुनी
जिसका यिह मज़मून था कि हल्लिलूयाह क्यूंकि अब ख़ुदावंद
७ ख़ुदा क़ादिरि मुतलक़ बादशाहत करता है * आओ हम ख़ुशी
ख़ुर्रमी करें और उसका इअज़ाज़ करें इसलिये कि बर्रः
के ब्याह के दिन आपहुंचे और उसकी जोरू ने आप
८ को तैयार की है * और उसे यिह दिया गया कि वुह
साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ लिबास पहने कि लिबास मुक़द्दस लोगों की
९ रास्तबाज़ी है * और उसने मुझसे कहा कि लिख मुबारक
वे हैं जो बर्रः की अरूसी की मिहमानी में बुलाये गये
और वुह मुझ से कहता है कि ये ख़ुदा की सच्ची बातें
१० हैं * और मैं उसके पांओं पर उसकी परस्तिश के लिये गिर
पड़ा और उसने मुझे कहा कि ख़बरदार ऐसा न कर कि
मैं तेरा और तेरे भाइओं का जिन पास ईसा की गवाही
११ जो ईसा पर है नबुव्वत की रूह है * फिर मैं ने देखा
कि आसमान खुला और देखो एक नुक़रः को गवाही है
हमख़िदमत हों ख़ुदा की परस्तिश कर घोड़ा उसका सवार
अमीन और सादिक़ कहलाता है और वुह सच्चाई से
१२ अदालत करता और लड़ता है * और उसकी आंखें आग
के शुअलः के मानंद थीं और उसके सिर पर बहुत से

हार और उसके साथ एक नाम लिखा हूआ था जिसे
१३ उसके सिवा किसी ने न जाना * और वुह ऐसा लिबास जो
ख़ून में डुबा हूआ था पहने था और उसका नाम कलिमतुल्लाह
१४ है * और आसमानी फ़ौजें सफ़ेद और मुसफ़्फ़ा लिबास
१५ पहने हूए नुक़रे घोड़ों पर उसके पीछे होलीं * उसके
मुंह से एक तेज़ तलवार निकलती है कि वुह उससे
क़ौमों को मारे और वुह आहिनी असा से उन पर हुकमरानी
करेगा और वुह क़ादिर मुतआल ख़ुदा के क़हर ओ ग़ज़ब
१६ की मै के कोल्हू में रौंदता है * और उसके लिबास और
रान पर यिह नाम रक़म था बादशाहों का बादशाह और
१७ ख़ुदावंदों का ख़ुदावंद * फिर मैं ने एक फ़िरिश्तः ख़ुरशेद
में इस्तादः देखा उसने सारे ताइरों को जो आसमान के वसत में
परवाज़ करते हैं यिह कहके बलंद आवाज़ से पुकारा अओ और
ख़ुदाय अज़ीम की मिहमानी में जमअ हो * कि तुम बादशाहों
१८ का गोश्त और सालारों का गोश्त और क़ुव्वतवालों का गोश्त और
घोड़ों का गोश्त और उनके सवारों का गोश्त और सब आज़ादों
१९ और ग़ुलामों और छोटों बड़ों का गोश्त खाओ * फिर मैं ने
देखा कि वुह हैवान और ज़मीन के बादशाह और उनकी
फ़ौजें फ़राहम हूईं ता कि उससे जो घोड़े पर सवार था और
२० उसकी लश्कर से लड़ें * और बाहम वुह हैवान और
झूठा नबी जिसने उसके हुज़ूर वे मुअजिज़े दिखलाये जिनके

वसीले से उस ने उनको जिन्हों ने उस हैवान के नक़्श को लिया और उनको जो उसकी शबीह को पूजते थे गुमराह किया ये दोनों उस आग की झील में जो गंधक से जल रही है जीते
२१ डाले गये * और बाक़ी उसकी जो घोड़े पर सवार था तलवार से जो उसके मुंह से निकली काटे गये और सारे परिंदे उनके गोश्त से सेर हूए *

बीसवां बाब

१ फिर मैं ने देखा कि एक फ़िरिश्तः उस कुएं की जिसकी थाह नथी कुंजी और एक बड़ी ज़ंजीर हाथ में लिये
२ हूए आसमान से उतरा * उसने उस अज़दहे को जो पुराना सांप है यअ़ने इबलीस और शैतान को पकड़ा और
३ हज़ार बरस तक जकड़ रखा * और उसको उस गढ़े में जिसकी थाह नहीं डाला और बंद करके उसपर मुहर की ताकि वुह आगेको लोगों को दग़ा न दे जबतक कि हज़ार बरस तमाम हों बअ़द उसके चाहिये कि वुह थोड़े दिनके लिये
४ छूटे * फिर मैं ने तख़्त और तख़्तनशीन लोग देखे और अदालत उन्हें दी गई फिर मैं ने उनकी रूहों को जो ईसा की गवाही और ख़ुदा के कलिमः के वास्ते बेसिर हूए जिन्हों ने न उस हैवान न उसकी शबीह को पूजा और न उसका नक़्श अपने माथों और अपने हाथों पर लिया देखा वे ज़िंदः हूए और मसीह के साथ हज़ार बरस तक

५ बादशाहत करते रहे * और बाक़ी मुरदे जबतक हज़ार
६ बरस पूरे न हूए न जिये यिह पहली क़ियामत है * मुबारक
और मुक़द्दस वुह जो पहली क़ियामत में शरीक है ऐसों
पर दूसरी मौत का तसल्लुत नहीं बल्कि वे ख़ुदा और
मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हज़ार साल
७ तक बादशाहत करेंगे * और जब हज़ार साल हो चुकेंगे
८ शैतान अपनी क़ैद से छूटेगा * और निकलेगा ता कि उन
लोगों को जो ज़मीन के चारों तरफ़ों में हैं यजूज
माजूज को फ़रेब दे और उन्हें जंग के लिये जमअ करे
९ वे शुमार में समुंदर की रेत के मानन्द हैं * वे ज़मीन की
वुसअत पर चढ़ गये और मुक़द्दसों की लशकरगाह को और
महबूब शहर को घेर लिया तब आसमान पर से ख़ुदा के
१० पास से आग उतरी और उनको खा गई * और शैतान
उनका फ़रेबिन्दः आग और गंधक की झील में डाला गया
जहां वुह हैवान और वुह झूठा नबी है और दिन
११ अबदुलआबाद अज़ाब में रहेंगे * फिर मैं ने एक सफ़ेद
बड़ा तख़्त और उसको जो उसपर बैठा था देखा जिसकी
मवाजिह से ज़मीन आसमान भागे और उन्हें कहीं जगह
१२ न मिली * फिर मैं ने देखा कि मुरदे क्या छोटे क्या बड़े
ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हैं और किताबें खोली गईं और एक
दूसरी किताब जो हयात की है खोली गई और मुरदों

की जैसा उन किताबों में लिखा था उनके अअमाल के
१३ मुताबिक़ अदालत की गई * और दरया ने उन मुरदों को
जो उस में थे उछाल फेंका और मौत और अदम ने
उन मुरदों को जो उन में थे हाज़िर किया और उन मे
हरएक की उसके कामों के मुवाफ़िक़ अदालत की गई *
१४ फिर मौत और अदम आग की झील में डाले गये यिह
दूसरी मौत है और किताबि ह़यात में जिसका ज़िक्र नथा
वुह आग की झील में डाला गया *

इक्कीसवां बाब

१ फिर मैं ने ऐक नये आसमान और ऐक नई ज़मीन को देखा
कूंकि वुह अगले आसमान ज़मीन गुज़र गई और कोई
२ दरया न था * और मुझ यूहन्ना ने शहरि मुक़द्दस नई
औरशलीम को आसमान से दुल्हन के मानंद जिसने
अपने शौहर के लिये बनाव किया आरास्तः होके ख़ुदा के
३ पास से उतर ने देखा * और मैं ने ऐक बड़ी आवाज़
आसमान से सुनी जिसका यिह मज़मून था कि देख ख़ुदा
की सकूनत आदमियों के साथ है और वुह अब उनके साथ
बूदओबाश करेगा और वे उसके लोग होंगे और ख़ुदा उन का ख़ुदा
४ आप उन के साथ रहेगा * और ख़ुदा उनकी आंखों से आंसू
पूंछेगा और फिर मौत न होगी और न ग़म और न नालः
५ और न फिर दुख होगा कूंकि अगली चीज़ें गुज़र गई * और

उस तख़्तनशीन ने कहा देख मैं सारी चीज़ों को नया करता हूं और उसने मुझसे कहा कि लिख क्यूंकि ये बातें सच और
६ बरहक़ हैं * और उसने मुझे कहा कि होचुका मैं अलफ़ा और उमगा और इबतिदा और इनतिहा हूं मैं उसको जो प्यासा है ज़िंदगी के चशमे का पानी मुफ़्त
७ पीने दूंगा * जो ग़ालिब होता है सो सब का वारिस होगा
८ मैं उसका ख़ुदा हूंगा वुह मेरा बेटा होगा * पर डरनेवाले और बेईमान और नफ़रती और ख़ूनी और ज़ानी और जादूगर और बुतपरस्त और सारे झूठे उसी झील में जो आग और गंधक से जलती है शरीक होंगे और यिह दूसरी मौत है *
९ अब एक उन सात फ़िरिश्तों में से जिन पास सात पियालियां पिछली सात बलाओं से भरी हुईं थीं मुझ पास आया और मुझ से यूं कहके बोला कि इधर आ मैं तुझे दुल्हन
१० बर्रः की जोरू दिखाऊं * और मुझे बवज़ए रूह ने एक कोहि अज़ीम औ बलंद पर लेगया और उसने उस बुज़ुर्ग शहर औरशलीम मुक़द्दस को आसमान पर से ख़ुदा के पास से उतरते
११ देखाया* उस में ख़ुदा का जलाल था और उसकी रोशनी बेशक़ीमती जवाहिर कीसी उस येशम के मानंद थी जो बिल्लौर की
१२ तरह शफ़ा हो और उसकी दीवार बड़ी और बुलंद थी और बारह दरवाज़े और उन दरवाज़ों पर बारह फ़िरिश्ते और उन पर बनी इसराईल के बारह फ़िरक़ों के नाम लिखे हूए
१३ थे * मशरिक़ को तीन दरवाज़े और शिमाल को तीन दरवाज़े

जनूब को तीन दरवाज़े और मग़रिब को तीन दरवाज़े
१४ थे * और उस शहर की दीवार की बारह नेवें थीं उन पर
१५ बर्रः के बारहों हवारियों के नाम * और जो मुझ से बोल
रहा था उसके हाथ में सोनेका एक ठठेर था ता कि उस
शहर और उसके दरवाज़ों और उसकी दीवार को नापे *
१६ और वुह शहर चैागोशः था और उसकी लम्बाई उतनी थी
जितनी उसकी चैाड़ाई थी उसने उस शहर को
उस नै से नापकर बारह हज़ार तीर पर ताब पाया और
१७ उसका तूल और अरज़ और बुलंदी एकसां थी *. फिर उसने
दीवार को नापा तो उस आदमी के हाथ से जो वुह फ़िरिश्तः
१८ है एकसै चैातालीस हाथ पाया * और वुह दीवार येशम
की था और वुह शहर तिलाई ख़ालिस का शफ़्फ़ाफ़ शीशे
१९ के मानंद था * और उस शहर की दीवार की नेवें हर
नैाअ के जवाहिर से आरास्तः थीं पहली नेव येशम की और
दूसरी नीलम की और तीसरी गैाहरि शबचिराग़ की और
२० चैाथी ज़ुमर्रुद की * और पांचवीं अक़ीक़ की और छठी
लअल की और सातवीं सुनहले की और आठवीं फ़ीरोज़ः
की और नवीं तूपाज़ की और दसवीं यमानी की और
२१ ग्यारहवीं संगि सुंबली की और बारहवीं याक़ूत की * और
उसके बारह दरवाज़े बारह मोती थे हर दरवाज़ः एक
एक मोती का और उस शहर का चैाक तिलाई ख़ालिस

२२ का शफ़्फ़ाफ़ शीशे की मानंद था * पर मैं ने उस में
कोई हैकल नदेखी इसलिये कि खुदावंदि खुदा क़ादिरि
२३ मुतआल और बर्रः उसके हैकल हैं * और वुह शहर
आफ़ताब और माहताब की रोशनी का मुहताज नहीं
क्यूंकि खुदा के जलाल ने उसे रोशन कर रखा है और बर्रः
२४ उसकी रोशनी है * और उनकी सिनफ़ें जिन्हों ने नजात
पाई है उसकी रोशनी में फिरेंगी और ज़मीन के सलातीन
२५ अपना जलाल और इज़्ज़त उस में लाते हैं * और उस
के दरवाज़े दिनको कभी बंद नहीं होते वहां रात नहीं
२६ होती * और वे सिनफ़ों के जलाल और इज़्ज़त को उसमें
२७ लायेंगे * और कोई चीज़ जो गंदी और नफ़रत और
झूठ है उसमें किसी तरह दर न आवेगी मगर सिर्फ़ वेही
जो बर्रः की किताबि हयात में लिखे हूए हैं *

बाईसवां बाब

१ फिर उसने आबि हयात की एक साफ़ नदी बिल्लौर की
मानंद बर्राक़ खुदा और बर्रः के तख़्त से निकलती हूई मुझे
२ दिखाई * और उसके रस्तः के बीच और उस नदी के वार
पार दरख़्ति हयात था जो बारह फल लाता था हर एक
महीने में एक फल और उस दरख़्त के पत्ते लोगों की
३ शिफ़ा के वास्ते थे * फिर कोई लअ़नत न होगी और खुदा
और बर्रः का तख़्त उसमें होगा और उसके बंदे उसकी

४ ख़िद्मत करेंगे * और वे उसकी सूरत देखेंगे और उसका
५ नाम उनके माथों पर होगा * वहां रात न होगी और वे चिराग़
और आफ़ताब की रोशनी के मुहताज नहीं हैं क्यूंकि
ख़ुदावंदि ख़ुदा उनको रोशन करता है और वे अबदुलआबाद
६ बादशाहत करेंगे * फिर उसने मुझे कहा कि ये बातें
सच और बरहक़ हैं और मुक़द्दस नबियों के ख़ुदावंदि ख़ुदा
ने अपने फ़िरिश्ते को भेजा कि उन चीज़ों को जो
जल्द होवेंगी अपने बंदों पर ज़ाहिर करे * देख मैं जल्द
७ आता हूं मुबारक वुह जो उस किताब की नबुव्वत की बातों को याद
८ रखता है * और मुझ यूहन्ना ने उन चीज़ों को देखा और सुना
और जब मैंने सुना और देखा उस फ़िरिश्ते के पांओं पर जिसने ये
९ चीज़ें मुझे देखाईं परस्तिश के वास्ते गिर पड़ा * तब उसने मुझे
कहा ख़बरदार ऐसा न कर क्यूंकि मैं तेरा और नबियों का जो
तेरे भाई हैं और उनका जो उस किताब की बातों को याद
रखते हैं हमख़िद्मत हूं ख़ुदा की परस्तिश कर * फिर उसने
१० मुझसे कहा कि तू उस किताब की नबुव्वत की बातों पर मुहर मत
११ कर रख क्यूंकि वक़्त नज़्दीक आया है * जो ज़ालिम है सो
ज़ालिम ही रहे और जो नजिस है सो नजिस ही रहे जो आदिल
है सो आदिल ही रहे और जो मुक़द्दस है सो मुक़द्दस ही रहे *
१२ और देख मैं जल्द आता हूं और मेरा अज्र मेरे साथ है ताकि
१३ हरएक को उसके काम के मुवाफ़िक़ अज्र दूं * और मैं अल्फ़ा

और उनगा इबतिदा और इनतिहा अव्वल और आख़िर हूं *
१४ मुबारक वे हैं जो उसके हुक्मों पर अमल करते हैं ताकि दरख़्ति
हयात उनका हक़ होजाय और वे उन दरवाज़ों से शह्र में
१५ दाख़िल होवें * कि कुत्ते और जादूगर और ज़ानी और ख़ूनी
और बुतपरस्त और जो कोई किज़ब का मुहिब्ब और फ़ाइल
१६ है सब ख़ारिज हैं * मुझ ईसा ने अपने फ़िरिश्ते को भेजा कि
कलीसयाओं में इन बातों की गवाही दे मैं दाऊद की
असल ओ नसल और सुबह का नूरानी सितारः हूं *
१७ और रूह और दुल्हन कहती हैं आ जो सुनता है
कहे कि आ और जो प्यासा है आवे और जो कोई
१८ चाहे आबि हयात मुफ़्त ले * मैं हरएक शख़्स के लिये
जो उन नबुव्वत की बातों को जो उस किताब में हैं सुनता
है यिह गवाही देता हूं कि अगर कोई इन बातों में
कुछ इज़ाफ़ा करे तो ख़ुदा उन बलाओं को जो इस किताब
१९ में लिखी हुई हैं उसमें इज़ाफ़ा करेगा * और अगर
कोई इस नबुव्वत की किताब की बातों में से कुछ निकाल डाले तो
ख़ुदा उसे किताबि हयात की और शहरे मुक़द्दस की और उन
बातों की शिरकत से जो इस किताब में लिखी हैं ख़ारिज करे *
२० जो इन चीज़ों को गवाही देता है यिह कहता है कि मैं
यक़ीनन् जल्द आता हूं आमीन हां ऐ ख़ुदावंद ईसा आ *
२१ हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़्ल तुम सब पर होवे आमीन *